परमेश्वर का शुभ-संदेश

LIVING NEW TESTAMENT

परमेश्वर का शुभ-संदेश

LIVING NEW TESTAMENT

लिविंग बाइबल इन्डिया
पो० ओ० बॉक्स 4558
नई दिल्ली 110016

सूचीपत्र

पुस्तकों के नाम			पृष्ठ संख्या
प्रभु यीशु मसीह का जीवन			
मत्ती रचित सुसमाचार	...	...	1
मरकुस रचित सुसमाचार	..	...	44
लूका रचित सुसमाचार	...	...	72
यूहन्ना रचित सुसमाचार	...	...	120
मसीह के सुसमाचार का प्रसार			
प्रेरितों के कामों का वर्णन	...	...	153
आरम्भिक मसीहियों के पत्र			
रोमियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	...	...	200
कुरिन्थियो के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री	...	..	226
कुरिन्थियो के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री	...	...	251
गलतियो के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	...	..	266
इफिसियों ने नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	..	...	275
फिलिप्पियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	...	...	283
कुलुस्सियो के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	...	...	289
थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री	...	...	294
थिस्सलुनीकियो के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री	...	...	298
तीमुथियुस के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री	...	...	301
तीमुथियुस के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री	...	...	307
तीतुस के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	...	...	312
फिलेमोन के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री	...	...	314
इब्रानियों के नाम पत्री	...	...	316
याकूब की पत्री	...	...	333
पतरस की पहिली पत्री	...	...	339
पतरस की दूसरी पत्री	...	...	345
यूहन्ना की पहिली पत्री	...	...	349
यूहन्ना की दूसरी पत्री	...	...	355
यूहन्ना की तीसरी पत्री	...	...	356
यहूदा की पत्री	...	...	357
संसार का अन्त			
यूहन्ना का प्रकाशित वाक्य	...	...	[illegible]

प्रस्तावना

प्रस्तुत अनुवाद का मुख्य उद्देश्य हिन्दी की बोलचाल की भाषा में नए नियम के सम्पूर्ण अर्थ को स्पष्ट रूप से प्रगट करना है। अनुवाद करते समय हमने उन्हें भी ध्यान मे रखा है, जो बाइबल से भली-भांति परिचित नही हैं।

यीशु के शिष्यों ने भी मूल भाषा (यूनानी) मे नया नियम लिखते समय बोलचाल की भाषा का ही उपयोग किया था। उस समय के यूनान में साहित्यिक भाषा पुस्तकों मे पायी जाती थी, और प्रति दिन की बोल चाल की भाषा भी थी। यीशु के आरम्भिक शिष्यों ने नया नियम इसी बोलचाल की भाषा में लिखा। उन्होंने इसे "सस्ती" अथवा परमेश्वर के वचन के अनुपयुक्त नही समझा। परमेश्वर के सत्य को उन्होंने ऐसी भाषा-शैली मे लिखने का निर्णय किया, जो जन साधारण की समझ में सरलता से आ सके। उन्होंने परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा था, अतः हमें विश्वास है कि यह परमेश्वर का निर्णय था। इस अनुवाद को करने मे यही हमारा उद्देश्य रहा है, इस प्रकार हमने नए नियम के मूल लेखकों का अनुकरण किया है।

यदि किसी भी भाषा में से कोई भी अनुवाद चाहे शब्द के बदले शब्द ही किया जाये, तब भी न केवल अनुवाद की भाषा अप्राकृतिक लगती है, परन्तु प्रायः अर्थ भी ठीक से समझ में नही आता है। प्रस्तुत अनुवाद मे हर सम्भव प्रयत्न किया गया है कि अर्थ पूर्णतया स्पष्ट हो। जहां कही भी किसी एक यूनानी शब्द का अर्थ हिन्दी के किसी एक शब्द के द्वारा स्पष्ट नही हो रहा था वहां हमने एक से भी अधिक शब्दों का प्रयोग किया है। मूल भाषा में कई स्थलों पर विचार छिपे हुए है। उन्हें शब्दों मे प्रगट नही किया गया है, आधुनिक पाठकों की समझ के लिए जहां कही भी हमने आवश्यक समझा, इन छिपे हुए विचारों को शब्दों में स्पष्ट कर दिया है। ऐसा करने से हमने परमेश्वर के वचन में कुछ जोड़ा नहीं है। परन्तु हमने उसका सम्पूर्ण अर्थ निकालने का प्रयत्न किया है। हमारे लिए मूल-भाषा में परमेश्वर का वचन प्रमाणिक-स्तर का है। यह परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से लिखा गया है और सिद्ध है। यह हमारा दृढ विश्वास है।

मूल-भाषा का अर्थ समझने के लिए हमने कई अनुवादों, यूनानी शब्द कोषों, और टीकाओं का उपयोग किया है। प्रस्तुत अनुवाद अंग्रेजी के 'लिविंग बाइबल' का अनुवाद नहीं है। इस तरह से यदि देखा जाए तो यह अन्य किसी भी अनुवाद पर आधारित नही है।

यदि प्रस्तुत अनुवाद में कोई शब्द या अर्थ पिछले अनुवादों से भिन्न है, तो पाठकों को यह धारणा नही बना लेनी चाहिए कि हमारा अनुवाद ही गलत है। प्रत्येक

शब्द और अर्थ पर हमने ध्यानपूर्वक विचार किया है और इस निर्णय पर पहुँचे हैं कि हमारा अनुवाद अन्य अनुवादों की अपेक्षा मूल के अधिक निकट है।

कुछ लोग जो पुराने अनुवाद के अभ्यस्त हो गए है, वे किसी भी नए अनुवाद को स्वीकार करना पसन्द नही करेंगे। वे सोचते हैं कि केवल पुराना ही सही है। कुछ भाषाओं मे कई अनुवाद हैं। यह अनुवाद पाठकों को बाइबल अच्छी तरह समझने में अत्यन्त सहायक हैं। इसी प्रकार, हमारी अभिलाषा है कि प्रस्तुत अनुवाद हिन्दी पाठकों को नया नियम समझने मे अत्यधिक सहायक होगा। यदि किसी को पुराना अनुवाद ही पसन्द हो और वह उसे ही उपयोग करना चाहे, तो हमें कोई भी आपत्ति नही है। किसी भी अनुवाद के साथ हमारी कोई भी प्रतियोगिता नही है।

हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर अपनी महिमा के लिए प्रस्तुत अनुवाद को आशीषित करेगा, कि बहुतेरे इसे पढ़ेंगे, समझेंगे और इसका पालन करेंगे।

(कई स्थलो पर हमने पृष्ठ के अन्त में शब्दों के अर्थों आदि को समझाने के लिए टिप्पणियाँ भी दी हैं—अनुवादक)

मत्ती रचित सुसमाचार

1 1 राजा दाऊद और इब्राहीम के वंशज प्रभु यीशु मसीह के पूर्वज इस प्रकार हैं :— 2 इब्राहीम, इसहाक का पिता था, इसहाक, याकूब का पिता था, याकूब, यहूदा और उसके भाइयों का पिता था। 3 यहूदा, फिरिस और जोरह का पिता था (तामार उनकी माता थी), फिरिस, हिस्रोन का पिता था, हिस्रोन, एराम का पिता था, 4 एराम, और अम्मीनादाब का पिता नहशोन था, और नहशोन सलमोन का पिता था, 5 सलमोन, बोअज का पिता था (राहाब उसकी माता थी) बोअज, ओबेद का पिता था (रूत उसकी माता थी), ओबेद, यिशै का पिता था, 6 यिशै, राजा दाऊद का पिता था। दाऊद, सुलैमान का पिता था (उसकी माता उरिय्याह की विधवा थी)।

7 सुलैमान, रहबाम का पिता था, रहबाम, अबिय्याह का पिता था, अबिय्याह, आसा का पिता था, 8 आसा, यहोशाफात का पिता था, यहोशाफात, योराम का पिता था, योराम, उज्जियाह का पिता था, 9 उज्जियाह, योताम का पिता था, योताम, आहाज का पिता था, आहाज, हिजकिय्याह का पिता था, 10 हिजकिय्याह मनश्शिह का पिता था, मनश्शिह, आमोन का पिता था, आमोन, योशिय्याह का पिता था, 11 योशिय्याह, यकुन्याह और उसके भाइयों का पिता था (ये बाबुल की बन्धुवाई के समय उत्पन्न हुए थे)।

12 बाबुल की बन्धुवाई मे पहुंचने के बाद : यकुन्याह, शालतिएल का पिता था, शालतिएल, जरुब्बाबिल का पिता था, 13 जरुब्बाबिल, अबीहूद का पिता था, अबीहूद, इल्याकीम का पिता था, इल्याकीम, अजोर का पिता था, 14 अजोर, सदोक का पिता था, सदोक, अखीम का पिता था, अखीम, इलीहूद का पिता था, 15 इलीहूद, इलियाजार का पिता था, इलियाजार, मत्तान का पिता था, मत्तान, याकूब का पिता था, 16 याकूब, यूसुफ का पिता था (जो यीशु मसीह की माता मरियम का पति था।)

17 मे[1] इब्राहीम से राजा दाऊद तक चौदह पीढ़ी, और राजा दाऊद से बाबुल की बन्धुआई में पहुंचने तक चौदह पीढ़ी, और बन्धुआई से मसीह तक चौदह पीढ़ी हैं।

18 यीशु मसीह के जन्म सम्बन्धी ये तथ्य हैं : उसकी माता मरियम की मंगनी, यूसुफ के साथ हुई थी। किन्तु जब वह कुवारी ही थी, वह पवित्र आत्मा से गर्भवती हो गई। 19 तब उसके भावी[2] पति, यूसुफ ने, जो सिद्धान्त का खरा[3] था, चुपचाप से मंगनी तोड देने का निर्णय किया, क्योंकि वह मरियम को समाज मे बदनाम करना नही चाहता था। 20 जब वह लेटा हुआ इसी विषय पर विचार कर रहा था, तब उसने स्वप्न मे एक स्वर्गदूत को अपने पास खड़े देखा। स्वर्गदूत ने कहा, "हे दाऊद की संतान यूसुफ, मरियम को अपनी पत्नी बनाने मे सकोच न कर। क्योंकि जो बालक उसके गर्भ मे है वह पवित्र आत्मा की ओर से है। 21 और उसके एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यीशु (अर्थात् बचानेवाला रखना), क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापो से बचाएगा। 22 इसके द्वारा भविष्यद्वक्ता का कहा हुआ परमेश्वर का संदेश पूरा होगा- —23 'सुनो! एक कुवारी गर्भवती होगी! वह पुत्र को जन्म देगी, और वह "इम्मानुएल" (अर्थात् "परमेश्वर हमारे साथ") कहलाएगा।' 24 जब यूसुफ नींद से जागा तब उसने स्वर्गदूत की आज्ञा मानी, और मरियम को अपनी पत्नी बनाने के लिए घर लाया, 25 परन्तु वह तब तक कुआरी ही रही जब तक उसका पुत्र उत्पन्न न हो गया, और यूसुफ ने उस पुत्र का नाम "यीशु" रखा।

---

[1]मूलत "इब्राहीम से दाऊद तक चौदह पीढ़ी हुई।" [2]मूलत. "उसके पति।" [3]मूलत. "जो धर्मी था।"

2 1 यीशु का जन्म यहूदिया के बैतलहम नगर मे, राजा हेरोदेस के राज्यकाल में हुआ। इन्ही दिनों मे पूर्वी देशों से कुछ ज्योतिषि यह पूछते हुए आए, 2 "यहूदियों का जो राजा जन्मा है वह कहां है? क्योंकि हमने दूर पूर्व में उसका तारा देखा है, और उसको प्रणाम करने आए हैं।"

3 उनके प्रश्न से राजा हेरोदेस बहुत घबरा गया और पूरे यरूशलेम मे अफवाहें फैल गई[1]। 4 उसने यहूदियों के धार्मिक अगुवों की सभा बुलवाई और पूछा, "क्या भविष्यद्वक्ताओं ने हमें बताया था कि मसीह का जन्म कहा होगा?" 5 उन्होंने कहा, "हां, बैतलहम में, क्योंकि मीका[2] भविष्यद्वक्ता ने इस प्रकार लिखा है: '6 'हे छोटे नगर बैतलहम, तू यहूदा का तुच्छ गांव नहीं है क्योंकि तुझ में से मेरी प्रजा इस्राएल पर राज्य करने के लिए एक शासक निकलेगा।' 7 तब हेरोदेस ने ज्योतिषियों को गुप्त संदेश भेजकर बुलवा लिया और उनसे जान लिया कि उनको तारा सबसे पहले ठीक किस समय दिखाई दिया था। तब उसने ज्योतिषियों से कहा, 8 "बैतलहम जाओ और उस बालक को खोजो, और जब तुम उसे पा लो तो लौटकर मुझे बताओ ताकि मैं भी जाकर उसे प्रणाम कर सकूं।" 9 इस भेंट-वार्ता के बाद ज्योतिषि चले गए। और देखो! तारा फिर प्रगट हुआ और बैतलहम[3] के ऊपर ठहरा हुआ दिखाई दिया, 10 इससे उनके आनन्द का ठिकाना न रहा। 11 उस घर में प्रवेश करके जहा बालक और उसकी माता थी, उन्होंने मुह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया। तब उन्होंने अपनी भेंट निकालकर उसे सोना, लोबान और गन्धरस दिया। 12 परन्तु जब वे अपने देश को लौटे, तो हेरोदेस को सूचना देने के लिए यरूशलेम के मार्ग से होकर नही गए, क्योंकि परमेश्वर ने उनको स्वप्न में चेतावनी दी थी कि दूसरे मार्ग से घर लौटें।

13 उनके चले जाने के बाद, प्रभु का एक स्वर्गदूत यूसुफ को स्वप्न में दिखाई दिया। स्वर्गदूत ने कहा, "उठ, बालक और उसकी माता को साथ लेकर मिस्र को भाग जा, और वहीं रहना जब तक मैं तुझे लौटने को न कहूं, क्योंकि राजा हेरोदेस बालक को मार डालने की कोशिश करेगा।" 14 उसी[4] रात वह मरियम और बालक के साथ मिस्र के लिए निकल पड़ा। 15 और वहा हेरोदेस की मृत्यु तक रहा। इससे भविष्यद्वक्ता के ये वचन पूरे हुए, "मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया है[5]।" 16 हेरोदेस अत्यन्त क्रोधित हो उठा जब उसने देखा कि ज्योतिषियों ने उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया। उसने बैतलहम मे सिपाही भेजकर उन्हें आज्ञा दी कि वे नगर में तथा आसपास के क्षेत्रों मे दो वर्ष और उससे कम उम्र के सब लडकों को मार डालें। क्योंकि ज्योतिषियों ने उसको बताया था कि तारा उनको सबसे पहले दो वर्ष पूर्व दिखाई दिया था। 17 हेरोदेस के इस क्रूर कार्य से यिर्मयाह की भविष्यद्वाणी पूरी हुई,[6] 18 "रामाह[7] से चीख, पुकार सुनाई देती है, रोना और बडा विलाप, राहेल अपने पुत्रों के लिए रो रही है, वह शान्त नहीं होती—क्योंकि वे मर चुके हैं।"

19 जब हेरोदेस की मृत्यु हुई, प्रभु का एक दूत मिस्र मे यूसुफ को स्वप्न में दिखाई दिया, और उसने कहा, 20 "उठ और बालक और उसकी माता को इस्राएल मे वापिस ले जा, क्योंकि जो बालक को मारने का प्रयत्न कर रहे थे, वे मर गए हैं।" 21 इसलिए वह तुरन्त यीशु और उसकी माता के साथ इस्राएल को लौट गया। 22 परन्तु मार्ग मे वह यह जानकर डर गया कि नया राजा तो हेरोदेस का पुत्र,

---

[1] मूलत "उसके साथ सारा यरूशलेम।" [2] आशय है मीका 5 2 [3] मूलत, "वह उनके आगे-आगे चला, और जहां बालक था, उस जगह के ऊपर पहुंच कर ठहर गया।" [4] यही आशय है। [5] होशे 11·1, [6] यिर्मयाह 31 15, [7] अथवा "रामाह का क्षेत्र।"

अरखिलाउस ही है। तब उसे स्वप्न में फिर चेतावनी मिली कि यहूदिया को न जाए, इसलिए वह गलील को गया, 23 और नासरत मे बस गया। इससे मसीह के सम्बन्ध मे भविष्यद्वक्ताओ का यह वचन पूरा हुआ कि, "वह नासरी कहलाएगा।"

3 1 जब वे नासरत मे रहते थे[1] यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यहूदिया के जंगल में प्रचार करना शुरु किया। उसका विषय सदा यही होता था, 2 "अपने पापों को छोड़कर परमेश्वर की ओर फिरो...क्योंकि स्वर्ग का राज्य शीघ्र आ रहा है"।[2] 3 यशायाह भविष्यद्वक्ता ने शताब्दियों पहले यूहन्ना की सेवकाई के विषय मे बताया था। उसने लिखा था, "मैं जगल से एक पुकार सुनता हूं[3], 'प्रभु के लिए मार्ग तैयार करो—उन सड़को को सीधी करो जहा वह चलेगा।" 4 यूहन्ना के वस्त्र ऊंट के बालों से बने थे और वह कमर में चमड़े का कमरबन्ध बांधता था, टिड्डी और शहद उसका भोजन था। 5 लोग, यरूशलेम और यर्दन के आस-पास के सब स्थानों और पूरे यहूदिया प्रान्त से जंगल मे उसका प्रचार सुनने आते थे, 6 और जब वे अपने पापो को मान लेते थे, तब वह उनको यर्दन नदी में बपतिस्मा देता था। 7 परन्तु जब उसने बहुतेरे फरीसियो[4] और सदूकियो[5] को बपतिस्मा लेने के लिए आते देखा तो उन्हें धिक्कारा। उसने चिताया, "हे साप के बच्चो! किसने कहा कि तुम परमेश्वर के आने वाले क्रोध से बच सकोगे? 8 बपतिस्मा लेने से पहले, तुम उचित कार्यों से सिद्ध करो कि तुम पापों से फिर चुके हो। 9 अपनी इसी दशा, मे यह सोचकर बचने की कोशिश मत करो कि, 'हम इब्राहीम के वंशज-यहूदी हैं इसलिए सुरक्षित हैं।' यह कोई प्रमाण नहीं। परमेश्वर यहा इन पत्थरों को भी 'इब्राहीम की संतान मे बदल सकता है[6]। 10 अब भी परमेश्वर के न्याय की कुल्हाडी, फल न लाने वाले प्रत्येक वृक्ष की जड पर रखी है, वह काटा और जलाया जाएगा। 11 जो अपने पापों से फिरते हैं, मैं उनको जल मे बपतिस्मा देता हूँ परन्तु एक आने वाला है, जो मुझ से कही बढ कर है, वह इतना महान है कि मैं उसकी जूती को भी उठाने के योग्य नही हूं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। 12 उसका सूप उसके हाथ मे है, वह खलिहान को पूर्णत: स्वच्छ करेगा। और अन्न को भूसे मे अलग करेगा और भूसे को कभी न बुझने वाली आग मे जला देगा और गेहूँ को भंडार में जमा करेगा।"

13 तब यीशु गलील से यर्दन नदी में बपतिस्मा लेने आए। 14 यूहन्ना उन्हें बपतिस्मा देना नहीं चाहता था। उसने कहा, "यह उचित नही है, आपसे तो मुझे बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है और आप बपतिस्मा लेने मेरे पास आए हैं।" 15 परन्तु यीशु ने कहा, "अब ऐसा ही होने दे, क्योंकि जो ठीक है, वह मुझे करना है[7]।" तब यूहन्ना ने उनको बपतिस्मा दिया। 16 बपतिस्मा लेकर जैसे ही यीशु जल मे बाहर आए, उनके लिए आकाश खुल गया और उन्होंने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के रूप मे उतरते देखा। 17 तब आकाश से शब्द सुनाई दिया, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, मैं उससे अत्यन्त प्रसन्न हूं।"

4 1 तब पवित्र आत्मा यीशु को जगल मे ले गया, ताकि शैतान द्वारा उनकी परीक्षा हो। 2 चालीस दिन और चालीस रात तक उन्होंने कुछ न खाया और बहुत भूखे हो गए। 3 तब शैतान ने उनकी परीक्षा ली कि वह पत्थरों को

[1] मूलत· "उन दिनों में।" [2] अथवा "आ गया है।" "मूलत, "निकट आ गया है।" [3] आशय है—यशायाह 40 3। [4] यहूदियो के धार्मिक अगुवे, जो व्यवस्था की विधियो का अक्षरश· पालन करते थे किन्तु उसके आशय को बहुधा पूर्ण नही करते थे। [5] यहूदियो के राजनैतिक अगुवे। [6] मूलत, "परमेश्वर इन पत्थरो से इब्राहीम के लिए सतान उत्पन्न कर सकता है।" [7] मूलत, "सब धार्मिकता को पूरा करना है।"

रोटियों मे बदलकर भोजन प्राप्त करें। उसने कहा, "इससे सिद्ध होगा कि आप परमेश्वर के पुत्र हैं।" 4 परन्तु यीशु ने उससे कहा, "नही! क्योंकि धर्मशास्त्र मे लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नही, परन्तु हर एक वचन से जो *परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा:* परमेश्वर के हर एक वचन का पालन करना हमारे लिए आवश्यक है।" 5 तब शैतान उनको यरूशलेम के मन्दिर की छत पर ले गया। 6 उसने कहा, "नीचे छलांग लगाकर सिद्ध कीजिए कि आप परमेश्वर के पुत्र हैं, क्योंकि धर्मशास्त्र मे लिखा है, 'परमेश्वर आपको हानि से बचाने के लिए अपने दूतो को भेजेगा...वे दूत आपको नीचे पत्थरो पर गिरकर चोट खाने से बचा लेंगे'।"

7 *यीशु ने उत्तर दिया, "उसमे यह भी* लिखा है कि प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा करने की मूर्खता मत कर।" 8 तब शैतान उनको बहुत ऊँचे पर्वत की चोटी पर ले गया और संसार के सब देश और उनका वैभव दिखाया। 9 उसने कहा, "यदि आप केवल घुटने टेक कर मुझे प्रणाम करें तो मैं यह सब आपको दे दूगा।" 10 यीशु ने कहा, "हे *शैतान, यहां से दूर हो, धर्मशास्त्र में लिखा है,* 'केवल प्रभु परमेश्वर की उपासना कर और उसी की आज्ञा मान'।" 11 तब शैतान चला गया और स्वर्गदूतों ने आकर यीशु की सेवा टहल की। 12, 13 जब *यीशु ने सुना कि यूहन्ना बन्दी* बना लिया गया है, तो वह यहूदिया को छोडकर गलील के नासरत में अपने घर[1] लौट गए, *परन्तु शीघ्र ही वह गलील की झील के तट पर* कफरनहूम को चले गए जो जबूलून और नपताली के निकट है। 14 इससे यशायाह की भविष्यद्वाणी पूरी हुई।

15, 16 झील के तट पर, जबूलून और नपताली के देश, यर्दन नदी के पार का प्रदेश, और उत्तरी गलील जहां बहुत से अन्यजाति रहते हैं—वहां जो लोग अन्धकार मे बैठे थे, उन्होंने प्रकाश देखा, वे जो मृत्यु के देश में *बैठे थे, और उन पर प्रकाश चमका।*[2] 17 उस समय से, यीशु ने प्रचार शुरु किया, "पाप करना छोड कर परमेश्वर की ओर फिरो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है"।[3] 18 एक दिन *जब यीशु गलील की झील के किनारे जा रहे थे,* तब उन्होंने दो भाइयो-शमौन, जिसे पतरस भी कहते थे और अन्द्रियास को नाव मे बैठे[4] जाल से मछली पकडते देखा, क्योंकि वे मछुए थे।

19 यीशु ने पुकार कर कहा, "मेरे साथ हो लो मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए *बनाऊंगा!"* 20 और उन्होंने तुरन्त ही अपने जाल छोड दिए और उनके साथ हो लिए। 21 तट से थोड़ी ही दूर आगे उन्होंने दो और भाइयो, याकूब और यूहन्ना को, अपने पिता जबदी के साथ नाव मे बैठे, जाल सुधारते देखा और उन्हें भी अपने साथ हो लेने को कहा। 22 उन्होंने तुरन्त अपना काम रोक दिया और अपने पिता को छोडकर *उनके साथ हो लिए।*

23 यीशु ने चारो ओर यहूदी आराधनालयों मे स्वर्ग के राज्य का सुसंदेश सुनाते हुए, पूरे गलील की यात्रा की। और उन्होंने सब प्रकार *की दुर्बलता और बीमारी* को चंगा किया। 24 उनके आश्चर्यकर्मों की चर्चा गलील की सीमाओं के पार भी फैल गई इसलिए शीघ्र ही सूरिया तक के दूर स्थानों से बीमार चंगे होने के लिए आने लगे। फिर चाहे उन्हें कोई बीमारी और दुःख क्यों न रहा हो, अथवा उनमें दुष्टात्माएं भी समाई हों, या वे पागल, या लकवे के मारे हुए हो—वह उन सबको चंगा करते थे। 25 जहां भी वह जाते थे लोगो की बडी भीड़—गलील, और दिकापुलिस और यरूशलेम, और पूरे यहूदिया, और यर्दन नदी के उस पार से भी, उनके पीछे हो लेती थी।

5 1, 2 एक दिन भीड़ इकट्ठी हो रही थी, *यीशु अपने शिष्यों के साथ पहाड पर गए,*

[1] शब्दश: नगर। [2] यशायाह 9:1, 2 [3] अथवा "आ पहुंचा है अथवा निकट आया है।" [4] यही आशय है।

वहाँ बैठ कर उनको सिखाने लगे। 3 "धन्य हैं वे जो दीन हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हें दिया गया है। 4 धन्य हैं वे जो शोकित हैं क्योंकि उनको शान्ति दी जाएगी। 5 धन्य हैं वे जो नम्र हैं क्योंकि समस्त संसार उनका है। 6 धन्य हैं वे जो धर्मी और भले बनने की इच्छा रखते हैं, क्योंकि वे पूरी तरह संतुष्ट होंगे। 7 धन्य हैं वे जो दयालु हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। 8 धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। 9 धन्य हैं वे जो शान्ति के लिए प्रयत्न करते हैं—वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे। 10 धन्य हैं वे जो भले होने के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उनका है। 11 धन्य हो तुम जब मेरे चेले होने के कारण तुम्हारी निन्दा होती है और तुम्हें सताया जाता है, और तुम्हारे बारे में झूठ बोला जाता है। 12 इस कारण आनन्दित होना। बहुत मगन होना[1] क्योंकि स्वर्ग में तुम्हें बड़ा प्रतिफल मिलेगा। और याद रखना, प्राचीनकाल के भविष्यद्वक्ताओं को भी सताया गया था।

13 "तुम संसार के नमक समान हो। यदि नमक का स्वाद खो जाए तो संसार का क्या होगा? तुम फेंके और तुच्छ समझकर पैर तले रौंदे जाओगे। 14 तुम जगत के प्रकाश हो—पहाड़ पर बसे हुए नगर हो, जिसकी चमक रात को सब देख सकें। 15, 16 अपना प्रकाश मत छिपाओ। उसको सबके लिए चमकने दो, अपने भले कामों का प्रकाश सब तक पहुंचने दो, ताकि वे तुम्हारे स्वर्गीय पिता की बड़ाई करें।

17 "मैं क्यों आया, इसे ग़लत न समझो—मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की चेतावनियों को समाप्त करने नहीं, बल्कि मैं उनको पूरा करने आया हूँ, ताकि वे सब सच हों। 18 मैं सच कहता हूँ, इस पुस्तक का प्रत्येक नियम तब तक बना रहेगा जब तक उसका अभिप्राय पूरा नहीं हो जाएगा।[1] 19 इसलिए यदि कोई छोटी से छोटी आज्ञा को भी तोड़े, और दूसरों को भी आज्ञा तोड़ना सिखाए, तो वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा ठहरेगा। परन्तु जो परमेश्वर के नियमों को सिखाते और उनका पालन करते हैं, वे स्वर्ग के राज्य में महान होंगे। 20 परन्तु मैं तुम्हें चिताता हूं—जब तक तुम्हारी अच्छाई[2] फरीसियों और यहूदियों के अगुवों से बढ़कर न हो, तुम स्वर्ग के राज्य में कदापि प्रवेश नहीं कर सकते!

21 "मूसा की व्यवस्था के अनुसार नियम था, 'यदि तुम हत्या करोगे तो तुम्हें भी मृत्यु दंड दिया जाएगा।' 22 परन्तु मैंने उस नियम[3] में जोड़ा है और तुम से कहता हूं कि यदि तुम केवल क्रोध करोगे, चाहे अपने घर[4] में ही, तो तुम्हें न्यायालय में बुलाए जाने का खतरा है। यदि तुम अपने मित्र को मूर्ख कहो, तो तुम्हें कचहरी के सामने लाए जाने का खतरा है। और यदि तुम उसे श्राप दो, तो नरक की आग के खतरे में हो। 23 इसलिए यदि तुम मन्दिर में वेदी के सामने खड़े, परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ा रहे हो, और अचानक तुम्हें स्मरण आ जाए कि तुम्हारे मन में किसी मित्र के विरुद्ध कुछ है, 24 तो वेदी के सामने अपना बलिदान छोड़ दो और पहले जाकर उससे क्षमा मांगो और उससे मेल करो, तब आकर अपना बलिदान परमेश्वर को चढ़ाओ। 25 अपने शत्रु के साथ शीघ्र समझौता कर लो इससे पहले कि देर हो और वह तुम्हें अदालत में घसीटे और तुम ऋणी होकर बन्दीगृह में डाले जाओ, 26 क्योंकि वहाँ तुम्हें तब तक रहना होगा जब तक पाई पाई न चुका दो।

27 "मूसा की व्यवस्था है, 'तू व्यभिचार न करना।' 28 परन्तु मैं कहता हूं: जो कोई किसी नारी को केवल वासना भरी आँखों से ही देखे, वह अपने मन में उसके साथ व्यभिचार कर चुका। 29 इसलिए यदि तेरी भली आँख[5] भी

[1] मूलत. "जब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरी हुए नहीं टलेंगे।", [2] मूलत "धार्मिकता।"
[3] मूलत "परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं।" [4] मूलत. "अपने भाई पर।" [5] मूलत. "तेरी दाहिनी आंख।"

तुझे वासना मे गिराए तो उसे निकाल कर
फेंक दे। तेरा पूरा शरीर नरक मे न डाला जाए,
इसमे भला यह है कि तेरा एक अंग ही नाश
हो जाए। 30 और यदि तेरा हाथ चाहे तेरा
दाहिना हाथ-तुझ मे पाप कराए तो उसे काट
कर फेंक दे। यह इसकी अपेक्षा भला है कि तू
नरक मे जाए।

31 "मूसा की व्यवस्था है, 'यदि कोई अपनी
पत्नी को छोडना चाहे तो उसे त्यागपत्र देकर
तलाक दे।' 32 परन्तु मैं कहता हूँ जो पुरुष
अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा, किसी भी
कारणवश त्यागे और यदि वह फिर विवाह कर
ले, तो वह उससे व्यभिचार करवाता है। और
जो उस त्यागी हुई पत्नी से विवाह करता है,
वह भी व्यभिचार करता है।

33 "फिर, मूसा की व्यवस्था है, 'परमेश्वर
के सम्मुख की गई प्रतिज्ञाओं को न तोडना,
परन्तु उन सबको पूरा करना।' 34 परन्तु मैं
कहता हूं शपथ न लेना। न स्वर्ग की, क्योंकि
स्वर्ग परमेश्वर का सिहासन है। 35 न पृथ्वी
की, क्योंकि वह उसके पैर रखने की चौकी है
और यरूशलेम की भी शपथ न लेना, क्योंकि
यरूशलेम महाराजा की राजधानी है। 36 अपने
सिर की शपथ मत लेना, क्योंकि तुम एक बाल
भी काला या सफेद नही कर सकते। 37 केवल
इतना ही कहो, 'हा' या 'नही'। इतना ही
आवश्यक है। अपनी प्रतिज्ञा के साथ शपथ लेना
प्रकट करता है कि कुछ न कुछ गडबड है।

38 "मूसा की व्यवस्था है, 'यदि कोई किसी
की आख फोडे, तो उसकी भी आख फोडी जाए।
यदि कोई किसी का दात तोडे तो उसका भी
दात तोडा जाए।'[a] 39 परन्तु मैं कहता हूं :
झगडा न करना ? यदि तेरे एक गाल पर थप्पड
पडे, तो दूसरा भी फेर दे। 40 यदि तुझ पर
नालिश हो, और तेरी कमीज ले ली जाए, तो
अपना कोट भी दे दे। 41 यदि कोई तुझे एक
मील तक बेगार मे ले जाय, तो उसके साथ दो
मील जाने को तैयार रह। 42 जो मागे, उसे दे,
और यदि कोई उधार मागे, तो उससे मुख न फेर।

43 "यह कहा जाता है, 'अपने मित्रों से प्रेम
और अपने शत्रुओं से घृणा करो।' 44 परन्तु मैं
कहता हूं : अपने बैरियों से प्रेम रखो ! जो तुम्हे
सताते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो। 45 इस
प्रकार से तुम स्वर्ग में रहने वाले अपने पिता
की सच्ची सतान ठहरोगे। क्योंकि वह बुरों और
भलों दोनो को सूर्य का प्रकाश देता है, और
धर्मी और अधर्मी दोनो पर वर्षा करता है।
46 यदि तुम केवल उन्ही से प्रेम करो जो तुमसे
प्रेम करते हैं, तो क्या बडाई ? दुष्ट भी ऐसा
ही करते हैं। 47 यदि तुम अपने मित्रो से ही
मित्रता रखो, तो दूसरो में और तुममे क्या
अन्तर? अन्यजाति भी ऐसा करते हैं। 48 परन्तु
तुम्हें सिद्ध होना है, जैसा स्वर्ग मे विराजमान
तुम्हारा पिता सिद्ध है।

6 1 "सावधान रहो। अपने भले काम सबके
सामने दिखाने के लिए मत करो, कि
तुम्हारी बडाई हो, क्योंकि ऐसा करने से तुम
वह प्रतिफल खो दोगे जो तुम्हारे स्वर्गीय पिता
से तुमको मिलता है।

2 "जब तुम किसी गरीब को दान दो तो
उसका प्रचार मत करो। जो
पाखंडियो जैसे उसका प्रचार मत करो। जो
अपने दान की ओर दूसरों का ध्यान खीचने के
लिए आराधनालयों और सडको पर तुरहिया
बजवाते हैं। मैं तुम से सच कहता हू, वे अपना
प्रतिफल पा चुके। 3 परन्तु जब तू किसी के
लिए दया का काम करे, तो गुप्त रूप से कर—
अपने बाएं हाथ को मत बता कि तेरा दाहिना
हाथ क्या कर रहा है। 4 और तुम्हारा पिता जो
सब गुप्त बातें जानता है, तुम्हें प्रतिफल देगा।

5 "अब प्रार्थना के बारे मे सुनो। जब तुम
प्रार्थना करो तो पाखंडियो के समान मत बनो।
जो सबके सामने सडक के कोनो और आराधना-
लयों मे जहा सब देख सकें, प्रार्थना करके भति

[a] "आंख के बदले आंख और दात के बदले दात।"

का ढोंग करते हैं। सचमुच वे अपना प्रतिफल पा चुके। 6 परन्तु जब तुम प्रार्थना करो, तो एकान्त मे, अकेले चले जाओ, और द्वार बन्द कर अपने पिता से गुप्त में प्रार्थना करो, और तुम्हारा पिता, जो तुम्हारी गुप्त बातें जानता है, तुम्हें प्रतिफ़ल देगा। 7, 8 एक ही प्रार्थना को बार-बार अन्य जातियो के समान मत दोहराओ, जो सोचते हैं कि बार-बार दोहराने से ही प्रार्थनाओं का उत्तर मिलेगा। स्मरण रखो कि तुम्हारे मांगने से पहले ही तुम्हारे पिता को मालूम है कि तुम्हारे लिए क्या आवश्यक है। 9 इस प्रकार प्रार्थना करो : 'हे हमारे पिता[1], तू जो स्वर्ग मे है, हम तेरे पवित्र नाम का आदर करते हैं। 10 हम चाहते हैं कि अब तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा यहां पृथ्वी पर पूरी हो, जैसे स्वर्ग में पूरी होती है। 11 प्रतिदिन के समान आज भी फिर हमें हमारा भोजन दे। 12 और हमारे पापों को क्षमा कर जैसे हमने उनको क्षमा किया है, जिन्होंने हमारे विरुद्ध पाप किया है। 13 हमें परीक्षा में मत डाल, परन्तु दुष्ट जन[2] से बचा। आमीन।' 14, 15 यदि तुम अपने विरुद्ध पाप करने वालों को क्षमा करोगे तो तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है, तुम्हे क्षमा करेगा परन्तु यदि तुम उनको क्षमा न करो, तो वह भी तुम्हें क्षमा न करेगा।

16 "और अब उपवास के विषय मे सुनो। जब तुम उपवास करो, आत्मिक अभिप्राय के लिए अपना भोजन छोड़ दो, पाखण्डियों के समान दिखाने के लिए उपवास मत करो, जो उदास रहते और अपना मुंह बिगाड़ते हैं ताकि लोग उन पर तरस खाएं। सचमुच, उन्होने अपना प्रतिफल पा लिया। 17 परन्तु जब तुम उपवास करो तो अपना मुंह धोओ और सिर पर तेल मलो, 18 ताकि तुम्हारे पिता के अतिरिक्त जिसको सब भेद मालूम है, कोई सन्देह न करे कि तुम भूखे हो और वह तुम्हें प्रतिफल देगा।

19 "यहां पृथ्वी पर धन इकट्ठा मत करो जहां कीड़ा या काई लग सकती अथवा चोरी हो सकती है। 20 स्वर्ग मे धन इकट्ठा करो, जहा उसका महत्व कभी नही घटेगा और वह चोरों से बचा रहेगा। 21 यदि स्वर्ग मे तुम्हारा धन हो, तो तुम्हारा मन भी वहीं लगा रहेगा। 22 यदि तुम्हारी आंख पवित्र हो, तो तुम्हारी आत्मा मे भी प्रकाश होगा। 23 परन्तु यदि तुम्हारी आंख बुरे विचारो और वासनाओं से भरी हो, तो तुम आत्मिक अन्धकार मे हो। आह, वह अन्धकार कितना गहरा होगा। 24 तुम दो स्वामियो, परमेश्वर और धन की सेवा नही कर सकते। क्योकि तुम एक से प्रेम तो दूसरे से घृणा रखोगे, या पहले से घृणा तो दूसरे से प्रेम रखोगे। 25 इसलिए मेरी सलाह है : खाने पीने और वस्त्रों की चिन्ता मत करो। क्योकि तुम्हारा जीवन और तुम्हारी देह, भोजन और वस्त्र से कही अधिक महत्वपूर्ण है। 26 पक्षियो को देखो। उनको चिन्ता नही कि क्या खाएगे—उन्हें बोने या काटने या भोजन जमा करने की आवश्यकता नही—क्योंकि तुम्हारा पिता जो स्वर्ग मे है उनको खिलाता है। और तुम उसकी दृष्टि में पक्षियों से कही अधिक मूल्यवान हो। 27 क्या तुम्हारी चिन्ताएं तुम्हारे जीवन का एक क्षण भी बढा सकती हैं? 28 और अपने वस्त्रो के लिए क्यों चिन्ता करते हो? मैदान के फ़ूलो पर ध्यान दो। उन्हें अपने वस्त्रों की चिन्ता नही। 29 तो भी राजा सुलैमान के राजसी ठाट बाट के वस्त्र इन फ़ूलों मे से किसी के भी बराबर सुन्दर न थे। 30 जब परमेश्वर इन फ़ूलो की, जो आज हैं और कल मुर्झा जाएगे, इतनी अद्भुत रीति से चिन्ता करता है, तो हे अल्पविश्वासियो, क्या वह निश्चय ही तुम्हारी चिन्ता न करेगा? 31, 32 इसलिए भोजन और वस्त्र की तनिक भी चिन्ता न करो। अन्य जातियो के समान क्यों बनना चाहते हो? वे इन सब बातों

[1] पिता से तात्पर्य परमेश्वर पिता से है। [2] अथवा "बुराई से।" कई हस्तलेखों में यहां यह वाक्य भी जुड़ा है, "क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरी ही है। आमीन।"

पर घमण्ड करते हैं और इनकी बड़ी चिन्ता
करते हैं। परन्तु स्वर्गनिवासी तुम्हारे पिता को
पहले ही अच्छी तरह मालूम है कि तुम्हे इनकी
आवश्यकता है। 33 और वह तुम्हे इनको देगा
यदि तुम अपने जीवन मे उसको पहला स्थान
दो और उसकी इच्छा के अनुसार जीवन
विताओ। 34 इसलिए कल के लिए व्याकुल मत
हो। परमेश्वर कल की चिन्ता आप करेगा।
आज के दिन आज के ही लिए जीओ।[3]

7 1 "किसी पर दोष मत लगाओ जिससे कि
तुम पर भी दोष न लगाया जाए। 2 क्योकि
दूसरे तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे, जैसा
तुम उनके साथ करोगे। 3 जब तुम्हारी ही आख
मे लकडी का बडा लट्ठा है तो किसी भाई की
आख के तिनके की चिन्ता क्यो करते हो?
4 लकडी के लट्ठे के कारण जब तुम देख ही
नही सकते, तो कैसे कह सकते हो, 'मित्र, ला मैं
तेरी आख का तिनका निकालने मे सहायता
करूं?' 5 पाखडी! पहले अपनी आख का लट्ठा
निकाल। तब तू अपने भाई की आख के तिनके
को निकाल सकेगा।

6 "दुष्टों को पवित्र वस्तुए मत दो। सुअरो
को मोती मत दो। वे मोतियों को रोद देंगे और
फिरकर तुम पर आक्रमण करेंगे।

7 "मागो, तो तुम्हे दिया जाएगा। ढूंढो,
तो पाओगे। खटखटाओ तो दरवाजा खोला
जाएगा। 8 क्योकि जो कोई मागता है, उसे
मिलता है। जो कोई ढूंढता है वह पाता है और
जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा।
9 ऐसा कौन सा पिता है कि जिसका पुत्र
रोटी मांगे तो उसे पत्थर दे। 10 और यदि
मछली मागे तो उसे साप दे? कदापि नही।
11 और यदि तुम कठोर हृदय के पापी मनुष्य,
अपने बच्चो को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो
तुम्हारा पिता जो स्वर्ग मे है, क्या अपने
मांगने वालों को निश्चय ही अच्छी वस्तुएं न
देगा। 12 दूसरो के साथ वैसा ही करो जैसा
तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें। यही
मूसा की व्यवस्था की शिक्षाओं का सार[1] है।

13 "सकरे द्वार से ही स्वर्ग में प्रवेश
किया जा सकता है क्योकि नरक[2] का मार्ग
चौरस है, और उसका द्वार इतना चौड़ा है कि
इस मार्ग को चुनने वाले लोगों की सारी भीड
उसमे प्रवेश कर सकती है। 14 परन्तु जीवन
का द्वार छोटा है, और रास्ता सकरा है और
केवल थोडे ही लोग इसे पाते हैं।

15 "झूठे शिक्षको से सावधान रहो जो
भेडो के भेष मे आते हैं, परन्तु वे भेड़िये हैं और
तुम्हें फाड खाएगे। 16 तुम उनके कार्य से
उनको पहचान सकते हो, जैसे किसी पेड को
उसके फल से पहचान लेते हो। तुम कंटीली
झाडियो से अंजीर नही तोड़ते। 17 अलग-
अलग प्रकार के पेड शीघ्र ही अपने फल से
पहचान मे आते हैं। 18 भले प्रकार का वृक्ष
बुरे फल नही ला सकता और बुरा वृक्ष अच्छा
फल नही ला सकता। 19 इसलिए हरएक पेड़
जो अच्छा फल नही लाता वह काटा और आग
मे झोका जाता है। 20 हा, किसी पेड या
व्यक्ति[3] को उसके फल द्वारा पहचाना जा सकता
है। 21 जितने अपने आपको भक्त कहते हैं
वे सब सचमुच धर्मी नही। वे मुझे 'प्रभु' कह
सकते हैं परन्तु स्वर्ग को नही जाएंगे। परन्तु जो
मेरे पिता की इच्छा पूरी करता है वही स्वर्ग मे
प्रवेश करेगा। 22 न्याय[4] के समय बहुतेरे मुझ
से कहेंगे, 'हे प्रभु, हमने क्या आपके नाम मे
भविष्यद्वाणी नही की और आपका नाम लेकर
दुष्टात्माओ को नही निकाला और आपके नाम
से बहुत से आश्चर्यकर्म नही किए? 23 परन्तु
मैं उनसे स्पष्ट कह दूगा, 'मैं तुम्हें जानता भी
नही[5]। हे कुकर्मियों मुझ से दूर हो जाओ।'
24 जो मेरी शिक्षाओं को सुनता और उ

[3] मूलत "आज के लिए आज का ही दुख बहुत है।" [2] मूलत "वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है।"
[1] मूलत "व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा यही है।" [5] मूलत "मैं ने तुमको कभी नहीं जाना।"
है। [4] मूलत "उस दिन।"

पर चलता है वह उस व्यक्ति के समान बुद्धिमान है, जो अपना घर चट्टान पर बनाता है। 25 चाहे जल का बड़ा प्रवाह और बाढ़ आए और जोर की आंधी उस घर से टकराए तो भी वह नहीं गिरेगा, क्योंकि वह चट्टान पर बना है। 26 परन्तु जो मेरी शिक्षाओं को सुनकर उन पर नहीं चलता वह उस व्यक्ति के समान मूर्ख है जो बालू पर अपना घर बनाता है। 27 क्योंकि जब वर्षा हो और बाढ़ आए और आंधी उस घर से टकराए, तो वह धड़ाके के साथ टूट कर गिर पड़ेगा।" 28 भीड़ यीशु के संदेश से चकित होती थी, 29 क्योंकि वह बड़े अधिकार के साथ शिक्षा देते थे, उनके यहूदी अगुवों[6] के समान नहीं।

8 1 जब यीशु पहाड़ पर से उतरे, तो बड़ी भीड़ उनके पीछे हो ली। 2 देखो! एक कोढ़ी मनुष्य आ रहा है। वह उनके सामने झुक कर दण्डवत करता है। कोढ़ी विनती करता है, स्वामी, यदि आप चाहें, तो मुझे चंगा कर सकते हैं। 3 यीशु, कोढ़ी को छूते हैं। वह कहते हैं, "हां मैं चाहता हूं तू चंगा हो जा।" उसी क्षण कोढ़ दूर हो जाता है। 4 तब यीशु उससे कहते हैं, "किसी से बात[1] करने के लिए मत रुकना, सीधे याजक के पास जाकर अपनी परीक्षा करवाना, और अपने साथ भेंट भी लेते जाना जो मूसा की व्यवस्था के अनुसार चंगे हुए कोढ़ियों को चढ़ानी पड़ती है—यह सबके सामने तेरी चंगाई की साक्षी होगी।

5, 6 जब यीशु कफरनहूम में पहुंचे, तो रोमी सेना के एक कप्तान ने आकर उनसे विनती की, कि वह उसके साथ घर जाएं और उसके सेवक को चंगा करें जो लकवे के कारण बिस्तर में बड़ी पीड़ा में था। 7 यीशु ने कहा, अच्छा, मैं आकर उसे चंगा करूंगा। 8 तब कप्तान ने कहा, "महाशय मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे घर पधारें, (और आपके लिए आना आवश्यक भी नहीं है[2])। यदि आप यहीं खड़े रहकर कह दें चंगा हो जा, तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। 9 मुझे मालूम है क्योंकि मैं भी अपने से बड़े अधिकारियों के आधीन हूं और मैं सिपाहियों पर अधिकारी हूं, और मैं एक से कहता हूं 'जा', तो वह जाता है, और दूसरे से, 'आ', तो वह आता है, और अपने नौकर से, यह या वह कर, तो वह करता है। और मैं जानता हूं कि आपको भी उसकी बीमारी को दूर होने की आज्ञा देने का अधिकार है—और बीमारी आपकी आज्ञा मानकर दूर हो जाएगी।" 10 यीशु आश्चर्य से खड़े रह गए! भीड़ की ओर फिरकर उन्होंने कहा, "पूरे इस्राएल देश में मैंने इस प्रकार का विश्वास नहीं देखा! 11 मैं तुम से कहता हूं, कि अनेक अन्यजाति (इस रोमी अधिकारी के समान), पूरे संसार से आएंगे और स्वर्ग के राज्य में इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ बैठेंगे। 12 और अनेक इस्राएली—जिनके लिए राज्य तैयार किया गया था—बाहर अंधेरे, विलाप तथा पीड़ा के स्थान में डाल दिए जाएंगे।" 13 तब यीशु ने रोमी अधिपति से कहा, "घर चला जा। जैसा तूने विश्वास किया, वैसा हो गया है!" और उसी समय नौकर चंगा हो गया।

14 जब यीशु पतरस के घर पहुंचे, पतरस की सास तेज बुखार में बिस्तर पर पड़ी थी। 15 परन्तु जब यीशु ने उसका हाथ पकड़ा, बुखार उतर गया, और उसने उठकर उनके लिए भोजन[3] तैयार किया! 16 उसी दिन संध्या के समय दुष्टात्माओं से पीड़ित कई लोग यीशु के पास लाए गए, और उनके एक शब्द कहते ही, सब दुष्टात्माएं निकल गईं और सब बीमार चंगे हो गए। 17 इससे यशायाह की भविष्यद्वाणी

[6] मूलतः "शास्त्रियों के समान नहीं।" ये अगुवे केवल दूसरों के वचनों को उद्धृत करते थे, किसी नवीन प्रकाशन को प्रस्तुत करने की क्षमता उनमें नहीं थी।

[1] मूलतः "देख, किसी से न कहना।" [2] यही आशय है। [3] मूलतः "उसकी सेवा करने लगी।"

पूरी हुई, 'उन्होंने हमारी दुर्बलताओं और बीमारियों को उठा लिया'।[4]

18 जब यीशु ने देखा कि भीड बढती ही जा रही है, तो उन्होने अपने शिष्यों को आज्ञा दी की झील पार कर दूसरी ओर जाने के लिए तैयार रहे। 19 उसी समय[5] यहूदियों के एक धार्मिक अगुवे[6] ने यीशु से कहा, "गुरु चाहे आप जहां जाए मैं आपके पीछे हो लूंगा!" 20 परन्तु यीशु ने कहा, लोमडियों की मांदें और पक्षियो के घोसले हैं, परन्तु मुझ, मसीह[7] के पास अपना कोई घर नही—मेरे लिए सिर रखने को भी जगह नही है। 21 उनके दूसरे चेले ने कहा, महाशय, जब मेरे पिता की मृत्यु हो जाएगी, तब मैं आपके पीछे हो लूंगा।[8] 22 परन्तु यीशु ने उससे कहा, "अभी[9] मेरे पीछे हो ले! जो आत्मिक रूप मे मृतक[10] हैं उन्हे अपने मृतकों की चिन्ता करने दे।

23 तब वह नाव पर सवार हुए और अपने शिष्यो के साथ झील पार करने लगे। 24 अचानक भयानक आंधी आई, नाव से भी ऊंची लहरे उठने लगी। परन्तु यीशु सो रहे थे। 25 शिष्यो ने चिल्लाकर उन्हें जगाया, "हे प्रभु, हमे बचाइये! हम डूब रहे हैं।" 26 परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, "हे अल्प-विश्वासियो! इतना क्यो डरते हो? तब उन्होने खडे होकर हवा और लहरो को डाँटा, और आंधी थम गई और सब शान्त हो गया। 27 शिष्य हक्का बक्का होकर बैठ गए। उन्होने आपस में पूछा, यह कौन हैं कि हवा और आंधी तक उनकी आज्ञा मानती हैं?

28 जब वे झील के दूसरे तट पर, गदरेनियो के देश मे पहुचे, तो दो पुरुष उन्हे मिले जिनमे दुष्टात्माएँ समाई थी। वे कब्रिस्तान मे रहते थे और इतने भयानक थे, कि उस ओर से कोई नही जा सकता था। 29 वे चीखकर उनसे कहने लगे, हे परमेश्वर के पुत्र, आप हमसे क्या चाहते हैं? आपको अधिकार नही कि अभी हमें पीड़ा दें।[11] 30 सुअरों का एक झुड कुछ दूरी पर चर रहा था, 31 इसलिए दुष्टात्माओं ने गिडगिडाकर कहा, "यदि आप हमे निकालें, तो सुअरों के उस झुड में भेज दीजिए।" 32 यीशु ने उनसे कहा, "ठीक है, निकल जाओ।" और वे उन मनुष्यो मे से निकलकर सुअरों मे समा गईं, और पूरा झुड ढालू किनारे पर से झपटकर पानी मे डूबकर मर गया। 33 चरवाहे पास के शहर मे दौडे, और जो हुआ था उसका हाल बताते गए, 34 और शहर के सारे लोग दौडते हुए यीशु को देखने आए, और उनसे विनती की कि उन्हें छोडकर चले जाएं।

9 1 इसलिए यीशु नाव पर सवार हुए और झील के पार अपने शहर कफरनहूम को गए। 2 शीघ्र ही कुछ लोग लकवे से पीडित एक लडके को खाट पर लिटाकर लाए। जब यीशु ने उनका विश्वास देखा तो बीमार लडके से कहा, बेटे, खुश हो! क्योकि मैंने तुम्हारे पाप क्षमा किए हैं! 3 कई धार्मिक अगुवे काना-फूसी करने लगे, "यह तो परमेश्वर की निन्दा है! यह मनुष्य स्वयं को परमेश्वर कह रहा है।" 4 यीशु ने जान लिया कि वे क्या सोच रहे हैं और उनसे पूछा, तुम क्यों ऐसे बुरे विचार कर रहे हो? 5, 6 मुझ, मसीह[1] को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है। किन्तु बोलना सहज है—कोई भी ऐसा कह सकता है। इसलिए मैं इस मनुष्य को चंगा करके तुमको प्रमाण दूंगा। तब लकवे से पीड़ित मनुष्य की ओर फिरकर, उन्होंने आज्ञा दी, "अपनी खाट उठा और घर चला जा, क्योकि तू

[4] यशायाह 53 4। [5] यही आशय है। [6] मूलत "एक शास्त्री।" [7] मूलत "मनुष्य के पुत्र।" [8] अथवा, "मुझे पहले जाने दे, कि अपने पिता को दफना दू।" [9] यही आशय है। [10] मूलत मुरदो को अपने मुरदे गाडने दे।" [11] मूलत "क्या तू समय से पहिले हमें दुख देने यहां आया है?"

[1] मूलत "मनुष्य के पुत्र।"

चंगा हो गया है।" 7 और वह मनुष्य खड़ा होकर चला गया। 8 भीड़ के लोगों में भय समा गया जब उन्होंने इस घटना को अपनी आँखों के सामने होते देखा। उन्होंने एक मनुष्य को ऐसा अधिकार देने के लिए, परमेश्वर की प्रशंसा की!

9 जब यीशु मार्ग पर जा रहे थे, उन्होंने कर वसूल करने वाले, मत्ती[2] को, चुंगी की चौकी पर बैठे देखा। यीशु ने उससे कहा, "आ और मेरा शिष्य बन जा," और मत्ती उठकर उनके साथ चला गया।

10 कुछ समय बाद, जब यीशु और उनके शिष्य मत्ती के घर[3] पर भोजन कर रहे थे, तो वहाँ कई कुख्यात घूसखोर भी पाहुन थे। 11 फरीसी आगबबूला हो गए। "तुम्हारे गुरु ऐसे लोगों की संगति क्यों करते हैं?" 12 यीशु का उत्तर था, "क्योंकि जो लोग भले चंगे हैं उन्हें वैद्य की आवश्यकता नहीं! परन्तु बीमारों को आवश्यकता है!" 13 तब उन्होंने फिर कहा, "अब जाओ और धर्मशास्त्र के इस पद का अर्थ सीखो, मैं तुम्हारे बलिदानों और तुम्हारी भेंटों को नहीं चाहता—मैं चाहता हूं कि तुम दयालु बनो।[4] क्योंकि मैं उनके लिए नहीं आया जो अपने को धर्मी समझते हैं, परन्तु पापियों को परमेश्वर की ओर फेरने आया हूं।"

14 एक दिन बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के शिष्य यीशु के पास आए और उनसे पूछा, "आपके शिष्य उपवास क्यों नहीं करते, जैसे हम और फरीसी करते हैं?" 15 यीशु ने प्रश्न किया, "दूल्हा जब साथ हो तो क्या उसके मित्र शोक और उपवास कर सकते हैं? परन्तु वह समय आ रहा है जब मैं[5] उनसे अलग हो जाऊंगा। उस समय वे उपवास करेंगे। 16 पुराने वस्त्र पर नए कपड़े का पैबन्द कौन लगाएगा? क्योंकि पैबन्द से वस्त्र और भी खिंच जाएगा और पहले से अधिक फट जाएगा। 17 और नया दाखरस पुरानी मशकों[6] में कौन जमा करेगा? क्योंकि दबाव से पुराना चमड़ा फट जाएगा और दाखरस बह जाएगा और चमड़ा खराब हो जाएगा नया दाखरस जमा करने के लिए केवल नई मशकों को काम में लाते हैं इस प्रकार दोनों बचे रहते हैं।"

18 जब यीशु यह कह रहे थे, तो उस स्थान के यहूदियों के स्थानीय आराधनालय के गुरु ने आकर उनको प्रणाम किया। उसने कहा, "मेरी छोटी बेटी अभी कुछ समय पहले मर गई है। परन्तु यदि आप केवल आकर उसे छुएँ, तो वह फिर जीवित हो जाएगी।" 19 जब यीशु और शिष्य आराधनालय के गुरु के घर जा रहे थे, 20 एक स्त्री, जिसे बारह वर्ष से लोहू बहने का रोग था, यीशु के पास आई और उसने उनके वस्त्र का छोर छुआ, 21 क्योंकि उसका विचार था, "यदि मैं केवल उनको छू लूं तो चंगी हो जाऊंगी।" 22 यीशु ने फिर कर उससे कहा, "बेटी, सब ठीक है! तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।" और उसी क्षण से वह स्त्री अच्छी हो गई। 23 जब यीशु यहूदियों के गुरु के घर पहुंचे और उन्होंने शोर मचाती हुई भीड़ को देखा जो विलाप कर रही थी। 24 तो कहा, "इन्हें बाहर निकालो, क्योंकि लड़की मरी नहीं है, वह केवल सो रही है!" तब वे सब उन पर हंसने लगे और उनका ठट्ठा उड़ाने लगे! 25 अन्त में जब भीड़ बाहर हुई, यीशु अन्दर गए, जहां लड़की पड़ी थी। उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और लड़की उठ बैठी और ठीक हो गई! 26 इस अद्भुत आश्चर्यकर्म की सूचना सम्पूर्ण क्षेत्र में फैल गई।

27 जब यीशु उस घर से जा रहे थे, तब दो अंधे मनुष्य यह चिल्लाते हुए उनके पीछे हो लिए, "हे राजा दाऊद की संतान, हम पर दया कीजिए।" 28 वे सीधे उस घर में गए जहां यीशु ठहरे हुए थे, और यीशु ने उनसे पूछा, "क्या तुम विश्वास करते हो कि मैं तुम्हें दृष्टि दे

[2] मत्ती, जिसने यह पुस्तक लिखी। [3] यही आशय है। [4] होशे 6 6। [5] मूलतः "दूल्हा।" [6] दाखरस रखने के लिए चमड़े की थैलियाँ।

सकता हूं ?" उन्होंने यीशु से कहा, "हां, प्रभु, हम विश्वास करते हैं।" 29 तब यीशु ने उनकी आंखें छूकर कहा, "तुम्हारे विश्वास के कारण तुम देखने लगोगे।" 30 अचानक उन्हे दिखाई देने लगा! यीशु ने उन्हें कडे शब्दों मे चिताया कि इस विषय मे किसी से न कहें, 31 परन्तु उल्टे उन्होने यीशु का यश पूरे शहर[7] में फैला दिया।

32 उस स्थान से बाहर निकलते ही, यीशु एक व्यक्ति से मिले जो बोल नही सकता था क्योंकि उसमें दुष्टात्मा थी। 33 इसलिए यीशु ने दुष्टात्मा को बाहर निकाला, और उसी क्षण वह मनुष्य बोलने लगा। भीड दंग रह गई! उन्होने कहा, "हमने अपने जीवन भर ऐसा काम कभी नही देखा।" 34 परन्तु फरीसियों ने कहा, "वह इसीलिए दुष्टात्माओ को निकाल सकता है *क्योंकि उसी मे दुष्टात्मा अर्थात् दुष्टात्माओ का* राजा शैतान, समाया हुआ है!"

35 यीशु ने यहूदी आराधनालयो मे शिक्षा देते हुए और राज्य का सुसंदेश सुनाते हुए, उस क्षेत्र के सब शहरों और गावो की यात्रा की। और वह जहां भी गए, उन्होने सब प्रकार के बीमारों को चंगा किया। 36 और उन्होंने भीड़ के लोगों पर बडा तरस खाया, क्योकि उन लोगों की समस्याएं बहुत अधिक थी और वे नहीं जानते थे कि क्या करें या सहायता के लिए कहा जाएं। वे उन भेड़ों के समान थे जिनका कोई चरवाहा न हो। 37 उन्होंने अपने चेलों से कहा, "फसल इतनी अधिक है और मजदूर बहुत थोडे हैं। 38 इसलिए खेत के स्वामी से विनती करो कि फसल काटने के लिए और मजदूर भेजे।"

10 1 यीशु ने अपने बारह शिष्यों को पास बुलाया, और उन्हें अधिकार दिया कि दुष्टात्माओ को निकालें और हर प्रकार की दुर्बलता और बीमारी को चंगा करें।

2, 3, 4 उनके बारह शिष्यों के नाम इस प्रकार हैं: शमौन (जो पतरस भी कहलाता है), *अन्द्रियास (पतरस का भाई), याकूब (जबदी* का पुत्र), यूहन्ना (याकूब का भाई), फिलिप्पुस, बरतुल्मै, थोमा, मत्ती (कर वसूल करने वाला), याकूब (हलफै का पुत्र), तद्दै, शमौन (विद्रोही-राजनैतिक दल 'जेलोतेस', का सदस्य), यहूदा इस्करियोती (जिसने यीशु से विश्वासघात किया)।

5 यीशु ने उन्हें ये आज्ञाएं देकर भेजा: "अन्यजातियों और सामरियो के पास मत जाओ, 6 परन्तु केवल इस्राएल के लोगों—परमेश्वर की खोई हुई भेड़ो के पास जाओ, 7 और जाकर प्रचार करो कि स्वर्ग का राज्य निकट[1] है। 8 बीमारों को चंगा करो, मुरदो को जिलाओ, कोढियो को शुद्ध करो, और दुष्टात्माओं को *निकालो। तुमने जैसे उदारता से पाया है* वैसे ही उदारता से दो। 9, 10 मार्ग मे जाते समय न पैसा लेना न थैला न उसमे अतिरिक्त वस्त्र न जूतिया रखना न लाठी लेना, क्योंकि तुम जिनकी सहायता करते हो, उन्हें चाहिए कि तुमको भोजन दें और तुम्हारी चिन्ता करें। 11 जब भी तुम किसी शहर या गांव में प्रवेश करो, तो किसी धर्मी व्यक्ति का घर खोजो और *उसी के घर मे ठहरो जब तक दूसरे शहर के* लिए निकल न जाओ। 12 जब तुम ठहरने की अनुमति मागो, तो मित्र-भाव से मागो। 13 और यदि वह घर धर्मी व्यक्ति का हो, तो उस पर *अपनी आशीष दो, यदि नही तो अपनी आशीष* रहने दो। 14 जिस शहर या घर मे तुम्हें ग्रहण न किया जाए—उस स्थान को छोड़ते समय वहां की धूल भी अपने पैर से झाड़ दो। 15 वास्तव मे, न्याय के दिन सदोम और अमोरा के दुष्ट शहरों की दशा उनसे अच्छी होगी।

16 "मैं तुम्हें भेड़ो के समान भेडियों के बीच मे भेजता हूँ। सापों जैसे सतर्क और

---

[7] मूलत: "सारे देश में।"

[1] "निकट आ गया है।"

कबूतरों जैसे भोले बनो। 17 परन्तु सावधान! क्योंकि तुम क़ैद किए जाओगे, तुम पर मुकद्दमा चलेगा, और तुम आराधनालयों में कोड़ों से मारे जाओगे। 18 हां, और मेरे नाम के कारण राजाओं और शासकों के सामने तुम पर मुकद्दमा चलाया जाएगा। इस से तुम्हें मेरे विषय मे उनको बताने, व संसार को साक्षी देने का अवसर मिलेगा। 19 जब तुम पकड़े जाओ, तो अपने मुकद्दमे मे क्या कहोगे, इसकी चिन्ता मत करना, क्योंकि तुम्हे ठीक समय पर ठीक शब्द दिए जाएंगे। 20 क्योंकि बात करने वाले तुम न होगे—परन्तु तुम्हारे स्वर्ग निवासी पिता का आत्मा तुममे होकर बोलेगा! 21 भाई, भाई का विश्वासघात कर मृत्यु के लिए सौंपेगा, और पिता अपनी ही संतानो से विश्वासघात करेंगे और बच्चे अपने ही माता-पिता के विरुद्ध होकर उनकी मृत्यु का कारण होंगे। 22 तुम मेरे हो इस कारण सब तुमसे घृणा करेंगे। परन्तु तुम सब जो अन्त तक धीरज रखोगे, उद्धार पाओगे। 23 जब तुम एक शहर में सताए जाओ, तो दूसरे मे भाग जाना। इससे पहले कि तुम सब शहरों मे फिर चुको मैं[2] वापिस आऊंगा।

24 "विद्यार्थी अपने गुरु से बड़ा नही होता। नौकर अपने स्वामी पर अधिकारी नही। 25 विद्यार्थी अपने गुरु के जीवन मे सहभागी होता है और नौकर मालिक के! और जब मुझ, घर के मालिक को ही 'शैतान'[3] कहा गया है, तो तुम्हें क्या न कहा जाएगा! 26 परन्तु जो तुम्हें धमकाएं उनसे मत डरना। क्योंकि समय आ रहा है जब सत्य प्रकट हो जाएगा: उनकी कपट भरी गुप्त योजनाओ को सब लोग जान लेंगे। 27 जो मैंने तुमसे अभी अन्धकार में कहा है, उसे पौ फटते ही सबसे कहो। जो मैंने तुम्हारे कान में धीमे से कहा है उसे घर की छत से प्रचार करो। 28 उनसे न डरो जो केवल तुम्हारी देह को घात कर सकते हैं—परन्तु तुम्हारी आत्मा की हानि नही कर सकते केवल परमेश्वर ही से डरो जो तुम्हारी आत्मा और शरीर को नरक में नाश कर सकता है। 29 तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना एक गौरैया भी भूमि पर नहीं गिर सकती। (उनका मूल्य ही कितना होता है?—पैसे मे दो।) 30 और तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं। 31 इसलिए चिन्ता मत करो! तुम उनकी दृष्टि मे अनेक गौरैयों से कही अधिक बहुमूल्य हो। 32 यदि कोई सबके सामने मुझे अपना मित्र मान ले, तो मैं भी स्वर्ग निवासी अपने पिता के सामने उसे अपना मित्र मान लूगा। 33 परन्तु यदि कोई सबके सामने मेरा इन्कार करे, तो मैं भी स्वर्ग निवासी अपने पिता के सामने उसका इन्कार करूंगा। 34 यह न सोचो कि मैं पृथ्वी पर शान्ति कराने आया हू! नही, परन्तु, तलवार चलवाने। 35 मैं आया हू कि मनुष्य को उसके पिता के विरुद्ध और पुत्री को उसकी माता के विरुद्ध और बहू को उसकी सास के विरुद्ध करू—36 मनुष्य के सबसे बुरे शत्रु ठीक उसी के घर मे होंगे। 37 यदि तुम मेरी अपेक्षा अपने माता-पिता से अधिक प्रेम रखते हो तो तुम मेरे योग्य नही, या तुम यदि अपने पुत्र या पुत्री से मेरी अपेक्षा अधिक प्रेम करते हो तो तुम मेरे योग्य नही। 38 यदि तुम अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे चलने से इन्कार करो, तो तुम मेरे योग्य नही। 39 यदि तुम अपना जीवन प्रिय जानो, तो उसे खो दोगे, परन्तु यदि मेरे कारण उसे दे दो, तो उसे बचाओगे। 40 जो तुम्हें ग्रहण करते, वे मुझे ग्रहण करते हैं। और जब वे मुझे ग्रहण करते हैं, तो वे मेरे पिता को, जिसने मुझे भेजा, ग्रहण करते हैं। 41 यदि तुम भविष्यद्वक्ता को इसलिए ग्रहण करो क्योंकि वह परमेश्वर का जन है, तो तुम्हे वही प्रतिफल मिलेगा जो भविष्यद्वक्ता को दिया जाएगा। और यदि तुम भले और धर्मी पुरुषो को उनकी धार्मिकता के कारण

[2] मूलत. "मनुष्य का पुत्र।" [3] मत्ती 9 34 पढ़िये जहां यीशु को ऐसा कहा गया है।

ग्रहण करो, तो तुम्हें भी उन्ही के समान प्रतिफल मिलेगा। 42 और यदि, मेरे प्रतिनिधि होकर, *तुम किसी छोटे बच्चे को एक प्याला ठंडा पानी* भी दो, तो अवश्य प्रतिफल पाओगे।"

11 1 जब यीशु अपने बारह शिष्यों को ये आज्ञाएं दे चुके, वह उन शहरो मे प्रचार करते हुए गए जहां जाने का उनका निश्चय था।[1]

2 यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने, जो अब जेलखाने मे था, मसीह के सब आश्चर्यकर्मों के विषय मे सुना, तो उसने अपने शिष्यों को यीशु से पूछने भेजा, 3 "क्या आप वही हैं जिनकी प्रतीक्षा मे हम हैं, या हम प्रतीक्षा करते रहे ?" *4 यीशु ने उनसे कहा, "यूहन्ना के पास लौटकर* उन आश्चर्यकर्मों के विषय मे बताओ, जिन्हे तुमने मुझे करते देखा है—5 अंधे देखते हैं, लंगडे बिना सहारा लिए चलते हैं, कोढी शुद्ध होते हैं, बहरे सुनते हैं, और मृतक, जीवन पाते हैं, उसे यह बताओ कि मैं गरीबो को सुसंदेश का प्रचार करता हू। 6 उससे कहो, 'धन्य हैं वे जो मुझ पर संदेह नही करते'।" 7 जब यूहन्ना के शिष्य चले गए, तब यीशु उसके विषय में भीड से कहने लगे। "जब तुम निर्जन वन मे यूहन्ना को देखने गए तो उसे किसके समान देखने की आशा करते थे ? हवा से हिलती हुई घास के समान ? 8 या क्या तुम उसे महल के राजकुमार के समान वस्त्र पहने हुए देखने की आशा रखते थे ? 9 या परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता के समान ? हाँ, और वह भविष्यद्वक्ता से बढकर है। 10 क्योंकि यूहन्ना वही व्यक्ति है जिसके विषय मे धर्मशास्त्र मे लिखा है—वह मेरे आगे जाने वाला दूत है, कि मेरे आने का प्रचार करे और लोगो को मुझे ग्रहण करने के लिए तैयार करे[2]। 11 सच है, आज तक जितने व्यक्ति पैदा हुए, उनमे से कोई भी यूहन्ना के समान प्रतिभाशाली नही हुआ। तो भी स्वर्ग *के राज्य मे कम प्रतिभाशाली लोग भी यूहन्ना* से बढकर होंगे। 12 जब से यूहन्ना ने प्रचार करना और बपतिस्मा देना शुरु किया, आज तक लोगों की भीड स्वर्ग के राज्य की ओर बढ रही है[3], 13 क्योंकि सारी व्यवस्था और सब भविष्यद्वक्ता (मसीह की[4]) प्रतीक्षा मे थे। 14 तब यूहन्ना प्रकट हुआ, और यदि तुम मेरी बात का अर्थ समझना चाहते हो, तो सुनो—वही एलिय्याह है, जिसके विषय मे भविष्यद्वक्ताओ ने कहा था कि वह (राज्य[1] के शुरु होने के समय) आएगा। 15 यदि तुम कभी *भी सुनने के इच्छुक हुए हो तो अब सुन लो।* 16 मैं इस प्रजा के विषय मे क्या कहूँ ? ये लोग उन बालकों के समान हैं जो खेल मे अपने साथियों से कहते हैं, 17 हमने शादी का खेल खेला, और तुम खुश नही हुए, इसलिए हमने मृत्यु का खेल खेला पर तुम उदास नही हुए।' 18 क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला दाखरस तक नही पीता और बहुत बार बिना खाए रहता है, और तुम कहते हो, 'वह पागल है।'[5] 19 और मैं, 'मसीह'[6] खाता पीता हूँ, और तुम दोष लगाते हो कि मैं पेटू और पियक्कड हूँ और दुष्ट पापियो के साथ घूमता फिरता हूँ!' परन्तु तुम जैसे ज्ञानी लोग अपने सब अनुचित व्यवहारो को भी उचित ठहराते हो!"[7]

20 तब यीशु ने उन शहरो को धिक्कारना शुरु किया, जहा उन्होने सबसे अधिक आश्चर्यकर्म किए थे, क्योंकि वे परमेश्वर की ओर नहीं फिरे थे। 21 "हाय खुराजीन, तुम पर हाय, बैतसैदा[1] तुम पर धिक्कार है, क्योंकि जो आश्चर्यकर्म मैंने तुम्हारी सडको पर किए, यदि वे सूर और सैदा[8] के दुष्ट शहरो मे किए गए होते, तो वहाँ

---

[1] मूलत "उनके नगरो मे उपदेश और प्रचार करने को।". लूका 10 1 मे लिखा है, "प्रभु ने सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए और जिस जिस नगर और जगह को वह आप जाने पर थे, वहाँ दो दो करके अपने आगे भेजा।"
[2] मूलत "जो तेरे आगे तेरा मार्ग तैयार करेगा।" [3] मूलत "अब तक स्वर्ग के राज्य पर जोर होता रहा है, और बलवान उसे छीन लेते हैं।" [4] यही आशय है। [5] मूलत. "उसमें दुष्टात्मा है।" [6] मूलत "मनुष्य का पुत्र।"
[7] मूलत "ज्ञान अपने कामों से सच्चा ठहराया गया है।"

के लोग बहुत पहले ही लज्जा से दीन होकर पश्चाताप कर लेते। 22 सच, न्याय के दिन सूर और सैदा की दशा तुम से कहीं अधिक अच्छी होगी! 23 और कफरनहूम, चाहे तेरा कितना ही आदर हो,[8] तू नरक मे उतारा जाएगा! क्योंकि जो अद्भुत आश्चर्यकर्म मैंने तुझ में किए यदि सदोम में किए जाते, तो वह आज भी बना रहता। 24 सच, न्याय के दिन सदोम की दशा तुझ से कहीं अधिक अच्छी होगी।"

25 यीशु ने यह प्रार्थना की: "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी, तेरा धन्यवाद हो कि तूने स्वयं को ज्ञानी समझने वालों से सत्य को छिपा रखा, और छोटे बच्चों पर प्रकट किया। 26 हां, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा। 27 पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है। केवल पिता, पुत्र को जानता है और पिता को पुत्र ही जानता है और वे लोग जिन पर पुत्र उनको प्रकट करता है। 28 तुम सब जो भारी जूए से दबे हुए परिश्रम करते हो, मेरे पास आओ और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। 29, 30 मेरा जुआ उठा लो—क्योंकि वह तुम्हारे उठाने योग्य है—और मुझसे सीखो, क्योंकि मैं नम्र और दीन हूं, और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे, क्योंकि मैं तुम्हें केवल हलका बोझ ही देता हूं।"

12 1 एक दिन यीशु अपने शिष्यों के साथ खेतों मे से होकर जा रहे थे। वह यहूदियों का आराधना का दिन सब्त* था, और शिष्य भूखे थे, इसलिए वे गेहूं की बालें तोडकर खाने लगे। 2 परन्तु कुछ फरीसियों ने उन्हें खाते देखकर विरोध किया, "आपके शिष्य व्यवस्था का उल्लंघन कर रहे हैं। वे सब्त के दिन फसल काट रहे हैं।" 3 परन्तु यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुमने कभी नहीं पढा कि राजा दाऊद ने क्या किया जब वह और उसके मित्र भूखे थे? 4 वह मन्दिर मे गया और उन्होंने भेंट की रोटियां खाईं जिन्हें केवल याजको को ही *खाने की आज्ञा थी। वह भी व्यवस्था को तोड़ना* था। 5 और क्या तुमने मूसा की व्यवस्था में कभी नही पढ़ा कि याजक मन्दिर में सब्त के दिन भी काम कर सकते हैं? 6 और वास्तव मे, यहां वह है जो मन्दिर से भी बडा है। 7 परन्तु यदि तुम धर्मशास्त्र के इस पद का अर्थ जानते होते, 'मैं तुम्हारी भेंटों से अधिक यह चाहता हूं कि तुम दयालु बनो,' तो तुम निर्दोषों को दोषी नही ठहराते! 8 क्योंकि मैं, मसीह[1], सब्त का भी स्वामी हूं।"

9 तब यीशु आराधनालय को गए, 10 और उन्होंने वहां एक सूखे हाथ वाले व्यक्ति को देखा। फरीसियों[2] ने यीशु से प्रश्न किया, "क्या सब्त के दिन चंगाई का काम करना ठीक है?" (उनकी आशा थी कि यीशु 'हां' अवश्य कहेंगे और वे यीशु को पकड़[3] लेंगे!) 11 उनका उत्तर था, यदि तुम्हारे पास एक ही भेड होती, और वह सब्त के दिन कुएं मे गिर जाती, तो क्या तुम उसको बचाने के लिए सब्त के दिन काम न करते? अवश्य करते[2]। 12 फिर एक व्यक्ति तो भेड से कितना अधिक मूल्यवान है! हां, सब्त के दिन भला करना ठीक है। 13 तब यीशु ने उस व्यक्ति से कहा, "अपना हाथ बढा" जब उसने बढाया तो उसका हाथ, दूसरे हाथ के समान ठीक हो गया। 14 तब फरीसियों ने यीशु को पकड़ने और मार डालने का षड्यंत्र रचने के लिए सभा बुलाई। 15 परन्तु यीशु ने जान लिया और वह आराधनालय से चले गए और बहुत लोग उनके पीछे हो लिए। 16 परन्तु उन्होंने उनको सावधान किया कि उनके आश्चर्यकर्म का संदेश न फैलाएं। 17 इससे यीशु के विषय में यशायाह की यह भविष्यद्वाणी

[8] ये शहर अपनी दुष्टता के कारण परमेश्वर द्वारा नष्ट हुए। [9] मसीह के वहां रहने के कारण प्रतिष्ठित।
* अर्थात् विश्राम दिन जिसमे यहूदी कोई कार्य नहीं करते। [1] मूलत: "मनुष्य का पुत्र।" [2] यही आशय है।
[3] मूलत "दोष लगाने।"

पूरी हुई : 18 "मेरे सेवक को देखो। मेरे चुने हुए पर दृष्टि करो। यह मेरा प्रिय है, जिससे मेरा मन आनन्दित है। मैं अपना आत्मा उस पर डालूंगा, और वह देश देश का न्याय करेगा। 19 वह न लड़ता न शोर मचाता है, न ही ऊंचे स्वर से चिल्लाता है! 20 वह कमजोरों को नहीं कुचलता, न ही छोटी से छोटी आशा को बुझाता है, वह अपनी अन्तिम विजय से सब संघर्ष मिटाएगा, 21 और उसका नाम, पूरे संसार की आशा रखा जाएगा"।[4]

22 तब एक दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति जो अन्धा और गूंगा दोनों था—यीशु के पास लाया गया, और यीशु ने उसे चंगा किया और वह बोलने और देखने लगा। 23 भीड़ अवाक रह गई। लोगों ने कहा, "हो सकता है, यीशु ही मसीह[5] है"। 24 परन्तु जब फरीसियों ने आश्चर्यकर्म के विषय में सुना तो उन्होंने कहा, "वह दुष्टात्माओं को निकाल सकता है क्योंकि वह दुष्टात्माओं का राजा, शैतान[6] है।" 25 यीशु ने उनका विचार जान लिया और कहा, "जिस राज्य में फूट होती है, वह नष्ट हो जाता है। जिस शहर या घर में ही फूट होती है, वह बना नहीं रह सकता। 26 और यदि शैतान ही शैतान को निकाल रहा है, तो अपने ही विरुद्ध लड़ रहा है और अपना ही राज्य नष्ट कर रहा है। 27 और यदि, जैसा तुम्हारा दावा है कि, मैं शैतान की शक्ति से दुष्टात्माओं को निकाल रहा हूं तो तुम्हारे लोग किसकी शक्ति से दुष्टात्माओं को निकालते हैं? तुम्हारे अभियोग का वे ही उत्तर दें! 28 परन्तु यदि मैं परमेश्वर की आत्मा के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता हूं तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे मध्य आ पहुंचा है। 29 कोई भी शैतान[7] के राज्य को तब तक नहीं लूट सकता जब तक उसे पहले बाँध न ले। उसे बाँधकर ही दुष्टात्माओं को निकाला जा सकता है।[8] 30 जो कोई मेरी सहायता नहीं कर रहा है, वह मेरी हानि कर रहा है। 31, 32 मेरी निन्दा और दूसरे पाप भी क्षमा हो सकते हैं—केवल एक पाप अर्थात पवित्र आत्मा के विरुद्ध बोलना कभी क्षमा नहीं किया जाएगा, न तो इस संसार में और न आने वाले संसार में। 33 पेड़ अपने फल से पहचाना जाता है। अच्छे प्रकार के पेड़ों से अच्छा फल उत्पन्न होता है और बुरे पेड़ों से बुरा। 34 हे सांप के बच्चो! तुम जैसे बुरे व्यक्ति, अच्छी और उचित बातें कैसे कर सकते हो? क्योंकि मनुष्य का मन उसकी बातों में पहचाना जाता है। 35 भले मनुष्य की बातें उसके मन के भले भंडार को दर्शाती हैं। दुष्ट हृदय का मनुष्य विष से भरा रहता है और वही उसकी बातों से भी प्रकट होता है। 36 और मैं तुमसे कहता हूं, कि तुमको अपनी हर एक बात का भी न्याय के दिन लेखा देना होगा। 37 अभी जो बातें तुम करते हो, उन्हीं पर तुम्हारा भाग्य उस दिन निर्भर होगा, तुम अपने वचनों ही के द्वारा निर्दोष या दोषी ठहरोगे।"

38 एक दिन यहूदी अगुए, जिनमें फरीसी भी शामिल थे, यीशु के पास आए, और उनसे कोई आश्चर्यकर्म दिखाने की विनती करने लगे जिससे प्रमाणित हो कि वास्तव में वह ही मसीह हैं। 39, 40 परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, "केवल एक दुष्ट और अविश्वासी जाति ही और प्रमाण मांग सकती है, परन्तु भविष्यद्वक्ता योना के साथ जो हुआ, उसे छोड़ और कोई प्रमाण नहीं दिया जाएगा! क्योंकि जैसे योना विशाल मछली के पेट में तीन दिन और तीन रात रहा, वैसे ही मैं—मसीह,[9] भी पृथ्वी के गर्भ में तीन दिन और तीन रात रहूंगा। 41 न्याय के दिन नीनवे के लोग इस जाति के विरुद्ध उठेंगे और तुम पर दोष लगाएंगे। क्योंकि जब योना ने उनमें प्रचार किया तो वे

[4] यशायाह 42 1-4 [5] मूलत "दाऊद की संतान।" [6] मूलत "बालजबूल।" [7] मूलत "बलवन्त।" [8] मूलत "तब वह उसका घर लूट लेगा।" [9] मूलत "मनुष्य का पुत्र।"

अपने सब बुरे कामों से पश्चाताप कर के परमेश्वर की ओर फिरे। और अब योना से भी महान यहां है—और तुम उस पर विश्वास करने से इन्कार करते हो। 42 शीबा की रानी न्याय के दिन इस जाति के विरुद्ध उठकर इसे दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिए दूर देश से आई, और अब सुलैमान से भी महान यहां है—और तुम उस पर विश्वास करने से इन्कार करते हो। 43, 44, 45 यह दुष्ट जाति उस व्यक्ति के समान है जिसमें एक दुष्टात्मा समाई हो। क्योंकि यदि दुष्टात्मा निकल जाती है, तो वह निर्जन स्थान[10] में थोड़े समय के लिए जाकर, विश्राम खोजती है परन्तु पाती नहीं। तब कहती है, 'मैं जिस मनुष्य में से निकली थी, उसी में वापिस जाऊँगी।' तब वह लौटती है और उस मनुष्य के हृदय को साफ परन्तु खाली पाती है। तब दुष्टात्मा अपने से भी अधिक सात बुरी दुष्टात्माओं को लाती है, और सब उस मनुष्य में समाकर वहीं रहने लगती हैं और तब उस व्यक्ति की दशा पहले से भी बुरी हो जाती है।"

46, 47 जब लोगों से खचाखच भरे घर[11] में यीशु बोल रहे थे, उनकी माता और भाई बाहर खड़े थे, और उनसे बातें करना चाहते थे। जब किसी ने उनको बताया कि वे वहां हैं, 48 तो उन्होंने कहा, "कौन है मेरी माता? और कौन हैं मेरे भाई?" 49 उन्होंने अपने शिष्यों की ओर संकेत करके कहा, "देखो! ये मेरी माँ और मेरे भाई हैं।" 50 तब उन्होंने फिर कहा, "जो कोई स्वर्ग में रहने वाले मेरे पिता की आज्ञा मानता है, वही मेरा भाई, मेरी बहिन और माँ है।"

13 1 उसी दिन कुछ समय बाद, यीशु उस घर से निकलकर झील के किनारे गए, 2, 3 जहां एक बड़ी भीड़ शीघ्र ही इकट्ठी हो गई। वह नाव पर चढ़ गए और वहां से भीड़ को उपदेश देने लगे। उन्होंने अपने उपदेश में कई उदाहरण दिए जैसे उनमें से एक यह है: "एक किसान अपने खेत में बीज बो रहा था। 4 जब उसने भूमि पर बीज छिड़के तो कुछ मार्ग के किनारे गिरे, और चिड़ियों ने आकर उनको चुग लिया। 5 और कुछ पथरीली भूमि पर गिरे और वहां मिट्टी गहरी नहीं थी, उथली मिट्टी पर पौधे शीघ्र ही उग गए, 6 किन्तु सूर्य की तपन से जल्दी ही सूखकर मुर्झा गए, क्योंकि उनकी जड़ें गहराई तक नहीं गई थीं। 7 कुछ बीज कंटीली झाड़ियों में गिरे, और काँटों ने अंकुरों को दबा दिया। 8 किन्तु कुछ उपजाऊ मिट्टी पर गिरे, और जितना बोया गया था, उससे तीस, साठ और सौ गुणा तक फसल उत्पन्न हुई। 9 यदि तुम्हारे कान हैं, तो सुनो!"

10 यीशु के शिष्यों ने आकर उनसे कहा, "आप हमेशा ऐसे उदाहरण क्यों देते हैं जिनको समझना कठिन है?" 11 तब यीशु ने उन्हें समझाया कि स्वर्ग के राज्य के विषय में समझने की सामर्थ तुम ही को मिली है, दूसरों को नहीं। 12, 13 यीशु ने उनसे कहा, "क्योंकि जिसके पास है, उसे अधिक दिया जाएगा और उसके पास बहुतायत से हो जाएगा, परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे वह थोड़ा सा भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। इसीलिए मैं ये उदाहरण देता हूं, ताकि लोग सुनें और देखें परन्तु न समझें।"[2] 14 इससे यशायाह की भविष्यद्वाणी पूरी होती है: 'वे सुनते तो हैं, परन्तु समझते नहीं, वे देखते तो हैं, परन्तु उन्हें सूझता नहीं! 15 क्योंकि उनके हृदय भारी और मोटे हो गए हैं, और वे कानों से ऊँचा सुनते हैं। और उन्होंने नींद में आंखें बन्द कर

---

[10] मूलत "सूखी जगहों में विश्राम ढूढ़ती फिरती है।" [11] मरकुस 3 32 का यही आशय है।

[2] जिनमें आत्मिक सत्यता को ग्रहण करने की क्षमता थी उन्होंने उदाहरण समझा। दूसरों के लिए वे निरर्थक कहानियां थीं।

ो हैं, 16 ताकि न देखें न सुनें न समझें और परमेश्वर की ओर फिरें, जिससे कि मैं उन्हें ंगा करूं।' परन्तु तुम्हारी आंखें, धन्य हैं, योंकि देखती हैं, और धन्य हैं तुम्हारे कान, योंकि सुनते हैं। 17 कई भविष्यद्वक्ताओं ौर धर्मी मनुष्यों में यह देखने और सुनने की हुत इच्छा थी, जो तुम देखते और सुनते हो रन्तु उन्हें अवसर न मिला। 18 मैंने किसान बीज बोने की जो कहानी बताई, उसका अर्थ ह है 19 मार्ग की कड़ी भूमि पर कुछ बीज रे, यह उस मनुष्य के हृदय को दर्शाता है जो ाज्य के विषय में सुसंदेश को सुनता है और से नहीं समझता, तब शैतान[3] आकर उसके दय में बीज को छीन लेता है। 20 उथली, थरीली मिट्टी, उस व्यक्ति का हृदय दर्शाती , जो संदेश को सुनता है और बड़े आनन्द से हण करता है, 21 परन्तु उसके जीवन में हराई नहीं होती, और बीजों से निकली ड़ें गहराई तक नहीं जाती, और कुछ समय ाद जब उसके विश्वास के कारण कठिनाई ाती है, या सताव शुरू होता है, तब उसका त्साह ठंडा हो जाता है, और वह विश्वास से ट जाता है। 22 कंटीली झाड़ियों से भरी मि उस व्यक्ति का हृदय दर्शाती है जो संदेश नता है, परन्तु इस जीवन की चिन्ताएं और न का मोह, परमेश्वर के वचन को दबा देते , और वह परमेश्वर के लिए दिन ब दिन कम ाम करता जाता है। 23 उपजाऊ भूमि उस यक्ति का हृदय दर्शाती है जो संदेश को सुनता और समझता है और बाहर जाकर परमेश्वर राज्य में तीस, साठ और सौ अन्य व्यक्तियों ो लाता है''।[4]

24 यह एक और उदाहरण है जो यीशु ने ाया: "स्वर्ग का राज्य उस किसान के समान जिसने अपने खेत में अच्छे बीज बोए, 5 परन्तु एक रात जब वह सो गया, उसके शत्रु आए और गेहूं के बीच जंगली बीज भी बो गए। 26 जब फसल बढ़ने लगी तो जंगली पौधे भी बढ़ने लगे। 27 किसान के मजदूरों ने आकर उसे बताया, 'स्वामी, वह खेत जिसमें तू ने अच्छे बीज बोए थे वह सब जंगली पौधों से भरा है!' 28 उसने कहा, 'यह किसी शत्रु का ही काम है।' उन्होंने पूछा, 'क्या हम जंगली पौधों को उखाड़ दें?' 29 उसने उत्तर दिया, 'नहीं, ऐसे में गेहूं को भी नुकसान पहुंचेगा। 30 कटनी तक दोनों को साथ साथ बढ़ने दो, फसल काटने वालों से मैं कह दूंगा कि जंगली पौधों को छांट कर जला दें, और गेहूं को खलिहान में जमा करें'।"

31, 32 यीशु ने एक और उदाहरण दिया: "स्वर्ग का राज्य राई के छोटे बीज के समान है जिसे खेत में बोया जाता है। यह सब बीजों से छोटा होता है, परन्तु सब पौधों से बड़ा पेड़ हो जाता है जहां पक्षी आकर बसेरा कर सकते हैं।"

33 उन्होंने यह उदाहरण भी दिया: "स्वर्ग का राज्य उस खमीर के समान है जिसे स्त्री रोटी बनाने से पहले आटे में मिला देती है और धीरे धीरे वह पूरा आटा खमीरा हो जाता है"।

34, 35 यीशु जब भी भीड़ से बोलते थे, हमेशा उदाहरण देते थे। क्योंकि भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था कि वह कई उदाहरण दिया करेंगे, इसलिए वास्तव में वह कम से कम एक उदाहरण दिए बिना उनसे बातें नहीं करते थे। क्योंकि भविष्यद्वाणी की गई थी, "मैं दृष्टान्तों में बातें करूंगा, मैं समय के आरम्भ से छिपे हुए रहस्यों का भेद समझाऊंगा"।[5]

36 तब यीशु भीड़ को छोड़कर, घर आ गए। शिष्यों ने उनसे विनती की, कि वह उन्हें गेहूं और जंगली दानों का उदाहरण समझाएं। 37 उन्होंने कहा, "सुनो! अच्छे बीज बोनेवाला किसान मैं[6] हूं। 38 खेत संसार है और बीज

मूलतः "दुष्ट।" [4] मूलतः "फल लाता है, कोई सौ गुना कोई साठ गुना, कोई तीस गुना।" [5] भजन 78 2
का पुत्र।"

राज्य के लोगों को दर्शाता है, जंगली बीज शैतान के लोग हैं। 39 जिस शत्रु ने गेहूं के मध्य जंगली दाने बोए, वह शैतान है, कटनी, जगत के अन्त का समय है, और फसल काटने वाले स्वर्गदूत हैं। 40 जिस प्रकार कहानी मे जंगली पौधे अलग किए और जलाए गए, उसी प्रकार संसार के अन्त में भी होगा, 41 मैं अपने स्वर्गदूतों को भेजूंगा और वे परमेश्वर के राज्य से सब प्रकार की परीक्षाओ और दुष्ट लोगो को अलग करेंगे, 42 और उन्हे भट्टी में फेंककर जला देंगे। वहां रोना और दांत पीसना होगा। 43 तब धर्मी अपने पिता अर्थात परमेश्वर के राज्य मे सूर्य के समान चमकेंगे। जिनके कान हो वे सुनें !

44 "स्वर्ग का राज्य उस खजाने के समान है जो किसी व्यक्ति को एक खेत में मिला। उत्तेजना मे आकर, उसने अपना सब कुछ बेच दिया, ताकि उस खेत को—और खजाने को भी खरीद ले।

45 "फिर, स्वर्ग का राज्य मोती के व्यापारी के समान है जो बहुमूल्य मोतियो की खोज मे हो। 46 उसने एक बहुमूल्य मोती देखा—और अपनी सब संपत्ति बेचकर उसे खरीद लिया।

47, 48 "फिर, स्वर्ग के राज्य को मछुए के उदाहरण से भी समझाया जा सकता है—वह जल में जाल डालकर सब प्रकार की मछलियां पकडता है। जब जाल भर जाता है, वह उसे किनारे पर खीचता है और बैठकर खाने योग्य मछलियो को अलग टोकरों में रखता है और बेकार को फेंक देता है। 49 जगत के अन्त मे भी इसी प्रकार होगा—स्वर्गदूत आएंगे और दुष्टो को धर्मियों से अलग करेंगे, 50 वे दुष्टों को आग मे डाल देंगे, जहा रोना और दात पीसना होगा।

51 "क्या तुम समझते हो ?" उन्होंने कहा, "जी हां, हम समझते हैं।" 52 तब यीशु ने फिर कहा, "यहूदी व्यवस्था में जो लोग ज्ञानी हैं और अब मेरे चेले बन गए हैं, उनके पास दो खजाने हैं—एक पुराने नियम का खजाना और दूसरा नए नियम का।[9]"

53, 54 जब यीशु इन उदाहरणो को दे चुके, तो वह अपने शहर, गलील के नासरत[10] को गए, और उन्होंने वहा आराधनालयों मे शिक्षा दी और अपने ज्ञान और अपने आश्चर्यकर्मों के द्वारा लोगों को चकित किया। 55 लोगों ने आश्चर्य मे कहा, "यह कैसे सम्भव है? वह बढई का पुत्र है, और हम उसकी माता—मरियम और उसके भाइयो—याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा को जानते हैं। 56 और उसकी बहनें सब यही रहती हैं। वह कैसे इतना बडा हो सकता है?" 57 और वे उन पर क्रोधित हुए। तब यीशु ने उनसे कहा, "भविष्यद्वक्ता का आदर उसके देश और उसके लोगों को छोड सब जगह होता है।" 58 इसलिए उनके अविश्वास के कारण उन्होंने वहां बहुत कम आश्चर्यकर्म किये।

14

1 जब राजा[1] हेरोदेस ने यीशु के विषय मे सुना, 2 तो अपने सेवको से कहा "यह अवश्य यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला है, जो फिर जी उठा होगा। तभी वह इन आश्चर्यकर्मों को कर सकता है।" 3 क्योंकि हेरोदेस ने अपनी पत्नी हेरोदियास की[2] मांग पर जो पहले उसके भाई फिलिप्पुस की पत्नी थी, यूहन्ना को पकड़कर जेलखाने में कैद किया था, 4 क्योंकि यूहन्ना ने उसको बताया था कि उससे विवाह करना उसके लिए अनुचित है। 5 उसने यूहन्ना को मार डाला होता किन्तु उसको उपद्रव का भय था क्योंकि सब लोग विश्वास करते थे कि यूहन्ना भविष्यद्वक्ता है। 6 परन्तु हेरोदेस के जन्म दिन के उत्सव मे, हेरोदियास की बेटी ने

[9] मूलत "जो अपने भंडार से नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है।" [10] यही अर्थ है।

[1] वह उस क्षेत्र के चार "राजाओं" में से एक था, उसका प्रभुत्व गलील और पिरैया पर था।

[2] मूलत "के कारण।"

नाच दिखाकर उसको बहुत प्रसन्न किया, 7 इसलिए हेरोदेस ने शपथ खाकर उससे कहा कि वह जो कुछ भी मांगे, उसे देगा। 8 अन्त में अपनी माँ के उकसाने से लड़की ने थाल में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर मांगा। 9 राजा को दुःख हुआ, परन्तु अपनी शपथ के कारण, और अपने मेहमानों के सामने प्रण से पीछे न हट सकने के कारण, उसने आज्ञा दे दी। 10 इसलिए जेलखाने में यूहन्ना का सिर काटा गया, 11 और उसका सिर थाल में रखकर लड़की को दिया गया, जिसने उसे अपनी माँ को दे दिया। 12 तब यूहन्ना के शिष्य उसका शव लेने आए और उसे दफन किया, और इस घटना के बारे में यीशु को बताया।

13 यह समाचार सुनते ही यीशु, अकेले नाव में बैठकर एकान्त स्थान की ओर जाने लगे। परन्तु भीड़ ने देखा कि वह किस ओर बढ़ रहे हैं और कई गाँवों से लोग पैदल उनके पीछे चल दिए। 14 इसलिए जब यीशु निर्जन स्थान से लौटे, तो एक बड़ी भीड़ उनकी प्रतीक्षा में थी और उन्होंने लोगों पर बड़ा तरस खाया और उनके बीमारों को चंगा किया। 15 उस दिन संध्या समय शिष्य यीशु के पास आए और उन्होंने उनसे कहा, "भोजन का समय कब से हो गया है और इस मरुस्थल में खाने के लिए कुछ भी नहीं है, भीड़ को विदा कर दीजिये ताकि वे गाँवों में जाकर भोजन खरीदें।" 16 परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, "यह अवश्य नहीं—तुम ही उनके भोजन का प्रबन्ध करो।" 17 उन्होंने आश्चर्य से कहा, "क्या? हमारे पास तो सिर्फ पांच रोटी और दो मछलियां हैं!" 18 यीशु ने कहा, "उन्हें यहाँ ले आओ।" 19 तब यीशु ने लोगों को घास पर बैठ जाने को कहा, और उन्होंने पाँच रोटियों और दो मछलियों को लिया, आकाश की ओर देखा और भोजन पर परमेश्वर की आशिष मांगी, तब रोटियाँ तोड़कर शिष्यों को दी कि वे लोगों को परोसें। 20 सब ने भर पेट खाया और जब बाद में बचे हुए टुकड़े उठाए गए, तो उनसे बारह टोकरियाँ भर गईं! 21 (उस दिन स्त्रियों और बालकों को छोड़कर भीड़ में करीब 5,000 पुरुष थे।)

22 इसके तुरन्त बाद, यीशु ने अपने शिष्यों से नाव पर बैठकर झील के दूसरी ओर चले जाने को कहा, और वह स्वयं लोगों को विदा करने के लिए ठहरे रहे। 23, 24 इसके बाद वह पहाड़ पर प्रार्थना करने के लिए गए। रात हो गई, और झील पर शिष्य संकट में थे, क्योंकि आँधी चलने लगी थी और वे ऊंची ऊंची लहरों का सामना कर रहे थे। 25 लगभग चार बजे सुबह यीशु, पानी पर चलते हुए उनके पास आए। 26 वे डर से चीखने लगे, क्योंकि उन्होंने यीशु को भूत समझा। 27 परन्तु यीशु ने उसी क्षण उनसे बातें की और उन्हें निश्चय दिलाकर कहा, "मत डरो!" 28 तब पतरस ने पुकार कर उनसे कहा, "स्वामी, यदि सचमुच आप ही हैं, तो मुझको पानी पर चलकर अपने पास आने की अनुमति दीजिये।" 29 प्रभु ने कहा, "अच्छा! आ!" तब पतरस नाव के किनारे गया और पानी में उतरकर यीशु की ओर बढ़ने लगा। 30 परन्तु जब उसने चारों ओर ऊंची ऊंची लहरों को देखा, तो घबरा गया और डूबने लगा। उसने चिल्लाते हुए कहा, "स्वामी, मुझे बचाइये!" 31 उसी क्षण यीशु ने हाथ बढ़ाया और उसे बचा लिया। यीशु ने कहा, "हे अल्प-विश्वासी, तू ने मुझ पर संदेह क्यों किया?" 32 और जब वह नाव पर चढ़ गए, तब आँधी थम गई। 33 सब चकित रह गए। उन्होंने कहा, "आप वास्तव में परमेश्वर के पुत्र हैं!"

34 वे गन्नेसरत के तट पर उतरे। 35 उनके आने का समाचार शीघ्र ही पूरे शहर में फैल गया। और कुछ लोग यहाँ वहाँ दौड़कर सब से कहने लगे कि अपने बीमारों को चंगाई के लिए ले आओ। 36 यीशु से बीमार विनती करते थे कि वह उन्हें अपने वस्त्र के छोर को ही छूने दें, और जितनों ने छूआ, सब चंगे हो गए।

15 1 तब कई फरीसी और दूसरे यहूदी अगुए यरूशलेम से यीशु से भेंट करने और कुछ प्रश्नों पर बातचीत करने आए। 2 उन्होंने पूछा, "आपके शिष्य यहूदियों की प्राचीन प्रथाओं का पालन क्यों नहीं करते? क्योंकि हमारी रीति-विधि के अनुसार वे भोजन से पहले हाथ नही धोते।" 3 यीशु ने उत्तर दिया, "और तुम्हारी प्रथाएं क्यों परमेश्वर की सीधी आज्ञा का उल्लंघन करती हैं? 4 उदाहरण के लिए परमेश्वर की व्यवस्था है, 'अपने पिता और माता का आदर कर, जो अपने माता पिता की निन्दा करे, वह मार डाला जाए।' 5, 6 परन्तु तुम कहते हो, 'चाहे माता पिता धन की आवश्यकता मे हो तो भी उनको देने के बदले कलीसिया[1] को दे सकते हो।' और इस प्रकार मनुष्य के बनाए नियम के द्वारा, तुम परमेश्वर की इस सीधी आज्ञा को तोडते हो कि माता पिता का आदर कर और उनकी सेवा टहल की जाए। 7 पाखण्डियो! तुम्हारे विषय मे यशायाह ने ठीक ही भविष्यद्वाणी की थी, 8 'ये लोग कहते तो है कि मेरा आदर करते हैं, परन्तु उनके मन मुझसे बहुत दूर हैं। 9 उनकी आराधना व्यर्थ है क्योंकि वे परमेश्वर की व्यवस्था को सिखाने के बदले मनुष्यो के बनाए नियमों को सिखाते हैं'।"[2] 10 तब यीशु ने भीड़ को बुलाया और कहा, "जो मैं कहता हूं उसे सुनो और समझने की कोशिश करो 11 किसी भी प्रकार का भोजन करने से तुम अशुद्ध नही होते! जो तुम कहते और सोचते[3] हो वही तुम्हें अशुद्ध करता है।" 12 तब शिष्यों ने आकर उनको बताया, "आपने ऐसा कहकर फरीसियों को चोट पहुंचाई है।" 13, 14 यीशु ने उत्तर दिया, "जो भी पौधा मेरे पिता के द्वारा नही लगाया गया, वह जड से उखाडा जाएगा, इसलिए उनकी चिन्ता मत करो। वे अंधों को रास्ता दिखाने वाले अंधे अगुवे हैं, और दोनो गड्ढे में गिरेंगे।"

15 तब पतरस ने यीशु से पूछा उनके इस कथन का क्या अर्थ है कि लोग व्यवस्था द्वारा वर्जित भोजन को खाने से अशुद्ध नही होते। 16 यीशु ने उससे पूछा, "क्या तुम नही समझते? 17 क्या इतना नही जानते कि तुम जो भी खाते हो वह तुम्हारे पाचन अंगो मे जाकर बाहर निकल जाता है? 18 परन्तु बुरे शब्द बुरे मन मे आते हैं, और बोलने वाले को अशुद्ध करते हैं। 19 क्योंकि मन ही से बुरे विचार हत्या, व्यभिचार, परस्त्री-गमन, चोरी, झूठ और निन्दा निकलते हैं। 20 ये ही अपवित्र करते है, परन्तु भोजन से पहले हाथ धोने की प्रथा का पालन न करने से कोई आत्मिक अशुद्धता नही होती।"

21 यीशु उस स्थान से चले गए और पचास मील[4] चलकर सूर और सैदा को आए। 22 कनान की एक स्त्री जो वहा रहती थी, यीशु के पास आकर गिडगिडाने लगी, "हे प्रभु, राजा दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर! क्योंकि मेरी बेटी में दुष्टात्मा समायी है, और वह सदा उसे सताती रहती है।" 23 परन्तु यीशु ने उसे कोई उत्तर नही दिया-एक शब्द भी नही कहा। तब शिष्यों ने उनसे विनती की कि उसे भेज दें। उन्होंने कहा, "उससे चले जाने को कहिए क्योंकि वह चिल्ला चिल्लाकर हमे बाधा पहुचा रही है।" 24 तब यीशु ने स्त्री से कहा, "मैं यहूदियों की सहायता करने के लिए भेजा गया हूँ जो इस्राएल की खोई हुई भेडो के समान हैं—अन्य-जातियों के लिए नही।" 25 परन्तु उसने फिर आकर प्रणाम किया और फिर गिडगिड़ाते हुए कहा, "स्वामी मेरी सहायता कीजिए।" 26 यीशु ने कहा, "यह ठीक नही जंचता कि मैं बच्चों की रोटी लेकर कुत्तो को फेक दू।" 27 स्त्री ने उत्तर दिया, "जी हाँ, ठीक है! कुत्तो को भी मेज़ से गिरे टुकडो को खाने की अनुमति दे दी जाती है।" 28 यीशु ने उससे कहा, "स्त्री, तेरा विश्वास बडा है और तेरी माँग पूरी हुई।" और

[1] मूलतः "परमेश्वर को।" [2] यशायाह 29 13 [3] यही आशय है। मूलत "जो मुह से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।" [4] यही अर्थ है। मूलतः सूर और सैदा के देशों की ओर चले गये।"

उसी समय उसकी बेटी चंगी हो गई।

29 तब यीशु गलील सागर को लौट गए, और एक पहाड़ पर चढ़कर बैठ गए। 30 फिर एक बड़ी भीड़ उनके पास लंगड़ों, अन्धों, अपंगों, गूंगों और अन्य बहुतों को लेकर आई, और उन्होंने उन सब को चंगा किया। 31 यह कितना दर्शनीय था! जो पहले एक शब्द भी नहीं बोल सकते थे, वे उत्साह से बातें कर रहे थे, जिनके हाथ, पाँव नहीं थे, उनको हाथ, पाँव मिले थे, जो लंगड़े थे, वे कूद फिर रहे थे, और जो अंधे थे वे अपने चारों ओर देख रहे थे! भीड़ ने आश्चर्य-चकित होकर इस्राएल के परमेश्वर की प्रशंसा की।

32 तब यीशु ने अपने शिष्यों को बुलाकर उनसे कहा, "मुझे इन लोगों पर तरस आता है— वे अब मेरे साथ यहां तीन दिन से हैं, और उनके पास कुछ खाने को नहीं बचा है, मैं उन्हें यहां से भूखा नहीं भेजना चाहता नहीं तो वे रास्ते में मूर्छित हो जाएंगे।" 33 शिष्यों ने उत्तर दिया, "और हम यहां इस निर्जन स्थान में इतनी बड़ी भीड़ को खिलाने के लिए कहां से भोजन पाएंगे?" 34 यीशु ने उनसे प्रश्न किया, "तुम्हारे पास कितना भोजन है?" उन्होंने उत्तर दिया, "सात रोटियां और कुछ मछलियां।" 35 तब यीशु ने सब लोगों को भूमि पर बैठने को कहा, 36 और उन्होंने सातों रोटियों और मछलियों को लेकर उनके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करके तोड़ा और शिष्यों को दिया जिन्होंने लोगों को परोसा। 37, 38 और सबने भर पेट भोजन किया जिनमें 4,000 पुरुषों के अतिरिक्त स्त्रियां और बच्चे भी थे! बाद में जब बचे हुए टुकड़ों को इकट्ठा किया गया तो उनसे सात टोकरियां भर गईं। 39 तब यीशु ने लोगों को उनके घर भेजा, और नाव पर बैठकर मगदन को गये।

16 1 एक दिन फरीसी और सदूकी[1] यीशु को परखने के लिए आए कि उनका मसीह होने का दावा सच है या नहीं। उन्होंने यीशु से विनती की कि वह उन्हें आकाश में कोई बड़ा चिन्ह दिखाएं। 2, 3 यीशु ने कहा, "तुम आकाश में मौसम सम्बन्धी चिन्हों को सरलता से जान लेते हो आज शाम आकाश लाल हो तो उसका अर्थ कल मौसम सुहावना होगा, सवेरे आकाश लाल और धूमिल हो तो उसका अर्थ मौसम खराब रहेगा—परन्तु तुम समय के चिन्ह नहीं जान सकते! 4 यह दुष्ट और अविश्वासी जाति आकाश में अद्भुत चिन्हों को देखने की मांग करती है, परन्तु योना के साथ जो आश्चर्यकर्म हुआ—उस चिन्ह को छोड़ उन्हें और कोई प्रमाण नहीं दिया जाएगा।" तब यीशु उन्हें छोड़ कर चले गए।

5 झील के पार पहुंचकर शिष्यों को ज्ञात हुआ कि वे रोटी लाना भूल गए हैं। 6 यीशु ने उन्हें चेतावनी दी, "देखो! फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान रहो।" 7 उन्होंने सोचा कि यीशु ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि वे रोटी लाना भूल गए हैं। 8 यीशु ने उनके विचार जानकर उनसे कहा, "हे अल्पविश्वासियो! तुम्हें भोजन की इतनी चिन्ता क्यों है? 9 क्या तुम कभी नहीं समझोगे? क्या तुम्हें बिलकुल याद नहीं कि मैंने पांच रोटियों से पांच हज़ार को खिलाया, और कितनी रोटियां बच रही? 10 क्या तुम्हें याद नहीं कि मैंने चार हज़ार को खिलाया, तौभी कितना बचा रहा? 11 तुमने यह विचार ही क्यों किया कि मैं तुमसे भोजन के विषय में कह रहा था? परन्तु मैं फिर कहता हूं, 'फरीसियों और सदूकियों के खमीर से साव-धान रहो'।" 12 तब अन्त में उन्होंने समझा कि "खमीर" से उनका अर्थ फरीसियों की ग़लत शिक्षा से था।

13 जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी में आए, उन्होंने अपने शिष्यों से पूछा, "लोग मेरे विषय में क्या कहते हैं, मैं[2] कौन हूं?" 14 उन्होंने उत्तर दिया, "कई यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं,

[1] राजनीतिक-धार्मिक अगुए, जो दो भिन्न झुण्डों के थे। [2] मूलतः "मनुष्य के पुत्र।"

कई, एलिय्याह, कई यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से एक कहते हैं। 15 तब यीशु ने उनसे पूछा, "तुम क्या सोचते हो, मैं कौन हूं?" 16 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "यीशु, मसीह, जीवते परमेश्वर का पुत्र।" 17 यीशु ने कहा, "शमौन, योना के पुत्र, परमेश्वर ने तुझे आशिष दी है, क्योंकि स्वर्ग में रहने वाले मेरे पिता ने स्वयं तुझ पर यह प्रकट किया है—यह किसी मनुष्य की ओर से नहीं है। 18 तू पतरस, चट्टान है, और मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और नरक की कोई भी शक्ति उस पर विजयी नहीं होगी। 19 और मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा, तू पृथ्वी पर जिन दरवाजों को भी बन्द करे, वे स्वर्ग में बन्द रहेंगे, और तू पृथ्वी पर जिन दरवाजों को खोले वे स्वर्ग में खुले रहेंगे।" 20 तब यीशु ने शिष्यों को चेतावनी दी कि वे उनके मसीह होने की चर्चा किसी से न करें।

21 उस समय से यीशु ने शिष्यों को स्पष्ट बताना शुरु किया कि वह यरूशलेम जाएंगे और वहां उनके साथ क्या होगा—कि वह यहूदी अगुओं[3] के हाथ से दुख उठाएंगे, वह मार डाले जाएंगे, और उसके बाद तीसरे दिन फिर जी उठेंगे। 22 परन्तु पतरस उन्हें अलग ले जाकर झिड़कने लगा, "हे प्रभु, परमेश्वर न करे, आपके साथ ऐसा हो!" 23 यीशु ने पतरस को डांटा और कहा, "शैतान, मेरे पास से दूर हो! तू मेरे लिए खतरनाक फंदा है। तू केवल मनुष्य के दृष्टिकोण से सोच रहा है, और परमेश्वर के दृष्टिकोण से नहीं।" 24 तब यीशु ने शिष्यों से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे चलना चाहे, तो वह स्वयं का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो ले। 25 क्योंकि जो अपना जीवन बचाना चाहे, वह उसे खोएगा, और जो मेरे लिए अपना जीवन खो देगा वह उसे फिर पाएगा। 26 यदि तुम सारे जगत को प्राप्त करो परन्तु अनन्त जीवन खो दो तो इससे क्या लाभ होगा? अनन्त जीवन के मूल्य की तुलना किस वस्तु से की जा सकती है? 27 क्योंकि मैं, मनुष्य का पुत्र अपने पिता की महिमा में अपने स्वर्गदूतों के साथ आऊंगा और हर एक का न्याय उसके कामों के अनुसार करूंगा। 28 और अभी यहां जितने खड़े हैं, उनमें से कई मुझे अपने राज्य में आते हुए देखने के लिए अवश्य जीवित रहेंगे।"

17 1 छः दिन बाद यीशु ने पतरस, याकूब, और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया और एक ऊंचे और सुनसान पर्वत पर गए, 2 और उनके देखते ही देखते, यीशु का रूप बदल गया यहां तक कि उनका मुख सूर्य सा चमकने लगा और उनका वस्त्र इतना श्वेत हो गया कि आंखें चौंधियाने लगीं। 3 एकाएक मूसा और एलिय्याह उनसे बातें करते हुए दिखाई दिए। 4 पतरस बिना सोचे समझे बोल पड़ा, "प्रभु, यह बड़ा अच्छा है कि हम यहां हैं! यदि आप चाहें, तो मैं यहां तीन मण्डप[1] बनाऊं, एक आपके लिए और एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह के लिए।" 5 जब वह यह कह ही रहा था, एक उज्ज्वल बादल ने उन्हें छा लिया, और उसमें से एक आवाज सुनाई दी, "यह मेरा पुत्र है, और मैं उससे अत्यन्त प्रसन्न हूं। उसकी आज्ञा मानो[2]।" 6 यह सुनकर शिष्य अत्यन्त भयभीत होकर मुंह के बल भूमि पर गिर पड़े। 7 यीशु ने उनके पास आकर उन्हें छुआ। उन्होंने कहा, "उठो, डरो मत।" 8 और शिष्यों ने जब देखा, तो केवल यीशु ही उनके साथ थे।

9 जब वे पर्वत से उतर रहे थे, तो यीशु ने उन्हें आज्ञा दी कि जो कुछ उन्होंने देखा था, उसे तब तक किसी को न बताएं जब तक वह फिर मृतकों में से जी न उठें। 10 उनके शिष्यों

[3] मूलत. "पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों।"

[1] अथवा तम्बू। पतरस के मन में क्या था, यह नहीं समझाया गया है। [2] मूलत: "इसकी सुनो।"

ने पूछा, "यहूदी अगुवे क्यों जोर देते हैं कि मसीह के आने से पहले एलिय्याह का फिर लौटना आवश्यक है[3] ?" 11 यीशु ने उत्तर दिया, "वे ठीक कहते हैं। एलिय्याह का पहले आना और सब ठीक करना आवश्यक है। 12 वास्तव में, वह पहले ही आ चुका है, परन्तु पहचाना नहीं गया, और बहुतों ने उसके साथ बुरा व्यवहार किया। मैं, मसीह भी उनके हाथों से दुख उठाऊंगा।" 13 तब शिष्यों ने जान लिया कि यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय में कहा है।

14 जब वे पर्वत से नीचे उतरे, एक बड़ी भीड़ उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। एक मनुष्य ने आकर यीशु के सामने घुटने टेके और कहा, 15 "स्वामी, मेरे बेटे पर दया कीजिए क्योंकि वह पागल है और बहुत कष्ट में है, वह कई बार आग में और कई बार पानी में गिर जाता है, 16 इसलिए मैं उसे आपके चेलों के पास लाया, परन्तु वे उसे चंगा न कर सके।" 17 यीशु ने उत्तर दिया, "हे हठी और अविश्वासी लोगो! मैं कब तक तुम्हारी सहूंगा ? उसको यहां मेरे पास ले आओ।" 18 तब यीशु ने दुष्टात्मा को डांटा और वह लड़के में से तुरन्त निकल गई उसी क्षण से लड़का अच्छा हो गया। 19 बाद में शिष्यों ने अकेले में यीशु से पूछा, "हम उस दुष्टात्मा को क्यों नहीं निकाल सके ?" 20 यीशु ने उन्हें बताया, "अपने अविश्वास के कारण। क्योंकि यदि तुम्हारा विश्वास राई के छोटे बीज के बराबर भी हो तो तुम इस पर्वत से कह सकोगे, 'यहाँ से हट जा!' और वह दूर चला जाएगा। कुछ भी असम्भव न होगा।

21 "परन्तु इस प्रकार की दुष्टात्मा उस समय तक नहीं निकलेगी, जब तक तुम प्रार्थना और उपवास नहीं करोगे[4]।" 22, 23 एक दिन जब वे अभी गलील में ही थे, यीशु ने उनसे कहा, "मैं लोगों के हाथों में पकड़वा दिया जाऊंगा और वे मुझे मार डालेंगे, और उसके बाद तीसरे दिन मैं फिर जीवित हो जाऊंगा।" और शिष्यों के मन दुख और भय से भर गए।

24 कफरनहूम में उनके आते ही, मन्दिर के कर वसूल करने वाले ने पतरस से पूछा, "क्या तुम्हारे गुरु कर नहीं देते हैं ?" 25 पतरस ने उत्तर दिया, "अवश्य देते हैं।" तब वह घर में यीशु से इस विषय पर बातचीत करने के लिए गया, परन्तु उसे बोलने का अवसर भी न मिला था कि यीशु उससे पूछ बैठे, "पतरस क्या सोचते हो ? क्या राजा अपने ही लोगों से कर वसूल करते हैं, या उन राज्यों की प्रजा से जिनको वे आक्रमण करके जीत लेते हैं ?" 26, 27 पतरस ने उत्तर दिया, "उन्हीं से जिन्हें वे आक्रमण करके जीत लेते हैं।" यीशु ने कहा, "अच्छा तब तो नागरिक कर से स्वतंत्र हैं! तौभी, हम उन्हें ठोकर नहीं पहुंचाना चाहते इसलिए तू झील के किनारे जाकर बंसी डाल, और सबसे पहले जो मछली फंसे उसका मुंह खोलना। तुझे उसके मुंह में एक सिक्का मिलेगा जिससे हम दोनों का कर चुक जाएगा, उसे लेकर कर चुका देना।"

18 1 उस समय शिष्य यीशु के पास यह प्रश्न करने आए कि उनमें से कौन स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा होगा! 2 यीशु ने एक छोटे बच्चे को अपने पास बुलाया और उनके बीच में बैठा दिया, 3 और कहा, "जब तक तुम अपने पापों से परमेश्वर की ओर फिरकर छोटे बच्चों के समान न बनो, तुम कभी स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकोगे। 4 इसलिए जो इस छोटे बच्चे के समान अपने आप को दीन बनाए, वही स्वर्ग के राज्य में बड़ा है। 5 और तुम में से जो मेरे होने के कारण इसके समान किसी छोटे बच्चे को ग्रहण करे, वह मुझे ग्रहण करता है और मेरी चिन्ता करता है। 6 परन्तु यदि तुम

[3] यही आशय है। मूलतः "एलिय्याह का पहले आना अवश्य है।" [4] यह पद अनेक प्राचीन हस्तलेखों में नहीं पाया जाता

में से कोई, इन छोटों में से किसी एक के जिसका विश्वास मुझ पर है, विश्वास से हट जाने का कारण बने[1], तो तुम्हारे लिए अधिक अच्छा होता कि तुम्हारे गले मे चक्की का पत्थर बाधकर समुद्र मे फेंक दिया जाता। 7 संसार पर उसकी सब बुराइयों[2] के लिए धिक्कार है। बुरा करने की परीक्षा का आना तो अवश्य है, परन्तु धिक्कार उस मनुष्य पर, जो परीक्षा में डालता है। 8 इसलिए यदि तेरा हाथ या पाँव तुझमे पाप कराए, तो उसे काटकर फेंक दे। दोनों हाथों और पैरों के साथ नरक मे जाने के बदले स्वर्ग में अपंग होकर जाना ही अधिक अच्छा है। 9 और यदि तेरी आँख तुझे पाप मे डाले, तो उसे निकालकर फेंक दे। दोनो आँखों के रहते हुए नरक जाने की अपेक्षा एक आँख के रहते हुए स्वर्ग जाना अधिक अच्छा है। 10 सावधान! इन छोटे बच्चों में से किसी एक को भी तुच्छ न समझना क्योकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि स्वर्ग में उनके स्वर्गदूत की पहुंच[3] मेरे पिता के पास सदा रहती है। 11 और मैं, मसीह[4], खोए[5] हुओं को बचाने के लिए आया हूँ। 12 यदि एक मनुष्य की सौ भेड़ें हों, और एक भटककर खो जाए, तो वह क्या करेगा? क्या वह बाकी निन्नानवे को छोड कर उस खोई हुई को ढूंढने, पहाड़ों पर नही जाएगा? 13 और यदि उसे पाए, तो वह उस एक के लिए, घर में सुरक्षित बाकी निन्नानवे से बढ़कर आनन्द मनाएगा। 14 इसी प्रकार, मेरे पिता की इच्छा नही कि इन छोटों मे से एक भी नाश हो।

15 "यदि कोई भाई तेरे विरुद्ध पाप करे, तो गुप्त रूप से उसके पास जा, और उसके दोष के विषय मे उसे समझा। यदि वह सुने और अपने पापों को मान ले, तो तू ने एक भाई को जीत लिया। 16 परन्तु यदि वह न सुने, तो एक या दो दूसरे व्यक्तियों को अपने साथ ले, और फिर उसके पास जा, और जो कुछ तू कहे, इन बातों का उन्हे गवाह ठहरा। 17 यदि वह तब भी सुनने से इन्कार करे, तब अपना मामला कलीसिया मे ले जा, यदि कलीसिया का न्याय तेरे पक्ष मे हो, परन्तु वह उसे स्वीकार न करे, तब कलीसिया उससे सहभागिता न रखे[6]। 18 और मैं तुमसे यह कहता हूँ—जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाधो वह स्वर्ग मे बंधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलो, वह स्वर्ग मे खुलेगा। 19 मैं तुम्हे यह भी बताता हू—यदि तुम में से दो यहा पृथ्वी पर एक दूसरे से सहमत होकर जो भी माँगें, स्वर्ग मे रहने वाला मेरा पिता उसे अवश्य तुम्हारे लिए पूरा करेगा। 20 क्योकि जहाँ दो या तीन इसलिए इकट्ठे हों क्योकि वे मेरे हैं मैं वहा उनके मध्य मे होऊंगा।"

21 तब पतरस ने यीशु के पास आकर पूछा, "प्रभु मैं किसी भाई को, जो मेरे विरुद्ध पाप करे, कितनी बार क्षमा करू? क्या सात बार?" 22 यीशु ने उत्तर दिया, "सात बार का सत्तर गुणा। 23 स्वर्ग के राज्य की तुलना किसी राजा से की जा सकती है जिसने अपना हिसाब किताब ठीक करना चाहा। 24 ऐसा करते समय, उसका एक कर्जदार सामने लाया गया जिस पर लगभग आठ करोड़ रुपयों[7] का कर्ज था। 25 वह चुका नही सकता था, इसलिये राजा ने आज्ञा दी कि वह, उसकी पत्नी और बच्चे और जो कुछ भी उसका था, सब बेचा जाए और कर्ज चुकाया जाए। 26 परन्तु वह मनुष्य राजा के सामने जमीन पर मुँह के बल गिरा और उसने कहा, 'हे स्वामी धीरज धर और मैं सब चुका दूंगा।' 27 तब राजा ने उस पर दया कर उसे छोड़ दिया और उसका कर्ज क्षमा किया। 28 परन्तु राजा के पास से जाकर वह मनुष्य दूसरे किसी व्यक्ति के पास गया जिस पर उसका सोलह हजार रुपया[8] कर्ज था और उसका गला पकड़कर उसी समय कर्ज चुकाने की माँग करने लगा।

[1] मूलत. "ठोकर खिलाए।" [2] मूलतः "ठोकरो के कारण।" [3] "मुह सदा देखते हैं।" [4] मूलतः "मनुष्य का पुत्र।" [5] यह पद अनेक हस्तलेखों में नहीं हैं, कुछ प्राचीन में भी नही। [6] मूलतः "तू उसे अन्यजाति और महसूल लेने वाले के समान जान।" [7] मूलतः "दस हजार तोड़े।" [8] मूलत. "सौ दीनार।"

29 दूसरा व्यक्ति भी उस के सामने गिर पड़ा और उसने कुछ समय मांगा। उसने विनती की, 'धीरज धर और मैं चुका दूंगा।' 30 परन्तु कर्ज देने-वाला नहीं ठहरा। उसने उस कर्जदार को पकड़वा कर जेलखाने में डलवा दिया जब तक वह पूरा कर्ज न चुका दे। 31 तब उस मनुष्य के मित्रों ने राजा के पास जाकर, जो कुछ हुआ था बताया। 32 और राजा ने उस मनुष्य को, जिसे उसने क्षमा दी थी, अपने सामने बुलाया और कहा, 'हे दुष्ट, नीच! यहां तो मैंने तेरा इतना बड़ा कर्ज क्षमा किया, केवल इसलिए कि तूने मुझ से विनती की— 33 तो क्या तुझे नहीं चाहिए था कि *दूसरों पर दया करता जैसे मैंने तुझ पर दया की थी?'* 34 तब राजा ने क्रोधित हो उसे जेलखाने में डाल दिया जब तक एक एक पाई न चुका दी जाए।' 35 इसी प्रकार मेरा स्वर्गनिवासी पिता तुम्हारे साथ करेगा, यदि तुम अपने भाइयों को सच्चे मन से क्षमा न करो।"

19 1 यह उपदेश देकर यीशु गलील से चले गए और यर्दन पार से होते हुए फिर यहूदिया में आए। 2 बड़ी भीड़ उनके पीछे हो ली, और उन्होंने उनके बीमारों को चंगा किया।

3 कई फरीसी यीशु की परीक्षा करने आए ताकि उनको बातों में फंसाएं। उन्होंने पूछा, "क्या आप पत्नी को तलाक देने की अनुमति देते हैं?" 4 यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तुम धर्मशास्त्र नहीं पढ़ते? वहां लिखा है कि आरम्भ से परमेश्वर *ने नर और नारी को बनाया, 5, 6 और मनुष्य* अपने माता पिता को छोड़कर सदा तक अपनी पत्नी के साथ एक होकर रहेगा। दोनों एक होंगे —ये अब दो नहीं, परन्तु एक हैं। और जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे कोई मनुष्य अलग न करे।" 7 उन्होंने पूछा, "तब मूसा ने क्यों कहा, *कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को केवल लिखित* तलाक देकर छोड़ सकता है? 8 यीशु ने उत्तर दिया, "मूसा ने तुम्हारे कठोर और दुष्ट हृदय के कारण ऐसा कहा, परन्तु आदि से परमेश्वर ने ऐसा नहीं ठहराया था। 9 और मैं तुम से कहता हूँ, कि यदि कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार को छोड़ किसी दूसरे कारण से त्यागे और दूसरी से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है"।[1] 10 तब यीशु के शिष्यों ने उनसे कहा, "यदि ऐसा ही है, तो विवाह न करना ही उचित है।" 11 यीशु ने कहा, "सब इस कथन को ग्रहण नहीं कर सकते। केवल वे ही जिनकी परमेश्वर सहायता करता है। 12 *कुछ लोगों में जन्म ही से विवाह करने* की योग्यता नहीं रहती, कुछ लोगों को दूसरे *मनुष्य अयोग्य बनाते हैं, और कुछ लोग स्वर्ग के* राज्य के लिए विवाह करने से इन्कार करते हैं। *जो समझ सके, वह मेरा वचन ग्रहण करे।"*

13 छोटे बच्चों को यीशु के पास लाया गया कि वह उन पर हाथ रखें और *प्रार्थना करें।* परन्तु शिष्यों ने लानेवालों को डांटा और कहा, "यीशु को कष्ट न दो।" *14 परन्तु यीशु ने कहा,* "छोटे बच्चों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मत रोको।" क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। 15 और उन्होंने अपने हाथ उनके सिर पर रखे और जाने से पहले उन्हें आशिष दी।

16 किसी ने आकर यीशु से यह प्रश्न किया: "उत्तम गुरु अनन्त जीवन पाने के *लिए मैं क्या* करूं।" 17 "उत्तम!" यीशु ने उत्तर दिया, "जब तू मुझे उत्तम कहता है तो मुझे परमेश्वर कह रहा है, क्योंकि केवल परमेश्वर ही वास्तव में उत्तम है[2]। परन्तु तुम्हारे प्रश्न के उत्तर में मुझे *यह कहना है* कि तू स्वर्ग जा सकता है यदि आज्ञाओं को माने।" *18 उस मनुष्य ने पूछा, "किन आज्ञाओं को?"* और यीशु ने उत्तर दिया, "हत्या न करो, व्यभिचार न करो, चोरी *मत* करो, झूठ *मत बोलो,* 19 अपने माता और पिता का आदर करो, और अपने पड़ोसी से अपने *समान प्रेम* करो। 20 जवान ने उत्तर दिया, मैंने तो सदा से उन सबका पालन किया है।

1 "और जो उस छोड़ी हुई से ब्याह करे, वह भी व्यभिचार करता है।" यह वाक्य प्राचीन हस्तलेखों में जुड़ा है।

2 [illegible] 0 देखिये।

मुझे और क्या करना चाहिए?" 21 यीशु ने उसे बताया, "यदि तू सिद्ध बनना चाहे, तो जाकर जितना तेरे पास है सब बेच दे और वह धन गरीबों को बाँट दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।" 22 परन्तु जब जवान ने सुना तो उदास होकर लौट गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।

23 तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "धनवान के लिए स्वर्ग के राज्य मे प्रवेश करना बहुत कठिन है। 24 मैं फिर कहता हूँ धनवान के लिए स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सरल है।" 25 इस कथन से शिष्य व्याकुल हुए। उन्होंने पूछा, "तब फिर संसार में किसका उद्धार हो सकता है।" 26 यीशु ने उन्हें स्थिर दृष्टि से देखा और कहा, "मनुष्य की दृष्टि से तो किसी का नही हो सकता है परन्तु परमेश्वर से सब कुछ सम्भव है।" 27 तब पतरस ने उनसे कहा, "हमने आपके पीछे होने के लिए सब कुछ छोड़ दिया। हमें इसमें क्या मिलेगा?" 28 और यीशु ने उत्तर दिया, "जब मैं, मसीह,[a] अपने राज्य मे[b] वैभवशाली सिंहासन पर बैठूंगा, तब तुम मेरे शिष्य अवश्य ही बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे। 29 और जो भी मेरे पीछे होने के लिए, अपने घर, भाई-बहिनें, माता, पिता, पत्नी,[c] बच्चों या सम्पत्ति को छोड़े, वह बदले में सौ गुणा अधिक और अनन्त जीवन भी पाएगा। 30 परन्तु अनेक जो अभी पहले हैं, तब पिछले होंगे, और कई जो अभी पिछले हैं, तब आगे होंगे।"

20 1 "स्वर्ग के राज्य का यह दूसरा उदाहरण है। घर का मालिक एक दिन सवेरे अपने खेत काटने के लिए मजदूर ढूंढने निकला। 2 उसने उनको दिन[1] के हिसाब से रख लिया और काम करने भेज दिया। 3 कुछ घंटों के बाद वह बाजार से होकर जा रहा था और उसने कुछ लोगों को वहाँ काम की खोज मे खड़े पाया, 4 इसलिए उसने उन को भी अपने खेत मे यह कहकर भेज दिया कि शाम को जितना ठीक होगा, वह उन्हें देगा। 5 बारह बजे और फिर दोपहर मे तीन बजे उसने वैसा ही किया। 6 उस दिन शाम को पाँच बजे वह फिर शहर मे था और उसने कुछ और व्यक्तियों को खड़े देखकर पूछा, तुम आज काम पर क्यों नही गए? 7 उन्होंने उत्तर दिया, 'क्योंकि किसी ने हमें काम पर नही लगाया।' उसने उनसे कहा, 'तब जाओ और दूसरो के साथ मेरे खेत मे काम करो।' 8 शाम को उसने मुनीम को बताया कि सब काम करनेवालो को बुलाकर उनकी मजदूरी दे दे और पहले उनको दे जो सबसे अन्त मे आए थे। 9 जब पाँच बजे काम पर लगे हुए मनुष्यों को मजदूरी मिली तो प्रत्येक को दो रुपया मिला। 10 इसलिए जब पहले काम पर लगे हुए मनुष्य मजदूरी लेने आए, तो उन्होंने सोचा कि उनको अधिक मिलेगा। परन्तु उनको भी दो रुपया ही दिया गया। 11, 12 उन्होंने कुड़कुड़ाते हुए कहा, 'इन लोगो ने केवल एक ही घन्टे काम किया, और तो भी तूने उनको हमारे ही बराबर दिया जिन्होंने दिन भर तेज धूप मे काम किया।' 13 उसने उनमे से एक को उत्तर दिया, 'मित्र, मैंने तुझसे कोई बुरा व्यवहार नही किया! क्या तू ही दो रुपया दिन के हिसाब से काम करने पर तैयार नही हुआ था? 14 अपनी मजदूरी लेकर चला जा। मेरी इच्छा है कि सबको समान मजदूरी दूं, 15 क्या यह नियम के विरुद्ध है कि मैं अपना पैसा जैसे चाहूँ वैसे खर्च करूं? क्या तुम्हें क्रोध करना चाहिए क्योंकि मैं दयालु हूं?' 16 और इसी प्रकार जो अन्तिम हैं वे पहले होंगे, और पहले, अन्तिम होंगे।"

---

[a] मूलत "मनुष्य का पुत्र।" [b] मूलत. "नई उत्पत्ति से।" मे लिखा है। [c] यह कई हस्तलेखों मे नही है, परन्तु लूका 18 29

[1] मूलत "एक दीनार।"

17 यरूशलेम की ओर जाते हुए, यीशु ने बारह शिष्यों को अकेले में ले जाकर, 18 उनसे बातचीत की, कि वहां पहुंचने पर उनके साथ क्या होगा। "मैं[2] महायाजकों और दूसरे यहूदी अगुओं के हाथ में पकड़वाया जाऊंगा और वे मुझ को मृत्यु दण्ड देंगे। 19 और वे मुझे रोमी सरकार के हाथ में सौंप देंगे, और मुझे ठट्ठों में उड़ाएंगे और क्रूस पर चढ़ा देंगे, और तीसरे दिन मैं फिर जी उठूंगा।"

20 तब जब्दी के पुत्रों—याकूब और यूहन्ना की माता ने अपने दोनों पुत्रों को यीशु के पास लाकर उनसे आदरपूर्वक विनती की। 21 यीशु ने पूछा, "तू क्या चाहती है ?" उसने उत्तर दिया, "अपने राज्य में क्या आप मेरे दोनों पुत्रों को अपने दोनों ओर सिंहासनों[3] पर बैठने देंगे ?" 22 परन्तु यीशु ने उससे कहा, "तू नहीं जानती कि क्या मांग रही है!" तब उन्होंने याकूब और यूहन्ना की ओर फिरकर उनसे प्रश्न किया, "क्या तुम उस दुखदायी प्याले में से पी सकोगे जिसमें से मैं पीने पर हूं ?" उन्होंने उत्तर दिया, "जी हां, हम पी सकते हैं।" 23 यीशु ने उनसे कहा, "तुम उसमें से अवश्य पीओगे, परन्तु मुझे यह कहने का अधिकार नहीं कि मेरे अगल-बगल के सिंहासनों[3] पर कौन बैठेगा। वे स्थान उन्हीं व्यक्तियों के लिए हैं जिन्हें मेरा पिता चुनेगा।" 24 दूसरे दस शिष्य बहुत क्रोधित हुए जब उन्होंने सुना कि याकूब और यूहन्ना ने क्या मांगा था। 25 परन्तु यीशु ने उन सबको साथ बुलाकर कहा, "अन्यजातियों के मध्य राजा निर्दयी और अन्यायी होते हैं और प्रत्येक छोटा शासक भी अपने आधीन लोगों पर प्रभुता करता है। 26 परन्तु तुम्हारे मध्य इससे बिल्कुल भिन्न है। तुममें जो अगुआ बनना चाहे, उसे तुम्हारा सेवक बनना चाहिए। 27 और यदि तुम सबसे प्रधान बनना चाहो, तो तुम्हें एक दास के समान सेवा करना चाहिए, 28 तुम्हारा व्यवहार[3] मेरे समान होना चाहिए, क्योंकि मैं, मसीह, सेवा लेने के लिए नहीं आया, परन्तु सेवा करने, और अपना प्राण बहुतों के छुटकारे के लिए देने आया हूं।"

29 जब यीशु और शिष्य यरीहो शहर से चल निकले, तो एक बड़ी भीड़ उनके पीछे हो ली। 30 दो अंधे मनुष्य मार्ग के किनारे बैठे हुए थे और जब उन्होंने सुना कि यीशु उस रास्ते से आ रहे हैं, तो उन्होंने चिल्लाना शुरू किया, "हे स्वामी, राजा दाऊद के पुत्र, हम पर दया कीजिए।" 31 भीड़ ने उन्हें चुप रहने को कहा, परन्तु वे और भी अधिक जोर से चिल्लाए। 32, 33 जब यीशु उस स्थान पर पहुंचे जहां वे थे तब उन्होंने मार्ग में ठहरकर पूछा, "तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूं ?" उन्होंने कहा, "स्वामी हम चाहते हैं कि हमें दृष्टि मिल जाए।" 34 यीशु को उन पर दया आई और उन्होंने उनकी आंखों को छुआ। छूते ही वे देखने लगे और उनके पीछे हो लिए।

21

1 जब यीशु और शिष्य यरूशलेम के निकट पहुंचे और जैतून पहाड़ पर बसे बैतफगे गांव के पास आए, यीशु ने सामने वाले गांव में दो शिष्यों को भेजा। 2 उन्होंने कहा, "तुम जैसे ही वहां प्रवेश करो, तुम एक गधी को बंधा हुआ और उसके बच्चे को पास ही में देखोगे। उन्हें खोलकर यहां ले आओ; 3 यदि कोई तुमसे पूछे कि तुम क्या करते हो, तो इतना ही कहना, 'स्वामी को इनकी आवश्यकता है,' और कोई आपत्ति नहीं होगी।" 4 यह इसलिए हुआ कि प्राचीन भविष्यद्वाणी पूरी हो, 5 "यरूशलेम से कह कि उसका राजा, नम्रतापूर्वक गदही के बच्चे पर बैठे हुए उसके पास आ रहा है।" 6 दोनों शिष्यों ने वैसा ही किया जैसा यीशु ने कहा था, 7 और गदही और उसके बच्चे को उनके पास लाए और अपने वस्त्र गदही के बच्चे[1] पर डाले ताकि यीशु उस पर सवार हों। 8 और भीड़ में

[2] मूलत "मनुष्य का पुत्र।" [3] यही आशय है। [4] यही तात्पर्य है।

[1] यही ।

कई लोगों ने उनके आगे मार्ग पर अपने वस्त्र डाले, और दूसरों ने पेड़ों की डालियां काटीं और उनके सामने बिछाईं। 9 तब भीड़ उनके आगे पीछे यह चिल्लाते हुए हो ली, "परमेश्वर राजा दाऊद की सन्तान को आशिष दे।"··· "परमेश्वर के भेजे हुए जन यहां हैं!"[3]···"प्रभु, उनको आशिष दे!"···"सबसे ऊंचे स्वर्ग में परमेश्वर की प्रशंसा हो!" 10 यीशु के प्रवेश करते ही पूरे शहर में खलबली मच गई। उन्होंने पूछा, "यह कौन है?" 11 भीड़ ने उत्तर दिया, "यह गलील के नासरत के भविष्यद्वक्ता, यीशु हैं।"

12 यीशु मन्दिर में गए, उन्होंने व्यापारियों को बाहर निकाला, और सर्राफों के तख्तों और कबूतर बेचने वालों की चौकियों को उलट दिया। 13 यीशु ने कहा, "धर्मशास्त्र में लिखा है, मेरा मन्दिर प्रार्थना का घर है, परन्तु तुमने इसे डाकुओं की खोह में बदल दिया है।" 14 इसी समय अन्धे और अपंग लोग यीशु के पास आए और उन्होंने उनको मन्दिर में चंगा किया। 15 परन्तु जब महायाजकों और दूसरे यहूदी अगुओं ने इन अद्भुत आश्चर्यकर्मों को देखा, और छोटे बालकों तक को मन्दिर में यह चिल्लाते सुना, "परमेश्वर दाऊद की सन्तान को आशिष दे", तो वे चिन्तित और क्रोधित हुए और उन्होंने यीशु से पूछा, "क्या आप सुनते हैं वे बच्चे क्या कह रहे हैं?" 16 यीशु ने उत्तर दिया, "हां, क्या तुमने कभी धर्मशास्त्र नहीं पढ़ा? क्योंकि उसमें लिखा है 'दूध पीते बच्चे भी उसकी स्तुति करेंगे'!" 17 तब वह बैतनिय्याह को लौट गए, जहां रात भर ठहरे रहे।

18 सवेरे जब वह यरूशलेम को फिर जा रहे थे, उन्हें भूख लगी, 19 और उन्होंने मार्ग के किनारे अंजीर का एक वृक्ष देखा। वह यह देखने के लिए गए कि उसमें अंजीर लगे हैं या नहीं, परन्तु उसमें केवल पत्तियां ही थीं। तब उन्होंने वृक्ष से कहा, "तुझमें फिर कभी फल न लगेंगे।" और अंजीर का वृक्ष तुरन्त सूख गया। 20 शिष्यों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूछा, "यह अंजीर का वृक्ष इतनी जल्दी कैसे सूख गया?" 21 तब यीशु ने उन्हें बताया, "सच है, यदि तुममें विश्वास हो, और सन्देह न करो तो तुम इस प्रकार के और इससे भी बड़े कार्य कर सकते हो। तुम इस जैतून पहाड़ से भी कह सकते हो 'यहां से समुद्र में चला जा', और वह हो जाएगा। 22 यदि तुम विश्वास करते हो तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हें मिल जाएगा।"

23 यीशु जब मन्दिर में पहुंचकर शिक्षा दे रहे थे, महायाजक और दूसरे यहूदी अगुए उनके पास आए और उन्होंने जानना चाहा कि यीशु ने एक दिन पहले किस अधिकार से व्यापारियों को बाहर निकाला था।[4] 24 यीशु ने कहा, "पहले तुम एक प्रश्न का उत्तर दो तब मैं तुम्हें बताऊंगा। 25 यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला परमेश्वर की ओर से भेजा गया था, या नहीं?" उन्होंने उस विषय पर आपस में बातचीत की। उन्होंने कहा, "यदि हम कहें, 'परमेश्वर की ओर से', तब वह पूछेंगे कि हमने यूहन्ना की बातों का विश्वास क्यों नहीं किया। 26 और यदि हम इन्कार करें कि 'परमेश्वर ने उसे नहीं भेजा, तो हमें भीड़ के उपद्रव का डर है, क्योंकि सब लोग जानते हैं कि वह भविष्यद्वक्ता था'।" 27 इसलिए अन्त में उन्होंने उत्तर दिया, "हम नहीं जानते!" इस पर यीशु ने कहा, "तब मैं भी तुम्हारे प्रश्न का उत्तर नहीं देता। 28 परन्तु इसके बारे में तुम क्या सोचते हो? एक मनुष्य के दो पुत्र थे। उसने बड़े लड़के से कहा, 'बेटा, जा आज तू खेत में काम कर।' 29 उसने उत्तर दिया, 'मैं नहीं जाता', परन्तु बाद में उसने अपना मन बदल दिया और गया। 30 तब पिता ने छोटे लड़के से कहा, 'तू जा!' और उसने कहा, 'जी, पिताजी, जाऊंगा।' परन्तु वह नहीं गया। 31 इन दोनों में से किसने अपने पिता की आज्ञा मानी?" उन्होंने उत्तर दिया,

[3] मूलतः "धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।" [4] मूलतः "तू ये काम किसके अधिकार से करता है?"

"निश्चित रूप से पहले ने।" तब यीशु ने अपना अर्थ स्पष्ट किया, "दुष्ट लोग और वेश्याएं तुमसे पहले राज्य में प्रवेश करेंगे। 32 क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने तुमसे पश्चाताप करने और परमेश्वर की ओर फिरने को कहा और तुम नही फिरे, जबकि अत्यन्त दुष्ट लोगो और वेश्याओ ने मन फिराया। और तुमने इसे अपनी आँखों से होते देखा, तो भी तुमने पश्चाताप करने से इन्कार किया, और इसलिए तुम विश्वास नही कर सके।

33 "अब यह कहानी सुनो किसी खेत के मालिक ने दाख की बारी लगाई और उसके चारो ओर झाडियों की बाड लगा दी, और चौकीदार के लिए एक मंच बनाया, तब कई किसानो को दाख की बारी बटाई पर देकर वह दूसरे देश में रहने के लिए चला गया। 34 दाख की फसल के समय उसने अपना हिस्सा लाने के लिए किसानों के पास अपने लोगो को भेजा। 35 परन्तु किसानो ने उसके लोगो पर हमला किया, किसी को पीटा, किसी को मारा और किसी को पत्थरवाह किया। 36 तब उसने पहले से भी अधिक लोगों को अपना हिस्सा लाने के लिए भेजा, परन्तु उनका भी वही हाल हुआ। 37 अन्त मे स्वामी ने अपने पुत्र को यह सोचकर भेजा, कि वे अवश्य ही उसका आदर करेंगे। 38 परन्तु जब इन किसानों ने पुत्र को आते देखा तो आपस मे कहा, संपत्ति का उत्तराधिकारी चला आ रहा है, आओ, उसे मार डालें और संपत्ति हड़प लें! 39 इसलिए उन्होंने पुत्र को दाख की बारी के बाहर घसीटा और उसे मार डाला। 40 जब मालिक लौटेगा, तो उन किसानो के साथ क्या करेगा? तुम क्या सोचते हो?" 41 यहूदी अगुओ ने उत्तर दिया, "वह उन दुष्टो को भयानक रीति से मारेगा और दाख की बारी का ठेका दूसरों को सौंप देगा जो समय पर उसे हिस्सा देंगे।" 42 तब यीशु ने उनसे पूछा, "क्या तुमने धर्मशास्त्र मे कभी नही पढा: 'जिस पत्थर को मिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया वही आदरयोग्य कोने का पत्थर बनाया गया[5],' कितनी आश्चर्य की बात है! परमेश्वर ने कितना अद्भुत काम किया? 43 मेरा अर्थ यह है कि परमेश्वर का राज्य तुमसे छीना जाएगा, और ऐसी जाति को दिया जाएगा जो परमेश्वर को उपज का उसका हिस्सा दिया करेगी।[6] 44 जितने इस सत्य[7] की चट्टान से टकराएंगे, वे सब चकनाचूर हो जाएंगे, परन्तु जिन पर यह गिरेगा वे पिस जाएंगे।" 45 जब महायाजको और दूसरे यहूदी अगुओं ने जाना कि यीशु उन ही के विषय मे बोल रहे हैं—कि वे ही उनकी कहानी के किसान हैं—46 तब उन्होंने यीशु को मार डालना चाहा, परन्तु भीड़ के कारण वे डरते थे, क्योंकि लोग यीशु को भविष्यद्वक्ता मानते थे।

22 1 यीशु ने कई अन्य कहानिया बताईं ताकि वे जानें कि स्वर्ग का राज्य किसके समान है। 2 उन्होंने कहा, "उदाहरण के लिए एक राजा की कहानी सुनो जिसने अपने पुत्र के लिए विवाह का बडा भोज तैयार किया। 3 अनेक मेहमान बुलाए गए, और जब भोजन तैयार हो गया तब उसने अपने सेवको को सबके पास यह बताने भेजा कि आने का समय हो गया है। परन्तु सबने आने मे इन्कार कर दिया। 4 इसलिए उसने दूसरे सेवको को उन्हे बताने भेजा, 'सब तैयार है, भोजन पक गया है। जल्दी आओ!' 5 परन्तु जिन मेहमानो को उसने बुलाया था, वे केवल हंस दिए और अपने अपने काम पर चले गए, कोई खेत में गया, तो कोई दुकान, 6 और कुछ ने सेवको को पीटा, उनसे लज्जाजनक व्यवहार किया, यहां तक कि कुछ को मार डाला। 7 तब राजा ने क्रोध मे आकर अपनी सेना भेजी और हत्यारो को नाश किया और शहर को जला दिया। 8 और उसने अपने सेवकों से कहा, 'विवाह का भोज तैयार है,

[5] ... सिरे का पत्थर।" [6] मूलत: "जो उसका फल लाए।" [7] मूलत: "इस पत्थर पर।"

और जिन मेहमानों को मैंने बुलाया वे आदर के योग्य नही हैं। 9 अब सडक के चौराहों और मोड़ों पर जाओ और जिस किसी को भी देखो उसे बुला लाओ।' 10 सेवकों ने वैसा ही किया, और चाहे भले, चाहे बुरे जितने मिले सबको बुलाया, और विवाह का घर मेहमानो से भर गया। 11 परन्तु जब राजा मेहमानों से मिलने अन्दर आया, तो उन्होंने एक मेहमान को देखा जो विवाह का वस्त्र (जो उसे दिया गया था[1]) नही पहने हुए था। 12 उसने पूछा, 'मित्र, तुम यहाँ विवाह का वस्त्र पहने बिना कैसे आ गए?' वह मनुष्य कुछ उत्तर ही न दे सका। 13 तब राजा ने अपने सेवको से कहा, 'उसके हाथ पैर बांध दो और उसे बाहर अंधेरे मे फेंक दो जहां रोना और दांत पीसना है। 14 क्योंकि बुलाए हुए बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े हैं'।"

15 तब सब फरीसियों ने एक साथ मिलकर योजना बनाई कि किसी प्रकार यीशु को बातों मे फंसाएं जिससे वह उन्हे पकड सकें। 16 उन्होंने निर्णय किया और अपने कुछ लोगों को हेरोदियों[2] के साथ उनके पास यह पूछने भेजा : महाशय, "हम जानते हैं कि आप बहुत ईमानदार हैं और आप बिना भय और पक्षपात के परिणाम की चिन्ता किए बिना सत्य की शिक्षा देते हैं। 17 अब हमें बताइए, रोमी सरकार को कर देना उचित है या नही?" 18 परन्तु यीशु ने जान लिया कि वे किस लिए आए हैं। उन्होंने कहा, "हे पाखण्डियो! अपने कपटी प्रश्नों से तुम मुझे क्यों मूर्ख बनाना चाहते हो? 19 लाओ मुझे एक सिक्का दिखाओ।" और उन्होंने उनको एक सिक्का दे दिया। 20 यीशु ने उनसे पूछा, "इस पर किसका चित्र है! और चित्र के नीचे यह किसका नाम खुदा हुआ है?" 21 उन्होंने उत्तर दिया, "कैसर का।" यीशु ने कहा, "अच्छा, तब, यदि यह कैसर का है, तो उसे कैसर को दो, और जो-कुछ परमेश्वर का है वह सब परमेश्वर को दो।" 22 वे उनके उत्तर से चकित हुए और घबराकर चले गए।

23 परन्तु उसी दिन कई सदूकी, जो कहते हैं कि मृत्यु के बाद फिर जी उठना है ही नही, यीशु के पास आए और उन्होंने यीशु से पूछा, 24 "महाशय, मूसा ने कहा था कि यदि एक मनुष्य बिना सन्तान मर जाए, तो उसके भाई को उस विधवा से शादी करनी चाहिए और उसकी संतानों को मृत व्यक्ति की सब सम्पत्ति मिलनी चाहिए। 25 हमारे बीच मे सात भाइयों का एक घराना था। इनमे से पहले भाई ने शादी की और बिना संतान मर गया, इसलिए उसकी विधवा दूसरे भाई की पत्नी हो गई। 26 यह भाई भी बिना संतान मर गया, और वह अगले भाई की पत्नी हो गई, और इसी प्रकार वह सब की पत्नी बनी। 27 और अन्त में वह भी मर गई। 28 इसलिए पुनरुत्थान के समय वह किसकी पत्नी होगी? क्योंकि वह उन सातों की पत्नी थी!" 29 परन्तु यीशु ने कहा, "तुम इसलिए भूल करते हो क्योंकि धर्मशास्त्र से और परमेश्वर की शक्ति मे परिचित नही हो। 30 क्योंकि जी उठने के बाद किसी की शादी नही होगी, सब स्वर्ग मे स्वर्गदूतों के समान होगे। 31 परन्तु अब मरे हुए जी उठते हैं या नही—इस विषय पर क्या तुमने कभी धर्मशास्त्र नही पढा? क्या तुम नही समझते कि परमेश्वर ने यह वचन तुम्हारे ही लिए कहे, 32 'मैं इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूं'। इसलिए परमेश्वर मरे हुओं का नही, परन्तु जीवितों का परमेश्वर[3] है।" 33 भीड पर उनके उत्तरो का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

[1] यही अर्थ है। [2] हेरोदी यहूदियों के राजनीतिक दल के थे। [3] अर्थात, यदि इब्राहीम, इसहाक और याकूब, जिनकी मृत्यु बहुत पहले हुई परमेश्वर के सामने जीवित न होने, तो परमेश्वर ने कहा होता, "मैं इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर था।"

34, 35 परन्तु फरीसियों पर नहीं ! जब उन्होंने देखा कि यीशु ने अपने उत्तर से सदूकियों को चुप कर दिया है तो उन्होंने उनसे एक दूसरा प्रश्न करने का विचार किया। उनमें से एक वकील ने पूछा · 36 "महाशय मूसा की व्यवस्था मे सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा कौन सी है?" 37 यीशु ने उत्तर दिया, "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय, प्राण और मन से प्रेम कर। 38, 39 दूसरी सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा भी उसी के समान है तू अपने पडोसी से अपने समान प्रेम रख। 40 दूसरी सब व्यवस्थाएं और भविष्यद्वक्ताओं की सब आज्ञाएं इन्हीं दो आज्ञाओं से निकली हैं और इनको मानने से पूरी होती हैं। इन्हीं आज्ञाओं को मानो तो तुम दूसरी सब व्यवस्थाओं का पालन करोगे।"

41 यीशु के चारों ओर फरीसी थे। यीशु ने उनसे एक प्रश्न किया · 42 "मसीह के विषय में तुम्हारा क्या विचार है ? वह किसकी संतान है?" उन्होंने उत्तर दिया, "दाऊद की"। 43 यीशु ने पूछा, "फिर दाऊद ने क्यों पवित्र आत्मा की प्रेरणा से उसे 'प्रभु' कहा ? क्योंकि दाऊद ने कहा, 44 परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा, 'मेरी दाहिनी ओर बैठ जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पैर तले न कर दूं।' 45 जबकि दाऊद ने उसे 'प्रभु' कहा, तो फिर वह उसका पुत्र कैसे हुआ ?" 46 उनका मुह बन्द हो गया। और इसके बाद फिर किसी का साहस न हुआ कि उन से और प्रश्न करें।

23 1 तब यीशु ने भीड से, और अपने शिष्यों से कहा, 2 "तुम इन यहूदी अगुओं और इन फरीसियों को मूसा समझोगे, क्योंकि वे बहुत से नियम बनाते रहते हैं[1] ! 3 और तुम्हें उनके मन की प्रत्येक इच्छा को अवश्य मानना चाहिए। वे जो कहें उसका पालन करना ठीक हो सकता है, तो भी उनके उदाहरण पर कभी मत चलना। क्योंकि वे तुमसे जो करने को कहते हैं, वह स्वयं नहीं करते। 4 वे तुम पर असम्भव आज्ञाओं का बोझ लादते हैं जिन्हें स्वयं पालन करने की कोशिश तक नहीं करते। 5 वे अपने सब काम दिखावे के लिए करते हैं। वे अपने को पवित्र[2] दिखाने के लिए अपनी बाहों में प्रार्थना के ताबीज बांधते हैं जिनके अन्दर धर्मशास्त्र के पद लिखे होते हैं,[3] और अपने वस्त्रों की झालरें लम्बी करते हैं। 6 उन्हें उत्सव में भोजन के समय और आराधनालयों में मुख्य मुख्य स्थानों पर बैठना कितना प्रिय लगता है ! 7 सडकों मे लोगों का अपने प्रति विशेष व्यवहार और 'रब्बी' और 'गुरु' कहलाना उन्हें कितना आनन्ददायक मालूम होता है ! 8 परन्तु स्वयं को कभी रब्बी मत कहलवाना। क्योंकि केवल परमेश्वर ही तुम्हारा रब्बी है और तुम सब एक ही स्तर पर भाई भाई हो। 9 और यहां संसार मे किसी को 'पिता' कहकर न पुकारना, क्योंकि केवल परमेश्वर को जो स्वर्ग में है, ऐसा कहकर पुकारना चाहिए। 10 और 'स्वामी' न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा केवल एक ही स्वामी है, अर्थात मसीह। 11 तुम जितने छोटे बनकर दूसरों की सेवा करो, उतने ही बड़े होगे। सबसे बडा बनने के लिए, तुम सेवक बनो। 12 परन्तु जो स्वयं को बडा सोचते हैं वे निराश होंगे और छोटे किए जाएंगे और जो स्वयं को दीन बनाएंगे वे आदर पाएंगे।

13, 14 "फरीसियो, और दूसरे यहूदी अगुओ, *तुम सब पर धिक्कार है ! पाखण्डियो ! क्योंकि तुम दूसरों को स्वर्ग के राज्य मे प्रवेश* करने नहीं देते, और स्वयं भी नहीं जाते। तुम सडक पर सबके सामने लम्बी लम्बी प्रार्थनाएं कर, पवित्र बनने का ढोंग करते हो, जबकि तुम विधवाओं को उनके घर से निकाल देते हो। पाखण्डियो !

15 "हां, हाय तुम पर पाखण्डियो ! क्योंकि तुम किसी को अपने मत मे लाने के लिए बड़ी

[1] ... की गद्दी पर बैठे हैं।" [2] यही आशय है। [3] मूलत: "ताबीजों को चौड़े करने।"

दूर दूर तक जाते हो, और तब उसका जीवन अपने से दूना नारकीय बना देते हो।

16 "अंधे अगुओ! हाय तुम पर! क्योंकि तुम्हारा नियम है कि 'परमेश्वर के मन्दिर की शपथ' लेने से कुछ नहीं होता—तुम यह शपथ तोड़ सकते हो, परन्तु मन्दिर के सोने की शपथ तोड़ी नहीं जा सकती। 17 मूर्खो! क्या बड़ा है, सोना या मन्दिर जिसके कारण सोना पवित्र ठहरता है? 18 तुम कहते हो कि 'वेदी की शपथ' लेकर तोड़ी जा सकती है, परन्तु 'वेदी पर चढ़ाई गई भेंटो की शपथ' लेने के बाद तोड़ी नहीं जा सकती! 19 अंधो! बड़ा क्या है, वेदी पर की भेंट या स्वयं वेदी जिसके कारण भेंट पवित्र होती है? 20 जब तुम 'वेदी की शपथ' लेते हो, तो तुम उसकी और उस पर की सब वस्तुओं की शपथ लेते हो, 21 और जब तुम 'मन्दिर की शपथ' खाते हो, तो तुम उसकी और उसमे निवास करने वाले परमेश्वर की भी शपथ लेते हो 22 और जब तुम 'स्वर्ग की शपथ' खाते हो तो तुम परमेश्वर के सिंहासन और स्वयं परमेश्वर की शपथ लेते हो।

23 "हाँ, पाखण्डी फरीसियो और दूसरे यहूदी अगुओ, तुम सब पर धिक्कार है। क्योंकि तुम पोदीने और सौंफ और जीरे तक का दशवाँश देते हो, परन्तु न्याय और दया और विश्वास जैसी महत्वपूर्ण बातों को छोड़ देते हो। हाँ, तुम्हें दशवाँश देना चाहिए, परन्तु इनसे भी महत्वपूर्ण बातों को तुम्हें नहीं छोड़ना चाहिए। 24 अंधे अगुओ! तुम मच्छडो को तो छानते हो परन्तु ऊंट को निगल जाते हो।

25 "फरीसियो और दूसरे धार्मिक अगुओ—तुम पर हाय! पाखण्डियो! तुम कटोरों और थालियों को ऊपर से माँजते हो, परन्तु भीतर अन्याय और लोभ भरा हुआ रहता है। 26 अंधे फरीसियो! पहले कटोरे और थाली को अन्दर से माँजो तब पूरा बर्तन साफ हो जाएगा।

27 "फरीसियो और दूसरे धार्मिक अगुओ—हाय तुम पर! तुम सुन्दर कब्रों के समान हो—जिनके अन्दर मरे हुए मनुष्यों की हड्डियाँ, और अशुद्धता और सड़ाहट भरी हुई हो। 28 तुम धर्मी दिखने की कोशिश करते हो परन्तु तुम्हारे स्वच्छ और पवित्र दिखने वाले चोगों के अन्दर हर प्रकार के पाखण्ड और पाप से रंगे हुए हृदय होते हैं।

29, 30 "हाँ, फरीसियो और धर्म के अगुओ—तुम पर धिक्कार है! पाखण्डियो! तुम उन भविष्यद्वक्ताओं के लिए स्मारक बनाते और भक्तों की कब्रों पर फूल चढ़ाते हो, जिनको तुम्हारे बापदादों ने मार डाला था, और कहते हो, हम होते तो कभी अपने बापदादों के जैसे नहीं करते। 31 ऐसा कहकर, तुम स्वयं पर दुष्ट मनुष्यों की संतान होने का कलंक लगाते हो। 32 और तुम उन्हीं के कदमों पर चलते हो, उन्ही की बुराई का घड़ा भरते हो। 33 हे साँपो, हे करैतों के बच्चो! तुम नरक के दण्ड से कैसे बच सकोगे? 34 मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं, और विद्वानों और लेखकों को जो प्रेरणा द्वारा लिखेंगे, भेजूंगा, और तुम उनमे से कई लोगो को क्रूस पर चढ़ाओगे, दूसरों की पीठ पर अपने आराधनालयों में कोड़े बरसाओगे, और उन्हें एक शहर से दूसरे शहर में खदेड़ोगे। 35 इस प्रकार तुम सब वध किए हुए धर्मी पुरुषों के लोहू के दोषी ठहरोगे— धर्मी हाबिल से लेकर जकरयाह (बिरिक्याह के पुत्र) तक की मृत्यु के, जिसे तुमने मन्दिर में वेदी और पवित्रस्थान के बीच में मार डाला था। 36 हाँ, सब शताब्दियों का संचित दण्ड इसी युग के माथे पड़ेगा।

37 "हे यरूशलेम, यरूशलेम, तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालती, और जिन्हे परमेश्वर ने तेरे पास भेजा, उन्हें पत्थरवाह करती है! कितनी ही बार मैं ने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों तले जमा करती है वैसे ही मैं तेरे बालकों को एकत्र कर लूं, परन्तु तूने मुझे करने न दिया। 38 और अब तुम्हारा घर

तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है। 39 क्योंकि मैं तुम्हें यह बताता हूँ, तुम मुझे उस समय तक फिर कभी न देखोगे जब तक तुम परमेश्वर के भेजे हुए को[4] ग्रहण करने के लिए तैयार न हो जाओ।"

24 1 जब यीशु मन्दिर से निकल रहे थे, उनके शिष्यों ने उनको मन्दिर की भिन्न भिन्न इमारतों को दिखाने के लिए ले जाना चाहा। 2 परन्तु यीशु ने उनसे कहा, "ये सब इमारतें गिरा दी जाएंगी, एक पत्थर भी दूसरे पर बचा न रहेगा।"

3 कुछ समय बाद जब वह जैतून पहाड़ पर बैठे थे, उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, "ये बातें कब होंगी? आपके फिर से आने और दुनिया[1] के अन्त होने के क्या चिन्ह होंगे?" 4 यीशु ने उन्हें बताया, "किसी को अवसर मत देना कि तुम्हें मूर्ख बनाए। 5 क्योंकि अनेक मसीह होने का दावा करके आएंगे और बहुतेरों को भटका देंगे। 6 जब तुम लड़ाइयों के शुरु होने के विषय में सुनो, तो यह मेरे लौटने का चिन्ह नहीं होगा, इनका होना अवश्य है, परन्तु तब भी अन्त नहीं होगा। 7 संसार के देश और राज्य एक दूसरे के विरुद्ध उठेंगे और अनेक स्थानों में अकाल और भूकम्प होंगे। 8 परन्तु ये सब आनेवाले महान संकट का केवल आरम्भ ही होंगे। 9 तब तुम्हें बहुत अधिक दुख दिया जाएगा और तुम मार डाले जाओगे और पूरे संसार में लोग तुमसे घृणा करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे हो, 10 और तुममें से अनेक फिर पाप में गिर जाएंगे और एक दूसरे को पकड़वाएंगे और एक दूसरे से घृणा करेंगे। 11 अनेक झूठे भविष्यद्वक्ता प्रकट होंगे और बहुतों को भटका देंगे। 12 पाप सब जगह बढ़ जाएगा और बहुतों का प्रेम ठंडा हो जाएगा। 13 परन्तु जितने अन्त तक धीरज रखेंगे, उन्हीं का उद्धार होगा। 14 और राज्य का सुसंदेश पूरे संसार में प्रचार किया जाएगा, ताकि सब जातियां उसे सुन लें और तब, अन्त आ जाएगा।

15 "इसलिए, जब तुम उस घृणित वस्तु[2] को (जिसके विषय में दानिय्येल[3] भविष्यद्वक्ता ने बताया था) पवित्र स्थान में खड़े देखो (पाठक के लिए टिप्पणी : इसका अर्थ क्या है आप जानते हैं।)[4] 16 तब जो यहूदिया में हों, वे यहूदिया के पहाड़ों पर भाग जाएं। 17 जो आंगन[5] में हों वे भागने से पहले सामान बांधने को भीतर न जाएं। 18 जो खेत में हों वे अपने वस्त्र लेने को घर न लौटें। 19 उन दिनों गर्भवती और दूध पिलाती हुई स्त्रियों पर हाय! 20 और प्रार्थना करो कि तुम्हारा भागना ठंड के मौसम में, या सब्त[6] के दिन न हो। 21 क्योंकि इतना भारी सताव होगा जैसा संसार के इतिहास में न पहले कभी हुआ, और न कभी होगा। 22 वास्तव में, यदि वे दिन कम न किए जाएं, तो पूरी मानवजाति ही नष्ट हो जाएगी। परन्तु वे दिन परमेश्वर के चुने हुए लोगों के कारण कम किए जाएंगे। 23 तब यदि कोई तुम्हें बताए, मसीह इस स्थान या उस स्थान में है, या यहां या वहां प्रकट हुआ है, तो विश्वास मत करना। 24 क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता निकलेंगे, और अद्भुत कर्म करेंगे, ताकि यदि सम्भव हो, तो परमेश्वर के चुने हुओं को भी धोखा दें। 25 देखो, मैंने तुम्हें सावधान किया है। 26 इसलिए यदि कोई तुमसे कहे कि मसीह फिर आ गया है और निर्जन स्थान में है, तो वहां जाने और देखने का कष्ट मत करना। या यदि कहें कि वह उस स्थान पर छिपा है तो विश्वास मत करना।

---

[4] मूलत "प्रभु के नाम से।"

[1] मूलत "जगत।" [2] मूलत "उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को।" [3] दानिय्येल 9 27, 11·31, 12 11
[4] मूलत "(जो पढ़े वह समझे।)" [5] मूलत "कोठे", जिनकी छत समतल होती थी जिसे लोग कमरे के समान काम में ला सकते थे। प्रेरितों 10 9 पढ़िये। [6] शहर के द्वार सब्त के दिन बन्द रहते थे।

/

27 क्योंकि जैसे बिजली आकाश में पूर्व से पश्चिम तक चमकती है, वैसे ही मेरा आना होगा, जब मैं, मसीह[7] लौटूंगा। 28 और जहां भी शव होंगे, वहां गिद्ध इकट्ठे होंगे।

29 "उन दिनों के क्लेश के बाद तुरन्त सूर्य अंधियारा हो जाएगा और चांद का प्रकाश जाता रहेगा और तारे ऐसे दिखेंगे जैसे आकाश से गिर रहे हो। और आकाश की शक्तिया हिलाई जाएंगी[8]। 30 और तब अन्त मे मेरे आने[9] का चिन्ह आकाश में प्रगट होगा और तब पृथ्वी भर मे बडा विलाप होगा। संसार की सब जातिया मुझे सामर्थ और बडी महिमा के साथ आकाश मे बादलो पर आते दिखेंगी। 31 और मैं तुरही की तेज आवाज के साथ, अपने स्वर्गदूतो को भेजूंगा, वे पृथ्वी और आकाश[10] की छोर से मेरे चुने हुओ को इकट्ठा करेंगे।

32 "अब अंजीर के वृक्ष से एक शिक्षा लो जब उसमें कोमल डालियां और कोपलें निकलने लगती हैं, तब तुम जान लेते हो, कि गर्मी का मौसम आ पहुंचा है। 33 वैसे ही, जब तुम इन सब घटनाओं को होते देखो, तब जान सकते हो कि मेरा[11] आना निकट है, यहा तक कि द्वार पर है। 34 यह युग समाप्त हो जाएगा[12]। 35 आकाश और पृथ्वी टल जाएंगी, परन्तु मेरा वचन सर्वदा बना रहेगा। 36 परन्तु अन्त कब होगा इसकी तारीख और घड़ी कोई नही जानता, स्वर्गदूत भी नही। परमेश्वर का पुत्र[13] भी नही जानता केवल परमेश्वर ही जानता है। 37, 38 संसार मे चैन होगा[14]—उत्सव और भोज और विवाह—जैसा नूह के दिनो मे होता था इससे पहले कि अचानक बाढ आए, 39 लोग विश्वास[15] ही नही करते थे कि क्या होने जा रहा है जब तक बाढ वास्तव मे आकर उन सबको बहा नही ले गई। उसी प्रकार मेरा भी आना होगा। 40 दो मनुष्य खेत मे एक साथ काम करते होंगे, और एक ले लिया जाएगा, दूसरा छोड़ दिया जाएगा। 41 दो स्त्रिया घर मे काम काज कर रही होगी, एक ले ली जाएगी, दूसरी छोड दी जाएगी। 42 इसलिए तैयार रहो, क्योंकि तुम नही जानते कि किस दिन तुम्हारा प्रभु आने वाला है। 43 जैसे कोई मनुष्य जागते रहकर स्वय को चोरो के संकट से बचा सकता है, 44 वैसे ही तुम भी मेरे अचानक आने के लिए सदा तैयार रहकर सकट से बच सकते हो। 45 क्या तुम प्रभु के बुद्धिमान और विश्वासयोग्य सेवक हो? क्या मैंने तुम्हें अपनी गृहस्थी चलाने और अपने बालको को रोज खिलाने का काम सौंपा है? 46 तुम धन्य हो यदि मैं लौटूं और तुम्हें अपना काम ईमानदारी से करते पाऊं। 47 मैं ऐसे विश्वासयोग्य लोगों को अपनी सब सम्पत्ति का अधिकारी ठहराऊंगा। 48 परन्तु यदि तुम दुष्ट हो और स्वयं से कहो, अभी मेरे प्रभु के आने मे कुछ देर है। 49 और अपने साथी सेवको को सताना, दावत करना और नशे में पड़े रहना आरम्भ करो, 50 तो तुम्हारा प्रभु अचानक, जब तुम प्रतीक्षा न करते होंगे, आ जाएगा, 51 और तुम्हें बुरी तरह कोड़े मारेगा और तुम्हे पाखण्डियों में शामिल करेगा; वहा रोना और दांत पीसना होगा।

25

1 "स्वर्ग के राज्य को दस कुंवारियो के उदाहरण से समझा जा सकता है, जो अपनी बत्तियों को साथ लेकर दूल्हे से मिलने के लिए गईं। 2, 3, 4 परन्तु उनमें से पाच ही इतनी बुद्धिमान थी कि उन्होंने अपनी बत्तियो में तेल भरा, दूसरी पाच मूर्ख थी, जो तेल भरना भूल गईं। 5, 6 जब दूल्हे के आने मे

[7] मूलत. "मनुष्य का पुत्र।" [8] मूलत "आकाश की शक्तियां हिलाई जाएगी।" (इफि 6·12 पढ़िये।)
[9] मूलत "मनुष्य के पुत्र का चिन्ह।" [10] आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारो ओर से।" [11] "वह निकट है।" [12] या, जब ये सब बातें पूरी हो, तब इस युग का अन्त होगा। [13] मूलत "न पुत्र।" कई प्राचीन हस्तलेखो में यह छोड दिया गया है। [14] यही आशय है। [15] मूलत "कुछ भी मालूम न पडा।"

देर हुई, तो वे सो गईं। आधी रात को शोर सुनाई पड़ा, दूल्हा आ रहा है। आओ उससे भेंट करने निकलो ! 7, 8 सब कुंवारियाँ जाग गईं और उन्होंने अपनी बत्तिया जलाईं। तब जिन पाच कुंवारियों की बत्तियों मे तेल नही था उन्होंने दूसरों से मागा, क्योंकि उनकी बत्तिया बुझ रही थी। 9 परन्तु दूसरो ने उत्तर दिया, 'हमारे पास भी इतना नही है कि तुम्हे दे सकें। मांगने के बदले दुकान में जाओ और अपने लिए खरीद लो।' 10 परन्तु जब वे चली गईं, तब दूल्हा आ पहुंचा, और जो तैयार थी वे उसके साथ अन्दर विवाह के भोज मे गईं, और द्वार बन्द किया गया। 11 कुछ समय बाद जब दूसरी पाच कुंवारियां लौटी, तो बाहर खडी पुकारती रही, श्रीमान जी, हमारे लिए द्वार खोलिए ! 12 परन्तु उसने उत्तर दिया, चली जाओ ! अब बहुत देर हो चुकी है[1] ! 13 इसलिए जागते रहो और तैयार रहो, क्योंकि तुम मेरे लौटने[2] की न तारीख जानते हो न समय।

14 "फिर, स्वर्ग के राज्य को एक मनुष्य के उदाहरण से भी समझाया जा सकता है जो दूसरे देश को जाने वाला था, जिसने अपने नौकरों को बुलाकर उन्हें रुपया उधार दिया ताकि जाने के बाद वे उन रुपयो से और अधिक धन कमाए। 15 उसने एक को 5,000 रुपये, दूसरे को 2,000 रुपये और तीसरे को 1,000 रुपये—उनकी योग्यता के अनुसार दे दिए—और तब अपनी यात्रा पर निकल गया। 16 जिस मनुष्य को 5,000 रुपये मिले थे, उसने तुरन्त लेन देन करना आरम्भ किया और शीघ्र ही 5,000 रुपये और कमा लिए। 17 जिस मनुष्य को 2,000 रुपये मिले थे, वह भी तुरन्त काम में लग गया और उसने भी 2,000 रुपये और कमाए। 18 परन्तु जिस व्यक्ति को 1,000 रुपये मिले थे, उसने जमीन मे गड्ढा खोदा और उसे वहा छिपा दिया कि सुरक्षित रहे। 19 बहुत दिनो के बाद उनका स्वामी अपनी यात्रा से लौटा और उसने दिए गए धन का लेखा लेने के लिए उन्हे बुलवाया। 20 जिस मनुष्य को 5,000 रुपये दिए गए थे उसने 10,000 रुपये लौटा दिए। 21 उसके स्वामी ने अच्छे काम के लिए उसकी प्रशसा की। उसने कहा, 'तू इन थोड़े ही रुपयों मे ईमानदार रहा, इसलिए अब मैं तुझ पर अधिक जिम्मेवारी सौंपूंगा जो आनन्द के काम तुझे मैंने सौंपे हैं उन्हे आरम्भ कर।' 22 तब उस मनुष्य के लेखा देने की बारी आई जिसे 2,000 रुपये मिले थे। उसने कहा, 'स्वामी आपने मुझे 2,000 रुपये दिए थे, और मैंने उसका दूना कमाया है।' 23 उसके मालिक ने कहा, 'शाबाश, तू अच्छा और ईमानदार सेवक है। तू इतने थोड़े रुपयों में ईमानदार रहा, इसलिए अब मैं तुझे अधिक सौंपूंगा।[2] 24, 25 तब जिस मनुष्य को 1,000 रुपये मिले थे उसने आकर कहा, 'स्वामी, मुझे मालूम था कि आप कठोर मनुष्य हैं, और मुझे डर था कि यदि मैं इन पैसो से कुछ कमाता तो आप उसे छीन लेते[3], इसलिए मैंने आपका रुपया भूमि में छिपा दिया था। यह लीजिए।' 26 परन्तु उसके स्वामी ने उत्तर दिया, 'नीच ! सुस्त दास ! जब तुझे मालूम था कि मैं तेरा लाभ भी ले लूंगा, 27 तब तूने इतना तो किया होता कि मेरा पैसा बैंक मे जमा कर देता जिससे मुझे कुछ ब्याज मिलता। 28 इस व्यक्ति से यह धन ले लो और जिसके पास 10,000 रुपये हैं, उसे दे दो। 29 क्योंकि जिस मनुष्य को मिला हो और वह उसका ठीक उपयोग करे, तो उसे और अधिक दिया जाएगा, और उसके पास बहुत हो जाएगा। परन्तु जो ईमानदार न निकले, उससे उसकी रही सही जिम्मेवारी भी छीन ली जाएगी। 30 और इस निकम्मे नौकर को बाहर अंधेरे मे डाल दो जहा रोना और दात पीसना होगा।'

---

[1] मूलतः "मैं तुम्हें नहीं जानता।" [2] यही आशय है। [3] मूलत 'तू जहाँ कही नहीं बोता वहाँ काटता है, और छीटता वहाँ से बटोरता है। सो मैं डर गया।

31 'परन्तु जब मैं, मसीह,[4] अपनी महिमा में आऊंगा, और स्वर्गदूत मेरे साथ होंगे, तब मैं अपने महिमा के सिंहासन पर बैठूंगा। 32 और सब जातियां मेरे सामने इकट्ठी की जाएंगी। मैं लोगों[5] को अलग अलग करूंगा जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है, 33 और मैं भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर, और बकरियों को अपनी बाईं ओर करूंगा। 34 तब मैं, राजा, अपनी दाहिनी ओर के लोगों से कहूंगा, 'मेरे पिता के आशीषित लोगो, उस राज्य में आओ, जो तुम्हारे लिए संसार की सृष्टि से पहले तैयार किया गया है। 35 क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे भोजन खिलाया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी दिया, मैं अपरिचित था और तुम मुझे अपने घरों में बुलाकर ले गए; 36 नंगा था और तुमने मुझे वस्त्र पहिनाया, बीमार और जेलखाने में था, और तुम मुझे देखने आए।' 37 तब ये धर्मी व्यक्ति उत्तर देंगे, 'स्वामी, हमने कब आपको भूखा देखा और भोजन दिया? या प्यासा देखा और पानी पिलाया? 38 या अजनबी देखा और आपकी सहायता की? या नंगा देखा, और आपको वस्त्र पहिनाया? 39 हमने कब आपको बीमार या जेलखाने मे देखा, और आपसे मिलने गए?' 40 और मैं, राजा, उनसे कहूंगा, 'जो कुछ तुमने यह सब मेरे भाइयों के लिए किया वह मेरे लिए किया।' 41 तब मैं अपने बायें हाथ पर खड़े लोगों की ओर मुड़ कर कहूंगा, 'उस अनन्त आग मे जाओ जो शैतान और उसके दुष्टात्माओं के लिए तैयार की गई है। 42 क्योंकि मैं भूखा था तुमने मुझे नहीं खिलाया, प्यासा था और तुमने मुझे पानी नही पिलाया। 43 अपरिचित था, और तुमने मेरी पहुनाई करने से इन्कार किया, नंगा था, और तुमने मुझे वस्त्र नही दिए, बीमार था और जेलखाने में था, और तुम मुझे कभी देखने नहीं आए।' 44 तब वे उत्तर देंगे, 'स्वामी, हमने कब आपको भूखा या प्यासा या अजनबी या नंगा या बीमार या जेलखाने में देखा, और आपकी सहायता नही की?' 45 तब मैं उत्तर दूंगा, 'जब तुमने मेरे इन भाइयों में से छोटे से छोटे की सहायता करने से इन्कार किया, तो मेरी सहायता करने से इन्कार किया।' 46 और वे सब अनन्त दंड पाने के लिए भेज दिए जाएंगे; परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।"

26 1 शिष्यों को ये बातें बताने के बाद यीशु ने उनसे कहा, 2 "तुम्हें मालूम है कि फसह का उत्सव दो दिनों बाद शुरु होगा, और मैं[1] पकड़वाया और क्रूस पर चढ़ाया जाऊंगा।" 3 उसी समय महायाजकों और दूसरे यहूदी अधिकारियों की सभा महायाजक काइफा के घर पर हो रही थी, 4 कि यीशु को चुपचाप पकड़ने, और उनको मार डालने के उपाय पर विचार करें। 5 वे सहमत थे कि यह काम फसह के त्यौहार के समय न करें ऐसा न हो कि दंगा हो जाए।

6 यीशु बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर आए। 7 जब वह भोजन कर रहे थे, एक स्त्री बहुमूल्य इत्र की एक बोतल लेकर आई, जिसे उसने यीशु के सिर पर उंडेला। 8, 9 शिष्य क्रोधित हुए। उन्होंने कहा, 'कितना पैसा बर्बाद हो रहा है। अच्छा होता यदि वह उसे अधिक दाम पर बेचकर गरीबों को पैसा बांट देती।' 10 यीशु ने यह जानकर कि वे क्या सोच रहे हैं, कहा, 'तुम उस पर क्यों कुड़कुड़ा रहे हो? क्योंकि उसने मेरे साथ भलाई की है। 11 ग़रीब तुम्हारे बीच मे सदा रहेंगे, परन्तु मैं सदा तुम्हारे साथ नहीं रहूंगा। 12 उसने यह इत्र मुझ पर इसलिए उंडेला है कि मेरी देह को गाड़े जाने के लिए तैयार करे। 13 इस काम के लिए उसका स्मरण सदा होता रहेगा। जहां कहीं सुसमाचार का

[4] मूलत "मनुष्य का पुत्र।" [5] या, "जातियों को अलग।"

[1] मूलत "मनुष्य का पुत्र।"

भी पूरे संसार में प्रचार किया जाएगा, उसके इस काम की कहानी बताई जाएगी'।"

14 तब यहूदा इस्करियोती, बारह शिष्यों में से एक, महायाजकों के पास गया, 15 और उसने पूछा, "मुझे कितना दाम दोगे यदि मैं यीशु को तुम्हारे हाथ में कर दूं!" उन्होंने उसे चांदी के तीस सिक्के दे दिए। 16 उस समय से यहूदा इस ताक में लग गया कि कब यीशु को उनके हाथ पकड़वाने का अवसर पाए।

17 फसह के त्योहार के पहले दिन—जब सब यहूदी घरो मे बिना खमीर की रोटियां बनाई जाती थी, शिष्य, यीशु के पास आए और उनसे पूछा, "हम फसह खाने की तैयारी कहां करें?" 18 यीशु ने उत्तर दिया, "शहर मे जाकर अमुक व्यक्ति से मिलो और उससे कहो, "हमारे गुरु ने कहा है, मेरा समय आ पहुचा है, और मैं फसह का भोजन अपने शिष्यों के साथ तेरे घर पर करूंगा'।" 19 जैसा यीशु ने कहा था शिष्यो ने वैसा ही किया, और वहा भोजन तैयार किया। 20, 21 उस दिन शाम को जब यीशु बारहों के साथ भोजन कर रहे थे, उन्होंने कहा, "तुममे से एक मुझे पकड़वाएगा।" 22 वे बड़े उदास हुए और हर एक ने पूछा, "क्या वह मैं हूं?" 23 यीशु ने उत्तर दिया, "जिसको मैंने सबसे पहले परोसा वही है।[2] 24 क्योंकि जैसे भविष्यद्वाणी की गई थी मुझे मरना ही है,[3] पर धिक्कार है उस व्यक्ति पर जिसके द्वारा मैं पकड़वाया जाऊंगा, उसका जन्म ही न होता तो उसके लिए अधिक अच्छा होता।" 25 यहूदा ने भी उनसे पूछा था, "रब्बी, क्या वह मैं हूं?" और यीशु ने उससे कहा था, "हां"। 26 जब वे खा रहे थे, यीशु ने रोटी ली और उसके टुकड़े किए और शिष्यों को देकर कहा, "इसे लो और खाओ, क्योंकि यह मेरी देह है।" 27 और उन्होंने दाखरस का प्याला उठाया और उसके लिए धन्यवाद दिया और शिष्यों को देकर कहा, "तुम सब इसमें से पियो, 28 क्योंकि यह मेरा लोहू है, जिससे नई वाचा पर मोहर होती है। यह बहुतों के पापों की क्षमा के लिए बहाया जाता है। 29 मेरे वचनों पर ध्यान दो—मैं यह दाखरस उस दिन तक फिर कभी नही पीऊंगा जब तक अपने पिता के राज्य में तुम्हारे साथ फिर नया न पीऊं।"

30 और जब वे गीत गा चुके, तब जैतून पहाड़ पर चले गए।

31 तब यीशु ने उनसे कहा, "आज रात तुम सब मुझे छोड़ दोगे। क्योंकि धर्मशास्त्र[4] मे लिखा है कि परमेश्वर चरवाहे को मारेगा, और भेड़ों का झुंड तितर बितर हो जाएगा। 32 परन्तु जी उठने के बाद, मैं गलील को जाऊंगा, और वहां तुमसे मिलूंगा।" 33 पतरस ने कहा, "यदि सब आपको छोड़ें तो छोड़ें, मैं कभी नहीं छोड़ूंगा।" 34 यीशु ने उसे बताया, "सच तो यह है कि इसी रात, इससे पहले कि सुबह मुर्ग बाग दे, तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा!" 35 पतरस ने हठ करके कहा, "चाहे मैं मर भी जाऊं, तौभी आपका इन्कार नही करूंगा।" और दूसरे सब शिष्यों ने भी वैसा ही कहा।

36 तब यीशु उन्हे गतसमनी नामक बगीचे मे ले गए, और उनसे वहाँ ठहरने को कहा और वह प्रार्थना करने के लिए आगे बढ गए। 37 उन्होंने पतरस और जब्दी के दोनों पुत्रों याकूब और यूहन्ना को अपने साथ लिया और वह दुखी और निराश होने लगे। 38 तब यीशु ने उनसे कहा, "मेरा मन उदास और दुख में इतना व्याकुल है जैसे प्राण निकलने पर हो... यहीं ठहरो...मेरे साथ जागते रहो।" 39 वह और कुछ आगे बढ गए, और मुह के बल ज़मीन पर गिर पड़े और उन्होंने प्रार्थना की, "मेरे पिता! यदि हो सके, तो यह प्याला मुझसे दूर कर। तौभी मेरी नही, परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।" 40 तब वह तीनो शिष्यों के पास

---

[2] मूलत "जिस ने मेरे साथ थाली मे हाथ डाला है।" [3] मूलतः "मनुष्य का पुत्र तो...जाता ही है।"
[4] - 13 7

लौटकर गए और उन्हें सोते पाया। उन्होंने पुकारा, "पतरस, क्या तुम मेरे साथ एक घंटा भी न जाग सके? 41 जागते और प्रार्थना करते रहो। नही तो परीक्षा में तुम हार जाओगे। क्योंकि आत्मा वास्तव में तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है!" 42 उन्होंने फिर उनसे अलग होकर प्रार्थना की, "मेरे पिता! यदि यह प्याला मुझसे दूर नहीं हो सकता जब तक मैं इसे पूरा न पीऊं, तो तेरी इच्छा पूरी हो।" 43 उन्होंने फिर उनके पास लौटकर उन्हे सोते पाया! क्योंकि उनकी आंखें नींद से भारी थी, 44 इसलिए वह तीसरी बार प्रार्थना करने के लिए लौट गए, और उन्होंने फिर वैसा ही कहकर प्रार्थना की। 45 तब वह शिष्यो के पास आए और उन्होंने कहा, "अब सोते रहो और आराम करो...परन्तु नहीं! समय आ गया है! मैं[5] दुष्ट मनुष्यों के हाथों में पकड़वाया जाता हूं! 46 उठो! चलो चलें! देखो! वह मनुष्य आ रहा है जो मुझे पकड़वाएगा!"

47 उस क्षण जब वह बोल ही रहे थे, यहूदा, बारहो में से एक, बडी भीड़ के साथ आ पहुंचा। भीड तलवारें और लाठियां लिए हुई थी जो यहूदी अगुवों द्वारा भेजी गई थी। 48 यहूदा ने लोगो को बता दिया था कि जिस मनुष्य को वह चूमे, उसी की खोज मे वे हैं और उसी को पकडें। 49 इसलिए अब यहूदा सीधे यीशु के पास आया और उसने कहा, "नमस्कार, गुरु!" और उनको बहुत चूमा। 50 यीशु ने कहा, "मेरे मित्र, जिस काम के लिए तू आया है, उसे पूरा कर।" तब दूसरों ने उन्हे पकड़ लिया। 51 यीशु के साथ के एक व्यक्ति ने अपनी तलवार खींची और महायाजक के नौकर का एक कान उडा दिया। 52 यीशु ने उससे कहा, "अपनी तलवार वापिस रख। जो तलवार चलाते हैं वे मारे जाएंगे। 53 क्या तुझे समझ नहीं कि मैं अपने पिता से हमारे बचाव के लिए हजारों स्वर्गदूतों को भेजने की बिनती कर सकता हूँ और वह इसी क्षण उनको भेज देगा? 54 परन्तु यदि मैं ऐसा करूं तो धर्मशास्त्र की उन बातों का वर्णन कैसे पूरा होगा जो अभी हो रही हैं?" 55 तब यीशु ने भीड़ से बातें की। उन्होंने पूछा, क्या मैं कोई खतरनाक अपराधी हूं कि मुझे पकड़ने के लिए तुम्हे तलवारें और लाठियां लेकर आना पड़ा? मैं तो हर दिन मन्दिर में सिखाते हुए तुम्हारे साथ था तब तुमने मुझे न रोका। 56 परन्तु यह सब इसलिए हो रहा है कि धर्मशास्त्र मे लिखे, भविष्यद्वक्ताओं के वचन पूरे हों।" उसी समय, सब शिष्यों ने यीशु को छोड़ दिया और भाग गए।

57 तब भीड़ उनको महायाजक कैफा के घर ले गई, जहां सब यहूदी अगुवे इकट्ठे हो रहे थे। 58 इसी बीच, पतरस दूर ही दूर से उनके पीछे हो लिया और महायाजक के आंगन तक पहुंचा और अन्दर जाकर सिपाहियों के साथ बैठ गया, और यह देखने के लिए ठहरा रहा कि यीशु के साथ क्या होगा। 59 महायाजक और वास्तव मे यहूदियों का पूरा सर्वोच्च न्यायालय वहाँ इकट्ठा था और वे उन गवाहों की खोज में थे जो यीशु के विषय मे झूठ बोलें, ताकि उनके विरुद्ध मामला खड़ा करके उन्हें मृत्यु दंड दे सकें। 60, 61 परन्तु यद्यपि उन्हें ऐसे मनुष्य मिले जो झूठे गवाह होने को तैयार हो गए, पर उनकी बातें एक दूसरे के विरुद्ध होती थीं। अन्त मे दो मनुष्य मिले जिन्होंने कहा, "इस व्यक्ति ने कहा है, 'मैं परमेश्वर के मन्दिर को नाश कर सकता हूं और उसे तीन दिन में फिर बना सकता हूं'।" 62 तब महायाजक ने खड़े होकर यीशु से कहा, "क्यों? क्या तूने ऐसा कहा था या नही?" 63 परन्तु यीशु चुप रहे। तब महायाजक ने यीशु से कहा, "मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, हमें बता कि तू परमेश्वर का पुत्र,

[5] मूलतः "मनुष्य का पुत्र"

मसीह होने का दावा करता है या नहीं। 64 यीशु ने कहा, "हां, मैं हूं। और भविष्य में तुम मुझ, मसीह[6] को, परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठे और आकाश के बादलों में फिर आते देखोगे।" 65, 66 तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर चिल्लाते हुए कहा, "परमेश्वर की निन्दा! अब हमें दूसरे गवाहों की क्या जरूरत! तुम सबने इसे ऐसा कहते सुना है! तुम इसके अपराध का क्या निर्णय करते हो?" उन्होंने चिल्लाकर कहा, "प्राणदंड!—प्राणदंड! प्राणदंड!" 67 तब उन्होंने यीशु के मुंह पर थूका और उनको घूंसे मारे और कुछ ने उनको थप्पड मारते हुए कहा, 68 "हे मसीह, हममे भविष्यद्वाणी कर! इस बार किसने तुझे मारा?"

69 इसी बीच जब पतरस आंगन में बैठा हुआ था, एक लडकी ने वहाँ आकर उससे कहा, "तू भी यीशु के साथ था, क्योंकि तुम दोनों गलील[7] के हो।" 70 परन्तु पतरस ने ज़ोर देकर इन्कार किया। उसने क्रोधित होकर कहा, "मुझे मालूम नहीं तू क्या कह रही है।" 71 कुछ समय बाद, द्वार के पास दूसरी लडकी ने उस पर ध्यान दिया और पास खडे हुओं से कहा, "यह मनुष्य नासरत के यीशु के साथ था।" 72 पतरस ने फिर इन्कार किया, इस बार शपथ भी खाई। उसने कहा, "मैं उस मनुष्य को जानता तक नहीं।" 73 परन्तु थोड़ी देर बाद जो मनुष्य वहाँ खडे थे उन्होंने पतरस के पास जाकर कहा, "हम जानते हैं कि तू भी उसके चेलों मे से एक है, क्योंकि हम तेरे गलीली[8] उच्चारण से पहचान गए हैं।" 74 पतरस स्राप देने और शपथ खाने लगा। उसने कहा, "मैं उस मनुष्य को जानता तक नहीं।" और तुरन्त मुर्गे ने बांग दी। 75 तब पतरस को यीशु की कही बात याद आई, "मुर्गे के बांग देने से पहले, तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।" और वह बाहर जाकर फूट फूट कर रोने लगा।

27 1 जब सुबह हुई, महायाजकों और यहूदी अगुओं ने फिर सभा की ताकि विचार करें कि रोमी राज्यपाल को यीशु को मृत्यु दंड देने के लिए किस प्रकार राजी करें[1]। 2 तब उन्होंने यीशु को जंजीरों से बांधा और रोमी राज्यपाल, पीलातुस के पास भेज दिया।

3 तब यहूदा जिसने उनको पकड़वाया था, यह देखकर कि यीशु को मृत्यु दंड दिया गया है, अपने किए[2] पर बहुत पछताया, और पैसा वापिस लेकर महायाजकों और दूसरे यहूदी अगुओं के पास गया। 4 उसने कहा, "मैंने पाप किया है, क्योंकि मैंने एक निर्दोष व्यक्ति को पकड़वा दिया है।" उन्होंने उत्तर दिया, "यह समस्या तो तेरी है। उसे तू ही जान।" 5 तब उसने वह पैसा मन्दिर में फेंक दिया और बाहर जाकर स्वयं को फांसी दी। 6 महायाजकों ने पैसा उठा लिया। उन्होंने कहा, "हम इसे दान के साथ नहीं रख सकते, क्योंकि हत्या के लिए दिए गए पैसे को ग्रहण करना हमारे नियम के विरुद्ध है।" 7 उन्होंने आपस में बातचीत की और अन्त में किसी खेत को लेने का निर्णय किया जहाँ की मिट्टी को कुम्हार काम मे लाते थे और उन्होंने यह भी निर्णय किया कि उसे यरुशलेम में मरने वाले परदेशियों के लिए कब्रिस्तान बनाएं। 8 इसलिए वह कब्रिस्तान आज भी लोहू का खेत कहलाता है। 9 इससे यिर्मयाह की यह भविष्यद्वाणी पूरी हुई, "उन्होंने चांदी के तीस सिक्के लिए—जो मूल्य इस्राएल के लोगों ने उसके लिए ठहराया था—10 और उससे कुम्हार का एक खेत खरीदा जैसा प्रभु ने मेरी अगुवाई की।"

11 अब यीशु रोमी राज्यपाल, पीलातुस के सामने खडे थे। राज्यपाल ने उनसे पूछा, "क्या

---

[6] मूलतः "मनुष्य का पुत्र।" [7] मूलतः "यीशु गलीली।" [8] यही आशय है।

[1] "यीशु के मार डालने की सम्मति की।" उन्हें स्वयं यह अधिकार प्राप्त नहीं था। [2] स्वयं पछताया।

तू यहूदियों का मसीह है ?[3] यीशु ने उत्तर दिया, "हां।" 12 परन्तु जब महायाजकों और दूसरे यहूदी नेताओं ने उन पर दोष लगाया, तब यीशु चुप रहे। 13 पीलातुस ने कहा, "क्या तू सुनता नहीं वे क्या कह रहे हैं ?" 14 परन्तु यीशु ने कुछ नहीं कहा, जिससे राज्यपाल को बड़ा आश्चर्य हुआ। 15 प्रथा थी कि राज्यपाल हर वर्ष फसह के त्योहार के समय, उनकी इच्छा के अनुसार किसी भी एक यहूदी क़ैदी को छोड़ सकते थे। 16 उस वर्ष जेलखाने में बरअब्बा नाम का एक बहुत बडा अपराधी क़ैदी था, 17 और जब भीड़ उस दिन सवेरे पीलातुस के घर के सामने इकट्ठी हो गई तो उसने लोगों से पूछा, "मैं तुम्हारे लिए किसको छोड़ दूं—बरअब्बा को या यीशु को जो तुम्हारा मसीह है ?"[4] 18 क्योंकि उसको अच्छी तरह मालूम था कि यहूदी नेताओं ने यीशु को ईर्ष्या के कारण पकड़वाया था क्योंकि यीशु, लोगों के प्रिय थे। 19 उसी समय, जब वह न्याय आसन पर बैठे हुए थे, पीलातुस की पत्नी ने उनके पास यह संदेश भेजा: "उस धर्मी पुरुष को छोड़ देना क्योंकि पिछली रात मैंने उसके विषय में बहुत भयानक स्वप्न देखा है।" 20 इसी बीच, महायाजकों और यहूदी अधिकारियों ने भीड़ को उसकाया कि वह बरअब्बा को छोड़ने और यीशु को मृत्युदण्ड देने की मांग करे। 21 इसलिए जब राज्यपाल ने फिर पूछा,[5] "मैं इन दोनों में से तुम्हारे लिए किसे छोड़ दूं ?" भीड़ ने चिल्लाकर उत्तर दिया, "बरअब्बा को !" 22 पीलातुस ने पूछा, "फिर मैं, यीशु, जो तुम्हारा मसीह है उसके साथ क्या करूं ?" और वे चिल्लाए, "उसे क्रूस पर चढ़ा !" 23 पीलातुस ने पूछा, "क्यों? उसने क्या गलती की है?" परन्तु वे चिल्लाते रहे, "उसे क्रूस पर चढ़ाओ ! क्रूस पर !" 24 जब पीलातुस ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ रहा है, और उपद्रव बहुत ही बढ़ता जा रहा है, तब उसने एक कटोरे में पानी मंगाया और भीड़ के सामने अपने हाथ धोते हुए कहा, "मैं इस भले मनुष्य के ख़ून से निर्दोष हूं। तुम ही ज़िम्मेवार हो !" 25 और भीड़ ने चिल्लाकर कहा, "उसका ख़ून हम पर और हमारी संतान पर हो !" 26 तब पीलातुस ने उनके लिए बरअब्बा को छोड़ दिया और यीशु को कोड़े लगवाने के बाद उन्हें रोमी सिपाहियों को सौंप दिया कि ले जाकर उन्हें क्रूस पर चढ़ाएं।

27 परन्तु सिपाही पहले उनको क़िले में ले गए और वहां उन्होंने अन्य सिपाहियों के दल को बुलाया। 28 उन्होंने यीशु के वस्त्र उतारकर उनको बैंजनी रंग का चोगा पहनाया, 29 और बड़े बड़े कांटों का मुकुट गूथकर उनके सिर पर रखा, और उनके दाहिने हाथ में राजदण्ड के समान एक छड़ी पकड़ा दी और ठट्ठा करने के लिए उनके सामने घुटने टेके। उन्होंने चिल्लाकर कहा, "यहूदियों के राजा की जय।" 30 और उन्होंने यीशु पर थूका और उनकी छड़ी छीनकर उससे उनके सिर पर मारा। 31 ठट्ठों में उड़ाने के बाद, उन्होंने चोगा उतारा और उन्हीं के वस्त्र उनको फिर पहिना दिए, और क्रूस पर चढ़ाने के लिए उनको बाहर ले चले।

32 जब वे क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले जा रहे थे तो उन्हें रास्ते में अफ्रीका के कुरेन शहर का एक व्यक्ति मिला—उसका नाम शमौन था—और उन्होंने उसे यीशु का क्रूस उठाकर ले जाने के लिए बाध्य किया। 33 तब वे एक स्थान पर गए जो गुलगुता, अर्थात "खोपड़ी का पहाड़" कहलाता है, 34 जहां सिपाहियों ने उनको दवाई मिला हुआ दाखरस पीने को दिया, परन्तु जब उन्होंने चखा, तो पीने से इन्कार कर दिया। 35 क्रूस पर चढ़ाने के बाद, सिपाहियों ने उनके वस्त्र का आपस में बटवारा करने के लिए पांसा फेंका। 36 तब वे चारों ओर बैठ गए और उन्हें वहां टंगे हुए देखने लगे। 37 और उन्होंने उनके सिर के ऊपर यह लिखकर टांगा, "यह यहूदियों का राजा, यीशु है।" 38 उस दिन

[3] मूलतः "यहूदियों का राजा है ?" [4] मूलतः "यीशु को जो मसीह कहलाता है ?" [5] यही आशय है।

सुबह दो डाकू भी वहां क्रूस पर यीशु के दाहिनी और बाईं ओर चढ़ाए गए थे। 39 और रास्ता चलते लोग सिर हिला हिला कर अपमान करते हुए ताने कसते थे, 40 "अच्छा! तो क्या तू मन्दिर को ढा कर तीन दिन मे फिर बना सकता है? यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस से नीचे उतर आ!" 41, 42, 43 और महा-याजको और यहूदी नेताओं ने भी उनका ठट्ठा किया। उन्होंने मजाक उड़ाया, "इसने दूसरो को बचाया, परन्तु अपने आप को नहीं बचा सकता! अच्छा तो क्या तू ही इस्राएलियों का राजा है। क्रूस से उतर आ और हम तेरा विश्वास करेंगे! इसने परमेश्वर पर भरोसा रखा—अब परमेश्वर ही इसको छुड़ाकर बताए! क्या इसने नही कहा, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हू?'" 44 और डाकू भी इसी प्रकार उनकी निन्दा करते थे।

45 उस दिन दोपहर के बारह बजे से लेकर तीन बजे तक, तीन घंटे के लिए पूरे देश[6] मे अंधकार छाया रहा। 46 करीब तीन बजे, यीशु ने ऊंचे शब्द से पुकारा, "एली, एली, लमा शबक्तनी," जिसका अर्थ है, "मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड दिया?" 47 पास खड़े हुए कई लोगों ने गलत समझा और सोचा कि वह एलिय्याह को पुकार रहे हैं। 48 उनमें से एक जन दौड कर गया और उसने स्पंज को खट्टे दाखरस मे डुबाकर पतली लम्बी लकडी पर लगाया और उसे पकड़े हुए उसने यीशु को पीने के लिए दिया। 49 परन्तु बाकी लोगों ने कहा, "ज़रा ठहरो, देखें तो एलिय्याह उसे बचाने आता है या नही।" 50 तब यीशु ने फिर बड़े ज़ोर से चिल्लाकर प्राण छोड दिया। 51 और देखो! मन्दिर का जो परदा महापवित्र स्थान[7] को अलग करता था, वह ऊपर से नीचे तक फटकर दो भाग हो गया, और पृथ्वी हिल गई, और चट्टानें तड़क गईं, 52 और कब्रें खुल गईं, और अनेक मरे हुए स्त्री-पुरुष फिर जी उठे। 53 यीशु के जी उठने के बाद, वे कब्रिस्तान से निकलकर यरूशलेम गए और वहां बहुत लोगों को दिखाई दिए। 54 क्रूस के पास खड़े सिपाही और उनके सरदार, भूकम्प से और जो कुछ हुआ था, उसे देखकर बहुत बुरी तरह डर गए। उन्होंने कहा, "यह निश्चय ही परमेश्वर का पुत्र था[8]।" 55 और अनेक स्त्रियां जो यीशु के साथ उनकी सेवा करने आई थीं, दूर खड़ी होकर देख रही थीं। 56 उनमे मरियम मगदलीनी और याकूब और यूसुफ की माता मरियम, और याकूब और यूहन्ना (ज़ब्दी के पुत्रो) की माता थी।

57 जब शाम हुई, तब अरिमतियाह के रहने वाले यूसुफ नाम एक धनवान मनुष्य ने, जो यीशु का एक चेला था, 58 पीलातुस के पास जाकर यीशु का शव मांगा। और पीलातुस ने उसे देने की आज्ञा दे दी। 59 यूसुफ ने यीशु के मृत शरीर को ले जाकर साफ मलमल के कपडे में लपेटा, 60 और उसे अपनी ही नई कब्र मे रखा जो चट्टान मे खोदकर बनाई गई थी, और कब्र के द्वार को एक बड़े भारी पत्थर से बन्द करके चला गया। 61 मरियम मगद-लीनी और दूसरी मरियम पास ही बैठकर देख रही थी।

62 अगले दिन—फसह के त्योहार का पहला दिन समाप्त होने[9] पर—महायाजकों और फरीसियो ने पीलातुस के पास जाकर, 63 उससे कहा, "महाशय, उस झूठे ने एक बार कहा था, 'तीन दिन बाद मैं फिर जी उठूगा।' 64 इस-लिए हम आपकी आज्ञा चाहते हैं कि तीसरे दिन तक कब्र पर मुहर लगाई जाए, ताकि उसके शिष्य आकर उसका शव चुरा न ले जाएं और तब सब लोगो मे यह बात फैला दें कि वह फिर जी उठा है! यदि ऐसा ही हुआ तब तो हमारी दशा पहले से भी अधिक खराब हो जाएगी।"

[6] सारे देश। [7] यही आशय है। [8] अथवा, "धर्मी पुरुष।" [9] यही आशय है, मूलत "दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के बाद का दिन था।"

65 पीलातुस ने उससे कहा, "अपने मन्दिर ही के सिपाहियों को लगा लो। वे ठीक रीति से पहरा दे सकते हैं।" 66 इस प्रकार उन्होंने पत्थर पर मुहर[10] लगाई और इसलिए पहरा लगा दिया कि कोई घुसकर शव को चुरा न ले जाए।

28 1 इतवार को बड़े सवेरे जब दिन निकलने पर था, मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र पर गईं। 2 अचानक एक बड़ा भूकम्प हुआ; क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा और पत्थर को लुढ़काकर उस पर बैठ गया। 3 उसका मुंह बिजली जैसा चमकता था और उसका वस्त्र चमकीला श्वेत था। 4 उसे देखते ही पहरेदार भय से कांपने लगे, और बेहोश हो गए। 5 तब स्वर्गदूत ने स्त्रियों से बातें कीं। उसने कहा, "मत डरो! मुझे मालूम है कि तुम यीशु को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, खोजती हो, 6 परन्तु वह यहां नहीं है! क्योंकि जैसा उन्होंने कहा था, वह फिर जी उठे हैं। अन्दर आओ और यह स्थान देखो जहां उनका शव पड़ा था।…7 और अब, शीघ्र जाओ और उनके शिष्यों को बताओ कि वह मरे हुओं में से जी उठे हैं, और वह उनसे मिलने गलील को जा रहे हैं। उनके लिए यह मेरा संदेश है।" 8 स्त्रियां बहुत भयभीत होकर, परन्तु आनन्द के साथ कब्र से वापस दौड़ गईं कि शिष्यों को ढूंढकर उन्हें स्वर्गदूत का संदेश सुनाएं। 9 जब वे दौड़ रही थीं, तब अचानक यीशु उनके सामने आ खड़े हुए! यीशु ने कहा, "नमस्कार[1]!" और उन्होंने यीशु के पैर छूकर उनको दण्डवत किया। 10 तब यीशु ने उनसे कहा, "डरो मत! जाकर मेरे भाइयों से कहो कि वे तुरन्त गलील में मुझसे मिलने पहुंच जाएं।"

11 जब स्त्रियां शहर के मार्ग पर जा रही थीं, तब मन्दिर के कई सिपाहियों ने जो कब्र के पहरे पर थे, आकर महायाजकों को पूरा हाल सुनाया। 12, 13 यहूदी अधिकारियों की एक सभा बुलाई गई और यह निर्णय लिया गया कि सिपाहियों को घूस देकर उनसे यह कहलवाएं कि वे सब सो रहे थे जब यीशु के शिष्य रात को आकर उनका शव चुरा ले गए। 14 सभा ने वचन दिया, "यदि राज्यपाल को इसका पता चले, तो हम तुम्हारे पक्ष में खड़े होंगे और सब कुछ ठीक हो जाएगा।" 15 इस प्रकार सिपाहियों ने घूस लेकर जैसे सिखाए गए थे वैसा ही कहा। उनकी कहानी यहूदियों के मध्य चारों ओर फैल गई और वे आज भी इस पर विश्वास करते हैं।

16 तब ग्यारह शिष्य गलील में उस पहाड़ पर गए जहां यीशु ने उनसे मिलने को कहा था। 17 वहां उन्होंने यीशु से भेंट की और उनको दण्डवत किया—परन्तु उनमें से कई एक को निश्चय नहीं हुआ कि वास्तव में यही यीशु हैं! 18 यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "मुझे स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है। 19 इसलिए जाओ और सब देशों में[2] मेरे शिष्य बनाओ, उनको पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, 20 और तब इन नए शिष्यों को उन सब आज्ञाओं का जो मैंने तुम्हें दी हैं पालन करना सिखाओ, और यह निश्चय जानो—कि मैं संसार के अन्त तक, सदैव तुम्हारे साथ हूं।"[3]

[10] पूरी चट्टान पर एक छोर से दूसरी छोर तक रस्सी बांध दी जाती थी और दोनों छोरों की रस्सी पर मिट्टी से मुहर लगाई जाती थी।

[1] "सलाम।" [2] मूलत "के।" [3] अथवा "युग।"

मरकुस रचित सुसमाचार

1 1 परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह की अनोखी कहानी का आरम्भ इस प्रकार होता है। 2 यशायाह भविष्यद्वक्ता द्वारा लिखी पुस्तक में, परमेश्वर ने बताया था कि वह अपने पुत्र[1] को इस संसार में भेजेगा, और उससे पूर्व एक विशेष दूत आकर उसके आगमन के लिए इस संसार को तैयार करेगा। 3 यशायाह[2] ने कहा था, "यह दूत निर्जन जंगल में रहेगा और संदेश देगा कि प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन सुधार कर प्रभु के आगमन के लिए तैयार रहे[3]।" 4 यह दूत यूहन्ना था जो बपतिस्मा देने वाला था। वह जंगल में रह कर सिखाता था कि सब को पाप से मन फिराना है ताकि परमेश्वर उनको क्षमा करे। अपने मन फिराव को सबके सामने प्रगट करने के लिए वे बपतिस्मा लें[4]। 5 यहूदिया के निर्जन स्थानों में यूहन्ना को देखने और उसकी सुनने के लिए, लोग यरूशलेम और सारे यहूदिया से दूर दूर से यात्रा करके आते थे। जब वे उसकी सुनकर अपने पापों को मान लेते थे, तब वह उनको यर्दन नदी में बपतिस्मा देता था। 6 उसके वस्त्र ऊंट के बालों के थे। वह चमड़े का कमरबन्ध बांधता था, टिड्डियां और जंगल का शहद उसका भोजन था। 7 उसके प्रचार का एक उदाहरण इस प्रकार है: "वह शीघ्र आने वाले हैं जो मुझ से कहीं बढ़कर महान हैं, इतने महान कि मैं उनका दास भी होने के योग्य नहीं हूं[5]। 8 मैं तुम्हें पानी से[6] बपतिस्मा देता हूं परन्तु वह तुम्हें परमेश्वर के पवित्र आत्मा से[6] बपतिस्मा देंगे।"

9 तब एक दिन यीशु गलील के नासरत से आये और यरदन नदी में यूहन्ना ने उनको बपतिस्मा दिया। 10 यीशु जैसे ही पानी से बाहर आए उन्होंने आकाश को खुला और पवित्र आत्मा को कबूतर के रूप में अपने ऊपर उतरते देखा, 11 उसी समय यह आकाशवाणी हुई, *"तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझसे प्रसन्न हूं।"*

12, 13 उसी क्षण पवित्र आत्मा की प्रेरणा से यीशु जंगल में गए। जंगल में जहां पशुओं के सिवाय कोई न था, चालीस दिन तक शैतान ने पाप में डालने के लिए उनकी परीक्षाएं लीं। उसके बाद[7] स्वर्गदूतों ने आकर उनकी सेवा टहल की।

14 जब यूहन्ना, राजा हेरोदेस[8] के द्वारा *पकड़वाया गया, तब बाद में यीशु,* परमेश्वर का शुभ संदेश सुनाने के लिए गलील को गए। 15 उन्होंने प्रचार किया, "वह समय अब आ पहुंचा है। परमेश्वर का राज्य निकट है। अपने पापों से फिरो और इस संदेश पर विश्वास करो।"

16 एक दिन जब यीशु गलील सागर के तट से होकर जा रहे थे, उन्होंने शमौन और उसके भाई *अन्द्रियास* को जालों से मछली पकड़ते देखा, क्योंकि वे व्यापारी मछुए थे। 17 यीशु ने उनसे कहा, "आओ मेरे पीछे हो लो। मैं तुम्हें *मनुष्यों की आत्माओं के* मछुए बनाऊंगा।" 18 उन्होंने तुरन्त अपने जाल छोड़ दिए और यीशु के पीछे हो लिए। 19 यीशु ने जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना को, तट से कुछ दूरी पर, नाव में अपने जाल सुधारते देखा। 20 उन्होंने उनको भी बुलाया। वे दोनों ही उसी क्षण अपने पिता जब्दी को नाव में मजदूरों के साथ छोड़कर यीशु के साथ चल दिए।

---

[1] यही आशय है। [2] कुछ प्राचीन हस्तलेखों में लिखा है, "भविष्यद्वक्ताओं ने कहा।" [3] मूलत "प्रभु का मार्ग तैयार करो, और उसकी सड़कें सीधी करो।" [4] मूलत "पापों की क्षमा के लिए मनफिराव के बपतिस्मे का प्रचार करता था।" [5] मूलत "मैं इस योग्य नहीं कि झुककर उसके जूतों का बन्ध खोलूं।" [6] अथवा 'में।' यह शब्द यूनानी भाषा से स्पष्ट नहीं है। [7] संदर्भ में यही आशय है। [8] यही तात्पर्य है।

21 अब यीशु और उनके साथी कफरनहूम शहर पहुचे । वे शनिवार सवेरे यहूदियो के आराधनालय अर्थात सभा के घर में गए—वहाँ यीशु ने उपदेश दिया । 22 सभा के लोग उनके उपदेश से चकित रह गए क्योंकि वह एक अधिकारी की नाईं बोलते थे । वे अपनी बातों को दूसरों के कथनों से प्रमाणित करने की कोशिश नही करते थे । जैसा कि शास्त्री लोग किया करते थे । 23 वहा एक मनुष्य था जिसमे दुष्टात्मा समाई हुई थी । वह चिल्लाकर कहने लगा, 24 "नासरत के यीशु, आप हमें क्यो कष्ट दे रहे हैं—परमेश्वर के पवित्र पुत्र ।" 25 यीशु ने दुष्टात्मा को तुरन्त आज्ञा दी कि वह चुप हो जाए और उस व्यक्ति मे से निकल आए। 26 यह सुनते ही दुष्टात्मा उस व्यक्ति को बड़े जोर से हिलाकर, चीखते हुए निकल गई । 27 लोगों पर बडा आश्चर्य छा गया । वे उस घटना पर आपस मे बातचीत करने लगे । उन्होंने चकित होकर पूछा, "यह किस प्रकार का नया धर्म है ? दुष्टात्माएं भी उनकी आज्ञाएं मानती हैं ।" 28 गलील के पूरे क्षेत्र मे यीशु के इस काम की चर्चा तेजी से फैल गई ।

29, 30 तब यीशु आराधनालय से निकल कर, उनके शिष्य शमौन और अन्द्रियास के घर गए। शमौन की सास को बहुत तेज़ बुखार चढा था। उन्होंने उसी समय यीशु को इसके विषय मे बताया । 31 यीशु उसके पलंग के पास गए और उसका हाथ पकडा तथा बैठने मे उसकी सहायता की, उसका बुखार तुरन्त उतर गया, वह उठकर उनके लिए भोजन तैयार करने लगी ।

32, 33 सूर्य अस्त होने तक उस घर का आंगन बीमारो और दुष्टात्मा से पीड़ित लोगों से भर गया, वे उनके पास चंगाई पाने के लिए लाए गए थे । सारे कफरनहूम शहर के लोगों की बडी भीड दरवाजे के बाहर इकट्ठी हो गई । 34 उस शाम यीशु ने बहुत से बीमारो को चंगा किया और अनेक दुष्टात्माओ को निकाला । (परन्तु उन्होंने दुष्टात्माओ को बोलने न दिया, क्योंकि उनको मालूम था कि वह कौन हैं ।)

35 दूसरे दिन सुबह, दिन निकलने से पहले, वह जंगल में अकेले प्रार्थना करने के लिए गये । 36, 37 कुछ देर बाद, शमौन और दूसरे लोग उनको खोजने निकले । उन्होंने उनसे मिलने पर कहा, "सब आपको पूछ रहे हैं ।" *38 परन्तु उन्होंने उत्तर दिया,* "हमें *आसपास* के दूसरे शहरों मे भी जाना चाहिए, क्योकि मैं इसीलिए आया हूँ ।" 39 इस प्रकार उन्होंने पूरे गलील प्रान्त की यात्रा की, आराधनालयों मे प्रचार किया और अनेक लोगो को दुष्टात्माओ की शक्तियो से छुडाया ।

40 एक बार एक कोढी ने आकर उनके सामने घुटने टेके और उनसे चंगा करने की विनती की, "यदि आप चाहते हैं तो मुझे अच्छा कर सकते हैं ।" 41 यीशु ने तरस खाकर उसे छुआ और कहा, "मैं चाहता हूँ तू चंगा हो जा !" 42 उसी क्षण उसका कोढ दूर हो गया—वह मनुष्य चंगा हो गया ! 43, 44 यीशु ने उसे कडी चेतावनी दी, "जा और तुरन्त यहूदी याजक से अपनी जाच करवा । रास्ते में किसी से बातें करने को न रुकना । मूसा ने शुद्ध होने वाले कोढी के लिए जो भेंट ठहरायी है, उसे लेता जा, ताकि सबको प्रमाण मिले कि तू अच्छा हो गया है ।" 45 परन्तु मार्ग पर जाते हुए वह मनुष्य चिल्लाकर सबको खुशी का समाचार सुनाने लगा कि वह अच्छा हो गया है । *यह समाचार सुनकर लोगों की बडी भीड* यीशु के चारों ओर इकट्ठी हो गयी । यीशु फिर किसी भी शहर मे खुले रूप मे नही जा सके और उन्हें निर्जन स्थान में जाकर रहना पडा । वहां भी सब ओर से लोग उनके पास आने लगे ।

2

1 कई दिनो के बाद यीशु फिर कफरनहूम लौटे, और उनके आने की खबर शीघ्र ही पूरे शहर मे फैल गई । 2 वह घर जहा यीशु ठहरे

से आनेवालों से तुरन्त इतना भर गया कि तिल धरने की भी जगह नहीं रही, दरवाजे के बाहर भी नहीं। यीशु उनको वचन सुना ही रहे थे कि 3 लकवे के मारे एक व्यक्ति को चार मनुष्य एक खाट पर लिटाकर लाए। 4 वे भीड़ के कारण यीशु के पास नहीं पहुंच सके, इसलिए उन्होंने जहां यीशु थे घर की छत खोली और वहां से बीमार की खाट को नीचे ठीक यीशु के सामने लटका दिया। 5 तब यीशु ने बीमार के लानेवालों का दृढ़ विश्वास देखकर उस बीमार व्यक्ति से कहा, "पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।" 6 परन्तु वहां बैठे हुए यहूदी धर्म के कई नेताओं[1] ने आपस में कहा, 7 "क्यों? यह तो परमेश्वर की निन्दा है क्या यह अपने को परमेश्वर समझता है? क्योंकि केवल परमेश्वर ही पापों को क्षमा कर सकता है।" 8 यीशु ने उनके मन के विचारों को जान कर तुरन्त उनसे कहा, "तुम क्यों परेशान हो? 9, 10, 11 मुझ, मसीह[2] को संसार में अधिकार है कि पापों की क्षमा दूं। तौभी बोलना सहज है—कोई भी ऐसा कह सकता है। इसलिए मैं उसे चंगा करके तुम्हें इसका प्रमाण दूंगा।" तब, लकवे के मारे मनुष्य की ओर फिरकर उन्होंने आज्ञा दी, "अपनी खाट उठाकर घर जा, क्योंकि तू चंगा हो गया है[3]।" 12 वह व्यक्ति उठ बैठा। लोग आश्चर्यचकित होकर देखते रह गए और वह उनके बीच से निकलकर चला गया। तब सबने परमेश्वर की प्रशंसा की। उन सबने कहा, "हमने इससे पहले आज तक कभी ऐसा नहीं देखा।"

13 तब यीशु फिर समुद्र किनारे गए। वहां भी भीड़ जमा हो गई। यीशु ने उनको उपदेश दिया। 14 जब वह समुद्र किनारे जा रहे थे, उन्होंने हलफई के पुत्र लेवी को चुंगी नाके पर बैठा देखा। यीशु ने उससे कहा, "मेरे पीछे हो ले।" लेवी उठ कर उनके पीछे हो लिया। 15 उस रात लेवी ने अपने साथी चुंगी लेने वालों और दूसरे अनेक बदनाम व्यक्तियों को अपने घर भोजन पर बुलाया ताकि वे यीशु और उनके शिष्यों से मिल सकें। (इसी प्रकार भीड़ में से अनेक मनुष्य यीशु के पीछे हो लिए थे।) 16 परन्तु जब यहूदियों के कई धार्मिक अगुवों ने यीशु को इन बदनाम व्यक्तियों के साथ खाते देखा, तो उनके शिष्यों से कहा, "वह इन दुष्ट लोगों के साथ कैसे भोजन कर सकते हैं?" 17 जब यीशु ने उनकी बातें सुनी, तो उनसे कहा, "स्वस्थ्य लोगों को नहीं, परन्तु बीमारों को वैद्य की आवश्यकता होती है। मैं धर्मी लोगों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूं।"

18 यूहन्ना के शिष्य और यहूदी अगुए कभी कभी उपवास रखते थे। एक दिन कुछ लोगों ने यीशु के पास आकर पूछा कि उनके शिष्य भी ऐसा क्यों नहीं करते हैं। 19 यीशु ने उत्तर दिया, "क्या दूल्हे के मित्र विवाह के भोज में जाने से इन्कार करते हैं? उसके साथ रहते हुए क्या उनको उदास रहना चाहिए? 20 परन्तु किसी दिन वह दूल्हा उनसे अलग कर दिया जाएगा, और तब वे शोक करेंगे। 21 (इसके सिवाय उपवास रखना पुरानी रीति का एक भाग है।) यह नए वस्त्र में पुराने वस्त्र के पैबंद लगाने के समान है। इससे क्या होता है? पैबन्द खिंच जाता है और वस्त्र पहले से अधिक फट जाता है। 22 पुरानी मश्कों में नया दाखरस भरने से क्या होगा, तुम अच्छी तरह जानते हो मश्कें फट जाएंगी। दाखरस बह जाएगा और मश्कें नष्ट हो जाएंगी। नए दाखरस को नई मश्कों में ही रखने की जरूरत है।"

23 किसी दूसरे समय, सब्त के दिन जब यीशु और उनके शिष्य खेतों में से होकर जा रहे थे, तो शिष्य गेहूं की बालों को तोड़कर दानों को खाते जाते थे। 24 यहूदियों के कई धार्मिक अगुवों ने यीशु से कहा, "उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। सब्त के दिन कोई भी काम करना हमारी व्यवस्था के विरुद्ध है।" 25, 26 परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तुमने कभी उस समय

[1] मूलतः "शास्त्री।" [2] मूलतः "मनुष्य के पुत्र।" [3] यही आशय है।

के विषय में नही सुना जब राजा दाऊद और उसके साथी भूखे थे, वह परमेश्वर के घर मे गया—उस समय अबियातार महायाजक था। दाऊद ने उस विशेष रोटी[4] को खाया जिसे खाने की आज्ञा केवल याजकों को ही थी। यह भी व्यवस्था के विरुद्ध था। 27 परन्तु सब्त मनुष्य के लिए बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिए। 28 मुझ, मसीह को यह निर्णय करने का भी अधिकार है कि मनुष्य सब्त के दिन क्या कर सकता है।"

3 1 कफरनहूम मे ही रहते हुए, यीशु फिर आराधनालय मे गये। और वहाँ उन्होंने एक सूखे हाथ वाले मनुष्य को देखा। 2 वह सब्त का दिन था, इसलिए यीशु के वैरी उन पर कड़ी दृष्टि रखने लगे। क्या वह उस व्यक्ति का हाथ अच्छा करेंगे ? यदि करेंगे तो उन्होंने सलाह की, उनको पकड लेंगे। 3 यीशु ने उस मनुष्य को सभा के सामने आकर खड़े होने की आज्ञा दी। 4 तब उन्होंने अपने वैरियों की ओर फिरकर पूछा, " क्या सब्त के दिन भला करना उचित है ? या बुरा करना? क्या इस दिन प्राण को बचाना उचित है या नाश करना ?" परन्तु वे चुप रहे। 5 यीशु ने क्रोध से उनको देखा क्योंकि वे मनुष्य की आवश्यकताओ की ओर उदासीन थे, इस कारण यीशु को बहुत दुख हुआ। उन्होंने उस व्यक्ति से कहा, "अपना हाथ बढ़ा।" उसने बढ़ाया, और उसी क्षण उसका हाथ चंगा हो गया। 6 फरीसी[1] तुरन्त वहाँ से निकलकर हेरोदियों[2] से मिलने गए कि यीशु को मार डालने के उपाय सोचें।

7, 8 इसी बीच, यीशु और उनके शिष्य झील के किनारे चले गए। एक बड़ी भीड सारे गलील, यहूदिया, यरूशलेम, इदूमिया, यर्दन नदी के पार, और सूर और सैदा जैसे दूर दूर स्थानो से आकर उनके पीछे हो ली। क्योंकि उनके आश्चर्यकर्मों की खबर दूर-दूर तक फैल गई थी और लोग बड़ी संख्या मे स्वयं उनको देखने आते थे। 9 यीशु ने अपने शिष्यों को एक नाव लाकर तैयार रखने को कहा ताकि यदि उन्हें भीड दबाने लगे तो वे उसमे चढ़कर बच सकें। 10 क्योंकि उस दिन बहुत लोग चंगे हुए थे जिसके कारण बीमारों की भीड़, उनके चारों ओर बढ़ती ही जा रही थी कि उनको केवल छू भर लें। 11 जब कभी वे लोग, जिनमे दुष्टात्माएं समाई थी, उनको देखते थे तो उनके सामने यह चीखते हुए गिर पड़ते थे, "आप परमेश्वर के पुत्र हैं"। 12 परन्तु यीशु ने उन्हे कडी चितावनी दी कि उनको प्रकट न करें।

13 इसके बाद वह पहाड पर गये। कुछ लोगो को चुनकर उन्होंने अपने साथ वहाँ बुलाया, और वे गए। 14, 15 तब उन्होंने उनमें से बारह को चुना कि वे उनके साथ प्रचार करने और दुष्टात्माओ को निकालने के लिए जाए। 16—19 उन चुने हुए बारहों के नाम ये हैं। शमौन (यीशु ने उसका नाम "पतरस" रखा) याकूब और यूहन्ना (जब्दी के पुत्र, परन्तु यीशु ने उनको "गर्जन के पुत्र" कहा) अन्द्रियास, फिलिप्पुस, बरतुलमै, मत्ती, थोमा, याकूब, (हलफई का पुत्र) तद्दी, शमौन (उस राजनैतिक दल का एक सदस्य जो रोमी शासन का तख्ता पलटने की कोशिश मे था), यहूदा इस्करियोती (जिसने बाद मे उनको पकड़वा भी दिया)।

20 जब वह उस घर में लौटे जहाँ ठहरे हुए थे, तो भीड फिर इकट्ठी होने लगी। शीघ्र ही पूरा घर लोगों से भर गया और उनको भोजन करने के लिए भी समय नही मिल सका। 21 जब उनके रिश्तेदारों ने सुना कि क्या हो रहा है तो वे उनको अपने साथ घर ले जाने के लिए आए। उन्होंने कहा, "उनका दिमाग फिर गया है।" 22 परन्तु यरूशलेम से आए यहूदियों के धर्म गुरुओं ने कहा, "सच तो यह है कि उनमे

[4] मूलत "भेंट की रोटिया।"

[1] फरीसी, यहूदियो के एक धार्मिक सम्प्रदाय के लोग थे। [2] रोमियो के पक्ष का राजनैतिक दल।

दुष्टात्माओं का राजा, शैतान समाया हुआ है। तभी तो दुष्टात्माएं उनकी आज्ञा मानती हैं।" 23 यीशु ने उन मनुष्यों को बुलाया और उनसे (दृष्टान्तों में जिन्हें वे सब समझते थे) कहा, "शैतान कैसे शैतान को निकाल सकता है? 24 जिस राज्य में फूट हो वह नष्ट हो जाएगा। 25 जो घर झगड़ा और फूट से भरा हो वह स्वयं नष्ट हो जाता है। 26 यदि शैतान स्वयं से ही लड़ने लगे, तो वह कैसे कुछ कर सकेगा? वह कभी जीवित नहीं रहेगा। 27 (शैतान को पहले बांधना होगा तभी उसकी दुष्टात्माओं को निकाला जा सकता है[3]), किस प्रकार बलवान व्यक्ति को पहले बांधना होगा जिससे उसके घर की खोज करके उसकी सम्पत्ति को लूटा जा सके। 28 "मैं गम्भीरता से कहता हूँ कि मनुष्य का कोई भी पाप क्षमा हो सकता है, यहाँ तक कि मेरी निन्दा करना भी, 29 परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा करना कभी क्षमा नहीं हो सकता। यह अक्षम्य पाप है।" 30 उन्होंने उनसे ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वे कह रहे थे कि वह शैतान की शक्ति से आश्चर्यकर्मों को करते हैं (यह मान लेने के बदले कि वह पवित्र आत्मा की सामर्थ से ये कार्य करते हैं)।

31, 32 उस समय उनकी माता और भाई भीड़ से भरे उस घर में पहुंचे जहाँ वह शिक्षा दे रहे थे उन्होंने यीशु के पास खबर भेजी कि आकर उनसे बातें करें। यीशु को बताया गया, "आपकी माँ और भाई बाहर हैं। वे आपसे मिलना चाहते हैं।" 33 उन्होंने उत्तर दिया, मेरी मां कौन है? मेरे भाई कौन हैं? 34 अपने चारों ओर इकट्ठे लोगो को देखते हुए उन्होंने कहा, "ये मेरी माँ और भाई हैं! 35 जो भी परमेश्वर की इच्छा पर चलना चाहता है, वही मेरा भाई, मेरी बहिन, और मेरी माँ है।"

4 1 एक दिन जब यीशु झील किनारे शिक्षा दे रहे थे फिर बड़ी भीड़ उन के चारों ओर इकट्ठी हो गई इसलिए वह नाव पर चढ़कर बैठ गये और वहाँ से सिखाने लगे। 2 वह बहुधा कहानी बताकर लोगों को उपदेश दिया करते थे। 3 "सुनो! एक किसान बीज बोने निकला। जब वह अपने खेत में बीज बो रहा था, 4 तो कुछ बीज मार्ग पर गिरे, और चिड़ियों ने आकर कड़ी जमीन पर से उन्हें चुग लिया। 5, 6 कुछ ऐसी भूमि पर गिरे जहां नीचे पत्थर थे। बीज शीघ्र उग तो आए, परन्तु तेज धूप में मुर्झाकर मर गए क्योंकि उथली भूमि होने से जड़ों को भोजन नहीं मिला। 7 दूसरे बीज झाड़ियों के बीच गिरे। झाड़ियों के बढ़ने से पौधे दब गए और उनमें अन्न उत्पन्न नहीं हुआ। 8 परन्तु कुछ बीज उपजाऊ भूमि पर गिरे और जितना बोया गया था उसका तीस गुणा, कहीं साठ गुणा और कहीं सौ गुणा तक अधिक अनाज उत्पन्न हुआ। 9 यदि तुम्हारे कान हों तो सुनो।"

10 बाद में, जब वह अपने बारह शिष्यों के साथ अकेले थे तो शिष्यों ने उनसे पूछा, "आपकी इस कहानी का क्या अर्थ है"? 11, 12 उन्होंने उत्तर दिया, "तुम्हें स्वर्ग के राज्य के विषय में कुछ रहस्यों को समझने की समझ दी गई है, जो राज्य के बाहर रहनेवालो के लिए छिपी हुई हैं: चाहे वे देखें और सुनें तौभी न समझेंगे न परमेश्वर की ओर फिरेंगे कि उनके पाप क्षमा हों। 13 परन्तु यदि तुम इस साधारण उदाहरण को भी नहीं समझ सकते, तो उन शिक्षाओं को कैसे समझोगे जो मैं तुम्हें देने पर हूँ? 14 किसान जिसके विषय मैंने बताया, वह कोई भी वह व्यक्ति हो सकता है जो परमेश्वर के वचन का बीज बोता है। वह लोगों के जीवनों में अच्छे बीज बोने की कोशिश करता है। 15 मार्ग की कड़ी भूमि, जहां कुछ बीज गिरे लोगों के कठोर हृदयों को दर्शाती है जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं, परन्तु शैतान तुरन्त आकर उस वचन को चुग ले जाता है अर्थात भुला देता

[3] यही आशय है।

है। 16 पथरीली भूमि उन व्यक्तियों का हृदय दर्शाती है जो आनन्द से परमेश्वर का वचन सुनते हैं, 17 परन्तु ऐसी भूमि मे छोटे पौधों के समान, उनकी जड़ें बहुत गहरी नहीं जाती और यद्यपि पहले से ठीक रहते हैं, परन्तु सताव के शुरू होते ही, गिर जाते हैं। 18 कटीली झाड़ी वाली भूमि ऐसे लोगों के हृदय को दर्शाती है जो शुभ संदेश को सुनते और ग्रहण करते हैं 19 परन्तु शीघ्र ही इस संसार का आकर्षण, धन का सुख, सफलता की लालसा और अन्य वस्तुओं का लालच आकर उनके हृदयो में परमेश्वर के वचन को दबा देता है, जिससे कोई फसल नही होती। 20 परन्तु अच्छी भूमि उन लोगों के हृदय को दर्शाती है जो वास्तव में परमेश्वर का वचन ग्रहण करते हैं और परमेश्वर के लिए बहुतायत से अर्थात—जितना बोया गया था उसका तीस गुणा साठ गुणा और सौ गुणा तक फल लाते हैं।"

21 तब यीशु ने उनसे पूछा, "जब कोई व्यक्ति दीया जलाता है तो क्या उसको डिब्बे से ढांक देता है कि प्रकाश न हो? कभी नही। इससे तो न दिया दिखेगा न उसका उपयोग होगा। दीए को ऐसे स्थान में रखा जाता है जहाँ से उसका प्रकाश फैले और उसका उपयोग हो। 22 अभी तक जितना छिपा है, वह सब किसी दिन प्रकाश में आ जाएगा। 23 यदि तुम्हारे कान हो तो सुनो। 24 और जो सुनते हो उसका अवश्य पालन करो। जितना अधिक पालन करोगे, उतना ही अधिक मेरी बातों को समझोगे। 25 जिसके पास है उसे दिया जाएगा जिसके पास नही है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जो उसके पास है।"

26 उसने एक और कहानी कह कर परमेश्वर के राज्य का उदाहरण दिया: "किसी किसान ने अपना खेत बोया, 27 और चला गया। जैसे जैसे दिन बीतते गए, बीज उगे और बिना किसी की सहायता के बढ़े। 28 क्योंकि भूमि ने बीजों को बढाया। पहले अंकुर निकले, फिर बालें लगी और अन्त में गेहूं का दाना पक गया, 29 तब किसान ने तुरन्त आकर उसकी कटनी की।"

30 यीशु ने कहा, "मैं परमेश्वर के राज्य का उदाहरण कैसे दूं? किस उदाहरण से उसे समझाऊं? 31, 32 यह एक छोटे राई के बीज के समान है। यद्यपि यह सबसे छोटे बीजों मे से एक होता है, तौभी बढकर सबसे बड़े पौधों में से एक हो जाता है। इसकी लम्बी टहनियों पर पक्षी घोंसला बनाकर रह सकते हैं।"

33 यीशु ने ऐसे अनेक उदाहरण दिए कि लोगों को उतना सिखाएं जितना समझने के लिए[1] वे तैयार थे। 34 भीड़ में उपदेश देते समय वह दृष्टान्तों का उपयोग करते थे परन्तु जब वह अपने शिष्यों के साथ अकेले रहते थे तब उन्हे उनका अर्थ समझाते थे।

35 जब शाम हुई, तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "चलो, झील के उस पार चलें।" 36 इसलिए वे, भीड़ को छोडकर जैसे वह थे वैसे ही उनको लेकर निकल पड़े (यद्यपि दूसरी नावें भी पीछे हो लीं)। 37 परन्तु शीघ्र ही भयानक आंधी उठी। ऊंची ऊंची लहरें नाव से टकराने लगी। देखते ही देखते नाव पानी से भरकर डूबने लगी। 38 यीशु नाव के पिछले भाग में गद्दी पर सिर रखकर सो रहे थे। शिष्यों ने भय से चिल्लाकर यीशु को जगाया, "गुरुजी, क्या आपको चिन्ता नहीं कि हम डूबने पर हैं।" 39 तब यीशु ने आंधी को डांटा और झील से कहा, "शांत रह उसी समय हवा थम गई और शांति छा गई। 40 यीशु ने उनसे पूछा, "तुम इतने डर क्यों गए? क्या अब भी तुम्हारा विश्वास मुझ पर नही है? 41 शिष्य बहुत डर गए और आपस मे कहने लगे, "यह कौन व्यक्ति हैं, कि आंधी और पानी भी उनकी आज्ञा मानते हैं?"

[1] मूलतः "उनकी समझ के अनुसार।"

5 1 जब वह झील की दूसरी ओर पहुंचे, 2 तो जैसे ही यीशु नाव से उतरने लगे एक व्यक्ति जिसमें दुष्टात्मा समाई थी कब्र से निकल कर दौड़ता हुआ आया। 3, 4 वह व्यक्ति कब्रिस्तान में रहता था। उसमें इतनी शक्ति थी कि जब कभी हथकड़ियों और बेड़ियों से बांधा जाता था—जैसे बहुधा होता था, वह अपनी कलाई से झटका देकर हथकड़ियों को तोड़ देता था। किसी में इतनी शक्ति नहीं थी कि उसे वश में कर सके। 5 दिन रात वह कब्रों और पहाड़ों में चिल्लाता फिरता और स्वयं को नुकीले पत्थरों से घायल करता था। 6 जब यीशु दूर ही पर थे, इस व्यक्ति ने उनको देख लिया था और उनसे भेंट करने के लिए दौड़कर उनके सामने गिर पड़ा। 7, 8 तब यीशु ने उस व्यक्ति के अन्दर समाई दुष्टात्मा से कहा, "हे दुष्टात्मा, निकल जा।" उसने चीखते चिल्लाते हुए कहा, "यीशु सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर के पुत्र आप का मेरे साथ क्या सम्बंध है? परमेश्वर के लिए, मुझे दुख न दीजिए। 9 यीशु ने पूछा, "तेरा नाम क्या है?" उस दुष्टात्मा ने उत्तर दिया, "सेना, क्योंकि इस व्यक्ति के अन्दर हम बहुत से हैं।" 10 तब दुष्टात्माओं ने बार बार उनसे विनती की, कि वह उनको किसी दूर देश को न भेजें। 11 इस घटना के समय झील के पास पहाड़ पर सुअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था। 12 दुष्टात्माओं ने विनती की, "हमें उन सुअरों में भेज दीजिए। 13 यीशु ने उन्हें वहां जाने की आज्ञा दे दी। तब दुष्टात्माएं उस मनुष्य से निकलीं और सुअरों में समा गईं। उनके समाते ही पूरा झुण्ड पहाड़ की ढाल से उतरकर झील में गिरा और डूब मरा। 14 चरवाहे आसपास के शहरों और गावों में दौड़ते हुए यह समाचार फैलाते हुए गए। सब लोग स्वयं देखने के लिए आए। 15 शीघ्र ही वहां एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई। परन्तु जब उन्होंने उस मनुष्य को यीशु के चरणों के समीप वस्त्र पहिने चैतन्य बैठे देखा, तो वे डर गए। 16 जिन्होंने इस घटना को अपनी आंखों से देखा था, वे दूसरे को इसके विषय में बताने लगे। 17 और भीड़ यीशु से विनती करने लगी कि वह उन्हें छोड़कर चले जाएं। 18 इसलिए वे वापिस नाव पर लौट गए। उस व्यक्ति ने जिसमें पहले दुष्टात्मा समाई थी, यीशु से संग चलने की विनती की। 19 परन्तु यीशु ने उसे आज्ञा नहीं दी। उन्होंने उससे कहा, "तू अपने लोगों के पास घर चला जा और उनको बता कि परमेश्वर ने तेरे लिए कैसे अद्भुत काम किए हैं: तथा तुझ पर कैसी दया की है।" 20 इस प्रकार वह व्यक्ति उस प्रदेश के दस शहरों[1] की यात्रा पर निकल पड़ा और सबको बताने लगा कि यीशु ने उसके लिए कैसे बड़े बड़े कार्य किए। वे उसकी कहानी सुनकर चकित रह गए।

21 जब यीशु नाव से झील की दूसरी ओर पहुंचे तो तट पर एक बड़ी भीड़ उनके चारों ओर इकट्ठी हो गई। 22 उस शहर के आराधनालय का याईर नामक, अगुवा आकर यीशु के सामने गिर पड़ा। 23 वह अपनी बेटी को चंगा करने की विनती करने लगा। उसने घबरा कर कहा, "वह मरने पर है। कृपा कर आइए और अपने हाथ उस पर रख दीजिए ताकि वह जीवित रहे।" 24 यीशु उसके साथ हो लिए और भीड़ उनके पीछे हो ली।

25 भीड़ में एक स्त्री थी जिसे बारह वर्षों से खून बहने की बीमारी थी। 26 उसने इतने वर्षों तक अनेक डाक्टरों से इलाज कराया था और उनको पैसे देकर वह बिल्कुल गरीब हो गई थी। पर अच्छी होने के बदले वास्तव में उसकी दशा और भी बिगड़ गई थी। 27 उसने यीशु के सब... के ... था, इसलिए ... आई ... 28 ... उनका ...

1 ... यूनानी में "दिकपुलिस में।"

29 हुआ भी वैसा ही, जैसे ही उसने उनको छुआ, उसका खून बहना बन्द हो गया। उसे मालूम हो गया कि वह अच्छी हो गई है। 30 यीशु ने तुरन्त अनुभव किया कि उनमे से चंगा करने की सामर्थ निकली है इसलिए उन्होंने भीड में पीछे फिर कर देखा और पूछा, "किसने मेरे वस्त्र छुए ?" 31 उनके शिष्यों ने उनसे कहा, "इतनी भीड़ आपको दबा रही है और आप पूछते हैं किसने आपको छुआ ?" 32 परन्तु वह यह जानने के लिए कि किसने उनको छुआ चारों ओर देखते ही रहे। 33 तब वह स्त्री यह जानकर कि उसके साथ क्या हुआ है, डरते और कांपते हुए आई और उनके पैरों पर गिर पडी। उसने यीशु को बताया कि उसने क्या क्या किया था। 34 यीशु ने उससे कहा, "बेटी तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा किया है, अपनी बीमारी से चंगी होकर शांति से जा।"

35 जब यीशु उससे बातें कर ही रहे थे, लोग याईर के घर से यह समाचार देने के लिए पहुंचे कि बहुत देर हो गई है—उसकी बेटी मर चुकी है अब यीशु को कष्ट न दे। 36 परन्तु यीशु ने उनकी बातों पर ध्यान नही दिया और याईर से कहा, "मत डर। केवल मुझ पर विश्वास रख।" 37 तब यीशु ने भीड़ को रोका और पतरस, याकूब और यूहन्ना के सिवाय किसी को अपने साथ याईर के घर मे आने न दिया। 38 वहा पहुंचकर यीशु ने देखा कि बडा रोना और चिल्लाना मचा है। 39 उन्होने अन्दर जाकर लोगों से बातें की। उन्होंने पूछा, "क्यों इतना रोते और शोर मचाते हो ? लडकी मरी नही है, वह केवल सो रही है।" 40 लोगों ने यीशु का मजाक कर उनकी बडी हंसी उड़ाई परन्तु उन्होंने उन सब को घर से निकल जाने को कहा। तब यीशु उस छोटी लडकी के माता पिता और अपने तीनो शिष्यों को लेकर, उस कमरे मे गए जहा वह पड़ी थी।' 41, 42 उसका हाथ पकड कर यीशु ने कहा, "हे लडकी उठ।" (वह बारह वर्ष की थी।) वह तुरन्त ही उठ गई और चलने फिरने लगी। उसके माता पिता हक्का बक्का रह गए। 43 यीशु ने उन्हें बडी गम्भीरता से आज्ञा दी कि जो कुछ हुआ है किसी से न कहे, फिर उनसे कहा कि लडकी को कुछ खाने के लिए दें।

6 1 इसके बाद यीशु देश के उस भाग से शीघ्र ही चले गए और अपने शिष्यों के साथ अपने शहर, नासरत को लौट गए। 2, 3 अगले सब्त के दिन वह आराधनालय में गये। लोग उनके ज्ञान और आश्चर्यकर्मों को देखकर दग रह गए क्योंकि वह उन्ही में से एक थे। लोगो ने कहा, "वह हमसे बढकर नही है। वह तो एक बढई है, मरियम का लड़का और याकूब, योसेस, यहूदा और शमौन का भाई है। उसकी बहिनें भी यहीं हमारे बीच में रहती हैं।" और लोगो को ठेस पहुंची ! 4 तब यीशु ने उनसे कहा, "भविष्यद्वक्ता अपने शहर, अपने रिश्तेदारों और अपने घराने के लोगों के सिवाय सब जगह आदर पाता है।" 5 उनके अविश्वास के कारण थोड़े ही बीमार लोगो पर हाथ रखकर उनको चगा करने के सिवाय, वह उनके बीच सामर्थ के अधिक आश्चर्यकर्म नही कर सके।

6 यीशु को यह ग्रहण करना बड़ा कठिन प्रतीत हुआ कि लोगो ने उन पर विश्वास नही किया। तब वह वहा से गावों को चले गए और शिक्षा देते रहे।

7 तब उन्होंने अपने बारह शिष्यो को बुलाया और उन्हें दो-दो करके भेजा, और उन्हें दुष्टात्माओं को निकालने की शक्ति दी। 8, 9 उन्होंने कहा कि यात्रा मे लाठी के अतिरिक्त कुछ भी साथ न लें—न भोजन, न थैली, न पैसे, न ही दूसरी जोडी जूता या वस्त्र 10 उन्होंने कहा, "हर गांव में एक ही घर मे ठहरना—वहा रहते समय एक घर से दूसरा घर न बदलना। 11 और जब भी कोई गांव

वाले तुम्हें ग्रहण न करें, या तुम्हारी न सुनें, तो वहाँ से जाने से पहले अपने पैर की धूल भी झाड़ देना, ऐसा करना इस बात का चिन्ह होगा कि तुमने उसे इसका प्रतिफल पाने के लिए छोड़ दिया है।" 12 तब शिष्य चले गए और मिलने वालों को बताते गए कि वे अपने पाप से फिरें। 13 उन्होंने अनेक दुष्टात्माओं को निकाला, अनेक बीमारों पर जैतून का तेल मलकर उन्हें चंगा किया।

14 राजा हेरोदेस ने यीशु के विषय में सुना, क्योंकि उनके आश्चर्यकर्मों की चर्चा सब जगह फैल गई थी। राजा ने यीशु को यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला समझा जो शायद फिर जी उठा हो, इसलिए कुछ लोग कह रहे थे, "इस में कोई आश्चर्य की बात नही वह ऐसे आश्चर्यकर्म कर सकता है," 15 अन्य लोगों ने सोचा यीशु प्राचीनकाल का भविष्यद्वक्ता एलियाह है जो फिर से जी उठा है। दूसरो ने दावा किया कि वह प्राचीनकाल के महान भविष्यद्वक्ताओं के समान एक भविष्यद्वक्ता है। 16 हेरोदेस ने कहा, "नही, यह यूहन्ना है जिसका सिर मैंने कटवाया था। वह मरे हुओ मे से फिर जी गया है।" 17, 18 क्योंकि हेरोदेस ने सिपाही भेजकर यूहन्ना को पकडवा कर जेलखाने में डलवाया था इसलिए कि यूहन्ना ने हेरोदेस से कहा था कि तेरे लिए अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी, हेरोदियास से विवाह करना अनुचित है। 19 हेरोदियास बदला लेने के लिए यूहन्ना को मरवा डालना चाहती थी, परन्तु हेरोदेस की सहमति के बिना वह असमर्थ थी। 20 हेरोदेस यूहन्ना का आदर करता था। यह जानकर कि वह भला और पवित्र व्यक्ति है, इसलिए उसे बचाए रखता था। हेरोदेस, यूहन्ना से जब भी बात करता था, तो व्याकुल हो जाता था परन्तु तो भी वह यूहन्ना की बातें आनन्द से सुनता था। 21 अन्त में हेरोदियास को अवसर मिल ही गया। हेरोदेस का जन्म दिन था। उसने महल के प्रधानो, सेनाध्यक्षों और गलील के सम्मानित लोगों के लिए बडा भोज दिया। 22, 23 तब हेरोदियास की बेटी ने आकर उनके सामने नाच दिखाया और वे सब उसको देख कर बहुत प्रसन्न हुए। राजा ने शपथ खा कर कहा, "जो भी तू चाहे, मुझसे माग, चाहे मेरा आधा राज्य भी हो, और मैं उसे तुझे दूगा।" 24 उसने अन्दर जाकर अपनी माँ से सलाह ली। माँ ने उससे कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर माँग ले।" 25 इसलिए उसने राजा के पास शीघ्र जाकर कहा, "मुझे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर इसी समय—एक थाल मे चाहिए।" 26 तब राजा दुखी हुआ, परन्तु अपने मेहमानों के सामने अपनी शपथ तोडते उसको लज्जा आई। 27 इसलिए उसने अपने एक अंगरक्षक को जेलखाने में भेजा कि यूहन्ना का सिर काटकर उसके पास ले आए। सिपाही ने जेलखाने में यूहन्ना को मार डाला, 28 और एक थाल में उसका सिर लाकर उस लड़की को दे दिया और उसने जाकर अपनी माता को दे दिया। 29 जब यूहन्ना के शिष्यों ने यह खबर सुनी, तो उसका शव लेने के लिए आए और उसे कब्र मे दफना दिया।

30 इस समय शिष्य अपनी यात्रा से यीशु के पास लौटे और उन्होने यीशु को पूरा हाल सुनाया कि उन्होंने क्या क्या किया और लोगों को क्या क्या सिखाया था। 31 तब यीशु ने सुझाव दिया, "चलो, कुछ समय के लिए भीड से दूर अलग जाकर आराम करें।" क्योंकि इतने लोग आ जा रहे थे कि उनको खाना खाने का भी समय नही मिलता था। 32 इसलिए वे नाव पर चढकर शान्त स्थान की ओर चल दिये। 33 परन्तु बहुत लोगों ने उनको जाते देख लिया। वे झील के किनारे दोडते हुए उनसे आगे पहुच गए, 34 यीशु ने नाव से उतरते ही बडी भीड़ को देखा, उन्हे उन लोगों पर तरस आया। क्योंकि वे उन भेडो के समान थे जिनका कोई चरवाहा न हो, यीशु ने उन्हे बहुत सी बातें सिखाई जिनका जानना उनके लिए आवश्यक था।

35, 36 जब शाम हुई तो शिष्यों ने यीशु के पास आकर कहा, "लोगों से कहिए कि आसपास के गावों और बस्तियों में जाकर अपने लिए कुछ भोजन खरीदें, क्योंकि इस सुनसान स्थान में खाने को कुछ भी नहीं है और बहुत देर हो रही है।" 37 परन्तु यीशु ने कहा, "तुम ही उन्हें भोजन दो।" उन्होंने पूछा, "क्या दें? इतनी बड़ी भीड़ के भोजन खरीदने के लिए बहुत धन चाहिए।"[1] 38 यीशु ने कहा, "जाओ और पता लगाओ हमारे पास कितना भोजन है।" वे खबर लेकर आए कि यहां पांच रोटी और दो मछलियां थीं। 39, 40 तब यीशु ने भीड़ को बैठने को कहा। शीघ्र ही लोग पचास पचास और सौ सौ की पंक्तियों में हरी घास पर बैठ गए। 41 यीशु ने पांच रोटी और दो मछलियां ली और आकाश की ओर देखकर उन के लिए धन्यवाद दिया। उसने रोटियों और मछलियो को तोड़ तोड़ कर, शिष्यों को दिया कि वे लोगों को परोसें। 42 भीड़ ने भरपेट भोजन किया। 43, 44 उस भोज मे करीब पांच हजार पुरुष थे। भोजन के बाद बारह टोकरी भरकर रोटियों के बचे हुए टुकड़े घास पर से उठाए गए।

45 इसके बाद तुरन्त यीशु ने अपने शिष्यों को आज्ञा दी कि नाव पर सवार होकर उनसे पहिले भील पार करके बैतसैदा चले जाएं। वह कुछ समय बाद उनसे वहां मिलेंगे। वह स्वयं ठहर कर भीड़ को विदा करेंगे। 46 इसके बाद वह पहाड़ पर प्रार्थना करने के लिए गए। 47 रात में, जब शिष्य नाव पर भील के बीच में थे, और यीशु भूमि पर अकेले थे 48 तो उन्होंने देखा कि शिष्य बड़े संकट में फंसे हैं, बड़ी कठिनाई से नाव खे रहे हैं। आधी और लहरें उनके विरुद्ध हैं। सुबह करीब तीन बजे वह पानी पर चलकर उनके पास गये। वह उनके पास से होकर जाने लगे, 49 परन्तु जब उन्होंने किसी को बाजू में अपने साथ साथ जाते देखा, तो भूत समझकर बहुत डर गये, 50 क्योंकि उन सब ने उनको देखा था। परन्तु यीशु ने तुरन्त उनसे बातें की। उन्होंने कहा, "ढाढ़स बांधो मैं हूं। डरो मत।" 51 तब वह नाव पर चढ़ गये और आधी थम गयी। वे वहां भौंचक्के बैठे रह गए। 52 क्योंकि उस संध्या के आश्चर्यकर्म के बाद भी वे यह न समझे थे कि वह कौन हैं। क्योंकि वे लोग विश्वास नहीं करना चाहते थे।[2] 53 जब वे भील की दूसरी ओर गन्नेसरत मे पहुंचे तो उन्होंने घाट पर नाव को बांधा, 54 और उतर गए। वहां आसपास खड़े लोगों ने उनको तुरन्त पहचान लिया और 55 उनके आने की खबर देने के लिए आसपास के सब स्थानो में दौड़े, और बीमारों को खाटों पर लिटाकर उनके पास लाने लगे। 56 वह जहां भी गए—गावो मे शहरों मे, और बस्तियों मे—लोग बीमारों को बाजारों और सड़कों पर रखकर उनसे विनती करते थे कि वह कम से कम अपने वस्त्र के आंचल को ही उन्हें छूने दें जितनो ने यीशु को छुआ, सब चंगे हो गए।

7 1 एक दिन यहूदियों के कई धार्मिक अगुवे यरूशलेम से यीशु की परीक्षा लेने के लिए आए, 2 उन्होंने देखा कि उनके शिष्य भोजन करने से पहले यहूदियों की सामान्य प्रथा का पालन नहीं करते हैं। 3 क्योंकि यहूदी, विशेषकर फरीसी अपनी प्राचीन प्रथा के अनुसार जब तक कुहनियों[1] तक अपने हाथो पर पानी नहीं छिड़क लेते, तब तक कभी नहीं खाते हैं। 4 इसलिए जब वे बाजार से घर लौटते हैं तो उनको भोजन छूने से पहले इसी तरह अपने पर पानी छिड़कना पड़ता है। यह तो उनकी रीति-विधियों के अनेक उदाहरणो मे से एक है, जिनको वे सदियों

[1] मूलत. "सौ दीनार," एक वर्ष का वेतन। [2] मूलत "परन्तु उनके मन कठोर हो गए थे।" सम्भवत जलन से तात्पर्य है जैसे मरकुस 6 2-6 में है।

[1] मूलत "बिना हाथ धोए।"

से मानते आ रहे हैं, और अब भी उनका पालन करते हैं, जैसे कटोरों, और लोटों और तांबे के बरतनो को धोना-माजना। 5 इसलिए उन धार्मिक नेताओं ने यीशु से पूछा, "आपके शिष्य क्यों हमारी पुरानी रीतियो को नहीं मानते ? क्यो वे हाथ धोने की प्रथा को माने बिना खा लेते हैं।" 6, 7 यीशु ने कहा, "पाखण्डियो ! यशायाह भविष्यद्वक्ता ने यह कहकर तुम्हारा ठीक वर्णन किया है, ये लोग प्रभु के विषय में बडी सुन्दर बातें करते हैं परन्तु उनके मन मे उनके लिए तनिक भी प्रेम नहीं रहता। उनकी आराधना व्यर्थ है क्योकि वे दावा करते हैं कि उनके बनाए हुए तुच्छ नियमों को मानने की आज्ञा परमेश्वर ने लोगों को दी है। 8 क्योंकि तुम परमेश्वर की विशेष आज्ञाओ को टाल देते और उनका स्थान अपनी प्रथाओ को देते हो। 9 तुम अपनी प्रथाओ के लिए बडी सरलता से परमेश्वर के नियमों को टालकर उनको पैर तले रौंद रहे हो। 10 उदाहरण के लिए, मूसा ने तुम्हे परमेश्वर की यह आज्ञा दी : 'अपने माता पिता का आदर कर।' और उसने कहा कि जो अपने माता पिता के विरुद्ध बोले, उसको अवश्य मार डाला जाना चाहिए। 11 परन्तु तुम कहते हो कि किसी पुरुष के लिए यह उचित है कि वह आवश्यकता में पड़े हुए अपने माता पिता को यह कहकर टाल दे, 'मुझे क्षमा कीजिए, मैं आपकी सहायता नही कर सकता। क्योंकि जो मैं आपको दे सकता था उसे मैंने परमेश्वर को दे दिया है।' 12, 13 इस प्रकार तुम मनुष्य की बनाई हुई रीति को बचाने के लिए परमेश्वर के नियम को तोड़ देते हो। यह तो केवल एक ही उदाहरण है, ऐसे अन्य बहुत से हैं।" 14 तब यीशु ने भीड को पास बुलाया कि लोग आकर सुनें। उन्होंने कहा, "तुम सब सुनो और समझने की कोशिश करो। 15, 16 तुम[2] क्या खाते हो इससे तुम्हारी आत्मा को हानि नहीं पहुंचती, परन्तु उससे जो तुम सोचते और बोलते हो,[3]।" 17 तब यीशु भीड से अलग होने के लिए एक घर में गए और उनके शिष्यों ने उनसे उनके कथन का अर्थ पूछा। 18 यीशु ने पूछा, "क्या तुम भी नही समझते ? क्या इतना नही समझते कि जो तुम खाते हो उससे तुम्हारी आत्मा को हानि नहीं पहुंचेगी ? 19 क्योकि भोजन तुम्हारे मन में नही जाता, परन्तु केवल पाचन अगो से जाकर फिर निकल जाता है।" (यह कहकर उन्होंने बताया कि हर एक प्रकार का भोजन शुद्ध है।) 20 तब उन्होंने फिर कहा, "विचार ही मनुष्य को अशुद्ध करते हैं। 21 क्योंकि भीतर से अर्थात मनुष्य के मन मे से, लालसा के बुरे विचार, चोरी, हत्या, व्यभिचार, 22 दूसरो की वस्तुओं का लालच, दुष्टता, धोखा, अशुद्धता, ईर्ष्या, निन्दा, घमण्ड, और सब प्रकार की मूर्खता निकलती है। 23 ये सब बुरी बातें भीतर से निकलती हैं, ये ही तुम्हें अशुद्ध करती हैं और तुम्हे परमेश्वर के अयोग्य बनाती है।"

24 तब वह गलील छोडकर सूर और सैदा[4] के प्रदेश में आए। उन्होंने अपने आगमन को गुप्त रखना चाहा, परन्तु न रख सके। क्योकि सदा के समान उनके आने की खबर तेजी से फैल गई। 25 उसी समय एक स्त्री उनके पास आई जिसकी छोटी लड़की मे दुष्टात्मा समाई थी। उसने यीशु के विषय मे सुना था। वह आकर उनके पावों पर गिर पडी, 26 और यीशु से विनती की, कि उसकी बेटी को दुष्टात्मा के वश से छुडा लें। (यह सुरूफिनीकी एक तुच्छ अन्यजातियो मे से थी।) 27 यीशु ने उसे बताया, "पहले मुझे अपने घराने—यहूदियों[5] की चिन्ता करनी चाहिए। बच्चो की रोटी लेकर कुत्तो के आगे फेंक देना उचित नहीं है।" 28 उसने उत्तर दिया, "स्वामी, यह सच है,परन्तु कुत्ते भी

---

[2] पद 16 अनेक प्राचीन हस्तलेखो मे छोड दिया गया है। "यदि किसी के सुनने के कान हों तो सुन ले।" [3] मूलत "जो वस्तुए मनुष्य के भीतर से निकलती हैं, वे ही उसे अशुद्ध करती हैं।" [4] करीब पचास मील दूर। [5] मूलत ; को तृप्त होने दे।]

मेज के नीचे बच्चों के बरतन से गिरे चूरचार को खाते हैं।" 29 उन्होंने कहा, "शाबाश! तूने अच्छा उत्तर दिया—इतना अच्छा कि मैंने तेरी छोटी लड़की को चंगा कर दिया है। पर चली जा, क्योंकि दुष्टात्मा ने उसे छोड़ दिया है।" 30 जब वह घर पहुंची, तो उसकी लड़की बिस्तर पर शान्त पड़ी हुई थी उसमें से दुष्टात्मा निकल गई थी।

31 सूर से वह सैदा को गए। तब दस शहरों के मार्ग से होते हुए गलील सागर को वापिस चले गए। 32 एक बहरा जो हकलाता भी था उनके पास लाया गया, लोगो ने यीशु से बिनती की, कि वह उस पुरुष पर हाथ रखकर चंगा करें। 33 यीशु ने उसको भीड से अलग ले जाकर उसके कानों में अपनी उगलियां डाली, तब थूका और थूक से उस व्यक्ति की जीभ को छुआ। 34 तब, आकाश की ओर देखकर, उन्होंने आह भरी और आज्ञा दी, "खुल जा।" 35 उसी क्षण से वह व्यक्ति अच्छी तरह सुनने और स्पष्ट बोलने लगा। 36 यीशु ने भीड से कहा कि यह समाचार न फैलाए, परन्तु उन्होंने लोगों को जितना मना किया लोगो ने उतना ही अधिक प्रचार किया, 37 क्योंकि लोग आश्चर्य-चकित रह गए थे। वे बार बार कहते थे, "उन्होंने जो कुछ किया है सब अच्छा किया है। वह बहरे-पन और हकलाने को भी ठीक करते हैं।"

8 1 उन्हीं दिनों मे जब फिर बडी भीड इकट्ठी थी और लोगों के पास खाने को कुछ न बचा था, तब यीशु ने अपने शिष्यों को इस परिस्थिति पर विचार करने को बुलाया। उन्होंने कहा, 2 "मुझे इन लोगों पर तरस आता है, क्योंकि वे यहा तीन दिनों से हैं और उनके पास खाने को कुछ नही बचा है। 3 यदि मैं उनको बिना खिलाए घर भेज दू, तो वे रास्ते मे थक कर चूर हो जाएंगे। क्योंकि उनमे से कई बडी दूर से आए हैं।" 4 उनके शिष्यों ने कहा, "क्या हमें इस जंगल में उनके लिए रोटी ढूढना है"? 5 यीशु ने पूछा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "सात"। 6 यीशु ने भीड को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी। तब उन्होंने उन सात रोटियों को हाथ मे लेकर परमेश्वर को धन्यवाद दिया, फिर रोटियाँ तोडकर यीशु ने शिष्यों को दी, और शिष्यों ने लोगो को परोसी। 7 थोडी सी छोटी मछलियां भी उनके बीच मिली, इसलिए यीशु ने इन पर भी आशिष मांगी और शिष्यों को दी कि लोगों को परोसें। 8, 9 भीड के प्रत्येक जन ने भर पेट भोजन किया। इसके बाद यीशु ने उनको घर भेज दिया। उस दिन भीड मे करीब चार हज़ार लोग थे। सब लोगो के खा लेने के बाद जब बचे टुकडे उठाए गए, तो उनसे सात बडी टोकरियाँ भर गई। 10 इसके बाद तुरन्त यीशु अपने शिष्यो के साथ नाव पर चढ़ कर दलमनूता के प्रदेश मे आए।

11 जब वहाँ के यहूदी अगुवों ने उनके आने की खबर सुनी तो उनसे विवाद करने के लिए आए। उन्होंने कहा, "हमारे लिए एक आश्चर्यकर्म कीजिए। आकाश मे कुछ अनोखा चिन्ह दिखाइए। तब हम आप पर विश्वास करेंगे[1]।" 12 यीशु ने यह सुना तो आहें भर कर कहा, "कभी नहीं। तुम लोगो को और कितने आश्चर्यकर्म चाहिए[2]।" 13 तब वह वापिस नाव पर आ गए और उनको छोडकर झील पर चले गए।

14 परन्तु शिष्य वहा से जाने से पहले अपने साथ रोटी रखना भूल गए थे। नाव मे उनके पास केवल एक ही रोटी थी। 15 जब वे जा रहे थे, यीशु ने शिष्यो को एक बड़ी गम्भीर चेतावनी दी, "राजा हेरोदेस और फरीसियों के खमीर से सावधान रहना।" 16 शिष्यो ने आपस में पूछा, "उनकी बात का क्या अर्थ है?" अन्त मे उन्होंने यह अर्थ निकाला कि वे रोटी लाना भूल गए हैं, इसलिए

[1] मूलत "उसे जाचने के लिए।" [2] मूलतः "इस समय के लोग क्यों चिन्ह ढूढते हैं।"

यीशु ऐसा बोल रहे होंगे। 17 यीशु ने उनका विचार जान लिया और कहा, "नही, उसके विषय मे नही ? क्या तुम नही समझ रहे हो ? क्या तुम्हारे मन इतने कठोर हैं ? 18 तुम्हारी आखें हैं देखने के लिए—फिर देखते क्यो नही ? कान लगाकर तुम सुनते क्यों नही ? क्या तुम्हें कुछ भी याद नही? 19 उन पांच हजार पुरुषों के बारे मे जिनको मैंने पांच रोटियों से खिलाया था ? बाद मे बचे हुए टुकडों से भरी हुई कितनी टोकरियां तुमने उठाई थी ?" उन्होंने कहा, "बारह।" 20 "जब मैंने सात रोटियों से चार हजार को खिलाया, तब कितनी बची?" उन्होंने उत्तर दिया, "सात टोकरियां।" 21 "तो भी तुम सोचते हो कि हमारे पास रोटी नहीं, इसकी चिन्ता मुझे है[3] ?"

22 जब वे बैतसैदा में पहुचे, तब कुछ लोग एक अन्धे व्यक्ति को उनके पास लाए। उन्होंने यीशु से विनती की, कि उसे छूकर चगा करें। 23 यीशु ने अन्धे व्यक्ति का हाथ पकड़ा और उसे गाव के बाहर ले गए। उसकी आखों पर थूक कर अपने हाथ उन पर रखे। यीशु ने पूछा, "क्या तू अब कुछ देख सकता है ?" 24 उस मनुष्य ने चारों ओर देखा। उसने कहा, "हां, मैं मनुष्यो को देख सकता हूं। परन्तु एकदम साफ नही देख सकता, वे मुझे पेड़ के तने के समान, चलते हुए दिखाई देते हैं।" 25 तब यीशु ने उस व्यक्ति की आखों पर अपने हाथ रखे। जब वह एकटक देखता रहा तो उसकी आखें पूरी रीति से ठीक हो गईं। उसे सब कुछ साफ साफ दिखने लगा। 26 यीशु ने उससे कहा, "गांव जाने से पहिले अपने घर को जा।"

27 तब यीशु और उनके शिष्य गलील से चले गए और कैसरिया फिलिप्पी के गावों मे आए। रास्ते में जाते हुए यीशु ने उनसे पूछा, "लोग मुझको क्या समझते है, वे मेरे विषय मे क्या कहते हैं!" 28 शिष्यो ने उत्तर दिया, "कुछ लोग आपको यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला समझते हैं। कुछ लोग कहते है कि आप एलिय्याह या कोई प्राचीन भविष्यद्वक्ता हैं जो फिर जी उठे हैं।" 29 तब यीशु ने पूछा, "तुम मेरे बारे मे क्या सोचते हो ?" पतरस ने उत्तर दिया, "आप मसीह हैं।" 30 परन्तु यीशु ने उन्हें चिताया कि किसी को न बताएं। 31 तब यीशु ने उनको बताना शुरू किया कि वह[4] कितना भयानक दुख सहेंगे, प्राचीनो, महायाजकों और दूसरे यहूदी नेताओं द्वारा वह तुच्छ समझे जाकर मार डाले जाएंगे, और तीसरे दिन फिर जी उठेंगे। 32 जब उन्होंने इसके बारे मे उनसे साफ बातें की, तब पतरस उन्हें ऐसा कहने से रोकने लगा।[5] उसने यीशु से कहा, "आपको ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिएं।" 33 यीशु ने मुड कर अपने शिष्यों की ओर देखा तब बडी कठोरता के साथ पतरस से कहा, "हे शैतान मेरे सामने से दूर हो। तू केवल मनुष्य की दृष्टि से देख रहा है परमेश्वर की दृष्टि से नही।" 34 तब यीशु ने अपने शिष्यों और भीड को बुलाया कि आकर सुनें। उन्होंने उनसे कहा, "यदि तुममें से कोई मेरा शिष्य बनना चाहें तो अपनी सुख सुविधाओं को छोड दे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो ले। 35 यदि तुम अपना जीवन बचाने मे लगे रहो, तो उसे खो दोगे। वास्तव मे केवल वे ही लोग जीने का महत्व जानेंगे जिन्होंने मेरे और सुसमाचार के लिए अपना जीवन तुच्छ जाना हो। 36 मनुष्य यदि सारे संसार को प्राप्त करे और अपना प्राण खो दे तो उसे क्या लाभ? 37 क्या उसके प्राण के बराबर मूल्यवान और कुछ है ? 38 अविश्वास और पाप के इन दिनो में जो मुझसे और मेरे वचन से लजाएगा, तो मैं मसीह[4] भी जब अपने पिता की महिमा मे, पवित्र स्वर्गदूतों के साथ लौटूगा, तब उससे लजाऊँगा।"

9 1 यीशु ने अपने शिष्यो से कहा, "तुम मे से कई जो अभी यहां खड़े हो परमेश्वर के

[3] मूलत "क्या तुम अब तक नहीं समझते ?" [4] मूलत. "मनुष्य का पुत्र।" [5] मूलत "पतरस उसे...झिड़कने लगा।"

राज्य को बड़ी सामर्थ्य के साथ आते हुए देखने के लिए फिर जीवित रहोगे।"

2 छः दिन बाद यीशु, पतरस, याकूब और यूहन्ना को पहाड़ की चोटी पर ले गए। वहां और कोई नहीं था। एकाएक उनके मुख पर तेज छा गया, 3 उनका वस्त्र इतना चमकने लगा कि जिससे आंखें चौंधियाने लगी, किसी भी सांसारिक उपाय से इतना उजाला नहीं हो सकता था। 4 तब एलिय्याह और मूसा दिखाई दिए। वे दोनों यीशु से बातें करने लगे। 5 पतरस ने आश्चर्य में डूबे हुए कहा, "गुरुजी, यह तो बड़ा अद्भुत स्थान है। हम यहां तीन मण्डप बनाएंगे, आप तीनों के लिए एक एक····" 6 उसने केवल बात जारी रखने के लिए ही ऐसा कहा, क्योंकि वह जानता न था कि क्या कहे और वे बुरी तरह डर गए थे। 7 परन्तु जब वह ऐसा कह ही रहा था कि एक बादल ने उन्हें छा लिया, जिससे सूर्य छिप गया। उस बादल में से एक आवाज सुनाई पड़ी, "यह मेरा प्रिय पुत्र है। इसकी सुनो।" 8 तब अचानक उन्होंने चारों ओर देखा। मूसा और एलिय्याह चले गए थे, और केवल यीशु ही उनके साथ थे।

9 पहाड़ से उतरते समय यीशु ने उन्हें चिताया कि जब तक वह मरे हुओं में से न जी उठें तब तक जो कुछ उन्होंने देखा था, उसकी चर्चा किसी से न करें। 10 इसलिए उन्होंने किसी से न कहा पर कई बार उस विषय पर आपस में चर्चा की कि "मरे हुओं में से जी उठने का क्या अर्थ है।" 11 उन्होंने यीशु से पूछना शुरू किया कि यहूदियों के धार्मिक अगुवे क्यों कई बार यह कहते हैं, (मसीह[1] के आने से पहले[2]) एलिय्याह का फिर आना अवश्य है। 12, 13 यीशु ने सहमत हो कर कहा कि अवश्य है एलिय्याह पहले आए और मार्ग तैयार करे— और वास्तव में, वह पहले आ भी चुका है। उसके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया गया, जैसा भविष्यद्वक्ताओं ने पहले ही कहा था। तब यीशु ने उनसे पूछा कि भविष्यद्वक्ताओं के इस कथन का क्या अर्थ है कि मसीह दुःख उठाएगा और उसका अपमान किया जाएगा?

14 पहाड़ से नीचे उतरकर उन्होंने देखा कि दूसरे नौ शिष्यों को भीड़ घेरे हुए है और कुछ यहूदी अगुवे उनसे विवाद कर रहे हैं। 15 जब लोगों ने यीशु को अपनी ओर आते देखा, तो उनको नमस्कार करने के लिए दौड़े। 16 यीशु ने पूछा, "यह वाद-विवाद क्यों हो रहा है?" 17 भीड़ के एक मनुष्य ने उत्तर दिया, "गुरुजी मैं अपने बेटे को लाया था कि आप उसे चंगा कर दें—वह गूंगा है क्योंकि उसमें दुष्टात्मा समाई है। 18 जब कभी दुष्टात्मा उसे वश में करती है तो उसे भूमि पर पटक देती है। वह मुंह से फेन गिराता और दांत पीसता और अकड़ जाता है। इसलिए मैंने आपके शिष्यों से दुष्टात्मा को निकालने की विनती की, परन्तु वे न निकाल सके।" 19 यीशु ने (अपने शिष्यों से) कहा, "ओह, तुम्हारा विश्वास कितना कम है; मैं तुम्हारे साथ और कितने अधिक समय तक रहूं कि तुम विश्वास करो? मैं और कब तक तुम्हारे साथ धीरज रखूं? लड़के को मेरे पास लाओ।" 20 तब वे लड़के को ले आए, परन्तु जब उसने यीशु को देखा, तो दुष्टात्मा ने उसे बड़ी ज़ोर से मरोड़ा, और वह ऐंठते और मुंह से फेन निकालते हुए भूमि पर गिर पड़ा। 21 यीशु ने उसके पिता से पूछा, "उसकी ऐसी दशा कब से है?" उसने उत्तर दिया, "बहुत बचपन से, 22 दुष्टात्मा उसे मार डालने के लिए उसे कभी आग में तो कभी पानी में गिराती है। हम पर दया कीजिए और यदि आप कुछ कर सकें तो कीजिए।" 23 यीशु ने पूछा, "यदि मैं कर सकूं? यदि तुम्हारा विश्वास हो तो सब कुछ सम्भव है।" 24 पिता ने तुरन्त उत्तर दिया, "मेरा विश्वास है, मेरी सहायता कीजिए कि मैं और विश्वास करूं।" 25 जब यीशु ने देखा कि

[1] मूलतः "मनुष्य का पुत्र।" [2] यही तात्पर्य है।

भीड बढती जा रही है तब दुष्टात्मा को डाटा। उन्होने कहा, "हे गूंगेपन और बहरेपन की दुष्टात्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि इस बालक में से निकल जा और उसमें फिर प्रवेश न कर।" 26 तब दुष्टात्मा ने बहुत भयंकर स्वर से चीखकर लड़के को मरोडा और उसे छोड दिया। लड़का वहां बिना हिले डुले चुपचाप पडा था और मरा सा दिखता था। भीड में फुसफुसाहट फैल गई—"वह मर गया है।" 27 परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकडा और खडे होने मे उसकी सहायता की और वह ठीक हो गया। 28 बाद मे, जब यीशु घर में अपने शिष्यो के साथ अकेले थे तब शिष्यो ने उनसे पूछा, "हम क्यो उस दुष्टात्मा को नही निकाल सके ?" 29 यीशु ने उत्तर दिया, "इस प्रकार की परिस्थिति मे प्रार्थना की आवश्यकता होती है।"

30, 31 उस क्षेत्र को छोडकर वे गलील से होकर गए जहा यीशु ने भीड से दूर रहने की कोशिश की, ताकि अपने शिष्यो के साथ अधिक समय बिता कर उन्हें शिक्षा दें। वह उनसे कहते थे, "मैं, मसीह, पकडवाया और मार डाला जाऊंगा और तीन दिन बाद फिर जी उठूंगा।" 32 परन्तु उनकी समझ मे कुछ न आया। वे उनसे पूछने से डरते थे कि उनके कहने का क्या अर्थ है।

33 फिर वे कफरनहूम मे पहुचे। उस घर मे आने के बाद जहा वे ठहरनेवाले थे, यीशु ने उनसे पूछा, "तुम बाहर रास्ते मे क्या बहस कर रहे थे ?" 34 परन्तु वे उत्तर देने मे लजा कर हिचकिचाये, क्योकि वे वाद-विवाद कर रहे थे कि उनमें सबसे बडा कौन है। 35 यीशु बैठ गए और उन्हें पास बुलाकर बोले, "जो कोई सबसे बडा बनना चाहे, वह सबसे छोटा और सबका दास बने।" 36 तब यीशु ने उनके बीच में एक छोटे बच्चे को बुलाकर अपनी गोद में लिया और उनसे कहा, 37 "जो कोई ऐसे छोटे बच्चे को मेरे नाम से ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है वह मेरे पिता को जिसने मुझे भेजा ग्रहण करता है।"

38 एक दिन उनके एक शिष्य यूहन्ना ने उनसे कहा, "गुरुजी, हमने एक मनुष्य को आपका नाम लेकर दुष्टात्मा निकालते देखा, परन्तु हमने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारे साथ का नही था।" 39 यीशु ने कहा, "उसे मना मत करो। क्योकि मेरे नाम से आश्चर्यकर्म करनेवाला कोई भी व्यक्ति जल्दी ही मेरे विरोध मे नही हो सकता[3]। 40 जो कोई हमारे विरुद्ध नही है वह हमारी ओर है। 41 यदि कोई भी तुम्हे मसीह के होने के कारण एक प्याला पानी भी दे—तो मैं कहता हूं—वह अपना प्रतिफल कभी नही खोएगा। 42 परन्तु यदि कोई इन छोटों में से किसी के जो मुझ पर विश्वास रखते हैं विश्वास से हट जाने का कारण बने तो उस मनुष्य के लिए अच्छा होता कि बडी चक्की का पत्थर उसके गले मे लटकाया जाता और उसे गहरे मे फेंक दिया जाता। 43, 44[4] यदि तेरे हाथ से बुरा काम हो, तो उसे काट डाल। अधिक अच्छा हो कि तू एक ही हाथ से अनन्तकाल तक जीवित रहे इसकी अपेक्षा कि दोनों हाथ के रहते हुए नरक की कभी न बुझनेवाली आग में फेंक दिया जाए। 45, 46[4] यदि तेरा पाव तुझे बुराई की ओर ले जाए, तो उसे काट डाल। लंगडा रहकर सदा काल तक जीवित रहना अधिक अच्छा है इसके बदले कि दो पाँव रहें जो तुझे नरक तक पहुंचाएं। 47 यदि तेरी आख पाप से भरी हो, तो उसे निकाल दे। काना होकर परमेश्वर के राज्य मे प्रवेश करना अधिक अच्छा है इसके बदले कि दोनों आखें रहें और तू नरक की आग देखे। 48 जहां कीडा कभी न मरता और आग कभी नही बुझती—49 जहां सब आग

[3] मूलत "मुझे बुरा कह सके।" [4] 44 और 46 पद (जो 48 पद के अनुरूप है) कुछ प्राचीन हस्तलेखों मे नही

से शुद्ध किए जाते हैं[5]। 50 नमक यदि नमकीन न रह जाए, तो बेकार है; उससे कोई वस्तु स्वादिष्ट नहीं हो सकती। इसलिए अपना स्वाद बनाए रखो। एक दूसरे के साथ मेल से रहो।"

10 1 तब यीशु कफरनहूम[1] से चले गए और दक्षिण की ओर यहूदिया की सीमा पर और यर्दन नदी के पूर्वी भाग की ओर आए। हमेशा के समान वहाँ भी भीड़ थी; और वह उनको शिक्षा देने लगे। 2 कई फरीसियों ने आकर जो उनको फंसाने की कोशिश में थे, उनसे प्रश्न किया, "क्या आप तलाक की आज्ञा देते हैं ?" 3 यीशु ने उनसे पूछा, "मूसा ने तलाक के विषय में क्या कहा था ?" 4 उन्होंने उत्तर दिया, "उसने तलाक को उचित बताया है। उसका कहना था कि पुरुष को केवल इतना ही करना है कि अपनी पत्नी को त्यागपत्र लिख दे।" 5 यीशु ने पूछा, "उसने ऐसा क्यों कहा ? मैं तुम्हें बताता हूँ—तुम्हारे कठोर मन की दुष्टता के कारण उसने यह आज्ञा दी। 6, 7 परन्तु निश्चय ही यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है। क्योंकि आदि से ही उसने स्त्री और पुरुष को बनाया कि वे विवाह में सदा के लिए बंध जाएं, इसलिए पुरुष को अपने माता पिता को छोड़ना है, 8 वह और उसकी पत्नी बंध जाते हैं इसलिए वे फिर दो नहीं रह जाते, परन्तु एक हो जाते हैं। 9 इसलिए जिनको परमेश्वर ने जोड़ा है उनको कोई मनुष्य अलग न करे।" 10 कुछ समय बाद, जब यीशु घर पर अपने शिष्यों के साथ अकेले थे तब उन्होंने फिर इसी विषय पर तर्क किया। 11 यीशु ने उनको बताया, "जब कोई पुरुष किसी दूसरी से विवाह करने के लिए अपनी पत्नी को तलाक देता है तो वह उसके विरुद्ध व्यभिचार करता है। 12 इसी प्रकार यदि कोई पत्नी अपने पति को तलाक देती है और फिर विवाह करती है, तो वह भी व्यभिचार करती है।"

13 एक बार कई माताएं अपने बच्चों को ला रही थीं कि यीशु उनको आशिष दें, तब शिष्यों ने उनको यह कहकर मना किया कि यीशु को परेशान न करें। 14 परन्तु जब यीशु ने यह देखा तो अपने शिष्यों से बहुत अप्रसन्न होकर कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो, उन्हें मना मत करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। 15 मैं बड़ी गम्भीरता के साथ तुमसे कहता हूँ कि जो कोई छोटे बच्चे के समान परमेश्वर के पास आने से इन्कार करे वह कभी उसके राज्य में प्रवेश नहीं कर सकेगा।" 16 तब यीशु ने बच्चों को अपनी गोद मे लिया। उनके सिर पर हाथ रखे और उनको आशिष दी।

17 एक दिन वह फिर कहीं जा रहे थे। एक व्यक्ति उनके पास दौड़कर आया और घुटने टेक कर उनसे पूछा, "हे अच्छे गुरु मुझे स्वर्ग जाने के लिए क्या करना चाहिए ?" 18 यीशु ने पूछा, "तू मुझे अच्छा क्यों कहता है ? केवल परमेश्वर ही वास्तव मे अच्छा है। 19 तू आज्ञाओं को तो जानता है: 'हत्या मत करना, व्यभिचार मत करना, चोरी मत करना, झूठ मत बोलना, धोखा मत देना, अपने माता पिता का आदर करना'।" 20 उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "गुरु जी, मैंने इनमे से किसी एक आज्ञा का भी उल्लंघन[2] नहीं किया है।" 21 यीशु ने जब उसकी ओर देखा तो उनके मन में उसके लिए बड़ा प्रेम आया। उन्होंने उससे कहा, "तुझमें केवल एक कमी है, जा जो कुछ तेरे पास है सब बेचकर गरीबों को बाँट दे—और तुझे स्वर्ग मे धन मिलेगा। फिर

[5] मूलतः "हरएक आग से नमकीन किया जाएगा।"

[1] मूलत. "वहां से उठकर।" यहां अत्यन्त शान्त भाव से लिखा गया है। यह गलील की उनकी अन्तिम यात्रा थी। अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद ही वह फिर वहां लौटे। [2] मूलत "लड़कपन से मानता आया हूं।"

तू आकर मेरे पीछे हो ले।" 22 तब उस व्यक्ति का मुंह उतर गया, क्योंकि वह बहुत धनवान था और वह उदास होकर चला गया।

23 यीशु ने उसे जाते देखा, तब मुड़कर अपने शिष्यों से कहा, "धनवान के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।" 24 उन्हें सुनकर आश्चर्य हुआ। इसलिए यीशु ने फिर कहा: "प्यारे बच्चो, जो धन पर भरोसा[3] रखते हैं, उनके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है! 25 धनवान मनुष्य का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने से ऊंट का सुई के छेद में से पार हो जाना सहज है।" 26 शिष्यों को विश्वास ही न हुआ। उन्होंने पूछा, "यदि धनवान का नहीं, तो फिर संसार में किसका उद्धार हो सकता है?" 27 यीशु ने उनकी ओर एकटक देखा तब कहा, "परमेश्वर के बिना यह बिल्कुल असम्भव है। परन्तु परमेश्वर के साथ सब कुछ सम्भव है।" 28 तब पतरस कहने लगा कि उसने और दूसरे शिष्यों ने क्या क्या छोड़ दिया है। उसने कहा, "हमने तो आपके पीछे चलने के लिए सब कुछ त्याग दिया है।" 29 यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हें निश्चय दिलाता हूं कि जिसने मेरे प्रेम और दूसरों को सुसमाचार सुनाने के लिए घर, *भाइयों, बहिनों, माता-पिता, बालबच्चों या धन सम्पत्ति* को छोड़ा, 30 उसे बहिन, भाई, माता, बच्चे और ज़मीन से सौ गुणा अधिक—वापिस दिया जाएगा, परन्तु सताव के साथ। इस संसार में यह सब उसका होगा और आने वाले संसार में उसे अनन्त जीवन मिलेगा। 31 परन्तु बहुत से लोग जो अभी बड़े महान समझे हैं उस समय सबसे तुच्छ समझे जाए... बहुतेरे जो यहां पर तुच्छ समझे जाते... सबसे महान होंगे।"

32 अब वे यरूशलेम के मार्ग पर उनके आगे आगे जा रहे थे। शिष्य रहे थे तो उनमें बहुत डर समा गया था। उनको अलग ले जाकर, यीशु ने उन्हें फिर एक बार सब बताना शुरु किया कि यरूशलेम पहुंचने पर उनके साथ क्या क्या किया जाएगा। 33 यीशु ने उन्हें बताया, "जब हम वहां पहुंचेंगे, तब मैं, मसीह, पकड़वाया जाऊंगा और महायाजकों और यहूदी अगुवों के सामने पहुंचाया जाऊंगा, वे मुझे प्राणदंड देंगे और मार डालने के लिए रोमियों के हाथ में सौंपेंगे। 34 वे मेरा अपमान करेंगे, मुझ पर थूकेंगे, मुझे कोड़ों से मारेंगे और मार डालेंगे; परन्तु तीन दिन के बाद मैं फिर जी उठूंगा।"

35 तब जब्दी के पुत्र, याकूब और यूहन्ना ने यीशु के पास आकर उनसे धीमी आवाज़[4] में बातें की। उन्होंने कहा, "गुरु जी, हमारी विनती है कि आप हम पर एक दया करें।" 36 यीशु ने पूछा, "क्या?" 37 उन्होंने कहा, "हम चाहते हैं कि हम आपके राज्य में आपके सिंहासन के पास बैठें; एक आपके दाहिने और दूसरा आपके बाएं।" 38 परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, "तुम नहीं जानते कि क्या मांग रहे हो। क्या तुम दुख के उस कड़वे प्याले में से पी सकते हो जो मुझे पीना है? *या जिस दुख का बपतिस्मा मुझे लेना है* क्या तुम उसे ले सकते हो?" 39 उन्होंने कहा, "*अवश्य पी सकते हैं।*" यीशु ने कहा, "तुम वास्तव में मेरे प्याले में से पीओगे। जो बपतिस्मा मैं लूंगा उसे लोगे, 40 परन्तु मुझे अधिकार नहीं कि तुमको अपने पास सिंहासन पर बैठाऊं। *यह तो पहले ही* ठहराया जा चुका है।" 41 जब दूसरे शिष्यों को मालूम हुआ ... और यूहन्ना ने क्या मांगा है, तब वे ... 42 तब यीशु उनको अपने ... कहा, "तुम हो कि ... बड़े लोग पर ... परन्तु ... कोई ...

[3] कुछ प्राचीन हस्तलेखों में ... "जो

44 जो कोई सबका प्रधान बनना चाहे वह सबका दास बने। 45 क्योंकि मैं मसीह स्वयं भी यहा सेवा लेने के लिए नही परन्तु दूसरों की सेवा करने, और बहुतों के छुटकारे के लिए अपना प्राण देने को आया हूं।"

46 तब वे यरीहो में पहुंचे। बाद मे, जब उन्होंने शहर छोडा, तो एक बडी भीड़ उनके पीछे थी। जब यीशु जा रहे थे तो (तिमाई का पुत्र) बरतिमाई नामक एक अंधा भिखारी सड़क के किनारे बैठा हुआ था। 47 बरतिमाई ने सुना कि नासरत का यीशु यहा से गुजर रहा है, तो उसने चिल्लाना शुरु किया, "हे दाऊद की सन्तान, यीशु, मुझ पर दया कीजिए।" 48 कुछ लोगो ने चिल्लाकर कहा, "चुप रह।" परन्तु वह और भी जोर से बार-बार चिल्लाने लगा, "हे दाऊद की संतान, मुझ पर दया कीजिए।" 49 यीशु ने उसकी पुकार सुनी। वह वहा मार्ग पर ठहर गए और कहा, "उसे यहां आने दो।" तब उन्होंने अंधे व्यक्ति को बुलाया। उन्होंने कहा, "हे भाग्यवान[5] व्यक्ति आ वह तुझे बुला रहे हैं।" 50 बरतिमाई ने अपना पुराना कपडा झटके से उतार फेंका और शीघ्र ही यीशु के पास जा पहुंचा। 51 यीशु ने पूछा, "तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूं?" अंधे मनुष्य ने कहा, "गुरुजी, केवल यह कि मैं देखने लगू।" 52 यीशु ने उससे कहा, "ठीक है, ऐसा हो गया। तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया।" वह अंधा व्यक्ति तुरन्त ही देखने लगा और मार्ग मे यीशु के पीछे हो लिया।

11 1 वे यरूशलेम के सीमावर्ती गांव बैतफगे और बैतनिय्याह के निकट जैतून पहाड़ पर पहुंचे। यीशु ने अपने शिष्यो मे से दो को आगे भेजा। 2 उन्होंने उनसे कहा, "उस सामने वाले गांव मे जाओ, जैसे ही तुम उसमें प्रवेश करोगे तुम्हें गदही का एक बच्चा जिस पर कभी कोई सवार नहीं हुआ, बन्धा हुआ दिखेगा। उसे खोलकर यहाँ ले आओ। 3 यदि कोई तुम से पूछे कि क्या कर रहे हो, तो उससे केवल कह देना, 'हमारे स्वामी को इसकी आवश्यकता है और वह इसे शीघ्र लौटा देंगे'।" 4, 5 दोनो शिष्य चले गए और गदही के बच्चे को घर के द्वार पर गली में बन्धे हुए देखा। जब वे उसे खोल रहे थे, तो वहा खड़े कुछ लोगों ने पूछा, "क्या कर रहे हो? गदही के बच्चे को क्यों खोल रहे हो?" 6 तब उन्होंने वैसा ही उत्तर दिया जैसा यीशु ने बताया था, फिर वे चुप हो गए। 7 गदही के बच्चे को यीशु के पास लाया गया। शिष्यों ने उसकी पीठ पर अपने कपड़े बिछाए कि यीशु उस पर सवार हों। 8 भीड मे से बहुतो ने अपने कपड़े मार्ग पर यीशु के सामने फैला दिए, दूसरों ने खेतों से डालियाँ तोडकर बिछाईं। 9 यीशु जुलूस के बीच में थे, भीड उनके आगे पीछे थी, और सब चिल्ला रहे थे, "राजा की जय। उसके लिए परमेश्वर की प्रशंसा हो जो प्रभु के नाम से आता है। 10 हमारे पिता दाऊद के राज्य की वापसी के लिए परमेश्वर की प्रशंसा हो⋯सारी सृष्टि के राजा की जय हो।"

11 यीशु ने यरूशलेम मे प्रवेश किया और मन्दिर में गये। उन्होंने चारो ओर ध्यान से सब कुछ देखा और वहां से निकल गए—क्योंकि शाम हो गई थी—और बारह शिष्यो के साथ बैतनिय्याह चले गए।

12 अगले दिन सवेरे जब वे बैतनिय्याह से निकले, तब यीशु को भूख लगी। 13 कुछ दूरी पर उन्होंने घने पत्तों से लदा अंजीर का पेड़ देखा। वह उसके पास गए कि देखें कि उसमें अंजीर फले हैं या नही। परन्तु उसमे केवल पत्तियां ही पत्तियां थी, क्योंकि फल का मौसम न था। 14 तब यीशु ने पेड से कहा, "तुझ में आज से फिर कभी फल न लगेंगे।" शिष्यों ने उनको ऐसा कहते सुना।

[5] मूलत: "ढाढ़स बान्ध।"

15 जब वे यरूशलेम वापिस पहुंचे तो यीशु मन्दिर में गए। मन्दिर मे से व्यापारियों और ग्राहकों को बाहर निकालने लगे। उन्होंने सर्राफों की मेजें और कबूतर बेचने वालों की दुकानो को उलट दिया और 16 व्यापार का सामान लानेवालों को रोक दिया। 17 यीशु ने उनसे कहा, "धर्मशास्त्र में लिखा है, 'मेरा मन्दिर सब जातियो के लिए प्रार्थना का घर होगा,' परन्तु तुमने उसे डाकुओं की खोह में बदल डाला है।" 18 महायाजकों और दूसरे यहूदी अगुवो ने सुना कि यीशु ने क्या किया तो वे उनसे पीछा छुडाने का उपाय सोचने लगे। परन्तु वे कुछ करने से डरते थे क्योंकि लोगों मे यीशु की शिक्षा का बडा जोश था इस कारण उन्हें दगा होने का डर था।

19 रीति के अनुसार उस शाम को वे भी शहर से बाहर चले गए। 20 अगले दिन सुबह उन्होने उस अजीर के पेड को देखा जिसे यीशु ने श्राप दिया था, वह जड़ समेत सूख गया था। 21 तब पतरस ने स्मरण किया कि उससे पहले दिन यीशु ने उस पेड से क्या कहा था, और आश्चर्य के साथ कहा, "गुरुजी, देखिए यह अंजीर का पेड जिसे आपने श्राप दिया था सूख गया है।" 22, 23 उत्तर मे यीशु ने शिष्यो से कहा, "यदि केवल तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर हो—तो यह बिलकुल सच है—तुम इस जैतून पहाड से कह सकते हो, उखड जा, और भूमध्यसागर मे गिर जा, और तुम्हारी आज्ञा के अनुसार होगा। केवल इतना ही आवश्यक है कि तुम वास्तव में विश्वास रखो और सन्देह न करो। 24 मेरी सुनो। तुम किसी भी बात के लिए प्रार्थना कर सकते हो, और यदि तुम विश्वास रखो, कि तुमने पा लिया, तो वह तुम्हारा है। 25 परन्तु जब तुम प्रार्थना करते हो, तो जिसके विषय मे तुम्हारे मन मे कुछ विरोध है उसे पहले क्षमा करो, ताकि तुम्हारा पिता जो स्वर्ग मे है तुम्हारे भी अपराध क्षमा करे।"

26[1], 27, 28 इस समय तक वे फिर यरूशलेम पहुंच चुके थे, यीशु मन्दिर के आंगन मे से जा रहे थे। तब महायाजको और दूसरे यहूदी नेताओं[2] ने उनके पास आकर पूछा "यह क्या हो रहा है? आपको व्यापारियों को भगाने का अधिकार किसने दिया है?" 29 यीशु ने उत्तर दिया, "यदि पहिले तुम मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो तो मैं भी तुम्हें उत्तर दूगा। 30 यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय मे तुम क्या कहते हो? क्या वह परमेश्वर की ओर से भेजा गया था या नही? मुझे उत्तर दो।" 31 उन्होंने आपस मे बातचीत की, "यदि हम उत्तर दें कि परमेश्वर ने उसे भेजा, तो वह कहेगा, 'ठीक है, फिर तुमने उसकी बातो पर विश्वास क्यों नही किया?' 32 परन्तु यदि हम कहें परमेश्वर ने उसे नही भेजा था, तब लोगो मे दंगा हो जाएगा।" क्योंकि सब लोगों का दृढ विश्वास था कि यूहन्ना भविष्यद्वक्ता था। 33 इसलिए उन्होंने कहा, "हम उत्तर नही दे सकते; हम नही जानते।" इसके उत्तर मे यीशु ने कहा, "तब मैं भी तुम्हारे प्रश्न का उत्तर नही दूगा कि मैं यह काम किस अधिकार से करता हूं।"

12 1 यहां कुछ दृष्टान्त हैं जो यीशु ने लोगो को सुनाए। "एक व्यक्ति ने अंगूर का बगीचा लगाया और उसके चारों ओर बाडा बाधा और अंगूर का रस निकालने के लिए एक गडहा खोदा, और चौकीदार के लिए एक गुम्मट बनाया। तब उसने खेत को कुछ समय के लिए ठेके पर किसानों को दे दिया और स्वयं दूसरे देश को चला गया। 2 अंगूर तोड़ने के समय

[1] अनेक प्राचीन हस्तलेखों में पद 26 में यह जुडा है, "यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।" मत्ती 6·15 में सबने इसका समावेश किया है। [2] मूलत. "शास्त्री और पुरनिए।"

उसने एक दास को फसल का अपना हिस्सा लेने भेजा। 3 परन्तु किसानों ने उस दास को पीटा और छूंछे हाथ लौटा दिया। 4 मालिक ने फिर अपने दूसरे दास को भेजा, उसके साथ और भी बुरा व्यवहार हुआ। उस के सिर पर भारी चोट आई। 5 फिर उसने एक अन्य को भेजा जो मार डाला गया, बाद में दूसरों को या तो पीटा गया या मार डाला गया, 6 अब केवल उसका एकलौता पुत्र ही बचा। अन्त मे उसे भी उसने भेजा, यह सोचकर कि वे अवश्य ही उसका आदर करेंगे! 7 परन्तु जब किसानो ने उसे आते देखा तो कहा, 'अपने पिता के मरने के बाद यही खेत का उत्तराधिकारी बनेगा। आओ, उसे मार डालें—तब खेत हमारा हो जाएगा।' 8 तब उन्होंने उसे पकड़ा और उसकी हत्या की और अंगूर के बगीचे के बाहर उसका शव फेंक दिया। 9 तुम्हारा क्या विचार है मालिक यह सब हाल सुनकर क्या करेगा? वह आकर उन सबको मार डालेगा, और अंगूर के बगीचे का ठेका दूसरो को दे देगा। 10 क्या तुमने धर्मशास्त्र का पद नही पढा? 'जिस पत्थर को मिस्त्रियों ने बेकार समझकर फेंक दिया, वही कोने का गौरवशाली पत्थर हो गया। 11 यह परमेश्वर का कार्य है और यह हमारी दृष्टि मे आश्चर्यजनक है'।" 12 यहूदी अगुवों की इच्छा थी कि उस दृष्टान्त के कारण यीशु को उसी समय पकड़ें, क्योंकि वे जानते थे कि उनका संकेत उन्ही की तरफ है—वे ही उनकी कहानी के दुष्ट किसान थे। परन्तु वे भीड़ के भय से उनको छूने से डरते थे। तब उन्होंने यीशु को छोड़ दिया और चले गए।

13 परन्तु उन्होंने दूसरे धार्मिक और राजनैतिक अगुवों[1] को भेजा कि उसे फसाने के लिए बातें करें। 14 उन भेदियो ने कहा, "गुरुजी, हम जानते हैं कि आप सच बोलते हैं और किसी की परवाह नही करते। आप पर मनुष्यों की इच्छाओं और विचारो का प्रभाव नहीं पड़ता, परन्तु आप सच्चाई से परमेश्वर का मार्ग सिखाते हैं। अब हमें बताइए कि रोम (कैसर) को कर देना उचित है, या नहीं?" 15 यीशु ने उनकी चालाकी जानकर कहा, "मुझे एक सिक्का दिखाओ और मैं तुम्हें बताऊंगा।" 16 जब उन्होंने सिक्का उनके हाथ मे दिया तो यीशु ने पूछा, "इस सिक्के पर किसकी छाप और किसका नाम है?" उन्होंने उत्तर दिया, "सम्राट का"। 17 यीशु ने कहा, "ठीक है, यदि यह उसका है, तो उसी को दो। परन्तु जो कुछ परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दिया जाना चाहिए।" उनके उत्तर से वे अचम्भे में पड़कर अपने सिर खुजाने लगे।

18 तब सदूकी जो कहते हैं कि मरे हुओं मे से फिर जी उठना नही है, सामने आए। उनका प्रश्न था: 19 "गुरुजी, मूसा ने हमें व्यवस्था दी कि जब कोई पुरुष बिना सन्तान के मर जाए, तब उसकी विधवा से उस पुरुष का भाई विवाह करे और सन्तान उत्पन्न कर अपने भाई का नाम चलाए। 20, 21, 22 सात भाई थे। सबसे बड़े ने विवाह किया और मर गया। उसके कोई सन्तान न हुई। तब दूसरे भाई ने उसकी विधवा से विवाह किया वह भी बिना सन्तान के शीघ्र ही मर गया तब अगले भाई ने उससे विवाह किया, वह भी बिना सन्तान मर गया। इस प्रकार सबने किया और निसन्तान मर गए, अन्त मे वह स्त्री भी मर गई। 23 अब हम यह जानना चाहते हैं: कि जी उठने के समय वह किसकी पत्नी होगी।"

24 यीशु ने उत्तर दिया, "तुम्हारी कठिनाई यह है कि तुम धर्मशास्त्र को और परमेश्वर की सामर्थ को भी नही जानते हो। 25 क्योंकि जब ये सातों भाई और स्त्री मरे हुओं मे से जी उठेंगे, तब उनमें विवाह नही होगा—वे स्वर्ग-दूतों के समान होंगे। 26 परन्तु इसके विषय में कि पुनरुत्थान होगा या नहीं—क्या तुमने निर्गमन की पुस्तक मे मूसा और जलती हुई झाड़ी के विषय मे कभी नहीं पढा? परमेश्वर

[1] मूलत "फरीसियो और हेरोदियो।"

ने मूसा से कहा, "मैं इब्राहीम का परमेश्वर हूं।" 27 परमेश्वर मूसा से यह कह रहा था कि वे मनुष्य, यद्यपि कई वर्षों पहले मर गए, तौभी जीवित थे क्योंकि मृतकों के विषय में परमेश्वर ने यह कभी नहीं कहा, मैं उनका परमेश्वर हूं। तुमने भारी भूल की है।"

28 वहां खड़े होकर उनका विवाद सुनते हुए एक धर्मगुरु ने जान लिया कि यीशु ने अच्छा उत्तर दिया है। इसलिए उसने पूछा, "सब आज्ञाओं में सबसे प्रमुख कौन सी आज्ञा है?" 29 यीशु ने उत्तर दिया, "यही सबसे प्रमुख है, "हे इस्राएल, सुन। प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही परमेश्वर है। 30 तू अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय और प्राण और मन और शक्ति से प्रेम रख। 31 दूसरी यह है: तू जितना अपने आप से प्रेम रखता है उतना ही दूसरों से प्रेम रख। इनसे बढ़कर और कोई दूसरी आज्ञाएं नहीं।" 32 धर्मगुरु ने उत्तर दिया, "महोदय, आपने यह कहकर सच कहा है कि केवल एक ही परमेश्वर है और कोई दूसरा नहीं। 33 मैं जानता हूं कि मन्दिर की वेदी पर सब प्रकार के बलिदान चढ़ाने की अपेक्षा, परमेश्वर को अपने सारे हृदय और समझ और शक्ति के साथ प्रेम करना, और अपने समान दूसरों को प्रेम करना कहीं अधिक महत्व का है।" 34 इस मनुष्य की समझदारी के उत्तर को सुनकर यीशु ने उससे कहा, "तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं है।" इसके पश्चात किसी ने और प्रश्न पूछने का साहस न किया। 35 कुछ समय बाद, जब यीशु मन्दिर में लोगों को सिखा रहे थे, तब उन्होंने यह प्रश्न किया: "धर्मगुरु क्यों यह दावा करते हैं कि मसीह को राजा दाऊद की संतान होना चाहिए? 36 क्योंकि दाऊद ने स्वयं कहा—और पवित्र आत्मा उसके द्वारा बोल रहा था जब उसने यह कहा—"परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा, 'मेरे दाहिने बैठ जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पैर रखने की चौकी न बना दूं।' 37 जब दाऊद ने उसे अपना प्रभु कहा, तो फिर वह उसका पुत्र कैसे हो सकता है?" (इस प्रकार के तर्क सुनकर भीड़ के लोगों को बड़ा आनन्द आता था और वे बड़ी रुचि के साथ उनकी सुनते थे।) 38 इस समय दी गई उनकी शिक्षाओं में से कुछ इस प्रकार हैं: "धर्मगुरुओं से सावधान रहो। क्योंकि वे पसन्द करते हैं कि अपने धन और विद्या को दिखाने के लिए लम्बा चोगा पहनें, बाज़ार में सब उनको नमस्कार करें। 39 आराधनालयों के मुख्य स्थानों में और भोज के समय आदर के स्थानों में बैठना उन्हें प्रिय है—40 परन्तु वे निर्लज्जता के साथ विधवाओं को धोखा देते हैं, और तब अपना असली रूप छिपाने के लिए लोगों के सामने लम्बी प्रार्थनाएं कर धर्मी होने का ढोंग करते हैं। इसलिए, उनका दण्ड कहीं बढ़कर होगा।" 41 तब वह मन्दिर में दान पेटियों के पास गए। वहां उन्होंने लोगों को उसमें पैसे डालते देखा। कुछ धनी लोगों ने बहुत डाला। 42 तब एक गरीब विधवा ने आकर दो पैसे डाले। 43, 44 यीशु ने अपने शिष्यों को पास बुलाकर कहा, "उस गरीब विधवा ने इन सब धनवानों के दान से बढ़कर डाला है। क्योंकि उन्होंने अपने धन की बहुतायत में से बहुत थोड़ा डाला है पर उसने जो उसके पास था सब डाल दिया।"

13

1 उस दिन जब यीशु मन्दिर में से जा रहे थे, तब उनके शिष्यों में से एक ने कहा, "गुरुजी, ये भवन कितने सुन्दर हैं। देखिए, पत्थरों पर कितनी सुन्दर कारीगरी की गई है।" 2 यीशु ने उत्तर दिया, "हां देखो। यह सब ढह जाएगा, और यहां खण्डर के सिवा पत्थर पर पत्थर भी न रहेगा।"

3, 4 जब वह यरूशलेम की घाटी की दूसरी ओर जैतून पहाड़ की ढाल पर बैठे थे तो पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास ने यीशु को अलग ले जाकर उनसे पूछा, "मन्दिर के विषय में ये सब घटनाएं कब पूरी होंगी? क्या उसके होने से पहले कोई चितावनी दी जाएगी।" 5 तब यीशु ने

उन्हें विस्तारपूर्वक उत्तर देना शुरु किया। उन्होंने कहा, "किसी के धोखे मे न आना, 6 क्योंकि अनेक लोग अपने को मसीह कहेंगे, और बहुतों को भटका देंगे। 7 सब ओर युद्ध छिड़ जाएगा, परन्तु यह अन्तिम समय का चिन्ह नहीं होगा। 8 क्योंकि जाति जाति और राज्य राज्य एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध छेड़ देंगे, अनेक देशों में भूकम्प आएंगे और अकाल पड़ेंगे। ये चिन्ह तो केवल आनेवाले क्लेश का आरम्भ होंगे।

9 "परन्तु जब ये घटनाएं होने लगें, तब सावधान रहना। क्योंकि तुम बड़े खतरे मे रहोगे। तुम्हें घसीट कर अदालतों में ले जाया जाएगा। आराधनालयों मे पीटा जाएगा, अधिकारियों और राजाओ के सामने मेरे शिष्य होने के कारण दोष लगाया जाएगा। तुम्हारे लिये उनको सुसमाचार सुनाने का यह अवसर होगा। 10 इससे पहले कि अन्त समय[1] वास्तव मे आ जाए, अवश्य है कि सुसमाचार का प्रचार पहले सब जातियो में किया जाए। 11 परन्तु जब तुम पकड़वाए जाओ और मुकद्दमों मे खड़े किए जाओ, तो अपने बचाव मे क्या कहोगे इसकी चिन्ता न करना। तब बोलने वाले तुम नही होगे, परन्तु पवित्र आत्मा होगा। 12 भाई, भाई से विश्वासघात करेगा कि उसे मरवा डाले, पिता अपनी ही सन्तान से विश्वासघात करेंगे, और बच्चे अपने माता पिता का विश्वासघात करेंगे कि उन्हे मरवा डालें। 13 मेरे होने के कारण सब तुम से घृणा करेंगे। परन्तु जितने मुझे त्यागे बिना अन्त तक धीरज धरेंगे उन्ही का उद्धार होगा।

14 "जब तुम उस घृणित वस्तु को मन्दिर[2] में खड़े देखो—तो पाठकगण, ध्यान दो—भाग सको तो यहूदिया के पहाडों पर भाग जाओ। 15, 16 जल्दी करो। यदि तुम अपने घर की अटारी पर हो, तो अपने घर मे भी वापिस न जाओ। यदि तुम बाहर खेतो मे हो, तो अपना रुपया या वस्त्र लेने के लिए भी न लौटो। 17 "उन दिनों मे गर्भवती स्त्रियों और अपने बच्चों को दूध पिलाती हुई माताओ के लिए हाय। 18 प्रार्थना करो कि तुम्हें ठंड की ऋतु में न भागना पड़े। 19 क्योंकि वे इतने भयानक दिन होगे जितने परमेश्वर की सृष्टि के आरम्भ से कभी नही हुए, न ही फिर कभी होंगे। 20 यदि प्रभु कष्ट के उस समय को कम न करे, तो ससार मे एक भी प्राणी जीवित नही बचेगा। परन्तु अपने चुने हुओ के कारण वह उन दिनो को कम करेगा। 21 तब यदि कोई तुम्हे बताए, 'यह मसीह है', या, 'वह है', तो ध्यान मत देना।"

22 "क्योंकि अनेक झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठेंगे। जो विचित्र आश्चर्यकर्म करेंगे, जिनसे यदि सम्भव हो तो परमेश्वर के चुने हुए लोग[3] भी धोखा खाएगे। 23 सावधान, मैंने तुम्हे चेतावनी दे दी है।"

24 "जब क्लेश समाप्त हो जाएगा, तब सूर्य धुधला पड जाएगा और चन्द्रमा प्रकाश नही देगा। 25 और तारे गिर पड़ेंगे—आकाश बड़े वेग से हिलाया जाएगा। 26 तब सारी मानवजाति मुझ, मसीह[4] को, बडी सामर्थ और महिमा के साथ बादलो पर आते देखेगी।

27 "और मैं स्वर्गदूतो को भेजूगा कि सारे संसार से—पृथ्वी और आकाश की छोर से मेरे चुने हुओ को एक साथ एकत्र करें।"

28 "अंजीर के वृक्ष का यहा एक उदाहरण है। जब उसकी डालिया कोमल हो जाती और उनके पत्ते निकलने लगते हैं, तब तुम जान लेते हो कि बसन्त ऋतु आ पहुची है। 29 इसी प्रकार जब तुम इन चिन्हों को पूरा होते देखो जिनका वर्णन मैंने किया है, तब निश्चय जान लेना कि मेरा आना अत्यन्त निकट है, वरन मैं ठीक द्वार पर ही हूं। 30 हा, ये ही घटनाएं युग[5] के अन्त का चिन्ह होगी। 31 आकाश

[1] यही आशय है। [2] मूलतः "जहा उचित नही वहा खडी देखो।" [3] मूलत "चुने हुओ।" [4] मूलत "मनुष्य का पुत्र।" [5] मूलत "यह लोग।"

और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें सदा तक सच बनी रहेंगी। 32 तौभी उस दिन और घंटे को, जब ये बातें होंगी, कोई नही जानता, न स्वर्गदूत, न ही मैं[6], केवल पिता ही जानता है। 33 और इसलिए कि तुम नही जानते कि यह कब होगा, सो जागृत रहो। (मेरे आने के लिए[7]) सावधान रहो। 34 मेरे आने की तुलना उस व्यक्ति से की जा सकती है जो दूसरे देश की यात्रा पर गया। उसने अपने नौकरों को उनका काम बाट दिया कि जब वह चला जाए तब वे उसे करें और चौकीदार से उसने कहा कि उसके लौटने की बाट जोहे। 35, 36, 37 देखते रहना। क्योकि तुम नही जानते कि मैं[7] कब वापिस लौटूंगा, शाम को, रात्रि को, सूर्य उदय होने से पहले या दिन निकलने पर। जब मैं आऊं तब तुम्हे सोते न पाऊ। मेरे आने का रास्ता देखते रहो। तुम्हारे लिए तथा दूसरो के लिए मेरा यही सदेश है।"

14 1 दो दिनो के बाद फसह का पर्व आरम्भ होने पर था—यह यहूदियो का वार्षिक तेवहार था, जिसमें खमीर से बनी हुई कोई भी रोटी नही खाई जाती थी। महायाजक और दूसरे यहूदी अगुवे भी ऐसे अवसर की तलाश मे थे कि यीशु को गुप्त रीति से पकड़ें और मरवा डालें। 2 वे कहते थे, "परन्तु हम फसह के समय ऐसा नही कर सकते, नही तो दगा हो जाएगा।"

3 इसी बीच यीशु बैतनिय्याह मे, शमौन कोढी के घर पर थे। भोजन के समय एक स्त्री बहुमूल्य इत्र की एक सुन्दर बोतल लेकर आई। तब उसका ढक्कन तोडकर उसने इत्र को यीशु के सिर पर उंडेला। 4, 5 भोजन पर बैठे हुए लोगो को इस "बर्बादी" पर, जैसा वह कहते थे, बडा क्रोध आया। उन्होने दांत पीसकर कहा, "वह उस इत्र को भारी दाम मे बेचकर गरीबों को पैसा बांट सकती थी।" 6 परन्तु यीशु ने कहा, "उसे छोड़ दो; भला काम करने के कारण उसे क्यों सताते हो? 7 तुम्हारे मध्य ग़रीब सदा रहते हैं। उन्हे तुम्हारी सहायता की बड़ी आवश्यकता रहती है, और तुम जब चाहो उनकी सहायता कर सकते हो; परन्तु मैं यहां अधिक समय तक नहीं रहूंगा। 8 वह जो कर सकती थी उसने किया है। उसने मेरे गाडे जाने के समय से पहले मेरे शरीर पर इत्र डाला है। 9 मैं तुम्हें बडी गम्भीरता के साथ यह सत्य बताता हू, कि "जहां कही सारे संसार मे सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, स्त्री के इस कार्य का स्मरण किया जाएगा और उसकी बडाई होगी।"

10 तब उनके शिष्यो मे से एक, यहूदा इस्करियोति, महायाजको के पास गया कि यीशु को उनके हाथ पकडवाने का प्रबन्ध करे। 11 जब महायाजकों ने सुना कि वह क्यों आया है, तो बडे उत्तेजित और आनन्दित हुए। उन्होंने उसे रुपये देने की प्रतिज्ञा दी। उस समय से वह उचित समय और स्थान की ताक मे लग गया कि कब यीशु को पकडवा दे।

12 फसह के पहले दिन, जिस दिन मेम्ने बलिदान किए जाते थे, उनके शिष्यो ने यीशु से पूछा कि वह प्रथा के अनुसार फसह का भोजन करने के लिए कहां जाना चाहते हैं। 13 उन्होंने दो शिष्यो को यरूशलेम मे तैयारी करने के लिए भेजा। उन्होंने उनसे कहा, "तुम एक व्यक्ति को जल का घडा लिए हुए अपनी ओर आते देखोगे। उसके पीछे जाना। 14 वह जिस घर मे प्रवेश करे, उसके स्वामी से कहना, "हमारे मालिक ने हमे वह कमरा देखने के लिए भेजा है, जिसे आपने हमारे लिए तैयार किया है। हम आज शाम फसह का भोजन वहीं करेंगे। 15 वह तुम्हे एक सजी सजाई अटारी पर ले जाएगा। वही हमारा भोजन तैयार करना।" 16 तब दोनो शिष्य उनसे पहले शहर पहुंचे और जैसा यीशु ने कहा था वैसा ही पाया।

---

[6] मूलत "पुत्र।" [7] मूलत "तुम नही जानते कि घर का स्वामी कब आएगा।

उन्होंने फसह तैयार किया।"

17 शाम को यीशु दूसरे शिष्यों के साथ वहां पहुंचे। 18 जब वे भोजन कर रहे थे, यीशु ने कहा, "मैं गम्भीरता से कहता हूं कि तुममें से एक जो यहां मेरे साथ भोजन कर रहा है, मुझे पकड़वाएगा।" 19 उन पर गहरी उदासी छा गई और उन्होंने एक एक कर यीशु से पूछा, "क्या वह मैं हूं?" 20 यीशु ने उत्तर दिया, "वह तुम बारहों में से एक है जो अभी मेरे साथ भोजन कर रहा है। 21 मुझे मरना है; जैसा बहुत समय पहले भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था; परन्तु जिसके द्वारा मैं पकड़वाया जाऊंगा उस व्यक्ति पर आनेवाली पीड़ा के कारण हाय। काश उसने जन्म ही न लिया होता।"

22 जब वे भोजन कर रहे थे, तब यीशु ने रोटी ली। उस पर परमेश्वर की आशिष मांगी और तोड़कर शिष्यों को दी और कहा, "इसे खाओ—यह मेरी देह है।" 23 तब यीशु ने दाखरस का प्याला उठाया। उसके लिए भी परमेश्वर को धन्यवाद दिया और शिष्यों को दिया; उन सबने उसमें से पिया। 24 यीशु ने उनसे कहा, "यह मेरा लोहू है, जो बहुतों के लिए बहाया जाता है, जिससे परमेश्वर और मनुष्यों के मध्य नए समझौते पर मोहर[1] लगाई जाती है। 25 मैं गम्भीरता से कहता हूं कि मैं उस दिन तक फिर कभी दाखरस नहीं पीऊंगा जब तक परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊं।"

26 तब उन्होंने एक गीत गाया और बाहर जैतून पहाड़ पर चले गए।

27 यीशु ने उनसे कहा, "तुम सब मुझे छोड़ दोगे, क्योंकि परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा है, 'मैं चरवाहे को मारूंगा, और भेड़ें तितर बितर हो जाएंगी।' 28 परन्तु मैं फिर जी उठने के बाद गलील को जाऊंगा और वहां तुमसे मिलूंगा।" 29 पतरस ने उनसे कहा, "चाहे दूसरे शिष्य कुछ भी करें परन्तु मैं आपको कभी नहीं छोड़ूंगा।" 30 यीशु ने कहा, "पतरस, कल सुबह इससे पहले कि मुर्गा दूसरी बांग दे तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।" 31 पतरस ने और भी जोर देकर कहा, "नहीं, कभी नहीं, यदि मुझे आपके साथ मरना भी पड़े, मैं कभी आपका इन्कार नहीं करूंगा।" दूसरे सब शिष्यों ने भी ऐसी ही शपथ ली।

32 फिर वे जैतून के बगीचे में आए जो गतसमने का बगीचा कहलाता है। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "यहां बैठे रहो, जब तक मैं जाकर प्रार्थना करता हूं।" 33 उन्होंने पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ लिया और बड़े दुख से व्याकुल हुए। 34 उन्होंने उनसे कहा, "मेरा प्राण वेदना से इतना भरा है जैसे मैं मरने पर हूं; यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।" 35 वह कुछ दूरी पर गए और जमीन पर गिरकर उन्होंने प्रार्थना की कि यदि हो सके तो उन पर आनेवाली वह भयानक घड़ी कभी न आए[2]। 36 यीशु ने कहा, "हे पिता, हे पिता, आपसे सब कुछ हो सकता है। यह प्याला मुझ से दूर कर दीजिए। तो भी मैं आपकी इच्छा चाहता हूं, अपनी नहीं।" 37 तब वह तीनों शिष्यों के पास लौटे और उन्हें सोते पाया। यीशु ने कहा, "शमौन। सोते हो? क्या एक घन्टे भी मेरे साथ जाग नहीं सके? 38 मेरे साथ जागते रहो और प्रार्थना करो कहीं परीक्षा में न फंस जाओ। क्योंकि यद्यपि आत्मा की तो इच्छा है, परन्तु शरीर दुर्बल है।" 39 तब वह फिर चले गए। उन्होंने फिर उन्हीं शब्दों में प्रार्थना की। 40 वह फिर उनके पास वापिस लौटे और उन्हें सोते पाया, क्योंकि वे बहुत थके थे। उन्हें मालूम नहीं था कि क्या कहें। 41 तीसरी बार जब यीशु उनके पास लौटे तो उन्होंने कहा, "सोते रहो; आराम करो। परन्तु नहीं। सोने का समय खतम हो गया है। देखो! दुष्ट लोगों के हाथों में पकड़वाया

[1] मूलतः "यह वाचा का मेरा वह लोहू है।" कुछ प्राचीन हस्तलेखों में, "नई वाचा" लिखा है। [2] मूलतः "यह घड़ी मुझ पर से टल जाए।"

जाता हू। 42 आओ। उठो। हमें जाना चाहिए देखो! मेरा पकड़वाने वाला यहाँ है।"

43 उसी क्षण, जब वह बोल रहे थे यहूदा (उनके शिष्यों मे से एक) भीड के साथ आ पहुचा। वे सब तलवारें और भाले लिए हुए थे। महायाजकों और दूसरे यहूदी अगुवों ने उन्हे भेजा था। 44 यहूदा ने उन्हे बताया था, "जिसे मैं जाकर चूम लूंगा उसे तुम पकड़ लेना। पहचानने का सरल उपाय यही है। 45 जैसे ही वे वहा पहुचे यहूदा यीशु के पास आया। उसने कहा, 'गुरु!' और बडे मित्र भाव मे उनको गले लगाया और चूमा। 46 तब भीड ने यीशु को पकड लिया। 47 परन्तु किसी[3] ने तलवार खीची और महायाजक के नौकर पर चलाकर उसका कान काट दिया। 48 यीशु ने उनसे पूछा, "क्या मै कोई खतरनाक डाकू हूँ, जो तुम इस प्रकार तलवारें और लाठियाँ लिए हुए मुझे पकडने आए हो? 49 तुमने मुझे मन्दिर मे क्यो नही पकडा? मैं वहाँ प्रति दिन शिक्षा देता था परन्तु ये बातें इसलिए हो रही हैं कि मेरे विषय मे लिखी गई भविष्यद्वाणिया पूरी हो।" 50 इस बीच, उनके सब शिष्य भाग गए थे।

51, 52 तौभी, वहाँ एक जवान दूर से पीछे आ रहा था। वह चादर ओढे हुए था। जब भीड ने उसे भी झपटकर पकडने की कोशिश की तो वह भाग गया, यद्यपि भागते समय उसकी चादर छूट गई परन्तु वह नगा ही भाग गया।

53 यीशु को महायाजक के घर ले जाया गया जहाँ सब प्रमुख याजक और दूसरे यहूदी अगुवे इकट्ठे हुए। 54 पतरस दूर ही दूर यीशु के पीछे हो लिया और चुपके से महायाजक के घर के आगन मे घुस गया और प्यादों के बीच मे बैठकर आग तापने लगा। 55 अन्दर, महायाजक और यहूदियो के सर्वोच्च न्यायालय के सदस्य यीशु के विरोध मे ऐसा कारण ढूंढने की कोशिश कर रहे थे जिससे उनको मृत्यु दण्ड दे सकें। परन्तु उनकी कोशिश बेकार थी। 56 अनेक झूठे गवाह खडे हुए, परन्तु उनकी गवाही एक दूसरे से मिलती न थी। 57 अन्त मे कुछ मनुष्य उनके विषय मे झूठी साक्षी देने के लिए खड़े हुए। उन्होने कहा, 58 "हमने उसे यह कहते हुए सुना है, मैं मनुष्यो के हाथ से बने हुए इस मन्दिर को ढा दूंगा और तीन दिन मे दूसरा बनाऊँगा जो मनुष्यों के हाथ का बना नही होगा।" 59 परन्तु इस पर भी उनकी गवाही एक दूसरे से न मिली। 60 तब न्यायालय के सामने महायाजक खडा हुआ और उसने यीशु से पूछा, "क्या तू कुछ उत्तर नही देता? तुझे अपने बचाव मे क्या कहना है?" 61 इसका यीशु ने कोई उत्तर न दिया। तब महायाजक ने उनसे पूछा, "क्या तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है?" 62 यीशु ने कहा, "मैं हूँ, और तुम मुझे[4] परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठे, और आकाश के बादलो के साथ संसार मे लौटते देखोगे।" 63, 64 तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाडे और कहा, "अब हमे और क्या चाहिए? अब गवाहो के लिए क्यो रुका जाए? तुमने उसको परमेश्वर की निन्दा करते सुना है। तुम्हारा निर्णय क्या है?" तब सब प्राणदण्ड देने के लिए एक मत हो गए। 65 तब उनमे से कई यीशु पर थूकने लगे। उन्होंने उनकी आखों पर पट्टी बाँधी और उनके मुख पर मुक्के मारने लगे। उन्होने ताना कसते हुए कहा, "हे भविष्यद्वक्ता, इस बार किसने तुझे मारा?" यहां तक कि प्यादों ने भी उनको ले जाते समय थप्पड मारे।

66, 67 इस समय पतरस नीचे आगन मे था। महायाजक की एक नौकरानी ने बडे ध्यान से पतरस को आग तापते देखा तब कहा, "तू भी यीशु नासरी के साथ था?" 68 पतरस ने इन्कार किया। उसने कहा, "मैं नही जानता तू क्या बात कर रही है।" और बाहर आगन की डेवढी मे खडा हो गया। ठीक उसी समय, एक मुर्गे ने बाग[5] दी। 69 नौकरानी ने उसे वहा खडे

[3] वह पतरस था। यूहन्ना 18 10 [4] मनुष्य का पुत्र। [5] यह कथन केवल कुछ ही हस्तलेखों मे है।

देखा और वह दूसरो को बताने लगी, "वह जो वहा खड़ा है यीशु के चेलो में से एक है।" 70 पतरस ने फिर इन्कार किया। कुछ समय बाद आग के पास खड़े दूसरों ने पतरस से कहना शुरु किया, "तू भी, उनमें से एक है, क्योकि तू गलीली है।" 71 वह श्राप देने और शपथ खाने लगा। उसने कहा, "मैं तो उसे जानता तक नही ('तुम जिसकी बात कर रहे हो।') 72 और तुरन्त मुर्गे ने दूसरी बार बांग दी। यीशु के शब्द पतरस को याद आए : "इससे पहले कि मुर्गा दो बार बाँग दे, तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।" और वह इस बात को सोच कर रोने लगा।

15 1 भोर होते ही महायाजक, प्राचीन और धर्मगुरु-पूरा सर्वोच्च न्यायालय विचार करने के लिए इकट्ठे हुए कि अगला क़दम क्या उठाया जाए। उन्होंने निर्णय किया कि यीशु को पहरे में रोमी राज्यपाल,[1] पीलातुस के पास भेज दिया जाए। 2 पीलातुस ने उनसे पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?" यीशु ने उत्तर दिया, "तू आप ही कह रहा है।" 3, 4 तब महायाजकों ने यीशु पर बहुत से अपराधो का दोष लगाया। पीलातुस ने उनसे फिर पूछा, "तू कुछ कहता क्यो नहीं? ये तेरे विरुद्ध क्या क्या कह रहे हैं?" 5 परन्तु यीशु ने कुछ उत्तर नहीं दिया, इससे पीलातुस को बड़ा आश्चर्य हुआ।

6 पीलातुस की यह प्रथा थी कि प्रति वर्ष फसह के समय एक यहूदी क़ैदी को जिसकी मांग लोग करें रिहा कर देता था, 7 उस समय के क़ैदियो मे बरअब्बा नाम का एक व्यक्ति था, जो राजद्रोह के समय दूसरो के साथ हत्या का अपराधी ठहराया गया था। 8 अब एक भीड़ पीलातुस की ओर बढने लगी, और उससे सदैव के समान एक क़ैदी के छुटकारे की माग करने लगी। 9 पीलातुस ने पूछा, "यदि मैं 'यहूदियों के राजा' को तुम्हें दे दूँ तो कैसा हो? क्या उसी को तुम रिहा करना चाहते हो?" 10 (क्योकि उन्होने अब तक समझ लिया था कि यह उनकी चाल है जिसके पीछे महायाजको का हाथ है क्योकि वे यीशु के लोकप्रिय होने के कारण उनसे जलते थे।) 11 परन्तु इस बात पर महायाजकों ने भीड़ को उसकाया कि यीशु के बदले बरअब्बा को छोड़ देने की माग करें। 12 पीलातुस ने लोगों से पूछा, "परन्तु यदि मैं बरअब्बा को छोड़ दूँ तो इस मनुष्य के साथ जिसे तुम अपना राजा कहते हो, क्या करूं?" 13 उन्होंने चिल्लाकर कहा, "उसे क्रूस पर चढाओ।" 14 पीलातुस ने प्रश्न किया, "परन्तु क्यो? उसने क्या अपराध किया है?" परन्तु वे और भी अधिक जोर से चिल्लाते रहे, "उसे क्रूस पर चढाओ।" 15 तब पीलातुस ने उपद्रव के भय से और लोगों को प्रसन्न करने की इच्छा से उनके लिए बरअब्बा को छोड़ दिया। उसने आज्ञा दी कि यीशु को कोड़े मारे जाएं, और उन को क्रूस पर चढाने के लिए सौंप दिया। 16, 17 तब रोमी सिपाही यीशु को महल के भीतर आँगन मे ले गए। उन्होने महल के सब पहरेदारो को बुलाकर, यीशु को बेंजनी चोगा पहनाया, और लम्बे, नुकीले काँटो का एक मुकुट गूथकर यीशु के सिर पर रखा। 18 तब उन्होंने चिल्लाते हुए सलामी दी, "हे यहूदियों के राजा नमस्कार।" 19 उन्होने बेंत से उनके सिर पर मारा, उन पर थूका और उनको "प्रणाम" करने के लिए घुटने टेके। 20 अन्त मे जब वे अपने तमाशे से थक गए, तो उन्होने बेंजनी चोगा उतार दिया और यीशु के वस्त्र उन्हें फिर से पहनाये। तब वे उनको क्रूस पर चढाने के लिए बाहर ले गए।

21 उसी समय कुरेन का निवासी शमौन अपने गाव से आ रहा था लोगो ने उसे विवश किया कि यीशु का क्रूस उठाकर ले चले (शमौन सिकन्दर और रूफुस का पिता था।) 22 वे यीशु को गुलगुता नामक एक स्थान पर ले गए। (गुलगुता का अर्थ खोपड़ी है।) 23 वहां उनको कडवी

[1] यही आशय है।

जड़ी बूटी मिला हुआ दाखरस पीने के लिए दिया गया, परन्तु उन्होंने पीने से इन्कार कर दिया। 24 तब उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया और उनके वस्त्र के लिए चिट्ठी डाली। 25 क्रूस पर चढ़ाते समय सुबह के नौ बजे थे। 26 उनके क्रूस के ऊपर एक सूचना पत्र लगाकर उनका दोष बताया गया था उसमे लिखा था, "यहूदियों का राजा।" 27 उस दिन सवेरे दो डाकू भी क्रूस पर लटकाए गए थे, उनके क्रूस यीशु के दोनों ओर थे। 28[2] धर्मशास्त्र का यह वचन पूरा हुआ, "वह दुष्टों के साथ गिना गया।" 29, 30 रास्ता चलते लोग उन पर हंसते, और ठट्ठों मे सिर हिलाते थे। वे चिल्लाकर कहते थे, "वाह। अब इसको देखो। क्या सच है कि मन्दिर को ढाकर तू तीन दिन में बना सकता है। यदि इतना कर सकता है, तो अपने को बचा ले और क्रूस से उतर आ।" 31 महायाजक और धार्मिक अगुए भी पास खड़े होकर यीशु का मज़ाक उड़ाते थे। उन्होंने कहा, "दूसरों को 'बचाने' मे तो वह बड़ा चतुर है, परन्तु वह स्वयं को नही बचा सकता।" 32 उन्होंने चिल्लाकर उनसे कहा, "अरे ओ, मसीह। हे 'इस्राएल के राजा'। क्रूस से नीचे उतर आ और हम देखकर विश्वास करेंगे।" और यहाँ तक कि यीशु के साथ मरते हुए दोनों डाकुओ ने भी उनकी निन्दा की। 33 बारह बजे के करीब, पूरे देश[3] भर मे अंधकार छा गया, जो उस दिन तीन बजे दोपहर तक रहा। 34 तब यीशु ने बड़ी जोर से पुकार कर कहा, "इलोई, इलोई, लमा शबक्तनी ?"[4] ("हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यो छोड़ दिया ?") 35 पास खड़े कुछ लोगो ने सोचा कि वह एलिय्याह भविष्यद्वक्ता को पुकार रहे हैं। 36 तब एक मनुष्य दौड़ा। उसने स्पंज को सिरके में डुबोया और एक छड़ी पर लगाकर यीशु को दिया। उसने कहा, "चलो देखें कि एलिय्याह आकर उसे नीचे उतारता है या नही।" 37 तब यीशु ने फिर बड़ी जोर से चिल्लाकर अपना प्राण छोड़ दिया। 38 और मन्दिर का परदा[5] ऊपर से नीचे तक दो टुकड़ो में फट गया। 39 यीशु के क्रूस के पास खड़े रोमी अफसर ने देखा कि उसने किस प्रकार अपना प्राण त्यागा, तो कहा, "निश्चय ही, यह परमेश्वर का पुत्र था।" 40 दूर खड़ी हुई भीड़ मे—मरियम मगदलीनी, मरियम (छोटे याकूब और योसेस की माता), शलोमी, और कई दूसरी स्त्रियाँ थी। 41 वे और गलील की कई दूसरी स्त्रियाँ उनकी शिष्या थी। उन्होंने गलील मे यीशु की सेवाटहल की थी। वे भी उनके साथ यरुशलेम आयी थीं।

42, 43 यह सब सब्त के एक दिन पहले हुआ। शाम को अरिमतिया का रहने वाला यूसुफ यहूदियों के सर्वोच्च न्यायालय का एक आदरणीय सदस्य (जो स्वयं परमेश्वर के राज्य के आने की प्रतीक्षा बड़ी उत्सुकता के साथ कर रहा था), साहस करके पीलातुस के पास गया और उसने यीशु के शव को माँगा। 44 पीलातुस विश्वास ही न कर सका कि यीशु इतने शीघ्र मर गए। तब उसने पहरे पर लगे अफसर को बुलाकर उससे पूछा कि *क्या यीशु को मरे देर हो गई ?* 45 अफसर ने उस बात को सच *बताया। तब* पीलातुस ने यूसुफ से कहा कि वह *शव ले सकता* है। 46 यूसुफ ने मलमल की लम्बी चादर मोल ली और यीशु का शव क्रूस से उतारकर, उसे उस कपड़े मे लपेटा। उसने उनके शव को चट्टान

---

[2] पद 28 कई प्राचीन हस्तलेखो मे छोड़ दिया गया है। उद्धरण यशायाह 53 12 का है। [3] अथवा, "पूरे संसार मे।" [4] यीशु ने अरामी भाषा का प्रयोग किया। दर्शक गणो ने जो यूनानी और लतीनी भाषी थे, उनके प्रथम दो शब्दों ("इलोई, इलोई",) को गलत समझा और सोचा कि वह एलिय्याह भविष्यद्वक्ता को पुकार रहे हैं। [5] मन्दिर मे 'परमपवित्र स्थान' कहे जाने वाले कमरे के सामने एक भारी पर्दा टंगा था। वह परमपवित्र स्थान परमेश्वर ने स्वयं के लिए नियुक्त किया था, पर्दा उसको पापी मानव जाति से अलग करता था। अब वह पर्दा ऊपर से नीचे फट गया यह दर्शाते हुए कि मानव के पाप के लिए, मसीह की मृत्यु ने पवित्र परमेश्वर तक पहुंचने की बाधा दूर कर दी।

में खोदी गई एक कब्र में रखा, और उसमें प्रवेश के स्थान पर एक पत्थर लुढ़का दिया। 47 मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम देख रही थीं कि यीशु को कहां रखा गया है।

16 1 जब सब्त का दिन समाप्त हो गया, मरियम मगदलीनी, सलोमी और याकूब की माता मरियम ने जाकर शव को सुरक्षित रखने के लिए सुगन्धित मसाले मोल लिए। 2 अगले दिन सबेरे, सूर्य उदय होते ही वे कब्र पर गईं। 3 मार्ग में वे विचार करती जाती थीं कि कब्र के द्वार पर से भारी पत्थर को वे कैसे हटा सकेंगी। 4 परन्तु जब वे पहुंचीं तो उन्होंने देखा कि पत्थर—जो बड़ा भारी था—पहले ही लुढ़का हुआ है। 5 तब वे कब्र के अन्दर घुसीं और वहां उन्होंने एक जवान को दाहिनी ओर श्वेत वस्त्र पहने बैठे देखा। स्त्रियां आश्चर्य में पड़ गईं, 6 परन्तु स्वर्गदूत ने कहा, "आश्चर्य मत करो। क्या तुम यीशु नासरी को खोज रही हो, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था। वह यहां नहीं है। वह फिर जी उठे हैं। देखो, उनका शव इसी स्थान पर रखा था। 7 अब जाओ और उनके शिष्यों और पतरस को भी यह संदेश सुनाओ: यीशु तुमसे पहले गलील को जा रहे हैं। तुम उनको वहां देखोगे, जैसा उन्होंने अपनी मृत्यु से पहले तुमसे कहा था।" 8 स्त्रियां कांपतीं और आश्चर्य करतीं कब्र से भाग गईं, वे इतनी डर गई थीं कि उनसे बातें करते नहीं बन पड़ता था।

9[1] रविवार को बड़े सबेरे यीशु फिर जी उठकर सबसे पहले मरियम मगदलीनी को दिखाई दिए। इसी स्त्री में से यीशु ने सात दुष्ट आत्माएं निकाली थीं। 10, 11 मरियम ने दुखी शिष्यों को बताया कि यीशु फिर जी उठे हैं और मैंने उनको देखा है परन्तु शिष्यों ने उसकी बातों का विश्वास नहीं किया।

12 कुछ समय बाद उसी दिन[2] यीशु दो व्यक्तियों को दिखाई दिए जो यरूशलेम से गांव जा रहे थे, परन्तु उन्होंने यीशु को नहीं पहचाना क्योंकि उनका रूप बदला हुआ था। 13 अन्त में जब उन्होंने यीशु को पहचाना, तो शीघ्र ही यरूशलेम को गए कि दूसरों को बताएं, परन्तु शिष्यों ने उनका भी विश्वास नहीं किया।

14 बाद में वह ग्यारह शिष्यों को जब वे भोजन करते हुए इकट्ठे थे दिखाई दिये। यीशु ने उनके अविश्वास के लिए उन्हें डांटा—क्योंकि उन्होंने हठ करके उनकी बातों पर विश्वास करने से इन्कार किया था जिन्होंने उन को मरे हुओं में से जी उठे हुए देखा था। 15 यीशु ने उनसे कहा, "तुम सारे संसार में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार का प्रचार करो। 16 जितने विश्वास करें और बपतिस्मा लें उन्हीं का उद्धार होगा। परन्तु जितने विश्वास करने से इन्कार करें वे दण्ड पाएंगे। 17 और जितने विश्वास करेंगे वे मेरे अधिकार का प्रयोग कर दुष्टात्माओं को निकालेंगे, और वे नई भाषाएं[3] बोलेंगे। 18 वे सांपों को बिना हानि के पकड़ लेंगे। यदि कोई जहरीली वस्तु पी जाएं; तो उनको उससे कुछ हानि न होगी। वे बीमारों पर अपने हाथ रखकर उनको चंगा कर सकेंगे।"

19 जब यीशु उनसे बातें कर चुके तो स्वर्ग पर उठा लिए गए और परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठ गए। 20 शिष्य सब जगह प्रचार करते गए, और प्रभु उनके साथ काम करते रहे। उनके संदेशों के साथ साथ जो आश्चर्यकर्म होते थे उनसे उनके वचनों की पुष्टि होती थी।

---

[1] पद 9-20 तक अधिकांश प्राचीन हस्तलेखों में नहीं मिलता, तौभी इसे परिशिष्ट समझा जा सकता है जिससे और अधिक तथ्यों की जानकारी मिलती है। [2] मूलतः "इसके बाद"। [3] मूलतः "नई नई भाषा बोलेंगे।" कुछ प्राचीन हस्तलिपि में "नई नई" शब्दों को छोड़ दिया गया है।

लूका रचित सुसमाचार

1 1, 2 परमेश्वर से प्रेम रखने वाले प्रिय मित्र,[1] *यीशु मसीह की जीवनी अब तक अनेक* लोगो ने लिखी है उससे सम्बन्धित घटनाओ का आंखों देखा हाल शिष्यों तथा सुसमाचार प्रचार करने वालों के द्वारा हम तक पहुचा है। 3 अतः मुझे उचित मालूम हुआ कि उन समस्त घटनाओं का वृत्तान्त आरम्भ से अन्त तक सावधानीपूर्वक जाचूं और क्रमवार तुम्हारे लिए पूरा विवरण लिखूं[2]। 4 ताकि जो शिक्षा तुम्हे मिली हैं उसकी सत्यता का तुम्हे दृढ निश्चय हो जाए।

5 *इस सत्य कथा का आरम्भ यहूदी पुरोहित* जकरयाह से होता है। उन दिनों हेरोदेस यहूदिया का राजा था। जकरयाह मन्दिर की सेवकाई करने वाले अबिय्याह के दल का सदस्य था। (उसकी पत्नी इलीशिबा ने भी उसी के समान यहूदियो के पुरोहित कुल मे जन्म लिया था। वे दोनो हारून के वंश के थे।) 6 जकरयाह और इलीशिबा दोनों ही धर्मी थे। वे परमेश्वर की आज्ञाओ और नियमों का सच्चाई से पालन करते थे। 7 परन्तु उनके कोई भी सन्तान न थी क्योंकि इलीशिबा बाझ थी और दोनों बहुत बूढे हो गए थे।

8, 9 एक दिन जकरयाह मन्दिर में सेवा कर रहा था क्योंकि उस सप्ताह उसके दल की बारी थी। उस दिन मन्दिर मे प्रवेश करके परमेश्वर के सामने धूप जलाने के लिए उसी के नाम पर चिट्ठी निकली थी।[3] 10 रीति के अनुसार धूप जलाने के समय अन्य लोग बाहर प्रार्थना कर रहे थे। 11, 12 जकरयाह मन्दिर *ही मे था कि अचानक धूप-वेदी की दाहिनी ओर* प्रभु का एक दूत उसे दिखाई दिया। जकरयाह घबरा गया और भयभीत हो गया। 13 स्वर्गदूत ने उससे कहा, "जकरयाह, तू मत डर। मैं तुझे *यह बताने आया हूं कि परमेश्वर ने तेरी प्रार्थना* सुनी है। तेरी पत्नी इलीशिबा से एक पुत्र उत्पन्न होगा। तू उसका नाम यूहन्ना रखना। 14 उसके जन्म से तुम दोनो को बडा आनन्द होगा। अन्य लोग भी तुम्हारे साथ आनन्दित होंगे। 15 क्योंकि वह प्रभु के महान लोगो मे मे एक होगा। वह दाखरस और मदिरा कभी नही पिएगा। वह अपनी माता के गर्भ मे ही पवित्र आत्मा से भरपूर होगा 16 वह बहुतेरे यहूदियो *को उनके प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा।* 17 उस मे प्राचीन काल के नबी एलिय्याह के समान आत्मा और सामर्थ होगी।[4] उसका आगमन मसीह से पूर्व होगा। वह लोगों को मसीह के आने के लिये तैयार करेगा। वह पितरो के मनों को लडके बालों की ओर और मनमानी करने वालो के मनों को धर्मियों की समझ पर *लगाएगा कि लोगों को मसीह के आगमन के लिए* तैयार करे।[5] 18 जकरयाह ने स्वर्ग दूत से कहा, "किन्तु यह तो असम्भव है क्योंकि मैं और मेरी पत्नी दोनों ही वृद्ध हो गए हैं।" 19 तब स्वर्गदूत ने कहा, "मैं जिब्राईल हू। मैं परमेश्वर के सामने खडा रहता हू। परमेश्वर ने ही मुझे भेजा है कि तुझे यह शुभ समाचार सुनाऊ। 20 तूने मेरी बात का विश्वास नही किया, इसलिए तू उस पुत्र के उत्पन्न होने तक गूंगा रहेगा। क्योंकि मेरे वचन अवश्य ही निश्चित समय पर पूर्ण होंगे।" 21 इसी बीच लोग जकरयाह के बाहर आने का रास्ता देख रहे थे। उन्हे आश्चर्य हो रहा कि जकरयाह को इतनी देर क्यों हो रही है। 22 जब जकरयाह बाहर आया तो बोल न सका। लोगो ने उसके संकेतो से समझ लिया

---

[1] पद तीन मे से, मूलत "हे श्रीमान थियुफिलुस।" नाम का अर्थ है, "परमेश्वर का प्रेम करने वाला"। [2] मूलत "उन बातों का जो हमारे बीच में बीती हैं।" [3] पासा फेंकने के द्वारा अथवा इसी प्रकार से। [4] यही तात्पर्य है। [5] मूलत "कि पितरो का मन लड़के-बालों की ओर फेर दे और आज्ञा न मानने वालों को धर्मियों की समझ पर लाए।"

कि उसने मन्दिर में दर्शन देखा होगा। 23 जकरयाह अपनी सेवा के दिन पूरे होने तक मन्दिर ही में ठहरा रहा। इसके बाद वह अपने घर लौट आया।

24 इस घटना के बाद उसकी पत्नी इलीशिबा गर्भवती हुई और उसने स्वयं को पाँच महीने तक छिपाए रखा। 25 वह कहती थी, "परमेश्वर कितना दयालु है! उसने मेरे बाँझ होने का अपमान दूर कर दिया है।"

26 इलीशिबा के गर्भ का छटवां महीना था। तब परमेश्वर ने जिब्राईल स्वर्गदूत को गलील प्रदेश के नासरत नगर में मरियम नामक एक कुंवारी के पास भेजा। 27 मरियम की मंगनी यूसुफ नामक पुरुष से हो चुकी थी जो दाऊद राजा के वंश का था। 28 जिब्राईल ने मरियम से कहा, "मरियम, तू बधाई की पात्र है। प्रभु का अनुग्रह तुझ पर हुआ है और वह तेरे साथ है।"[6] 29 मरियम घबराकर आश्चर्य से सोचने लगी कि स्वर्गदूत के कथन का क्या अर्थ हो सकता है। 30 स्वर्गदूत ने उससे कहा, "मरियम तू मत डर, क्योंकि परमेश्वर ने विचित्र विधि से तुझे आशीष देने का विचार किया है। 31 तू अब शीघ्र ही गर्भवती होगी और पुत्र को जन्म देगी। तू उसका नाम 'यीशु' रखना। 32 वह अति महान होगा और परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा प्रभु उसे उसके पूर्वज दाऊद का राज्य देगा। 33 वह सर्वदा के लिये इस्राएल पर राज्य करेगा। उसके राज्य का कभी अन्त न होगा।" 34 मरियम ने स्वर्गदूत से पूछा, "परन्तु मुझ से पुत्र कैसे उत्पन्न हो सकता है? मैं तो कुंवारी हूं।" 35 स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "तुझ पर पवित्र आत्मा उतरेगा और परमेश्वर की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी। इसलिए तेरा पुत्र पूर्णतः पवित्र होगा क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र होगा। 36 देख तेरी रिश्तेदार[7] इलीशिबा, जिसे लोग बांझ कहते थे छ: माह पहले बुढ़ापे में गर्भवती हुई है। 37 क्योंकि परमेश्वर की प्रत्येक प्रतिज्ञा निश्चय ही पूर्ण होगी।" 38 मरियम ने कहा, "मैं परमेश्वर की दासी हूं और वह जो चाहे उसे करने के लिये तैयार हूं। जैसा तू ने कहा, वैसा ही हो।" तब स्वर्गदूत अदृश्य हो गया। 39, 40 कुछ दिनों के बाद मरियम यहूदा प्रदेश के एक पहाड़ी नगर में जकरयाह के घर इलीशिबा से भेंट करने गई। 41 मरियम का प्रणाम सुनते ही इलीशिबा के गर्भ में बालक उछल पड़ा और वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई। 42 इलीशिबा ने ऊँचे स्वर से मरियम से कहा, "परमेश्वर ने सब स्त्रियों से बढ़कर तुझ पर कृपा की है। तेरा पुत्र निश्चय ही परमेश्वर की महान प्रशंसा का कारण होगा। 43 यह मेरा सौभाग्य है कि मेरे प्रभु की माता मुझ से मिलने आई। 44 जैसे ही तूने आकर मुझे प्रणाम किया मेरे पेट में बच्चा खुशी से उछल पड़ा। 45 तू धन्य है क्योंकि तूने विश्वास किया कि परमेश्वर ने जैसा कहा है वैसा ही करेगा।" 46 मरियम ने कहा, मेरा मन परमेश्वर की प्रशंसा से भरा है। 47 "मेरी आत्मा अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर से आनन्दित है। 48 क्योंकि उसने अपनी दीन दासी पर दृष्टि की है। अब युग युग के लोग सदा मुझे परमेश्वर के द्वारा आशीषित कहेंगे। 49 क्योंकि सर्वशक्तिमान पवित्र परमेश्वर ने मेरे लिये बड़े बड़े काम किये हैं। 50 उसकी दया युग युग तक अपने भक्तों पर बनी रहती है। 51 उसकी भुजाओं में कितना बल है। उसने घमण्डियों को कैसा नीचा किया है। 52 उसने राजाओं को गद्दी से उतारा और दीनों को ऊँचा उठाया है। 53 उसने भूखे हृदयों को तृप्त किया और धनवानों को खाली हाथ लौटा दिया। 54 उसने अपने सेवक इस्राएल की कैसी सहायता की! उसने अपनी दया की प्रतिज्ञा को स्मरण किया है। 55 क्योंकि उसने हमारे पूर्वजों

---

[6] कई प्राचीन अनुवादों में यह भी लिखा है, "तू स्त्रियों में धन्य है।" जैसा पद 42 में भी लिखा है जो सभी हस्तलेखों में है। [7] मूलत "कुटुम्बनी।"

इब्राहीम और उसकी सन्तान से यह प्रतिज्ञा की—वह सर्वदा उन पर दया करता रहेगा।" 56 मरियम लगभग तीन माह तक इलीशिबा के साथ रही और तब अपने घर को वापस चली गई।

57 इलीशिबा का प्रसव काल पूरा हुआ और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। 58 पडोसियो और रिश्तेदारों मे यह खबर शीघ्र ही फैल गई कि प्रभु ने उस पर कैसी दया की है और वे सब बहुत आनन्दित हुए। 59 जब बालक आठ दिन का हुआ, तो सब रिश्तेदार और मित्र उसके खतना के लिए आए। उन सब का अनुमान था कि बालक का नाम उसके पिता के नाम पर जकरयाह रखा जाएगा। 60 परन्तु इलीशिबा ने कहा, "नही, उसका नाम यूहन्ना होगा।" 61 लोगो ने आश्चर्य मे कहा, "क्या? तुम्हारे घराने मे तो किसी का भी यह नाम नही है।" 62 इसलिए उन्होंने बालक के पिता मे सकेतो द्वारा बाते करके पूछा।[8] 63 उसने सकेत करके लिखने की पट्टी मागी और लिखा, "उसका नाम यूहन्ना है।" इससे सब को आश्चर्य हुआ। 64 परन्तु जकरयाह की जीभ तुरन्त ही खुल गई और वह परमेश्वर की बडाई करने लगा। 65 उसके पडोसियो पर भय छा गया और इस घटना की खबर यहूदा के पहाडी प्रदेश मे हर जगह फैल गई। 66 जो भी इस घटना के विषय मे सुनता, वह सोचता रह जाता कि वह शिशु बडा होकर क्या बनेगा। क्योंकि निश्चय ही प्रभु का हाथ विशेष रूप से उस पर था।

67 शिशु के पिता जकरयाह ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर परमेश्वर की स्तुति करते हुए यह भविष्यद्वाणी की. 68 "इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो, क्योंकि उसने अपने लोगों पर दृष्टि की और उनका छुटकारा किया है। 69 और अपने सेवक दाऊद के राजकीय वश से हमारे लिए एक सामर्थी उद्धारकर्ता भेजा है। 70 जैसे उसने बहुत पहले से ही अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओ द्वारा उसकी प्रतिज्ञा की थी 71 अर्थात हमसे घृणा करने वाले हमारे समस्त शत्रुओ से हमारा उद्धार किया है। 72, 73 उसकी दया हमारे पूर्वजों पर रही है उसने इब्राहीम के साथ अपनी पवित्र प्रतिज्ञा का स्मरण किया। 74 उन्होंने कृपा कर हमें यह अधिकार दिया है कि हम शत्रुओं से मुक्त होकर निर्भयता मे परमेश्वर की सेवा करें। 75 तथा पवित्र और ग्रहण योग्य बन कर सर्वदा उसकी उपस्थिति मे रह सकें। 76 और हे मेरे छोटे बालक, तू तेजस्वी परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता कहलाएगा, क्योंकि तू मसीह के लिए मार्ग तैयार करेगा। 77 लोगो को पापो की क्षमा के प्राप्त होने वाला ज्ञान देगा। 78 यह सब इसलिये होगा क्योंकि हमारा परमेश्वर अत्यन्त दयालु है। वह हम पर स्वर्गिक प्रकाश उदय करेगा। 79 ताकि अन्धकार और मृत्यु की छाया मे रहने वालो को ज्योति मिले और शान्ति के मार्ग पर हमारी अगुवाई हो।"

80 छोटा बालक परमेश्वर से बहुत प्रेम रखता था[9] और जब वह बडा हुआ तो इस्राएलियों मे समाज सेवा आरम्भ करने मे पहले निर्जन वन मे रहा।

2

1 उन्ही दिनो रोमी सम्राट औगुस्तुस कैसर ने राजआज्ञा दी कि उसके साम्राज्य मे जन गणना की जाए। 2 (यह प्रथम जन गणना उस समय हुई जब क्विरिनियुस सूरिया देश का राज्यपाल था।) 3 जनगणना के लिये प्रत्येक को अपने पूर्वजो के नगर को जाना अनिवार्य था। 4 यूसुफ राजकीय वश का था इसलिए उसे भी गलील के नासरत से यात्रा कर, राजा दाऊद के प्राचीन नगर यहूदिया के बैतलहम को जाना पडा। 5 उसने मरियम को भी अपने सग लिया जिसके साथ उसकी मगनी हो चुकी थी।

[8] जकरयाह स्पष्टत: गूगा और बहरा था। उसने अपनी पत्नी की बातें नहीं सुनी थी। [9] मूलत "आत्मा में बलवन्त होता गया।"

मरियम इस समय गर्भवती थी। 6 जब वे बैतलहम में थे तब मरियम का प्रसवकाल निकट आया। 7 मरियम ने अपने प्रथम पुत्र को जन्म दिया। उसने बालक को कपड़े में लपेटकर गौशाले की चरनी में सुलाया क्योंकि उनके लिए सराय में कोई जगह न थी।

8 उसी रात को कुछ चरवाहे बैतलहम नगर से बाहर मैदान में अपनी भेड़ों की रखवाली कर रहे थे। 9 अचानक एक स्वर्गदूत उनके मध्य में आया और प्रभु के तेज से वह क्षेत्र चमकने लगा। चरवाहे बुरी तरह डर गए। 10 स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "डरो मत, मैं तुम्हें एक महान शुभ संदेश सुनाने आया हूं जो सब के लिए है। 11 उद्धारकर्ता मसीह प्रभु का जन्म आज रात बैतलहम में हुआ है।[1] 12 तुमको एक बालक कपड़े में लिपटा हुआ गौशाले की चरनी में मिलेगा। उसकी तुम्हारे लिये यही पहचान होगी।" 13 तब अचानक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का बड़ा समूह दिखाई दिया। वे भजन गा कर[2] परमेश्वर की प्रशंसा कर रहे थे: 14 "स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा हो और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में शांति हो जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं।"

15 जब स्वर्गदूतों का बड़ा समूह स्वर्ग को लौट गया, तो चरवाहों ने आपस में कहा, "चलो, हम बैतलहम चल कर इस अद्‌भुत घटना को, जिसे प्रभु ने हमें बताया है, देखें।" 16 वे दौड़ते हुए बैतलहम को गए और मरियम व यूसुफ के पास पहुंचे। वहां वह बालक गौशाले की चरनी में पड़ा था। 17 चरवाहों ने वहाँ पहुंच कर सब को बताया कि उस बालक के विषय में स्वर्गदूतों ने उनसे क्या कहा था। 18 जितनों ने गड़रियों की कहानी सुनी सब ने आश्चर्य किया। 19 परन्तु मरियम ने ये बातें अपने मन में ही रखीं। और बहुधा वह उन पर विचार करती रही। 20 तब चरवाहे स्वर्गदूतों के द्वारा बताए अनुसार बालक को देखकर परमेश्वर की स्तुति करते हुए भेड़ों के पास मैदान में गए।

21 आठ दिन के बाद बालक का खतना हुआ। उस समय उसका नाम यीशु रखा गया। यही नाम उसके गर्भ में आने से पहिले स्वर्गदूत ने बतलाया था।

22 जब दिन आया कि मरियम अपने शुद्धिकरण की भेंट मन्दिर में जाकर चढ़ाए जैसा सन्तान उत्पन्न होने के सम्बन्ध में मूसा की व्यवस्था थी, तो वे यीशु को यरूशलेम ले गए ताकि उसे परमेश्वर को अर्पित करें। 23 क्योंकि व्यवस्था में परमेश्वर ने कहा था, "यदि स्त्री की प्रथम सन्तान पुत्र हो, तो उसे परमेश्वर के लिए अर्पित किया जाए।" 24 इसी समय यीशु के माता पिता ने शुद्धिकरण की भेंट भी चढ़ाई—व्यवस्था के अनुसार उन्हें, "फाख्ता का जोड़ा अथवा कबूतर के दो बच्चे" चढ़ाना था। 25 उस दिन यरूशलेम निवासी शमौन नामक एक धर्मी और भक्त पुरुष मन्दिर में था। वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था और निरन्तर मसीह[3] के शीघ्र आने की प्रतीक्षा करता था। 26 क्योंकि पवित्र आत्मा ने उस पर प्रकट किया था कि जब तक वह परमेश्वर के अभिषिक्त राजा यीशु को न देख लेगा तब तक न मरेगा। 27 पवित्र आत्मा ने उसे उस दिन मन्दिर में जाने की प्रेरणा दी थी। इसलिए जब मरियम और यूसुफ वहाँ पहुंचे कि बालक को नियमानुसार परमेश्वर को अर्पित करें, 28 उस समय शिमौन वहां था। उसने यीशु को अपनी गोद में लिया और परमेश्वर का धन्यवाद करने लगा। 29, 30, 31 उसने कहा, "हे परमेश्वर, अब सन्तोष से मेरी मृत्यु हो सकती है। क्योंकि मैंने तेरी प्रतिज्ञा के अनुसार उस उद्धारकर्ता को देख लिया है जिसे तूने संसार को दिया है। 32 वह प्रकाश है जिसकी ज्योति अन्य जातियों पर चमकेगी और वह तेरी प्रजा इस्राएल के लिए गौरव होगा।" 33 यूसुफ और मरियम

[1] मूलतः "दाऊद के नगर।" [2] मूलतः "यह कहते।" [3] मूलतः "इस्राएल की शान्ति की।"

यीशु के विषय में यह बातें सुनकर बड़ा आश्चर्य करते रहे। 34, 35 शमौन ने उन्हें आशीर्वाद देकर मरियम से कहा, "देखो, यह तो इस्राएल में बहुतों के गिरने, और उठने के लिए, और एक ऐसा चिन्ह होने के लिये ठहराया गया है, जिसके विरोध में बातें की जाएगी—वरन तेरा प्राण भी तलवार से वार-पार छिद जाएगा—इससे अनेक हृदयों के गुप्त विचार प्रकट हो जाएंगे।" 36, 37 उस दिन हन्नाह नामक नबिया भी मन्दिर में थी। वह फनूएल की पुत्री और यहूदियों के अशेर कुल की थी। वह बहुत बूढ़ी थी क्योंकि विवाह के बाद सात वर्ष पति के साथ रही और अब चौरासी वर्ष से विधवा थी। वह मन्दिर को नहीं छोड़ती थी परन्तु रात दिन परमेश्वर की आराधना बहुधा प्रार्थना और उपवास द्वारा करती थी। 38 वह उस समय वहां आई जब शमौन, मरियम और यूसुफ से बातें कर रहा था। उसने भी परमेश्वर को धन्यवाद दिया। वह यरूशलेम में उद्धारकर्ता के आने की प्रतीक्षा करनेवालों को यह बताने लगी कि मसीह आ गया है। 39 परमेश्वर के ठहराए हुए नियमों को पूरा करने के बाद यीशु के माता पिता गलील प्रदेश में अपने नगर नासरत को लौट गए।

40 वहां बालक बढ़ने लगा और बलवन्त होता गया वह अपनी उम्र की तुलना में अधिक बुद्धिमान था, और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।

41, 42 यीशु के माता पिता हर वर्ष फसह का पर्व मनाने यरूशलेम जाते थे। जब यीशु बारह वर्ष के हुए तो वह भी अपने माता पिता के साथ फसह का पर्व मनाने के लिए यरूशलेम गए। 43 पर्व समाप्त होने पर वे नासरत की ओर घर लौटने लगे तो यीशु, यरूशलेम में ही ठहर गए। माता पिता को पहले दिन इसका पता नहीं चला। 44 उन्होंने सोचा कि वह मित्रों के साथ दूसरे साथियों के मध्य होंगे। परन्तु उस सन्ध्या को भी जब वह दिखाई नहीं दिए, तो वे यीशु को अपने मित्रों और रिश्तेदारों में खोजने लगे। 45 जब यीशु उन्हें नहीं मिले तो वे उन्हें ढूंढने यरूशलेम को वापिस गए। 46, 47 अन्त में तीन दिन बाद उन्होंने यीशु को पाया। वह धर्म-शिक्षकों के साथ मन्दिर में बैठे थे और उनसे गम्भीर प्रश्नों पर बातचीत कर रहे थे। लोग उनकी समझ और उनके उत्तरों से चकित थे। 48 उनके माता पिता को भी आश्चर्य हुआ। उनकी माता ने उनसे कहा, "बेटा तुमने हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? देखो, तुम्हारे पिताजी और मैं तुम्हें ढूंढते हुए बड़े चिन्तित थे।" 49 यीशु ने पूछा, "परन्तु आप मुझे क्यों खोजते थे? क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है।" 50 परन्तु वे यीशु का अर्थ नहीं समझे। 51 तब यीशु उनके साथ नासरत नगर लौट गए। वहां वह अपने माता पिता के अधीन रहे। उनकी माता ने इन सब बातों को अपने हृदय में छिपाए रखा। 52 यीशु शारीरिक और मानसिक रूप में बढ़ते गए, वह परमेश्वर और मनुष्य दोनों के प्रिय थे।

3 1, 2 सम्राट तिबिरियुस कैसर के राज्य के पन्द्रहवें वर्ष में यूहन्ना (जकरयाह का पुत्र) को परमेश्वर का संदेश मिला। यूहन्ना उस समय निर्जन स्थान में था। (उन दिनों पीलातुस यहूदा प्रदेश का राज्यपाल था। हेरोदेस, गलील का, उसका भाई फिलिप्पुस, इतूरैया और त्रखोनीतिस का, लिसानियास, अबिलेने का शासक था। हन्ना और कैफा महापुरोहित थे।) 3 इसके बाद यूहन्ना यर्दन नदी के दोनों तटों पर एक स्थान से दूसरे स्थान में प्रचार करने लगा। वह सिखाता था कि लोगों को बपतिस्मा लेना चाहिए ताकि प्रकट हो कि वे क्षमा[1] पाने के लिए अपने पापों को छोड़कर परमेश्वर की ओर फिर गए हैं।

[1] अथवा पापों की क्षमा के लिए मन फिराव के बपतिस्मे का प्रचार।

4 यूहन्ना, यशायाह नबी के शब्दों में, "निर्जन स्थान में पुकारने वाले की आवाज थी, 'प्रभु के आने के लिए मार्ग तैयार करो। उसकी सड़कें चौड़ी करो। 5 पहाड़ों को समतल बनाओ। घाटियों को भर दो। टेढ़े-मेढ़े रास्तों को सीधे बनाओ। ऊबड़-खाबड़ मार्ग को सपाट करो। 6 तब सब मनुष्य परमेश्वर के भेजे हुए उद्धार-कर्ता का दर्शन पाएंगे'।"

7 लोगों की भीड़ यूहन्ना से बपतिस्मा लेने आती थी। वह उनसे कहता था, "हे सांप के बच्चो, तुम सच्चाई से परमेश्वर की ओर फिरे बिना, नरक से बचने का प्रयत्न करते हो। क्या इसीलिए तुम बपतिस्मा लेना चाहते हो? 8 जाओ और पहले अपने जीवन से दर्शाओ कि तुमने पापों से मुख फेर कर परमेश्वर को ग्रहण किया है। मत सोचो कि इब्राहीम की संतान हो इसलिए बच जाओगे। इतना ही बस नहीं है। परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम की संतान उत्पन्न कर सकता है। 9 उसके न्याय की कुल्हाड़ी तुम पर रखी है जो तुम्हें जड़ से काट डालने को तैयार है। हां, जिस पेड़ में अच्छे फल नहीं लगते, वह काटा और आग में झोंका जाता है।" 10 लोगों ने यूहन्ना से पूछा "हमें क्या करना चाहिए?" 11 उन्होंने कहा, "यदि तुम्हारे पास दो कुरते हों, तो एक कुरता किसी गरीब को दे दो। यदि तुम्हारा भोजन तुम्हारे पास आवश्यकता से अधिक हो, तो उसे भूखों को खिला दो।" 12 कर वसूल करने वाले भी जो अपनी घूसखोरी के लिए बदनाम थे, यूहन्ना से बपतिस्मा लेने आए। उन्होंने पूछा, "हम आपको कैसे दर्शाएं कि हमने अपने पापों को छोड़ दिया है?" 13 यूहन्ना ने उत्तर दिया, "अपनी ईमानदारी द्वारा। रोमी सरकार ने तुम्हें जितना कर वसूल करने का आदेश दिया है उससे अधिक कर न लो।" 14 कई सिपाहियों ने भी प्रश्न किया, "और हमें क्या करना चाहिए?" यूहन्ना ने उत्तर दिया, "डरा कर और अत्याचार करके अन्याय से पैसा न लो। किसी पर झूठा दोष न लगाओ। अपने वेतन से सन्तुष्ट रहो।"

15 उन दिनों यहूदी लोग मसीह के शीघ्र आने की प्रतीक्षा में थे। वे यह जानने के लिये उत्सुक थे कि कहीं यूहन्ना ही तो मसीह नहीं है। यह प्रश्न उन दिनों सभी के मनों में था। 16 यूहन्ना ने इस प्रश्न के उत्तर में कहा, "मैं तो केवल पानी से बपतिस्मा देता हूं परन्तु मुझसे कहीं शक्तिशाली एक व्यक्ति आने वाला है, उनके तो मैं जूतों के बन्ध खोलने के भी योग्य नहीं हूं।[2] वह तुम्हें आग और पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा। 17 वह अन्न से भूसे को अलग करेगा और अनन्त आग से भूसे को जला कर अन्न को खलिहान में जमा करेगा।"

18 यूहन्ना ने ऐसी ही चेतावनियां दे देकर लोगों को शुभ संदेश सुनाया। 19, 20 (गलील प्रदेश के राज्यपाल हेरोदेस ने अपने भाई की पत्नी को रख लिया था। यूहन्ना ने खुल कर उसके इस कार्य तथा अन्य बुरे कार्यों की निन्दा की। इसमें हेरोदेस ने यूहन्ना को जेल में डलवा दिया था। यह हेरोदेस का सब से बुरा कुकर्म था।)

21 एक दिन जब सबने बपतिस्मा ले लिया तो यीशु भी बपतिस्मा लेने के लिए आए। बपतिस्मा लेकर वह प्रार्थना कर ही रहे थे कि उसी क्षण स्वर्ग खुल गया और 22 पवित्र आत्मा कबूतर के समान उन पर उतरा। स्वर्ग से एक आवाज सुनाई दी, "तू मेरा अति प्रिय पुत्र है, मैं तुझसे प्रसन्न हूं।"

23—38 जब यीशु ने अपनी समाज सेवा आरम्भ की तब वह लगभग तीस वर्ष के थे और यीशु, यूसुफ के पुत्र थे। यूसुफ का पिता एली, एली का पिता मत्तात, मत्तात का पिता लेवी, लेवी का पिता मलकी, मलकी का पिता यन्ना, यन्ना का पिता यूसुफ, यूसुफ का पिता मत्तित्याह

[2] अर्थात उनका दास होने के भी योग्य नहीं हूं।

मत्तित्याह का पिता आमोस, आमोस का पिता नहूम, नहूम का पिता असल्याह, असल्याह का पिता नोगह, नोगह का पिता मात, मात का पिता मत्तित्याह, मत्तित्याह का पिता शिमी, शिमी का पिता योसेख, योसेख का पिता योदाह, योदाह का पिता यूहन्ना, यूहन्ना का पिता रेसा, रेसा का पिता जरुब्बाबिल, जरुब्बाबिल का पिता शालतियेल, शालतियेल का पिता नेरी, नेरी का पिता मलकी, मलकी का पिता अद्दी, अद्दी का पिता कोसाम, कोसाम का पिता इलमोदाम, इलमोदाम का पिता एर, एर का पिता येशू, येशू का पिता इलाजार, इलाजार का पिता योरीम, योरीम का पिता मत्तात, मत्तात का पिता लेवी, लेवी का पिता शमौन, शमौन का पिता यहूदाह, यहूदाह का पिता यूसुफ, यूसुफ का पिता योनान, योनान का पिता इलयाकीम, इलयाकीम का पिता मलेआह, मलेआह का पिता मिन्नाह, मिन्नाह का पिता मत्तता, मत्तता का पिता नातान, नातान का पिता दाऊद, दाऊद का पिता यिशै, यिशै का पिता ओबेद, ओबेद का पिता बोअज, बोअज का पिता सलमोन, सलमोन का पिता नहशोन, नहशोन का पिता अम्मीनादाब, अम्मीनादाब का पिता अदमीन, अदमीन का पिता अरनी, अरनी का पिता हिस्रोन, हिस्रोन का पिता फिरिस, फिरिस का पिता यहूदाह, यहूदाह का पिता याकूब, याकूब का पिता इसहाक, इसहाक का पिता इब्राहीम, इब्राहीम का पिता तिरह, तिरह का पिता नाहोर, नाहोर का पिता सरूग, सरूग का पिता रऊ और रऊ का पिता फिलिग, फिलिग का पिता एबिर, एबिर का पिता शिलह, शिलह का पिता केनान, केनान का पिता अर्पक्षद, अर्पक्षद का पिता शेम, शेम का पिता नूह, नूह का पिता लिमिक, लिमिक का पिता मथूशिलह, मथूशिलह का पिता हनोक, हनोक का पिता यिरिद, यिरिद का पिता महललेल, महललेल का पिता केनान, केनान का पिता इनोश, इनोश का पिता शेत, शेत का पिता आदम, आदम का पिता परमेश्वर।

4 1 यीशु, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर यर्दन नदी से लौट गए। वह आत्मा की प्रेरणा से यहूदा के निर्जन क्षेत्र में गए। वहां वह चालीस दिन तक रहे। और शैतान ने उनको परखा। 2 इतने दिनों तक यीशु ने कुछ नहीं खाया। चालीस दिनों के बाद उन्हें बहुत भूख लगी। 3 शैतान ने उनसे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो इस पत्थर से कह दे कि रोटी बन जाए।" 4 परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, "पवित्र शास्त्र में लिखा है, जीवन में रोटी से बढ़ कर अन्य महत्वपूर्ण बातें हैं।" 5 तब शैतान उन्हें ऊँचे स्थान पर ले गया। वहां से एक क्षण में संसार का सारा साम्राज्य दिखा कर उसने कहा, 6, 7 मैं इन सब पर अधिकार और इनका राज वैभव तुझे दे दूंगा। क्योंकि मैं जिसे चाहूं उसे यह सब देता हूं। यदि तू घुटने टेक कर मेरी आराधना करे तो यह तेरा हो जाएगा। 8 यीशु ने उत्तर दिया, "पवित्र शास्त्र में लिखा है कि तू प्रभु परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल परमेश्वर ही की आराधना कर।" 9, 10, 11 तब शैतान उन्हें यरूशलेम नगर को ले गया। उसने यीशु को मन्दिर की छत पर खड़ा करके कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो नीचे कूद जा। क्योंकि पवित्र शास्त्र में लिखा है कि परमेश्वर तेरी रक्षा के लिये स्वर्गदूतों को भेजेगा और वे तुझे तनिक भी चोट न लगने देंगे।" 12 यीशु ने उत्तर दिया, "पवित्र शास्त्र में यह भी लिखा है, तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा मत कर।" 13 जब शैतान सब परीक्षाएं समाप्त कर चुका, तो कुछ समय के लिये यीशु को छोड़कर चला गया।

14 तब यीशु, पवित्र आत्मा की सामर्थ में भरे हुए गलील प्रदेश को लौटे और उस क्षेत्र में उनकी कीर्ति सर्वत्र फैल गई। 15 जब वह आराधनालयों में सन्देश देते थे तो सब उनकी बड़ी प्रशंसा करते थे।

16 यीशु नासरत नगर में आए जहां उनका पालन पोषण हुआ था। वहां वह अपनी रीति के अनुसार शनिवार को यहूदियों के आराधनालय में गए और पवित्र शास्त्र पढ़ने के लिए खड़े हुए। 17 उनको यशायाह नबी की पुस्तक दी गई। उन्होंने पुस्तक से यह स्थल निकाला जहां लिखा है : 18, 19 "प्रभु का आत्मा मुझ पर है। उसने मेरा अभिषेक किया है कि मैं गरीबों को शुभ संदेश सुनाऊँ। उसने मुझे यह संदेश भेजा है कि बन्दी मुक्त हो जाएंगे और अंधे देखने लगेंगे, पददलितों को उनके अत्याचारियों से छुटकारा मिलेगा और परमेश्वर अपने पास आने वालों को आशीष देने के लिये तैयार है।" 20 यीशु ने पुस्तक बन्द कर के सेवक को दे दी। तब बैठ गए। आराधनालय में सब की आखें टक टकी लगा कर उन्हीं को देख रही थीं। 21 उन्होंने फिर कहा, "पवित्र शास्त्र के उक्त वचन आज पूरे हुए।" 22 सब लोग वहां यीशु की बड़ाई करते थे और उनके मधुर वचनों से चकित थे। वे पूछते थे, "यह कैसे हो सकता है? क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है?" 23 यीशु ने कहा, "तुम अवश्य मुझ से कहोगे, 'वैद्य जी, पहले अपना इलाज कीजिये।' जो आश्चर्यकर्म आपने कफरनहूम नगर में किये, उन्हें अपने नगर में भी कीजिये। 24 परन्तु मैं तुम से सच कहता हूँ कि किसी नबी का स्वागत उसके अपने नगर में नहीं होता। 25, 26 उदाहरण के लिये याद करो कि एलिय्याह नबी ने किस प्रकार आश्चर्य कर्म द्वारा एक परदेशी विधवा की सहायता की जो सूर देश के सारपत नगर में रहती थी। अनेक यहूदी विधवाएं थीं जिन्हें उन दिनों में अकाल के कारण सहायता की आवश्यकता थी, क्योंकि साढ़े तीन वर्ष से वर्षा नहीं हुई थी और देश में भुखमरी फैली थी, तौभी एलिय्याह उनके पास नहीं भेजा गया। 27 या एलीशा नबी को याद करो; उसने सूरिया देश के नामान नामक कोढ़ी को चंगा किया परन्तु अपने ही देश इस्राएल के किसी भी कोढ़ी को चंगा नहीं किया।" 28 आराधनालय में बैठे लोग यीशु के इन वचनों को सुन कर दांत पीसने लगे। 29 और यीशु को खींच कर उस पहाड़ की चोटी पर ले गए जिस पर उनका शहर बसा था। वे उनको वहां से नीचे ढकेल देना चाहते थे। 30 परन्तु यीशु भीड़ में निकल कर चले गए।

31 इसके बाद यीशु गलील प्रदेश के कफरनहूम नगर को गए और वहां के आराधनालय में हर शनिवार को संदेश देने लगे। 32 यहां भी लोग उनके उपदेश से चकित थे, क्योंकि वह ऐसे बोलते थे जैसे उन्हें सत्य का ज्ञान हो। वह दूसरों के विचारों को लेकर नहीं बताते थे परन्तु अधिकार पूर्वक बोलते थे। 33 एक दिन जब वह आराधनालय में शिक्षा दे रहे थे तो वहां एक व्यक्ति था जिसमें दुष्ट आत्मा समाई थी। वह व्यक्ति चिल्लाकर यीशु से कहने लगा, 34 "नासरत के यीशु, हमको आप से कुछ काम नहीं है। आप चले जाइये। आप हमें नष्ट करने को आए हैं। मुझे मालूम है आप कौन हैं—परमेश्वर के पवित्र पुत्र।" 35 यीशु ने उसे डांटा, "चुप रह।" उन्होंने दुष्ट आत्मा से कहा, "उसमें से निकल आ।" दुष्ट आत्मा ने भीड़ के देखते देखते उस व्यक्ति को भूमि पर पटक दिया और बिना चोट पहुंचाए उसे छोड़ दिया। 36 लोग दंग रह गए। उन्होंने पूछा, "उनके वचनों में ऐसा क्या है कि दुष्ट आत्माएं भी उनकी आज्ञा मानती हैं?" 37 उस समस्त क्षेत्र में यीशु के इस कार्य का ढिंढोरा पिट गया।

38 उस दिन यीशु आराधनालय से निकलकर शमौन के घर गए। वहां शमौन की सास को तेज बुखार चढ़ा था। सबने विनती की, "कृपा कर उसे चंगा कर दीजिए।" 39 यीशु उसके बिस्तर के पास खड़े हुए। उन्होंने बुखार को डांटा और एकदम उसका बुखार उतर गया। वह उठ कर उनकी पहुनाई करने लगी।

40 सन्ध्या समय नगर के लोग अपने सब तरह के बीमार मित्रों को यीशु के पास लाए।

यीशु ने प्रत्येक पर हाथ रख कर उसे अच्छा किया। 41 वहा कुछ लोगो मे दुष्ट आत्माएं थी जो यीशु की आज्ञा के कारण यह चिल्लाती हुई निकली, "आप परमेश्वर के पुत्र हैं।" दुष्ट आत्माएं जानती थी कि वह मसीह हैं, इसलिए यीशु ने उन्हे डाटा और शान्त रहने को कहा।

42 अगले दिन सबेरा होते ही यीशु निर्जन स्थान मे गए। लोग उन्हे सब जगह ढूंढने लगे। जब यीशु मिल गए तो उन्होने यीशु से विनती की, कि वह उन्हे न छोड़ें परन्तु कफरनहूम मे उनके साथ रहे। 43 परन्तु यीशु ने कहा, "मुझे दूसरे स्थानों मे भी परमेश्वर के राज्य का शुभ संदेश सुनाना अवश्य है। मुझे इसीलिये भेजा भी गया है।" 44 इसलिये वह यहूदियाह प्रदेश मे यात्रा करते और आराधनालयो मे संदेश देते रहे।

5 1 एक दिन यीशु गन्नेसरत झील के किनारे प्रचार कर रहे थे। परमेश्वर का वचन सुनने के लिए बडी भीड उन्हे चारो ओर से घेरे हुए थी। 2 यीशु ने देखा कि झील के किनारे दो नावें हैं और मछुए उतर कर जाल धो रहे हैं। 3 यीशु एक नाव पर चढे जो शमौन की थी उन्होने शमौन से नाव को जल में थोडी दूर तक खेने को कहा, ताकि नाव पर बैठकर वहा से भीड को वचन सुना सकें। 4 उपदेश समाप्त होने पर उन्होने शमौन से कहा, "नाव गहरे जल में ले चलो और अपने जाल डालो। वहा बहुत मछलिया फसेंगी।" 5 शमौन ने कहा, "गुरुजी, हमने सारी रात परिश्रम किया किन्तु एक भी न पकड सके परन्तु आप कहते हैं तो फिर कोशिश करके देखेंगे।" 6 गहरे मे डालने पर इतनी अधिक मछलिया फसी कि जाल फटने लगे। 7 सहायता की पुकार सुनकर दूसरी नाव के साथी भी आ पहुचे। शीघ्र ही दोनो नावें मछलियो से इतनी भर गई कि डूबने लगी। 8 यह देखकर शमौन पतरस, यीशु के सामने घुटनों पर गिरा। उसने कहा, "हे गुरु, हमें छोड दीजिए मैं तो अत्यन्त पापी मनुष्य हू, आप हमारे साथ कैसे रहेंगे।" 9 क्योंकि शमौन और उसके साथी मछलियों की बहुतायत से हक्का बक्का रह गए थे। 10 उसके साथियो.. जबदी के पुत्र याकूब और यूहन्ना का भी यही हाल था। यीशु ने शमौन से कहा, "मत डर! अब से तू मनुष्यों की आत्माओं का मछुआ बनेगा।" 11 नाव पार लगते ही उन्होंने सब कुछ छोड़ दिया और यीशु के साथ हो लिये।

12 एक दिन यीशु किसी नगर मे थे। वहा एक कुष्ट रोगी था। उसने जब यीशु को देखा तो मुह के बल उनके सामने ज़मीन पर गिर कर उनसे कहा, "यदि आप चाहें तो मुझे पूरी रीति मे चंगा कर सकते हैं।" 13 यीशु ने हाथ बढा कर उस व्यक्ति पर रखा और कहा, "हां, मैं चाहता हूं, तू चंगा हो जा।" उसी क्षण उसका रोग दूर हो गया। 14 यीशु ने उसे सलाह दी कि वह इस घटना का वर्णन किसी से न करे और सीधे जाकर यहूदी पुरोहित से अपनी जाच कराए। यीशु ने कहा, "मूसा के नियम अनुसार शुद्ध हुए कोढियों के लिये जो बलिदान ठहराया गया है, उसे जा कर चढा। इस से सब लोग जान लेंगे कि तेरी बीमारी दूर हो गई है।" 15 यीशु के सामर्थ की चर्चा और अधिक फैलती गई। लोगो की बडी भीड उनका वचन सुनने तथा अपनी बीमारियो से अच्छा होने के लिये उनके पास आने लगी। 16 परन्तु यीशु यहूदा के निर्जन स्थान मे प्रार्थना के लिये चले जाते थे।

17 एक दिन यीशु शिक्षा दे रहे थे। उनके पास यहूदियो के कई धार्मिक अगुए और व्यवस्था के शिक्षक बैठे हुए थे। ये लोग गलील और यहूदा प्रदेश के सब नगरो और यरूशलेम से भी आए हुए मालूम पडते थे। और परमेश्वर की चगा करने की सामर्थ यीशु पर थी। 18, 19 इतने मे कुछ लोग एक रोगी को खाट पर लिटा कर लाए। रोगी को सकवे की

बीमारी थी। रोगी के साथी भीड़ में से होकर यीशु तक पहुंचना चाहते थे, परन्तु न पहुंच सके। इसलिए वे उस घर की छत पर चढ़े जिसमें यीशु थे। उन्होंने कुछ खपरैलों को हटाया और खाट पर लेटे हुए रोगी को यीशु के सामने छत से नीचे उतार दिया। 20 उनका विश्वास देख कर यीशु ने बीमार से कहा, "हे मेरे मित्र तेरे पाप क्षमा हुए।" 21 तब फरीसियों और व्यवस्था की शिक्षा देने वालों ने आपस में कहा, "यह व्यक्ति अपने आपको क्या समझता है? यह तो परमेश्वर की निन्दा है। परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है?" 22 यीशु उनके विचार समझ गए। उन्होंने कहा, "इसे निन्दा क्यों कहते हो? 23, 24 मसीह[1] को अर्थात मुझे इस संसार में पापों को क्षमा देने का अधिकार है। किन्तु ऐसा कहना सरल है—ऐसा तो कोई भी कह सकता है। इसलिये मैं इस व्यक्ति की बीमारी को दूर करके यह प्रमाणित करूंगा कि मुझे पाप क्षमा करने का भी अधिकार है।" तब यीशु ने लकवे के रोगी की ओर फिर कर आज्ञा दी, "उठ, अपनी खाट उठा और घर चला जा, क्योंकि तू अच्छा हो गया है।" 25 उसी क्षण सबने देखा, वह व्यक्ति उठा और अपनी खाट लेकर परमेश्वर की स्तुति करता हुआ अपने घर चला गया। 26 वहां खड़े सब लोगों में भय और आश्चर्य समा गया। उन्होंने बार बार यह कहते हुए परमेश्वर की प्रशंसा की, "हमने आज एक अद्भुत घटना देखी है।" 27 इसके बाद यीशु वहां से चले गए। उन्होंने चुंगी चौकी पर लेवी नामक एक व्यक्ति को बैठे देखा। वह कर वसूल करता था और अन्याय से अधिक कर वसूल करने के कारण बदनाम था। यीशु ने उससे कहा, "आ, मेरा शिष्य हो जा।" 28 लेवी अपना सब कुछ त्याग कर तुरन्त यीशु के पीछे हो लिया। 29 लेवी ने यीशु के सम्मान में अपने घर में भोजन का निमन्त्रण दिया। अन्य पाहुनों के साथ वहां कर वसूल करने वाले और लेवी के अनेक मित्र भी उपस्थित थे। 30 परन्तु फरीसी लोग और व्यवस्था की शिक्षा देने वाले, यीशु के शिष्यों पर कुड़कुड़ाने लगे कि कर वसूल करने वाले और कुख्यात पापियों के साथ यीशु भोजन करते हैं। 31 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "बीमारों को वैद्य की आवश्यकता होती है, स्वस्थ्य लोगों को नहीं। 32 मैं पापियों को बुलाने आया हूं कि वे अपने पापों से मन फिराएं, धर्मियों को नहीं जो इसकी आवश्यकता नहीं समझते" 33 उन्होंने फिर यीशु पर दोष लगाया, उनका कहना था, "बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के शिष्य तो बिना भोजन किए प्रार्थना में लगे रहते हैं। वैसे ही फरीसियों के शिष्य भी करते हैं परन्तु आपके शिष्य क्यों खाते पीते रहते हैं?" 34 यीशु ने प्रश्न किया,- "क्या प्रसन्न व्यक्ति उपवास करते हैं? दूल्हे के साथ विवाह के भोजन में शामिल पाहुन क्या भूखे उठ जाते हैं? 35 परन्तु वह समय आएगा जब *दूल्हे को घात किया जाएगा, तब वे भोजन* करना नहीं चाहेंगे।" 36 यीशु ने उदाहरण देकर कहा, "कोई व्यक्ति पुराने कपड़े में पैबन्द लगाने के लिए नया वस्त्र नहीं काटता। यदि ऐसा करे तो नया वस्त्र फटेगा ही, साथ ही पुराना वस्त्र नये कपड़े के पैबन्द में भद्दा दिखेगा। 37 कोई भी नई मदिरा को पुरानी मश्कों में नहीं रखता क्योंकि नई मदिरा से पुराने चमड़े की मश्कें फट जाती हैं और मदिरा गिर कर नष्ट हो जाती है। 38 नई मदिरा को नई मश्कों में भरकर रखना चाहिये। 39 कोई भी व्यक्ति पुरानी मदिरा पीकर नई मदिरा पीने की इच्छा नहीं करता क्योंकि वह पुरानी मदिरा का स्वाद जानता है। क्योंकि वह कहता है कि पुराना ही अच्छा है।"

6 1 एक विश्राम दिन को यीशु अपने शिष्यों के साथ खेतों में से होकर कहीं जा रहे थे। शिष्य गेहूं की बालों को तोड़ कर और हाथ से मसल कर खाने लगे। 2 कुछ फरीसियों ने उन्हें

ऐसा करते देख कर कहा, "यह काम नियम के विरुद्ध है। आपके शिष्य विश्राम दिन पर गेहू की बालें क्यो तोड रहे हैं? ऐसा करना यहूदियों की व्यवस्था मे मना है।" 3 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या तुम पवित्र शास्त्र नही पढते? क्या तुमने यह कभी नही पढा कि राजा दाऊद और उसके साथी भूखे थे तो उसने क्या किया? 4 वह मन्दिर मे गया। उसने चढावे की रोटी खाई और अपने साथियो को भी दी, जो परमेश्वर के समक्ष चढाई गई थी और जिसको पुरोहित को छोड कोई नही खा सकता था। यह काम भी तो नियम के विरुद्ध था।" 5 फिर यीशु ने कहा, "मैं विश्राम दिन का भी स्वामी हू।"

6 एक अन्य विश्राम दिन पर यीशु आराधनालय मे शिक्षा दे रहे थे। वहा एक व्यक्ति था जिसका दाहिना हाथ सूख गया था। 7 फरीसी लोग और व्यवस्था की शिक्षा देने वाले बडे ध्यान मे देख रहे थे कि यीशु विश्राम के दिन मे उस व्यक्ति को अच्छा करेंगे या नही। वे उन पर दोष लगाने के लिये कोई कारण ढूंढ रहे थे। 8 यीशु ने उनके विचारो को समझ लिया। उन्होने सूखे हाथ वाले व्यक्ति से कहा, "आ, यहा खडा हो जहा सब तुझे देख सकें।" उस व्यक्ति ने यीशु के कहे अनुसार किया। 9 तब यीशु ने फरीसियों और व्यवस्था की शिक्षा देने वालो से कहा, "मैं तुम से एक प्रश्न पूछना चाहता हू। विश्राम के दिन मे भला करना उचित है या बुरा करना? प्राण को बचाना या नाश करना।" 10 उन्होने अपने चारो ओर खडे सब लोगो की ओर देखा तब उस व्यक्ति से कहा, "अपना हाथ बढा।" जैसे ही उसने अपना हाथ बढाया, उसका हाथ बिल्कुल ठीक हो गया। 11 यह देख कर लोग क्रोध से भर गए और आपस मे मिल कर उन्हें मार डालने का षड्यन्त्र रचने लगे।

12 इस घटना के बाद एक दिन यीशु प्रार्थना करने पहाड पर गए। उन्होने समस्त रात प्रार्थना की। 13 सवेरा होते ही उन्होंने अपने शिष्यों को बुलाया और उनमें से बारह को अपने साथ रहने के लिये चुना (वे "प्रेरित" या "प्रचारक" नियुक्त हुए।) 14, 15, 16 उनके नाम इस प्रकार हैं: शमौन (उन्होंने उसे पतरस भी कहा), अन्द्रियास (शमौन का भाई), याकूब, यूहन्ना, फिलिप्पुस, बरतुलमै, मत्ती, थोमा, याकूब (हलफई का पुत्र), शमौन (क्रान्तिकारी जेलोतेस राजनैतिक दल का उत्साही सदस्य), यहूदा (याकूब का पुत्र), यहूदा इस्करियोति (जिसने बाद मे यीशु से विश्वासघात किया)। 17, 18 जब वे पहाड़ से नीचे उतरे तो यीशु के साथ बडे समतल मैदान पर खडे हुए। उनके चारों ओर यीशु के अन्य शिष्य थे। बडी भीड उनको घेरे हुए थी। लोग यहूदिया, यरूशलेम, और उत्तर मे समुद्र तट पर बसे सूर और सैदा नगरो से आए थे। वे यीशु का वचन सुनने तथा अपनी बीमारियो से चगा होने के लिये आए थे। यीशु ने अनेक दुष्टात्माओ से ग्रसित लोगों को चगा किया। 19 सब यीशु को छूना चाहते थे, क्योंकि उनके छूने पर यीशु से सामर्थ निकलती थी और वे स्वस्थ्य हो जाते थे।

20 यीशु ने शिष्यो की ओर मुड कर उनसे कहा, "हे दीन लोगो, तुम धन्य हो, क्योकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है। 21 भूखे लोगो, तुम धन्य हो, क्योकि तुम तृप्त किए जाओगे। रोने वालो, तुम धन्य हो, समय आएगा जब तुम आनन्द से हंसोगे। 22 तुम धन्य हो, कि तुम मेरे हो इस कारण, लोग तुम से घृणा करेंगे, तुम्हे निकाल देंगे, तुम्हारा अपमान करेंगे, तुम्हारा नाम कलंकित करेंगे। 23 जब ऐसा हो, तो आनन्द करो। हां, खुशी से उछलो। क्योकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बडा प्रतिफल होगा। वहां तुम्हारे साथ ही प्राचीन समय के नबी भी होंगे, जिनके साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया गया था। 24 परन्तु हाय धनवानो! तुम दुखी होओगे क्योकि तुम यहा बहुत सुख भोग चुके। 25 तुम अभी भरपूर और धनी हो। एक समय

आएगा जब तुम भयंकर रीति से भूखे होगे। अभी तो निश्चिन्त होकर हंसते हो, तब रोओगे। 26 शोक तुम पर जो अभी लोगों की प्रशंसा पाते हो—क्योंकि झूठे नबियों को तो सदा प्रशंसा मिली है।

27 "तुम सब ध्यान से सुनो। अपने शत्रुओं से प्रेम रखो। जो तुम से घृणा करते है, उनकी भलाई करो। 28 जो तुम्हे श्राप देते है उनको आशीष दो। जो तुम्हारा अपमान करते हैं, उनके लिये प्रार्थना करो। 29 यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे, तो उसकी ओर दूसरा गाल भी फेर दो। यदि कोई तुम्हारी चादर छीने, तो साथ ही उसे अपना कुरता भी दे दो। 30 तुम्हारे पास जो कुछ हो, यदि कोई मांगे तो उसे दो और छीनी गई वस्तु को वापिस मांगने की चिन्ता मत करो। 31 तुम दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो, जैसा स्वयं चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ करें। 32 यदि तुम अपने प्रेम रखने वालो ही से प्रेम करो तो क्या बड़ी बात है? क्योंकि अधर्मी भी ऐसा ही करते हैं। 33 और यदि तुम ने उन्हीं का भला किया जो तुम्हारा भला करते है तो तुमने कौन सा अनोखा काम किया? पापी भी ऐसा करते हैं। 34 यदि तुमने उन्ही को उधार दिया जो वापिस कर सकें तो क्या अच्छा किया? दुष्ट से दुष्ट भी आपस मे वापिस पाने के उद्देश्य से उधार देते हैं। 35 अपने शत्रुओं से प्रेम रखो! उनकी भलाई करो! उन्हें उधार दो। इसकी चिन्ता मत करो कि वे तुम्हें वापिस नही लौटाएंगे। तब स्वर्ग मे तुम्हे बडा पुरस्कार मिलेगा और तुम्हारा व्यवहार परमेश्वर के पुत्रो के समान होगा: क्योकि परमेश्वर नाशुकरों और दुष्टो पर भी दया करता है। 36 जैसा परमेश्वर पिता दयालु है वैसे ही तुम भी दयालु बनो। 37 कभी दोष मत लगाओ नही तो तुम पर भी दोष लगाया जाएगा। दूसरो से दया का व्यवहार करो, तो वे भी तुमसे दया का व्यवहार करेंगे। 38 यदि दान दोगे तो तुम्हें भी दिया जाएगा। जैसा लोग नाप मे दबा दबा कर, हिला हिला कर अधिक से अधिक, भर भर कर नापते हैं, उसी प्रकार तुम्हे भी दिया जाएगा। तुम नापते समय चाहे छोटा नाप रखो या बडा, ठीक उसी नाप से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।"

39 यीशु ने उन्हें अपने उपदेश मे कई उदाहरण दिए: "क्या एक अन्धा किसी दूसरे अन्धे को मार्ग दर्शा सकता है? क्या वे दोनों ही गड्ढे मे नही गिर जाएगे? 40 क्या एक शिष्य का ज्ञान उसके गुरु से बढ़कर हो सकता है? हाँ, यदि वह शिक्षा प्राप्त करे तो उसके बराबर हो सकता है। 41 जब तेरी ही आंख मे लकड़ी का बडा लट्ठा है तो फिर तू अपने भाई की आंख के तिनके—उसके दोष को क्यों देखता है? 42 जब तेरी ही आंख में लकडी का बडा लट्ठा है तब तू उससे कैसे कह सकता है, 'भाई आओ मैं तुम्हारी आंख का तिनका निकाल दूं,' पाखण्डी! पहले अपनी आंख का लट्ठा तो निकाल ले तब तू अपने भाई की आंख के तिनके को देख कर निकाल सकेगा। 43 अच्छे वृक्ष मे खराब फल नहीं लगते और न ही खराब वृक्ष मे अच्छे फल लगते हैं। 44 प्रत्येक वृक्ष की पहचान उसके फल से होती है। बबूल मे अंजीर नही फलते न ही कटीली झाड़ियों मे अंगूर फलते हैं। 45 अच्छा व्यक्ति अपने अच्छे हृदय से भले विचार निकालता है। बुरा व्यक्ति अपने खराब हृदय से बुरे विचार निकालता है। जो मन मे भरा रहता है वही विचार शब्दो मे कहा जाता है।

46 "जब तुम मेरी आज्ञा नही मानते तो तुम मुझे 'प्रभु' क्यो कहते हो? 47, 48 जितने मेरे पास आकर सुनते और मानते हैं, वे उस मनुष्य के समान है जिसने एक घर बनाया। उसने घर की नीव गहरी खोद कर चट्टान पर डाली। जब बाढ का पानी उस घर से टकराया तो वह स्थिर रहा क्योंकि मजबूत बना था। 49 किन्तु जितने सुनते और नही मानते हैं वे

उस मनुष्य के समान हैं जिसने बिना नींव डाले ही अपना घर बनाया। जब बाढ़ की लहरें उस घर से टकराईं तो वह गिर कर नष्ट हो गया।"

7 1 यीशु उपदेश समाप्त करके कफरनहूम नगर को चले गए। 2 वहां एक रोमी-सेना-पति का नौकर बीमार था। वह मरने पर था। सेनापति उससे प्रेम रखता था 3 जब सेनापति ने यीशु के विषय में सुना तो यहूदियों के कुछ सम्मानित धर्म सेवकों को यीशु के पास यह आग्रह करने भेजा कि यीशु आएं और उसके नौकर को अच्छा करें। 4 उन्होंने आकर यीशु से बड़ी विनती की, कि वह उनके साथ जाकर उस व्यक्ति की सहायता करें। उन्होंने कहा, "वह सेनापति सचमुच ही इस योग्य है कि आप उसकी सहायता करें। 5 क्योंकि वह यहूदियों से प्रेम रखता है और उसने दान देकर हमारा आराधनालय बनाया है।" 6, 7, 8, यीशु उन लोगों के साथ हो लिये किन्तु जब वह उसके घर के समीप पहुंचे तो सेनापति ने अपने कुछ मित्रों को यह कहने भेजा, "हे प्रभु, आप मेरे घर आने का कष्ट न कीजिए। मैं इस योग्य नहीं हूं कि आप मेरे घर पधारें या मैं ही आप के दर्शन को आऊँ। आप वहीं से कह दीजिये और मेरा नौकर अच्छा हो जाएगा। मैं यह जानता हूं, क्योंकि मैं भी अपने से बड़े अधिकारियों के आधीन हूं, और मेरे अधिकार में भी दूसरे सैनिक हैं मुझे केवल इतना ही कहना पड़ता है, 'जाओ!' और वे जाते हैं या 'आओ!' तो वे आते हैं। जब मैं अपने नौकर से कहता हूं, 'यह कर या वह कर,' तो वह उसे करता है। इसलिये केवल इतना ही कहिये 'अच्छा हो जा।' और मेरा नौकर फिर स्वस्थ हो जाएगा।" 9 यीशु को बड़ा आश्चर्य हुआ। भीड़ की ओर देखकर उन्होंने कहा, "इस्राएल के सब यहूदियों में मैंने आज तक एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं देखा जिसमें इस प्रकार का विश्वास हो।" 10 सेनापति के मित्र घर लौट गए। उन्होंने देखा कि नौकर बिल्कुल स्वस्थ हो गया है।

11 इस घटना के कुछ दिन बाद यीशु अपने शिष्यों के साथ नाईन नामक नगर को गए। सदा के समान बड़ी भीड़ भी उनके साथ थी। 12 जैसे ही वह नगर के द्वार पर पहुंचे उन्होंने देखा कि लोग एक मृतक युवक के शव को लिए जा रहे हैं। मृतक अपनी विधवा माँ का एकलौता पुत्र था। और उसके साथ नगर के अनेक शोक मनाने वाले भी थे। 13 विधवा को देख कर यीशु का हृदय सहानुभूति से भर गया। उन्होंने कहा, "मत रो।" 14 तब यीशु ने आगे बढ़ कर अर्थी को छुआ। अर्थी उठाने वाले रुक गए। यीशु ने कहा, 'हे जवान फिर जीवित हो जा।' 15 युवक उठ बैठा और अपने पास खड़े लोगों से बातें करने लगा। यीशु ने युवक को उसकी माँ को सौंप दिया। 16 लोगों पर बड़ा भय छा गया। उन्होंने परमेश्वर की प्रशंसा करके कहा, "हमारे बीच में एक सामर्थी नबी उत्पन्न हुआ है। हमने आज परमेश्वर का कार्य देखा है।" 17 उनके इस कार्य की खबर यहूदा प्रदेश के एक छोर से दूसरे छोर तक और सीमा के आस पास के शहरों में भी फैल गई।

18 यीशु के इन सब कामों के विषय में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के शिष्यों ने यूहन्ना को बताया। 19 यूहन्ना ने सब सुन कर अपने शिष्यों में से दो को यीशु से पूछने भेजा, "क्या आप ही सचमुच मसीह हैं। या हम मसीह की प्रतीक्षा करें?" 20, 21, 22 दोनों शिष्य यीशु को ढूंढते हुए आए। यीशु उस समय लोगों को भिन्न भिन्न बीमारियों को अच्छा कर रहे थे। वह लगड़ों और अंधों को चंगाई दे रहे थे और दुष्ट आत्माओं को निकाल रहे थे। यीशु के समक्ष यूहन्ना के शिष्यों ने यही प्रश्न रखा। यीशु का उत्तर था: "यूहन्ना के पास जाओ और आज तुमने जो कुछ देखा और सुना है, उससे कह दो: अन्धे देखने लगे हैं। लंगड़े चलने लगे हैं। कोढ़ी स्वस्थ हो रहे हैं

बहरे सुनने लगे हैं। मृतक जीवित हो रहे हैं और गरीबों को शुभ संदेश सुनाया जा रहा है। 23 उससे कह दो, 'वह व्यक्ति धन्य है जो मुझ पर सदेह नहीं करता।'

24 शिष्यों के चले जाने पर यीशु ने भीड से यूहन्ना के विषय मे कहा। उन्होने पूछा, "यहूदिया के निर्जन स्थान मे तुम किस व्यक्ति को देखने गए थे? क्या तुमने उसे घास के समान कमजोर पाया, जो हवा के प्रत्येक झोके से हिलती रहती है? 25 क्या तुमने उसे बहुमूल्य वस्त्र पहिने देखा? नहीं, विलास का जीवन बिताने वाले लोग तो महलो में रहते हैं, निर्जन स्थानों मे नहीं। 26 परन्तु क्या तुम ने किसी भविष्यद्वक्ता को देखा? हा। भविष्यद्वक्ता से भी महान व्यक्ति को। 27 इसी व्यक्ति के बारे में धर्मशास्त्र मे लिखा है, 'देखो, मैं अपना दूत तुझ से पहले भेजता हूँ कि वह तुम्हारे लिए मार्ग तैयार करे।' 28 मानव जाति में कोई भी व्यक्ति यूहन्ना से श्रेष्ठ नहीं। परन्तु परमेश्वर के राज्य का छोटे से छोटा व्यक्ति भी यूहन्ना से श्रेष्ठ है।" 29 जिन लोगों ने यूहन्ना का उपदेश सुना था,[1] उनमे अत्यन्त दुष्ट व्यक्ति भी सहमत थे कि परमेश्वर की शर्ते उचित हैं और उन्होंने यूहन्ना से बपतिस्मा लिया था। 30 परन्तु फरीसियों और मूसा की व्यवस्था सिखाने वालों ने बपतिस्मा नहीं लिया। उन्होने अपने लिए परमेश्वर के प्रबन्ध को अस्वीकार कर दिया। 31 यीशु ने प्रश्न किया, "मैं ऐसे व्यक्तियों के लिये क्या कह सकता हू? मैं किससे उनकी तुलना करू? 32 वे उन बालको के समान है जो असन्तुष्ट होकर अपने मित्रो से कहते हैं, 'यदि हम शादी का खेल खेलें तो तुम्हे अच्छा नही लगता और यदि मृत्यु का खेल खेलें,[2] तो भी तुम पसन्द नही करते। 33 यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, बिना रोटी खाए और मदिरा पीए रहता था और तुमने उसके लिए कहा, 'वह अवश्य पागल होगा'।[3] 34 परन्तु मैं खाता पीता हू और तुम कहते हो कि, 'यीशु कितना पेटू और पियक्कड है! पतित जनों से उसकी मित्रता है।'[4] 35 मुझे निश्चय मालूम है कि तुम चाहे कितनी भी असगत बातें क्यो न कहो, उन्हे सदा सच ठहराने की कोशिश करोगे।"[5]

36 एक फरीसी ने यीशु को अपने घर पर भोजन का निमन्त्रण दिया। यीशु उसके घर गए और भोजन करने बैठे। 37 इसी समय एक वेश्या ने सुना कि यीशु वहा हैं। वह सगमरमर के सुन्दर पात्र मे बहुमूल्य इत्र भर कर लाई। 38 अन्दर जाकर वह यीशु के पैरों के पास घुटने टेक कर रोने लगी। जब उसके आसुओं से यीशु के पैर गीले हो गए तो उसने अपने बालों से उन्हे पोंछा और पैरों को बारम्बार चूम कर उन पर इत्र मला। 39 जिस फरीसी ने यीशु को आमन्त्रित किया था, वह मन ही मन सोचने लगा "इससे प्रकट होता है कि यीशु कोई भविष्यद्वक्ता नहीं है, क्योंकि यदि उनको परमेश्वर ने सचमुच भेजा है, तो वह अवश्य समझ लेते कि यह स्त्री कितनी पापिन है।" 40 यीशु ने उस फरीसी के मन के विचार जान कर कहा, "शमौन, मुझे तुझ से कुछ कहना है।" शमौन ने कहा, "गुरुजी, कहिये।" 41 यीशु ने उसे एक कहानी बताई: "एक व्यक्ति ने दो जनों को उधार दिया—एक को पाच हजार रुपया और दूसरे को पाच सौ रुपया। 42 दोनो मे से कोई भी कर्ज नही चुका सका, इसलिये उसने दया कर दोनों को क्षमा कर दिया और रुपया वापिस नही लिया। बताओ, दोनो में से कौन उसे सबसे अधिक प्रेम करेगा?" 43 शमौन ने उत्तर दिया, "मेरे विचार से, वही जिसका सबसे अधिक कर्ज माफ हुआ।" यीशु ने

[1] मूलत "चुगी लेने वालो ने।" [2] मूलत "हमने तुम्हारे लिए बासुरी बजाई और तुम न नाचे, हमने विलाप किया, और तुम न रोए।" [3] मूलत "उसमे दुष्टात्मा है।" [4] मूलत "चुगी लेने वालो का और पापियो का मित्र।"
[5] मूलत "ज्ञान अपनी सब सन्तानो से सच्चा ठहराया गया है।"

कहा, "ठीक है।" 44 तब यीशु ने स्त्री की ओर फिर कर शमौन से कहा, "देख, यह स्त्री घुटनों पर है। मैं तेरे घर आया और तूने मेरे पैरों की धूल धोने के लिए मुझे पानी तक न दिया। लेकिन इसे देख! इसने मेरे पैरों को अपने आंसुओं से धोया और उन्हें अपने बालों से पोंछा है। 45 रीति के अनुसार तू ने चूम कर मेरा स्वागत नहीं किया, परन्तु जब से मैं आया, तब से इस स्त्री ने मेरे पैरों को बार बार चूमा है। 46 तू ने रीति के अनुसार मेरे सिर पर जैतून का तेल नहीं मला, परन्तु इस स्त्री ने मेरे पैरों पर इत्र मला है। 47 इसलिये इस स्त्री के पाप—जो बहुत हैं—क्षमा हुए क्योंकि उसने मुझे अधिक प्यार किया परन्तु जिसके कम पाप क्षमा किये गए, वह कम प्यार करता है।" 48 यीशु ने स्त्री से कहा, "तेरे पाप क्षमा हुए।" 49 यीशु के साथ भोजन करने को बैठे हुए लोग आपस में कहने लगे, "यह व्यक्ति अपने आप को क्या समझता है जो पापों को भी क्षमा करता फिरता है?" 50 यीशु ने स्त्री से कहा, "तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया, शान्ति से जा।"

8 1 इसके बाद यीशु ने परमेश्वर के राज्य का शुभ संदेश सुनाने के लिए गलील प्रदेश के नगरों और गावों की यात्रा शुरु की। 2 उन्होंने अपने बारह शिष्यों को भी साथ लिया। उनके साथ कई स्त्रिया भी हो लीं जिनमें से उन्होंने अशुद्ध आत्माओं को निकाला था और जिनको बीमारी से स्वस्थ किया था। इन स्त्रियों में मरियम मगदलीनी (जिसमें से यीशु ने सात अशुद्ध आत्माओं को निकाला था), 3 खूज़ा की पत्नी योअन्ना (खूज़ा राज्यपाल हेरोदेस का गृह प्रबन्धक और उसके महल और घरेलू मामलों में अधिकारी था), सूसन्नाह और अन्य स्त्रिया थीं। वे अपनी सम्पत्ति से यीशु और उनके शिष्यों की सहायता करती थीं।

4 एक दिन यीशु का वचन सुनने के लिये बड़ी भीड़ इकट्ठी हो रही थी। कुछ लोग दूसरे शहरों से आ रहे थे। वे अभी मार्ग ही में थे कि यीशु ने उन्हें एक उदाहरण सुनाया। 5 "एक किसान बीज बोने के लिये अपने खेत को गया। जब उसने जमीन पर बीज छिड़के तो कुछ मार्ग पर गिरे और पैरों से रौंदे गए। और चिड़ियों ने आकर उन्हें चुग लिया। 6 कुछ बीज पथरीली भूमि पर गिरे। वह बीज उगने लगे, परन्तु भूमि में नमी न होने के कारण सूख कर मर गए। 7 कुछ बीज कटीली झाड़ियों में गिरे और उनमें अंकुर भी निकले, परन्तु वे झाड़ियों के बीच में दब गए। 8 कुछ बीज उपजाऊ भूमि पर गिरे और उन में जितना बोया गया था, उसका सौ गुणा अधिक अन्न उत्पन्न हुआ।" (उदाहरण देते समय यीशु ने कहा, "जो सुन सकता है, वह सुन ले!")

9 यीशु के शिष्यों ने उनसे प्रश्न किया कि इस उदाहरण का क्या अर्थ है। 10 उन्होंने उत्तर दिया, "तुम्हें परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को समझने की बुद्धि दी गई है। उदाहरण देकर साधारण लोगों को समझाया जाता है इसलिये कि वे देखते और सुनते हुए भी समझते और सीखते नहीं हैं।" 11 इसका अर्थ इस प्रकार है: बीज, लोगों को सुनाया गया परमेश्वर का सदेश है। 12 मार्ग पर गिरे हुए बीज ऐसे लोगों को दर्शाते हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते है परन्तु उन वचनों को शैतान चुरा ले जाता है। शैतान उन्हे विश्वास करने और उद्धार पाने से रोकता है। 13 पथरीली जमीन वाले बीज ऐसे लोगों को दर्शाते हैं जो सन्देश सुनकर उसे आनन्द से ग्रहण कर लेते हैं। परन्तु सन्देश उनके हृदय में पहुंचकर कभी जड़ नहीं पकड़ता, न ही बढ़ता है। और इसलिये जब परीक्षा का समय आता है तो उनका विश्वास समाप्त हो जाता है। 14 कटीली झाड़ियों में गिरे बीज उन लोगों को दर्शाते हैं जो परमेश्वर का वचन सुन कर विश्वास करते

है। परन्तु कुछ दिन बाद ही जीवन की चिन्ताओं, धन, कार्यों और भोग-विलास के बीच फंस कर उनका विश्वास समाप्त हो जाता है। ऐसे लोग कभी दूसरों की सहायता नहीं कर सकते कि वे भी शुभ सन्देश पर विश्वास करें। 15 उपजाऊ भूमि, ईमानदार और अच्छे हृदय वाले व्यक्तियों को दर्शाती है, जो परमेश्वर का वचन सुनते और उसका पालन करते हैं वे दूसरों को वचन सुनाते हैं और दूसरे भी उनके द्वारा विश्वास कर लेते हैं।"

16 (किसी और समय यीशु ने प्रश्न किया,[1]) "क्या किसी ने कभी सुना है कि कोई व्यक्ति दिया जलाकर उसे ढाक देता है जिससे उजाला न हो? नहीं, लोग दिया जला कर ऐसी ऊँची जगह पर रखते हैं जहां से भीतर आने वालों को प्रकाश अच्छी तरह मिल सके। 17 यह इस बात का उदाहरण है कि किसी न किसी दिन (मनुष्य के हृदय की) सब बातें प्रकाश में आएंगी और सब के सामने प्रकट हो जाएंगी। 18 इसलिये ध्यान से सुनो, क्योंकि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा। जिसके पास नहीं है, उस से वह भी ले लिया जाएगा जिसे वह अपना समझता है।"

19 एक दिन यीशु की माँ और उनके भाई उनसे मिलने आए। वे भीड़ के कारण उस घर में नहीं पहुंच सके जिसमें यीशु थे। 20 लोगों ने जब यीशु से कहा, "आपकी माता और भाई आप से मिलने के लिये बाहर खड़े हैं।" 21 तो यीशु ने कहा, "वे ही मेरी मां और मेरे भाई हैं, जो परमेश्वर का सन्देश सुन कर पालन करते हैं।"

22 एक दिन यीशु और उनके शिष्य नाव पर सवार हुए। यीशु ने शिष्यों से कहा, "आओ, हम झील के उस पार चलें।" 23 जब वे नाव में आगे बढ़ रहे थे, तब यीशु सो गए। इतने में जोर की आंधी आई। आंधी इतनी भयकर हो गई कि नाव में पानी भरने लगा। शिष्यों के प्राण सकट में पड़ गए। 24 शिष्य जल्दी से यीशु के पास गए। उन्होंने यीशु को नींद से जगाया और चिल्लाने लगे, "स्वामी, स्वामी, हम डूब रहे हैं।" यीशु ने आंधी से कहा: "शान्त रह!" तुरन्त आंधी और लहरें थम गईं और जल शान्त हो गया। 25 यीशु ने शिष्यों से पूछा, "कहां है तुम्हारा विश्वास?" शिष्य भौचक्के रह गए। उन पर बड़ा भय छा गया। उन्होंने आपस में कहा, "न जाने यह कौन हैं कि आंधी और पानी की लहरें भी उनकी आज्ञा मानती हैं?"

26 वे गलील की झील पार करके उसके दूसरी ओर गिरासेन जिले में पहुंचे। 27 जब यीशु नाव से उतर रहे थे तो गदारा नहर से एक व्यक्ति उनसे मिलने आया। इस व्यक्ति में बहुत समय से दुष्टात्माएं समाई हुई थीं। वह नंगा घूमता था। वह घर में नहीं परन्तु कब्रस्थान में रहता था। 28 जैसे ही उसने यीशु को देखा, चिल्ला कर उनके सामने जमीन पर गिर पड़ा। उसने जोर से कहा, "हे महान परमेश्वर के पुत्र यीशु, आप मुझ से क्या चाहते हैं? मैं आपसे विनती करता हूँ, दया करके मुझे कष्ट न दीजिये।" 29 क्योंकि यीशु पहले ही दुष्टात्मा को उसे छोड़ने की आज्ञा दे रहे थे। दुष्ट आत्मा बार बार उस व्यक्ति को अपने वश में कर लेती थी। जिसके कारण जंजीर से बांधने पर भी वह उनको तोड़ डालता था और निर्जन स्थान में भाग जाता था। वह पूरी तरह दुष्ट आत्मा के अधिकार में था। 30 दुष्टात्मा से यीशु ने पूछा, "तेरा नाम क्या है?" उसने उत्तर दिया, "सेना," क्योंकि उस व्यक्ति में हजारों[2] दुष्ट आत्माएं समाई थीं। 31 दुष्टात्माएं बार बार यीशु से विनती कर रही थीं कि वह उनको अथाह गढ़हे में न भेजे। 32 पास की एक पहाड़ी पर सुअरों का एक

[1] देखिए, मत्ती 5 16 [2] सेना के एक दल में 6,000 सैनिक होते थे। यह पता नहीं कि दुष्टात्माओं के इस नाम द्वारा उनकी इतनी ही सख्या में होने का अर्थ था अथवा नहीं।

झुण्ड चर रहा था। दुष्ट आत्माओं ने विनती की कि यीशु उन्हे सुअरों के झुण्ड में जाने दें। यीशु ने उन्हे आज्ञा दे दी। 33 इसलिये वे उस व्यक्ति मे से निकल कर सुअरो मे समा गई। उनके समाते ही सुअरो का झुण्ड पहाडी के ढालू किनारे की ओर झपटा। वहा से वह नीचे झील मे गिर पडा और डूब गया। 34 चरवाहे घबरा कर वहा से भागे। वे आस पास के शहरों मे यह खबर फैलाते गए। 35 लोगो की भीड़ तुरन्त इस घटना को देखने के लिए आई। उन्होंने देखा—वह व्यक्ति जिसमे पहले दुष्ट आत्माएं थी, यीशु के पैरो के पास, कपडे पहने पूर्ण होश मे बैठा हुआ था। सब के चेहरों के रंग उड गए। 36 इस घटना को जिन्होंने अपनी आंखो से देखा था, वे दूसरों को बताने लगे कि दुष्ट आत्मा वाला व्यक्ति कैसे अच्छा हुआ। 37 तब सब ने यीशु से विनती की, कि वह उन्हे छोड कर चले जाएं (क्योकि उन पर बडा भय छा गया था)। इसलिये यीशु नाव पर चढ कर झील की दूसरी ओर वापिस गए। 38 यीशु ने जिस व्यक्ति मे से दुष्ट आत्माओ को निकाला था उसने यीशु से बहुत विनती की कि मुझे अपने साथ ले चलिये परन्तु यीशु ने उसे मना कर दिया। 39 उन्होंने कहा, "तू अपने घर लौट जा। वहा जाकर लोगो को बता कि परमेश्वर ने तेरे लिये कितना अद्भुत कार्य किया है।" इसलिए वह लौट गया और नगर में जाकर सब को यीशु के महान आश्चर्य कर्म के बारे मे बताने लगा।

40 झील की दूसरी ओर लोगों ने हर्ष से यीशु का स्वागत किया। वे सब यीशु की राह देख रहे थे। 41 वहा याईर नामक एक व्यक्ति था। वह यहूदियों के आराधनालय का अगुवा था। वह यीशु के सामने घुटने टेक कर विनती करने लगा, "हे यीशु मेरे साथ मेरे घर चलिये।" 42 वहां याईर की बारह वर्ष की एकलौती बेटी मरने पर थी। यीशु भीड़ से घिरे उसके साथ जाने लगे।

43, 44 वे जा ही रहे थे कि एक स्त्री आई। वह चंगा होना चाहती थी। बारह वर्ष से धीरे धीरे उसका खून बह रहा था। उसका इलाज कोई नही कर सका था (यद्यपि उसने अपनी सारी जीविका वैद्यों पर खर्च कर दी थी)[३]। उस स्त्री ने पीछे से आकर यीशु के वस्त्र को छुआ और उसी क्षण उसका खून बहना बन्द हो गया। 45 यीशु ने पूछा, "मुझे किसने छुआ?" सब मुकरने लगे। पतरस ने कहा, "गुरुजी, आपको तो भीड़ चारों ओर से दबा रही है।" 46 यीशु ने उससे कहा, "नही, किसी ने जरूर मुझे जानबूझ कर छुआ है। क्योकि मुझे अनुभव हुआ कि मुझ मे से रोग दूर करने वाली शक्ति निकली।" 47 जब स्त्री ने समझ लिया कि यीशु को मालूम हो गया है तो वह थरथरा कर कांपने लगी। उसने यीशु के समक्ष घुटने टेके और बताया कि उसने उनको क्यों छुआ था और वह अब कैसे चगी हो गई है। 48 यीशु ने स्त्री से कहा, "बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे चगा किया है। शान्ति से जा।"

49 यीशु उस स्त्री से बातें कर ही रहे थे कि याईर के घर मे एक व्यक्ति यह सदेश लेकर आया, "आपकी बेटी इस ससार से कूच कर गई है। अब गुरुजी को कष्ट देने से कुछ भी लाभ नही।" 50 यीशु ने उसकी बात सुन कर लडकी के पिता से कहा, "मत डर। केवल मुझ पर विश्वास रख। वह ठीक हो जाएगी।" 51 जब वे घर पहुचे तो यीशु ने लड़की के माता पिता और पतरस, याकूब, यूहन्ना को छोड किसी को कमरे में नही आने दिया। 52 विलाप करने वालो से घर भरा था। यीशु ने कहा, "रोना बन्द करो। वह मरी नही है। वह तो सो रही है।" 53 यह सुनकर सब लोग हस कर यीशु का मज़ाक उडाने लगे, क्योकि सब जानते थे कि वह मर चुकी है। 54 यीशु ने

[३] यह वाक्यांश कुछ प्राचीन हस्तलिपियों में नही है।

लड़की का हाथ पकड़ा और कहा, "हे लड़की उठ।" 55 उसी क्षण उसका प्राण लौट आया। वह उठ कर बैठ गई। यीशु ने आज्ञा दी, "उसे खाने के लिए कुछ दो।" 56 लड़की के माता पिता अत्यन्त खुश हो गए परन्तु यीशु ने कहा कि वे इस घटना का वर्णन किसी से न करें।

9 1 एक दिन यीशु ने अपने बारह प्रेरितों को बुला कर उन्हें बीमारियों और दुष्ट आत्माओं को दूर करने की सामर्थ और अधिकार दिए। 2 फिर उन्हें वहां से विदा किया कि वे परमेश्वर के राज्य का शुभ सन्देश सब को सुनाएं और बीमारों को स्वस्थ करें। 3 यीशु ने शिष्यों को सिखाया, "यात्रा के लिए कुछ भी न लो, न लाठी, न थैली, न भोजन, न रुपये और न पहनने के लिए दूसरा जोड़ा वस्त्र। 4 हर गांव में केवल एक ही घर में पाहुन रहना। 5 "यदि वहां के लोग तुम्हारी न सुनें, तो स्थान छोड़ देना। जाते समय अपने पैर की धूल झाड़ लेना, जिससे वे जान लें कि परमेश्वर का क्रोध उन पर है"।[1] 6 शिष्यों ने अपनी यात्रा शुरू की। वे गांव गांव जाकर शुभ सन्देश सुनाते और बीमारों को अच्छा करते रहे।

7 जब राज्यपाल हेरोदेस[2] ने यीशु द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों के बारे में सुना तो वह व्याकुल हो गया। क्योंकि कुछ लोग कहते थे, "वह बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना है जो फिर जी उठा है।" 8 दूसरे कहते थे, "वह एलिय्याह या प्राचीन काल के नबियों में से कोई है, जो फिर जी उठा है।" इन अफवाहों की सब जगह चर्चा थी। 9 हेरोदेस ने कहा, "मैंने यूहन्ना का सिर कटवाया था। फिर यह कौन है जिसके बारे में ऐसी अजीब कहानियां सुनता हूं ?" और वह यीशु को देखने की इच्छा करने लगा।

10 प्रेरितों ने लौट कर अपने द्वारा किए गए सब कामों का वर्णन यीशु से किया। तब यीशु उनके साथ बैतसैदा नगर को चुपके से जाने लगे। 11 परन्तु भीड़ को मालूम हो ही गया कि वह कहां जा रहे हैं और लोग उनके पीछे पीछे जाने लगे। यीशु ने उनका स्वागत करके, उनको परमेश्वर के राज्य की शिक्षा दी और बीमारों को अच्छा किया। 12 सूर्यास्त के समय बारह शिष्यों ने यीशु के पास आकर विनती की कि वे सब लोगों को आस पास के गांवों और बस्तियों में भेज दें ताकि वे अपने लिए भोजन और रात में विश्राम करने का प्रबन्ध कर लें। उन्होंने कहा, "इस सुनसान स्थान में तो खाने को कुछ भी नहीं है।" 13 यीशु ने उन से कहा, "तुम उन्हें खिलाओ।" शिष्यों ने कहा, "यह कैसे हो सकता है ? हमारे बीच केवल पांच रोटियां और दो मछलियां ही हैं। या क्या आप चाहते हैं कि हम जाकर इतनी बड़ी भीड़ के लिए भोजन खरीदें ?" 14 क्योंकि वहां लगभग पांच हजार पुरुष थे। यीशु ने उत्तर दिया, "उनसे कह दो कि वे जमीन पर पंक्ति बना कर बैठ जाएं। एक एक पंक्ति में लगभग पचास पचास बैठें।" 15 शिष्यों ने ऐसा ही किया। उन्होंने सब को बैठा दिया। 16 यीशु ने पांच रोटियां और दो मछलियां हाथ में लीं। फिर उन्होंने स्वर्ग की ओर देखा और धन्यवाद दिया। तब वह रोटियां तोड़ तोड़ कर शिष्यों को देने लगे और शिष्य लोगों को। 17 प्रत्येक ने पेट भर कर खाया तौभी बचे भोजन से बारह टोकरियां भर गईं। 18 एक दिन यीशु एकान्त में प्रार्थना कर रहे थे। उनके शिष्य भी साथ थे। यीशु ने शिष्यों से पूछा, "मैं कौन हूं, इसके बारे में लोग क्या कहते हैं ?" 19 उन्होंने उत्तर दिया, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला या शायद एलिय्याह या प्राचीन काल के भविष्यद्वक्ताओं में से जी उठा हुआ कोई एक।" 20 यीशु ने फिर पूछा, "तुम्हारा क्या कहना है ? मैं कौन हूं ?" पतरस ने उत्तर दिया,

[1] मूलतः "कि उन पर गवाही हो।" [2] मूलतः "चौथाई का राजा हेरोदेस।"

"आप परमेश्वर के मसीह हैं।" 21 यीशु ने शिष्यों को कड़ी आज्ञा दी कि वे यह बात किसी को न बताएं। 22 उन्होंने कहा, "क्योंकि मसीह को अर्थात मुझको बहुत दुःख उठाना होगा। यहूदी अगुवे, प्राचीन, महापुरोहित और व्यवस्था की शिक्षा देने वाले मेरा विरोध करेंगे। वे मुझे तुच्छ जान कर मार डालेंगे, परन्तु तीसरे दिन मैं फिर जी उठूंगा।" 23 यीशु ने सब लोगों से कहा, 'यदि कोई मेरा शिष्य होना चाहे तो उसे अपनी इच्छाओं और सुविधाओं को छोड़ना होगा। उसे हर दिन क्रूस उठा कर मेरा अनुसरण करना होगा। 24 जो मेरे कारण अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा, परन्तु जो अपना प्राण बचाए रखने में लगा रहेगा, वह उसे खोएगा। 25 यदि कोई मनुष्य समस्त जगत को प्राप्त करे परन्तु अपने आप को नष्ट कर दे तो उसे क्या लाभ होगा? 26 जब मैं अर्थात मसीह अपने वैभव और पिता तथा पवित्र दूतों के तेज में आऊंगा, तो उन सब से लजाऊंगा जो यहां मुझ से और मेरी बातों से लजाते हैं। 27 किन्तु यह सत्य है—यहां जितने भी खड़े हैं उनमें से अनेक व्यक्ति तब तक न मरेंगे जब तक परमेश्वर के राज्य को न देख लेंगे।"

28 आठ दिन बाद यीशु अपने साथ पतरस, याकूब और यूहन्ना को लेकर प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर गए। 29 जब वह प्रार्थना कर रहे थे तब उनका मुख तेजोमय[3] हो गया। उनका वस्त्र इतना श्वेत हो गया कि आंखें चौंधियाने लगीं। 30 दो व्यक्ति यीशु से बातें करने लगे। वे मूसा और एलिय्याह थे। 31 उनका रूप बड़ा तेजस्वी था और देखने में सुन्दर मालूम होता था। वे यीशु की मृत्यु के बारे में बातें कर रहे थे, जो यरूशलेम में होने वाली थी और परमेश्वर के प्रबन्ध अनुसार थी। 32 पतरस और उसके साथी अब तक सो रहे थे। जब जागे तो उन्होंने यीशु को उनके तेज और महिमा में देखा और दो पुरुषों को उनके साथ खड़े पाया। 33 जब वे उनके पास से जाने लगे, तो पतरस अभी भी घबड़ाए हुए बिना सोचे समझे बोलने लगा, "स्वामी, अच्छा होगा यदि हम यहां रहें। हम तीन मण्डप बना लें—एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह के लिए।" 34 पतरस यह कह ही रहा था कि एक बादल उन पर छा गया। बादल में घिर जाने से शिष्य बहुत डर गए। 35 उस बादल में से एक आवाज सुनाई दी, "यह मेरा पुत्र, मेरा चुना हुआ है, इसकी सुनो।" 36 जब आवाज बन्द हो गई तो यीशु वहां अकेले उनके साथ थे। शिष्यों ने जो कुछ देखा था, उसका वर्णन बहुत दिनों तक किसी से नहीं किया।

37 दूसरे दिन जब वे पहाड़ पर से उतरे, तो एक बड़ी भीड़ यीशु से मिली। 38 भीड़ के एक व्यक्ति ने पुकार कर कहा, "गुरुजी, मुझ पर दया कीजिए मेरा एकलौता पुत्र यही है। 39 उसमें दुष्ट आत्मा है जिसके कारण वह चीखता और कांपता है। उसके मुंह में फेन भर आता है। उसे चोट लगती है। दुष्ट आत्मा उसे छोड़ती ही नहीं है। 40 मैंने आपके शिष्यों से कितनी विनती की, कि उस दुष्ट आत्मा को निकालें परन्तु वे निकाल ही नहीं सके।" 41 यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "हे हठी और अविश्वासी लोगो। मैं और कितने दिन तुम्हारे साथ रहूंगा? उसे यहां बुलाओ।" 42 वे बालक को ला ही रहे थे कि दुष्ट आत्मा ने उसको मार्ग में पटका और उसका शरीर ऐंठने लगा। परन्तु यीशु ने दुष्ट आत्मा को उसमें से निकलने की आज्ञा दी और बालक को स्वस्थ कर उसके पिताजी को सौंप दिया। 43 परमेश्वर की इस सामर्थ्य को देखने से लोगों में भय छा गया। यीशु के अद्भुत कार्य से लोग अभी चकित ही थे कि यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, 44 "मेरी बातें सुनो और उन्हें

[3] मूलतः "उसके चेहरे का रूप बदल गया।"

याद रखो। मसीह अर्थात मैं लोगों के हाथ से पकड़वाया जाऊंगा।" 45 परन्तु शिष्य यीशु की बात का अर्थ नही समझे क्योंकि उन्हे इसका अर्थ समझने की शक्ति नही मिली थी। वे यीशु से अर्थ पूछने मे डरते भी थे।

46 एक दिन शिष्य आपस मे विवाद करने लगे कि उनमे कौन (आने वाले राज्य मे) सबसे बड़ा होगा। 47 परन्तु यीशु उनके विचारों को समझते थे इसलिए उन्होंने एक छोटे बालक को अपने पास खड़ा किया। 48 तब उनसे कहा, "जो ऐसे छोटे बालक को अपनाता है, वह मुझे अपनाता है। और जो मुझे अपनाता है वह परमेश्वर को, अपनाता है। तुम दूसरो को किस तरह अपनाते हो, वही तुम्हारे बड़प्पन की नाप है।" 49 यीशु के एक शिष्य यूहन्ना ने उनके पास आकर कहा, "स्वामी हमने एक व्यक्ति को देखा जो आपका नाम लेकर दुष्ट आत्मा निकाल रहा था। हमने उसे वैसा करने को मना किया। कुछ भी हो, वह हमारे झुण्ड का नही है।" 50 यीशु ने कहा, "तुमको ऐसा नही करना चाहिये था। क्योंकि जो तुम्हारे विरुद्ध नही है वह तुम्हारी ओर है।"

51 जब यीशु के स्वर्ग जाने के दिन निकट आए, तो उन्होंने यरुशलेम नगर जाने का दृढ़ निश्चय किया। 52 एक दिन उन्होंने अपने दूतो को पहले भेजा कि वे सामरी लोगों के एक गांव मे उनके रहने का प्रबन्ध करें। 53 परन्तु गाव वालो ने उन्हे अपने यहा रुकने से मना कर दिया। गाव के लोग उनमे कोई सम्बन्ध नही रखना चाहते थे क्योंकि यीशु यरुशलेम को जाने वाले थे।[4] 54 जब इस बात की सूचना मिली तो याकूब और यूहन्ना ने यीशु से कहा, "स्वामी, क्या हम उन्हे भस्म करने को स्वर्ग से आग गिरने की आज्ञा दें?" 55 परन्तु यीशु ने उनकी ओर देख कर उन्हे डाटा।[5] 56 तब वे दूसरे गाव को चले गए।

57 जब वे मार्ग पर थे तब किसी ने यीशु से कहा, "आप चाहे जहाँ भी जाएं, मैं आप के पीछे हो लूंगा।" 58 यीशु ने उत्तर दिया, "याद रख लोमड़ियो के पास भी रहने के लिए माद होती हैं परन्तु मेरे पास सिर रखने की भी जगह नही है। चिड़ियो के पास घोंसले है परन्तु मसीह[6] अर्थात मेरे पास ससार मे कोई घर नही है। 59 यीशु ने एक अन्य व्यक्ति को अपना शिष्य बनने के लिए निमंत्रण दिया। वह व्यक्ति तैयार हो गया परन्तु अपने पिता की मृत्यु तक वहाँ ठहरना चाहता था।[7] 60 यीशु ने उत्तर दिया, "जिन्होंने अनन्त जीवन नही पाया है, उन्ही को मृतको की चिन्ता करने दे,[8] तेरा कर्तव्य सारे संसार मे परमेश्वर के राज्य का शुभ सदेश सुनाना है।" 61 दूसरे ने कहा, "हाँ प्रभु मैं आऊंगा पर पहले मुझे घर वालो मे आज्ञा लेने दे।" 62 यीशु ने उससे कहा, "जो कोई हल पर हाथ रख कर पीछे देखे, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नही है।"

10 1 इसके बाद यीशु ने सत्तर अन्य शिष्यो को चुना और उन्हे दो दो के झुण्ड मे उन गाँवो और शहरो मे भेजा, जहाँ वह स्वय बाद मे जाना चाहते थे। 2 यीशु ने उनको शिक्षा दी: "पके खेत तो बहुत हैं परन्तु मजदूर बहुत कम हैं। इसलिए खेत के मालिक से विनती करो कि वह फसल काटने के लिए और भी मजदूर भेजकर तुम्हारी सहायता करे। 3 अब जाओ। याद रखो कि मैं तुम्हे मेम्नों

[4] जाति भेद का एक असामान्य उदाहरण (यूहन्ना 4 9) से तुलना कीजिए। यहूदी, सामरियों को "मिली-जुली जाति" कहते थे इस कारण सामरी उनसे चिढ़ते थे। [5] बाद के हस्तलेखो मे पद 55, 56 के साथ यह भी लिखा है, "तुम नही जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो। क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों के प्राणो को नाश करने नहीं बरन बचाने के लिए आया है।" [6] मूलत 'परमेश्वर का पुत्र।" [7] मूलत "घर के लोगो से विदा हो जाऊं।"
[8] मूलत "या जो आत्मिक रूप से मरे हुए है, उन्हें ही अपने मरे हुओं की चिन्ता करने दे।"

के समान भेड़ियों के बीच में भेज रहा हूँ। 4 अपने साथ न कुछ रुपये लो न थैली और न दूसरा जोड़ी जूता रखो और मार्ग में समय नष्ट मत करो। 5 "जब किसी घर में जाओ सबसे पहले उन्हें आशीर्वाद दो। 6 यदि उस घर के लोग आशीर्वाद के योग्य होंगे तो आशीर्वाद उन पर ठहरेगा, नहीं होंगे, तो तुम्हारा आशीर्वाद तुम्हारे पास लौट आएगा। 7 जब तुम किसी गाँव में जाओ, तो रहने के लिए एक घर से दूसरे घर में मत हटना। एक ही घर में ठहरना। जो कुछ तुम्हारे सामने परोसा जाए, उसे बिना प्रश्न किए खाना। पहुनाई लेने में संकोच मत करना, क्योंकि मजदूर को उसका वेतन मिलना ही चाहिए। 8, 9 यदि किसी नगर में तुम्हारा स्वागत किया जाए तो इन दो नियमों पर चलना: (1) जो तुम्हें परोसा जाए उसे खाना। (2) बीमारों को स्वस्थ करना और अच्छा करते समय कहना, 'परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बहुत निकट है।' 10 यदि किसी नगर में तुम्हारा स्वागत न हो तो उसके बाजारों में व सड़कों पर जाकर कहना, 11 'हम तुम्हारे शहर की धूल अपने पैर से झाड़ते हैं, ताकि यह समझ लो कि तुम्हारा नाश होने वाला है। 12 न्याय के दिन इस शहर की तुलना में सदोम जैसे दुष्ट शहर की दशा अधिक अच्छी होगी। 13 हे खुराजीन और बैतसैदा शहरो! तुम पर हाय! तुम्हारा अन्त विनाश है। क्योंकि जो आश्चर्य-कर्म मैंने तुम्हारे लिए किए, वे सूर और सैदा[1] शहरों के निवासियों के लिए किए जाते, तो वे बहुत पहले ही अपने मन का पछतावा दर्शाने के लिए सिर पर राख फेंकते और टाट ओढ़ते। 14 हाँ, सूर और सैदा के लोगों को न्याय के दिन तुमसे कम सजा मिलेगी। 15 और हे कफरनहूम के लोगों मैं तुम्हारे लिए क्या कहूं? क्या तुम स्वर्ग तक ऊंचे किए जाओगे? कभी नहीं। तुम नरक में उतारे जाओगे!" 16 यीशु ने शिष्यों से फिर कहा, "जो तुम्हें ग्रहण करते हैं वे मुझे ग्रहण करते हैं। और जो तुम्हें अस्वीकार करते हैं वे मेरा तिरस्कार करते हैं। और जो मेरा तिरस्कार करते हैं वे परमेश्वर का, जिसने मुझे भेजा, तिरस्कार करते हैं।"

17 जब सत्तर शिष्य लौटे, तो आनन्द से यीशु को बताने लगे, "आपका नाम लेने से दुष्ट आत्माएं भी हमारी बात मानती हैं।" 18 यीशु ने उनसे कहा, "मैंने शैतान को स्वर्ग से बिजली के समान गिरते देखा है। 19 मैंने तुम्हें शैतान की सब शक्तियों पर अधिकार दिया है। तुम साँपों और बिच्छुओं के बीच चल कर उन्हें कुचल सकोगे। किसी से तुम्हारी हानि न होगी। 20 तौभी महत्व की बात यह नहीं कि दुष्ट आत्माएं तुम्हारी मानती हैं, परन्तु यह कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।"

21 तब प्रभु यीशु, पवित्र आत्मा के आनन्द से भर गए। उन्होंने कहा "हे पिता! स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी! मैं आप को धन्यवाद देता हू कि आप ने इन बातों को संसार की दृष्टि में बुद्धिमानों से छिपाए रखा और ऐसों पर प्रकट किया है जो छोटे बच्चों के समान भोले भाले हैं। हाँ, हे पिता! तेरा धन्यवाद हो क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा।" 22 यीशु ने आगे कहा, "मेरे पिता ने मुझे अपना सब कुछ सौंप दिया है। पिता के अतिरिक्त पुत्र को कोई नहीं जानता। और न पुत्र को पिता के अतिरिक्त कोई जानता है, केवल वे लोग ही पिता को जान सकते हैं जिन पर पुत्र उन्हें प्रकट करता है।" 23 यीशु ने बारह शिष्यों की ओर फिरकर कहा, "तुम धन्य हो कि तुम ने यह सब देखा है। 24 क्योंकि जिन बातों को तुम देखते और सुनते हो उनको प्राचीन काल के अनेक भविष्य-द्वक्ता और राजा देखना और सुनना चाहते थे। परन्तु ऐसा नहीं हो सका।" 25 एक दिन एक व्यक्ति यीशु के पास आया। वह धर्मशास्त्र का

[1] ये शहर अपनी बुराई के कारण परमेश्वर के न्याय से नष्ट हुए। इस घटना का वर्णन बाइबल की यहेजकेल 26-38 अध्यायों में पढ़िये।

ज्ञाता था। वह परखना चाहता था कि शास्त्र के अनुसार यीशु ठीक उत्तर देते हैं या नहीं। उसने पूछा, "गुरुजी, यदि कोई व्यक्ति शाश्वत जीवन पाना चाहता है तो उसको क्या करना चाहिए?" 26 यीशु ने उत्तर दिया, "उसके प्रति धर्मशास्त्र में क्या लिखा है, तू तो शास्त्री है ?" 27 उस व्यक्ति ने कहा, "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सम्पूर्ण हृदय, सम्पूर्ण प्राण, सम्पूर्ण शक्ति और सम्पूर्ण मन से प्रेम रख। जैसे तू स्वयं से प्रेम रखता है वैसे ही अपने पड़ोसी से प्रेम रख।" 28 यीशु ने उस व्यक्ति को बताया, "ठीक है। यही कर तो तू सदा काल तक जीवित रहेगा।" 29 (धर्म शास्त्री के मन में किसी विशेष जाति के प्रति कम प्रेम था)[2] इसे उचित ठहराने के विचार से उसने पूछा, "कौन से पड़ोसी से ?" 30 यीशु ने उदाहरण के द्वारा उसे उत्तर दिया, "एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो नगर जा रहा था। वह डाकुओं के हाथ में पड़ गया। डाकुओं ने उसके वस्त्र और रुपये लूट लिये और उसे मार पीट कर सड़क के किनारे अधमरा छोड़कर भाग गए। 31 संयोग से एक यहूदी पुरोहित उस रास्ते से आया। उसने उस व्यक्ति को वहां पड़ा देखा तौभी कतरा कर आगे बढ़ गया। 32 यहूदी मन्दिर का एक सेवक[3] भी वहां से निकला, उसने भी उस घायल व्यक्ति को देखा और वह भी कतरा कर चला गया। 33 परन्तु सामरिया प्रान्त का एक सामरी निवासी जिसे लोग तुच्छ[4] समझते थे वहां से निकला। जब सामरी ने उसे देखा, तो उस पर बहुत तरस खाया। 34 वह उसके पास गया। उसने उसकी चोटों पर तेल मला और दवा-दारू की, तब पट्टियां बांधी फिर उसने अधमरे व्यक्ति को अपने गधे पर चढ़ाया और सराय तक स्वयं उसके साथ साथ चला। सराय में रात भर रह कर उसने उसकी सेवा की।[5] 35 अगले दिन उसने उसे दो दिन की मजदूरी[5] दी और उससे घायल की सेवा करने के लिए कहा, यदि उसका खर्च इन रुपयों से अधिक होगा, तो मैं लौटने पर तुमको चुका दूंगा। 36 अब बता उन तीनों व्यक्तियों में से उसका पड़ोसी कौन है जो डाकुओं के हाथ पड़ गया था ?" 37 धर्म शास्त्री ने उत्तर दिया, "जिसने उस पर दया की।" तब यीशु ने कहा, "हां, ठीक है। अब जा और तू भी वैसा ही कर।"

38 यीशु और शिष्यों ने यरूशलेम की ओर अपनी यात्रा जारी रखी। वे एक गांव में पहुंचे, उस गांव की मार्था नामक स्त्री ने उनको अपने घर में ठहराया। 39 उसकी बहन मरियम यीशु के चरणों के पास बैठ कर यीशु की बातें सुनने लगी। 40 मार्था बहुत जल्दी घबरा जाने वाली स्त्री थी। उसे तो भोजन तैयार करने की चिन्ता थी। उसने यीशु के पास आकर कहा, "प्रभु, क्या यह ठीक है कि मेरी बहन यहां बैठी रहे और मैं घर का सारा काम काज करूं ? उससे कहिये कि आकर मुझे सहायता दे।" 41 परन्तु प्रभु यीशु ने कहा, "मार्था (प्रिय बहन[6]) तुम व्यर्थ अनेक बातों की चिन्ता करके घबराती हो। 42 केवल एक ही बात की चिन्ता आवश्यक है। मरियम ने उस उत्तम भाग को चुन लिया है जो उससे कभी छीना न जाएगा।"

11 1 एक दिन यीशु किसी स्थान पर प्रार्थना कर रहे थे। जब वह प्रार्थना कर चुके तो उनके शिष्यों में से एक ने आकर कहा, "प्रभु, जैसे यूहन्ना ने अपने शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाया है वैसे ही आप भी हमें सिखाइए।" 2 यीशु ने उन्हें यह प्रार्थना सिखाई : "हे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य शीघ्र

[2] "अपने तईं धर्मी ठहराने की इच्छा से।" [3] मूलत: "लेवी।" [4] मूलतः "एक सामरी।" सामरिया प्रदेश के लोगों को यहूदी तिरस्कृत समझते थे और सामरी भी यहूदियों को तुच्छ जानते थे। इसका कारण ऐतिहासिक था। [5] दो दिनार अर्थात एक दिनार एक दिन की मजदूरी। [6] मूलतः "मारथा, हे मारथा।"

आए। 3 हमें प्रति दिन हमारा भोजन दे। 4 हमारे पापों को क्षमा कर। जैसे हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया, और हमें परीक्षा में न पडने दे।"[1]

5, 6 उनको प्रार्थना के बारे में[1] और अधिक सिखाते हुए यीशु ने यह उदाहरण दिया: "मान लो तुम आधी रात को किसी मित्र के घर तीन रोटी मागने जाओ। तुम उससे चिल्लाकर कहो, मेरा एक मित्र अभी मेरे घर आया है और उसे खिलाने के लिए मेरे पास कुछ भी नही है, कृपया मुझे तीन रोटिया दे दो।" 7 तब वह सोते सोते तुम्हे पुकार कर कहे, "अरे! क्षमा कर भाई! मुझे मत उठा। दरवाजा बन्द है। रात का समय है हम सब बिस्तर मे हैं। मैं तुम्हारी सहायता करने मे असमर्थ हूँ।" 8 परन्तु मैं तुमसे कहता हू—"वह मित्र होने के नाते तुमको न भी दे, तोभी यदि तुम बहुत देर तक खटखटाते रहो तो वह अवश्य उठेगा। तुम जो कुछ मागो वह अवश्य देगा क्योंकि तुमने लगातार उससे दृढ़ता से आग्रह किया। 9 प्रार्थना मे भी ऐसा ही होता है—मागते रहो तो तुम्हे मिलता रहेगा, ढूँढते रहो तो पाते रहोगे, खटखटाते रहो तो खोला जाएगा। 10 क्योकि जो माँगता है, वह पाता है, जो खोजता है, उसे मिलता है, और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाता है। 11 तुम मे से ऐसा कौन पिता होगा कि जब उसका बेटा रोटी मागे, तो उसे पत्थर दे? यदि वह मछली मागे तो क्या तुम उसे साप दोगे? 12 यदि वह अंडा मांगे, तो क्या तुम उसे बिच्छू दोगे? (कभी नही!) 13 तुम पापी व्यक्ति होकर भी अपने बच्चों की आवश्यकताओ के अनुसार देते हो। तो क्या नही समझते कि स्वर्ग निवासी तुम्हारा पिता तुम्हे कम से कम इतना जरूर दे सकता है और अपने मागने वालों को पवित्र आत्मा देता है?"

14 एक बार यीशु ने एक ऐसे व्यक्ति मे से दुष्ट आत्मा को निकाला जो बोल नहीं सकता था। दुष्ट आत्मा के निकलते ही वह बोलने लगा। यह देखकर लोगों ने दातो तले उंगली दबा ली। 15 परन्तु कुछ ने कहा, "इसमें आश्चर्य नही कि यह दुष्ट आत्माओ को निकाल सकता है! उनको निकालने की शक्ति उसे दुष्ट आत्माओं के अधिकारी शैतान[2] से मिलती है।" 16 दूसरे लोगों ने यह परखने के लिए कि यीशु सचमुच मसीह है या नही, उनसे आकाश का कोई आश्चर्यजनक चिन्ह मागा।[3] 17 यीशु सबके हृदयों के विचार जानते थे। इसलिए उन्होंने कहा: "जिस राज्य में भीतरी फूट होती है उसका पतन हो जाता है। विवाद और झगड़ा होने से घर का भी यही हाल होता है। 18 इसलिए यदि तुम्हारा कहना सच है और शैतान दुष्ट आत्माओं को निकालने के लिए मुझे शक्ति दे रहा है तो वह स्वयं से ही लड रहा है। ऐसे मे उसका राज्य कैसे स्थिर रहेगा? 19 फिर यदि मुझे शैतान से शक्ति मिलती है तो तुम्हारे साथियों को कहा से शक्ति मिलती है? क्योंकि वे भी तो दुष्ट आत्माओ को निकालते हैं! क्या तुम सोचते हो कि उन्हें भी शैतान ने अपने वश मे किया है? यदि तुम सही हो तो उन्ही से पूछो! 20 परन्तु यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ से दुष्ट आत्माओ को निकालता हू तो सन्देह नही कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच आ पहुचा है। 21 क्योकि जब शैतान[4] हथियारो से लैस होकर बलपूर्वक अपने महल की रखवाली करता है तो उसका महल सुरक्षित रहता है...22 जब तक उससे भी अधिक बलवन्त और उत्तम हथियारो से लैस व्यक्ति, उस पर आक्रमण कर उसके हथियार छीनकर उसे हरा न दे। 23 जो

[1] कुछ प्राचीन हस्तलेखो मे प्रभु की प्रार्थना का बाकी अश भी शामिल है जैसा मत्ती 6 9—13 मे है। [2] मूलत. "बालजबूल।" [3] मूलत. "औरों ने उसकी परीक्षा के लिए उससे आकाश का एक चिन्ह मांगा।" [4] मूलत "बलवन्त मनुष्य।"

व्यक्ति मेरी ओर नही वह मेरा विरोधी है। यदि वह मेरी सहायता नही कर रहा है, तो मेरे काम मे बाधा पहुंचा रहा है। 24 जब मनुष्य में से कोई दुष्ट आत्मा निकल जाती है तो निर्जन स्थान मे विश्राम ढूंढती है। यदि विश्राम नही मिलता तो वह उसी व्यक्ति मे फिर समा जाती है जिसमे से निकली थी। 25 उसे उसका पुराना स्थान सजा सजाया और स्वच्छ मिलता है।[5] 26 तब वह जाकर अपने से भी अधिक दुष्ट सात आत्माओं को लाती है और वे सब उस व्यक्ति मे समा जाती हैं। और उस मनुष्य की दशा पहले से सात गुणा अधिक खराब हो जाती है।"

27 जब यीशु ये बातें कर रहे थे तो एक स्त्री ने भीड़ में से चिल्लाकर कहा, "परमेश्वर आपकी माता को आशीष दे—जिसके गर्भ से आप पैदा हुए और जिसका दूध आपने पिया।" 28 यीशु ने उत्तर दिया, "हां, परन्तु वे लोग और भी अधिक आशीषित हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और उसे मानते हैं।"

29, 30 यीशु के चारों ओर भीड़ थी। उन्होंने लोगों को यह सदेश दिया: "इस युग के लोग कितने बुरे हैं! वे विनती करते रहते कि मैं उन्हें आकाश में कोई चिन्ह दिखाऊं यह प्रमाणित करने के लिए कि मैं मसीह हूँ। परन्तु मैं उन्हें केवल योना का सा चिन्ह दूंगा। जैसा योना नीनवे के लोगो के समक्ष चिन्ह ठहरा, मसीह भी इस युग के बुरे लोगों के लिए ठहरेगा। 31 न्याय के दिन शीबा की रानी[6] उठेगी और इस पीढ़ी के लोगो की ओर उगली उठा कर धिक्कारेगी। क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिए कष्ट सहते हुए बहुत दूर गई। परन्तु यहाँ सुलैमान से भी महान व्यक्ति उपस्थित है (और इने गिने चुने लोग ही ध्यान देते हैं)।[7] 32 न्याय के दिन नीनवे के लोग भी उठेंगे। वे इस पीढ़ी पर दोष लगाएंगे क्योंकि उन्होंने योना का प्रचार सुनकर पश्चात्ताप किया था परन्तु यहां योना से भी अधिक महान व्यक्ति है (और यह पीढी उसकी नहीं सुनती)।

33 "कोई भी व्यक्ति दिया जलाकर उसे छिपा नही देता। वह उसे दीवट पर रखता है, ताकि घर के भीतर सब लोगों को प्रकाश पहुचे। 34 तुम्हारी आंखें तुम्हारे भीतरी मन को प्रकाशित करती हैं। पवित्र आंखो मे तुम्हारी आत्मा प्रकाशित होती है। वासना से भरी आंखें प्रकाश को अन्दर जाने से रोकती हैं, और तुम्हे अंधेरे मे गिरा देती है। 35 इसलिए सावधान रहो कि प्रकाश रुक न जाए। 36 यदि तुम्हारे अन्दर प्रकाश हो और कोई भी अन्धकारपूर्ण बात न हो, तो तुम्हारे मुख पर भी चमक दिखाई पड़ेगी, जैसे उस पर किरणे पड़ती हो।"

37, 38 जब यीशु सन्देश दे रहे थे तो एक फरीसी ने उन्हे अपने घर भोजन के लिए बुलाया जब यीशु वहां पहुचे तो उन्होने यहूदी रीति के अनुसार पहले हाथ मुह नही धोया और भोजन करने बैठ गए। इससे फरीसी को बड़ा अचम्भा हुआ। 39 यीशु ने उससे कहा, "तुम फरीसी लोग बाह्य सफाई की तो बडी चिन्ता करते हो, परन्तु अन्दर से तुम अब भी गदे हो। तुम मे लालच और दुष्टता भरी है। 40 मूर्खो! क्या परमेश्वर ने भीतर बाहर दोनों नही बनाया? 41 अपना भीतरी हृदय परमेश्वर को दे दो, तो तुम बाहर से भी शुद्ध हो जाओगे।

42, "परन्तु फरीसियो, धिक्कार है तुम्हे! तुम अपनी छोटी से छोटी आमदनी का दसवां अश परमेश्वर को भेंट स्वरूप देते हो, पर न्याय और परमेश्वर के प्रेम को बिल्कुल भूल जाते हो। हां, तुम्हें दसवा अंश अवश्य देना चाहिए परन्तु उसके साथ साथ न्याय और प्रेम का भी

[5] साफ परन्तु खाली। क्योंकि व्यक्ति, जीवन में मसीह से उदासीन रहता है। [6] मूलतः "दक्खिन की रानी।"
[7] यही आशय है।

व्यवहार करना चाहिए। 43 हे फरीसियो धिक्कार है तुम्हे ! *तुम आराधनालयों मे मुख्य* आसनो पर बैठना पसन्द करते हो। चाहते हो बाजार मे जो देखे, तुम्हे आदर से नमस्कार करे। 44 हा, तुम्हारा अन्त भयंकर न्याय है। क्योंकि तुम उन कबरो के समान हो, जो ऊपर से दिखाई नही देती। लोग उन पर अनजाने मे चलते हैं। वे नही जानते कि वे अशुद्धता पर चल रहे हैं।"

45 एक व्यक्ति वहाँ खड़ा था जो धर्म-शास्त्र का विद्वान था। उसने यीशु से कहा, "गुरुजी, आपने ऐसी बातें कहकर हमारा अपमान किया है।" 46 यीशु ने कहा, "हा, तुम्हारा भी अन्त भयानक होगा ! क्योंकि तुम अन्य लोगों को ऐसे असम्भव धार्मिक नियमों में पीस डालते हो, जिनके पालन का तुम स्वयं भी विचार नही करना चाहोगे। 47 धिक्कार है तुम पर ! क्योंकि तुम बिल्कुल अपने पूर्वजो के समान हो जिन्होंने प्राचीन काल मे नबियो की हत्या की।

48 "हत्यारो ! तुम अपने बाप दादों से सहमत हो कि उन्होने जो किया, सब ठीक *किया—तुम होते तो खुद भी वैसा ही करते।* 49 "सुनो, परमेश्वर तुम्हारे बारे मे क्या कहता है : 'मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को भेजूंगा। तुम उनमे से कुछ को मार डालोगे और कुछ को सताओगे।' 50 हे इस पीढ़ी के लोगों। सृष्टि के आरम्भ से परमेश्वर के जितने सेवकों की हत्या हुई, उनकी जिम्मेवारी तुम पर होगी। 51 हाँ, हाबिल की हत्या से लेकर जकरयाह तक की हत्या के लिए, जो वेदी और पवित्र मन्दिर के मध्य मार डाला गया, तुम निश्चय ही दोषी ठहराए जाओगे। 52 हे धर्म-शिक्षको धिक्कार है तुम्हें ! क्योंकि तुम सत्य को लोगो से छिपाते हो। खुद विश्वास नही करते, दूसरो को भी विश्वास करने का मौका नही देते।"

53, 54 इससे फरीसी और धर्म के शिक्षक अत्यन्त क्रोधित हुए। उस दिन से वे यीशु से बहुत सी बातों के सम्बन्ध मे प्रश्न पूछने लगे। वे इस घात में थे कि यीशु के मुह की कोई बात पकड़ कर उन्हें गिरफ्तार करें।

12 1 एक दिन हजारों लोगों की ऐसी बड़ी भीड़ यीशु के पास इकट्ठी हुई कि लोग एक दूसरे को कुचलने लगे। यीशु ने चेलों की ओर फिरकर उन्हे चेतावनी दी, 'सबसे अधिक फरीसियो से और उनकी कपटपूर्ण शिक्षा से सावधान रहना। वे धर्मी होने का ढोंग तो रचते हैं, पर हैं नही। किन्तु ऐसा पाखण्ड सदा छिपा नही रह सकता। 2 जैसे आटे का खमीर प्रकट हो जाता है, वैसे ही उनका पाखण्ड खुल जाएगा। 3 उन्होंने अन्धेरे मे जो कुछ कहा है वह उजाले मे सुना जाएगा और जो तुमने बन्द कमरो मे फुसफुसाया है उसका प्रचार घर की छत से होगा ताकि सब सुनें। 4 प्रिय मित्रो जो तुम्हारी हत्या करना चाहें, उनसे मत डरना। वे केवल शरीर को घात कर सकते हैं। तुम्हारे प्राण पर उनकी कोई शक्ति नही। 5 परन्तु मैं तुम्हे बताता हू कि किससे डरना चाहिये· *परमेश्वर से डरो क्योंकि उसके पास तुम्हें* मारने और नरक में डालने की शक्ति है। 6 पांच गौरैयों का मूल्य क्या है ? दो चार पैसों से अधिक तो नहीं है न ? तौ भी परमेश्वर उनमे से एक को भी नही भूलता। 7 परमेश्वर को तुम्हारे बालो की भी संख्या मालूम है। कभी मत डरो। तुम गौरैयो के झुंड से कही बढ़कर हो। 8 मैं तुम्हें इस बात का निश्चय दिलाता हूं : यदि तुम इस पृथ्वी पर सबके सामने मुझे अपना मित्र मान लोगे तो मसीह अर्थात मैं परमेश्वर के सब स्वर्गदूतों के सामने तुम्हारा आदर करूंगा। 9 परन्तु जो यहाँ मनुष्यो के बीच मेरा इन्कार करते हैं, मैं भी स्वर्गदूतों के सामने उनका इन्कार करूंगा। 10 (तौभी जो मेरे विरोध में बातें करते हैं उनको क्षमा दी जाएगी—किन्तु जो पवित्रआत्मा की निन्दा करते

हैं, उनको कभी क्षमा नहीं दी जाएगी।) 11 जब लोग मुकदमा चलाने के लिए तुम्हें यहूदी शासकों और आराधनालयों के अधिकारियों के सामने ले जाएं, तो चिन्ता न करना कि अपने बचाव में क्या कहोगे। 12 क्योंकि उसी समय पवित्र आत्मा तुम्हे सिखाएगा कि क्या कहना चाहिये।"

13 तब भीड मे से किसी ने पुकारा, "गुरुजी, मेरे भाई से कहिये कि वह मेरे साथ पिताजी की सम्पत्ति का बटवारा करे।" 14 परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, "हे भाई, किसने मुझे तुम्हारा न्यायी ठहराया है कि मैं ऐसी बातो का निर्णय करूं? 15 सावधान! हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो; क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता।" 16 तब यीशु ने एक उदाहरण दिया: "एक धनी पुरुष था। उसका एक उपजाऊ खेत था जिसमे बहुत अच्छी फसल उत्पन्न हुई। 17 अनाज इतना अधिक हुआ कि सबको रखने के लिए जगह भी नही थी। उसने अपनी समस्या पर विचार किया। 18 अन्त में उसने विचार करके कहा, "अब मालूम हुआ मुझे क्या करना चाहिये। मैं अपने गोदामों को तोड़कर बड़े गोदाम बनाऊंगा। तब पर्याप्त जगह रहेगी। 19 मैं आराम से बैठूंगा और अपने आप से कहूंगा, 'हे धनी किसान, अब अनेक वर्षों के लिए तेरे पास अन्न बहुत जमा है। अब निश्चिन्त रह, खा, पी, और आनन्द कर'।" 20 परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, "हे मूर्ख, आज ही रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा, फिर यह सब किसका होगा?" 21 "हां हर व्यक्ति जो पृथ्वी पर धनी हो, पर स्वर्ग मे नही, वह मूर्ख है।"

22 तब शिष्यो की ओर मुड़कर यीशु ने कहा, "अपने लिए चिन्ता मत करो कि तुम्हारे पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन और पहिनने के लिए वस्त्र हैं कि नहीं। 23 क्योकि जीवन का मूल्य भोजन और वस्त्र से कही बढकर है। 24 कौवों को देखो—वे न बीज बोते, न फसल काटते हैं, न ही उनके पास खलिहान होता है जहा अन्न जमा कर सकें। तौभी उनका जीवन ठीक चलता है—क्योकि परमेश्वर उन्हें भोजन देता है। तुम्हारा मूल्य पक्षियों से कही बढकर है। 25 और फिर, चिन्ता करने से क्या लाभ? क्या उससे तुम अपने जीवन का एक क्षण भी बढा सकते हो? कभी नही। 26 यदि चिन्ता करने से इतनी छोटी बात नही कर सकते तो इससे बड़ी बातों के लिए चिन्ता करने से क्या लाभ? 27 जंगल के फूलो पर ध्यान दो: वे कैसे खिलते हैं। वे न कातने न बुनते हैं। सच मानो, सुलैमान राजा अत्यन्त धनी था, तौभी उसके राजसी वस्त्र इन फूलो के समान सुन्दर नही थे। 28 जब परमेश्वर इन फूलों को जो आज हैं और कल मुर्झा जाएगे, इतने सुन्दर वस्त्र पहिनाता है तो हे अविश्वासियो, क्या वह तुम्हें वस्त्र न देगा। 29 भोजन के लिए भी चिन्ता न करो—क्या खाओगे, क्या पियोगे, न ही सन्देह करो कि परमेश्वर देगा या नही। 30 संसार के सब लोग इन चीजों को प्राप्त करने के लिए परिश्रम करते हैं, परन्तु स्वर्ग मे रहने वाला तुम्हारा पिता तुम्हारी आवश्यकताओ को जानता है। 31 यदि तुम परमेश्वर के राज्य को पहला स्थान दो, तो परमेश्वर पिता तुम्हारी दैनिक प्रत्येक आवश्यकता को पूरी करेगा। 32 इसलिए हे छोटे झुंड, मत डर। क्योंकि तुम्हारे पिता को इससे बहुत आनन्द होता है कि तुम्हें राज्य दे। 33 तुम्हारे पास जो है उसे बेच दो और जिनको आवश्यकता है उन्हे दे दो। ऐसा करने से तुम अपने लिए स्वर्ग मे धन जमा करोगे। वहां न चोर का डर रहेगा, न धन के घटने का और न कीडे लगने का। 34 क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

35 "सदा तैयार रहो—तुम्हारे दीए जलते रहे। 36 ताकि जब तुम्हारा स्वामी विवाह के भोज से लौटे और द्वार खटखटाए, तो उसी

क्षण तुम खोल सको। 37 जो अपने स्वामी के लौटने का रास्ता देखते होंगे और तैयार होंगे, उनके लिए बड़ा आनन्द होगा। स्वामी स्वयं उनको बैठाएगा और सेवक का वस्त्र पहिनकर उन्हें भोजन परोसेगा। 38 वह रात के नौ बजे आ सकता है या रात को आ सकता है। चाहे जब भी आए, तैयार रहने वाले सेवकों को आनन्द होगा। 39 यदि सब जानते कि वह ठीक किस समय आएगा, तो सब उनके लिए तैयार रहते—जैसे किसी चोर के लिए यदि मालूम हो जाए कि वह कब आने वाला है। 40 इसलिए सब समय तैयार रहो। क्योंकि मसीह अर्थात मैं उसी समय आऊंगा, जिस समय के लिए तुमने सोचा भी न होगा।"

41 पतरस ने पूछा, "हे प्रभु, क्या आप हमारे ही लिए कह रहे हैं या सब के लिए।" 42, 43, 44 यीशु ने उत्तर दिया, "मैं प्रत्येक ऐसे विश्वासी और समझदार व्यक्ति के लिए कह रहा हूं, जिसका स्वामी उसे दूसरे नौकर को खिलाने पिलाने का काम सौंप कर चल दे। फिर जब लौटे और देखे कि उसने बड़ा अच्छा कार्य किया है तो उसे अपनी सब सम्पत्ति पर अधिकारी ठहराए। 45 परन्तु यदि कोई व्यक्ति सोचने लगे, 'मेरे मालिक के लौटने मे अभी बहुत देर है।' वह दूसरे नौकर को मारने पीटने लगे और खा पीकर नशे मे बेसुध पड़ा रहे, 46 तो उसका स्वामी बिना बताए आएगा और उसे उसके पद से हटा कर उसकी *गिनती अविश्वासियों मे करेगा*। 47 और कठोर दण्ड देगा *क्योंकि यद्यपि उसे अपना काम मालूम था* तौभी उसने नही किया। 48 परन्तु यदि कोई व्यक्ति अनजाने मे कोई गलत काम करे तो उसे कम दण्ड मिलेगा। जिनको बहुत दिया गया है उनसे बहुत आशा की जाती है क्योंकि उनकी जिम्मेवारी बड़ी है।

49 "मैं पृथ्वी पर आग बरसाने आया हूं। काश मेरा काम पूरा हो जाता। 50 मेरे सामने एक भयानक बपतिस्मा है, जब तक वह न लू तब तक अत्यन्त व्याकुल रहूंगा। 51 क्या तुम सोचते हो कि मैं पृथ्वी पर शान्ति कराने आया हूं? नही! बल्कि विरोध और फूट डालने। 52 अब से घर घर में फूट होगी, तीन मेरी ओर होंगे तो दो मेरे विरुद्ध, या दो मेरी ओर तो तीन मेरे विरुद्ध। 53 पिता पुत्र का, पुत्र पिता का विरोध करेगा, मा बेटी का और बेटी माँ का, सास, बहू का और बहू, सास का विरोध करेगी।"

54 तब यीशु ने भीड़ की ओर देख कर कहा, "जब तुम पश्चिम मे बादल उठते हुए देखते हो, तो कहते हो, 'वर्षा होगी।' और तुम ठीक कहते हो। 55 जब दक्षिणी वायु बहती है तो तुम कहते हो, 'आज लू चलेगी।' और ऐसा ही होता है। 56 पाखण्डियो! तुम आकाश को देख कर समझ लेते हो कि क्या होगा परन्तु अपने चारो ओर देखकर आने वाले संकट पर ध्यान देने से इन्कार करते हो। 57 जो ठीक है उसे स्वयं देखने से इन्कार क्यों करते हो? 58 यदि तुम्हारा विरोधी तुम्हे मुकद्दमे के लिए अदालत मे ले जाना चाहे, तो न्यायाधीश के पास मुकद्दमा पहुंचने से पहले उससे समझौता कर लेना। कही ऐसा न हो कि तुम्हे जेल की सजा दी जाए। 59 क्योंकि ऐसा होने पर तुम उस समय तक छूट नही सकोगे जब तक पैसा पैसा न चुका दोगे।"

13

1 इसी समय कुछ लोगों ने *आकर* यीशु को बताया, "राज्यपाल पीलातुस ने *गलील प्रदेश से आए हुए कुछ यहूदियो* की उस समय हत्या कर दी जब वे *यरूशलेम मे बलिदान चढ़ा रहे थे*।" 2 यीशु ने उनसे पूछा, "क्या तुम सोचते हो कि जिनकी हत्या हुई वे गलील के दूसरे लोगो से अधिक पापी थे? *क्या इसीलिए* वे मारे गए? 3 नही! क्या तुम नही समझते कि यदि तुम भी अपने बुरे मार्गों को छोड़कर परमेश्वर की ओर न फिरो, तो इसी रीति से नाश होगे। 4 और उन

अट्ठारह् व्यक्तियों के लिए क्या कह सकते हो, जो शीलोह की मीनार के गिरने से दबकर मर गए? क्या वे यरूशलेम के अन्य निवासियो से अधिक पापी थे? 5 बिल्कुल नही! और यदि तुम भी अपने पापों से पश्चाताप करके बुराई नही छोड़ोगे तो अवश्य नाश होगे।"

6 यीशु ने उदाहरण दिया: "एक पुरुष ने अपने बाग मे अंजीर का पेड लगाया। वह बार बार देखता था कि उसमे फल लगे हैं या नही, पर सदा निराश हो जाता था। 7 अन्त मे उसने अपने माली से कहा, 'उस पेड को काट डाल। तीन साल से मैं उससे फल पाने की आशा कर रहा हूं, परन्तु उसमें एक भी फल नहीं लगा। वह वृक्ष व्यर्थ जगह घेर रहा है। वहां कोई दूसरा पेड लगा सकते हैं।' 8 माली ने उत्तर दिया, 'नही स्वामी इसे एक वर्ष तक और छोड दीजिए। मैं इसकी विशेष देख-भाल करूंगा, खाद दूंगा। 9 यदि अगले वर्ष इसमे फल आएं तो ठीक है नहीं तो मैं काट डालूंगा'।"

10 एक बार विश्राम दिन को यीशु यहूदियों के आराधनालय में शिक्षा दे रहे थे। 11 वहां एक स्त्री थी जो अट्ठारह वर्ष से किसी बीमारी के कारण कुबडी थी। वह किसी प्रकार सीधी नही हो सकती थी। 12 यीशु ने उसे अपने पास बुलाया और कहा, "हे नारी, तुम अपनी बीमारी से अच्छी हो गई हो।" 13 यीशु ने स्त्री को छुआ वह उसी क्षण सीधी खडी हो गई। वह परमेश्वर की स्तुति करने लगी। 14 उस आराधनालय का यहूदी अगुवा इससे बहुत क्रोधित हो गया, क्योंकि यीशु ने स्त्री को विश्राम दिन मे अच्छा किया था। उसने चिल्लाकर भीड़ से कहा, "काम करने के लिए सप्ताह के छः दिन हैं। इन्ही छः दिनो मे बीमारी मे अच्छा होने के लिए आया करो, विश्राम दिन मे नही।" 15 परन्तु प्रभु ने उत्तर दिया, "पाखण्डियो! तुम सब्त के दिन काम करते हो। क्या तुम अपने पशुओं को खूंटे से खोलकर बाहर पानी पिलाने विश्राम दिन को नही ले जाते? 16 यदि मैंने विश्राम दिन में, इस यहूदी स्त्री को जो अट्ठारह वर्ष से शैतान की कैद मे थी, छुडा दिया, तो कौन सा गलत काम किया?" 17 इतना सुनकर यीशु के विरोधी लज्जित हो गए। बाकी सब लोग उनके अद्भुत कामो को देखकर प्रसन्न हुए।

18 यीशु ने पूछा, "परमेश्वर का राज्य किस के समान है? मैं इसका कैसे उदाहरण दूं? 19 यह सरसों के छोटे बीज के समान है। बगीचे में लगाने से यह बढकर ऊंचा हो जाता है और पक्षी इसकी डालियो पर बसेरा करते हैं। 20, 21 हां वह खमीर के समान है। बहुत सारे आटे मे यदि थोडा सा खमीर मिल जाए तो वह पूरा आटा खमीर हो जाता है।"

22 यीशु यरूशलेम की ओर आगे बढते रहे। मार्ग में जितने शहर और गाव मिले, वहां लोगों को शिक्षा देते गए। 23 किसी ने यीशु से प्रश्न किया, "क्या थोडे ही लोग उद्धार पाएंगे।" उन्होंने उत्तर दिया, 24, 25 "स्वर्ग का दरवाजा सकरा है। उसके अन्दर जाने की कोशिश करो। सच तो यह है कि बहुत से लोग अन्दर जाने की कोशिश करेंगे, परन्तु जब घर का मालिक दरवाजा बन्द कर दे, तो बहुत देर हो जाएगी। तब तुम यदि बाहर खड़े खटखटाते रहो और विनती करो, 'मालिक, हमारे लिए दरवाजा खोलिए,' तो तुम्हे उत्तर मिलेगा, 'मैं तुम्हे नही जानता।' 26 तुम कहोगे, 'परन्तु हमने आपके साथ भोजन किया। आपने हमारे शहर में शिक्षा दी।' 27 परन्तु उनका उत्तर होगा, 'मैंने तुम्हे बता दिया—मैं नही जानता तुम कौन हो। तुम यहाँ नहीं आ सकते क्योंकि अपराधी हो। चले जाओ।' 28 जब तुम बाहर खडे रहोगे और परमेश्वर के राज्य के अन्दर इब्राहीम, इसहाक, याकूब और सब भविष्यद्वक्ताओं को देखोगे, तो तुम रोओगे और दांत पीसोगे। 29 क्योंकि पूरे संसार से लोग आएंगे कि अपना स्थान वहा लें। 30 ध्यान से

सुनो : अभी यहां कुछ लोगों का तिरस्कार होता है परन्तु वहां आदर सत्कार होगा। वैसे ही अभी कुछ लोगों को बड़ा समझा जाता है जिनका वहां सबसे कम महत्व होगा।"

31 कुछ समय के बाद कई फरीसी आए। उन्होंने यीशु से कहा, "यदि आपको अपना जीवन प्यारा है, तो यहां से चले जाइए, क्योंकि राजा हेरोदेस आपको मार डालना चाहता है।" 32 यीशु ने उनसे कहा, "जाकर उस लोमड़ी से कह दो मैं आज और कल दुष्ट आत्माओं को निकालूंगा और चंगा करने के आश्चर्यकर्म करता रहूंगा। तीसरे दिन अपने ठिकाने पर पहुंच जाऊंगा। 33 हां, आज, कल और परसों क्योंकि हो नहीं सकता कि कोई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम शहर से बाहर मारा जाए। 34 आह! यरूशलेम! नबियों को मौत के घाट उतारने वाले शहर! तू जो उनको पत्थरों से मार डालता है जो तेरी सहायता करने भेजे जाते हैं! कितनी बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने चूज़ों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही तेरे बालकों को इकट्ठा करूं! परन्तु तूने मुझे न करने दिया। 35 और अब तेरा घर उजाड़ छोड़ा जाता है। तुम मुझे उस समय तक फिर न देखोगे जब तक यह न कहो, 'प्रभु के नाम से आनेवाले व्यक्ति का स्वागत हैं'।"

14 1, 2 यीशु, एक विश्राम-दिन फरीसियों के सरदारों में से एक के घर में थे। वहां जलोदर का एक रोगी भी था। फरीसी लोग यीशु की घात में थे और वे ध्यान से देख रहे थे कि वह उस रोगी को ठीक करते हैं या नहीं। 3 यीशु ने वहां खड़े फरीसियों और धर्म नियमों को जानने वाले विद्वानों से कहा, "अच्छा बताओ, हमारे धर्म शास्त्र के अनुसार विश्राम दिन पर किसी व्यक्ति को स्वस्थ करना ठीक है या नहीं?" 4 वे चुप रहे। तब यीशु ने बीमार का हाथ पकड़ा, उसे चंगा किया और भेज दिया। 5 तब यीशु ने उनकी ओर मुड़कर पूछा, "तुम में से कौन विश्राम दिन में काम नहीं करता? यदि तुम्हारा बैल इस दिन कुएं में गिर पड़े तो क्या तुम उसे एकदम नहीं निकालोगे?" "इसे सुनकर वे बगलें झांकने लगे।

7 यीशु ने वहाँ देखा कि सब मेहमान बैठने के लिए मुख्य मुख्य स्थान चुन रहे हैं। यह देखकर उन्होंने शिक्षा दी, 8 "जब तुम्हें विवाह के भोजन का निमंत्रण मिले, तो सदा मुख्य मुख्य स्थान को न चुनो। क्योंकि हो सकता है तुमसे भी अधिक सम्मानित व्यक्ति को निमंत्रण मिला हो। 9 यदि वह आए, तो निमंत्रण देनेवाला व्यक्ति तुम्हें उठाकर कहेगा, 'आप यहां से उठिये इनको यहां बैठने दीजिए।' फिर तुम लज्जित होओगे और शायद तुम्हें सबसे पीछे बैठना पड़ जाएगा। 10 परन्तु मेरी मानो—ऐसा करो : पीछे के स्थान पर बैठो। तब तुम्हें निमंत्रण देने वाला देखेगा तो तुम्हारे पास आएगा। वह तुमसे कहेगा, 'मित्र, आपके लिए वहां उससे अच्छी जगह खाली है, आइये!' इस प्रकार सब मेहमानों के सामने तुम्हारा आदर होगा। 11 क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाता है वह छोटा किया जाएगा, और जो अपने आप को छोटा बनाता है, वह बड़ा बनाया जाएगा।

12 तब यीशु ने निमंत्रण देने वाले से कहा, "जब तुम भोजन का निमंत्रण दो, तो मित्रों, भाइयों, रिश्तेदारों और धनी पड़ोसियों को मत बुलाओ। क्योंकि वे बदले में तुम्हें भी निमंत्रण देंगे। 13 परन्तु गरीबों, लाचारों, लंगड़ों और अंधों को बुलाओ। 14 जब धर्मी फिर जी उठेंगे, तब परमेश्वर तुम्हें इसका पुरस्कार देगा, क्योंकि तुमने उन लोगों को निमंत्रण दिया, जिनसे बदले की कोई आशा नहीं थी।"

15 इतना सुनते ही यीशु के पास बैठे एक व्यक्ति ने कहा, "अहा! परमेश्वर के राज्य में भोजन करने वाला व्यक्ति क्या ही धन्य होगा।" 16 यीशु ने उत्तर में एक उदाहरण दिया :

"एक व्यक्ति ने बड़े भोज की तैयारी की। उसने बहुत लोगों को निमंत्रण भेजा। 17 जब सब तैयार हो गया, तब उसने अपने नौकर को मेहमानों के पास बताने भेजा, 'भोजन तैयार हो गया है। आइए'। 18 परन्तु सब बहाना करने लगे। एक ने बहाना किया, 'मैंने अभी एक खेत खरीदा है। उसे देखने जाना चाहता हूं। कृपया क्षमा कीजिए।' 19 दूसरे ने कहा, 'मैंने पांच जोड़ी बैल खरीदे हैं, उन्हें परखना चाहता हूं।' 20 एक ने कहा, 'मेरा विवाह *अभी हुआ है मैं नहीं आ सकता।'* 21 नौकर ने लौटकर मालिक को ये बातें बताईं। मालिक बहुत क्रोधित हुआ उसने नौकर से कहा, 'शहर के बाजारों और गलियों में जल्दी जाओ और भिखारियों, लाचारों, लंगड़ों, अंधों को बुला लाओ।' 22 इतना करने पर भी स्थान बचा रहा। 23 मालिक ने कहा, 'शहर की गलियों और बाड़ों में जाओ। जो भी तुम्हें मिले, उसमे आने के लिए कहो, ताकि मेरा घर मेहमानों से भर जाए। 24 क्योंकि मैंने पहले जितनों को निमंत्रण दिया था, उनमें से कोई भी मेरे भोजन का स्वाद नही चखेगा'।"

25 बड़ी भीड़ यीशु के साथ जा रही थी। उन्होंने उनसे ये बातें कहीं: 26 "जो भी *व्यक्ति मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने माता,* पिता, पत्नी, बालकों, भाइयों, बहिनो से अधिक,—हां, अपने प्राण से भी[1] बढ़कर मुझसे प्रेम करे—नहीं तो वह मेरा शिष्य नही हो सकता। 27 जो अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे न हो ले वह मेरा शिष्य नही हो सकता। 28 जब तक तुम मूल्य नही आंक लेते तब तक किसी कार्य को आरम्भ मत करो।[2] क्योंकि घर बनाना कौन शुरू करेगा जब तक वह पहले अनुमान न लगा ले कि बनाने मे कितना खर्च आएगा और उसके पास इतनी पूंजी है या नहीं? 29 नहीं तो नींव डालने मे ही उसके रुपये खर्च हो जाएंगे और सब उस पर हंसेंगे! 30 "वे हंसी करेंगे, 'अरे! उसको देखो! पैसे ही नहीं थे और घर बनाना शुरू किया: अब अधूरा पड़ा है।' 31 और कौन ऐसा राजा होगा जो अपने सलाहकारों के साथ बिना विचार किए कि शत्रु के बीस हजार सैनिकों के सामने मेरे दस हजार सैनिक टिक सकेंगे या नही, युद्ध मे जाने का स्वप्न देखे? 32 यदि वह सामना करने में असमर्थ हो, तो शत्रु सेना के दूर रहते ही, सन्धि करने के लिए अपना राजदूत भेजेगा। *33 इसी प्रकार तुममें से कोई मेरा शिष्य तब* तक नहीं बन सकता जब तक बैठकर विचार न कर ले कि उसे क्या क्या त्यागना पड़ेगा—तब उन सबको त्याग न दे। 34 यदि नमक नमकीन न रह जाए तो उससे क्या लाभ? 35 वह किसी काम का नही रह जाता—खाद के भी काम का नहीं। लोग उसे बाहर फेंक देते हैं। ध्यान से सुनो, और समझने का प्रयत्न करो"

15

1 अन्याय से कर वसूल करने वाले और पाप के लिए बदनाम लोग प्रायः यीशु की शिक्षा सुनने के लिए आया करते थे। 2 इससे यहूदियों के धार्मिक अगुवों और धर्म-शास्त्र में निपुण लोगों को बड़ी चिढ़ हुई, कि *ऐसे घृणित लोगों के साथ यीशु मिलते* जुलते हैं, और उनके साथ भोजन करते हैं।

3, 4 इसलिए यीशु ने एक उदाहरण दिया: "मान लो तुम्हारे पास सौ भेड़ें हों। उनमे से एक भटक जाए और जंगल में खो जाए। तो क्या तुम बाकी निन्यानवे को छोड़कर उस खोई हुई भेड़ को ढूंढने नहीं जाओगे? 5 जब वह मिल जाए तो क्या उसे कंधे पर बैठाकर आनन्द से घर न लाओगे। 6 घर आकर अपने मित्रो और पड़ोसियो को बुलाओगे और कहोगे, 'भाइयो, मेरे साथ आनन्द मनाओ, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है।' 7 'मैं तुम

[1] मूलतः "यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता...को भी अप्रिय न जाने।" [2] पद 33 से स्पष्ट है।

से कहता हूं . इसी प्रकार से परमेश्वर के पास एक खोए हुए पापी के लौट आने पर स्वर्ग में आनन्द होता है। इतना आनन्द बाकी निन्यानवे व्यक्तियो के लिए नही होता, जो भटके नही।

8 "एक उदाहरण सुनो मान लो एक स्त्री के पास चादी के दस सिक्के हो और उनमें से एक खो जाए तो क्या वह बत्ती लेकर घर के कोने कोने मे उसे नही ढूंढेगी ? क्या जब तक वह सिक्का मिल न जाए तब तक वह घर के कोने को भाड कर नही देखेगी ? 9 मिल जाने पर क्या वह अपने मित्रो और अपने रिश्तेदारों को अपने साथ आनन्द मनाने के लिए नहीं बुलाएगी? 10 इसी प्रकार जब एक भी पापी अपने पाप से पश्चाताप करता है तो परमेश्वर के स्वर्गदूतों मे आनन्द मनाया जाता है।" इसी बात को आगे समझाने के लिए यीशु ने उन्हे एक कहानी सुनाई।

11 "किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। 12 छोटे पुत्र ने अपने पिता की मृत्यु तक ठहरने के बदले उससे कहा, 'पिताजी अपनी सम्पत्ति का मेरा भाग मुझे अभी बाट दीजिए।' पिता मान गया और दोनों पुत्रो मे अपनी सम्पत्ति का बटवारा कर दिया। 13 कुछ दिनो के बाद छोटे पुत्र ने अपना सब सामान बाधा और दूर देश को निकल गया। वहा जाकर उसने अपना सारा रुपया बुरे चाल-चलन में उड़ा दिया। 14 इसी समय उस देश मे भयंकर अकाल पड़ा। वह दाने दाने को तरसने लगा। 15 वह एक किसान के पास गया और उसके सुअरो को चराने का काम मागा। 16 वह भूख से मरने लगा। तब सुअर जिन फलियों को खाते थे, उसने उन्ही को खाकर अपनी भूख मिटानी चाही क्योकि उसे कोई कुछ नही देता था। 17 एक दिन उसे होश आया। उसने अपने मन मे सोचा घर मे तो नौकरो तक को आवश्यकता से अधिक भोजन मिलता है। और मैं यहा भूख से मर रहा हूँ। 18 मैं अपने पिता के पास जाऊंगा और उनसे कहूँगा 'पिताजी मैंने आपके और परमेश्वर के विरुद्ध भी पाप किया है। 19 मैं इस योग्य नही रहा कि आपका पुत्र कहलाऊं। कृपा करके मुझे भी एक नौकर के समान रख लीजिए।' 20 यह सोचकर वह अपने पिता के पास लौटने लगा। वह दूर ही था कि उसके पिता ने उसे आते देख लिया। पिता का दिल करुणा से भर गया। वह दौड़ा। उसने उसको गले लगाया और उसे बहुत चूमा। 21 पुत्र ने उससे कहा, 'पिताजी, मैंने आपके और परमेश्वर दोनों के विरुद्ध पाप किया है। अब मैं इस योग्य नहीं हूं कि आपका पुत्र कहलाऊं।' 22 परन्तु उसके पिता ने नौकरों से कहा, 'जाओ! घर के सबसे अच्छे वस्त्र जल्दी निकाल कर ले आओ और इसे पहनाओ। उसकी अंगुली मे रत्न जड़ी हुई अंगूठी और पैरों मे जूतिया पहिनाओ। 23 मोटा पशु लाओ और उसको काटो। आओ, हम भोजन करें और आनन्द मनाए। 24 क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, पर अब जी गया है। वह खो गया था पर अब मिल गया है।' इसलिए वे आनन्द मनाने लगे। 25 इस समय, बड़ा पुत्र खेत मे काम कर रहा था। जब वह घर लौटा तो घर मे नाचने और गाने बजाने की आवाज उसे सुनाई दी। 26 उसने अपने एक नौकर से पूछा, 'यह क्या हो रहा है।' 27 नौकर ने बताया, 'तेरा भाई लौट आया है। तेरे भाई के सकुशल लौट आने की खुशी में तेरे पिता ने पला हुआ पशु कटवाकर भोज तैयार कराया है'।"

28 "बड़ा भाई क्रोधित हो गया। वह अन्दर जाना ही नही चाहता था। स्वयं उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा। 29 परन्तु बड़े पुत्र ने उत्तर दिया, 'मैं इतने वर्षों से आपकी सेवा कर रहा हूँ। मैंने कभी आपका कहना नही टाला। तौभी आज तक आपने मुझे एक छोटा बकरा भी न दिया कि मैं अपने दोस्तों के साथ भोजन करके आनन्द मनाता। 30 आज जब आपका यह पुत्र वेश्याओ पर रुपया उड़ा कर

लौटा है, तो उसके लिए आपने सबसे अच्छा पला हुआ पशु कटवाया है।' 31 उसके पिता ने कहा, 'बेटा, सुन, तू सदा मेरे साथ है। जितना मेरा है, सब तेरा है। 32 परन्तु आज भोजन करके आनन्द मनाना ठीक है। आखिर वह तेरा भाई ही तो है जो मर गया था, पर अब जी उठा है। वह खो गया था, पर अब मिल गया है'।"

16 1 यीशु ने अपने शिष्यों को एक कहानी सुनाई : "एक धनी व्यक्ति था। उसका एक मुंशी था। मुंशी के बारे में यह अफवाह स्वामी के कानों में पड़ी कि वह उसका धन उड़ा रहा है। 2 इसलिए मालिक ने उसे बुलवाया और उससे कहा, 'मैं तुम्हारे विषय मे यह क्या सुन रहा हूँ? तुम मेरा सब धन उड़ा रहे हो। अपना बही खाता ठीक करो और अब काम से हमेशा के लिए अपनी छुट्टी समझो।' 3 मुंशी सोच मे पड़ गया, 'अब क्या होगा? मालिक मुझे नौकरी से निकाल रहे हैं। मेरी इतनी शक्ति नही है कि मिट्टी खोदूं और मजदूरी करूं। भीख मांगने मे मुझे शर्म आएगी। 4 हां अब समझा, मुझे क्या करना चाहिए। जिससे नौकरी से हटाए जाने पर लोग मेरी देख भाल कर लेंगे।' 5, 6 उसने अपने मालिक के कर्जदारों को एक एक कर बुलाया। उसने पहले से कहा, 'मालिक का कितना कर्ज तुझ पर है?' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'मैंने 850 गैलन तेल उधार लिया था।' मुन्शी ने कहा, 'हाँ, यह लो अपना लेख पत्र। इसमें जितना तुमने लिया था उसका आधा लिख लो।' 7 उसने अगले व्यक्ति से प्रश्न किया, 'तुम पर कितना उधार है?' उसने उत्तर दिया, 'चालीस क्विंटल गेहूँ।' मुन्शी ने कहा, 'यह लो अपना लेख-पत्र और उसमे केवल बीस क्विंटल गेहूँ ही लिख दो।' 8 मालिक को मुन्शी की चतुराई[1] के लिए उसकी प्रशंसा करनी पड़ी। यह सच है कि इस संसार के लोग धर्मियों से बढ़ कर (बेईमानी मे [1]) चतुर हैं। 9 परन्तु क्या मैं तुमसे भी ऐसा ही काम करने को कहूँ? धोखा देकर मित्र बनाने की सलाह दूं? क्या ऐसा करने से स्वर्ग के अनन्त घर मे प्रवेश कर सकोगे[1][2] 10 नही[3]। जो व्यक्ति छोटी बातो में ईमानदार रहता है वह बड़ी बातो मे भी ईमानदार रहेगा और जो थोड़े ही मे धोखा देता है तो वह बड़ी जिम्मेवारियों में भी ईमानदार नही रह सकेगा। 11 यदि तुम सासारिक धन ही के लिए ईमानदार नही रहे तो स्वर्ग का सच्चा धन तुम्हे कौन सौंपेगा? 12 यदि तुम दूसरे लोगो के पैसे के मामले मे ईमानदार नही रहे तो तुम्हारा पैसा तुम्हे क्यो सौंपा जाए? 13 कोई दास दो स्वामियो की सेवा नही कर सकता। वह एक से घृणा करेगा और दूसरे से प्रेम या वह एक का आदर करेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नही कर सकते।" 14 वहाँ खड़े फरीसी, यीशु की ये बातें सुनकर उन पर हँसने लगे। वे धन के बड़े लोभी थे। 15 यीशु ने उनसे कहा, "तुम, लोगो के सामने बड़े अच्छे और धर्मी बनते हो परन्तु परमेश्वर को मालूम है कि तुम्हारे मन कितने बुरे है। तुम बगुला भक्ति से तो मनुष्यो का आदर पाते हो परन्तु यह परमेश्वर की दृष्टि मे घृणित है। 16 यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने जब तक प्रचार करना शुरू नही किया, तब तक मूसा के नियम और नबियो के सदेश, तुम्हारी अगुवाई के लिए थे। परन्तु यूहन्ना ने सुसमाचार सुनाना शुरू किया कि परमेश्वर का राज्य शीघ्र आएगा। और अब लोग उस राज्य मे प्रवेश कर रहे हैं।

---

[1] या "क्या तुम सोचते हो कि धनी मालिक ने धूर्त मुन्शी की चतुराई के कारण उसको सराहा?" [2] मूलत शायद व्यग्य से, "अधर्म के धन से अपने लिए मित्र बना लो, ताकि जब वह जाता रहे तो वे तुम्हे अनन्त निवासो में ले ले।" कुछ टीकाकार इसका अर्थ लेंगे, "धन को भले काम मे लगाओ, ताकि वह स्वर्ग में तुम्हारे लिए ठहरा रहे।" परन्तु यह अर्थ ठीक नही है। [3] यही आशय है।

17 परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि छोटी छोटी बात मे भी अब मूसा की व्यवस्था का कोई महत्व नही रह गया। यह व्यवस्था उतनी ही दृढ़ और स्थिर है जितने पृथ्वी और आकाश। 18 इसलिए यदि कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी स्त्री से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है। और जो कोई उस त्यागी हुई स्त्री से विवाह करे, वह भी व्यभिचार करता है।'

19 यीशु ने कहा, "एक धनी व्यक्ति था। वह सुन्दर कीमती और भड़कीले वस्त्र पहनता था। वह हर दिन भोग विलास मे बिताता था। 20 एक दिन लाजर नामक भिखारी उसके दरवाजे पर पड़ा था। 21 उसके शरीर मे जगह जगह फोड़े थे। कुत्ते उसके घावो को चाटते थे। वह धनवान की जूठन से अपना पेट भरने को तरसता था 22 एक दिन गरीब व्यक्ति मर गया। स्वर्गदूतो ने उसे वहाँ पहुचा दिया जहां इब्राहीम था, जहां मरे हुए धर्मी पहुचते है।[4] धनी भी मरा और दफनाया गया। 23 उसकी आत्मा नरक[5] मे गई। वहाँ पीड़ा मे पड़े हुए उसने बड़ी दूर पर लाजर को इब्राहीम के साथ देखा। 24 उसने चिल्लाकर कहा, 'हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया कीजिए। मैं यहाँ आग की ज्वाला मे तड़प रहा हूँ। लाजर को मेरे पास भेज दीजिए कि वह मेरे लिए केवल इतना करे कि अपनी अंगुली का सिरा पानी मे भिगाकर मेरी जीभ ठंडी करे।' 25 परन्तु इब्राहीम ने उसे उत्तर दिया, 'पुत्र याद कर, तू ने तो अपने जीवन भर सुख भोगा और लाजर ने दुख। अब वह यहाँ आराम से है जबकि तू पीड़ा मे तड़प रहा है 26 इसके सिवाय, हमारे और तेरे बीच एक बड़ी खाई है। यदि कोई यहाँ से तेरे पास जाना चाहे तो कभी नहीं जा सकता। वैसे ही कोई उस पार से हमारे पास नही आ सकता।' 27 धनी ने कहा, 'आह! पिता इब्राहीम, फिर आप लाजर को मेरे पिताजी के घर भेज दीजिए। 28 मेरे पांच भाई हैं। वह उनको चेतावनी दे कि वे भी मरकर इस दुख की जगह पर न आएं।' 29 परन्तु इब्राहीम ने कहा, 'धर्मशास्त्र से तो उनको बार बार चेतावनी मिली है। तुम्हारे भाई जब चाहें तब धर्मशास्त्र को पढ़ सकते हैं।' 30 धनी ने उत्तर दिया, "नहीं, पिता इब्राहीम, वे धर्मशास्त्र को नहीं पढ़ेंगे। परन्तु यदि मरे हुओं में से कोई उनके पास भेजा जाए, तो वे अपने पापों को छोड़ देंगे।' 31 परन्तु इब्राहीम ने कहा, 'यदि वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं का संदेश नहीं सुनते तो यदि कोई मरे हुओं में से भी जी उठकर जाए, तो उसकी भी नहीं सुनेंगे'।"[6]

17

1 एक दिन यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "पाप करने की परीक्षाएं सदा आती रहेंगी। परन्तु धिक्कार है उस व्यक्ति को जिसके द्वारा परीक्षा आती है। 2, 3 जो इन छोटे बच्चो में से किसी एक को ठोकर खिलाए, उसके लिए भला होता कि उसके गले मे चक्की का पाट बांधा जाता और उसे समुद्र में फेंक दिया जाता। सावधान रहो! यदि तेरा भाई पाप करे तो उसे डांट। यदि वह पछताए तो उसे क्षमा कर। 4 यदि वह तेरे विरुद्ध दिन मे सात बार भी अपराध करे और हर बार पछताकर तुझसे क्षमा मांगे, तो उसे क्षमा कर।"

5 एक दिन प्रेरितों ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, हमारा विश्वास और अधिक होना चाहिए, पर यह कैसे हो?" 6 यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तुम्हारा विश्वास सरसो के बीज के बराबर भी होता, तो इतना अधिक होता कि तुम्हारे कहने ही से यह शहतूत का पेड़ जड़ से उखड़ कर समुद्र मे गिर जाता। 7, 8, 9 कौन ऐसा व्यक्ति है जिसका नौकर हल चलाकर या भेड़ चराकर लौटे, तो उसे सीधे जाकर भोजन

[4] मूलत "इब्राहीम की गोद मे।" [5] मूलत "अधोलोक।" [6] मसीह यीशु भी जब मरे हुओ मे से जी उठे, तो फरीसियों ने उनका विश्वास नहीं किया जिनको यीशु ने यह उदाहरण दिया था।

करने को बैठाएगा। वह पहले अपने मालिक को परोसता और खिलाता है तब स्वयं खाता है। नौकर को धन्यवाद भी नहीं मिलता क्योंकि वह तो केवल वही कर रहा है, जो उसे करना चाहिए। 10 इसी प्रकार यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करो, तो मत सोचो कि प्रशंसा के योग्य हो। क्योंकि तुमने तो अपना कर्तव्य ही पूरा किया है।"

11 यीशु, गलील और सामरिया प्रान्तों के बीच से यरूशलेम को जा रहे थे। 12 एक गाँव में प्रवेश करते समय उन्हें दस कोढी मिले। 13 वे चिल्ला कर कह रहे थे, "यीशु, हे स्वामी, हम पर दया कीजिए।" 14 यीशु ने उनको देखा और कहा, "तुम सब यहूदी पुरोहित के पास जाओ और अपने आपको उन्हें दिखाओ कि स्वस्थ हो गए हो!" वे जा ही रहे थे कि उनका कोढ मिट गया। 15 उसमें से एक यीशु के पास यह चिल्लाते हुए लौटा, "परमेश्वर की प्रशंसा हो, मैं अच्छा हो गया!" 16 उसने दण्डवत करके यीशु को धन्यवाद दिया क्योंकि वह स्वस्थ हो चुका था। यह मनुष्य तिरस्कृत व्यक्ति सामरी[1] था। 17 यीशु ने प्रश्न किया, "क्या मैंने दस व्यक्तियों को स्वस्थ नहीं किया? बाकी नौ कहा हैं? 18 क्या केवल यही विदेशी ऐसा निकला जो लौटकर परमेश्वर की बड़ाई करे?" 19 यीशु ने उस व्यक्ति से कहा, "उठ और जा। तू अपने विश्वास के कारण अच्छा हो गया है।"

20 एक दिन फरीसियों ने यीशु से पूछा, "परमेश्वर का राज्य कब शुरु होगा?" यीशु ने उत्तर दिया, "तुम आँखों से परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकते। 21 तुम यह नहीं कह सकोगे वह इस स्थान में या देश के उस भाग में शुरु हुआ है।' क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम में है।"[2]

22 कुछ समय बाद यीशु ने इसी विषय पर अपने शिष्यों से फिर बातें की। उन्होंने कहा, "वह समय आने वाला है जब तुम्हारी हार्दिक इच्छा होगी कि मैं[3] एक दिन के लिए भी तुम्हारे बीच में रहूँ, परन्तु मैं न रहूँगा। 23 लोग तुमको खबर देंगे कि मैं लौट आया हू और इस स्थान में या उस स्थान में हूँ। तुम तनिक विश्वास मत करना, न ही मुझे देखने के लिए जाना। 24 क्योंकि जब मैं लौटूगा, तब तुम निश्चय समझ लोगे। मेरा आना वैसे ही प्रगट होगा जैसे आकाश की एक छोर से दूसरी छोर तक बिजली कौंध कर चमकती है। 25 परन्तु इससे पहले अवश्य है कि मैं बहुत दुःख उठाऊं और इस पीढ़ी द्वारा ठुकराया जाऊं। 26 (जब मैं लौटूगा[4], तो) पूरा संसार जैसा नूह के युग में था वैसा ही (परमेश्वर की बातों के प्रति उदासीन) होगा। 27 जब तक नूह जहाज पर नहीं चढ़ा लोग उस दिन तक खाते-पीते और विवाह करते थे। तब जल प्रलय हुआ और सब नाश हो गए। 28 संसार की वैसी ही दशा होगी जैसी लूत के युग में थी: लोग रोज का काम करते थे। वे खाते पीते लेन देन करते, खेती करते और घर बनाते थे। 29 परन्तु जिस दिन लूत सदोम शहर से बाहर निकला, आकाश से आग और गन्धक की वर्षा हुई और सब भस्म हो गए। 30 हां, मेरे आने के समय[5] भी ऐसा ही होगा। 31 उस दिन जो घर से बाहर हो वे सामान बांधने के लिए न लौटें, जो खेत में हो, वे गाव को वापिस न आएं—32 याद रखो लूत की पत्नी के साथ क्या हुआ था! 33 जो अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा और जो अपना प्राण खोएगा, वह उसको बचाएगा। 34 उस रात दो व्यक्ति एक ही कमरे में सोते होंगे उनमें से एक उठा लिया जाएगा, दूसरा छोड़ दिया जाएगा।

---

[1] तात्पर्य यह है कि यहूदी लोग सामरिया प्रदेश के निवासियों को, "मिश्रित वंश" के लोग मान कर तुच्छ जानते थे। [2] या, "तुम्हारे बीच में है।" [3] या, "मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन को देखना चाहोगे।" [4] तात्पर्य यही है। [5] या, "प्रगट होने के दिन।"

35, 36 दो स्त्रियां एक साथ चक्की चलाती होंगी, एक उठा ली जाएगी, दूसरी छोड़ दी जाएगी। खेत में दो व्यक्ति काम करते होंगे, एक उठा लिया जाएगा, दूसरा छोड़ दिया जाएगा। 37 शिष्यों ने पूछा, "प्रभु, वे कहां उठा लिए जाएंगे?" यीशु ने उत्तर दिया, "जहां शव रहता है, वहां गिद्ध इकट्ठे होते हैं।"

18 1 एक दिन यीशु ने अपने शिष्यों को यह सिखाने के लिये कि उनको सदा प्रार्थना करनी चाहिए और कभी हताश नहीं होना चाहिए। एक उदाहरण दिया। 2 यीशु ने कहा, "किसी शहर में एक न्यायधीश था। वह परमेश्वर से नहीं डरता था, और न ही लोगों की कुछ परवाह करता था। 3 उसी शहर में एक विधवा भी थी। वह न्यायाधीश से बार बार विनती करती थी, 'मेरा न्याय कीजिए। मुझे मुद्दई से बचाइए।' 4, 5 न्यायधीश ने कुछ समय तक उसकी ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया, पर अन्त में उससे तंग आ गया। उसने अपने आप से कहा, 'मैं न तो परमेश्वर से डरता हूं और न ही मनुष्य से। परन्तु इस स्त्री से तंग आ गया हूं। मैं इसके मुकदमे का फैसला करूंगा क्योंकि यह बार बार आकर मेरी नाक में दम करती है'।" 6 तब यीशु ने कहा, "जब एक अधर्मी न्यायधीश इस प्रकार तंग आ सकता है, 7 तो क्या तुम नहीं सोचते कि परमेश्वर भी निश्चय ही उन लोगों का न्याय करेगा, जो रात दिन उसकी दुहाई देते रहते हैं क्या वह शीघ्र ही उनको उत्तर न देगा? 8 हां! वह उनको शीघ्र ही उत्तर देगा। परन्तु प्रश्न यह है कि जब मसीह अर्थात मैं लौटूंगा तो कितने लोगों को विश्वास करते पाऊंगा (और प्रार्थना करते)"?

9 यीशु ने उन लोगों को जो अपने धर्मी होने की बहुत शेखी बघारते थे और दूसरों को तुच्छ समझते थे एक कहानी बताई। 10 दो व्यक्ति मन्दिर में प्रार्थना करने के लिए गए। एक व्यक्ति घमंडी और स्वयं को धर्मी समझने वाला फरीसी था। दूसरा व्यक्ति कर वसूल करने वाला था जो घूस लेता था। 11 घमंडी फरीसी ने यह प्रार्थना की "परमेश्वर का धन्यवाद हो, मैं दूसरों के समान, विशेष रूप से कर वसूल करने वाले इस पापी के समान नहीं हूं। क्योंकि मैं कभी धोखा नहीं देता न ही व्यभिचार करता हूं। 12 मैं सप्ताह में दो बार उपवास रखता और अपनी पूरी आमदनी का दसवां अंश परमेश्वर को देता हूं।" 13 परन्तु भ्रष्टाचारी कर वसूल करने वाले ने दूर ही से खड़े होकर, प्रार्थना में अपनी आंखें स्वर्ग की ओर भी नहीं उठानी चाहीं। उसने दुःख से अपनी छाती पीटते हुए कहा, "परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।" 14 मैं तुमसे कहता हूं कि यह पापी ही क्षमा पाकर घर लौटा, परन्तु फरीसी नहीं! क्योंकि जो घमण्डी हैं वे छोटे किए जाएंगे, परन्तु छोटों का आदर किया जाएगा।"

15 एक दिन कुछ लोग अपने बच्चों को लेकर यीशु के पास आए कि वह बच्चों पर अपने हाथ रखें और उन्हें आशिष दें। परन्तु शिष्य उन्हें मना करने लगे। 16, 17 यीशु ने बच्चों को अपने पास बुलाया। उन्होंने शिष्यों से कहा, "छोटे बच्चों को मेरे पास आने दो। उन्हें कभी मत रोको! क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसे लोगों का है जिनके हृदय में इन बालकों के समान विश्वास है। जिस किसी के हृदय में उनके समान विश्वास नहीं है, वह कभी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। 18 एक दिन यहूदी धर्म के एक अगुए ने यीशु से यह प्रश्न किया, 'उत्तम गुरुजी, मैं अनन्त जीवन पाने के लिए क्या करूं'?" 19 यीशु ने उससे पूछा, "तुमने सोचा भी कि मुझे 'उत्तम' कहकर क्यों पुकारा? केवल परमेश्वर ही वास्तव में उत्तम है, और कोई नहीं। 20 यह तो तुझे मालूम है कि दस आज्ञाएं क्या हैं? व्यभिचार न करना, हत्या न करना, चोरी न करना, झूठ न बोलना, अपने माता पिता का आदर करना, आदि।"

21 अगुवे ने उत्तर दिया मैं बहुत छुटपन से ही इन सब आज्ञाओं को मानता आया हूँ।" 22 यीशु ने कहा, "फिर भी तुझ मे एक कमी है। अपनी सब सम्पत्ति गरीबों को बाट दे यह धन तेरे लिए स्वर्ग मे जमा हो जाएगा—और आकर मेरे पीछे हो ले।" 23 यह सुनते ही वह व्यक्ति उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था। 24 यीशु ने उसे जाते देखा तब शिष्यों से कहा, "धनी के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना अत्यन्त कठिन है। 25 परमेश्वर के राज्य मे धनी के प्रवेश करने से, सुई के छेद में से ऊंट का निकल जाना सरल है।" 26 पास खडे लोगों ने यह सुनकर पूछा, "यदि यह इतना कठिन है, तो कोई व्यक्ति कैसे बच सकता है?" 27 यीशु ने उत्तर दिया, "परमेश्वर वह कर सकता है जो मनुष्य नही कर सकता।" 28 पतरस ने कहा, "हमने अपना घर छोड़ा है और हम आपके पीछे हो लिए है।" 29 यीशु ने उत्तर दिया, "हाँ, और जितनों ने तुम्हारे समान किया है—घर, पत्नी, भाइयों, माता-पिता और बच्चों को परमेश्वर के राज्य के लिए छोड दिया है, 30 उनको इसी जीवन में कई गुणा अधिक फल मिलेगा और आने वाले समय मे अनन्त जीवन।"

31 यीशु ने बारह शिष्यो को अपने पास बुलाया। उन्होंने कहा, "तुम्हे मालूम है, हम यरूशलेम को जा रहे हैं। जब हम वहाँ पहुंचेंगे तो पुराने नबियों की सब भविष्यवाणिया जो मेरे बारे मे कही गई हैं, पूरी होंगी। 32 मैं अन्य जातियों के हाथ मे सौंपा जाऊगा। वे मेरा उपहास करेंगे, मेरा अपमान करेंगे, मुझ पर थूकेंगे। 33 मुझे कोड़े मारेंगे और मुझे मार भी डालेंगे। परन्तु मैं तीसरे दिन फिर जी उठूगा।" 34 शिष्यो ने यीशु की एक भी बात नही समझी। उनके लिए ये बाते मानों पहेलियाँ थीं।

35 वे यरीहो, शहर के निकट पहुंचे। सडक के किनारे एक अन्धा बैठा हुआ था। वह आने जाने वालों से भीख मांग रहा था। 36 उसने भीड़ के कोलाहल को सुना और पूछा कि क्या हो रहा है। 37 लोगो ने अन्धे को बताया कि नासरत निवासी यीशु यहाँ से हो कर जा रहे हैं। 38 यह सुन कर उसने ज़ोर से चिल्लाना शुरु किया, "हे यीशु, दाऊद के पुत्र मुझ पर दया कीजिए।" 39 भीड के जो लोग यीशु से आगे जा रहे थे उन्होंने उससे चुप रहने को कहा, परन्तु वह और भी ज़ोर से चिल्लाने लगा, "हे दाऊद के पुत्र मुझ पर दया कीजिए।" 40 जब यीशु उस स्थान पर पहुचे तो ठहर गए। उन्होंने कहा, "अन्धे व्यक्ति को यहाँ लाओ।" 41 यीशु ने अन्धे आदमी से पूछा, "तू क्या चाहता है?" उसने विनती की, "प्रभु मैं देखना चाहता हूँ।" 42 यीशु ने कहा, "ठीक है, देखने लग! तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया।" 43 उसी क्षण वह व्यक्ति देखने लगा। वह परमेश्वर की प्रशन्सा करते हुए यीशु के पीछे हो लिया। साथ ही जितनो ने इस घटना को देखा, सबने परमेश्वर की बड़ाई की।

19

1, 2 यीशु यरीहो शहर मे पहुंचे। उस शहर मे जक्कई नामक एक यहूदी पुरुष था। उसका बहुत प्रभाव था क्योंकि वह रोमियो के लिए कर वसूल करने का धधा करता था (इसलिए बहुत धनी भी था)। 3 यीशु को देखने की उसकी बडी इच्छा थी। पर वह भीड के कारण उनको देख नही सकता था क्योंकि बहुत नाटा था। 4 इसलिए वह आगे गया और सडक के किनारे एक गूलर के पेड पर चढ गया ताकि वहा से उनको देखे। 5 जब यीशु वहाँ पहुँचे तो उन्होंने ऊपर देखा और जक्कई को नाम लेकर पुकारा। यीशु ने कहा, "जक्कई! झट नीचे उतर आ! क्योंकि मैं आज तेरे ही घर ठहरूंगा।" 6 जक्कई झटपट पेड से उतरा। वह प्रसन्न हो गया। उसने अपने घर मे यीशु का सत्कार किया। 7 परन्तु भीड़ के लोग कुड़कुड़ाने लगे, "वह भ्रष्टाचारी पापी के घर में पाहुन होने के लिए गए हैं।" 8 जक्कई ने यीशु से कहा, "गुरुजी, अब से मैं अपनी आधी सम्पत्ति

गरीबो को दूंगा। यदि मैंने अन्याय से किसी से अधिक कर वसूल किया है, तो उसका चौगुना लौटा दूंगा।" 9, 10 यीशु ने उससे कहा, "इससे मालूम होता है कि आज इस घर में उद्धार आया है। यह इब्राहीम के खोए हुए पुत्रों मे से एक था।' मसीह, अर्थात मैं ऐसे ही लोगों को खोजने और उनका उद्धार करने आया हूँ।"

11 यीशु यरूशलेम के निकट पहुंच गए थे। लोग सोचते थे कि अब परमेश्वर का राज्य एकदम प्रगट होने वाला है। इसलिए यीशु ने लोगों को कहानी बताई ताकि उनके मन की गलत धारणाओं को सुधारें। 12 "राजघराने का एक व्यक्ति किसी प्रान्त मे रहता था। उसे राज्य की राजधानी मे बुलाया गया ताकि उसका राज्याभिषेक हो और वह राजा बनकर अपने प्रान्त को लौटे। 13 जाने से पहले उसने अपने दस कर्मचारियो को बुलाया और उन्हें एक एक अशर्फी देकर कहा, 'मेरे लौटने तक इनसे व्यापार करना।' 14 कुछ लोग उससे चिढते थे। उन्होंने उसके जाने के बाद कुछ लोगो से कहला भेजा कि उन्होंने विद्रोह किया है और कि वे उसे अपना राजा नही मानेंगे। 15 राजपद पाकर लौटने पर राजा ने अपने दसो कर्मचारियों को बुलाया। वह जानना चाहता था कि उन्होंने अशर्फियो का क्या किया और उनसे कितना लाभ कमाया है। 16 पहले कर्मचारी ने कहा, 'महाराज, मैंने आपकी एक अशर्फी मे दस अशर्फियां और कमाई हैं।' 17 राजा ने कहा, 'शाबाश! तू अच्छा कर्मचारी है मैंने जितना थोडा तुझे दिया था, उतने मे तू ईमानदार रहा। तेरा इनाम यह है कि तू दस नगरो का अधिकारी बनेगा।' 18 अगले कर्मचारी ने बताया, 'महाराज, आपकी एक अशर्फी से मैंने पांच अशर्फियां और कमाई हैं।' 19 राजा ने कहा, 'बहुत अच्छा! तू पाच नगरों का अधिकारी बनेगा।' 20 परन्तु तीसरा कर्मचारी उसकी दी हुई अशर्फी ले आया। उसने कहा, 'महाराज, मैंने इसे बचाकर रखा है। 21 क्योंकि मुझे डर था (आप मेरा लाभ भी मागेंगे) आप कठोर हृदय के हैं। जो आपका नहीं वह ले लेते हैं। दूसरे लोग खेत में बोते हैं, आप काट लेते हैं।' राजा ने गुस्से से कहा, 22 'अरे दुष्ट, निकम्मे! मैं कठोर हूँ न? ठीक, तुमसे ऐसा ही व्यवहार करूंगा। यदि तू मेरे बारे में इतना जानता था कि मैं इतना कठोर हूँ, 23 तो तूने यह अशर्फी बैंक में क्यों नहीं जमा कर दी? कम से कम मुझे उसका ब्याज तो मिला होता।' 24 तब पास खड़े लोगों को राजा ने आज्ञा दी, 'इस की अशर्फी ले लो और उसे दे दो जिसने सबसे अधिक कमाया।' 25 उन्होंने कहा, 'परन्तु महाराज उसके पास तो पहिले ही बहुत है।' 26 राजा ने कहा, 'हाँ, परन्तु यह सदा सच है कि जिनके पास है, उन्हें और मिलता है और जिनके पास बहुत कम रहता है, वे जल्दी ही उतना भी गवां देते हैं। 27 और अब जाओ जिन लोगो ने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया है उन्हें यहां लाकर मेरे सामने मार डालो'।"

28 इस कहानी को बताकर यीशु फिर यरूशलेम की ओर बढ गए। वे शिष्यों के आगे आगे चल रहे थे।

29, 30 जब वे जैतून पहाड़ पर बैतफगे और बैतनिय्याह शहरो के पास पहुचे, तो उन्होंने दो शिष्यो से कहा, "सामने के गाव मे तुम हमसे पहले जाओ वहा पहुँचते ही तुम्हें सड़क के किनारे गदही का बच्चा बंधा दिखेगा। उस पर अब तक किसी ने सवारी नही की है।" यीशु ने कहा, "उसे खोलकर यहाँ ले आओ। 31 यदि कोई पूछे *कि क्या कर रहे हो तो केवल इतना* कहना, प्रभु को इसकी जरूरत है।" 32 उन्हें प्रभु के कहे अनुसार गदही का बच्चा दिखा। 33 जब वे खोल रहे थे, तो उसके मालिकों ने पूछा: "तुम लोग क्या कर रहे हो? इसे क्यो खोल रहे हो?" 34 शिष्यों ने इतना ही कहा, "प्रभु को इसकी जरूरत है।" 35 वे गदही के बच्चे को यीशु के पास लाए। उस पर अपने कपड़े बिछाए और यीशु को उस पर बैठाया।

36, 37 भीड़ के लोगों ने अपने कपड़े यीशु के आगे आगे मार्ग पर बिछाए। वे जैतून पहाड़ की ढ़ान पर पहुंचे जहां से रास्ता शहर की ओर जाता था। तब यीशु के साथ की सारी भीड़ यीशु के सब आश्चर्यकर्मों के लिए ऊंचे स्वर मे परमेश्वर की स्तुति करने लगी। 38, 39 वे आनन्द से पुकारने लगे, "परमेश्वर ने हमे राजा दिया है। राजा युग युग जीवित रहे! स्वर्ग आनन्दित हो, स्वर्ग मे परमेश्वर की महिमा हो!" परन्तु भीड़ में से कुछ फरीसियों ने कहा, "गुरुजी, अपने शिष्यों को डाँटिये कि ऐसी बातें न कहें।" 40 यीशु ने उत्तर दिया, "यदि ये चुप रहेंगे तो मार्ग के पत्थर भी आनन्द से चिल्ला उठेंगे।"

41 जब वे यरूशलेम के निकट पहुचे तो यीशु शहर को देखकर रोने लगे। 42 उन्होंने रोते हुए कहा, "हे यरूशलेम! अनन्त शान्ति तेरे कितने निकट आई! परन्तु तू ने उसे ठुकरा दिया। अब बहुत देर हो चुकी है! 43 तेरे शत्रु तुझे चारो ओर से घेर लेंगे और मोर्चाबन्दी करेंगे। 44 वे तुझे और तेरे निवासियों को मिट्टी में मिला देंगे। तेरे शत्रु तुझ मे पत्थर पर पत्थर भी नही छोड़ेंगे—क्योंकि परमेश्वर का दिया हुआ अवसर तू ने ठुकरा दिया।"

45 तब यीशु ने मन्दिर मे प्रवेश किया। वह व्यापारियों को उनकी दुकानों से भगाने लगे। 46 उन्होंने कहा, "धर्मशास्त्र मे लिखा है, "मेरा मन्दिर प्रार्थना का स्थान है, परन्तु तुमने इसे डाकुओं के अड्डे मे बदल दिया है।"

47 इस घटना के बाद यीशु प्रतिदिन मन्दिर में शिक्षा देते रहे। महापुरोहित, धर्मगुरु और समाज के माने हुए नेता मिलकर यीशु की हत्या का षड्यन्त्र रचने लगे। 48 पर कुछ सोच न सके क्योंकि सारी जनता यीशु की बातें सुनने के लिए बड़ी उत्सुक रहती थी

20

1 एक दिन यीशु मन्दिर में शुभ सन्देश सुना रहे थे और शिक्षा दे रहे थे। तब महापुरोहित, धर्म गुरु और वृद्ध उनके पास आए। 2 वे पूछने लगे कि यीशु ने किस अधिकार से व्यापारियों को मन्दिर मे से निकाला। 3 यीशु ने कहा, "उत्तर देने से पहले मैं भी तुमसे यह प्रश्न पूछता हूँ। 4 क्या यूहन्ना को परमेश्वर ने भेजा था अथवा वह अपने ही अधिकार मे काम करता था?" 5 उन्होंने आपस मे बातें करके कहा, "यदि हम कहें कि उसका सन्देश स्वर्ग से था तो फस जाएगे, क्योंकि वह हमसे फिर पूछेंगे, 'तब तुमने उसका विश्वास क्यों नही किया?' 6, 7 परन्तु यदि कहे कि यूहन्ना, परमेश्वर का भेजा हुआ व्यक्ति नही था, तो भीड़ हमें पत्थरवाह कर डालेगी क्योंकि लोगों को निश्चय है कि वह नबी था।" अन्त मे उन्होने उत्तर दिया, "हमें नही मालूम!" 8 यीशु ने कहा, "तब मैं भी तुम्हारे प्रश्न का उत्तर नही देता।"

9 यीशु ने लोगों की ओर देखकर उन्हे यह कहानी बताई - "एक व्यक्ति ने अंगूर का बगीचा लगाया। उसने कुछ किसानो को ठेके पर बगीचा दे दिया कि वे उसको फसल का आधा भाग दिया करें और कई वर्षों के लिए दूर देश चला गया। 10 जब फल की ऋतु आई तो उसने अपने एक सेवक को वहा भेजा कि अंगूरों का उसका हिस्सा लाए। परन्तु किसानों ने उसे मार पीट कर खाली हाथ लौटा दिया। 11 तब उसने दूसरे व्यक्ति को भेजा और उसका भी यही हाल हुआ। उसे मार पीट कर उसका अपमान कर खाली हाथ भेज दिया गया। 12 तीसरे को भेजा गया। उसके साथ भी ऐसा ही हुआ। उसे भी घायल करके भगा दिया गया। 13 मालिक ने विचार किया, 'मैं क्या करूं? हां, अब अपने प्यारे बेटे को भेजूंगा। हो सकता है वे उसका आदर करेंगे।' 14 परन्तु किसानो ने जब पुत्र को देखा तो कहा, 'यही अच्छा अवसर है। यही व्यक्ति अपने पिता की मृत्यु पर सब सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होगा। आओ, इसे मार डालें, तब जमीन हमारी हो जाएगी।' 15 तब किसानो ने उसे बगीचे से

बाहर घसीटा और मार डाला।' तुम क्या सोचते हो, मालिक क्या करेगा ? 16 मैं बताऊं वह क्या करेगा—वह आकर किसानों को मार डालेगा और अंगूरों के बगीचे का ठेका दूसरों को दे देगा।" सुनने वालों ने विरोध किया, "परमेश्वर करे ऐसा न हो।" 17 यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, "तब धर्मशास्त्र के इस कथन का क्या अर्थ है, 'जिस पत्थर को मिस्त्रियों ने बेकार समझा, वह नींव का प्रमुख पत्थर बन गया' ?" 18 यीशु ने यह भी कहा, "जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा वह चकनाचूर हो जाएगा, और जिस पर वह गिरेगा उसको पीस डालेगा।"

19 जब महापुरोहितों और धर्म-अगुवों ने यीशु की इस कहानी को सुना तो जल-भुन गए। वे समझ गए कि यीशु ने उन्हीं के लिए कहा है और उदाहरण के बुरे किसान वे ही हैं। उन्होंने उसी समय यीशु को पकड़ना चाहा पर डर गए कि उनके पकड़ने से कहीं दंगा न हो जाए इसलिए उन्होंने कोशिश की, कि यीशु के ही मुख से कुछ कहलवाएँ, जिससे उनको पकड़ने के लिए रोमी सरकार को कारण दे सकें। 20 वे अवसर की ताक में थे। उन्होंने भेदिए भेजे कि ईमानदार पुरुष का ढोंग करें और यीशु को बातों ही बातों में फसाएं। 21, 22 उन्होंने यीशु से कहा, "गुरुजी आप कितने ईमानदार शिक्षक हैं। आप हमेशा सच कहते है और कभी मुंह देखी नहीं करते, परन्तु परमेश्वर का मार्ग सिखाते है। हमें बताइए—रोमी सरकार को कर देना उचित है या नहीं ?" 23 यीशु ने उनकी चाल समझ ली और कहा, 24 "मुझे एक सिक्का दिखाओ। इस पर किस का चित्र और किसका नाम है ?" उन्होंने उत्तर दिया, "रोमी सम्राट—कैसर का।" 25 यीशु ने कहा, "जो सम्राट का है, वह सम्राट को दो-और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।" 26 वे यीशु के उत्तर से आश्चर्यचकित होकर चुप रह गए। यीशु को लोगों के सामने बातों में फंसाने की उनकी कोशिश बेकार रही।

27 तब कई सदूकी यीशु के पास आए। सदूकियों का विश्वास था कि मरने पर जीवन समाप्त हो जाता है, उसके बाद मरे हुओं का जी उठना है ही नहीं। 28 उन्होंने यीशु से कहा : "मूसा के नियमों में लिखा है कि यदि कोई पुरुष बिना सन्तान मर जाए तो उस मृतक पुरुष का भाई उस विधवा से विवाह करे। उससे उत्पन्न सन्तान कानूनी तौर पर मरे हुए पुरुष की कहलाए और उसका नाम चलाए। 29 हम एक घराने के विषय में जानते हैं जिसमें सात भाई थे। सबसे बड़े ने शादी की और बिना सन्तान मर गया। 30 उसके भाई ने शादी की और वह भी बिना सन्तान मर गया। 31 इसी प्रकार एक के बाद एक उसका पति होता चला गया। सातों भाई मर गए और उनके एक भी सन्तान न हुई। 32 अन्त में स्त्री की भी मृत्यु हो गई। 33 हमारा प्रश्न है : जी उठने के दिन वह किसकी पत्नी होगी ? क्योंकि उसका विवाह सबसे हुआ था ?" 34, 35 यीशु ने उत्तर दिया, "विवाह इस संसार के लोगों के लिए है। परन्तु मृतकों में से जी उठने पर जो स्वर्ग जाने के योग्य समझे जाते हैं, वे विवाह नहीं करते। 36 वे फिर कभी नहीं मरते—इस बात में वे स्वर्गदूतों के समान है। वे परमेश्वर के पुत्र हैं क्योंकि वे मरे हुओं में से जी उठकर नया जीवन पाते हैं। 37, 38 परन्तु तुम्हारा विशेष प्रश्न यह है कि— मरने के बाद जी उठते हैं या नहीं। अरे ! इसका प्रमाण तो मूसा के लेखों में ही मिल जाता है। परमेश्वर ने जलती हुई झाड़ी में मूसा को कैसे दर्शन दिया—इसका वर्णन करते समय वह परमेश्वर को 'इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर कहता है।' इस कथन का, कि परमेश्वर किसी व्यक्ति का परमेश्वर है, यह अर्थ है कि वह व्यक्ति जीवित है, मरा हुआ नहीं। इसलिए परमेश्वर जीवितों का परमेश्वर है। उसकी दृष्टि में सब जीवित हैं। 39 वहाँ खड़े कुछ लोग यहूदी धर्म के पण्डित थे। यीशु

की बात सुनकर वे बोले, "गुरुजी, आपने बहुत अच्छा कहा।" 40 इसके बाद यीशु से प्रश्न करने का किसी को साहस नहीं हुआ।

41 तब यीशु ने उनके सामने एक प्रश्न रखा। उन्होंने पूछा, "मसीह, को राजा दाऊद का पुत्र क्यों कहा गया है? 42, 43 क्योंकि दाऊद ने स्वयं भजन-संहिता की पुस्तक मे लिखा है: परमेश्वर ने मेरे प्रभु, मसीहा से कहा, 'मेरे दाहिने बैठ, जब तक मैं तेरे बैरियों को तेरे पैर के नीचे न कर दूं।' 44 फिर दाऊद के पुत्र मसीह कैसे हुए। जब दाऊद ने उन्हे प्रभु कहा?"

45 सब लोग यीशु की बातें सुन रहे थे। उन्होंने अपने शिष्यो की ओर देख कर उनसे कहा, 46 "धर्म के इन पण्डितों मे सावधान रहो! वे लम्बे लम्बे चोगे पहन कर घूमना पसद करते हैं। वे चाहते हैं कि रास्ता चलते लोग उन्हे नमस्कार करें। आराधनालयों और धार्मिक उत्सवो मे वे मुख्य मुख्य स्थानों पर बैठना पसद करते है। 47 उस समय भी जब वे अपने को बाहर से धर्मी जताने के लिए लम्बी लम्बी प्रार्थनाएं करते है, मन ही मन विधवाओं की सम्पत्ति को हड़पने की सोचते रहते हैं, इसलिए उन्हे कठोर दण्ड मिलेगा।"

21 1 यीशु मन्दिर ही में खड़े थे। उन्होंने देखा कि धनी अपनी भेंटें दान के पात्र मे डाल रहे हैं। 2 उन्होंने एक विधवा को दो पैसे डालते देखा। 3 यीशु ने कहा, "मैं सच कहता हूं कि इस विधवा ने बाकी सब लोगो से अधिक भेंट चढ़ाई है। 4 दूसरों ने तो जो उनको जरूरत नही थी, उसका बहुत ही कम अंश दिया है, परन्तु इस गरीब विधवा ने जितना उसके पास था, सब कुछ डाल दिया है।"

5 कुछ शिष्य बातें करने लगे कि मन्दिर की शिल्प कला और दीवारों की सजावट कितनी सुन्दर है। 6 परन्तु यीशु ने कहा, "समय आएगा जब यह मन्दिर जिसकी सुन्दरता तुम निहार रहे हो, ढा दिया जाएगा और इसका पत्थर पर पत्थर भी नही रहेगा। 7 उन्होंने आश्चर्य से पूछा, "गुरुजी, यह कब होगा? और इसके होने से पहले क्या चिन्ह होगा।" 8 यीशु ने उत्तर दिया, "सावधान! किसी के बहकावे मे न आना। बहुत से लोग आएगे जो अपने को मसीह कहेंगे और बोलेंगे, 'समय आ पहुंचा है।' परन्तु उनका विश्वास मत करना! 9 जब तुम युद्ध और विद्रोह की खबर सुनो तो घबराना मत। हां युद्ध अवश्य होंगे पर उनके एकदम बाद अन्त नही होगा।

10 क्योंकि एक देश दूसरे देश पर और एक राज्य दूसरे राज्य पर चढ़ाई करेगा। 11 बहुत से देशों मे बड़े बड़े भूकम्प आएगे, अकाल पड़ेगा, महामारी फैलेगी। आकाश मे भी डरावने चिन्ह दिखाई देंगे। 12 परन्तु इन सब के होने से पहले विशेष सताव का समय होगा। मेरे नाम के कारण लोग तुम्हे पचायतों और कैदखानों में, राजाओं और सरकारी अधिकारियों के सामने घसीटेंगे। 13 परन्तु इसका नतीजा यह होगा कि मसीह को सब लोग पहिचान लेंगे और उनका आदर होगा।[1] 14 तुम चिन्ता मत करना कि अपने बचाव मे क्या कहोगे। 15 क्योंकि मैं तुम्हे ठीक शब्द और ऐसी बुद्धि दूंगा कि तुम्हारे सब विरोधी तुम्हारी बातों का खण्डन नहीं कर सकेंगे, न ही सामना कर सकेंगे। 16 तुम्हारे माता, पिता, सगे रिश्तेदार और मित्र भी तुम्हे धोखा देंगे और पकड़वा देंगे। तुम मे से कई मार डाले जाओगे। 17 तुम मेरे हो और मेरे नाम से कहलाते हो, इसलिए सब तुम से घृणा करेंगे। 18 परन्तु तुम्हारी कुछ भी हानि न होगी। 19 क्योंकि यदि तुम स्थिर रहोगे तो अपनी आत्माओं को बचाओगे।

20 "परन्तु जब तुम यरूशलेम शहर को शत्रुओं से घिरा हुआ देखो, तो समझ लेना कि

[1] मूलत "यह तुम्हारे लिए गवाही देने का अवसर हो जाएगा।"

उसके विनाश का समय आ पहुंचा है। 21 तब यहूदिया के लोग पहाड़ों पर भाग जाएं। यरूशलेम शहर के निवासी, शहर से भाग जाएं। जो शहर के बाहर हों वे लौटने की कोशिश न करें क्योंकि 22 वे दिन परमेश्वर के न्याय के होंगे। प्राचीन नबियों के द्वारा धर्मशास्त्र के लिखे हुए वचन पूरे होंगे। 23 गर्भवती और दूध पिलाती हुई माताओं के लिए वे दिन कितने दुखमय होंगे! क्योंकि इस देश पर बड़ी विपत्ति आएगी और इसके निवासियों पर परमेश्वर का क्रोध भड़केगा। 24 वे शत्रु के हथियारों से निर्दयता के साथ मार डाले जाएंगे। वे संसार के सब देशों में बन्दी बनाकर भेजे जाएंगे। यरूशलेम पर शत्रु की जीत होगी। अन्य धर्मी लोग उसे तब तक रौंदेंगे, जब तक उनका नियत समय पूरा नहीं हो जाएगा।

25 "आकाश में अजीब चिन्ह दिखेंगे—सूर्य, चन्द्रमा और तारों में विनाश की चेतावनी के भयानक चिन्ह दिखेंगे। पृथ्वी पर कोलाहल होगा। समुद्र की गर्जना और लहरों से लोगों का कलेजा मुंह को आने लगेगा। 26 पृथ्वी पर आने वाले भयानक भविष्य की आशंका से लोगों के जी में जी नहीं रहेगा, क्योंकि आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी। 27 तब संसार के लोग मुझे, अर्थात मसीह को सामर्थ और वैभव के साथ बादल पर आते देखेंगे। 28 इसलिए जब ये घटनाएं होने लगें, तो खड़े होकर देखना। क्योंकि तुम्हारा उद्धार निकट होगा।"

29 तब यीशु ने उन्हें यह उदाहरण दिया: "अंजीर के वृक्ष या किसी भी पेड़ को देखो। 30 जब पत्ते आने लगते हैं तब तुम बिना बताए जान लेते हो कि ग्रीष्म काल निकट है। 31 उसी प्रकार जब तुम उन घटनाओं को होते देखो जिसका वर्णन मैंने किया, तो निश्चय जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट है।

32 "मैं गम्भीरता के साथ कहता हूं: जब ये घटनाएं हों तो इस युग[2] का अन्त आ गया है। 33 चाहे आकाश और पृथ्वी टल जाएं, तौभी मेरे वचन सदा अटल बने रहेंगे।

34, 35 "सावधान रहो! ऐसा न हो कि आने पर मैं तुमको सचेत न पाऊं। ऐसा न हो कि तुम्हें संसार के दूसरे लोगों के समान लापरवाही से आराम का जीवन बिताते, नशे में मस्त रहते और इस जीवन की चिन्ताओं में फंसे पाऊं। 36 सदा सावधान रहो। और प्रार्थना करो कि यदि हो सके तो बिना इन घटनाओं का अनुभव किए तुम मेरी उपस्थिति में पहुंच सको।"

37, 38 यीशु प्रतिदिन मन्दिर में जाते थे। बड़े सवेरे से ही भीड़ उनको सुनने के लिए इकट्ठी हो जाती थी। प्रतिदिन यीशु जैतून के पहाड़ पर लौट जाते थे कि वहां रात बिताएं।

22 1 फसह का त्यौहार निकट आ रहा था। यह यहूदियों का त्यौहार था जिस दिन वे बिना खमीर की बनाई हुई रोटी खाते थे। 2 महापुरोहित और यहूदी धर्म के अगुए यीशु की हत्या का उपाय सोच रहे थे। वे चाहते थे कि बिना दंगा किए उन्हें मार डालें। क्योंकि वे लोगों के दंगे से डरते थे।

3 यहूदा इस्करियोती, यीशु के बारह शिष्यों में से एक था। शैतान ने उसके हृदय में प्रवेश किया। 4 वह महापुरोहितों और मन्दिर की रक्षा करने वाले सैनिक अधिकारियों के पास गया। यहूदा ने उनके साथ विचार कर यीशु को उनके हाथ पकड़वा देने का षड्यन्त्र रचा। 5 यहूदी अगुवों को यह सुनकर अवश्य खुशी हुई कि यहूदा उनकी सहायता करने को तैयार है। उन्होंने यहूदा को रुपये देने की प्रतिज्ञा की। 6 यहूदा अवसर की ताक में लग गया कि यीशु को जब आस पास भीड़ न हो चुपचाप पकड़वा दे।

7 फसह का त्यौहार आया। इस दिन फसह भोज का मेम्ना अवश्य बलि किया जाता है और यहूदी उसे बिना खमीर मिली हुई रोटी

[2] या "इस पीढ़ी।" [3] या "प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने के योग्य बनो।"

के साथ खाते हैं। 8 यीशु ने पतरस और यूहन्ना को भेजा कि वे पहले जाकर स्थान ढूंढें और वहां फसह का भोजन तैयार करें। 9 उन्होंने पूछा, "आप उस भोज को कहां करना चाहते हैं?" 10 यीशु ने उत्तर दिया, 'यरूशलेम[1] शहर में प्रवेश करते ही तुम एक पुरुष को पानी का घड़ा ले जाते देखोगे। तुम उसके पीछे पीछे जाना। जिस घर में वह जाए, वहां जाना। 11 वहां रहने वालों से कहना, "हमारे गुरुजी ने आपसे पूछा है कि वह कमरा कहां है जहां मैं अपने शिष्यों के साथ फसह का भोजन करूंगा।" 12 वह तुम्हें ऊपरी मंजिल के एक बड़े कमरे में ले जाएगा, जो सजा सजाया मिलेगा। वहीं तैयारी करना। 13 वे शहर को गए। जैसा यीशु ने उनसे कहा था, उन्होंने ठीक वैसा ही पाया और उन्होंने फसह का भोजन तैयार किया।

14 तब यीशु और दूसरे शिष्य वहां पहुंचे। वह ठीक समय पर भोजन के लिए बैठ गए। 15 यीशु ने कहा, "मेरी बड़ी इच्छा थी कि दुख उठाने से पहले तुम्हारे साथ फसह का भोजन खाऊं। 16 यह फसह का भोजन जिस बात को दर्शाता है जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरी न हो जाए, तब तक मैं फिर नहीं खाऊंगा।" 17 तब यीशु ने अंगूर-रस का कटोरा लिया। उसके लिए उन्होंने परमेश्वर को धन्यवाद दिया तब कहा, "इसे लो और आपस में बांट लो। 18 क्योंकि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए, तब तक मैं अंगूर-रस न पिऊंगा।" 19 तब यीशु ने एक रोटी ली। उन्होंने उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया, और रोटी तोड़कर शिष्यों को देते हुए कहा, "यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिए दी गई है मेरे स्मरण में यही किया करो।" 20 भोजन के बाद यीशु ने अंगूर-रस का दूसरा कटोरा लिया। उन्होंने कहा, "यह अंगूर-रस तुम्हें बचाने के लिए की गई, परमेश्वर की नई प्रतिज्ञा और समझौते का चिन्ह है। इस समझौते पर मेरे खून की छाप होगी, जिसे मैं तुम्हारी आत्माओं को खरीदने[2] के लिए बहाऊंगा। 21 पर हमारे बीच यहां मित्र के समान बैठा हुआ एक व्यक्ति है, जो मुझे पकड़वाएगा। 22 मुझे मरना अवश्य है। यह तो परमेश्वर की इच्छा है। परन्तु धिक्कार है उस मनुष्य पर जो मुझे पकड़वाएगा।" 23 शिष्य आपस में विचार करने लगे कि हममें से कौन कभी ऐसा कार्य करेगा।

24 शिष्यों ने विवाद करना शुरू किया कि (आनेवाले राज्य में) सबसे ऊंचा पद किसका होगा। 25 यीशु ने उन्हें बताया, "इस संसार में राजा और महापुरुष राज्य करते हैं। वे जनता के शासक और भलाई करने वाले[3] कहलाते हैं। 26 पर तुम उनके समान न बनना। जो तुममें बड़ा हो, वह सबसे छोटा बने। जो नेता हो, वह सेवक बने। 27 भोजन करने वाला बड़ा है या भोजन परोसने वाले सेवक? हां, भोजन करने वाला। परन्तु मैं तुम्हारे बीच में भोजन परोसने वाले सेवकों के समान हूं। 28 तौभी तुमने संकट के समय[4] मेरा साथ नहीं छोड़ा, 29 और मेरे पिता ने मुझे एक राज्य दिया है, 30 कि तुम उस राज्य में मेरे साथ भोजन करोगे और सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह कुलों का न्याय करोगे। 31 "शमौन! शमौन! शैतान ने तुम्हें मांगा कि गेहूं के समान फटके। 32 परन्तु मैंने प्रार्थना में तेरे लिए विनती की है कि तेरा विश्वास न डगमगाए। इसलिए जब तू दुख से पछता कर मेरी ओर फिर लौटेगा, तब अपने भाइयों का विश्वास भी दृढ़ करना।" 33 शमौन ने कहा, "प्रभु, मैं आपके साथ जेल जाने को, और मरने को तैयार हूं।" 34 परन्तु यीशु ने कहा, "पतरस, मुझे तुझ से कुछ कहना है। कल, मुर्गे के बांग देने से पहले तू तीन बार मेरा इंकार करके कहेगा कि तू मुझे जानता तक नहीं।"

---

[1] मूलत "नगर।" [2] मूलत. "यह कटोरा मेरे उस लोहू में जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है नई वाचा है।
[3] मूलत "राजा···और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं।" [4] मूलत "जाता न रहे।"

35 तब यीशु ने उनसे पूछा, "जब मैंने तुम्हें सुसमाचार सुनाने के लिए बाहर भेजा था तो पैसे, थैली और दूसरा जोड़ी वस्त्र साथ ले जाने के लिए मना किया था। उस समय क्या तुम्हें किसी बात की कमी हुई थी?" उन्होंने उत्तर दिया, "जी, नहीं।" 36 यीशु ने कहा, "परन्तु अब यदि तुम्हारे पास थैली हो तो उसे ले जाओ और रुपए भी लेते जाओ। यदि तुम्हारे पास तलवार न हो तो अपना वस्त्र बेचकर एक एक खरीद लो। 37 क्योंकि समय आ गया है कि मेरे बारे में की गई यह भविष्यवाणी पूरी हो: "वह अपराधियों के साथ गिना जाएगा।" हाँ, नबियों ने मेरे विषय में जितना लिखा, सब पूरा होगा।" 38 शिष्यों ने कहा, "गुरुजी, हमारे पास दो तलवारें हैं।" यीशु ने कहा, "बस है।"

39 तब यीशु ने शिष्यों के साथ ऊपरी मंजिल का वह कमरा छोड़ दिया। वे सदा के समान जैतून पहाड़ पर गए। 40 वहाँ यीशु ने शिष्यों से कहा, "परमेश्वर से प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न हारो।"[5] 41, 42 यीशु उनसे कुछ दूर गए, वहा उन्होंने घुटने टेक कर यह प्रार्थना की: "हे पिता, यदि तेरी इच्छा है, तो इस दुःख के कटोरे को मुझसे दूर हटा ले। फिर भी मेरी इच्छा नहीं परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।" 43 तब एक स्वर्गदूत ने आकर उन्हें शक्ति दी। 44 क्योंकि यीशु आत्मा में इतने व्याकुल थे और इतने अधिक लगन से प्रार्थना कर रहे थे, कि उनके पसीने की बड़ी बड़ी बूँदें रक्त की तरह जमीन पर गिर रही थीं। 45 अन्त में वह खड़े हुए और शिष्यों के पास आए। किन्तु क्या देखा कि शिष्य दुःख से थककर सो रहे थे। 46 यीशु ने कहा, "तुम क्यों सो रहे हो? उठो! परमेश्वर से प्रार्थना करो कि परीक्षा आने पर गिर न जाओ।"

47 उनकी बात समाप्त भी नहीं हुई थी कि एक बड़ी भीड़ वहाँ आ पहुँची। यहूदा, जो बारह शिष्यों में से एक था, भीड़ के आगे आगे चल रहा था। यहूदा ने पास आकर मित्र के समान यीशु को गाल पर चूमा।[6] 48 परन्तु यीशु ने कहा, "यहूदा, तू कैसे साहस कर सका कि चूमा लेकर मसीह को पकड़वा दे?" 49 दूसरे शिष्यों ने स्थिति को भाँप लिया। उन्होंने पूछा, "गुरुजी, क्या हम लड़ें?" 50 उनमें से एक ने महापुरोहित के नौकर पर अपनी तलवार चलाकर उसका दाहिना कान उड़ा दिया। 51 परन्तु यीशु ने कहा, "अब तलवार और मत चलाओ।" उन्होंने नौकर का कान छू कर अच्छा कर दिया। 52 तब यीशु ने महा-पुरोहितों, मन्दिर की रक्षा करने वाले सिपाहियों और धर्म-गुरुओं में जो भीड़ के अगुए थे, पूछा "क्या मैं डाकू हूँ जो तुम तलवारें और लाठियाँ लिए हुए मुझे पकड़ने आए हो? 53 तुमने मुझे मन्दिर में क्यों नहीं पकड़ा? मैं रोज वहाँ था। परन्तु यह तुम्हारा समय है—ऐसा समय जब शैतान की शक्ति का अधिकार है।"

54 उन्होंने यीशु को पकड़ लिया और महापुरोहित के घर की ओर ले गए। पतरस दूर से उनके पीछे पीछे आया। 55 सिपाहियों ने आँगन में आग जलाई और चारों ओर बैठकर तापने लगे। पतरस उनमें मिल गया। 56 आग के प्रकाश में एक नौकरानी ने पतरस को पहचान लिया। वह एकटक उसे देखती रही। अन्त में उसने कहा, "यह आदमी यीशु के साथ था।" 57 पतरस ने इन्कार किया। उसने कहा, "बहिन, मैं उसे जानता तक नहीं!" 58 कुछ देर बाद किसी और ने पतरस को देखा। उसने कहा, "तू अवश्य उन्हीं में से है।" पतरस ने उत्तर दिया, "नहीं, मैं नहीं हूँ।" 59 करीब एक घन्टे के बाद किसी और ने दृढ़ता से कहा, "मैं जानता हूँ यह आदमी यीशु के शिष्यों में से है क्योंकि यह भी गलील प्रदेश का रहनेवाला है।" 60 परन्तु पतरस ने कहा, "अरे भाई, मैं जानता

[5] मूलतः "कि परीक्षा में न पड़ो।" [6] मूलतः "यीशु के पास आया, कि उनका चूमा ले।" कुछ देशों में आज भी मिलने की यही प्रथा है।

भी नहीं कि तू क्या कह रहा है।" उसके इतना कहते ही, मुर्ग ने बाँग दी। 61 उसी क्षण यीशु ने मुड़ कर पतरस को देखा। तब पतरस को याद आया कि यीशु ने कहा था—"कल, मुर्ग के बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार कर के कहेगा कि तू मुझे जानता तक नहीं।" 62 पतरस आँगन से बाहर निकला और फूट फूट कर रोया।

63, 64 जो सिपाही यीशु को पकड़े हुए थे, वे उनकी हँसी उड़ाने लगे। उन्होंने यीशु की आँखों पर पट्टी बाँधी। तब उन्होंने मुक्का मारकर यीशु से पूछा, "हे नबी बता, किसने तुझे मारा ?" 65 उन्होंने तरह तरह की और अपमानजनक बातें कहीं।

66 दूसरे दिन सवेरा होते ही यहूदियों की न्याय-सभा इकट्ठी हुई। इस सभा में महा-पुरोहित और देश के प्रमुख धार्मिक अधिकारी भी थे। यीशु को इस न्याय-सभा के सामने लाया गया। 67, 68 उन्होंने पूछा, "क्या तुम मसीह हो ?" यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं सच कहूँ, तो तुम मेरा विश्वास नहीं करोगे और यदि पूछूं तो तुम उत्तर नहीं दोगे। 69 परन्तु वह समय जल्द आ रहा है जब मसीह, अर्थात मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठूंगा।" 70 तब सबने एक साथ चिल्लाते हुए कहा, "क्या तुम दावा करते हो कि परमेश्वर के पुत्र हो ?" यीशु ने उत्तर दिया, "हाँ मैं हूँ।" 71 वे चिल्लाए, "अब हमें गवाहों की क्या जरूरत ? अब तो हमने अपने कानों से उसे यह कहते सुना है।"

23 1 तब उनकी न्याय सभा समाप्त हुई। उन्होंने यीशु को राज्यपाल पीलातुस के सामने पेश किया। 2 उन्होंने यीशु पर दोष लगाया : "यह व्यक्ति हमारे लोगों को बहकाता है कि रोमी सरकार को कर न दो। यह अपने आप को राजा और मसीह कहकर लोगों में अपनी धाक जमाता है।" 3 इसलिए पीलातुस ने यीशु से पूछा, "क्या तुम उनके राजा,[1] मसीह हो ?" यीशु ने उत्तर दिया, "हां, जैसा तुम कह रहे हो।" 4 तब पीलातुस ने महापुरोहितों और भीड़ की ओर मुड़कर कहा "लेकिन, यह कोई अपराध नहीं है !" 5 इस पर वे और भी दृढ़ता से कहने लगे, 'परन्तु यह जहां कहीं जाता है, सारे यहूदिया में, गलील से लेकर यरूशलेम तक, सरकार के विरुद्ध लोगों को भड़काता है।" 6 पीलातुस ने प्रश्न किया, "तो क्या यह गलीली है ?" 7 उन्होंने कहा, "हाँ"। पीलातुस ने उनसे कहा कि वे यीशु को राजा हेरोदेस के पास ले जाएँ, क्योंकि गलील क्षेत्र हेरोदेस के न्यायाधिकार में था। हेरोदेस उस समय यरूशलेम शहर में ही था।

8 हेरोदेस को बड़ी खुशी हुई कि उसे यीशु को देखने का अवसर मिला। उसने यीशु के बारे में बहुत सुना था और वह यीशु से कोई आश्चर्यकर्म देखना चाहता था। 9 हेरोदेस ने यीशु से एक के बाद एक कई प्रश्न किए किन्तु उसे एक भी उत्तर नहीं मिला। 10 वहाँ महापुरोहित और धर्म के अन्य अगुए खड़े खड़े चिल्लाकर यीशु पर झूठा दोष लगा रहे थे। 11 हेरोदेस और उनके सिपाहियों ने यीशु का उपहास किया और उनका अपमान करना शुरू किया। उन्होंने यीशु को राजसी वस्त्र पहनाकर पीलातुस के पास वापस भेज दिया। 12 उस दिन हेरोदेस और पीलातुस मित्र बन गए। इससे पहले उन दोनों में दुश्मनी थी।

13 पीलातुस ने महापुरोहितों और धर्म के अगुओं को लोगों के साथ बुलाया। 14 तब उसने अपना निर्णय सुनाया - "तुम इस मनुष्य को मेरे पास लाए हो। तुमने इस पर यह दोष लगाया कि इस मनुष्य ने रोमी सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए लोगों को भड़काया है। मैंने इस बात की पूरी जाँच की है और उसे निर्दोष पाया है। 15 हेरोदेस ने भी उसे निर्दोष

[1] मूलत "क्या तू यहूदियों का राजा है ?"

पाकर हमारे पास वापिस भेज दिया है। इस मनुष्य ने ऐसा कुछ नहीं किया कि इसे मृत्यु दण्ड मिले। 16 इसलिए मैं इसे कोड़े लगवाऊँगा और छोड़ दूंगा।" 17,[2] 18 तब सारी भीड़ एक स्वर से चिल्लाने लगी, "इसे मौत की सजा दो। हमारे लिए बरअब्बा को छोड़ दो।" 19 (बरअब्बा हत्या के अपराध मे और सरकार के विरुद्ध यरूशलेम शहर मे राजद्रोह करने के कारण जेल में था।) 20 पीलातुस ने यीशु को छोड़ने की इच्छा से लोगों को फिर समझाया। 21 परन्तु वे और ज़ोर से चिल्लाने लगे, "उसे क्रूस पर चढाओ! उसे क्रूस पर चढाओ!" 22 पीलातुस ने तीसरी बार लोगो से कहा, "क्यो? उसने क्या अपराध किया है? मुझे ऐसा कोई भी कारण नही मिला कि उसे मृत्यु की सजा दू। मैं उसे कोड़े लगवाऊँगा और छोड दूंगा।" 23 परन्तु लोगों का ज़ोर ज़ोर मे चिल्लाना बन्द नही हुआ कि यीशु को मृत्यु दण्ड दिया जाए। अन्त मे उनका चिल्लाना सफल हुआ। 24 पीलातुस ने उनकी मांग के अनुसार यीशु को मृत्यु दण्ड सुनाया। 25 उन्होंने लोगों की विनती मानकर बरअब्बा को छोड दिया जो राजद्रोह और हत्या के अपराध मे कैदी था। पीलातुस ने यीशु को लोगों के हाथ सौंप दिया कि वे उनके साथ जो चाहे करें।

26 वे यीशु को नगर से बाहर ले गए। कुरेन प्रान्त का रहने वाला शमौन नामक एक व्यक्ति अपने शहर मे उसी समय यरूशलेम को आ रहा था। उन्होंने उसे पकडा और यीशु का क्रूस उसके कंधे पर लाद दिया।

27 उनके पीछे बडी भीड़ हो ली। उसमे कुछ स्त्रियाँ भी थी जो यीशु के लिए रो रोकर विलाप कर रहीं थी। 28 परन्तु यीशु ने पलट कर उन्हें देखा और कहा, "यरूशलेम की बेटियो मेरे लिए मत रोओ परन्तु अपने और अपने बेटे-बेटियों के लिए रोओ। 29 क्योंकि वे दिन आ रहे हैं जब वे स्त्रियाँ, जिनकी सन्तानें नहीं, वास्तव में भाग्यशाली गिनी जाएंगी। 30 उस समय मानव जाति पहाड़ों से विनती करेगी कि उस पर गिर पडे और पहाडियों से कहेंगी कि उसे ढाँप लें। 31 जब लोग हरे पेड़ अर्थात मेरे साथ ही ऐसा व्यवहार कर रहे हैं, तो तुम्हारे साथ और क्या क्या न करेंगे?"[3]

32, 33 दो अपराधियों को भी दण्ड के लिए वे "खोपडी" नामक स्थान पर ले गए। वहा यीशु के साथ उन दोनों को भी क्रूस की सज़ा मिली। यीशु को बीच के क्रूस पर और एक अपराधी को उनके दाहिनी ओर दूसरे को उनके बाईं ओर क्रूस पर चढाया गया। 34 यीशु ने कहा, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।" सिपाहियों ने चिट्ठी डालकर यीशु के वस्त्र आपस मे बाँट लिए। 35 भीड देख रही थी। यहूदी अगुए हँसी करते और खिल्ली उडाते थे। उन्होंने कहा, "यह दूसरों की भलाई करने मे तो बडा तेज था। अब देखे कि यह सचमुच परमेश्वर का चुना हुआ मसीह है या नही। होगा तो अपने को बचाएगा।" 36 सिपाहियो ने भी चिढाने के लिए यीशु को सिरका पीने को दिया। 37 उन्होंने यीशु से कहा, "यदि तू यहूदियों का राजा है, तो अपने आप को बचा।" 38 यीशु के क्रूस पर लिखा था, "यह यहूदियो का राजा है।"

39 यीशु की एक ओर क्रूस पर टगा हुआ अपराधी भी निन्दा करने लगा, "अच्छा, तो मसीह तू ही है!" फिर अपने आपको और हमको बचाकर दिखा दे। 40, 41 परन्तु दूसरी ओर टगे हुए अपराधी ने मना किया। "तू मरने तक क्या परमेश्वर से नही डरता?

[2] कुछ प्राचीन प्रतिलिपियो मे पद 17 भी है, "त्योहार के समय एक (कैदी) व्यक्ति को मुक्त करना उनके लिए आवश्यक था। [3] मूलत "क्योंकि जब वे हरे पेड के साथ ऐसा करते है, तो सूखों के साथ क्या कुछ न किया जाएगा?"

तू भी तो वही सज़ा पा रहा है। खैर! हम तो अपने बुरे कामों का दण्ड पा रहे हैं। परन्तु इस व्यक्ति ने एक भी बुरा काम नहीं किया।" 42 तब उसने कहा, "यीशु, जब आप अपने राज्य में आएं, तो मुझे याद कीजिए।" 43 यीशु ने उत्तर दिया, "आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।"

44 इस समय करीब बारह बज चुका था। उस समय से लेकर तीन बजे तक लगभग तीन घंटे पूरे देश पर अन्धकार छाया रहा। 45 सूर्य का प्रकाश जाता रहा। तब अचानक मन्दिर में टंगा हुआ परदा दो भाग में फट गया। 46 तब यीशु ने बड़े ऊंचे स्वर से कहा, "हे पिता मैं अपनी आत्मा तुझ को सौंपता हूं।" इतना कहकर यीशु ने प्राण त्याग दिए। 47 जब रोमी सेना के कप्तान ने, जो मृत्युदण्ड देने का अधिकारी था, यह सब देखा तो उसने परमेश्वर की प्रशंसा की। उसने कहा, "यह मनुष्य निश्चय ही निर्दोष था।"[4] 48 भीड़ के लोग क्रूस की इस सज़ा को देखने आए थे। उन्होंने जब देखा कि यीशु की मृत्यु हो गई, तो बड़े दुःख के साथ घर लौट गए। 49 पर यीशु के मित्र और जो स्त्रियां उनके साथ गलील से आई थीं, वे सब दूर खड़े होकर देख रहे थे।

50, 51, 52 यूसुफ नामक एक व्यक्ति यहूदियों के उच्चतम न्यायालय का सदस्य था। वह यहूदिया प्रदेश के अरिमतिया शहर का रहने वाला था। उसने पीलातुस के पास जाकर उससे यीशु का शव मांगा। यूसुफ सन्त पुरुष था और मसीह के आने की बाट जोह रहा था। वह दूसरे यहूदी अगुओं के निर्णय और कार्यों से सहमत नहीं हुआ था। 53 उसने यीशु का शव ले जाकर मलमल के कपड़े में लपेटा। तब उसने शव को (पहाड़ की ढलान पर) चट्टान खोदकर बनाई हुई एक बिल्कुल नई कब्र में रखा। 54 यह काम शुक्रवार के दिन ढलते समय किया गया। वह दिन विश्रामवार की तैयारी का था। 55 जब शव को ले जाया जा रहा था, तब गलील से आई हुई स्त्रियां पीछे पीछे गईं। उन्होंने देखा कि शव को किस कब्र में रखा गया है। 56 वे अपने घर लौटीं। उन्होंने सुगन्धित वस्तुएं और इत्र तैयार किया ताकि शव पर लगाएं। परन्तु उनका काम समाप्त नहीं हुआ था कि विश्राम दिन हो गया। इसलिए उन्होंने उस दिन यहूदियों की व्यवस्था के अनुसार विश्राम किया।

24

1 किन्तु रविवार को सवेरा होते ही वे सुगन्धित लेप लेकर कब्र पर आईं। 2 उन्होंने देखा कि कब्र के द्वार पर रखा हुआ बड़ा पत्थर वहां से लुढ़का हुआ है। 3 वे अन्दर गईं—परन्तु यीशु का शव वहां न था। 4 वे आश्चर्य में डूबी खड़ी रहीं। जो कुछ हुआ था वह उनकी समझ से बाहर था। अचानक उन्हें दो पुरुष अपने सामने दिखाई दिये जो इतने चमकीले वस्त्र पहने हुए थे कि उनकी आंखें चौंधिया गईं। 5 स्त्रियां बहुत डर गईं और उन्होंने अपना सिर भूमि की ओर झुका लिया। तब उन पुरुषों ने पूछा, "तुम जीवित को कब्र में क्यों ढूंढ रही हो? 6, 7 वह यहां नहीं हैं। वह जी उठे हैं! तुम्हें याद नहीं कि उन्होंने तुमसे गलील में क्या कहा था? उन्होंने कहा था कि बुरे लोग मसीह को पकड़वा देंगे, उन्हें क्रूस पर चढ़ाएंगे और वह तीसरे दिन जी उठेंगे?" 8 तब उनको याद आया। 9 वे दौड़ती हुई यरूशलेम[1] शहर को गईं ताकि जो कुछ हुआ है, ग्यारह शिष्यों और सभी को बताएं! 10 (जो स्त्रियां कब्र पर गईं वे मरियम मगदलीनी, योअन्ना, याकूब की माता मरियम और दूसरी स्त्रियां थीं।) 11 परन्तु स्त्रियों की बातें शिष्यों को झूठी कहानी सी लगी—उन्होंने विश्वास नहीं किया। 12 तौभी पतरस दौड़ कर कब्र को देखने गया! उसने

[4] मूलतः "धर्मी।"

[1] मूलतः "कब्र से लौट गईं।"

झुककर झाका तो कफन को खाली पडा हुआ देखा। वह घर लौट गया और सोचता रहा कि क्या हो गया है।

13 उसी दिन इतवार को यीशु के दो शिष्य इम्माऊस नामक गाँव को जा रहे थे, जो यरूशलेम से सात मील दूर था। 14 वे चलते चलते यीशु की मृत्यु पर बातचीत कर रहे थे। 15 अचानक यीशु स्वय आकर उनके साथ हो लिए। 16 परन्तु उन्होने यीशु को नही पहचाना, क्योकि परमेश्वर ने उनको उस समय पहचानने की शक्ति नही दी थी। 17 यीशु ने उनसे कहा, "तुम लोग क्या बातें कर रहे हो ? और क्यों इतने चिन्तित दिखाई देते हो।" वे उदास रह गए। 18 उनमे से एक ने, जिसका नाम क्लियुपास था, कहा, "यरूशलेम मे आप ही एक ऐसे अजनबी होगे जिन्होने नही सुना कि पिछले सप्ताह[*] वहाँ क्या क्या हुआ।" 19 यीशु ने पूछा, "क्या क्या हुआ ?" उन्होने कहा, "वही जो नासरत नगर के रहने वाले यीशु के साथ हुआ। वह नबी थे और सामर्थ से आश्चर्य के काम करते थे। वह महान गुरु थे। परमेश्वर और मनुष्य दोनो उनका सम्मान करते थे। 20 परन्तु हमारे धर्म के महापुरोहितो और अगुओ ने उन्हे पकड लिया। उन्होने यीशु को मृत्यु की सजा देने के लिए रोमी सरकार के हाथ मे सौप दिया और उन्हे क्रूस पर चढवाया। 21 हम सोचते थे कि वही हमारा मसीह है और इस्राएल को छुडाने के लिए आया है। और अब इन बातो को छोड दीजिए जो तीन दिन पहले की है। 22, 23 आज ही बडे सवेरे की एक विचित्र बात सुनिए। हमारे झुड की कुछ स्त्रियाँ कब्र पर गई थीं। उन्होंने आकर हमे बडे आश्चर्य की खबर दी कि यीशु का शव वहाँ नही है। उन्होने बताया कि उनको स्वर्गदूत भी दिखाई दिए जिन्होने उनसे कहा कि यीशु जीवित हैं। 24 हमारे कुछ आदमी भी देखने भागे और सच मानिए यीशु का शरीर वहाँ नही था, ठीक जैसा स्त्रियों ने कहा था। 25 तब यीशु ने उनसे कहा, "तुम अत्यन्त मूर्ख हो! नबियो ने जो बातें धर्मशास्त्र मे लिखी, उन पर विश्वास करना तुम्हें कठिन जान पडता है। 26 क्या नबियो ने स्पष्ट नही लिखा कि मसीह को महिमा मे प्रवेश करने से पहले इन सब दुखो को उठाना होगा ?" 27 तब यीशु ने उत्पत्ति की पुस्तक और नबियो की पुस्तको से आरम्भ करके पूरे धर्मशास्त्र में उनके बारे मे जो जो लिखा था सब समझाया। 28 इसी समय वे अपने गाँव इम्माऊस पहुच गए। यीशु और आगे चले जाते, 29 परन्तु उन शिष्यो ने उनसे विनती की, कि रात को उनके साथ ठहरें, क्योकि अधेरा होने लगा था तब यीशु उनके साथ घर गए। 30 जब वे भोजन करने बैठे तो यीशु ने भोजन के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया। फिर उन्होंने रोटी ली और उसे तोडकर उन्हे देने लगे। 31 तब अचानक उनकी आखें खुल गई—उन्होंने यीशु को पहचान लिया। उसी क्षण यीशु उनकी आखों से ओझल हो गए। 32 वे आपस मे बताने लगे कि जब मार्ग मे यीशु उनको धर्मशास्त्र से समझा रहे थे तब उनका मन कितना उत्तेजित हो उठा था। 33, 34 वे उसी समय उठकर यरूशलेम को वापिस गए। वहाँ यीशु के ग्यारह शिष्य और दूसरे साथी इकट्ठे थे। शिष्यो ने बताया, "सच है यीशु जी उठे हैं। पतरस ने उन्हें देखा है!" 35 तब उन दोनो ने बताया कि इम्माऊस के मार्ग पर यीशु उनको कैसे दिखाई दिए और उन्होने रोटी तोडते समय उनको कैसे पहचाना।

36 वे बता ही रहे थे कि यीशु ने अचानक उनके बीच खडे होकर कहा, "तुम्हे शान्ति मिले।" 37 परन्तु शिष्य बहुत बुरी तरह डर गए यह सोचकर कि उन्हें कोई आत्मा दिख रही है। 38 यीशु ने पूछा, "तुम डर क्यो रहे हो ? तुम शक क्यो करते हो कि सचमुच मे, मैं ही हूँ या नही ? 39 मेरे हाथों को देखो! मेरे पैर

[*] मूलत "इन दिनों मे।"

देखो ! मैं वही हूँ। मुझे छूकर जानो कि मैं आत्मा नही हूँ। क्योकि आत्माओं के शरीर नही होते, परन्तु तुम मेरा शरीर देख सकते हो।" 40 इतना कह कर यीशु ने अपने हाथ (कीलों के चिन्ह) बढाकर उन्हें दिखाए और अपने पैर (उनमें बने हुए छेद) भी दिखाए। 41 इस पर भी शिष्यों को आनन्द के मारे विश्वास नही हो रहा था। तब यीशु ने उनसे पूछा, "क्या यहाँ तुम्हारे पास खाने को कुछ है ?" 42 उन्होने यीशु को भुनी मछली का एक टुकड़ा दिया। 43 जब यीशु खा रहे थे तो वे उन्हे ध्यान से देखते रहे। 44 यीशु ने कहा, "तुम्हें याद नही, जब मैं तुम्हारे साथ पहले था, तब मैंने तुम्हे बताया था कि मूसा और नबियों की पुस्तकों मे और भजन संहिता मे मेरे बारे मे जितना लिखा है, सब अवश्य पूरा होगा ?" 45 तब यीशु ने उनकी बुद्धि खोल दी ताकि वे धर्मशास्त्र को समझें। 46 यीशु ने कहा, "हाँ, बहुत समय पहले लिखा गया था कि मसीह को दुख उठाना, मरना और तीसरे दिन मृतको में से जी उठना अवश्य है। 47 उद्धार का यह सदेश यरूशलेम से सब देशो मे पहुंचना चाहिए . जितने मेरी ओर फिरेंगे उन सभी को पापो की क्षमा मिलेगी। 48 तुमने इन भविष्यद्वाणियो को पूरी होते देखा है। 49 और अब मैं तुम पर पवित्र आत्मा भेजूंगा, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है जब तक पवित्र आत्मा तुम पर न उतरे और तुम्हे स्वर्ग की शक्ति से न भर दे इसी शहर मे ठहरे रहो।"

50 तब यीशु उन्हे बैतनिय्याह जाने वाले मार्ग[3] पर ले गए। उन्होने अपने हाथ उठाकर उन्हे आशिष दी। 51 उन्हे आशिष देते देते वे आकाश की ओर उठे और स्वर्ग को चले गए। 52 तब वहाँ खडे लोगो ने यीशु की वन्दना की और बडे आनन्द से यरूशलेम शहर को लौट गए। 53 वे प्रतिदिन मन्दिर मे परमेश्वर की स्तुति करते रहे।

[3] यही अर्थ है। बैतनिय्याह एक मील दूर था जो घाटी के उस पार जैतून पहाड़ पर बसा हुआ था।

केवल पानी ही से बपतिस्मा देता हूँ परन्तु यही इस भीड़ मे एक व्यक्ति है जिससे तुम अपरिचित हो, 27 वह तुम्हारे मध्य मे सेवा कार्य शीघ्र आरम्भ करेगा, मैं तो उसका दास होने के भी योग्य नही।" 28 यह घटना बैतनिय्याह नामक गांव मे हुई जो यर्दन नदी के किनारे है, जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा दे रहा था।

29 दूसरे दिन यूहन्ना ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, "देखो! यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है। 30 मैं इन्हीं के विषय मे कह रहा था, 'एक व्यक्ति आने वाला है जो मुझसे अधिक महान है—क्योंकि वह मुझसे बहुत पहले था।' 31 मुझे नही मालूम था कि यह वही हैं परन्तु मैं यहाँ पानी मे बपतिस्मा दे रहा हूँ ताकि उन्हें इस्राएल पर प्रकट करूं।" 32 तब यूहन्ना ने बताया, "मैंने पवित्र आत्मा को कबूतर के रूप मे स्वर्ग से उतरते और यीशु पर ठहरते देखा है। 33 मैं न जानता था कि यह वही हैं। परन्तु परमेश्वर ने मुझे बपतिस्मा देने के लिये भेजते समय कहा था, 'जिस व्यक्ति पर तू पवित्र आत्मा को उतरते और ठहरते देखे तो वही है जो पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने वाला है।' 34 मैंने देखा कि इस व्यक्ति के साथ ऐसा ही हुआ और इसीलिये मैं गवाही देता हूं कि परमेश्वर के पुत्र यही हैं।"

35 दूसरे दिन यूहन्ना अपने दो चेलों के साथ खड़ा था, 36 यीशु पास से होकर निकले। यूहन्ना ने ध्यान से उनकी ओर देख कर कहा, "देखो! यही परमेश्वर का मेम्ना है।" 37 तब यूहन्ना के दोनों चेले उसे छोड़कर यीशु के पीछे हो लिए। 38 यीशु ने उनको पीछे आते देखकर उनसे पूछा, "तुम्हे क्या चाहिये?" वे बोले, "हे गुरु आप कहाँ रहते हैं?" 39 उन्होंने कहा, "आओ और देखो।" वे उनके साथ वहा गए जहा यीशु ठहरे थे और उस दिन उनके साथ रहे। उस समय संध्या के लगभग चार बजे थे। 40 उनमे से एक शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। 41 उसने अपने भाई शमौन के पास जाकर कहा, "हमें मसीह मिल गया है।" 42 वह उसे यीशु के पास लाया। यीशु ने पतरस को ध्यानपूर्वक देखकर कहा, "तुम यूहन्ना के पुत्र शमौन हो, तुम पतरस अर्थात चट्टान कहलाओगे।"

43 दूसरे दिन यीशु ने गलील जाने का निश्चय किया। उन्होंने फिलिप्पुस से कहा, "मेरे साथ आओ।" 44 फिलिप्पुस बैतसैदा का निवासी था। अन्द्रियास और पतरस भी वहीं के रहने वाले थे। 45 तब फिलिप्पुस ने नतनएल के पास जाकर कहा, "मसीह हमें मिल गया है। यह वही है जिसके बारे में मूसा तथा अन्य नबियों ने लिखा है। उनका नाम यीशु है। वह नासरत निवासी यूसुफ के पुत्र हैं।" 46 नतनएल ने आश्चर्य से कहा "नासरत! क्या वहां से कोई *अच्छी वस्तु निकल सकती है?* फिलिप्पुस ने कहा, "आकर स्वयं देख ले।" 47 यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देखकर उसके सम्बन्ध में कहा, "देखो! यह सचमुच इस्राएली है, इसमे कोई कपट नहीं!" 48 नतनएल ने पूछा, "आप मुझे कैसे जानते हैं?" यीशु ने उत्तर दिया, "इससे पहले कि फिलिप्पुस ने तुम्हें बुलाया, मैंने तुम्हें अंजीर के वृक्ष के नीचे देखा।" 49 नतनएल ने कहा, "गुरु आप परमेश्वर के पुत्र—इस्राएल के राजा हैं।" 50 यीशु ने उससे पूछा, "क्या तुम इस बात पर, इसलिये विश्वास करते हो क्योंकि मैंने कहा, "मैंने तुम्हें अंजीर के वृक्ष के नीचे देखा?" तुम इससे भी महान कार्य देखोगे।" 51 उन्होंने फिर कहा, "मैं तुम लोगों से पूर्णत: सत्य कहता हूं तुम स्वर्ग को खुला और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मसीह अर्थात मनुष्य के पुत्र के पास आते और जाते देखोगे।"

2 1 तीसरे दिन गलील के *काना नामक गांव* मे किसी का विवाह था। उसमें यीशु की

यूहन्ना रचित सुसमाचार

1 1 सृष्टि की उत्पत्ति से पहले[1] जब कुछ भी न था, तब मसीह[2] परमेश्वर के साथ था। 2 वह सदाकाल से है और वह स्वयं परमेश्वर है। 3 उसी के द्वारा सब वस्तुओं की उत्पत्ति हुई, और जो कुछ उत्पन्न हुआ उसमें से एक भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। 4 उसमें जीवन है; और यह जीवन मनुष्यों को ज्योति प्रदान करता है। 5 ज्योति अंधकार में चमकती है परन्तु अंधकार ने उस पर कभी विजय नहीं पाई। 6 परमेश्वर ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को भेजा। 7 वह ज्योति की साक्षी देने के लिये आया ताकि सब जानें कि मसीह यीशु ही सच्ची ज्योति हैं और उनके द्वारा विश्वास लाएं। 8 यूहन्ना स्वयं वह ज्योति न था परन्तु उस ज्योति का परिचय कराने के लिये केवल गवाह स्वरूप आया था। 9 कुछ समय पश्चात् वह जो सच्ची ज्योति हैं, जो प्रत्येक मनुष्य को प्रकाशित करते हैं, इस जगत में आए। 10 यद्यपि उन्होंने जगत की सृष्टि की और वह जगत में थे फिर भी उनके आने पर जगत ने उन्हें नहीं पहिचाना। 11 वह अपनी ही जन्म भूमि में अपने लोगों, अर्थात यहूदियों द्वारा ग्रहण नहीं किए गए। 12 परन्तु जितनों ने उन्हें ग्रहण किया, और उनके नाम पर विश्वास किया उनको उन्होंने परमेश्वर की सन्तान बनने का अधिकार दिया। 13 जितनों ने मसीह पर विश्वास किया उनका नया जन्म हुआ—यह जन्म मनुष्य की कामना और इच्छा से होने वाला शारीरिक जन्म[3] नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा के फलस्वरूप होने वाला आत्मिक जन्म है। 14 मसीह इस जगत में मनुष्य बन कर आया और हमारे मध्य रहा। वह प्रेममय क्षमा[4] और सत्य से भरपूर था। हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जो स्वर्ग में निवास करने वाले पिता के एकलौते पुत्र की महिमा है। 15 यूहन्ना ने भीड़ से यह कहते हुए यीशु मसीह को लोगों पर प्रकट किया, "यह वही हैं जिनके विषय में मैंने कहा था, 'एक व्यक्ति आने वाला है जो मुझसे अधिक महान है—क्योंकि वह मुझसे बहुत पहले था'। 16 हम सबने उसकी परिपूर्णता में से अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त किया है। 17 क्योंकि मूसा ने हमें केवल कठोर व्यवस्था प्रदान की परन्तु प्रभु यीशु मसीह हमारे लिये अनुग्रह और सत्य लाए। 18 परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, परन्तु उसके एकलौते पुत्र मसीह यीशु ने अवश्य देखा है क्योंकि वह तो पिता के साथ हैं और उन्होंने पिता को हम पर प्रकट किया है।"

19 यहूदी अगुवों ने याजकों और सहायकों को यरूशलेम से यूहन्ना के पास यह पूछने भेजा कि क्या वह मसीह होने का दावा करता है। 20 यूहन्ना ने तुरन्त अस्वीकार करते हुए कहा, "मैं मसीह नहीं हूं।" 21 उन्होंने पूछा, "फिर तुम कौन हो? क्या तुम एलिय्याह हो?" उसने उत्तर दिया, "नहीं"। "क्या तुम वह भविष्यद्वक्ता हो?" "नहीं"। 22 "तब तुम कौन हो? हमें बताओ ताकि हम उन लोगों को उत्तर दे सकें जिन्होंने हमें भेजा है। तुम्हें अपने विषय में क्या कहना है?" 23 उसने उत्तर दिया, "मैं जंगल में पुकारनेवाला वह शब्द हूं जिसकी भविष्यद्वाणी यशायाह ने की थी, 'प्रभु के आने के लिये तैयार हो जाओ'।" 24, 25 ये लोग फरीसियों की ओर से भेजे गए थे। उन्होंने पूछा, "यदि तुम मसीह या, एलिय्याह या भविष्यद्वक्ता नहीं हो तो फिर तुम बपतिस्मा क्यों देते हो?" 26 यूहन्ना ने उन्हें बताया, "मैं

---

[1] "आदि में।" [2] "वचन" अर्थात मसीह, परमेश्वर का ज्ञान और सामर्थ, सब वस्तुओं का सृष्टिकर्ता, परमेश्वर के व्यक्तित्व का मनुष्यों पर प्रकटीकरण। [3] "लोहू से नहीं।" [4] "अनुग्रह।"

केवल पानी ही से बपतिस्मा देता हूं परन्तु यहीं तुम लोगों में एक व्यक्ति है जिससे तुम अपरिचित हो, 27 वह तुम्हारे मध्य में सेवा कार्य शीघ्र आरम्भ करेगा, मैं तो उसका दास होने के भी योग्य नहीं।" 28 यह घटना बैतनिय्याह नामक गांव में हुई जो यर्दन नदी के किनारे है, जहां यूहन्ना बपतिस्मा दे रहा था।

29 दूसरे दिन यूहन्ना ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, "देखो! यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है। 30 मैं इन्हीं के विषय में कह रहा था, 'एक व्यक्ति आने वाला है जो मुझसे अधिक महान है—क्योंकि वह मुझसे बहुत पहले था।' 31 मुझे नहीं मालूम था कि यह वही है परन्तु मैं यहां पानी से बपतिस्मा दे रहा हूं ताकि उन्हें इस्राएल पर प्रकट करूं।" 32 तब यूहन्ना ने बताया, "मैंने पवित्र आत्मा को कबूतर के रूप में स्वर्ग से उतरते और यीशु पर ठहरते देखा है। 33 मैं न जानता था कि यह वही हैं। परन्तु परमेश्वर ने मुझे बपतिस्मा देने के लिये भेजते समय कहा था, 'जिस व्यक्ति पर तू पवित्र आत्मा को उतरते और ठहरते देखे तो वही है जो पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने वाला है।' 34 मैंने देखा कि इस व्यक्ति के साथ ऐसा ही हुआ और इसीलिये मैं गवाही देता हूं कि परमेश्वर के पुत्र यही हैं।"

35 दूसरे दिन यूहन्ना अपने दो चेलों के साथ खड़ा था, 36 यीशु पास से होकर निकले। यूहन्ना ने ध्यान से उनकी ओर देख कर कहा, "देखो! यही परमेश्वर का मेम्ना है।" 37 तब यूहन्ना के दोनों चेले उसे छोड़कर यीशु के पीछे हो लिए। 38 यीशु ने उनको पीछे आते देखकर उनसे पूछा, "तुम्हें क्या चाहिये?" वे बोले, "हे गुरु आप कहां रहते हैं?" 39 उन्होंने कहा, "आओ और देखो।" वे उनके साथ वहां गए जहां यीशु ठहरे थे और उस दिन उनके साथ रहे। उस समय संध्या के लगभग चार बजे थे।

40 उनमें से एक शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। 41 उसने अपने भाई शमौन के पास जाकर कहा, "हमें मसीह मिल गया है।" 42 वह उसे यीशु के पास लाया। यीशु ने पतरस को ध्यानपूर्वक देखकर कहा, "तुम यूहन्ना के पुत्र शमौन हो, तुम पतरस अर्थात चट्टान कहलाओगे।"

43 दूसरे दिन यीशु ने गलील जाने का निश्चय किया। उन्होंने फिलिप्पुस से कहा, "मेरे साथ आओ।" 44 फिलिप्पुस बैतसैदा का निवासी था। अन्द्रियास और पतरस भी वहीं के रहने वाले थे। 45 तब फिलिप्पुस ने नतनएल के पास जाकर कहा, "मसीह हमें मिल गया है। यह वही है जिसके बारे में मूसा तथा अन्य नबियों ने लिखा है। उनका नाम यीशु है। वह नासरत निवासी यूसुफ के पुत्र हैं।" 46 नतनएल ने आश्चर्य से कहा "नासरत! क्या वहां से कोई अच्छी वस्तु निकल सकती है? फिलिप्पुस ने कहा, "आकर स्वयं देख ले।" 47 यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देखकर उसके सम्बन्ध में कहा, "देखो! यह सचमुच इस्राएली है, इसमें कोई कपट नहीं!" 48 नतनएल ने पूछा, "आप मुझे कैसे जानते हैं?" यीशु ने उत्तर दिया, "इससे पहले कि फिलिप्पुस ने तुम्हें बुलाया, मैंने तुम्हें अंजीर के वृक्ष के नीचे देखा।" 49 नतनएल ने कहा, "गुरु आप परमेश्वर के पुत्र—इस्राएल के राजा हैं।" 50 यीशु ने उससे पूछा, "क्या तुम इस बात पर, इसलिये विश्वास करते हो क्योंकि मैंने कहा, "मैंने तुम्हें अंजीर के वृक्ष के नीचे देखा?" तुम इससे भी महान कार्य देखोगे।" 51 उन्होंने फिर कहा, "मैं तुम लोगों से पूर्णतः सत्य कहता हूं तुम स्वर्ग को खुला और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मसीह अर्थात मनुष्य के पुत्र के पास आते और जाते देखोगे।"

2 1 तीसरे दिन गलील के काना नामक गांव में किसी का विवाह था। उसमें यीशु की

माता अतिथि थी। 2 यीशु और उनके चेले भी निमन्त्रित थे। 3 विवाहोत्सव के समय दाखरस समाप्त हो गया। यीशु की माता ने उनसे कहा, "उनके पास दाखरस नहीं है।" 4 यीशु ने कहा, "अभी मेरा समय नहीं आया।" 5 तब उनकी माता ने सेवकों से कहा, "वह तुम से जो कुछ भी करने को कहे, वही करना।" 6 वहां पत्थर के बड़े बड़े छः घड़े रखे थे। उन्हें यहूदी अपने धार्मिक उत्सवों के समय काम में लाते थे। उनमें से प्रत्येक में लगभग सौ से डेढ़ सौ लीटर तक पानी समाता था। 7 यीशु ने सेवकों से कहा,"उन्हें पानी से लबालब भर दो।" जब घड़े भर चुके, 8 यीशु ने कहा, "इनमें से कुछ निकाल कर भोज के प्रबन्धक के पास ले जाओ।" 9 जब प्रबन्धक ने वह पानी चखा जो अब दाखरस बन गया था तो न जानते हुए कि कहां से आया (यद्यपि सेवक इसे अवश्य जानते थे) उसने दूल्हे को बुलाया। 10 "यह दाखरस तो बहुत अच्छा है" उसने कहा, "लोग तो सबसे अच्छा दाखरस को पहले देते हैं। जब सब पीकर छक जाते है तभी वे घटिया प्रकार का दाखरस निकालते हैं। परन्तु तुमने तो सबसे उत्तम दाखरस को अन्त के लिए रख छोड़ा है।" 11 गलील के काना गांव में यह पहला आश्चर्यकर्म था जिसे यीशु ने लोगों के सामने किया। इसके द्वारा उन्होंने स्वर्ग से प्राप्त अपनी सामर्थ को प्रकट किया और उनके चेलों ने विश्वास किया कि वह सचमुच मसीह है।

12 इसके बाद वह अपनी माता, भाइयों और चेलों के साथ कुछ दिनों के लिये कफरनहूम नगर को गए।

13 यहूदियों का फसह का पर्व निकट था अतः यीशु यरूशलेम को गए। 14 उन्होंने मन्दिर में व्यापारियों को बलिदान के लिए बैल, भेड़ और कबूतर बेचते और सर्राफों को भी बैठे देखा। 15 यीशु ने रस्सियों का कोड़ा बना कर सब भेड़ों तथा बैलों को बाहर निकाल दिया। उन्होंने सर्राफों के पैसे बिखेर दिये और उनकी मेजें उलट दीं। 16 तब कबूतर बेचने वालों के पास जाकर उनसे कहा, "इन्हें यहां से एकदम बाहर निकालो। मेरे पिता के घर को बाजार मत बनाओ।" 17 तब उनके चेलों को पवित्र शास्त्र की यह भविष्यद्वाणी याद आई: "परमेश्वर के भवन की लगन मुझे खा जाएगी।" 18 यहूदियों ने धमकी देते हुए उनसे पूछा, "उन्हें निकालने का तुम्हें क्या अधिकार है? यदि यह अधिकार तुम्हें परमेश्वर से प्राप्त है तो इसका हमें कोई प्रमाण दिखा।" 19 यीशु ने उत्तर दिया, "अच्छा! मैं तुम्हारे लिये यह आश्चर्यकर्म करूंगा: परमेश्वर के इस भवन को गिरा दो तो मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।" 20 उन्होंने आश्चर्य से कहा, "क्या! जिस मन्दिर को बनाने में छियालीस वर्ष लगे, उसे तू तीन ही दिन में बना देगा?" 21 किन्तु "भवन" शब्द से उनका अर्थ अपनी देह से था। 22 चेलों को यह बात उस समय स्मरण आई जब यीशु मसीह मृत्यु के बाद तीसरे दिन जी उठे। तब उन्होंने विश्वास किया कि यीशु ने पवित्र शास्त्र में से वह वचन कहा था जो उनके विषय में सच निकला।

23 मसीह ने फसह के पर्व के समय यरूशलेम में बहुत से आश्चर्यकर्म किये जिन्हें देखकर बहुत से लोगों ने उन पर विश्वास किया। 24 परन्तु यीशु को उन पर भरोसा नहीं था क्योंकि वह मनुष्यों को पूर्ण रीति से जानते थे। 25 किसी को उन्हें यह बताने की आवश्यकता नहीं थी कि मनुष्य का मन कितनी जल्दी बदलता है।

3 1 एक रात्रि को नीकुदेमुस नामक यहूदियों का धार्मिक अगुवा जो फरीसियों के सम्प्रदाय का था, यीशु से मिलने आया। 2 उसने कहा, "महोदय हम सभी जानते हैं कि हमें शिक्षा देने के लिये परमेश्वर ने आपको भेजा है। इसका प्रमाण आपके आश्चर्यकर्म है।" 3 यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम से सच

कहता हूं : जब तक तुम्हारा नया जन्म न हो, तुम परमेश्वर के राज्य को कदापि नही देख सकते।" 4 "नया जन्म!" नीकुदेमुस ने आश्चर्य से पूछा, "इसका क्या अर्थ है? क्या कोई बूढ़ा व्यक्ति माता के गर्भ मे जाकर दोबारा जन्म ले सकता है?" 5 यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम से सच कहता हूं : जब तक कोई व्यक्ति जल और आत्मा से जन्म न ले, वह परमेश्वर के राज्य मे प्रवेश नही कर सकता। 6 मनुष्य तो केवल शारीरिक जन्म दे सकता है, किन्तु पवित्र आत्मा तुम्हें स्वर्ग से नया आत्मिक जन्म देता है। 7 अतः मेरे इस कथन पर आश्चर्य मत करो कि तुम्हें नया जन्म लेना आवश्यक है। 8 तुम वायु की सनसनाहट सुन सकते हो लेकिन नही बता सकते कि वह कहा से आती और कहां जाती है। इसी प्रकार आत्मा का काम भी है। हम नही जानते कि वह कब किसको स्वर्ग से नया जीवन देगा।" 9 नीकुदेमुस ने पूछा, "हे गुरु इसका क्या अर्थ है?" 10 यीशु ने उत्तर दिया, "तुम यहूदियों के सम्मानित गुरु होकर भी इन बातो को नही समझते! 11 मैंने जो सुना और देखा, वही तुम्हें बता रहा हू फिर भी तुम मेरा विश्वास नहीं करते। 12 ये बातें तो इस ससार की हैं। यदि तुम मेरी इन बातो का विश्वास नही करते जो मनुष्यो के बीच हो रही है तो उन बातो का कैसे विश्वास करोगे जो स्वर्ग में हो रही हैं? 13 क्योंकि केवल मैं ही वह मसीह हूं जो स्वर्ग से पृथ्वी पर आया और फिर स्वर्ग को लौटूगा। 14 जैसे मूसा ने जंगल मे पीतल के बने हुए साप को खम्भे पर लटकाया, वैसे ही अवश्य है कि मैं भी ऊंचे पर चढ़ाया जाऊं। 15 ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए।

16 "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से इतना अधिक प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। 17 परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत मे दण्ड की आज्ञा देने के लिये नही परन्तु जगत के उद्धार के लिये भेजा है। 18 जो उद्धार प्राप्त करने के लिये उस पर विश्वास करता है वह अनन्त दण्ड का भागी नही होगा। परन्तु उस पर विश्वास न रखने वाले का न्याय हो चुका है। और परमेश्वर के एकलौते पुत्र पर विश्वास न करने के कारण उस पर दण्ड की आज्ञा हो चुकी है। 19 दण्ड का कारण यह है : ज्योति स्वर्ग से इस जगत मे आई परन्तु उन्होंने ज्योति से अधिक अन्धकार को प्रिय जाना, क्योंकि उनके कार्य बुरे थे। 20 उन्होंने स्वर्गीय ज्योति से घृणा की क्योंकि उन्हे अन्धेरे मे पाप करने की अभिलाषा थी। वे प्रकाश से दूर रहे क्योंकि उन्हें भय था कि कही उनके पाप प्रकट न हो जाएं तथा उन पर दण्ड की आज्ञा हो। 21 परन्तु उचित कार्य करने वाले ज्योति के समीप आते हैं ताकि सब देखें कि वे परमेश्वर की इच्छानुसार कार्य कर रहे हैं।"

22 इसके पश्चात यीशु तथा उनके शिष्य यरूशलेम से यहूदिया मे आए और वहा कुछ दिन ठहर कर उन्होने लोगों को बपतिस्मा दिया। 23 यूहन्ना भी शालेम के निकट एनोन मे बपतिस्मा दे रहा था क्योंकि वहां बहुत पानी था। 24 यूहन्ना अब तक बन्दीगृह मे नही डाला गया था। 25 एक दिन किसी ने यूहन्ना के शिष्यो से यह कह कर वाद-विवाद आरम्भ किया कि यीशु का बपतिस्मा सर्वश्रेष्ठ है। 26 इसलिये यूहन्ना के शिष्यो ने उसके पास जाकर कहा, "गुरु, यर्दन नदी के उस पार जिस व्यक्ति से आपने भेट की—जिनको आपने मसीह कहा—वह भी बपतिस्मा दे रहे हैं। सब हमारे पास आने की अपेक्षा उन्ही के पास जा रहे हैं।" 27 यूहन्ना ने कहा, "परमेश्वर स्वर्ग मे प्रत्येक का कार्य निर्धारित करता है। 28 मेरा काम उस व्यक्ति के लिये मार्ग तैयार करना है ताकि सब उसके पास जाए। तुम स्वयं जानते हो, मैंने कितनी स्पष्टता से तुमसे कहा कि मैं मसीह

भविष्यद्वक्ता हैं! 20 परन्तु मुझे बताइये कि आप यहूदी लोग क्यों कहते हैं कि आराधना का एकमात्र स्थान यरूशलेम है, जबकि हम सामरी यह दावा करते हैं कि यही (गिरिज्जिम पर्वत पर) हमारे पूर्वज आराधना करते थे ?" 21 यीशु ने उत्तर दिया, "हे नारी अब वह समय आ रहा है जब किसी को यह चिन्ता नहीं होगी कि पिता का भजन यहां करें अथवा यरूशलेम मे। 22 तुम लोग जिसे नही जानते उसकी आराधना करते हो, हम लोग जिसे जानते हैं उसकी आराधना करते हैं क्योंकि उद्धार यहूदियों मे से आएगा। 23 फिर भी वह समय निकट है बल्कि वर्तमान है जिसमें सच्चे आराधक पिता की आराधना आत्मा और सत्य मे करेंगे। क्योंकि पिता ऐसे ही आराधकों को चाहता है। 24 परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसके आराधक आत्मा और सत्य मे उसकी आराधना करें।" 25 स्त्री ने कहा, "हां, इतना तो मैं जानती हूं कि मसीह आएगा—जिसे ख्रीष्ट कहते हैं, जब वह आएगा तो हमें सब कुछ समझाएगा।" 26 तब यीशु ने उसे बताया, "मैं ही मसीह हूं।"

27 उसी समय उनके चेले वहां आ पहुंचे और प्रभु को एक स्त्री से बातें करते देख कर चकित हुए परन्तु किसी ने नहीं पूछा कि वह उससे क्यों बातें कर रहे थे। 28 तब वह स्त्री कुएं पर अपना घड़ा छोड़ कर गांव को वापिस लौटी। 29 उसने सब लोगों से कहा, "आओ और एक मनुष्य को देखो जिसने वह सब कुछ जो मैंने किया, मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं है ?" 30 इस पर भीड़ गांव से निकल कर उन्हें देखने आने लगी। 31 इसी बीच चेलों ने यीशु से भोजन करने के लिये निवेदन किया। 32 उन्होंने कहा, "मेरे पास ऐसा भोजन है जिसके बारे में तुम नहीं जानते।" 33 चेले एक दूसरे से पूछने लगे, "कौन उनके लिये भोजन लाया ?" 34 तब यीशु ने समझाया: "मेरा भोजन यह है कि अपने भेजने वाले की इच्छा पर चलूं और उसका काम पूरा करूं। 35 क्या तुम यह नहीं कहते हो, 'कटनी का समय आने में अभी चार महीने बाकी हैं।' अपने चारो ओर दृष्टि करो। हमारे चहुं ओर मनुष्य के आत्मा रूपी बहुत से खेत पके खड़े हैं और अब कटनी के लिये तैयार हैं। 36 फसल काटने वालों को अच्छी मजदूरी मिलेगी। वे अनन्त आत्माओं को स्वर्गीय भण्डार मे जमा करेंगे। इसमें बीज बोने वाले और फसल काटने वाले दोनों को बहुत सुख मिलेगा। 37 यह कहावत सच है कि बोता कोई है और काटता कोई और। 38 जहां तुमने नहीं बोया वहां मैंने तुम्हें फसल काटने भेजा, दूसरों ने कार्य किया और तुम्हें उसका फल मिला।"

39 गांव के बहुत से सामरियों ने उस स्त्री का यह कथन सुना, "उन्होंने वह सब कुछ जो मैंने किया मुझे बता दिया।" तो विश्वास किया कि वह मसीह हैं। 40 इसलिए जब लोगों ने उन्हें कुएं पर देखा तो उनसे अपने गांव में ठहरने के लिये विनती की और यीशु दो दिन तक उनके साथ ठहरे। 41 उनके वचन को सुन कर बहुत से लोगों ने विश्वास किया। 42 उन्होंने स्त्री से कहा, अब हम केवल तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते परन्तु हमने स्वयं उनका वचन सुन लिया है। वास्तव मे प्रभु यीशु मसीह जगत के उद्धारकर्ता हैं।"

43 दो दिन वहां ठहर कर वह गलील को गए। 44 क्योंकि यीशु का कहना था, "भविष्यद्वक्ता अपने देश के सिवाय सब जगह सम्मान पाता है!" 45 गलीलियों ने हर्ष से यीशु का स्वागत किया, क्योंकि वे फसह के पर्व के समय यरूशलेम मे थे और उन्होंने उनके आश्चर्यकर्मों को देखा था।

46 गलील की यात्रा के समय वह काना नगर मे पहुंचे जहां उन्होंने जल को दाखरस बनाया था। वहां एक राज्यधिकारी का पुत्र कफरनहूम में बहुत बीमार था। 47 जब उसने सुना कि यीशु यहूदिया से आकर गलील में

नहीं हूं। मैं केवल उसके आगे मार्ग तैयार करने के लिये यहां आया हूं। 29 मुख्य आकर्षण की ओर लोग स्वभावतः खिंच जाते हैं—दुल्हिन वहीं जाएगी जहां उसका दूल्हा है। दूल्हे के मित्र दूल्हे के साथ आनन्द मनाते हैं। मैं दूल्हे का मित्र हूं और उसकी सफलता देख कर आनन्दित हूं। 30 अब यह अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूं।

31 "वह स्वर्ग से आए हैं और सबसे महान हैं। मैं पृथ्वी का हूं और पृथ्वी की वस्तुओं तक ही मेरा ज्ञान सीमित है। 32 जो कुछ उन्होंने देखा और सुना है, वही हमसे कहते हैं परन्तु थोड़े ही हैं जो उनके कथन पर विश्वास करते हैं। 33 उन पर विश्वास करने वाले इस तथ्य को निश्चय समझ लेते हैं कि परमेश्वर सत्य का स्रोत है। 34 क्योंकि उन्हें परमेश्वर ने भेजा है और वह परमेश्वर ही का सन्देश देते हैं क्योंकि वह परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण हैं। 35 परमेश्वर उनसे प्रेम रखता है क्योंकि वह उसके पुत्र हैं। परमेश्वर ने सब वस्तुएं इन्हीं को सौंप दी हैं। 36 जो उद्धार के लिये परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करते हैं अनन्त जीवन उनका है जो उन पर विश्वास नहीं करते और उनकी आज्ञा नहीं मानते, वे स्वर्ग को कभी नहीं देखेंगे, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उन पर बना रहता है।"

4 1 जब प्रभु यीशु को मालूम हुआ कि फरीसियों ने सुना है कि यूहन्ना की अपेक्षा अधिक लोग उनसे बपतिस्मा लेने और उनके शिष्य बनने को आते हैं, 2 (यद्यपि यीशु स्वयं नहीं बल्कि उनके चेले बपतिस्मा देते थे) 3 तो उन्होंने यहूदिया को छोड़ दिया और गलील के प्रान्त में आए। 4 मार्ग में उन्हें सामरिया से होकर जाना था। 5 अतः वह सामरिया के सूखार गाँव के निकट उस स्थान पर पहुंचे जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था। 6 यहीं याकूब का कुआं था। यीशु तेज धूप में चलने के कारण थके हुए थे इसलिये कुए के पास ही बैठ गए। 7 उसी समय एक सामरी स्त्री जल भरने को आई और यीशु ने उससे पीने के लिये जल मांगा। 8 वह उस समय अकेले थे क्योंकि उनके चेले गांव में भोजन मोल लेने गए थे। 9 सामरी स्त्री ने उनसे कहा, "आप यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पीने के लिये जल क्यों मांगते हैं?" (साधारणतः यहूदी लोग सामरी लोगों को नीच जाति का समझते थे और उनसे किसी भी प्रकार का सम्पर्क नहीं रखते थे।) 10 यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझसे कह रहा है, 'मुझे पीने के लिये जल दे।' तो तू उससे मांगती और वह तुझे जीवन का जल देता।" 11 उसने कहा, "गुरु, आपके पास तो रस्सी-बाल्टी तक नहीं है और यह कुआ अत्यन्त गहरा है फिर यह जीवन का जल आपके पास कहां से आएगा? 12 फिर क्या आप हमारे पूर्वज याकूब से बड़े हैं? इस कुए के पानी को उन्होंने, उनके पुत्रों और पशुओं ने पिया; इससे उत्तम पानी आप कैसे दे सकते हैं? 13 यीशु ने उत्तर दिया, "जो इस जल में से पीता है वह फिर से प्यासा हो जाता है। 14 परन्तु जो कोई उस जल में से पिएगा जिसे मैं दूंगा वह कदापि प्यासा न होगा, वरन वह जल जो मैं उसे पीने को दूंगा उसमें अनन्त जीवन तक उमड़ने वाला जल स्त्रोत बन जाएगा।' 15 स्त्री ने कहा, "गुरुजी, कृपया मुझे भी उसी जल में से दीजिये ताकि मैं फिर कभी प्यासी न होऊ और न ही मुझे प्रतिदिन इतनी दूर जल भरने आना पड़े।" 16 यीशु ने उससे कहा, "जाकर अपने पति को बुला ला।" 17 स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं अविवाहित हूं।" यीशु ने कहा, "हां, तूने यह बिल्कुल ठीक कहा, 18 क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है और जिसके साथ अभी रहती है उससे भी तेरा विवाह नहीं हुआ है। यह तूने सच कहा है।" 19 स्त्री ने कहा, गुरु जी, आप अवश्य ही

भविष्यद्वक्ता हैं ! 20 परन्तु मुझे बताइये कि आप यहूदी लोग क्यों कहते हैं कि आराधना का एकमात्र स्थान यरूशलेम है, जबकि हम सामरी यह दावा करते हैं कि यहीं (गिरिज्जिम पर्वत पर) हमारे पूर्वज आराधना करते थे ?" 21 यीशु ने उत्तर दिया,"हे नारी अब वह समय आ रहा है जब किसी को यह चिन्ता नही होगी कि पिता का भजन यहाँ करें अथवा यरूशलेम मे। 22 तुम लोग जिसे नहीं जानते उसकी आराधना करते हो, हम लोग जिसे जानते हैं उसकी आराधना करते हैं क्योंकि उद्धार यहूदियो मे से आएगा। 23 फिर भी वह समय निकट है बल्कि वर्तमान है जिसमें सच्चे आराधक पिता की आराधना आत्मा और सत्य में करेंगे। क्योंकि पिता ऐसे ही आराधकों को चाहता है। 24 परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसके आराधक आत्मा और सत्य से उसकी आराधना करें।" 25 स्त्री ने कहा, "हाँ, इतना तो मैं जानती हू कि मसीह आएगा—जिसे ख्रीष्ट कहते हैं, जब वह आएगा तो हमें सब कुछ समझाएगा।" 26 तब यीशु ने उसे बताया, "मैं ही मसीह हूं।"

27 उसी समय उनके चेले वहाँ आ पहुंचे और प्रभु को एक स्त्री से बातें करते देख कर चकित हुए परन्तु किसी ने नही पूछा कि वह उससे क्यों बातें कर रहे थे। 28 तब वह स्त्री कुएं पर अपना घड़ा छोड़ कर गाव को वापिस लौटी। 29 उसने सब लोगों से कहा, "आओ और एक मनुष्य को देखो जिसने वह सब कुछ जो मैंने किया, मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं है ?" 30 इस पर भीड़ गाव से निकल कर उन्हें देखने आने लगी। 31 इसी बीच चेलों ने यीशु से भोजन करने के लिये निवेदन किया। 32 उन्होंने कहा, "मेरे पास ऐसा भोजन है जिसके बारे मे तुम नही जानते।" 33 चेले एक दूसरे से पूछने लगे, "कौन उनके लिये भोजन लाया ?" 34 तब यीशु ने समझाया : "मेरा भोजन यह है कि अपने भेजने वाले की इच्छा पर चलूं और उसका काम पूरा करूं। 35 क्या तुम यह नहीं कहते हो, 'कटनी का समय आने में अभी चार महीने बाकी हैं।' अपने चारो ओर दृष्टि करो। हमारे चहुं ओर मनुष्य के आत्मा रूपी बहुत से खेत पके खड़े हैं और अब कटनी के लिये तैयार हैं। 36 फसल काटने वालो को अच्छी मजदूरी मिलेगी। वे अनन्त आत्माओ को स्वर्गीय भण्डार में जमा करेंगे। इसमे बीज बोने वाले और फसल काटने वाले दोनो को बहुत सुख मिलेगा। 37 यह कहावत सच है कि बोता कोई है और काटता कोई और। 38 जहां तुमने नही बोया वहा मैंने तुम्हे फसल काटने भेजा, दूसरो ने कार्य किया और तुम्हें उसका फल मिला।"

39 गाँव के बहुत से सामरियो ने उस स्त्री का यह कथन सुना, "उन्होंने वह सब कुछ जो मैंने किया मुझे बता दिया।" तो विश्वास किया कि वह मसीह हैं। 40 इसलिए जब लोगो ने उन्हें कुएं पर देखा तो उनसे अपने गाव में ठहरने के लिये विनती की और यीशु दो दिन तक उनके साथ ठहरे। 41 उनके वचन को सुन कर बहुत से लोगो ने विश्वास किया। 42 उन्होंने स्त्री से कहा, अब हम केवल तेरे कहने ही से विश्वास नही करते परन्तु हमने स्वयं उनका वचन सुन लिया है। वास्तव मे प्रभु यीशु मसीह जगत के उद्धारकर्ता हैं।"

43 दो दिन वहा ठहर कर वह गलील को गए। 44 क्योंकि यीशु का कहना था, "भविष्यद्वक्ता अपने देश के सिवाय सब जगह सम्मान पाता है।" 45 गलीलियों ने हर्ष से यीशु का स्वागत किया, क्योंकि वे फसह के पर्व के समय यरूशलेम मे थे और उन्होंने उनके आश्चर्यकर्मों को देखा था।

46 गलील की यात्रा के समय वह काना नगर मे पहुचे जहा उन्होंने जल को दाखरस बनाया था। वहा एक राज्यधिकारी का पुत्र कफरनहूम मे बहुत बीमार था। 47 जब उसने सुना कि यीशु यहूदिया से आकर गलील मे

यात्रा कर रहे हैं तो वह काना में जाकर यीशु से मिला। उसने यीशु से विनती की, "कफरनहूम मे मेरे साथ आकर मेरे पुत्र को चंगा कीजिये, क्योंकि वह मृत्यु की शैय्या पर है।" 48 यीशु ने पूछा, "क्या मेरे आश्चर्यकर्मों को देखे बिना तुम मुझ पर विश्वास नही करोगे ?" 49 अधिकारी ने विनती की, "प्रभु कृपया मेरे पुत्र के मरने से पहले आइये।" 50 यीशु ने उससे कहा, "घर जा तेरा पुत्र चंगा हो गया है।" उसने यीशु के कथन पर विश्वास किया और चला गया। 51 जब वह मार्ग ही मे था तो उसके नौकर मिले। उन्होंने बताया कि सब कुछ ठीक है—आपका पुत्र चंगा हो गया है। 52 उसने उनसे पूछा, "किस समय से उसकी दशा सुधरने लगी।" उन्होंने कहा, "कल सातवे घंटे अर्थात दिन के लगभग एक बजे एकाएक उसका बुखार उतर गया।" 53 तब पिता समझ गया कि यह वही समय था, "जब यीशु ने उससे कहा था, "तेरा पुत्र चंगा हो गया है।" तब उस अधिकारी तथा उसके परिवार ने विश्वास किया कि प्रभु यीशु ही मसीह हैं। 54 यहूदिया से लौटने के पश्चात् गलील मे यीशु का यह दूसरा आश्चर्यकर्म था।

5 1 इसके पश्चात यहूदियो के धार्मिक त्यौहार के अवसर पर यीशु यरूशलेम को लौट आए। 2 शहर के भेड़ फाटक के पास बेतहसदा कुण्ड था, जिसके पाँच ओसारे थे। 3 इन ओसारों मे बीमारो, अन्धो, लगडो और लकवे से पीड़ितो की भीड़ (पानी के हिलने की प्रतीक्षा मे) रहती थी। 4 (क्योंकि समय समय पर परमेश्वर का स्वर्गदूत आकर पानी को हिलाता था और हिलते ही पानी मे सर्वप्रथम उतरने वाला व्यक्ति चंगा हो जाता था।) 5 उनमे से एक व्यक्ति अड़तीस वर्ष से रोगी था। 6 जब यीशु ने उसे देखा और उन्हें मालूम हुआ कि यह बहुत वर्षों से रोगी है तो उन्होंने उससे पूछा, "क्या तू चंगा होना चाहता है ?" 7 उस बीमार ने उत्तर दिया, "मैं लाचार हू। मेरा कोई सहायक नही है जो पानी के हिलते ही मुझे कुण्ड मे उतारे। मेरे वहाँ पहुंचने की कोशिश करते करते कोई न कोई दूसरा मुझसे पहले उतर जाता है। 8 यीशु ने उससे कहा, "उठ अपनी खाट उठा कर चल फिर।" 9 वह व्यक्ति तुरन्त चंगा हो गया और अपनी खाट उठाकर जाने लगा। किन्तु वह सब्त का दिन था जब यह आश्चर्यकर्म हुआ।

10 इसलिये यहूदियों ने विरोध किया, उन्होने स्वस्थ हुए व्यक्ति से कहा, "आज सब्त का दिन है। बिस्तर उठा कर ले जाना नियम के विरुद्ध है।" 11 उसने उत्तर दिया, "जिस व्यक्ति ने मुझे चंगा किया है उसी ने यह कहा।" 12 उन्होने उससे पूछा, "वह कौन मनुष्य है जिसने तुझसे कहा, 'अपनी खाट उठाकर चल फिर' ?" 13 वह व्यक्ति यह नही जानता था और भीड़ होने के कारण यीशु वहा से चले गए थे। 14 कुछ समय पश्चात् यीशु उसे मन्दिर मे मिले और उससे बोले, "देखो, तुम चंगे हो गए हो, फिर से पाप मत करना, कही ऐसा न हो कि कोई भारी विपत्ति तुम पर आ पड़े।" 15 उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों से कह दिया, "जिसने मुझे चंगा किया, वह यीशु हैं।" 16 अत वे यीशु को सब्त के नियम का उल्लघन करने वाला कह कर सताने लगे। 17 इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मेरा पिता सदैव भलाई करता है, और मैं उसके आदर्श पर चलता हू।" 18 तब यहूदी उन्हे मार डालने का और भी अधिक प्रयत्न करने लगे क्योंकि सब्त के नियम का उल्लघन करने के साथ ही उन्होन परमेश्वर को अपना पिता कह कर स्वयं को परमेश्वर के तुल्य ठहराया था।

19 यीशु ने उत्तर दिया, "पुत्र स्वयं कुछ नही कर सकता। वह केवल वही करता है जो पिता को करते देखता है और उसी के समान काम करता है। 20 क्योंकि पिता पुत्र से प्रेम रखता है और सब कुछ जो वह करता है, उसे

बनाता है, और पुत्र इस व्यक्ति को चंगाई से भी बढ़कर आश्चर्यकर्म करेगा। 21 जिस प्रकार पिता मरे हुओं को जीवित करता है उसी प्रकार पुत्र भी जिसको चाहे मृतकों में से जीवित करता है। 22 पिता ने न्याय करने का सब अधिकार पुत्र को सौंप दिया है। 23 ताकि जैसे लोग पिता का आदर करते हैं वैसे ही सब लोग पुत्र का भी आदर करें। परन्तु यदि तुम परमेश्वर के पुत्र का आदर नहीं करते, जिसे उसने तुम्हारे पास भेजा, तो निश्चय ही तुम पिता का भी आदर नहीं करते।

24 "मैं तुम से पूर्णतः सत्य कहता हूं जो मेरा वचन सुनकर परमेश्वर पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है। उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होगी, परन्तु वह मृत्यु के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। 25 मैं गम्भीरता से कहता हूं वह समय आ रहा है, बल्कि अब है जब मेरा अर्थात परमेश्वर के पुत्र का स्वर मृतक भी सुनेंगे और जितने सुनेंगे वे जीवित रहेंगे। 26 पिता में जीवन है और उसने पुत्र को भी स्वयं में जीवन रखने का अधिकार दिया है। 27 वह समस्त मानव जाति के पापों का न्याय करेगा क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है। 28 इस पर आश्चर्य मत करो क्योंकि वह समय आ रहा है जब मृतक अपनी कब्रों में परमेश्वर के पुत्र का स्वर सुनेंगे; 29 और पुन जीवित होकर निकलेंगे—जिन्होंने भले कार्य किये हैं, वे अनन्त जीवन के लिये और जिन्होंने बुराई में जीवन व्यतीत किया है, वे न्याय के लिये।

30 "मैं पिता की सलाह लिए बिना कोई कार्य नहीं करता। उसकी आज्ञानुसार ही न्याय करता हूं। मेरा न्याय पूर्णतः निष्पक्ष और सच्चा है क्योंकि वह मेरा नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छानुसार है, जिसने मुझे भेजा है। 31 जब मैं अपने विषय में दावे करता हूं तो उन पर विश्वास नहीं किया जाता। 32 परन्तु यूहन्ना भी मेरे विषय में ऐसे दावे करता है। तुमने उसका प्रचार सुना है और मैं आश्वासन दिलाता हूं कि जो वह कहता है वह सत्य है। 33 तुमने यूहन्ना से पुछवाया, और सत्य के सम्बन्ध में उसने गवाही दी है। 34 मुझे किसी मनुष्य की गवाही की आवश्यकता नहीं है परन्तु मैं यह इसलिए कहता हूं कि तुम्हारा उद्धार हो। 35 यूहन्ना कुछ समय तक चमकता हुआ प्रकाश था और उससे लाभ पाकर तुम आनन्दित हुए। 36 परन्तु मेरी गवाही यूहन्ना की गवाही से बढ़कर है। मेरा अर्थ मेरे आश्चर्यकर्मों से है जिनके करने की आज्ञा पिता ने मुझे दी है। इनसे सिद्ध होता है कि परमेश्वर ने मुझे भेजा है। 37 और पिता ने स्वयं मेरे विषय में गवाही दी है, यद्यपि वह व्यक्तिगत रीति से तुम पर प्रकट नहीं हुआ और न ही प्रत्यक्ष रूप से उसने तुमसे बातें कीं। 38 परन्तु तुम उसकी अनसुनी करते हो क्योंकि मुझ पर विश्वास नहीं करते जिसे परमेश्वर ने वचन सहित तुम तक भेजा है। 39 तुम धर्मशास्त्र में खोजते हो क्योंकि विश्वास करते हो कि वह तुम्हें अनन्त जीवन देता है और धर्मशास्त्र मेरी ही ओर संकेत करता है। 40 तो भी तुम अनन्त जीवन पाने के लिए मेरे पास नहीं आते। 41 मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता। 42 क्योंकि मैं भली भांति जानता हूं कि तुम में परमेश्वर का प्रेम नहीं है। 43 मैं जानता हूं कि मैं अपने पिता के नाम से तुम्हारे पास आया हूं और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते। यद्यपि तुम उनको सरलता से ग्रहण कर लेते हो जो परमेश्वर की ओर से तो नहीं भेजे गए परन्तु अपने ही नाम से आते हैं। 44 कोई आश्चर्य नहीं कि तुम विश्वास नहीं कर सकते, क्योंकि तुम एक दूसरे से तो आदर चाहते हो परन्तु उस आदर की परवाह नहीं करते जो केवल एकमात्र परमेश्वर से प्राप्त होता है! 45 तौभी मैं पिता के समक्ष इस सम्बन्ध में तुम पर दोष नहीं लगाऊंगा—किन्तु मूसा तुम्हें दोषी ठहराएगा जिसके नियमों द्वारा तुम स्वर्ग की आशा रखते हो। 46 क्योंकि यदि तुम मूसा पर विश्वास

पूछा, "परमेश्वर को सन्तुष्ट करने के लिए हम क्या करें ?" 29 यीशु ने उनको बताया, "परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम उस पर विश्वास करो जिसे उसने भेजा है।" 30 उन्होंने उत्तर दिया, "आप हमे कौन सा चिन्ह दिखाते है जिसे देखकर हम आप पर विश्वास करें ? कि आप मसीह हैं। 31 हमारे पूर्वजों को जंगल की यात्रा करते समय प्रतिदिन भोजन[1] मिला जैसा पवित्र शास्त्र में लिखा है, 'परमेश्वर ने उनके खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी'।" 32 यीशु ने कहा, "मूसा ने उन्हें वह रोटी नही दी परन्तु मेरा पिता स्वर्ग से तुम्हे वह रोटी देता है जो सच्ची है। 33 परमेश्वर की रोटी वह व्यक्ति है जो स्वर्ग से उतर कर जगत को जीवन देती है।" 34 उन्होंने कहा, "हे गुरु हमे यह रोटी सदैव दीजिये !"

35 यीशु ने कहा, "जीवन की रोटी मैं हूं। मेरे पास आने वाला कभी भूखा न होगा। मुझ पर विश्वास करने वाला कभी प्यासा न होगा। 36 परन्तु मैं तुम से कहता हू, यद्यपि तुमने मुझे देखा है तौभी विश्वास नही करते। 37 फिर भी कुछ लोग मेरे पास आएंगे—जिन्हें पिता ने मुझे दिया है—और मैं उन्हें कभी अस्वीकार नहीं करूंगा। 38 क्योंकि मैं यहां स्वर्ग से अपनी नही बल्कि पिता की इच्छा पूरी करने आया हूं, जिसने मुझे भेजा है। 39 और परमेश्वर की यही इच्छा है कि जितनों को उसने मुझे दिया है उनमे से एक को भी न खोऊं परन्तु अन्तिम दिन मे अनन्त जीवन के लिए मैं उन्हें फिर जीवित करूं। 40 क्योंकि मेरे पिता की यह इच्छा है कि जो उसके पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए और अन्तिम दिन, मैं उसे फिर जीवित करूंगा।"

41 तब यहूदी उनके विरुद्ध कुडकुडाने लगे क्योंकि उन्होंने स्वर्गीय रोटी होने का दावा किया था। 42 उन्होंने चकित होकर कहा, "क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नही, जिसके माता पिता को हम जानते हैं ? वह यह क्या कह रहा है कि वह स्वर्ग से उतरा है ?" 43 परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, "आपस मे मत कुड़कुड़ाओ, 44 क्योंकि कोई उस समय तक मेरे पास नही आ सकता जब तक पिता जिसने मुझे भेजा उसे मेरी ओर आकर्षित न करे और अन्तिम दिन में, मैं उन सबको जीवित करूंगा। 45 जैसा नबियों की पुस्तक मे लिखा है, 'वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे।' जिनसे पिता बातें करता है और जो उससे सत्य को जानेंगे, वही मेरे पास आयेंगे। 46 यह नही कि किसी ने वास्तव मे पिता को देखा है क्योंकि केवल मैंने ही उसे देखा है। 47 मैं तुमसे पूर्णतः सत्य कहता हू, "जो मुझ पर विश्वास करता है अनन्त जीवन उसका है। 48 जीवन की रोटी मैं हूं ! 49 उस रोटी मे कोई वास्तविक जीवन नही था, जो जंगल मे तुम्हारे बाप दादो को आकाश से दी गई क्योंकि वे भी सब मर गए। 50 स्वर्ग से उतरी रोटी में अनन्त जीवन है जो उसे खाएगा वह सदैव जीवित रहेगा। 51 मैं वह जीवित रोटी हूं जो स्वर्ग से उतरी। जो कोई इस रोटी मे से खाएगा वह सदैव जीवित रहेगा। यह रोटी मेरी देह[2] है जो मनुष्य जाति को छुडाने के लिए दी गई है।

52 तब यहूदी आपस में वादविवाद करने लगे कि यह व्यक्ति हमे अपनी देह खाने को कैसे दे सकता है ? 53 इसलिए यीशु ने पुनः कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हू जब तक तुम मसीह की देह न खाओ और उसका लोहू न पियो, तुम स्वयं मे अनन्त जीवन नही पा सकते। 54 जो कोई मेरी देह खाए और मेरा लोहू पिये, अनन्त जीवन उसका है, और अन्तिम दिन मे, मैं उसे जीवित करूगा। 55 क्योंकि मेरी देह वास्तविक भोजन है और मेरा लोहू पीने की वास्तविक वस्तु है। 56 जो कोई मेरी

[1] मन्ना। [2] मांस।

करते, तो मुझ पर भी विश्वास करते, इसलिये कि उसने मेरे विषय मे लिखा है। 47 परन्तु जब तुम उसकी लिखी हुई बातों का ही विश्वास नही करते तो मेरे कथन का विश्वास कैसे करोगे ?"

6 1 इसके बाद, यीशु गलील की झील (जो तिबिरियास की झील भी कहलाती है) के पार गए। 2 जहा भी वह जाते थे एक बडी भीड (जिनमे से अनेक लोग यरूशलेम की यात्रा पर फसह का वार्षिक पर्व मनाने जा रहे थे।) उनके पीछे हो ली थी, ताकि उन्हे बीमारो को चंगा करते देखे। 3 यीशु पहाड पर चढ कर अपने चेलों के साथ बैठ गए, 4 यहूदियों के फसह का पर्व निकट था। 5 उन्होंने लोगों की एक बडी भीड को पहाड पर चढते देखा जो उनकी खोज मे थी। उन्होने फिलिप्पुस की ओर मुडकर कहा, "फिलिप्पुस, हम इतने लोगों के लिए कहा से भोजन खरीद सकते हैं ?" 6 वह फिलिप्पुस को परख रहे थे क्योंकि उन्हें पहले ही मालूम था कि क्या करना है। 7 फिलिप्पुस ने उत्तर देते हुए कहा, "उन्हे खाना खिलाने के लिए बहुत धन की आवश्यकता होगी।" 8 तब शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने कहा, 9 "यहाँ एक लडका है जिसके पास जौ की पाच रोटियाँ और दो मछलिया है। परन्तु इस भीड़ को उनसे क्या लाभ ?" 10 यीशु ने आज्ञा दी, "प्रत्येक से बैठने को कहो।" और सब जिनमे केवल पुरुषो की ही संख्या लगभग पांच हजार थी, हरी घास पर बैठ गए। 11 तब यीशु ने रोटिया ली और परमेश्वर को धन्यवाद दिया और लोगो को बाटने के लिए दे दी। इसी प्रकार मछलिया भी बंटवा दी। जब सब खाकर तृप्त हो गए, 12 तब यीशु ने शिष्यों से कहा, "बचे हुए टुकडों को उठा लो, कि कुछ नष्ट न हो।" 13 और बचे हुए टुकडों की बारह टोकरिया भर गई! 14 जब लोगों ने समझ लिया कि बहुत बडा आश्चर्यकर्म हुआ है तो आश्चर्य से कहा, "निश्चय ही, यही वह भविष्यद्वक्ता है जिसकी हम बाट जोह रहे हैं ?"

15 यीशु ने समझ लिया कि वे उन्हे बलपूर्वक ले जाकर अपना राजा बनाना चाहते हैं इसलिए वह पहाड़ पर अकेले ही एकान्त में चले गए।

16 सन्ध्या समय चेले नीचे उतर कर झील के किनारे उनकी प्रतीक्षा करने लगे। 17 परन्तु जब अन्धेरा हो गया और यीशु नही लौटे, तो वे नाव पर चढ कर झील के उस पार कफरनहूम की ओर बढने लगे। 18,19 वे नाव पर चढ कर तीन या चार मील ही गए होंगे कि शीघ्र ही तूफान आया और समुद्र अशान्त हो गया। अचानक उन्होंने यीशु को नाव की ओर पानी पर चलकर आते देखा! वे बहुत ही डर गए। 20 परन्तु यीशु ने कहा, "मैं हू, डरो मत।" 21 तब वे यीशु को नाव पर चढाने के लिए प्रसन्न हुए और नाव तुरन्त उस स्थान पर पहुंच गई जहा वे जा रहे थे।

22 दूसरे दिन झील के पार खडी हुई भीड़ ने देखा कि यहां तो केवल एक नाव थी और यीशु अपने शिष्यों के साथ नाव पर नही चढे थे केवल उनके शिष्य ही विदा हुए थे। 23 अब तिबिरियास की अन्य नावें उस स्थान के समीप आ गई। 24 इसलिये जब लोगों ने देखा कि न तो यीशु वहा हैं और न ही उनके चेले, तो वे नावों पर चढ कर उनकी खोज मे कफरनहूम गए। 25 जब वे वहां पहुंचे और उनसे मिले तो उन्होंने कहा, "गुरुजी, आप यहा कब आए ?" 26 यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम मुझे इसलिये नही खोज रहे हो कि तुमने चिन्ह देखे परन्तु इसलिए कि तुम रोटिया खाकर तृप्त हुए। 27 परन्तु तुम नाशवान भोजन के लिए चिन्ता न करो। हाँ अनन्त जीवन पाने का प्रयत्न करो जिसे मैं, मसीह तुम्हें दे सकता हूं, क्योंकि परमेश्वर पिता ने इसी अभिप्राय से मुझे भेजा है। 28 उन्होंने

पूछा, "परमेश्वर को सन्तुष्ट करने के लिए हम क्या करें ?" 29 यीशु ने उनको बताया, "परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम उस पर विश्वास करो जिसे उसने भेजा है।" 30 उन्होंने उत्तर दिया, "आप हमें कौन सा चिन्ह दिखाते है जिसे देखकर हम आप पर विश्वास करें ? कि आप मसीह हैं। 31 हमारे पूर्वजों को जंगल की यात्रा करते समय प्रतिदिन भोजन[1] मिला जैसा पवित्र शास्त्र में लिखा है, 'परमेश्वर ने उनके खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी'।" 32 यीशु ने कहा, "मूसा ने उन्हें वह रोटी नही दी परन्तु मेरा पिता स्वर्ग से तुम्हें यह रोटी देता है जो सच्ची है। 33 परमेश्वर की रोटी वह व्यक्ति है जो स्वर्ग से उतर कर जगत को जीवन देती है।" 34 उन्होंने कहा, "हे गुरु हमें यह रोटी सदैव दीजिये !"

35 यीशु ने कहा, "जीवन की रोटी मैं हूं। मेरे पास आने वाला कभी भूखा न होगा। मुझ पर विश्वास करने वाला कभी प्यासा न होगा। 36 परन्तु मैं तुम से कहता हू, यद्यपि तुमने मुझे देखा है तौभी विश्वास नही करते। 37 फिर भी कुछ लोग मेरे पास आएंगे—जिन्हें पिता ने मुझे दिया है—और मैं उन्हे कभी अस्वीकार नहीं करूंगा। 38 क्योंकि मैं यहाँ स्वर्ग मे अपनी नही बल्कि पिता की इच्छा पूरी करने आया हूं, जिसने मुझे भेजा है। 39 और परमेश्वर की यही इच्छा है कि जितनो को उसने मुझे दिया है उनमे से एक को भी न खोऊं परन्तु अन्तिम दिन मे अनन्त जीवन के लिए मैं उन्हें फिर जीवित करूं। 40 क्योंकि मेरे पिता की यह इच्छा है कि जो उसके पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए और अन्तिम दिन, मैं उसे फिर जीवित करूंगा।"

41 तब यहूदी उनके विरुद्ध कुडकुडाने लगे क्योंकि उन्होंने स्वर्गीय रोटी होने का दावा किया था। 42 उन्होंने चकित होकर कहा, "क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नही, जिसके माता पिता को हम जानते हैं ? वह यह क्या कह रहा है कि वह स्वर्ग से उतरा है ?" 43 परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, "आपस मे मत कुड़कुड़ाओ, 44 क्योंकि कोई उस समय तक मेरे पास नही आ सकता जब तक पिता जिसने मुझे भेजा उसे मेरी ओर आकर्षित न करे और अन्तिम दिन मे, मैं उन सबको जीवित करूंगा। 45 जैसा नबियो की पुस्तक में लिखा है, 'वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे।' जिनसे पिता बातें करता है और जो उससे सत्य को जानेंगे, वही मेरे पास आयेंगे। 46 यह नही कि किसी ने वास्तव मे पिता को देखा है क्योंकि केवल मैंने ही उसे देखा है। 47 मैं तुमसे पूर्णतः सत्य कहता हूं, "जो मुझ पर विश्वास करता है अनन्त जीवन उसका है। 48 जीवन की रोटी मैं हू ! 49 उस रोटी मे कोई वास्तविक जीवन नही था, जो जगल मे तुम्हारे बाप दादों को आकाश से दी गई क्योंकि वे भी सब मर गए। 50 स्वर्ग से उतरी रोटी मे अनन्त जीवन है जो उसे खाएगा वह सदैव जीवित रहेगा। 51 मैं वह जीवित रोटी हूं जो स्वर्ग से उतरी। जो कोई इस रोटी में से खाएगा वह सदैव जीवित रहेगा। यह रोटी मेरी देह[2] है जो मनुष्य जाति को छुडाने के लिए दी गई है।

52 तब यहूदी आपस मे वादविवाद करने लगे कि यह व्यक्ति हमे अपनी देह खाने को कैसे दे सकता है ? 53 इसलिए यीशु ने पुनः कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हू जब तक तुम मसीह की देह न खाओ और उसका लोहू न पियो, तुम स्वय मे अनन्त जीवन नही पा सकते। 54 जो कोई मेरी देह खाए और मेरा लोहू पिये, अनन्त जीवन उसका है, और अन्तिम दिन मे, मैं उसे जीवित करूंगा। 55 क्योंकि मेरी देह वास्तविक भोजन है और मेरा लोहू पीने की वास्तविक वस्तु है। 56 जो कोई मेरी

[1] मन्ना। [2] मांस।

देह खाए और मेरा लोहू पिये वह मुझ में बना रहेगा, और मैं उसमें। 57 मैं जीवित पिता की सामर्थ से जीवित हू, जिसने मुझे भेजा। इसी प्रकार जिनने मुझे खाएंगे वे मेरे कारण जीवित रहेंगे। 58 मैं ही वह सच्ची रोटी हू जो स्वर्ग से उतरी! और जो कोई इस रोटी को खाएगा वह सदैव जीवित रहेगा, और नहीं मरेगा जैसा तुम्हारे बाप दादे मर गए—यद्यपि उन्होंने वह रोटी खाई जो उन्हे स्वर्ग से प्राप्त हुई थी।" 59 कफरनहूम के आराधनालय मे उन्होने यह संदेश दिया।

60 उनके शिष्यो ने भी कहा, "ये वचन कठोर हैं, इनको कौन सुन सकता है?" 61 यीशु ने स्वत. मालूम कर लिया कि स्वयं उनके शिष्य भी कुडकुडा रहे हैं और उनमे कहा, "क्या इससे तुम्हें ठोकर लगती है? 62 फिर यदि तुम मुझ मनुष्य के पुत्र को स्वर्ग पर लौटते देखोगे तो क्या सोचोगे? 63 केवल पवित्र आत्मा जीवन देता है, शरीर मे कुछ लाभ नही; जो वचन मैंने तुमसे कहे हैं वे आत्मा और जीवन हैं। 64 परन्तु तुम मे से कुछ लोग मुझ पर विश्वास नही करते।" क्योंकि यीशु आरम्भ ही से जानते थे कि कौन विश्वास नही करते और वह कौन है जो उन्हें पकडवाएगा। 65 उन्होने कहा, "यही मेरा अर्थ था जब मैंने कहा कि कोई उस समय तक मेरे पास नही आ सकता जब तक पिता उसे यह वरदान न दे।"

66 इसी बात पर उनके अनेक शिष्यो ने उन्हे छोड दिया। 67 तब यीशु ने बारहो की ओर मुडकर कहा, "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?" 68 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "प्रभु, हम किसके पास जाए? अनन्त जीवन की बातें तो केवल आपके ही पास हैं। 69 हमने विश्वास किया और जान गए हैं कि आप परमेश्वर के पवित्र पुत्र हैं।" 70 तब यीशु ने कहा, "मैंने तुम बारहो को चुना फिर भी तुम मे से एक शैतान है।" 71 वह शमौन इस्करियोति के पुत्र यहूदा के विषय मे कह रहे थे, जो बारह चेलों मे से एक था। वह यीशु को पकड़वाने पर था।

7 1 इसके पश्चात यीशु गलील में भ्रमण करते रहे क्योंकि वह यहूदिया से दूर रहना चाहते थे, जहां यहूदी अगुवे उन्हें मार डालने की योजना बना रहे थे। 2 शीघ्र ही वह समय निकट आया जब यहूदी लोग अपना वार्षिक पर्व अर्थात् मण्डपो का पर्व मनाने वाले थे। 3 यीशु के भाइयों ने उनसे पर्व मनाने के लिए यहूदिया जाने को कहा, "वहा जाओ जहां अधिक शिष्य आश्चर्यकर्म देख सकें! 4 इस प्रकार छिपे रह कर तुम प्रसिद्ध नही हो सकते। यदि तुम इतने महान हो तो जगत को दर्शा दो!" 5 क्योकि उनके भाई भी उन पर विश्वास नही करते थे। 6 यीशु ने उत्तर दिया, "मेरे जाने का अभी उपयुक्त समय नही है। परन्तु तुम कभी भी जा सकते हो और उससे कुछ अन्तर नही पडेगा, 7 क्योंकि जगत तुम से घृणा नही करता, परन्तु मुझ से करता है, क्योकि मैं पाप और बुराई के सम्बन्ध में उस पर दोष लगाता हू। 8 तुम चले जाओ, और मैं बाद मे आऊंगा क्योकि अब तक मेरा समय पूरा नही हुआ।" 9 अत: वह गलील में ही रह गए।

10 जब उनके भाई पर्व मनाने चले गए तो वह भी वहां गुप्त रूप से गए। 11 यहूदी अगुवों ने पर्व मे उन्हें खोजने का प्रयत्न किया और पूछते ही रहे कि क्या किसी ने उन्हें देखा है? 12 लोगो की भीड मे उनके विषय मे बहुत ही चर्चा हो रही थी। कुछ कहते थे, "वह भला व्यक्ति है," जबकि दूसरे कहते थे, "नहीं, वह लोगो को पथ-भ्रष्ट कर रहा है।" 13 किन्तु उनके विषय मे खुलकर बातें करने का साहस किसी मे न था क्योकि वे यहूदी अगुवो से डरते थे।

14 पर्व के आधे दिन बीत जाने पर यीशु ने मन्दिर में जाकर सबके समक्ष उपदेश दिया।

15 उनकी बातें सुन कर यहूदियों ने आश्चर्य-चकित होकर कहा, "इन्हें शिक्षा के बिना इतना शास्त्र-ज्ञान कहां से मिला ?" 16 यीशु ने उन्हें बताया, "यह उपदेश मेरा नहीं किन्तु परमेश्वर का है जिसने मुझे भेजा। 17 यदि तुममें से कोई वास्तव में परमेश्वर की इच्छा पूर्ण करने के लिये निश्चयबद्ध हो, तो वह अवश्य जान जाएगा कि मेरी शिक्षा परमेश्वर की ओर से है अथवा केवल मेरी ओर से। 18 जो कोई अपने विचार प्रस्तुत करता है वह स्वयं आदर पाने की खोज में है, किन्तु जो अपने भेजने वाले के आदर की खोज मे है वही भला और सच्चा व्यक्ति है उसमें कोई छल नहीं। 19 तुम मे से कोई भी मूसा की व्यवस्था का पालन नहीं करता ! तो मुझ पर उसके तोड़ने का दोष क्यों लगाते हो ? मुझे इसके लिए क्यो मार डालना चाहते हो ?" 20 भीड़ ने कहा, "तुम पर तो भूत सवार है ! तुम्हें कौन मार डालना चाहता है ?" 21 यीशु ने उत्तर दिया, "मैंने एक व्यक्ति को सब्त के दिन चंगा करने का कार्य किया और तुम चकित हो गए ! 22 तुम भी सब्त के दिन कार्य करते हो—जब तुम मूसा के दिए गए खतने के नियम का पालन करते हो (वास्तव में यह प्रथा मूसा के नियम से भी पुरानी है), 23 क्योंकि यदि मनुष्य के खतना का ठीक समय सब्त के दिन पड़ता है, तो तुम इस काम को पूरा करते ही हो जो उचित है। इसलिए सब्त के दिन एक व्यक्ति को चंगा करने के लिए मुझ पर क्यों दोष लगाते हो ? 24 मुह देख कर न्याय न करो परन्तु उचित न्याय करो।"

25 कुछ लोगों ने जो यरूशलेम के निवासी थे आपस मे कहा, "क्या यह वही नही जिन्हें वे लोग मारने का प्रयत्न कर रहे हैं ? 26 लेकिन यह यहां खुले रूप से उपदेश दे रहे हैं, और वे लोग उनसे कुछ कहते तक नही। क्या यह सम्भव है कि हमारे अगुवो ने आखिर यह समझ लिया कि वास्तव मे मसीह यही है ? 27 परन्तु यह कैसे हो सकता है ? क्योंकि हम जानते हैं कि यह कहां जन्मा। जब मसीह आएगा तो वह एकाएक प्रकट होगा और कोई नही जानेगा कि वह कहां से आया।" 28 इसलिए यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए पुकार कर कहा, "हां, तुम मुझे जानते हो और यह भी कि मेरा जन्म, पालन पोषण कहाँ हुआ, परन्तु तुम उसे नहीं जानते जिसने मुझे भेजा है और वह सत्य है। 29 मैं उसे जानता हूं क्योंकि मैं उसके साथ था, और उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।" 30 तब यहूदियो ने उन्हे पकड़ने का प्रयत्न किया, परन्तु किसी ने उन पर हाथ न डाला क्योंकि उनका समय अब तक नही आया था। 31 तौभी बहुत से लोगो ने उन पर विश्वास किया। उन्होंने कहा, "मसीह जब आएगा तो क्या इनसे बढ़कर आश्चर्यकर्म दिखाएगा ?" 32 जब फरीसियो ने सुना कि भीड़ ऐसा कह रही है, तो उन्होंने और महायाजकों ने यीशु को पकड़ने के लिए अधिकारियो को भेजा। 33 यीशु ने उनसे कहा, "मैं कुछ समय तक और तुम्हारे साथ हू। तब मैं उसके पास लौट जाऊँगा जिसने मुझे भेजा है। 34 तुम मुझे खोजोगे किन्तु न पाओगे। जहाँ मैं हूँ वहां तुम नहीं आ सकते !" 35 यहूदी आपस में कहने लगे, "वह कहां जाने की सोच रहा है कि हम उसे नही पाएंगे ? क्या वह अन्य देशों मे जाकर यहूदियो तथा अन्य जातियों को शिक्षा देने का विचार कर रहा है ! 36 उसके इस कथन का क्या अर्थ है, "तुम मुझे ढूंढोगे परन्तु नही पाओगे और जहाँ मैं हू वहा तुम नही आ सकते ?"

37 पर्व के अन्तिम तथा मुख्य दिन यीशु ने पुकार कर भीड़ से कहा, "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पिये। 38 क्योंकि धर्मशास्त्र मे लिखा है कि जो कोई मुझ पर विश्वास करे उसमें से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।" 39 यह उन्होंने पवित्र आत्मा के विषय मे कहा जिसे उन पर विश्वास लाने

पाने को थे, कारण कि आत्मा अभी तक नहीं दिया गया था क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को नहीं पहुंचे थे। 40 जब भीड़ ने उन्हें यह कहते सुना तो उनमें से कुछ ने कहा, "निश्चय ही यह वह भविष्यद्वक्ता है जो मसीह के प्रकट होने से पहले आएगा।" 41 दूसरों ने कहा, "वह मसीह है।" औरों ने कहा, "परन्तु यह नहीं हो सकता! क्या मसीह गलील से आएगा? 42 क्योंकि धर्मशास्त्र में स्पष्ट लिखा है कि मसीह दाऊद के राजघराने से बैतलहम गांव में जन्म लेगा जहां दाऊद पैदा हुआ था।" 43 इसलिए उनके कारण लोगों में मतभेद हो गया। 44 कुछ लोग उन्हें पकड़ना चाहते थे किन्तु किसी ने उन पर हाथ नहीं डाला।

45 मन्दिर के सिपाही जो उन्हें पकड़ने के लिए भेजे गए थे, महायाजकों और फरीसियों के पास लौट गये। उन्होंने पूछा, "तुम उसे पकड़कर क्यों नहीं लाए?" 46 उन्होंने कहा, "वह अत्यन्त अद्भुत बातें कहते हैं! हमने ऐसी बातें कभी किसी मनुष्य से नहीं सुनी।" 47 फरीसियों ने ठट्ठा किया, "तो क्या तुम भी भरमाए गए हो? 48 क्या हम यहूदी अगुवों और फरीसियों में से किसी ने उस पर विश्वास किया है कि वह मसीह है? 49 ये मूर्ख लोग ही विश्वास करते हैं और व्यवस्था को नहीं जानते। धिक्कार है उन्हें!" 50 यहूदी अगुवा नीकुदेमुस जो पहले एक बार गुप्त रूप से यीशु के पास आया था, उसने कहा, 51 "क्या बिना न्याय के किसी व्यक्ति को दोषी ठहराना व्यवस्था के अनुसार है?" 52 उन्होंने उत्तर दिया, "क्या तू भी दुष्ट गलीली है! धर्मशास्त्र में खोज और स्वयं देख—गलील से कोई भविष्यद्वक्ता नहीं आने का!" 53 तब सब अपने-अपने घर लौट गए।

8 1 परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर चले गए। 2 दूसरे दिन प्रातः वह फिर मन्दिर में आए शीघ्र ही लोगों की भीड़ लग गई, और वह बैठ कर उनको शिक्षा देने लगे। 3 तब यहूदी अगुवे तथा फरीसी एक स्त्री को लाए जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी और उसे भीड़ के बीच में खड़ा कर दिया। 4 फिर उन्होंने यीशु से कहा, "गुरुजी, यह स्त्री व्यभिचार में रंगे हाथ पकड़ी गई है। 5 मूसा की व्यवस्था के अनुसार इसे पत्थरवाह करके मार डालना चाहिये, अब आप बताइये हम क्या करें?" 6 यीशु को फंसाने के लिए उन्होंने ऐसा कहा ताकि उनकी बातों के द्वारा उन्हें उन पर दोष लगाने को मिले। किन्तु यीशु ने झुक कर अपनी उंगली से भूमि पर लिखा। 7 वे लोग उत्तर मांगते ही रहे, तो उन्होंने सिर उठाकर उनसे कहा, "ठीक है, उस पर पत्थर फेंकते रहो, जब तक वह मर न जाए। किन्तु केवल वही पहला पत्थर मारे जिसने कभी पाप नहीं किया!" 8 तब वह फिर झुककर भूमि पर लिखने लगे। 9 यह सुन कर बड़े से लेकर छोटे तक सब एक एक करके बाहर चले गए। वहां केवल यीशु और वह स्त्री जो बीच में थी रह गए। 10 तब यीशु ने फिर खड़े होकर उससे कहा, "हे नारी तुझ पर दोष लगाने वाले कहां गए? क्या उनमें से एक ने भी तुझे दण्ड नहीं दिया?" 11 उसने कहा, "नहीं प्रभु जी।" तब यीशु ने कहा, "मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता। जा और फिर कभी पाप मत करना।"

12 कुछ समय बाद यीशु ने अपने उपदेश में लोगों से कहा, "मैं जगत की ज्योति हूँ। यदि तुम मेरे पीछे हो लो, तो अंधकार में नहीं चलोगे क्योंकि जीवन की ज्योति तुम्हारा मार्ग प्रकाशित करेगी!" 13 फरीसियों ने उत्तर दिया, "तुम डींग मारते और झूठ बोलते हो!" 14 यीशु ने उनसे कहा, "यद्यपि मैं ये दावे अपने विषय में करता हूँ, तौभी ये सत्य हैं। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहां से आया और कहां जा रहा हूँ, किन्तु मेरे बारे में तुम नहीं जानते।

15 तुम सत्य से अनजान रह कर मेरा न्याय करते हो। मैं किसी का न्याय नहीं करता ; 16 परन्तु यदि करता भी, तो वह पूरी तरह सच्चा न्याय होता, क्योंकि पिता मेरे साथ है जिसने मुझे भेजा है। 17 तुम्हारी व्यवस्था के अनुसार यदि दो व्यक्ति किसी बात पर सहमत हों, तो उनकी बात सच समझी जाती है। 18 एक गवाह मैं हूँ, दूसरा मेरा पिता है जिसने मुझे भेजा है।" 19 उन्होंने प्रश्न किया, "तेरा पिता कहाँ है?" यीशु ने उत्तर दिया, "तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूँ, इसलिए तुम नहीं जानते कि मेरा पिता कौन है। यदि तुम मुझे जानते, तो उसे भी जानते।" 20 यीशु ने शिक्षा देते समय ये बातें मन्दिर के उस भाग में कहीं जो भण्डारगृह कहलाता है। परन्तु वे पकड़े नहीं गए क्योंकि उनका समय अब तक पूरा नहीं हुआ था।

21 कुछ समय बाद उन्होंने फिर उनसे कहा, "मैं जाता हूँ। तुम मुझे खोजोगे और अपने पापों में मरोगे। जहां मैं जाता हूँ। वहां तुम नहीं आ सकते।" 22 यहूदियों ने एक दूसरे से पूछा, "क्या वह आत्महत्या करने की सोच रहा है? उसका क्या अर्थ है, जहां मैं जाता हूँ वहां तुम नहीं आ सकते?" 23 तब उन्होंने उनसे कहा, "तुम नीचे के हो ; मैं ऊपर से हूँ। तुम इस जगत के हो ; मैं नहीं। 24 इसीलिये मैंने कहा तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि जब तक तुम विश्वास न करो कि मैं परमेश्वर का पुत्र, मसीह हूँ, तुम अपने पापों में मरोगे।" 25 उन्होंने पूछा, हमें बता तू कौन है?" उन्होंने उत्तर दिया, "मैं वही हूँ जिसके होने का मैंने सदैव दावा किया है। 26 मुझे तुम्हारे विषय में बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है परन्तु मेरा भेजने वाला सच्चा है और जो कुछ मैंने उससे सुना है वही जगत में कहता हूँ।" 27 परन्तु वे तब भी न समझे कि वह उनसे परमेश्वर के विषय में कह रहे हैं। 28 तब यीशु ने कहा, जब तुम मसीह को क्रूस पर चढ़ाओगे तो जानोगे कि 'मैं वही हूँ' और अपने आप कुछ नहीं कहता परन्तु जैसे मुझे पिता ने सिखाया है, बोलता हूँ। 29 और जिसने मुझे भेजा वह मेरे संग है—उसने मुझे नहीं छोड़ा है—क्योंकि मैं सदा वही कार्य करता हूँ जिनसे वह प्रसन्न होता है।" 30 तब अनेक लोगों ने उनकी ये बातें सुनकर उन पर विश्वास किया। कि वह मसीह हैं। 31 यीशु ने उनसे कहा, "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। 32 और तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा।" 33 उन्होंने कहा, "परन्तु हम तो इब्राहीम के वंश के हैं, और हम इस संसार में कभी किसी के दास नहीं हुए! 'तुम्हें स्वतन्त्र करेगा', इससे आपका क्या अर्थ है?" 34 यीशु ने कहा, "तुम सब पाप के दास हो।" 35 दास घर का अधिकारी नहीं होता, परन्तु पुत्र होता है। 36 इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतन्त्र करे तो तुम वास्तव में स्वतन्त्र होगे। 37 तुम इब्राहीम के सन्तान हो तौभी तुम मुझे मार डालने के प्रयत्न में हो क्योंकि मेरे वचन को तुम अपने हृदय में ग्रहण नहीं करते। 38 जो मैंने अपने पिता के यहाँ देखा वही कहता हूं और जो कुछ तुमने अपने पिता से सुना वही करते हो। 39 उन्होंने कहा, "हमारा पिता इब्राहीम है।" यीशु ने उत्तर दिया, "नहीं! क्योंकि यदि वह तुम्हारा पिता होता तो तुम उसके आदर्श पर चलते। 40 परन्तु तुम मुझे मार डालने का प्रयत्न कर रहे हो केवल इसलिये कि मैंने तुमसे सच कहा जो परमेश्वर से सुना। इब्राहीम कभी ऐसा नहीं करता! 41 तुम जब ऐसे कार्य करते हो तो अपने वास्तविक पिता शैतान की आज्ञा मानते हो।" वे बोले, "हम व्यभिचार की सन्तान नहीं हैं, हमारा पिता एक है, अर्थात परमेश्वर।" 42 यीशु ने उन्हें बताया, "यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझसे प्रेम रखते, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। मैं यहाँ स्वयं अपनी इच्छा से

नहीं आया हूं, परन्तु उसने मुझे भेजा है। 43 तुम मेरे वचन क्यों नहीं समझते ? कारण यह है कि मेरे वचन तुम्हारे लिये असहनीय हैं ! 44 क्योंकि तुम अपने पिता शैतान की सन्तान हो, और उसी के समान बुरे कार्य करना तुम्हें पसन्द है। वह आरम्भ से ही हत्यारा और सत्य से घृणा करने वाला है—उसमें अंश मात्र भी सच्चाई नहीं है। जब वह झूठ बोलता है तो अपना स्वाभाविक गुण दर्शाता है, क्योंकि वह झूठा है, वरन झूठा का पिता है। 45 इसलिये जब मैं तुम से सत्य कहता हूं तो स्वाभाविक है कि तुम विश्वास नहीं करते ! 46 तुम में से कौन मुझ पर वास्तव में एक भी पाप का दोष लगा सकता है ? फिर जब मैं तुम्हें सच बात बताता हूं तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते ? 47 जिसका पिता, परमेश्वर है वह आनन्दपूर्वक परमेश्वर के वचन सुनता है।" इसलिए कि तुम नहीं सुनते यह प्रमाणित करता है कि तुम उसकी सन्तान नहीं हो। 48 यहूदी अगुवे झल्लाए, "अरे सामरी ! क्या हम सदा से यह नहीं कहते आए कि तुझ में भूत समाया है। 49 यीशु ने कहा, मुझ में कोई भूत नहीं है। क्योंकि मैं अपने पिता का आदर करता हूं—और तुम मेरा निरादर करते हो। 50 मैं अपनी बड़ाई नहीं चाहता, परन्तु परमेश्वर की यही इच्छा है और वह न्याय करता है। 51 मैं तुमसे सत्य कहता हूं—जो मेरे वचन पर चलेगा वह कभी न मरेगा।" 52 यहूदियों ने कहा, "अब हम समझ गए हैं कि तुझ में भूत समाया है। इब्राहीम और दूसरे नबी सब मर गए और तौभी तू कहता है जो मेरे वचनों का पालन करेगा वह कभी नहीं मरेगा। 53 सो क्या तू हमारे पिता इब्राहीम से भी बड़ा है, जो मर गया ? और क्या तू उन नबियों से भी बड़ा है जो मर गए ? तू अपने आपको समझता क्या है ?" 54 तब यीशु ने उनसे कहा, "यदि केवल मैं स्वयं अपनी बड़ाई करता हूं तो व्यर्थ है परन्तु मेरा पिता, जिसे तुम अपना परमेश्वर कहते हो, वही मेरी महिमा करता है। 55 परन्तु तुम उसे जानते तक नहीं। मैं जानता हूं। यदि कहूं कि मैं नहीं जानता तो तुम्हारे समान झूठा ठहरूंगा ! परन्तु मैं उसे जानता हूं और उसकी सब आज्ञाओं को मानता हूं। 56 तुम्हारा पिता इब्राहीम भी मेरा दिन देख कर आनन्दित हुआ।" वह जानता था कि मैं आने वाला हूं और इस लिए वह आनन्दित था।" 57 यहूदी बोले, "तू अभी पचास वर्ष का भी नहीं है और तू ने इब्राहीम को देखा है ?" 58 यीशु ने कहा, "यह बिलकुल सच है कि इब्राहीम के पैदा होने से पहले मैं हूं !" 59 इस बात पर यहूदी अगुवों ने उन्हें मार डालने को पत्थर उठाए। किन्तु यीशु बच कर और मन्दिर छोड़कर चले गए।

9

1 यीशु जब मार्ग में जा रहे थे तो उन्होंने एक व्यक्ति को देखा जो जन्म से अंधा था। 2 उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, गुरुजी, "यह व्यक्ति क्यों अंधा जन्मा ? क्या अपने पापों के कारण या अपने माता पिता के पापों के कारण ?" 3 यीशु ने उत्तर दिया, "यह किसी के पाप के कारण नहीं, परन्तु यह इसलिये हुआ कि परमेश्वर के कार्य इसमें प्रकट हों। 4 परमेश्वर जिसने मुझे भेजा है, हमें उसका कार्य दिन ही दिन में पूरा करना है क्योंकि शीघ्र ही रात हो जाएगी और तब कोई व्यक्ति कार्य न कर सकेगा। 5 किन्तु जब तक मैं यहाँ इस जगत में हूं, मैं जगत की ज्योति हूं।" 6 तब उन्होंने भूमि पर थूका और थूक से मिट्टी सानी और मिट्टी अंधे की आँखों पर लगा दी। 7 फिर उन्होंने कहा, "जा शीलोह के कुंड में धो ले ("शीलोह" शब्द का अर्थ भेजा हुआ है)। वह उस स्थान पर गया और आँखें धोकर देखता हुआ लौट आया ! 8 उसके पड़ोसियों और दूसरों ने, जो उसे अंधा भिखारी के रूप में जानते थे आपस में पूछा, "क्या यह

व्यक्ति वही भिखारी है ?" 9 कुछ ने कहा, "हाँ"। और कुछ ने कहा, "नहीं"। उन्होंने सोचा, "यह वह व्यक्ति नहीं हो सकता, परन्तु वास्तव में उसी के समान दिखता है ?" उस भिखारी ने कहा, "मैं वही व्यक्ति हूं !" 10 तब उन्होंने प्रश्न किया, "तू कैसे देखने लगा ?" 11 उसने उन्हें बताया, "यीशु नामक व्यक्ति ने मिट्टी सानी और उसे मेरी आँखों पर लगाकर मुझे शीलोह के कुण्ड में धोने को कहा। मैंने वैसा ही किया और अब देखता हूं !" 12 उन्होंने पूछा, "वह अभी कहां है ?" उसने उत्तर दिया, "मैं नहीं जानता।"

13 तब वे उस व्यक्ति को जो अंधा था फरीसियों के पास ले गए। 14 वह सब्त[1] का दिन था जब उसकी आँखें खोली गई थीं। 15 तब फरीसियों ने उससे पूछा कि वह कैसे देखने लगा। उसने बताया, "यीशु ने मिट्टी सानकर मेरी आँखों पर लगाई मैंने उसे धोया और मैं देखने लगा।" 16 उनमें से कुछ ने कहा, "तब तो यह व्यक्ति यीशु, परमेश्वर की ओर से नहीं है; क्योंकि वह सब्त के दिन कार्य करता है ! दूसरों ने कहा, "किन्तु एक साधारण, पापी व्यक्ति इतने आश्चर्यकर्म कैसे कर सकता है ?" इसलिए इनमें गहरा मतभेद उत्पन्न हुआ। 17 तब फरीसियों ने उस व्यक्ति से जो पहले अंधा था पूछा, "जिस व्यक्ति ने तेरी आखें खोलीं उसके विषय में तू क्या कहता है ?" उसने उत्तर दिया, "वह परमेश्वर का भेजा हुआ नबी है।" 18 यहूदी अगुवों को उस समय तक विश्वास नहीं हुआ कि वह अंधा था, जब तक उन्होंने उसके माता पिता को बुला कर पूछ न लिया, 19 "क्या यह तुम्हारा पुत्र है ? क्या यह अन्धा जन्मा था ? यदि हां, तो अब कैसे देख सकता है ?" 20 उसके माता-पिता ने उत्तर दिया, "हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और यह अन्धा जन्मा था, 21 परन्तु हम नहीं जानते कि क्या हुआ और वह कैसे देखने लगा और किसने उसकी आखें खोलीं। वह समझदार है, उसी से पूछो !" 22 उसके माता पिता ने यह बात यहूदियों से डरकर कही, जिन्होंने एका कर लिया था कि जो यीशु को मसीह कहे उसे समाज से बाहर निकाल दिया जाएगा। 23 यही कारण था कि उसके माता-पिता ने कहा था कि वह समझदार है उसी से पूछ लो।

24 इसलिये उन्होंने दूसरी बार उस व्यक्ति को बुलाया जो पहले अन्धा था और उससे कहा, "केवल परमेश्वर की महिमा कर यीशु की नहीं क्योंकि हम जानते हैं कि यह व्यक्ति पापी है।" 25 उसने कहा, "मुझे नहीं मालूम—वह पापी है या नहीं; परन्तु इतना जानता हूं कि मैं अन्धा था, और अब देखता हूं !" 26 उन्होंने पूछा, "परन्तु उसने क्या किया ? उसने तुझे कैसे चंगा किया ?" 27 उस व्यक्ति ने कहा, "देखो ! मैं एक बार बता चुका हूं, क्या तुमने नहीं सुना ? फिर क्यों सुनना चाहते हो ? क्या तुम भी उसके चेले होना चाहते हो ?" 28 तब उन्होंने उसे झिड़का, "तू ही उसका चेला होगा हम तो मूसा के चेले हैं। 29 हमें मालूम है कि परमेश्वर ने मूसा से बातें की, परन्तु इस व्यक्ति के सम्बन्ध में हमें कुछ भी नहीं मालूम है।" 30 उस व्यक्ति ने कहा, अरे यह तो बड़ी अद्भुत बात है ! वह अन्धे को चंगा कर सकता है और तुम उसके विषय में कुछ नहीं जानते ! 31 परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता परन्तु जो उसकी उपासना करते और उसकी इच्छा पर चलते हैं उनकी सुनता है। 32 सृष्टि के आरम्भ से अब तक कभी सुनने में नहीं आया कि किसी ने जन्म के अन्धे की आखें खोली हों। 33 यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कभी यह काम नहीं कर सकता था।" 34 वे क्रोध में चिल्लाए, "तू तो बिलकुल पापों में जन्मा है और हमें सिखाने चला !"

[1] अर्थात शनिवार का दिन था, जो यहूदियों का साप्ताहिक पवित्र दिन था जिसमें सब काम करना मना था।

35 जब यीशु ने यह सुना तो उससे भेंट करके कहा, "क्या तू मसीह पर विश्वास करता है ?" 36 उसने पूछा, "महोदय, वह कौन है ? क्योंकि मैं उस पर विश्वास करना चाहता हूँ।" 37 यीशु ने कहा, "तूने उसे देखा है, और वह तुम से बातें कर रहा है।" 38 उसने कहा, "हां प्रभु, "मैं विश्वास करता हूँ।" और उसने यीशु को दण्डवत किया। 39 यीशु ने उसे बताया, "मैं जगत मे इसलिये आया कि जो आत्मिक रूप से अन्धे है उन्हे दृष्टि दूं और वे जो समझते हैं कि देखते हैं उन्हें दर्शाऊं कि वे अन्धे हैं।" 40 जो फरीसी वहा खडे थे उन्होंने पूछा, "क्या तू यह कह रहा है कि हम अन्धे है ?" 41 यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तुम अन्धे होते तो पापी न ठहरते, परन्तु तुम पापी हो क्योंकि तुम दावा करते हो कि जो तुम कहते हो उसे जानते हो।"

10 1 "मैं तुमसे कहता हूं यदि कोई द्वार से भेडशाले मे प्रवेश नही करता, और दीवार फाद कर आता है वह चोर और डाकू है। 2 परन्तु जो द्वार से प्रवेश करता है वह चरवाहा है। 3 उसके लिए द्वारपाल द्वार खोल देता है और भेडें उसका शब्द सुनती हैं और उसके पास आती है ; और वह अपनी भेडों को नाम ले लेकर पुकारता है और उनको बाहर ले जाता है। 4 वह उनके आगे आगे चलता है, और वे उसके पीछे हो लेती है क्योंकि उसका शब्द पहचानती है। 5 वे किसी अपरिचित के पीछे नही जाएंगी परन्तु उससे दूर भागेंगी क्योंकि वे उसका शब्द नही पहचानती।" 6 जितनो ने यीशु का यह उदाहरण सुना वे नही समझे कि इसमे उनका क्या अर्थ है।

7 इसलिये यीशु ने कहा, "मैं तुमसे कहता हू, भेडो का द्वार मैं हूं। 8 जितने मुझसे पहले आए वे चोर और डाकू हैं। भेडो ने उनकी न सुनी। 9 द्वार मैं हू। जो द्वार से भीतर आएगा वह उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा तथा चारा पाएगा। 10 चोर केवल चुराने, हत्या करने और नष्ट करने आता है। परन्तु मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं और बहुतायत से पाएं। 11 अच्छा चरवाहा मैं हू। अच्छा चरवाहा भेडों के लिये अपना प्राण देता है। 12 मजदूर जो न चरवाहा है और न भेडों का मालिक वह भेडिये को आते देखकर भाग जाता है और भेडिया भेड़ो पर झपटता और उनको तितर-बितर कर देता है। 13 मजदूर भाग जाता है क्योंकि वास्तव मे उसे अपनी मजदूरी की चिन्ता रहती है, भेडों की नही। 14 अच्छा चरवाहा मैं हूं। मैं अपनी भेडों को जानता हूं, और वे मुझे पहचानती हैं। 15 जैसे पिता मुझे जानता है। वैसे ही मैं पिता को जानता हू और मैं भेडो के लिए अपना प्राण देता हू। 16 मेरी और भी भेडें हैं, जो इस भेडशाले मे है। अवश्य है कि मैं उनको भी लाऊ, और वे मेरा शब्द सुनेंगी और एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा। 17 पिता मुझ से प्रेम रखता है क्योंकि मैं अपनी जान देता हू कि उसे फिर ले लूं। 18 मैं स्वेच्छा से अपने प्राण देता हू कोई उसे मुझ से छीनता नहीं क्योंकि मुझे अपनी इच्छानुसार प्राण देने तथा उसे फिर से लेने का भी अधिकार है। क्योंकि पिता ने मुझे यह अधिकार दिया है।"

19 उनके इन वचनो के कारण यहूदी अगुवो मे फिर फूट पड गई। 20 अनेक लोगो ने कहा, "वह भूतग्रस्त और पागल है, ऐसे व्यक्ति की क्यों सुनें ?" 21 दूसरो ने कहा, "ये वचन भूतग्रस्त व्यक्ति के से नही हैं क्या भूत किसी अन्धे व्यक्ति की आंखे खोल सकता है ?"

22 जाडे की ऋतु थी। यरूशलेम मे स्थापन पर्व मनाया जा रहा था। 23 यीशु मन्दिर के उस भाग मे टहल रहे थे जो सुलैमान का ओसारा कहलाता है। 24 यहूदियों ने उनके चारो ओर एकत्रित होकर पूछा, "तू कब तक

हमें दुविधा में रखेगा ? यदि तू मसीह है तो हम से स्पष्ट कह दे।" 25 यीशु ने उत्तर दिया, "मैंने तुमसे पहले ही कह दिया, पर तुम विश्वास करते ही नहीं। जो आश्चर्यकर्म मैं पिता के नाम से करता हूं वे ही इसके प्रमाण हैं। 26 परन्तु तुम मेरा विश्वास नहीं करते क्योंकि मेरी भेड़ों में से नहीं हो। 27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, मैं उन्हें पहचानता हूं और वे मेरे पीछे हो लेती हैं। 28 मैं उनको अनन्त जीवन देता हूं, और वे कभी नाश न होंगी। उन्हें मेरे हाथ से कभी कोई छीन नहीं सकता। 29 क्योंकि मेरे पिता ने उन्हें मुझे दिया है और वह सबसे अधिक सामर्थी है, इसलिये कोई उनको पिता के हाथ से छीन नहीं सकता। 30 मैं और पिता एक हैं।" 31 तब यहूदियों ने उन्हें मार डालने को फिर पत्थर उठाए। 32 यीशु ने कहा, "मैंने परमेश्वर की ओर से अनेक आश्चर्यकर्म किये हैं। तुम उनमें से किस काम के लिये मुझे मार डालना चाहते हो ?" 33 यहूदियों ने कहा, "अच्छे कार्य के लिये नहीं परन्तु इसलिये कि तू मनुष्य होकर अपने आपको परमेश्वर कहता है और यह परमेश्वर की निन्दा है।" 34 उन्होंने उत्तर दिया, "तुम्हारी ही व्यवस्था में लिखा है कि मनुष्य ईश्वर है। 35 यदि धर्मशास्त्र उन्हें ईश्वर कहता है जिनके पास परमेश्वर का सन्देश पहुंचा, 36 तो क्या तुम उसे ईश्वर की निन्दा कहते हो जब परमेश्वर का भेजा हुआ और पवित्र ठहराया हुआ यह कहता है 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूं' ? 37 जब तक मैं परमेश्वर के आश्चर्यकर्म न करूं मुझ पर विश्वास मत करो। 38 परन्तु यदि कर रहा हूं तो चाहे मुझ पर विश्वास न करो परन्तु मेरे कार्यों पर तो करो। जिससे तुम जान सको और समझ सको कि पिता मुझ में है और मैं पिता में।" 39 यहूदियों ने फिर उन्हें पकड़ने का प्रयत्न किया परन्तु वह उनसे बच कर चले गए।

40 वह यरदन पार उस स्थान में गए जहां यूहन्ना बपतिस्मा देता था, और वहीं रहे। 41 और बहुत लोग उनके पीछे हो लिये। वे आपस में कहते थे, "यूहन्ना ने आश्चर्यकर्म नहीं किये, किन्तु उसने इस व्यक्ति के विषय में जो भविष्यद्वाणी की थी वह सच हुई है।" 42 और वहां बहुतों ने विश्वास किया कि वह मसीह है।

11 1 मरियम और उसकी बहिन मरथा के गांव बैतनिय्याह का लाजर नाम एक मनुष्य बीमार था। 2 यह वही मरियम थी जिसने प्रभु यीशु के पैरों पर बहुमूल्य इत्र डालकर उन्हें अपने बालों से पोंछा था। इसी का भाई लाजर बीमार था। 3 इसलिये उसकी बहनों ने यीशु को सन्देश भेजा, "प्रभु आपका प्रिय मित्र बहुत बीमार है।" 4 परन्तु जब यीशु ने यह सुना तो कहा, "उसकी बीमारी का अन्त मृत्यु नहीं है, परन्तु परमेश्वर की महिमा करना है कि इसके द्वारा मेरी अर्थात परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।" 5 यद्यपि यीशु को मरथा, मरियम और लाजर से बहुत प्रेम था, 6 तौभी वह जहां थे, वहां दो दिन और ठहर गए। 7 इसके पश्चात उन्होंने अपने चेलों से कहा, "चलो हम यहूदिया को जाएं।" 8 परन्तु उनके चेलों ने विरोध किया। उन्होंने कहा, "गुरुजी, कुछ ही दिन पहले यहूदिया में यहूदी आपको मार डालने का प्रयत्न कर रहे थे। क्या आप वहां फिर जाएंगे ?" 9 यीशु ने उत्तर दिया, "क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते ! यदि कोई दिन को चले तो ठोकर नहीं खाता क्योंकि वह इस जगत का प्रकाश देखता है। 10 रात्रि में चलने वाला ठोकर खाता है क्योंकि उसमें प्रकाश नहीं।" 11 तब उन्होंने कहा, "हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु अब मैं जाकर उसे जगाऊंगा !" 12 चेलों ने यीशु से कहा, "हे प्रभु यदि वह सो गया है तो बच जाएगा।" 13 यीशु का तात्पर्य लाजर की मृत्यु से था परन्तु वे समझे कि वह विश्राम के सम्बन्ध में आनन्द

रह रहा है। 14 तब उन्होंने उनसे स्पष्ट कहा, "लाज़र मर गया है। 15 और तुम्हारे कारण, मुझे आनन्द है कि मैं वहां नहीं था ताकि तुम मुझ पर विश्वास करो। चलो उसके पास चलें। 16 थोमा ने जिसका नाम 'दिदुमुस' था दूसरे चेलों से कहा, "आओ हम भी उसके साथ मरने को चलें।"

17 जब वे बैतनिय्याह पहुंचे तो उन्हें बताया गया कि लाज़र को कब्र में रखे चार दिन हो गए हैं। 18 बैतनिय्याह, यरूशलेम से करीब दो मील की दूरी पर था। 19 और अनेक यहूदी, मरियम और मरथा के पास उनके भाई की मृत्यु पर संवेदना प्रकट करने आए थे। 20 जब मरथा ने सुना कि यीशु आ रहे हैं, तो वह उनसे भेंट करने गई। परन्तु मरियम घर में बैठी रही। 21 मरथा ने यीशु से कहा, "प्रभु यदि आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मरता। 22 और अभी भी मैं जानती हूं कि यदि आप परमेश्वर से मांगेंगे तो वह आपको देगा।" 23 यीशु ने उससे कहा, "तेरा भाई फिर जी उठेगा।" 24 मरथा ने कहा, "मैं जानती हूँ पुनरुत्थान के दिन वह जी उठेगा।" 25 यीशु बोले, "पुनरुत्थान और जीवन मैं हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, यदि वह मर भी जाए तो भी जीएगा, 26 और जो जीवित है तथा मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी नहीं मरेगा। क्या तू विश्वास करती है?" 27 मरथा ने उनसे कहा, "हां प्रभु मैं विश्वास कर चुकी हूं कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आने वाला था वह आप ही हैं।" 28 तब वह उन्हें छोड़ कर मरियम के पास लौटी और उसे अलग ले जाकर उससे बोली, "गुरुजी यहां आए हैं और तुझसे मिलना चाहते हैं। 29 मरियम तत्काल उनसे भेंट करने गई। 30 यीशु अभी गाँव के बाहर उस स्थान पर थे जहाँ मरथा ने उनसे भेंट की थी। 31 जब यहूदियों ने, जो उसके घर सांत्वना देने आए थे, मरियम को शीघ्रता से जाते देखा, तो अनुमान लगाया कि वह लाज़र की कब्र पर रोने जा रही है, इसलिये वे उसके पीछे हो लिये। 32 जब मरियम वहां पहुंची जहां यीशु थे, तो उनके पैरों पर गिरकर बोली, "प्रभु यदि आप यहां होते तो मेरा भाई न मरता।" 33 जब यीशु ने उसे और यहूदियों को रोते देखा तो अत्यन्त दुःखी हुए। 34 उन्होंने उनसे पूछा, "उसे कहां दफनाया गया है?" वे बोले, "आकर देख लीजिये।" 35 यीशु रोए। 36 यहूदियों ने कहा, "देखो वह उससे कितना प्रेम रखते थे।" 37 परन्तु कुछ ने कहा, "यह व्यक्ति जिसने अंधे को दृष्टि दान दिया वह लाज़र को मरने से क्यों नहीं रोक सका?" 38 यीशु फिर मन में बहुत दुःखी होकर कब्र पर आए। वह एक गुफा थी जिसके द्वार पर एक बड़ा पत्थर रखा था। 39 यीशु ने उनसे कहा, "पत्थर को लुढ़का दो।" परन्तु मृतक की बहिन मरथा ने कहा, "अब तक तो बड़ी दुर्गन्ध आती होगी, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो चुके हैं।" 40 यीशु ने उससे पूछा, "परन्तु क्या मैंने तुझसे नहीं कहा कि तू यदि विश्वास करे तो परमेश्वर के आश्चर्यकर्म को देखेगी?" 41 इसलिये उन्होंने पत्थर को लुढ़काया। तब यीशु ने स्वर्ग की ओर देखा और कहा, "पिता तेरा धन्यवाद हो कि तू ने मेरी सुन ली है। 42 तू सदैव मेरी सुनता रहा है परन्तु ऐसा मैंने इसलिये कहा। यहां खड़े सब लोग विश्वास करें कि तू ने मु[illegible] भेजा है।" 43 तब उन्होंने ज़ोर से पुकारा, "लाज़र, निकल आ।" 44 और लाज़र निक[illegible] आया। वह कफ़न में लिपटा हुआ था और उसके सिर पर एक बड़ा रूमाल बंधा हुआ था। यीशु ने उनसे कहा, "कफ़न को खोलो और उसे जाने दो।"

45 बहुत से यहूदियों ने जो मरियम के साथ थे जब यीशु के इन कार्यों को देखा, तो उन पर विश्वास किया! 46 परन्तु कुछ ने फ़रीसियों के पास जाकर यीशु के कार्यों का वर्णन किया।

47 तब महायाजकों और फ़रीसियों ने स्थिति पर विचार करने के लिये सभा बुलाई। उन्होंने

आपस में पूछा, "हम करते क्या हैं? क्योंकि यह व्यक्ति तो वास्तव में अद्भुत कार्य करता है। 48 यदि हम उसे ऐसे ही छोड़ दें, तो सब इस पर विश्वास करने लगेंगे और रोमी लोग आकर हम पर और हमारी जाति पर अधिकार कर लेंगे।" 49 लेकिन उनमें से कैफा नामक एक व्यक्ति ने जो उस वर्ष महायाजक था कहा, 50 "तुम कुछ नहीं जानते और न समझते हो कि हमारे लिये एक मनुष्य का मरना भला है ताकि समस्त जाति नष्ट न हो।" 51 यह भविष्यद्वाणी उसने अपनी ओर से नहीं की परन्तु उस वर्ष का महायाजक होकर की कि यीशु सारी जाति के लिये मरेगा। 52 यह भविष्यद्वाणी न केवल इस्राएल के लिये परन्तु जगत में परमेश्वर की तितर-बितर सन्तान को एकत्र करने के लिये भी थी। 53 इसलिये उसी दिन से वे यीशु को मार डालने का षड्यंत्र रचने लगे।

54 उस समय से यीशु ने यहूदियों के बीच प्रकट रूप से सेवा नहीं की। फिर वह जंगल के निकट इफ्राईम नामक गांव में गए और वहीं चेलों के साथ ठहरे। 55 यहूदियों के पवित्र फसह का पर्व निकट था। गांवों के अनेक लोग यरूशलेम में कई दिनों पहले पहुंच चुके थे ताकि फसह के आरम्भ होने से पहले अपने आपको शुद्ध करें। 56 वे यीशु को देखना चाहते थे और मन्दिर में चुपके चुपके एक दूसरे से बातें करते हुए आपस में पूछते थे, "तुम क्या सोचते हो? क्या यीशु फसह मनाने नहीं आएंगे?" 57 इस बीच महायाजकों और फरीसियों ने खुले रूप में घोषणा की थी, जो कोई यीशु को देखे वह उन्हें तत्काल सूचना दे ताकि वे उन्हें पकड़ सकें।

12 1 फसह के पर्व से छः दिन पहले यीशु बैतनिय्याह में आए, जहां लाजर था जिसे उन्होंने मृतकों में से जीवित किया था। 2 यीशु के सम्मान में भोज तैयार किया गया था। मरथा पहुनाई कर रही थी और लाजर उनके साथ भोजन करने बैठा था। 3 तब मरियम ने जटामासी का लगभग आधा किलो बहुमूल्य इत्र लेकर उसे यीशु के पैरों पर मला और उन्हें अपने बालों से पोंछा। उस इत्र की सुगन्ध से घर सुगन्धित हो गया। 4 परन्तु उनके चेलों में से यहूदा इस्करियोती ने, जो उनको पकड़वाने पर था, कहा, 5 "यह इत्र तो लगभग तीन सौ दीनार[1] का था। इसे बेच कर गरीबों को रुपया बांटा जा सकता था।" 6 वास्तव में उसे गरीबों की कुछ चिन्ता नहीं थी, परन्तु वह चोर था और चेलों का पैसा उसके पास जमा रहता था वह बहुधा अपने काम के लिए उसमें से कुछ निकाल लिया करता था। 7 यीशु ने उत्तर दिया, "मरियम से कुछ न कहो। उसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में यह सब किया है। 8 तुम गरीबों की सहायता सदैव कर सकते हो, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदा नहीं रहूंगा।"

9 यहूदियों की साधारण जनता ने जब उनके आने का समाचार सुना तो लोगों की भीड़ यीशु को तथा लाजर को भी जिसे उन्होंने मृतकों में से जीवित किया था देखने के लिए इकट्ठी हो गई। 10 तब महायाजकों ने लाजर को भी मार डालने की सम्मति की। 11 क्योंकि उसी के कारण अनेक यहूदी अगुवों ने उनसे अलग होकर यीशु पर विश्वास किया कि यही उनका मसीह है।

12 दूसरे दिन बड़ी भीड़ ने, जो पर्व मनाने आई थी, सुना कि यीशु यरूशलेम आ रहे हैं। 13 तब लोगों ने खजूर की शाखाएं लीं और वे यीशु से भेंट करने निकले। वे ऊंचे स्वर से कह रहे थे, "उद्धारकर्ता! धन्य है इस्राएल का राजा जो प्रभु के नाम से आता है।" 14 यीशु ने एक गधे के बच्चे पर सवारी करके इस भविष्यद्वाणी को पूरा किया: 15 "यरूशलेम के लोगो भयभीत न हो, क्योंकि देखो तुम्हारा राजा दीनता-पूर्वक, गधे के बच्चे पर बैठा हुआ

[1] दीनार = 50 पैसे।

तुम्हारे पास आ रहा है।" 16 इस समय यीशु के चेलों ने यह नहीं समझा कि भविष्यवाणी पूरी हो रही है। किन्तु जब यीशु स्वर्ग की अपनी महिमा में लौट गए तब उन्होंने स्मरण किया कि पवित्र शास्त्र की बहुत भविष्यद्वाणियां उनके समक्ष पूरी हुई हैं। 17 भीड़ के कुछ लोग जिन्होंने यीशु के वचन द्वारा लाजर को मृतकों में से जीवित होकर बाहर आते देखा था वे दूसरे को इस बात की साक्षी दे रहे थे। 18 वास्तव में यही कारण था कि बहुत से लोग यीशु से मिलने आए थे क्योंकि उन्होंने इस अद्भुत चमत्कार के विषय में सुना था। 19 तब फरीसियों ने एक दूसरे से कहा, "हम तो हार गए। देखो सारा जगत उसके पीछे हो लिया है।"

20 कुछ यूनानियों ने जो यरूशलेम में फसह का पर्व मनाने आए थे, 21 फिलिप्पुस से भेंट की, जो गलील के बैतसैदा का निवासी था, और कहा, ' महाशय हम यीशु से मिलना चाहते हैं।" 22 फिलिप्पुस ने अन्द्रियास को बताया और फिर वे दोनों यीशु से पूछने गए। 23 यीशु ने उत्तर दिया "समय आ गया है कि मैं अपनी महिमा में स्वर्ग को लौट जाऊं। 24 मैं तुम से सत्य कहता हूं, जैसे गेहूं का दाना भूमि में गिर कर मर नहीं जाता, तब तक अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है तो बहुत फल देता है। 25 यदि कोई इस संसार में अपने जीवन को प्रिय जानेगा तो उसे खो देगा। यदि कोई यहां उसे तुच्छ जानेगा तो अनन्त जीवन के लिए उसको सुरक्षित रखेगा। 26 यदि कोई मेरा शिष्य बनना चाहे तो मेरे पीछे हो ले क्योंकि जहां मैं हूं वहां मेरे सेवक का होना अवश्य है। यदि कोई मेरी सेवा करे तो पिता उसका आदर करेगा।

27 "अब मेरा हृदय अत्यन्त व्याकुल है। क्या मैं यह कहूं, 'पिता, मुझे आने वाली पीड़ा से बचा? परन्तु मैं इसी कारण आया हूं। 28 हे पिता, अपने नाम की महिमा कर'।" तब स्वर्ग से यह आवाज सुनाई दी, "मैंने उसकी महिमा की है और फिर करूंगा।" 29 जब भीड़ ने यह आवाज सुनी तो कुछ ने सोचा कि बादल गरजा और कुछ ने कहा कि स्वर्गदूत ने उससे बातें की। 30 तब यीशु ने उनसे कहा, "यह आवाज मेरे लिए नहीं, किन्तु तुम्हारे लिए थी। 31 जगत के न्याय का समय आ पहुंचा है और वह समय भी जब इस जगत का अधिपति[1] निकाला जाएगा। 32 और जब मैं क्रूस पर चढ़ाया जाऊंगा तो प्रत्येक को अपनी ओर आकर्षित करूंगा।" 33 यह उन्होंने इस बात को प्रकट करने के लिए कहा कि उनकी मृत्यु किस प्रकार होगी। 34 भीड़ ने कहा, "हमें व्यवस्था के द्वारा मालूम है कि मसीह सदैव जीवित रहेगा, आप कैसे कहते हैं कि वह मरेगा? यह मसीह कौन है? 35 यीशु ने उत्तर दिया, "ज्योति थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच में है जब तक ज्योति है चले चलो ऐसा न हो कि अन्धकार तुम्हें आ घेरे। जो अन्धकार में चलता है वह नहीं जानता कि किधर जाता है। 36 जब तक समय है तब तक ज्योति पर विश्वास करो तब तुम ज्योति की सन्तान ठहरोगे।"

यह कह कर यीशु चले गए और उनसे छिपा लिए गए। 37 परन्तु इतने आश्चर्यकर्म करने के बाद भी अधिकांश लोगों को विश्वास न हुआ कि वह मसीह हैं। 38 ताकि यशायाह की यह भविष्यवाणी पूरी हो, "जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया?" और कौन परमेश्वर के आश्चर्यकर्म को प्रमाण स्वरूप स्वीकार करेगा?" 39 परन्तु वे विश्वास कर भी नहीं सकते थे, क्योंकि यशायाह ने यह भी कहा, 40 "परमेश्वर ने उनकी आंखें अंधी और उनका मन कठोर किया है, ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, मन से समझें और फिरें कि मैं उनको चंगा करूं।" 41 यह भविष्यवाणी करते समय यशायाह का संकेत मसीह की ओर था, क्योंकि उसने उसकी महिमा का दर्शन पाया

[1] तात्पर्य शैतान से है।

था। 42 तो भी, बहुत से यहूदी अगुवों को विश्वास था कि वह मसीह हैं परन्तु वे इस भय के कारण किसी से नहीं कहते थे कि कहीं फरीसी उन्हें आराधनालय से बाहर न निकाल दें। 43 क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन्हें परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय थी।

44 यीशु ने ऊंचे स्वर में भीड़ से कहा, "यदि तुम मुझ पर विश्वास करते हो, तो तुम वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास करते हो। 45 क्योंकि जब तुम मुझे देखते हो, तो उसे भी देख रहे हो, जिसने मुझे भेजा। 46 मैं इस अन्धकारमय जगत में ज्योति के सदृश्य चमकने के लिए आया हूं ताकि जितने मुझ पर विश्वास लाएं, वे फिर अंधकार में न चलें। 47 यदि कोई मेरी सुनता है परन्तु मेरी नहीं मानता, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता क्योंकि मैं दोषी ठहराने के लिए नहीं परन्तु जगत का उद्धार करने के लिए आया हूं। 48 जो मेरा तिरस्कार करता और मेरे वचन ग्रहण नहीं करता, : जो वचन मैंने कहा है, वही अन्तिम दिन उसे अपराधी ठहराएगा। 49 ये मेरे स्वयं के विचार नहीं हैं, परन्तु जो पिता ने मुझे तुमको बताने को कहा, वह मैंने तुम्हें बता दिया है। 50 और मैं जानता हूं कि उसकी आज्ञाएं अनन्त जीवन हैं, इसलिए वह जो कुछ मुझसे कहता है, मैं वही कहता हूं।"

13 1 फसह के पर्व से पूर्व यीशु ने यह जानकर कि इस संसार को छोड़कर पिता के पास जाने की घड़ी आ पहुंची है अपनों से जो जगत में थे जिन्हें वह प्रेम करते आए थे अन्त तक उनसे वैसा ही प्रेम करते रहे। 2 शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में शैतान यह विचार डाल चुका था कि उन्हें पकड़वाए, तब भोजन करते समय 3 यीशु ने यह जानते हुए कि पिता ने उन्हें सब कुछ दिया है और यह कि वह परमेश्वर के पास से आए हैं और परमेश्वर के पास लौट जाएंगे तथा वह अपने शिष्यों से अत्यधिक प्रेम करते थे। 4 इसलिये उन्होंने भोजन से उठकर अपना चोगा उतारा और अपनी कमर[1] पर एक अंगोछा बांधा, 5 चिलमची में पानी भरा, और चेलों के पैर धोने तथा अपनी कमर में बंधे अंगोछे से पोंछने लगे। 6 जब वह शमौन पतरस के पास पहुंचे, तो पतरस ने उनसे कहा, हे प्रभु, आप! क्या आप मेरे पैर धोएंगे? 7 यीशु ने उत्तर दिया, "जो मैं अभी कर रहा हूं तुम उसे नहीं जानते पर बाद में समझोगे।" 8 पतरस ने विरोध करते हुए कहा, "नहीं, आप मेरे पैर कभी नहीं धोएंगे।" यीशु ने उत्तर दिया, "परन्तु यदि मैं तुझे न धोऊं, तो मेरे साथ तेरा कुछ भाग नहीं होगा।" 9 शमौन पतरस ने कहा, "तब केवल पैर ही नहीं वरन आप मेरे हाथ और सिर भी धोइये।" 10 यीशु ने उत्तर दिया, "जो स्नान कर चुका है उसे स्वच्छ होने के लिये केवल पैर ही धुलाने की आवश्यकता है। अब तुम शुद्ध हो परन्तु सब के सब नहीं।" 11 क्योंकि यीशु जानते थे कि कौन उन्हें पकड़वाएगा, इस कारण उन्होंने कहा, "तुम सबके सब शुद्ध नहीं हो।"

12 उनके पैर धोने के पश्चात् उन्होंने फिर अपना चोगा पहिना और बैठकर पूछा, "क्या तुम समझे, मैंने तुम्हारे साथ क्या किया? 13 तुम मुझे 'गुरु' और 'प्रभु' कहकर पुकारते हो और यह ठीक ही कहते हो, क्योंकि यह सच है। 14 इसलिए जब मैंने प्रभु और गुरु होते हुए तुम्हारे पैर धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पैर धोने चाहिये। 15 मैंने तुम्हें एक आदर्श दिया है जिस पर तुम चलो: जैसा मैंने तुमसे किया वैसा ही तुम भी करो। 16 यह कितना सच है कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं। न ही सन्देशवाहक अपने भेजने वाले से बढ़ कर है। 17 यदि तुम इन बातों को जानते हो और इन पर चलते हो तो धन्य हो। 18 मैं ये बातें तुम सबसे नहीं कह रहा हूं: मैं तुम में से प्रत्येक को

[1] जैसा सबसे निम्न श्रेणी के दास पहिनते थे।

जिमको मैंने चुना अच्छी तरह से जानता हू। पवित्रशास्त्र मे लिखा है, 'वह जो मेरे साथ खाता है वही मेरे साथ विश्वासघात करेगा।' और यह शीघ्र पूरा होगा। 19 मैं तुम्हें ये बातें अभी इसलिये बताता हू, कि इनके पूरा होने पर तुम मुझ पर विश्वास करो। 20 सच है कि जो कोई मेरे भेजे हुए[2] को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है और मुझे ग्रहण करना पिता को ग्रहण करना है जिसने मुझे भेजा।"

21 यीशु अब आत्मा मे अत्यन्त व्याकुल हुए और बोले, "हाँ, यह सच है, तुम मे से एक मुझे पकडवाएगा।" 22 चेलो ने यह सोचते हुए कि वह किसके विषय मे कह रहे हैं, एक दूसरे की ओर देखा। 23 मैं[3] मेज पर यीशु के समीप[4] बैठा था, क्योंकि उनका घनिष्ठ मित्र था। 24 शमौन पतरस ने मेरी ओर संकेत करके पूछा, "बताओ यह किसके विषय मे कह रहे हैं।" 25 इसलिये मैंने उन की ओर झुक कर पूछा, "हे प्रभु, वह कौन है ?" 26 उन्होने मुझे बताया, "जिसका सम्मान मैं रोटी का टुकडा रस मे डुबा कर देने से करूगा वही है।"[5] तब उन्होने रस मे डुबाया हुआ रोटी का टुकडा शमौन इस्करियोति के पुत्र यहूदा को दिया। 27 टुकडा लेते ही शैतान उसमे समाया। तब यीशु ने उससे कहा, "जो कुछ तू करना चाहता है शीघ्र कर।" 28 परन्तु भोजन करने वालो मे से किसी ने यीशु की बात नही समझी। 29 कुछ ने समझा कि यहूदा खजान्ची है इसलिये यीशु उससे कह रहे हैं कि जो कुछ हमे पर्व के लिये चाहिये मोल ले अथवा गरीबो को कुछ पैसे बाट दे। 30 यहूदा रोटी का टुकडा लेकर तुरन्त वहाँ से चला गया। यह रात का समय था।

31 जैसे ही यहूदा बाहर गया यीशु ने कहा, "अब मेरा समय आ गया है परमेश्वर की महिमा मुझे शीघ्र ही घेर लेगी। 32 और परमेश्वर अति शीघ्र अपनी महिमा मुझे देगा। 33 मेरे प्रिय बच्चो अब थोडा समय बाकी है कि मैं तुम्हे छोड़कर चला जाऊंगा ! तब तुम मुझे खोजोगे परन्तु तुम मुझ तक नही आ सकोगे जैसे मैंने यहूदी अगुवों को बताया। 34 और इसलिए अब मैं तुम्हे एक नई आज्ञा देता हूँ— एक दूसरे से उतना ही प्रेम रखो जितना मैं तुमसे रखता हू। 35 एक दूसरे के प्रति तुम्हारा अटूट प्रेम ही संसार के समक्ष यह प्रमाणित करेगा कि तुम मेरे चेले हो।"

36 शमौन पतरस ने पूछा, "हे प्रभु, आप कहा जा रहे हैं ?" यीशु ने उत्तर दिया, "तुम अभी मेरे साथ नही जा सकते, परन्तु बाद में मेरे पीछे आओगे।" 37 उसने पूछा, "परन्तु अभी मैं आपके पीछे क्यों नही आ सकता? मैं तो आपके लिए मरने को भी तैयार हूं।" 38 यीशु ने उत्तर दिया, "मेरे लिए मरने को तैयार ! नही, कल सुबह मुर्गे के बाँग देने से पहिले, तू तीन बार, मुझे जानने से भी इन्कार करेगा।"

14 1 "तुम्हारा मन व्याकुल न हो। परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी। 2 मेरे पिता के घर मे बहुत से निवास स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से स्पष्ट कह देता। मैं तुम्हारे लिए स्थान तैयार करने जा रहा हू। 3 जब वे सब तैयार हो जाएंगे तो मैं वापिस आकर तुम्हे अपने साथ ले जाऊंगा, तब तुम सदैव मेरे साथ रहोगे जहाँ मैं हूं। 4 और जहाँ मैं जाता हू तुम वहाँ का मार्ग जानते हो।" 5 थोमा ने कहा, "हम नही जानते कि

[2] मूलत "पवित्र आत्मा" [3] मूलत "यीशु के चेलो मे से एक जिससे यीशु प्रेम रखते थे।" सभी टीकाकार सहमत हैं कि वह यूहन्ना ही थे जो इस पुस्तक के लेखक हैं। [4] मूलत "यीशु की ओर झुका हुआ" उस समय की प्रथा थी—बाई कुहनी को मेज पर रख कर झुकना। यूहन्ना यीशु के पास उनके बाजू मे बैठा था। [5] मूलत "जिसे मैं रोटी का टुकडा डुबा कर दूगा, वही है।" उस समय के रीति-रिवाज के अनुसार इसी प्रकार सम्मानित अतिथि की पहिचान होती थी।

आप कहाँ जा रहे हैं ; फिर हम मार्ग कैसे जान सकते हैं ?" 6 यीशु ने उसे बताया, "मार्ग सत्य और जीवन मैं ही हूं। मेरे बिना कोई पिता के पास नही पहुंच सकता। 7 यदि तुम जानते कि मैं कौन हूं, तो यह भी जानते कि मेरा पिता कौन है ! अब तुम उसे जानते हो और तुमने उसे देखा भी है।" 8 फिलिप्पुस ने कहा, "प्रभु, हमे पिता को दिखाइये, तो हम सन्तुष्ट हो जाएंगे।" 9 यीशु ने उत्तर दिया, "फिलिप्पुस, मैं इतने समय तक तुम्हारे साथ रहा क्या तुम अब तक नहीं जानते कि मैं कौन हू ? जिसने मुझे देखा है उसने मेरे पिता को भी देखा है ! फिर तुम कैसे कहते हो, 'हमे पिता के दर्शन कराइये।' 10 क्या तुम्हें विश्वास नहीं कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ मे है ? मैं जो वचन कहता हूं वे मेरे नहीं, परन्तु मेरे पिता के हैं जो मुझ मे है ! और वह अपने कार्य मेरे द्वारा करता है। 11 केवल विश्वास करो कि मैं पिता मे हूं और पिता मुझ मे है। और नही तो मेरे आश्चर्यकर्मों के कारण ही विश्वास करो। 12 मैं सत्य कहता हूं, मुझ पर विश्वास करने वाले भी ऐसे आश्चर्यकर्मों को करेंगे जैसे मैंने किए हैं, यहा तक कि उनसे भी महान कार्य करेंगे, क्योंकि मैं अपने पिता के पास जा रहा हूं। 13 तुम मेरे नाम से उससे कुछ भी माग सकते हो और मैं वैसा ही करूंगा क्योंकि जो कुछ भी तुम्हारे लिए करूंगा उससे पिता की महिमा होगी। 14 हां कुछ भी मेरे नाम से मागो मैं वैसा ही करूंगा।

15 "यदि तुम मुझे प्यार करते हो, तो मेरी आज्ञाओ को मानोगे। 16 मैं पिता से विनती करूंगा और वह तुम्हे दूसरा सहायक देगा, जो तुम्हें कभी नही छोड़ेगा। 17 वह पवित्र आत्मा है, जो सत्य पर तुम्हे ले चलता है ससार उसे ग्रहण नही कर सकता क्योंकि न तो वह उसे देखता है और न उसे जानता है परन्तु तुम उसे जानते हो, क्योकि अभी वह तुम्हारे साथ रहता है और किसी दिन तुम मे निवास करेगा ! 18 मैं तुम्हें नही त्यागूगा न इस संकट मे अनाथ छोड़ूगा ; मैं तुम्हारे पास आऊंगा। 19 थोड़ी देर और है फिर संसार मुझे नही देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे ; मैं जीवित हूँ इसलिये तुम भी जीवित रहोगे। 20 उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता मे हूं, और तुम मुझ मे ; और मैं तुम मे। 21 जो मेरी आज्ञाओं को मानता है, वही है जो मुझे प्यार करता है, और चूंकि वह मुझ से प्रेम रखता है मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और मैं भी रखूगा, और मैं स्वयं को उस पर प्रकट करूंगा।" 22 यहूदा (यहूदा इस्करियोति नही, परन्तु इसी नाम का उनका दूसरा चेला) ने उनसे पूछा, "प्रभु, आप क्यों स्वय को केवल हम शिष्यों पर ही प्रकट करेंगे और संसार पर नही ?" 23 यीशु ने उत्तर दिया, "मैं उन्ही पर स्वय को प्रकट करूगा जो मुझे प्यार करते हैं और मेरी आज्ञाओ को मानते हैं। पिता भी उनको प्यार करेगा और हम उनके पास आएगे और उनके साथ निवास करेंगे। 24 जो मुझ से प्रेम नही करता वह मेरी आज्ञा नही मानता और याद रखो मैं तुम्हारे प्रश्न के उत्तर स्वरूप यह वही कर रहा हू। परन्तु यह उत्तर परमेश्वर की ओर से है जिसने मुझे भेजा है।

25 "मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए अभी तुम्हे ये बातें बता दी हैं। 26 परन्तु जब पिता उस सहायक अर्थात पवित्रात्मा को मेरे नाम से भेजेगा तो वह तुम्हे और अधिक सिखाएगा तथा मेरी सब बातें तुम्हे स्मरण कराएगा।" 27 मैं तुम्हे शान्ति दिए जाता हू अपनी शान्ति तुम्हे देता हू ! और जो शान्ति मैं देता हू वह ससार की शान्ति के समान शीघ्र नष्ट होने वाली नही है ! इसलिए न घबराओ, न डरो। 28 याद है मैंने क्या कहा था, "मैं जा रहा हू और फिर तुम्हारे पास आऊंगा।" यदि तुम मुझ से प्रेम करते तो आनन्द मनाते कि मैं पिता के पास जा रहा हूं; क्योंकि पिता मुझ से महान है। 29 मैंने इन बातों के होने से पहले इन्हें तुम्हे बता दिया

है, ताकि इनके होने पर तुम मुझ पर विश्वास करो। 30 मैं अब तुम से और अधिक बातें नही करूगा, क्योंकि इस जगत का अधिकारी शैतान आ रहा है। उसका मुझ पर कोई अधिकार नही। 31 परन्तु मैं अपने पिता के प्रत्येक आदेश को स्वेच्छा से पूरा करूंगा ताकि ससार जाने कि मैं पिता को प्यार करता हू। आओ यहा से चलें।"

15 1 "सच्ची दाखलता मैं हू, और मेरा पिता माली है। 2 जो डाली मुझ मे है और नही फलती उसे वह काट डालता है। जो फलती है उसे वह छाटता है ताकि और फले। 3 जो आदेश मैंने तुम्हे दिए हैं उनके द्वारा उसने तुम्हे चुन लिया है ताकि तुम अधिक सामर्थी और उपयोगी बनो। 4 तुम मुझ मे बने रहो, और मैं तुम मे, क्योंकि कोई डाली दाखलता से अलग रह कर फल नही सकती, न ही तुम मुझसे अलग रह कर फलवन्त हो सकते हो। 5 मैं दाखलता हू, तुम डालिया हो। जो कोई मुझ मे बना रहता है और मैं उसमे वह अत्यन्त फलवन्त होगा। क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नही कर सकते। 6 यदि कोई मुझसे अलग हो, तो उसे बेकार डाली के समान फेंक दिया जाता है और वह सूख जाता है और इकट्ठा करके जला दिया जाता है। 7 परन्तु यदि तुम मुझ मे बने रहो और मेरी आज्ञाओ को मानो तो जो चाहो विनती करो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा। 8 मेरे पिता की महिमा इसी मे है कि तुम बहुतायत से फल लाओ तब ही तुम मेरे शिष्य ठहरोगे। 9 जैसा पिता ने मुझसे प्रेम रखा वैसा ही मैंने भी तुम से प्रेम रखा है। मेरे प्रेम मे बने रहो। 10 जब तुम मेरी आज्ञाओ को मानते हो, तो मेरे प्रेम मे बने रहते हो, जैसा मैं अपने पिता की आज्ञाओं को मानता हू और उसके प्रेम में बना रहता हूं। 11 मैंने ये बातें तुम से इसलिए कही कि तुम मेरे आनन्द से परिपूर्ण हो जाओ ताकि तुम्हारे आनन्द का प्याला छलकता रहे! 12 मेरी आज्ञा यह है कि तुम एक दूसरे को इतना प्यार करो जितना मैं तुमको करता हूं। 13 इससे बड़ा प्रेम किसी का नही कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे। 14 यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करो तो मेरे मित्र हो। 15 मैं अब से तुम्हें दास नही कहूंगा, क्योंकि स्वामी अपने भेद की बातें दास को नही बताता। अब तुम मेरे मित्र हो, यह इस बात से प्रमाणित है कि मैंने तुम से वे सब बातें कह दी हैं जो पिता ने मुझे बताई। 16 तुमने मुझे नहीं चुना! मैंने तुम्हे चुना! मैंने तुम्हें नियुक्त किया कि तुम जाओ और सदा उत्तम फल लाओ जो बना रहे ताकि तुम पिता से मेरा नाम लेकर जो कुछ भी मागो, वह तुम्हे दे। 17 मैं चाहता हूँ कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो। 18 "यदि ससार तुम से बैर रखता है तो याद रखो कि तुमसे पहले उसने मुझसे भी बैर रखा। 19 यदि तुम जगत के होते तो जगत तुम से प्रेम रखता, परन्तु वह तुम से बैर रखता है क्योंकि तुम उसके नही हो, मैंने तुमको जगत से चुन लिया है! 20 तुमको याद है कि मैंने तुमसे क्या कहा? 'दास अपने स्वामी से बडा नही।' इसलिए जब उन्होंने मुझको सताया, तो स्वाभाविक है कि वे तुम्हे भी सताएंगे। यदि उन्होंने मेरी सुनी, तो तुम्हारी भी सुनेंगे। 21 संसार के लोग तुम्हे मेरे नाम के कारण सताएंगे क्योंकि वे परमेश्वर को नही जानते जिसने मुझे भेजा है। 22 यदि मैं न आता और उनसे बातें न करता तो वे दोषी न ठहरते। परन्तु अब पाप से बचने के लिए उनके पास कोई बहाना नहीं। 23 यदि कोई मुझ से बैर रखता है तो मेरे पिता से भी बैर रखता है। 24 यदि मैंने इतने सामर्थी आश्चर्यकर्म उनके मध्य न किए होते तो वे दोषी न गिने जाते। किन्तु अब तो उन्होने मुझे और मेरे पिता दोनो को देखा फिर भी दोनो से बैर किया। 25 इससे भविष्यवक्ताओ का यह वचन मसीह के सम्बन्ध में पूरा होता है, 'उन्होंने अकारण मुझ से बैर किया।' 26 परन्तु

मैं तुम्हारे पास एक सहायक भेजूंगा अर्थात पवित्र आत्मा जो सब सत्य का स्रोत है। वह पिता से निकलता है और वह तुम्हें मेरे विषय में साक्षी देगा। 27 तुम भी मेरे साक्षी हो, क्योंकि आरम्भ से मेरे साथ हो।"

16 1 "मैंने तुम्हें ये बातें बता दी हैं कि तुम आने वाली कठिन परिस्थितियों में गिर न जाओ। 2 क्योंकि तुम आराधनालय से निकाले जाओगे, वास्तव में वह समय आ रहा है जब तुम्हारा प्राण लेने वाले सोचेंगे कि वे परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं। 3 क्योंकि उन्होंने पिता को और मुझे कभी नहीं जाना है। 4 मैं अभी से तुमको ये सब बातें बता रहा हूं ताकि उनके होने पर तुम याद करो कि मैंने तुम्हें चितौनी दी थी। मैंने तुमको ये बातें पहले नहीं बताईं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। 5 अब मैं उसके पास जाता हूँ जिसने मुझे भेजा है और तुम में से कोई भी जानना नहीं चाहता कि मैं कहां जा रहा हूँ।[1] 6 परन्तु पूछने के बदले तुम्हारा मन शोक से भरा हुआ है। 7 तो भी मैं तुमसे सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अति हितकर है क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो सहायक नहीं आएगा। यदि जाऊंगा तो वह आएगा क्योंकि मैं उसे तुम्हारे पास भेजूंगा। 8 वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में कायल करेगा। 9 पाप के विषय में इसलिए कि मुझ पर विश्वास नहीं करते। 10 धार्मिकता के विषय में इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूं और तुम मुझे फिर नहीं देखोगे, 11 न्याय के विषय में इसलिये क्योंकि इस जगत का अधिपति दोषी ठहरा है।" 12 मैं तो तुमसे बहुत सी बातें कहना चाहता हूं, परन्तु तुम उन्हें अभी नहीं समझ सकते। 13 जब पवित्र आत्मा जो सत्य है आएगा, तो वह पूर्ण सत्य में तुम्हारी अगुवाई करेगा। वह अपने विचारों को प्रस्तुत नहीं करेगा परन्तु केवल वही जो उसने सुना है। वह भविष्य के विषय में तुम्हें बताएगा। 14 वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि वह मेरी बातों को तुम पर प्रकट करेगा। 15 पिता की सब महिमा मेरी है; इसलिए मैंने कहा कि वह मेरी महिमा को तुम पर प्रकट करेगा। 16 "थोड़ी ही देर में तुम मुझे फिर नहीं देखोगे, परन्तु उसके थोड़ी ही देर पश्चात् तुम मुझे फिर देखोगे।" 17, 18 उनके कुछ चेलों ने पूछा, "वह क्या कह रहे हैं? 'पिता के पास जाता हूं' इसमें उनका क्या अर्थ है?" 19 यीशु ने समझ लिया कि वे उनसे प्रश्न करना चाहते हैं, इसलिए उन्होंने कहा, "क्या तुम आपस में मेरी इस बात का जो मैंने अभी कही, अर्थ पूछते हो? 20 मुझ पर जो बीतेगी उससे तुम रोओगे परन्तु संसार खुश होगा। परन्तु जब तुम मुझे फिर देखोगे तब तुम्हारा रोना अद्भुत आनन्द में बदल जाएगा। 21 यह आनन्द उसी प्रकार का होगा जो पीड़ा से कराहती स्त्री को बालक उत्पन्न हो जाने के बाद होता है; दुःख के बदले वह आनन्दित होकर पीड़ा को भूल जाती है। 22 इसी प्रकार यद्यपि अभी तुम्हें दुःख है, परन्तु मैं तुम्हें फिर देखूंगा, तब तुम आनन्दित हो जाओगे और तुम्हारा वह आनन्द कोई तुम से नहीं छीन सकता। 23 उस दिन तुम मुझसे कुछ प्रश्न न करोगे। मैं तुमसे कहता हूं कि यदि तुम पिता से कुछ मांगोगे तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा। 24 अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।

25 "अभी तो मैंने दृष्टान्त रूप में तुम्हें ये बातें बताई हैं परन्तु समय आएगा जब इसकी आवश्यकता नहीं रहेगी और मैं पिता के विषय में सब बातें तुम्हें स्पष्ट बताऊंगा। 26 तब तुम मेरे नाम ही के द्वारा अपने निवेदन पिता के

[1]यह प्रश्न इससे पूर्व भी पूछा गया था (यूहन्ना 13 16; 14 5), परन्तु स्पष्टतः इतने गहरे अर्थ से नहीं।
[2] पवित्रात्मा।

सामने प्रस्तुत कर सकोगे ! और इनको दिलाने के लिए मुझे पिता से बिनती करने की आवश्यकता नही होगी । 27 क्योंकि पिता स्वयं तुममे बहुत प्रेम रखता है इसलिए कि तुम मुझे प्यार करते हो और विश्वास करते हो कि मैं पिता मे से आया हू । 27 मैं पिता में से इस जगत में आया और जगत छोडकर पिता के पास लौट जाऊगा ।" 29 उनके शिष्यो ने कहा, "अब आप स्पष्ट बता रहे हैं, दृष्टान्तो मे नही । 30 अब हम जान गए कि आप सब जानते हैं और किसी को आपको कुछ बताने की आवश्यकता नही है । अतः हम विश्वास करते हैं कि आप परमेश्वर मे से आए हैं ।" 31 यीशु ने पूछा, "क्या तुम अब विश्वास करते हो ? 32 परन्तु समय आ रहा है वास्तव मे, आ पहुचा है जब तुम तितर-बितर हो जाओगे और सब मुझे अकेला छोड दोगे तौभी मैं अकेला नही रहूगा क्योंकि पिता मेरे साथ है । 33 मैंने तुम्हे सब बता दिया है कि तुम मुझमे शान्ति पाओ । जगत मे तुम्हे अनेक दुख और क्लेश होंगे, परन्तु प्रसन्न हो क्योंकि मैंने ससार पर जय पा ली है ।"

17 1 जब यीशु इन बातो को कह चुके तो उन्होंने स्वर्ग की ओर दृष्टि की और कहा, "हे पिता, समय आ गया है । अपने पुत्र की महिमा प्रकट कर ताकि वह भी तेरी महिमा प्रकट कर सके । 2 क्योंकि तूने उसे समस्त ससार के प्रत्येक स्त्री-पुरुष के ऊपर अधिकार दिया है । जितनों को तूने उसे सौंपा है, वह उन सभी को अनन्त जीवन देता है । 3 अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर और यीशु मसीह को जानें जिसे, तूने भेजा है । 4 जो कार्य तू ने मुझे दिए मैंने उन सबको पूर्ण करके इस पृथ्वी पर तेरी महिमा की है । 5 इसलिए अब हे पिता तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की उत्पत्ति से पहले मेरी तेरे साथ थी । 6 मैंने उन मनुष्यों पर तेरा नाम प्रकट किया है जिन्हें तू ने संसार मे मुझे दिया । वे सदा तेरे थे, और तू ने उनको मुझे दिया और उन्होंने तेरे वचन को माना है । 7 अब वे जानते हैं कि जो कुछ मेरे पास है वह तेरा ही दिया हुआ है । 8 क्योंकि जो आज्ञाएं तू ने मुझे दी, वे मैंने उन्हें बता दी और उन्होंने ग्रहण किया और निश्चय जान लिया कि मैं इस जगत मे तुझसे आया हूं और उनका विश्वास है कि तूने मुझे भेजा है । 9 मेरी बिनती समस्त ससार के लिए नही परन्तु उन्ही के लिए है जिन्हें तूने मुझे दिया, क्योंकि वे तेरे हैं। 10 मेरा सब तेरा है और तेरा सब मेरा है ताकि मेरी महिमा उनसे प्रकट हो। 11 मैं आगे को जगत में न रहूगा परन्तु ये जगत में रहेगे और मैं तेरे पास आता हू । हे पवित्र पिता अपने उस नाम से जो तूने मुझे दिया है, उनकी रक्षा कर कि वे हमारे समान एक हों। 12 यहा रहते हुए मैंने तेरे उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है उनकी रक्षा की । विनाश के पुत्र के अतिरिक्त उनमे से कोई नाश नही हुआ । यह उस भविष्यवाणी के अनुसार हुआ जो पवित्रशास्त्र मे की गई है । 13 अब मैं तेरे पास आता हू, जगत मे उनके साथ रहते हुए मैं उन्हे अनेक बातें बताता हू ताकि वे मेरे आनन्द मे भर जाएं । 14 मैंने तेरे वचन उन तक पहुचा दिए हैं। जगत उनसे घृणा करता है क्योंकि वे जगत के सदृश्य नही चलते जैसे मैं भी नही चलता हू । 15 मैं यही बिनती नहीं करता कि तू उन्हे जगत से उठा ले परन्तु यह है कि तू उन्हें शैतान से बचाए रखे । 16 जैसे मैं, वैसे ही वे भी इस ससार के नही है । 17 सत्य से उनको पवित्र कर, तेरा वचन सत्य है । 18 जैसा तूने मुझे इस जगत मे भेजा ; वैसे ही मैंने भी इनको इस जगत मे भेजा है । 19 वे सत्य और पवित्रता मे बढ़ें, उनकी इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए मैं स्वय को अर्पित करता हूं । 20 "मैं केवल इन्ही के लिये प्रार्थना नही कर रहा हू, परन्तु उन सबके लिए भी जो

इनकी गवाही सुन कर भविष्य मे विश्वास करेंगे और मेरे पास आएंगे। 21 उन सभी के लिए मेरी यही प्रार्थना है कि वे एक हृदय और एक मन हों, जैसे तू और मैं हैं। पिता जैसे तू मुझ मे है और मैं तुझ मे हूं, वैसे ही वे भी हम में हों ताकि जगत विश्वास करे कि तूने मुझे भेजा। 22 वह महिमा जो तूने मुझे दी मैंने उन्हें भी दी कि वे वैसे ही एक हों जैसे हम एक हैं। 23 मैं उनमे और तू मुझमे, कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं ताकि जगत जाने कि तूने मुझे भेजा और कि तू उनसे उतना ही प्रेम रखता है जितना मुझसे। 24 हे पिता मैं चाहता हूं कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहां मैं हूं वहा वे भी मेरे साथ हो कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तूने मुझे दी है क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझसे प्रेम रखा। 25 हे धर्मी पिता, संसार तुझे नहीं जानता, परन्तु मैं जानता हूं और ये चेले जानते हैं कि तूने मुझे भेजा है। 26 और मैंने तेरा नाम उनको बताया और बताता रहूँगा कि जो प्रेम तुमको मुझसे था वह उनमें रहे और मैं उनमे रहूं।"

18 1 यीशु ने ये बातें कहीं और अपने चेलों के साथ किद्रोन नाले को पार करके एक बाग में गए। 2 उनके पकडवाने वाले यहूदा को यह स्थान मालूम था क्योंकि यीशु अनेक बार अपने चेलों के साथ वहा गए थे। 3 महायाजकों और फरीसियों ने यहूदा के साथ जाने के लिए सिपाहियों की एक पल्टन और प्यादे तैयार किये। वे जलती हुई मशालों और हथियारो को लिए बाग मे पहुंचे। 4 यीशु को भली प्रकार मालूम था कि उनके साथ क्या होने वाला है। उनसे मिलने के लिये आगे बढ़कर उन्होंने पूछा, "तुम किसे खोज रहे हो?" 5 उन्होंने उत्तर दिया, "यीशु नासरी को।" यीशु ने कहा, "वह मैं ही हूं। 6 जैसे ही उन्होंने यह कहा, "वह मैं हूं।" वे सब पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े! 7 उन्होने फिर उनसे पूछा, "तुम किसकी खोज मे हो?" उन्होंने फिर उत्तर दिया, "यीशु नासरी को।" 8 यीशु ने कहा, "मैंने कह दिया, मैं वही हू और इसलिये कि यदि तुम मुझे ढूंढते हो तो इन्हें जाने दो।" 9 ऐसा करके उन्होंने अपना यह वचन पूरा किया, "जिन्हें तूने मुझे दिया, उनमें से मैंने एक को भी न खोया।" 10 तब शमौन पतरस ने तलवार खीची और महायाजक के नौकर मलखुस का दाहिना कान काट दिया। 11 परन्तु यीशु ने पतरस से कहा, "तू अपनी तलवार-म्यान मे रख। क्या मैं उस प्याले को न पीऊं जो पिता ने मुझे दिया है?"

12 तब यहूदी प्यादों, सिपाहियो और उनके सूबेदारों ने यीशु को पकड कर बांध लिया। 13 पहले वे उनको हन्ना के पास ले गए जो उस वर्ष के महायाजक काइफा का ससुर था। 14 यह काइफा वही था जिसने दूसरे यहूदी अगुवो को सलाह दी थी, "सब लोगो के लिए एक पुरुष का मरना भला है।"

15 शमौन पतरस, महायाजक की पहिचान वाले एक अन्य चेले के साथ हो लिया। इस कारण उस चेले को यीशु के साथ आँगन मे प्रवेश करने की अनुमति मिल गई, 16 परन्तु पतरस द्वार के बाहर खडा रहा। तब महायाजक की पहिचान वाले चेले ने द्वारपालिन से बातें की और उसने पतरस को अन्दर आने दिया। 17 द्वारपालिन ने पतरस से पूछा, "क्या तू भी यीशु के चेलों मे से है?" उसने कहा, "नहीं, मैं नही हू!" 18 उस समय ठंड थी इसलिये प्यादे और घर के नौकर आग जला कर ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ खडा आग ताप रहा था।

19 महायाजक ने यीशु से उनके चेलो और उनकी शिक्षाओ के सम्बन्ध मे प्रश्न करना आरम्भ किया। 20 यीशु ने उत्तर दिया, "मेरी शिक्षाओं को सभी जानते हैं क्योंकि मैंने आराधनालय और मन्दिर मे बराबर उपदेश दिया है, सब यहूदी अगुवो ने मेरी सुनी है और मैंने कोई बात गुप्त मे नहीं कही। 21 तुम मुझसे यह

प्रश्न क्यों पूछ रहे हो ? उनसे पूछो जिन्होंने मेरी सुनी है। उनमें से कुछ यहां उपस्थित हैं। वे जानते हैं मैंने क्या कहा।" 22 यहां खड़े एक सिपाही ने यीशु को थप्पड़ मार कर कहा, "महायाजक को तू इस प्रकार उत्तर देता है ?" 23 यीशु ने कहा, "यदि मैंने झूठ कहा हो तो उसका प्रमाण दे। क्या सत्य बोलने के कारण तुझे किसी व्यक्ति को मारना चाहिये?" 24 तब हन्ना ने महायाजक काइफा के पास यीशु को बंधे हुए भेज दिया।

25 इसी बीच जब शमौन पतरस आग के पास खड़ा था, उससे फिर पूछा गया, "क्या तू उसके चेलों में से नहीं है ?" उसने इंकार करके कहा, "कदापि नहीं !" 26 परन्तु महायाजक के एक नौकर ने जो उस व्यक्ति का रिश्तेदार था जिसका कान पतरस ने काट दिया था पूछा, "क्या मैंने तुझे यीशु के साथ बाग में नहीं देखा था ?" 27 पतरस ने इंकार किया और उसी क्षण मुर्गे ने बांग दी।

28 काइफा के सामने यीशु का मुकदमा भोर को समाप्त हुआ, फिर उन्हें रोमी हाकिम के किले[1] में ले जाया गया। उन पर दोष लगाने वाले स्वयं अन्दर नहीं गए। वे कहते थे कि ऐसा करने से "अशुद्ध"[2] हो जाएंगे और फसह नहीं खा सकेंगे। 29 इसलिये पीलातुस ने उनसे पास बाहर आकर पूछा, "तुम इस व्यक्ति पर क्या दोष लगाते हो ?" 30 उन्होंने उत्तर दिया, "यदि वह अपराधी न होता तो हम उसे तुझे नहीं सौंपते।" 31 पीलातुस ने उनसे कहा, "तो उसे ले जाओ और अपनी ही व्यवस्था के अनुसार उसका न्याय करो।" उन्होंने कहा, "परन्तु हम उसे क्रूस पर चढ़ाना चाहते हैं, और तेरी सहमति अनिवार्य है।" 32 इससे यीशु की यह भविष्यवाणी पूरी हुई कि किस ढंग से उनकी मृत्यु होगी।

33 जब पीलातुस महल में गया तो उसने आज्ञा देकर यीशु को भी वहां बुलाया। पीलातुस ने यीशु से पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है ?" 34 यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है या औरों ने मेरे विषय में तुझसे कही है ? 35 पीलातुस ने क्रोधित होकर कहा, "क्या मैं यहूदी हूं ? तेरे ही लोग और उनके महायाजक तुझे यहां लाए। क्यों ? तूने क्या किया है ?" 36 यीशु ने उत्तर दिया, "मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता तो मेरे सेवक लड़ते और मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता; परन्तु मेरा राज्य यहां का नहीं।" 37 पीलातुस ने पूछा, "क्या तुम राजा हो ?" यीशु ने कहा, "तुम स्वयं मुझे राजा कह रहे हो, क्योंकि मैं राजा हूं; मैंने इसीलिये जन्म लिया और मैं जगत में आया कि सत्य की साक्षी दूं। वे सब जो सत्य से प्रेम रखते हैं वे सब मेरे चेले हैं। 38 पीलातुस ने पूछा, "सत्य है क्या ?"

तब पीलातुस फिर यहूदियों के पास बाहर आया और उनसे बोला, "मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता। 39 परन्तु तुम्हारी प्रथा के अनुसार मैं प्रति वर्ष फसह के समय तुम्हारे लिए एक व्यक्ति को कैद से छोड़ता हूं। इसलिए यदि तुम चाहते हो तो मैं 'यहूदियों के राजा' को छोड़ दूंगा।" 40 परन्तु उन्होंने फिर चिल्लाकर कहा, "नहीं ! इस व्यक्ति को नहीं परन्तु बरअब्बा को छोड़ दे !" बरअब्बा डाकू था।

19

1 तब पीलातुस ने यीशु की पीठ पर कोड़े लगवाए। 2 सिपाहियों ने कांटों का एक मुकुट गूंथकर उनके सिर पर रखा और उन्हें बैंजनी वस्त्र पहिनाया। 3 तब उन्होंने उपहास करने के लिए झुक कर कहा, "यहूदियों के राजा प्रणाम" और उनके मुंह पर थप्पड़ मारे। 4 पीलातुस फिर बाहर जाकर लोगों से बोला, "मैं उसे बाहर तुम्हारे पास ला रहा हूं, परन्तु यह स्पष्ट है कि मैंने उसे बिलकुल निर्दोष पाया है।" 5 तब यीशु कांटों का मुकुट और बैंजनी

[1] मूलतः "राजभवन" [2] यहूदी व्यवस्था के अनुसार अन्य जाति के घर में प्रवेश करना गम्भीर अपराध था।

वस्त्र पहने बाहर निकले। पीलातुस ने कहा, "देखो यह मनुष्य !" 6 महायाजक और यहूदी अधिकारी उन्हें देखकर चिल्लाने लगे, "क्रूस पर चढ़ाओ ! क्रूस पर चढ़ाओ !" पीलातुस ने कहा, "तुम्हीं उसे क्रूस पर चढ़ाओ !" मैंने उसमें कोई दोष नहीं पाया।" 7 उन्होंने कहा, "हमारी व्यवस्था के अनुसार उसे मृत्यु दण्ड मिलना चाहिये क्योंकि वह अपने आपको परमेश्वर का पुत्र कहता है।" 8 पीलातुस ने जब यह सुना तो पहले से अधिक डर गया। 9 उसने फिर यीशु को वापिस महल में ले जाकर पूछा, "तू कहां का है ?" परन्तु यीशु ने कोई उत्तर नहीं दिया। 10 पीलातुस ने कहा, "तुम मुझसे क्यों नहीं बोलते ? क्या तुम्हें नहीं मालूम कि मुझे तुमको छोड़ देने या क्रूस पर चढ़ाने का भी अधिकार है ?" 11 तब यीशु ने कहा, "तेरा मुझ पर कोई अधिकार नहीं होता यदि तुझे ऊपर से नहीं दिया जाता। इसलिये जिसने मुझे तेरे हाथ सौंपा उसका अपराध अधिक है।" 12 तब पीलातुस ने उन्हें छोड़ने की कोशिश की परन्तु यहूदियों ने उससे कहा, "यदि तू इस व्यक्ति को छोड़ेगा तो कैसर का मित्र नहीं रहेगा। जो कोई स्वयं को राजा कहे वह कैसर का विरोधी है।" 13 यह सुनकर पीलातुस फिर यीशु को बाहर लाया और पत्थर के चबूतरे पर, न्याय आसन पर बैठ गया। 14 फसह की तैयारी के दिन दोपहर के समय पीलातुस ने यहूदियों से कहा, "देखो यह है तुम्हारा राजा।" 15 उन्होंने चिल्ला कर कहा, "ले जाओ ! ले जाओ ! उसे क्रूस पर चढ़ाओ !" पीलातुस ने पूछा "क्या ? मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं ?" महायाजकों ने चिल्लाकर उत्तर दिया, "कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं।" 16 तब पीलातुस ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए उन्हें सौंप दिया।

17 इसके पश्चात यीशु उनके हाथ में सौंप दिए गए और वह शहर के बाहर अपना क्रूस उठाते हुए उस स्थान तक गए जो "खोपड़ी" (इब्रानी में "गुलगुता) कहलाता है। 18 वहां उन्होंने दो अन्य व्यक्तियों के साथ उन्हें क्रूस पर चढ़ाया, एक को इधर और दूसरे को उधर, बीच में यीशु को। 19 पीलातुस ने एक दोषपत्र यीशु के क्रूस पर लगवाया जिस पर लिखा था, "यीशु नासरी यहूदियों का राजा।" 20 जिस स्थान पर यीशु क्रूस पर चढ़ाए गए वह शहर के पास था क्योंकि पत्र इब्रानी, लतीनी और यूनानी भाषाओं में लिखा था इसलिये बहुत से लोगों ने इसे पढ़ा। 21 तब महायाजकों ने पीलातुस से कहा, 'यहूदियों का राजा' बदलकर यह लिख दे, "उसने कहा, 'मैं यहूदियों का राजा हूँ'।" 22 पीलातुस ने उत्तर दिया, "अब जो लिख दिया सो लिख दिया।"

23 जब सिपाहियों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया तो उनके कपड़ों के चार भाग किये, हर सिपाही के लिये एक भाग। इसी प्रकार चोगा भी लिया; यह सिला हुआ नहीं पर पूरी तरह से बुना हुआ था इसलिये उन्होंने आपस में कहा, "इसे न फाड़ें 24 हम इस पर चिट्ठी डालें और देखें यह किसे मिलता है।" इससे धर्मशास्त्र का यह वचन पूरा हुआ, "वे मेरे वस्त्र आपस में बाँटते हैं और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं।" और ऐसा ही सिपाहियों ने किया। 25 क्रूस के पास यीशु की माता, माता की बहिन, क्लोपास की पत्नी और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं। 26 जब यीशु ने अपने घनिष्ट मित्र, अर्थात मेरे निकट अपनी माता को खड़े देखा तो उन्होंने उनसे कहा, "यह आपका पुत्र है।" 27 और उन्होंने मुझसे कहा, "वह तेरी माता हैं !" और उस समय से मैं उन्हें अपने घर ले आया।

28 यीशु ने जब समझ लिया कि अब सब कुछ हो चुका तो पवित्र शास्त्र का वचन पूरा करने के लिये कहा, "मैं प्यासा हूँ।" 29 वहां सिरके से भरा पात्र रखा था, इसलिए उन्होंने एक स्पंज को उसमें डुबाया और उसे जूफे पर रखकर उनके होठों से लगाया। 30 यीशु ने उसे

चाग कर कहा, "पूरा हुआ" तब सिर झुकाकर प्राण त्याग दिया।

31 यहूदी अगुवे नहीं चाहते थे अगले दिन तक क्रूस पर चढ़ाए हुए लोग वहां टंगे रहें क्योंकि वह सब्त का दिन था और विशेष महत्व का सब्त इसलिये था क्योंकि उस दिन फसह भी था, इसलिए उन्होंने पीलातुस से विनती की कि उन व्यक्तियों की टांगें तोड़ी जाएं ताकि वे जल्दी मरें और उनका शव उतारा जा सके। 32 इसलिए सिपाहियों ने आकर उन दो पुरुषों की टांगें तोड़ी जो यीशु के साथ क्रूस पर टंगे थे। 33 परन्तु जब वे यीशु के पास आए तो देखा कि वह पहिले ही मर चुके हैं, और उनकी टांगें न तोड़ी। 34 तौ भी एक सिपाही ने भाले से उनका पंजर छेदा और तुरन्त लोहू और पानी बहा। 35 मैंने यह सब स्वयं देखा और साक्षी दी है और मेरी साक्षी सच्ची है ताकि तुम भी विश्वास करो। 36 सिपाहियों के ऐसा करने से पवित्र शास्त्र की यह भविष्यद्वाणी पूरी हुई कि उसकी कोई हड्डी न तोड़ी जाएगी।" 37 धर्मशास्त्र में यह भी लिखा है, "जिसे उन्होंने बेधा है, उस पर दृष्टि करेंगे।"

38 तब अरमतिया के यूसुफ ने जो यहूदी अगुवों के डर से यीशु का गुप्त चेला था, यीशु का शव ले जाने के लिए पीलातुस से साहसपूर्वक विनती की और पीलातुस ने उनकी मान ली। इसलिये वह आकर यीशु का शव ले गया। 39 नीकुदेमुस भी जो पहिले यीशु के पास रात्रि में आया था वह भी करीब पचास किलो मिला हुआ गन्धरस और एलवा लाया। 40 उन्होंने मिलकर यहूदियों के दफन की प्रथा के अनुसार यीशु के शव को जो सुगन्धित द्रव से तर था, कफन में लपेटा। 41 यीशु जहां क्रूस पर चढ़ाए गए थे, उस स्थान के निकट एक बगीचा था जहां एक नई कब्र थी जिसमें पहले कोई नहीं रखा गया था। 42 यहूदियों के फसह की तैयारी का दिन तथा कब्र की निकटता के कारण उन्होंने उन्हें वहीं रखा।

20

1 सप्ताह के पहिले दिन[1] भोर के समय अंधेरा रहते ही मरियम मगदलीनी कब्र पर आई और उसने देखा कि कब्र के मुंह पर से पत्थर सरका हुआ है। 2 वह दौड़कर शमौन पतरस और मेरे पास आई और उसने कहा, "उन्होंने प्रभु के शव को कब्र से निकाल लिया है, और हमें नहीं मालूम कि उसे कहां रखा है!" 3, 4, हम[2] कब्र को देखने दौड़ते हुए गए, मैं पतरस से आगे भागा और वहां पहिले पहुंचा, 5 मैंने झुककर अन्दर झांका, वहां कफन पड़ा था परन्तु मैं अन्दर नहीं घुसा। 6 तब शमौन पतरस पहुंचा और अन्दर गया। उसने भी वहां कपड़ा पड़ा देखा, 7 परन्तु वह अंगोछा जो उनके सिर पर बंधा था कफन के साथ नहीं था वरन अलग अपने स्थान पर वैसा ही लिपटा रखा था। 8 तब मैंने भी अन्दर घुस कर देखा और विश्वास किया कि वह जी उठे हैं। 9 क्योंकि तब तक हम नहीं समझे थे कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार वह फिर जी उठेंगे। 10 तब हम चेले घर लौट गए।

11 परन्तु मरियम कब्र के पास रोती हुई बाहर खड़ी थी। रोते हुए ही उसने कब्र के अन्दर झांका। 12 उसने श्वेत वस्त्र पहिने हुए दो स्वर्गदूतों को सिरहाने और पैताने बैठे हुए देखा, जहां यीशु का शव रखा गया था। 13 स्वर्गदूतों ने उससे पूछा, "हे महिला तू क्यों रो रही है?" उसने उत्तर दिया, क्योंकि वे मेरे प्रभु को उठा ले गए हैं और मुझे नहीं मालूम कि उन्हें कहां रखा है।" 14 उसने मुड़ कर देखा कि कोई उसके निकट खड़ा है। वह यीशु थे, परन्तु उसने उन्हें नहीं पहिचाना! 15 उन्होंने उससे पूछा, "हे महिला तू क्यों रो रही है? किसको ढूंढ रही है?" उसने समझा कि वह माली है और कहा, "महोदय, यदि आप ने उन्हें ले जाकर कहीं रखा है तो मुझे बता दीजिये, मैं उन्हें ले आऊंगी।" 16 यीशु ने कहा, "मरियम!" और उसने उनकी ओर फिर कर उत्तर दिया, "हे

[1] अर्थात, "रविवार" [2] मूलतः "पतरस और वह दूसरा चेला।"

गुरु !" 17 यीशु ने उसे सचेत करके कहा, "मुझे मत छू क्योंकि मैं अभी तक अपने पिता के पास ऊपर नही गया। परन्तु जाकर मेरे भाइयो को बता दे कि मैं अपने और तुम्हारे पिता, अपने और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा हूँ।" 18 मरियम मगदलीनी ने जाकर चेलों को बताया, "मैंने प्रभु को देखा है।" तब उसने उन्हें प्रभु का संदेश दिया।

19 उसी दिन जो सप्ताह का प्रथम दिन था संध्या समय यहूदियों के डर के मारे जब चेले एक कमरे मे द्वार बन्द करके इकट्ठे थे, तब अचानक यीशु उनके बीच मे आ खड़े हुए और बोले, "तुम्हें शान्ति मिले।" 20 यह कहकर उन्होंने अपने हाथ और पंजर उन्हें दिखाए। प्रभु को देखकर वे अति आनन्दित हुए। 21 उन्होंने फिर उनसे कहा, "तुम्हें शान्ति मिले, जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी "तुम्हे भेजता हूँ।" 22 तब उन्होंने उन पर फूका और कहा, "पवित्र आत्मा लो!" 23 यदि तुम किसी के पाप क्षमा करो, तो उसे क्षमा मिल जाएगी। यदि तुम उसको क्षमा न करो तो उसे क्षमा नही मिलेगी।"

24 जब यीशु आए तो थोमा जो बारह शिष्यों मे से एक था, वहाँ नही था। 25 इसलिए अन्य शिष्य उसे बार-बार बताते रहे, "हमने प्रभु को देखा है!" तो उसने कहा, "मैं तब तक विश्वास नही करूगा जब तक उनके हाथों में कीलों के छेद देखकर उनमे अपनी उंगली न डाल लूं तथा उनके पंजर में अपना हाथ न डाल लूं!"

26 आठ दिन पश्चात चेले फिर इकट्ठे थे और इस समय थोमा उनके साथ था। द्वार बन्द थे परन्तु एकाएक पहले की भाँति यीशु उनके बीच मे आ खड़े हुए और बोले, "तुम्हें शान्ति मिले!" 27 तब उन्होंने थोमा से कहा, "अपनी उंगलियाँ मेरे हाथों मे डाल और अपना हाथ मेरे पंजर मे डाल! अविश्वासी मत बना रह परन्तु विश्वास कर!" 28 यह सुनते ही थोमा बोल उठा, "हे मेरे प्रभु हे मेरे परमेश्वर!" 29 तब यीशु ने उसे बताया, "तूने विश्वास किया क्योंकि तूने मुझे देखा है। परन्तु धन्य है वे जिन्होंने बिना देखे मुझ पर विश्वास किया।"

30 यीशु के चेलो ने उन्हे और भी अधिक आश्चर्य-कर्म करते देखा जो इस पुस्तक मे नही लिखे गए। 31 परन्तु इनका वर्णन इसलिये है कि तुम विश्वास करो कि वही परमेश्वर के पुत्र मसीह हैं, और उन पर विश्वास करने के द्वारा जीवन पाओ।

21

1 इसके बाद यीशु तिबिरियास की झील के किनारे फिर से चेलों को दिखाई दिये। और ऐसा हुआ · 2 हमारे झुंड के लोग वहाँ उपस्थित थे अर्थात शमौन पतरस, थोमा, नतनएल (गलील के काना का निवासी), मेरा भाई याकूब और मैं और दो अन्य चेले। 3 शमौन पतरस ने कहा, "मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।" हम सबने कहा, "हम भी चलते हैं।" हम गए परन्तु रात भर हमने कुछ न पकड़ा। 4 भोर होते ही हमने एक मनुष्य को किनारे पर खड़ा देखा। परन्तु नही पहिचाना कि वह कौन था। 5 उन्होने पूछा, "हे बालको, क्या तुम्हारे पास कुछ मछलिया हैं?" हमने उत्तर दिया, "नही।" 6 तब उन्होंने कहा, "नाव के दाहिनी ओर अपना जाल डालो, तो बहुत मिलेंगी!" हमने ऐसा ही किया और फिर मछलियो की बहुतायत से जाल खींचते नही बना। 7 तब मैंने पतरस से कहा, "यह तो प्रभु हैं।" ऐसा सुनते ही शमौन पतरस ने अपना वस्त्र पहिन लिया और वह पानी में कूद पड़ा। 8 बाकी हम सब नाव मे ही रहे और भारी जाल को करीब 300 फुट तक खींचते हुए किनारे पर लाए। 9 जब हम किनारे पर आए तो हमने देखा कि आग सुलगी हुई है और उस पर मछली रखी है और रोटी भी है। 10 यीशु ने कहा, "अभी पकड़ी हुई मछलियों में से भी कुछ लाओ।" 11 शमौन पतरस ने

चढकर एक सौ तिरपन मछलियों से भरा हुआ जाल किनारे पर खींचा और इतनी अधिक मछलियां होने पर भी जाल न फटा। 12 यीशु ने कहा, "आओ नाश्ता करो!" हम में से किसी को उनसे यह पूछने का साहस नहीं हुआ कि क्या वह ही प्रभु है क्योंकि हमें इसका निश्चय हो चुका था। 13 तब यीशु ने सबको रोटी और मछलियां दीं। 14 यह तीसरी बार है कि यीशु मरे हुओं में से जी उठने के बाद चेलों को दिखाई दिए।

15 भोजन के बाद यीशु ने शमौन पतरस से कहा, "हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इन सबसे बढकर मुझ से प्रेम रखता है?" पतरस ने उत्तर दिया, "हां, प्रभु आप तो जानते हैं कि मैं आपका मित्र हूं।" यीशु ने उससे कहा, "तो मेरे मेमनों को चरा।" 16 यीशु ने फिर प्रश्न दोहराया, "हे शमौन यूहन्ना के पुत्र, क्या तू वास्तव में मुझको प्यार करता है?" पतरस ने कहा, "हां प्रभु आप तो जानते हैं कि मैं आपसे प्रीति रखता हूं।" यीशु ने कहा, "तो मेरी भेडों की देख-रेख कर।" 17 तीसरी बार उन्होंने फिर उससे पूछा, "हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू सचमुच मुझसे प्रीति रखता है?" पतरस उदास हुआ कि यीशु ने इस प्रकार फिर तीसरी बार पूछा। उसने कहा, "हे प्रभु आप तो सब कुछ जानते हैं यह भी कि मैं आपसे कितनी प्रीति रखता हूं।" यीशु ने कहा, "तो मेरी भेडों को चरा। 18 मैं तुझ से कहता हूं जब तू जवान था तो जो चाहे कर सकता था, जहां चाहे जा सकता था, परन्तु बुढापे में तू अपना हाथ बढाएगा और दूसरे तुझे, जहां तू जाना भी न चाहेगा, ले जाएंगे।" 19 यीशु ने उस पर यह प्रकट करने के लिए कहा कि परमेश्वर की महिमा के लिए उसकी मृत्यु किस प्रकार होगी। तब यीशु ने उससे कहा, "मेरे पीछे हो ले।" 20 पतरस ने मुडकर मुझे भी आते देखा। यीशु मुझसे प्रेम रखते थे मैंने ही भोजन के समय यीशु के वक्षस्थल की ओर झुक कर उनसे पूछा था, "हे प्रभु हम में से कौन आपको पकडवाएगा?" 21 पतरस ने यीशु से पूछा, "हे प्रभु, उसका क्या होगा?" 22 यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं चाहूं कि वह मेरे लौटने तक जीवित रहे तो तुझे क्या मतलब? तू मेरे पीछे हो ले।" 23 इसलिये भाइयों में यह चर्चा फैल गई कि मैं नहीं मरूंगा। परन्तु यीशु ने यह नहीं कहा था[1] उन्होंने केवल यही कहा, "यदि मैं चाहूं कि वह मेरे आने तक जीवित रहे, तो तुझे क्या मतलब?"

24 वह चेला मैं ही हूं, और यहां मैंने आंखों देखा हाल लिखा है हम सब जानते हैं कि इन घटनाओं का वर्णन सच है।

25 मैं सोचता हूं कि यदि यीशु के जीवन की सभी घटनाओं को लिखा जाता तो पुस्तकें जो लिखी जातीं वे सम्पूर्ण जगत में भी नहीं समातीं।

[1] अर्थात इसकी मृत्यु कैसी होगी।

प्रेरितों के कामों का वर्णन

1 1,2 परमेश्वर से प्रेम रखने वाले प्रिय मित्र : अपने पहले पत्र[1] में मैंने तुम्हें यीशु के जीवन और उनकी शिक्षाओं के विषय में बताया था और यह भी कि वह अपने चुने हुए प्रेरितों को पवित्र आत्मा की ओर से आज्ञा देने के बाद किस प्रकार स्वर्ग को लौट गए। 3 क्रूस पर मरने के बाद चालीस दिन तक वह समय समय पर प्रेरितों को वास्तव में जीवित दिखाई दिए, और उन्होंने प्रेरितों पर कई प्रकार से प्रमाणित किया कि जिन्हें वह देख रहे हैं वही यीशु हैं। और ऐसे अवसरों पर उन्होंने प्रेरितों से परमेश्वर के राज्य के विषय में बातें कीं। 4 ऐसे ही भेंट के एक अवसर पर उन्होंने प्रेरितों से कहा कि वे यरूशलेम न छोड़ें जब तक पिता की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए पवित्र आत्मा उन पर न उतरे, जिसके विषय में यीशु ने उनसे पहले ही चर्चा की थी। 5 यीशु ने उन्हें स्मरण दिलाया, "यूहन्ना ने तुम्हें पानी से[2] बपतिस्मा दिया, परन्तु थोड़े ही दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।"

6 और किसी और समय जब यीशु उनको दिखाई दिए, तो उन्होंने उनसे पूछा, "प्रभु क्या आप इस्राएल को रोम के दासत्व से अभी स्वतन्त्र करेंगे। 7 यीशु ने उत्तर दिया, "उन दिनों और समयों को पिता ने ठहराया है और वे तुम्हारे जानने के लिए नहीं हैं। 8 "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तब तुम मेरे विषय में, मेरी मृत्यु और जी उठने की साक्षी बड़े प्रभाव के साथ, यरूशलेम में, सारे यहूदिया, सामरिया में, और पृथ्वी के छोर तक लोगों को देने की सामर्थ्य पाओगे।" 9 कुछ ही समय बाद वह ऊपर आकाश में उठे और बादल में ओझल हो गए। शिष्य खड़े ताकते रह गए। 10 जब वे एक झलक और पाने के लिए आंखें खोले देख ही रहे थे, कि अचानक उनके मध्य श्वेत-वस्त्र पहने हुए दो पुरुष आ खड़े हुए, 11 और कहने लगे, "हे गलीली पुरुषो, तुम यहां खड़े आकाश की ओर क्यों टकटकी लगाए देख रहे हो? यीशु मसीह स्वर्ग को लौट गए हैं, और किसी दिन, ठीक जैसे वह गए, वैसे ही फिर आएंगे।"

12 इस घटना के समय वे जैतून के पहाड़ पर थे, अतः वे आधे मील चलकर यरूशलेम वापिस लौट गए। 13 और उन्होंने ऊपरी कमरे में प्रार्थना सभा की जहां वे ठहरे हुए थे। 14 उस सभा में जो लोग उपस्थित थे उनके नाम इस प्रकार हैं पतरस, यूहन्ना, याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, थोमा, बरतुलमई, मत्ती, याकूब, (हलफई का पुत्र) शमौन (जिसे जैलोतेस भी कहते थे), यहूदा, (याकूब का पुत्र), और यीशु के भाई। कई स्त्रियां, (जिनमें यीशु की माता भी सम्मिलित थी),

15 यह प्रार्थना सभा कई दिनों तक होती रही। उन्हीं दिनों में, एक दिन जब करीब 120 लोग उपस्थित थे, पतरस ने खड़े होकर उनसे इस प्रकार कहा : 16 "भाइयों, यह आवश्यक था कि धर्मशास्त्र का वचन यहूदा के विषय में पूरा हो, जिसने यीशु के पास भीड़ को ले जाकर उनको पकड़वा दिया, क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा, दाऊद राजा ने इसकी भविष्यद्वाणी बहुत समय पहले की थी। 17 यहूदा तो हम में से एक था, जैसे हम वैसे ही वह भी प्रेरित होने के लिए चुना गया था। 18 उसने उस धन से खेत खरीदा जो उसे विश्वासघात के बदले मिला था और वहां वह सिर के बल गिरा, उसका पेट फट गया, और अंतड़ियां बाहर निकल गईं। 19 उसकी मृत्यु का समाचार यरूशलेम के सब लोगों में तेजी से फैल गया, और उन्होंने उस स्थान का नाम, "लोहू का खेत रखा।" 20 राजा दाऊद की यह भविष्यद्वाणी भजन संहिता में है, जहां लिखा है, "उसका घर उजाड़ हो

[1] अर्थात, लूका की पुस्तक, अध्याय 21, पर की टिप्पणी पृष्ठ के नीचे पढ़िए। [2] अथवा "में"।

जो

जाए और उसमें कोई न रहे[3]।" और फिर, "उसका काम किसी और को सौंपा जाए[4]।" 21, 22 "इसलिए अब हमें किसी और को चुनना चाहिए जो यहूदा का स्थान ले और हमारे साथ मसीह के जी उठने का साक्षी बने। हम किसी ऐसे को चुनें जो आरम्भ से हमारे साथ रहा हो,—अर्थात उस समय से जब यूहन्ना के द्वारा उनका बपतिस्मा हुआ था, और उस दिन तक जब वह हमारे पास से स्वर्ग को उठा लिए गए। 23 सभा ने दो पुरुषों : यूसुफ यूसतुस (जो बर-सबा भी कहलाता था) और मत्तिय्याह को मनोनीत किया। 24, 25 तब उन सब ने प्रार्थना की कि उचित व्यक्ति का चुनाव हो। उन्होंने कहा, "हे प्रभु, तू सबके मन को जानता है हम पर प्रगट कर कि विश्वासघाती यहूदा के स्थान पर जो अपने योग्य स्थान को चला गया, प्रेरित होने के लिए तूने इन पुरुषों में से किसको चुना है।" 26 तब उन्होंने चिट्ठी डाली,[5] और इस प्रकार मे मत्तिय्याह चुना गया और दूसरे ग्यारहों के साथ प्रेरित बना।

2 1 यीशु की मृत्यु और फिर जी उठने के बाद सात सप्ताह बीत गए, और अब पिन्तेकुस्त का दिन आ पहुंचा[1]। जब विश्वासी उस दिन एक साथ इकट्ठे थे, 2 तब अचानक उनके ऊपर आकाश में बड़ी ज़ोर की आंधी और गर्जन का सा शब्द हुआ और उससे वह घर जहां वे इकट्ठे थे, भर गया। 3 तब, उन्हें आग की लपटों के समान जलती हुई जीभें दिखाई दी जो उनके सिरों पर आकर ठहर गईं। 4 और जितने वहां उपस्थित थे सब पवित्र आत्मा से भर गए और उन्होंने ऐसी भाषाओं में ... आरम्भ किया जिन्हें वे जानते तक न ... क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें यह योग्यता ...

5 उस दिन यरूशलेम में अनेक यहूदी भक्त थे, जो उत्सव मनाने के लिए कई देशों से आए थे। 6 और जब उन्होंने उस घर के ऊपर आकाश के गर्जन को सुना, तो भीड़ यह जानने के लिए दौड़ती चली आई कि क्या हुआ है, और अपनी अपनी भाषा में शिष्यों को बातें करते देख कर चकित रह गई। 7 उन्होंने आश्चर्य से कहा, "यह कैसे हो सकता है? क्योंकि ये सब मनुष्य गलील के हैं। 8 और तौभी हम उनको अपनी अपनी मातृभाषा में बोलते हुए सुन रहे हैं। 9 हम तो यहाँ—पारथी, मेदी, एलामी, मिसुपुतामिया, यहूदिया, कप्पदूकिया, पुन्तुस, आसिया[1], 10 फ्रूगिया, पम्फूलिया, मिस्र, लीबिया के कुरेनी भापी क्षेत्रों के लोग, रोम से आए हुए पर्यटक—यहूदी और नवयहूदी; 11 क्रेती और अरबी हैं, और हम सब इन लोगों को अपनी अपनी भाषाओं में परमेश्वर के महान आश्चर्यकर्मों के विषय में बतलाते हुए सुनते हैं!" 12 वे वहां आश्चर्य से भरे अचंभित खड़े रह गए। उन्होंने आपस में पूछा: "इसका अर्थ क्या हो सकता है?" 13 परन्तु भीड़ में दूसरे लोग ठट्ठा कर रहे थे। उन्होंने कहा, "कुछ नहीं, वे सब शराब के नशे में चूर हैं।"

14 तब पतरस, ग्यारह प्रेरितों के साथ सामने खड़ा हुआ और उसने ऊँची आवाज़ में भीड़ से कहा, "हे यरूशलेम के रहने वालो और दूसरे स्थानों से यहां आए हुए लोगो तुम सब मेरी बात सुनो। 15 तुम में से कई कह रहे हैं कि ये मनुष्य नशे में चूर हैं। यह सच नहीं है। अभी उसका समय कहां है? सुबह नौ बजे शराब के नशे में लो... ... 16 आज ... जो तुम ... भविष्यद्वाणी ... पहले ... के द्वारा 17 ...

में, मैं अपना पवित्र आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा, और तुम्हारे पुत्र और पुत्रियां भविष्यद्वाणी करेंगे। तुम्हारे युवा दर्शन देखेंगे और तुम्हारे वृद्ध मनुष्य स्वप्न देखेंगे। 18 हां, पवित्र आत्मा मेरे सब सेवकों पर, चाहे स्त्री हों या पुरुष, आएगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे। 19 और मैं आकाश में और पृथ्वी पर अद्भुत चिन्ह प्रकट करूंगा—लोहू और आग और धुएं के बादल, 20 प्रभु के उस भयानक दिन के आने से पहले सूर्य अंधेरा हो जाएगा और चन्द्रमा लोहू सा लाल हो जाएगा। 21 परन्तु जो कोई प्रभु से अनुग्रह के लिए विनती करे उस पर दया की जाएगी और उसका उद्धार होगा। 22 हे इस्राएल के लोगो, सुनो। परमेश्वर ने तुम सबके सामने नासरत के यीशु को, उनके द्वारा सामर्थ के आश्चर्यकर्म करके उन्हें सच्चा प्रमाणित किया, जैसा तुम अच्छी तरह जानते हो। 23 परन्तु परमेश्वर ने पूर्वनिश्चित उपाय के अनुसार, उनको क्रूस पर चढ़ाने और मार डालने के लिए तुम्हें रोमी[4] सरकार का प्रयोग करने दिया 24 तब परमेश्वर ने उनको मृत्यु की पीड़ाओं से छुड़ाकर फिर जीवित किया, क्योंकि मृत्यु उनको अपने वश में नहीं रख सकी। 25 राजा दाऊद ने यीशु के विषय में लिखा: "मैं जानता हूं, प्रभु सदा मेरे साथ हैं। वह मेरी सहायता कर रहा है। परमेश्वर की सामर्थ मुझे सम्भाले है। 26 तभी मेरा मन आनन्द से भरा है और मेरी जीभ उसकी प्रशंसा करती है। क्योंकि मैं जानता हूं कि मृत्यु में भी मेरा कुशल ही होगा। 27 तू मेरे प्राण को अधोलोक में नहीं छोड़ेगा, न ही अपने पवित्र पुत्र के शरीर को सड़ने देगा। 28 तू मेरा जीवन मुझे फिर लौटा देगा, और अपनी उपस्थिति से मुझे अद्भुत आनन्द से भरेगा।" 29 प्रिय भाइयो, जरा सोचो तो। जिन शब्दों को मैंने अभी कहा[5] वे दाऊद ने अपने लिए नहीं कहे, क्योंकि वह मर गया और गाड़ा गया, और उसकी कब्र आज भी हमारे मध्य है। 30 परन्तु वह भविष्यद्वक्ता था, और जानता था कि दाऊद के ही निज वंश में से एक मसीह होगा और दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा। 31 दाऊद दूर भविष्य में मसीह के जी उठने की भविष्यद्वाणी करके कह रहा था कि मसीह का प्राण अधोलोक में नहीं छोड़ा जाएगा और उसकी देह सड़ने नहीं पाएगी। 32 वह यीशु के विषय में कह रहा था, और हम सब गवाह हैं कि यीशु मुर्दों में से जी उठे। 33 और अब वह स्वर्ग में सर्वश्रेष्ठ आदर के सिंहासन पर, परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठे हैं। और जैसे प्रतिज्ञा दी गई थी, वैसे ही पिता ने उनको अधिकार दिया कि वह पवित्र आत्मा को भेजें—जिसका परिणाम आज तुम देख और सुन रहे हो। 34 "(नहीं दाऊद के जिन शब्दों को अभी मैंने लेकर कहा, वे उसने अपने लिए नहीं कहे), क्योंकि वह कभी आकाश में ऊपर नहीं उठाया गया। उसने आगे यह भी कहा, "परमेश्वर ने मेरे प्रभु, मसीह से बातें कीं और उनसे कहा, मेरे पास दाहिनी ओर आदर के स्थान पर बैठो, 35 जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को पूरी रीति से तुम्हारे अधीन न कर दूं।" 36 "इसलिए मैं इस्राएल में हर एक से स्पष्ट कहता हूं कि परमेश्वर ने इन्हीं यीशु को जिनको तुमने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु अर्थात मसीह ठहराया!"

37 पतरस के इन शब्दों से उनके मन पिघल गए, और उन्होंने उनसे और दूसरे प्रेरितों से कहा, "भाइयो, हमें क्या करना चाहिए।" 38 और पतरस ने उत्तर दिया, "तुममें से हर एक को पाप से फिरकर, परमेश्वर की ओर लौटना चाहिए, और अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लेना चाहिए, तब तुम भी पवित्र आत्मा का दान पाओगे। 39 क्योंकि मसीह ने इसकी प्रतिज्ञा तुममें से हर एक को जो प्रभु हमारे परमेश्वर के द्वारा बुलाया गया है, और

[5] पद 31 का यही आशय है।

तुम्हारी सन्तानों को और दूर देशों के लोगों को भी दी है।" 40 तब पतरस ने लम्बा उपदेश देकर यीशु के विषय में बताया और सुननेवालों को उभारा कि वे अपने आप को अपनी जाति की बुराइयों से बचाए रखें। 41 और जितनों ने पतरस का वचन ग्रहण किया उन्होंने—लगभग 3000 लोगों ने बपतिस्मा लिया। 42 प्रेरितों के द्वारा दी जानेवाली शिक्षा-सभाओं में, प्रभु भोज[5] और प्रार्थना सभाओं में वे दूसरे विश्वासियों के साथ सदा सहभागिता रखने लगे।

43 उन सब में आदर और भय समा गया, और प्रेरितों ने अनेक आश्चर्यकर्म किए। 44 और सब विश्वासी लगातार इकट्ठे होते थे और सब वस्तुओं में साझा रखते थे 45 वे अपनी सम्पत्ति बेचकर उनको देते थे जिनको आवश्यकता होती थी। 46 वे प्रतिदिन मन्दिर में नियमित रूप से एक साथ आराधना करते थे, और प्रभु भोज के लिए घरों में छोटे झुंडों में मिलते थे, और अपने भोजन में बड़े आनन्द और धन्यवाद के साथ दूसरों को सहभागी करते थे। 47 और परमेश्वर की प्रशंसा करते थे। नगर के सब लोग उनसे प्रसन्न थे, और प्रतिदिन परमेश्वर उद्धार पाने वालों को उनमें मिला देता था।

3 1 एक दिन दोपहर को पतरस और यूहन्ना मन्दिर में गए कि प्रतिदिन तीन बजे की प्रार्थना सभा में भाग लें। 2 जब वे मन्दिर के निकट पहुंचे, तो कुछ लोग जन्म के एक लंगड़े मनुष्य को ला रहे थे जिसको वे प्रतिदिन मन्दिर के द्वार पर, जो सुन्दर द्वार कहलाता था, उनकी ओर देखा। 6 परन्तु पतरस ने कहा, "तुम्हें देने के लिए हमारे पास पैसे तो नहीं हैं। परन्तु मैं तुम्हें कुछ और ही दूंगा। मैं तुम्हें नासरत के मसीह यीशु के नाम से आज्ञा देता हूं 'चलने लगो'।" 7, 8 तब पतरस ने लंगड़े व्यक्ति का हाथ पकड़कर उसे पैर के बल खड़ा किया। और जब उसने ऐसा किया, तब उस व्यक्ति के पैर और टखने की हड्डियां ठीक हो गईं और उनमें बल आ गया जिससे वह कूदकर उठा, एक क्षण वहां खड़ा रहा और फिर चलना शुरू कर दिया। तब वह चलते, कूदते, और परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए, उनके साथ मन्दिर में गया। 9 जब अन्दर लोगों ने उसे चलते और परमेश्वर की स्तुति करते सुना, 10 और जाना कि यह वही लंगड़ा भिखारी है जिसे उन्होंने अनेक बार 'सुन्दर द्वार' पर देखा था, तो उन्होंने दांतों तले उंगली दबा ली।

11 वे सब दौड़ते हुए सुलैमान के बड़े कमरे में आए जहां वह पतरस और यूहन्ना को कसकर पकड़े हुए था। उस अद्भुत घटना के कारण सब वहां भौंचक्के खड़े रह गए। 12 पतरस ने अपना अवसर देखा और भीड़ को सन्देश दिया। उसने कहा, "इस्राएल के लोगो, इसमें इतने आश्चर्य की क्या बात है? और फिर हमारी ओर ऐसे क्यों ताक रहे हो जैसे हमने अपनी ही शक्ति और भक्ति से इस व्यक्ति को चलता फिरता कर दिया हो? 13 क्योंकि यह तो इब्राहीम, इसहाक, याकूब और हमारे सब पूर्वजों के परमेश्वर का काम है [illegible] ऐसा करने के द्वारा अपने सेवक [illegible] की है। मैं के विषय में [illegible] इन्कार

उनको फिर जिला दिया। और मैं और यूहन्ना इस तथ्य के गवाह है, क्योंकि तुम्हारे मार डालने के बाद हमने उनको जीवित देखा। 16 यीशु के नाम ने इस व्यक्ति को स्वस्थ किया है—और तुम जानते हो कि वह पहले कितना लगडा था। यीशु के नाम मे विश्वास ने अर्थात परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए विश्वास ने—यह पूरी रीति से चंगाई का कार्य किया है। 17 प्रिय भाइयो मैं जानता हूँ कि तुमने यीशु के साथ जैसा किया वह अज्ञानता से किया, और तुम्हारे नेताओं के सम्बन्ध में भी यही बात कही जा सकती है। 18 परन्तु परमेश्वर तो भविष्यद्वाणियों को पूरी कर रहा था कि मसीह को ये सब बातें सहनी हैं। 19 अब तुम परमेश्वर के प्रति अपने मन और व्यवहार बदल दो और उसकी ओर फिरो कि वह तुम्हारे पापो को शुद्ध करे, और प्रभु की ओर से तुम्हारे लिए अद्भुत शक्ति और प्रसन्नता के दिन भेजे 20 और तुम्हारे मसीह, यीशु को फिर से तुम्हारे पास वापिस भेजे। 21, 22 क्योंकि उनको स्वर्ग मे उस समय तक रहना है जब तक पाप से सब बातों का अन्तिम छुटकारा न हो ले, जैसा प्राचीन समयो मे भविष्यद्वाणी की गई है। उदाहरण के लिए मूसा ने बहुत पहले कहा था, प्रभु परमेश्वर तुम्हारे मध्य एक भविष्यद्वक्ता भेजेगा, जो मेरे समान होगा।[1] वह जो कुछ कहे सब ध्यान से सुनना। 23 जो कोई उनकी न सुनेगा, उसका पूरी तरह विनाश होगा।[2] 24 "उस समय से शमूएल और प्रत्येक भविष्यद्वक्ता ने इन बातों के विषय मे कहा है जो आज हो रही हैं। 25 तुम उन भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान हो, और तुम भी यहूदी जाति के द्वारा संसार को आशिष देने की, तुम्हारे पूर्वजों को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा मे शामिल हो—अर्थात उस प्रतिज्ञा में जो परमेश्वर ने इब्राहीम को दी। 26 और जैसे ही जल्दी परमेश्वर ने अपने सेवक को फिर जिलाया, उसने उनको सबसे पहले तुम इस्राएलियों के पास भेजा, कि तुम्हें तुम्हारे पापों के पश्चाताप से दूर [illegible] दे।"

4 1 वे लोगों से बातें कर ही रहे थे कि कई याजक, मन्दिर के सिपाहियों के कप्तान, और कई सदूकी[1] उनके पास आए। 2 वे बडे क्रोधित थे क्योंकि पतरस और यूहन्ना दावा कर रहे थे कि यीशु मरे हुओं मे से जी उठे थे। 3 उन्होंने उनको पकड लिया और इसलिए कि शाम हो चुकी थी, उनको रात भर के लिए बन्दीगृह मे रखा। 4 परन्तु उनके सन्देश को सुनने वाले बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया, जिससे विश्वासियों की संख्या अब बढकर 5000 पुरुषों के लगभग हो गई।

5 अगले दिन ऐसा हुआ कि यरूशलेम मे सब यहूदी अगुवों की सभा हुई— 6 हन्ना महायाजक वहां था, और कैफा यूहन्ना, सिकन्दर, और महायाजक के रिश्तेदार भी वहाँ थे। 7 तब दोनों शिष्य उन के सामने लाए गए। सभा ने उनसे प्रश्न किया, "किस शक्ति, या किसके अधिकार से तुमने यह किया है?" 8 तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा, "हमारे देश के माननीय नेताओ और धर्मवृद्धों, 9 यदि आपका अर्थ उस लगडे के साथ किए गए भले कार्य से है, कि वह किस प्रकार स्वस्थ हुआ। 10 तो मैं आपको और इस्राएल के समस्त लोगों को यह स्पष्ट बता दूं कि वह नासरत के यीशु मसीह, के नाम मे और उनकी शक्ति से हुआ, जिन्हें तुम लोगों ने क्रूस पर चढ़ाया—परन्तु परमेश्वर ने उनको फिर जिला दिया। उन्ही के अधिकार से यह मनुष्य यहाँ चंगा खडा है। 11 क्योंकि यीशु मसीह, ही वह पत्थर है (जिसके विषय में धर्मशास्त्र मे लिखा गया है) जिसे मिस्त्रियों ने बेकार समझ-

[1] मूलत "मुझ सा।" [2] मूलत "लोगों मे से नाश किया जाएगा।"

[1] सदूकी, यहूदियों के उस धार्मिक सम्प्रदाय के सदस्य थे जो मृतकों के पुन जी उठने का इन्कार करते थे।

कर फेंक दिया, जो कोने के सिरे का पत्थर बन गया । 12 किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा उद्धार नहीं है। स्वर्ग के नीचे मनुष्यों के लिए और कोई दूसरा नाम नहीं है जिसके द्वारा वे उद्धार पा सकें।"

13 जब सभा ने पतरस और यूहन्ना का साहस देखा, और जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो आश्चर्य में पड़ गए और अनुभव किया कि यीशु के साथ रहने का उन पर क्या प्रभाव पड़ा है। 14 और उस सभा के लिए उस चंगाई पर अविश्वास करना कठिन हो गया क्योंकि वह मनुष्य, जिसे उन्होंने चंगा किया था उन्हीं के पास खड़ा था। 15 इसलिए उन्हें सभा के कमरे से बाहर निकाल दिया और आपस में विचार-विमर्श किया। 16 उन्होंने आपस में पूछा, "हम इन मनुष्यों के साथ क्या करें? हम इन्कार नहीं कर सकते कि उन्होंने एक महान आश्चर्यकर्म किया है, और यरूशलेम में हर एक को उसके विषय में मालूम है। 17 परन्तु उनके अपने मत के प्रचार करने में शायद हम उनको रोक सकते हैं। हम उनसे कहेंगे कि यदि अब उन्होंने फिर ऐसा किया तो हम वास्तव में उनके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करेंगे।" 18 तब उन्होंने फिर उनको अन्दर बुलाया और उनसे कहा कि आगे फिर कभी यीशु के विषय में न बोलें। 19 परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उत्तर दिया, "तुम ही निर्णय करो कि क्या परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी आज्ञा मानने के बदले तुम्हारी आज्ञा मानें। 20 हमने यीशु को जिन अद्भुत बातों को करते देखा और सुना है, उनको बताना हम बन्द नहीं कर सकते।" 21 तब सभा ने उनको और अधिक डराया-धमकाया, और अन्त में उन्हें जाने दिया क्योंकि लोगों की भीड़ होने के कारण उन्हें दण्ड देने का कोई दाव नहीं मिला। हर व्यक्ति इस आश्चर्यकर्म के लिए परमेश्वर की बड़ाई कर रहा था—22 उस व्यक्ति की चंगाई के लिए जो चालीस वर्षों से लंगड़ा था।

23 पतरस और यूहन्ना जितनी जल्दी वहाँ से छूटे, उन्होंने दूसरे शिष्यों से भेंट की और उन्हें बताया कि सभा ने क्या कहा था। 24 तब सब विश्वासी इस प्रार्थना में एकत्रित हुए: हे प्रभु स्वर्ग पृथ्वी और समुद्र और उनमें की समस्त वस्तुओं के सृष्टिकर्ता—25, 26 तू ने बहुत समय पहले, अपने दास, और हमारे पूर्वज राजा दाऊद द्वारा, पवित्र आत्मा की ओर से यह कहलाया, "अन्यजातियाँ क्यों प्रभु पर बड़ा क्रोध करती हैं और मूर्ख देश क्यों सर्वशक्तिमान परमेश्वर के विरुद्ध षड्यन्त्र रचते हैं? संसार के राजा उनके विरुद्ध, अर्थात परमेश्वर के अभिषिक्त पुत्र के विरुद्ध युद्ध करने को एक हो जाते हैं।" 27 "ठीक ऐसा ही यहाँ आज इस नगर में हो रहा है।" क्योंकि राजा हेरोदेस और राज्यपाल पुन्तियुस पीलातुस, और समस्त रोमी—साथ ही इस्राएल के लोग—तेरे अभिषिक्त पुत्र, पवित्र सेवक यीशु के विरुद्ध एक हो गए हैं। 28 कि जो कुछ पहिले से तेरे ज्ञान और सामर्थ से ठहरा था वही करें। 29 और अब, हे प्रभु, उनकी धमकियों को सुन, और अपने सेवकों को उनके प्रचार में बड़े साहस का वरदान दे, 30 और अपनी चंगाई की सामर्थ भेज, और ऐसा कर कि तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम में अद्भुत घटनाएँ और चमत्कार किए जाएं।" 31 इस प्रार्थना के बाद, जिस भवन में वे थे वह हिल गया और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए और उन्होंने साहस के साथ परमेश्वर का सन्देश सुनाया।

32 समस्त विश्वासी एक चित्त और मन के थे, और कोई नहीं सोचता था कि उसके पास जो कुछ है वह उसी का है, हर एक व्यक्ति दूसरों को सहभागी बना रहा था। 33 और प्रभु यीशु के फिर से जी उठने के विषय में प्रेरितगण सामर्थ के साथ सन्देश सुनाते थे, और सब विश्वासियों के मध्य प्रेम की संगति* थी,

* शब्दश "उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।"

34, 35 और कोई निर्धन नहीं था क्योंकि जितनों के पास भूमि और घर थे, वे उन्हें बेचकर प्रेरितों को दे देते थे कि जिनको आवश्यकता हो उनको दे दिया जाए।

36 उदाहरण के लिए, उनमें यूसुफ था (जिसका उपनाम प्रेरितों ने "बर-नबा प्रचारक" रखा था। वह कुप्रुस द्वीप से, लेवी के गोत्र का था।) 37 वह उनमें से एक था जिसने अपनी जमीन बेच दी और धन लाकर प्रेरितों को दे दिया कि जिन्हें आवश्यकता है उन्हें दे दिया जाए।

5 1 परन्तु वहां हनन्याह नाम के एक मनुष्य ने (अपनी पत्नी सफीरा के साथ) कुछ सम्पत्ति बेची, 2 और धन का कुछ ही भाग लाकर घोषित किया कि पूरा दाम उतना ही था। (इस धोखे में उसकी पत्नी भी सहमत थी।) 3 परन्तु पतरस ने कहा, "हनन्याह, शैतान ने तुम्हारा मन भर दिया है। यह दावा करके कि इतना ही पूरा दाम है, तुमने पवित्र आत्मा से झूठ बोला। 4 सम्पत्ति तो तुम्हारी ही थी, जैसा चाहते बेचते, चाहे न बेचते। और बेच देने के बाद कितना दें, इसका निर्णय भी तुम्हारे हाथ में था। इस प्रकार का कार्य तुमसे कैसे हो सका? तुमने हम से नहीं परमेश्वर से झूठ बोला।" 5 इन शब्दों को सुनते ही हनन्याह भूमि पर गिर पड़ा और मर गया। सब बहुत डर गए, 6 और जवान पुरुषों ने उसको एक चादर से ढाका और बाहर ले जाकर दफना दिया।

7 करीब तीन घंटे बाद उसकी पत्नी यह न जानते हुए कि क्या हुआ है, अन्दर आई। 8 पतरस ने उससे पूछा, "क्या तुम लोगों ने इतने दाम पर अपनी भूमि बेची है? उसने उत्तर दिया, "हाँ, इतने में ही।" 9 और पतरस ने कहा, "तुमने और तुम्हारे पति ने इस प्रकार के कार्य करने का विचार तक कैसे किया—तुम दोनों ने मिलकर परमेश्वर के आत्मा की परीक्षा करने का षड्यन्त्र रचा ताकि जानो कि क्या हो रहा है?[1] उस दरवाजे के बाहर वे जवान पुरुष हैं जिन्होंने तेरे पति को दफनाया है, और वे तुम्हें भी बाहर ले जाएंगे।" 10 उसी क्षण वह फर्श पर गिर पड़ी और मर गई: और जवान पुरुष अन्दर आए, और यह देखकर कि वह मर चुकी है, उसे बाहर ले जाकर उसके पति के पास उसे दफना दिया। 11 पूरी कलीसिया पर, और इस घटना के विषय में सब सुननेवालों पर बड़ा भय छा गया।

12 प्रेरित नित्य मन्दिर के उस भाग में इकट्ठे होते थे जो सुलैमान का बड़ा कमरा कहलाता था, और वे लोगों के बीच बहुत सी अद्‌भुत घटनाएं और चमत्कार करते थे। 13 दूसरों को उनमें मिलने का साहस नहीं होता था, परन्तु सब के मन में उनके लिए आदर था। 14 और अधिक से अधिक विश्वासी स्त्री-पुरुष दोनों, प्रभु में मिलते जाते थे। 15 बीमार लोगों को सड़क में बिस्तरों और पलगों पर लाया जाता था कि कम से कम जाते हुए पतरस की छाया भी उनमें से कुछ पर पड़ जाए। 16 और भीड़ यरूशलेम के आसपास के स्थानों से आकर बीमारों और दुष्टात्माओं से सताए लोगों को लाती थी, और उन में से हर एक चंगा हो जाता था।

17 महायाजक और उसके सम्बन्धी और सदूकियों के मित्र बड़ी जलन से भर गए। 18 और उन्होंने प्रेरितों को पकड़कर बन्दीगृह में बन्द कर दिया। 19 परन्तु प्रभु के एक स्वर्गदूत ने रात को आकर बन्दीगृह का द्वार खोला और उन्हें बाहर कर दिया। तब उसने उनसे कहा, 20 "मन्दिर में जाओ और इस जीवन के विषय में प्रचार करो।" 21 सवेरा होते ही वे मन्दिर में पहुंचे, और उन्होंने तुरन्त प्रचार करना शुरू कर दिया। उसी दिन सुबह कुछ समय बाद, महायाजक और उसके सभासद मन्दिर में आए और यहूदियों की महासभा पूरी परिषद बुलाकर, उन्होंने प्रेरितों को

के लिए आने को भेजा। 22 परन्तु जब सिपाही बन्दीगृह मे पहुचे, तो वे मनुष्य वहा नही थे, तब उन्होंने लौटकर बताया, 23 बन्दीगृह के दरवाज़ों मे ताले लगे थे, और पहरेदार खड़े थे, परन्तु जब हमने दरवाज़ों को खोला, तब वहा कोई नही था। 24 जब सिपाहियों के कप्तान[2] और महायाजकों ने यह सुना, तो वे बडी चिन्ता मे पड गए, और यह सोचने लगे कि अब क्या होगा। 25 तब कोई यह समाचार लेकर आया कि जिन व्यक्तियो को उन्होने बन्दी किया था, वे मन्दिर मे प्रचार कर रहे थे। 26, 27 सिपाहियो के कप्तान ने अपने अधिकारियो के साथ जाकर उनको पकड लिया (परन्तु बिना बल प्रयोग किए, क्योंकि उनको डर था कि यदि उन्होंने शिष्यों के साथ कठोर व्यवहार किया तो भीड के लोग उनको मार डालेंगे।) और उनको महासभा के सामने ले आए। 28 महायाजक ने पूछा, "क्या हमने तुम्हें नही बताया था कि इस यीशु के विषय मे फिर कभी प्रचार न करना? और उल्टे तुमने अपने प्रचार से सारे यरूशलेम को भर दिया है और इस मनुष्य की मृत्यु का दोष हम पर लगाना चाहते हो।" 29 परन्तु पतरस और प्रेरितो ने उत्तर दिया, "हमे मनुष्यो की अपेक्षा परमेश्वर की आज्ञा पालन करना चाहिए। 30 जब तुमने यीशु को क्रूस पर लटका कर मार डाला, हमारे बापदादो के परमेश्वर ने उनको फिर जीवित किया। 31 तब, महान शक्ति से परमेश्वर ने उनको ऊचा पद देकर राजकुमार और उद्धारकर्ता बनाया ताकि इस्राएल के लोगों को पश्चाताप करने का अवसर मिले, और उनके पापो की क्षमा हो सके। 32 और हम इन बातो के गवाह है, और वैसे ही पवित्र आत्मा भी है, जो परमेश्वर के द्वारा उनकी आज्ञा मानने वाले सब लोगों को दिया जाता है।

33 यह सुन कर महासभा के लोगो ने क्रोधित होकर उनको मार डालने का निर्णय किया। 34 परन्तु उनके एक सदस्य, गमलिएल नामक फरीसी ने (जो धार्मिक नियमो में प्रवीण था और जनता का बहुत प्रिय था), खडे होकर विनती की, कि उनके बोलते समय प्रेरितों को सभा के कमरे से बाहर भेज दिया जाए। 35 तब उन्होंने अपने साथियों से इस प्रकार कहा, "इस्राएल के लोगो, सावधान रहो कि इन मनुष्यों के साथ क्या करने जा रहे हो। 36 कुछ समय पहले वह व्यक्ति थियूदास था, जिसने बडा बनने का ढोंग किया। लगभग 400 लोग उसके साथ हो लिए, परन्तु वह मार डाला गया, और उसके पीछे जाने वाले बिना किसी हानि के तितर-बितर हो गए। 37 उसके बाद, कर उगाही के समय, गलील का यहूदा आया। उसने कुछ लोगों को अपना शिष्य बनाया, परन्तु वह भी मर गया, और उसके शिष्य तितर-बितर हो गए। 38 "इसलिए मेरी सलाह है, इन लोगो को अकेले छोड दो। यदि यह कार्य मनुष्यो की ओर से है तो वह शीघ्र ही मिट जाएगा। 39 परन्तु यदि वह परमेश्वर की ओर से है, तो तुम उन्हें नही रोक सकोगे, कही ऐसा न हो कि तुम अपने आपको परमेश्वर से ही लडते हुए पाओ।"

40 महासभा ने उसकी सलाह मान ली, प्रेरितों को पिटवाया, और तब उनसे कहा कि फिर कभी यीशु के नाम से मत बोलना, और अन्त मे उन्हे जाने दिया। 41 वे महासभा के कमरे से आनन्द मनाते हुए निकले कि परमेश्वर ने उन्हे अपने नाम के कारण अपमान सहने के योग्य समझा है। 42 और हर दिन, मन्दिरो में और अपने घरों में पवित्र शास्त्र सिखाते और लगातार शिक्षा देते और प्रचार करते रहे कि यीशु ही मसीह है।

6 1 परन्तु विश्वासियो की संख्या मे तेज़ी मे बढती होने के साथ, असन्तोष का स्वर भी सुनाई पडा। जो लोग केवल यूनानी भाषा बोलते थे वे कुडकुडाने लगे कि उनकी विधवाओ के साथ भेदभाव हो रहा है, क्योंकि उन्हें प्रतिदिन बंटवारे मे उतना भोजन नही

दिया जाता, जितना उन विधवाओं को जो इब्रानी भाषा बोलती हैं। 2 तब उन बारहों ने सब विश्वासियों की बैठक बुलाई। उन्होंने कहा, "हमें अपना समय प्रचार करने में बिताना चाहिए, भोजन का प्रबन्ध करने में नहीं। 3 प्रिय भाइयो, अब अपने ही बीच में देखो, और सात ऐसे पुरुषों को चुनो, जो बुद्धिमान और पवित्रआत्मा से परिपूर्ण हों, जिनका लोगों में अच्छा नाम हो, और हम उनको इस काम का प्रबन्ध सौंप देंगे। 4 तब हम अपना समय प्रार्थना करने, प्रचार करने, और शिक्षा देने में बिता सकते हैं।" 5 यह सारी सभा को तर्कसंगत लगा और उन्होंने लिखित लोगों को चुन लिया: स्तिफनुस जो असाधारण रूप से विश्वास और पवित्र आत्मा से भरपूर था, फिलिप्पुस, प्रखुरुस, और नीकानोर, तीमोन, परमिनास, अन्ताकिया का नीकुलाउस (अन्यजातियों में से यहूदी विश्वास को ग्रहण करके, जो मसीही हो गया था)। 6 ये सातों व्यक्ति प्रेरितों के सामने लाए गए, जिन्होंने उनके लिए प्रार्थना की और अपने हाथ उन पर रखकर उन्हें आशिष दी।

7 परमेश्वर के संदेश का प्रचार अधिक से अधिक लोगों में होता गया, और विश्वासियों की संख्या यरूशलेम में बहुत बढ़ती गई, और यहूदी याजकों में से भी अनेक लोगों ने इस विश्वास को ग्रहण किया।

8 स्तिफनुस ने, जो विश्वास और पवित्र *आत्मा की सामर्थ्य*[1] *से अत्यन्त भरपूर था, लोगों* के बीच चमत्कार से भरे अद्भुत काम किए। 9 परन्तु एक दिन स्वतन्त्र नामक यहूदी सम्प्रदाय से कुछ लोगों ने आकर उसमें वाद-विवाद करना आरम्भ किया, और कुरेन, मिस्र के सिकन्दरिया, और किलकिया के तुर्की प्रान्तों, और एशिया के यहूदियों ने शीघ्र उनका साथ दिया। 10 परन्तु उनमें से कोई भी स्तिफनुस के ज्ञान और आत्मा के सामने नहीं ठहर सका। 11 तब वे कुछ मनुष्यों को लाए कि यह दावा करते हुए उसके विषय में झूठ बोलें, कि उन्होंने स्तिफनुस के मुंह से मूसा, और परमेश्वर तक को शाप देते सुना है। 12 इस अभियोग को सुनकर भीड़ स्तिफनुस पर अत्यन्त क्रोधित हो उठी, और यहूदी अगुओं[2] ने उसको पकड़ लिया और महासभा के सामने ले आए। 13 झूठे गवाहों ने फिर साक्षी दी कि स्तिफनुस सदा मन्दिर के विरुद्ध और मूसा की व्यवस्था के विरुद्ध बोलता रहता है। 14 उन्होंने कहा, "हमने उसे कहते सुना है कि यह नासरत का यीशु मन्दिर को नष्ट कर देगा और मूसा की सब व्यवस्था को फेंक देगा।" 15 इतने में महासभा के कमरे में बैठे हुए सब लोगों ने स्तिफनुस के मुख को स्वर्गदूत का सा तेजस्वी होते देखा।

7

1 तब महायाजक ने उससे पूछा, "क्या ये अभियोग सत्य हैं?" 2 स्तिफनुस का यह विस्तृत उत्तर था: "प्रतापी परमेश्वर ने हमारे पूर्वज इब्राहीम को उसके सीरिया[1] जाने से पहले, ईराक[2] में दर्शन दिया, 3 और उससे कहा कि वह अपनी भूमि छोड़ दे, अपने सम्बन्धियों से विदाई ले और उस देश में जाने के लिए चलना आरम्भ कर दे जहां परमेश्वर उसकी अगुवाई करेगा। 4 तथा उसने कसदियों का देश छोड़ दिया, और सीरिया के हारान में, अपने पिता की मृत्यु तक बसा रहा। तब परमेश्वर उसे इस्राएल के देश में ले आया, *5 परन्तु उसने उसे कुछ सम्पत्ति न दी, ज़मीन* का एक छोटा भाग तक नहीं दिया। "तो भी, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि अन्त में सारा देश उसका और उसके वंश का हो जाएगा—यद्यपि अब तक उसके कोई सन्तान न थी! 6 परन्तु परमेश्वर ने उसे यह भी बताया कि उसकी सन्तान के लोग देश छोड़ देंगे और विदेशों में रहेंगे और वहां 400 वर्षों तक दास बने रहेंगे। 7 परमेश्वर ने उनसे कहा, 'परन्तु मैं

[1] मूलतः "अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण।" पद 5 पढ़िए। [2] मूलतः "प्राचीनों धर्मवृद्धों और शास्त्रियों।"

[1] मूलतः "हारान," जो क्षेत्र आज सीरिया कहलाता है, उसका एक शहर। [2] मूलतः "मिसुपुतामिया।"

उस देश को दण्ड दूगा जो उन्हे दास बनायेगा, और बाद मे मेरे लोग इस्राएल के इस देश में वापिस लौट आएंगे और यहां मेरी उपासना करेंगे।" 8 "परमेश्वर ने उस समय इब्राहीम को खतने का कार्य भी सौंपा, ताकि वह परमेश्वर और इब्राहीम की सन्तान के मध्य वाचा का प्रमाण ठहरे। और तब इब्राहीम के पुत्र इसहाक का खतना किया गया जब वह आठ दिन का था। इसहाक, याकूब का पिता हुआ, और याकूब यहूदी-जाति के बारह मूल पुरुषो का पिता हुआ। 9 ये पुरुष, यूसुफ से बहुत जलन रखते थे और उन्होंने उसे मिस्र मे गुलाम होने के लिये बेच दिया। परन्तु परमेश्वर उसके साथ था, 10 और परमेश्वर ने उसके सारे कष्टो को दूर किया, और मिस्र के राजा फिरौन के आगे उस पर अनुग्रह किया। परमेश्वर ने यूसुफ को असाधारण ज्ञान भी दिया, इसलिए फिरौन ने उसे पूरे मिस्र का राज्यपाल नियुक्त किया, साथ ही उसे राजमहल के समस्त कार्यों का अधिकारी भी ठहरा दिया। 11 "परन्तु मिस्र और कनान मे अकाल पडा और हमारे पूर्वजों पर बडा संकट आया, जब उनका भोजन समाप्त हो गया, 12 तब याकूब ने सुना कि मिस्र में अब भी अनाज है, इसलिए उसने अपने पुत्रो[3] को कुछ अन्न खरीदने के लिए भेजा। 13 जब वे दूसरी बार गए तब यूसुफ ने अपने आपको अपने भाइयो पर प्रकट किया, और फिरौन से उनका परिचय कराया गया। 14 तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब और अपने भाइयो के पूरे घराने को, जो सब मिलाकर पचहत्तर व्यक्ति थे, मिस्र मे जाने के लिए बुला भेजा। 15 तब याकूब मिस्र को आया, जहां उसकी, और उसके सब पुत्रो की मृत्यु हुई। 16 उन सब को शिकिम ले जाकर उस कब्र मे दफना दिया गया जिसे इब्राहीम ने शिकिम के पिता, हमोर के पुत्रो से खरीदा था। 17, 18 "जब वह समय निकट आया कि उसके वंश को गुलामी से छुडा लेने की इब्राहीम को दी गई अपनी प्रतिज्ञा को परमेश्वर पूरी करे, उस समय यहूदी लोगों की संख्या बहुत बढ गई थी, परन्तु तब एक राजा हुआ जिसके मन में यूसुफ के कामो के लिए कोई आदर नही था। 19 इस राजा ने हमारी जाति के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा, माता-पिता को विवश किया कि वे अपने बच्चो को मैदानो मे छोड दें। 20 "उसी समय बालक मूसा का जन्म हुआ जिसमे दिव्य सौंदर्य था। उसके माता-पिता ने उसे घर पर तीन महीने तक छिपा रखा, 21 और अन्त मे जब वे उसे और अधिक न छिपा सके, और उसे छोडना पडा तब फिरौन की बेटी ने उसे पाया और अपने ही बेटे के समान उसे गोद लिया, 22 और उसे मिस्रियों का सब ज्ञान सिखाया, और वह शक्तिशाली राजकुमार और अच्छा वक्ता बना। 23 "एक दिन जब उसका चालीसवा जन्म दिन समीप आ रहा था, उसके मन मे आया कि वह अपने भाइयो, इस्राएल के लोगों से भेंट करे। 24 इसी समय उसने एक मिस्री को देखा जो एक इस्राएली पुरुष के साथ बुरा व्यवहार कर रहा था। तब मूसा ने मिस्री को मार डाला। 25 मूसा का विचार था कि उसके भाई समझ लेंगे कि परमेश्वर ने उसे उनकी सहायता के लिए भेजा है, परन्तु उन्होंने वैसा नही सोचा।" 26 "अगले दिन वह फिर उनसे भेंट करने गया और उसने इस्राएल के दो पुरुषों को आपस मे लडते देखा। उसने उनमे मेल कराना चाहा। उसने कहा, 'हे पुरुषो, तुम दोनों भाई हो और इस प्रकार तुम्हें नही लडना चाहिए! यह ठीक नही है!" 27 परन्तु गलती करने वाले पुरुष ने मूसा से कहा कि वह अपने काम से मतलब रखे। उसने पूछा, "किसने तुझे हम पर अधिकारी और न्यायी ठहराया? 28 क्या तूने जैसे कल उस मिस्री को मार डाला वैसे ही मुझे भी मारेगा?' 29 "यह सुनते ही, मूसा उस देश से भाग गया, और मिद्यानियों के देश

[3] शब्दश "हमारे बापदादा।"

मे रहने लगा जहां उसके दो बेटे उत्पन्न हुए। 30 "चालीस वर्ष बाद, सीनै पहाड के निकट मरुस्थल मे, एक स्वर्गदूत ने जलती हुई झाड़ी मे उसे दर्शन दिया। 31 मूसा ने उसे देखा और सोचने लगा कि वह क्या है, और जब वह देखने के लिए दौड पड़ा, तब परमेश्वर की आवाज़ ने पुकारकर उससे कहा, 32 'मैं तेरे पूर्वजों—इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूं।' मूसा डर मे कांपने लगा और उसे देखने का साहस नही हुआ। 33 "और परमेश्वर ने उससे कहा, 'अपनी जूती उतार दे, क्योंकि तू पवित्र भूमि पर खड़ा है। 34 मैंने मिस्र मे अपने लोगों की पीड़ा देखी है और उनका रोना सुना है। मैं उनको छुड़ाने के लिए उतर आया हू। आ, मैं तुझे मिस्र भेजूगा।' 35 और तब परमेश्वर ने उसी व्यक्ति को वापिस भेजा जिसके लोगों ने पहले इन्कार कर यह प्रश्न किया था, 'किसने तुझे हम पर अधिकारी और न्यायी ठहराया!' मूसा उनका अधिकारी और छुड़ाने वाला होने के लिए भेज दिया गया। 36 और अनेक अद्भुत चमत्कारो द्वारा उसने मिस्र के बाहर और लाल समुद्र पार, और चालीस वर्षों तक जंगल मे, यहां-वहां उनकी अगुवाई की। 37 "मूसा ने आप ही इस्राएल के लोगो से कहा, 'परमेश्वर तुम्हारे भाइयों मे से मेरे समान[a] एक भविष्यद्वक्ता खड़ा करेगा।' 38 यह कितना सच सिद्ध हुआ, क्योंकि जंगल मे, मूसा इस्राएल के लोगो और उस स्वर्गदूत के बीच मध्यस्थ बना—जिसने उन्हें सीनै के पहाड पर—परमेश्वर की व्यवस्था—जीवित वचन दिया। 39 "परन्तु हमारे बापदादों ने मूसा का विरोध किया और उन्होंने मिस्र लौटना चाहा। 40 उन्होंने हारून से कहा, 'हमारे लिए मूरतें बनाओ, कि हमारे पास देवता हों जो हमें वापिस पहुंचाएं, क्योंकि हम नही जानते कि इस मूसा का क्या हो गया है, जिसने हमें मिस्र से बाहर निकाला है।' 41 तब उन्होंने बछड़े की मूरत बनाई और उसके आगे बलि चढ़ाया, और जिसे बनाया था उस पर बड़े प्रसन्न हुए।

42 "तब परमेश्वर ने उन्हें त्याग दिया और वे देवता—मानकर सूर्य, चन्द्रमा और तारों को पूजने लगे! आमोस की भविष्यद्वाणियों की पुस्तक में प्रभु-परमेश्वर पूछता है, 'हे इस्राएल, क्या जंगल मे उन चालीस वर्षों तक तू मेरे ही लिए बलिदान चढ़ाता रहा? 43 नही, तेरी विशेष रुचि तेरे अन्यजाति देवताओं—मलकूत, और तारो के देवता कैवे, और तेरी बनाई गई सब मूरतो में थी। इसलिए मैं तुझे बाबुल पार बन्दी बना कर भेज दूंगा।' 44 "जंगल मे हमारे पूर्वजों के पास तम्बू वाला मन्दिर रहता था। वे उसके अन्दर पत्थर की पाटियां को जिन पर दस आज्ञाए लिखी थी, रखते थे। इस तम्बू की बनावट ठीक उसी प्रकार थी जिस प्रकार स्वर्गदूत ने मूसा को बताया था। 45 कुछ वर्षों बाद, जब यहोशू ने अन्यजातियो से युद्ध किया, तब यह आराधना का तम्बू उसके साथ उनके नए प्रदेश मे ले जाया गया, और राजा दाऊद के समय तक काम मे लाया गया। 46 "परमेश्वर ने दाऊद को बहुत आशीष दी, और दाऊद ने विनती की कि याकूब के परमेश्वर के लिए स्थायी मन्दिर बनाने का सौभाग्य प्राप्त करे। 47 परन्तु वास्तव में सुलैमान ही ने उसे बनाया। 48, 49 तो भी, परमेश्वर मनुष्य के हाथो से बनाए मन्दिरों मे नही रहता। प्रभु ने अपने भविष्यद्वक्ताओ के द्वारा कहा है, 'स्वर्ग मेरा सिंहासन है, और पृथ्वी मेरे पैर की चौकी है।' प्रभु का प्रश्न है, 'तुम और किस प्रकार का भवन बना सकते हो? क्या मैं उसमे रहूंगा? 50 क्या मैंने ही आकाश और पृथ्वी दोनों को नहीं बनाया?'

51 "हे कठोर मन वाले मूर्तिपूजको! क्या तुम्हें सदा पवित्र आत्मा का सामना करते

[a] मूलत "मुझ सा।"

रहना चाहिए? परन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने तो किया था, और वैसा ही तुम भी करते हो? 52 किसी भी एक भविष्यद्वक्ता का नाम लो, जिसे तुम्हारे बापदादो ने नही सताया। उन्होंने उनको तक मार डाला जिन्होने उस धर्मी व्यक्ति मसीह के आने की भविष्यद्वाणी की, जिसे तुमने पकड़वाकर मार डाला। 53 हाँ, और तुमने जानबूझकर परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया, यद्यपि वह तुम्हें स्वर्गदूतो के हाथो मे मिली थी[a]।"

54 यहूदी अगुवे स्तिफनुस की बातो मे जलभुन गए, और दांत पीसने लगे। 55 परन्तु स्तिफनुस ने, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर, ऊपर स्वर्ग की ओर एकटक देखा और परमेश्वर की महिमा और यीशु को परमेश्वर के दाहिने खड़ा देखा। 56 और उनसे कहा, "देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और यीशु मसीह[b] को परमेश्वर के पास उसके दाहिने हाथ की ओर खड़े देखता हूं।" 57 तब भीड़ मे उपद्रव मच गया, उन लोगो ने अपने कान बन्द कर लिये और अपनी चिल्लाहट से उसकी आवाज को दबा दिया, 58 और शहर के बाहर उसे पत्थर-वाह करने के लिए घसीटते हुए ले गए। अधिकारियो की ओर से ठहराए गवाहों—जल्लादो ने—अपने ऊपरी वस्त्र उतारे और उन्हें शाऊल नामक एक जवान के कदमो पर छोड़ गए। 59 और जब वध करने वाले पत्थर उसकी ओर तेजी से चले आ रहे थे, तब स्तिफनुस ने यह प्रार्थना की, "प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कीजिए।" 60 और वह यह चिल्लाते हुए अपने घुटनो पर गिर पड़ा, "हे प्रभु, यह अपराध उन पर मत लगाइए।" और इतना कहकर, वह मर गया।

8 1 पौलुस, स्तिफनुस की हत्या मे पूरी तरह सहमत था। और विश्वासियों के सताव की बड़ी लहर उस दिन आरम्भ हुई, यरूशलेम की कलीसिया उसके चपेट मे आ गई, और प्रेरितों को छोड़कर बाकी सब यहूदिया और सामरिया मे भाग गए। 2 (परन्तु कई भक्त यहूदी[1] आए और उन्होंने बड़े शोक के साथ स्तिफनुस को दफना दिया।) 3 पौलुस अत्याचारी व्यक्ति था। वह सब जगह जा जाकर विश्वासियों को सता रहा था, घरों मे भी घुसकर, स्त्री-पुरुषो को बाहर घसीटता और उनको जेलखानो मे डाल देता था।

4 परन्तु यरूशलेम छोड़कर भागने वाले विश्वासी[2] सब जगह मसीह का शुभ-सदेश सुनाते गए। 5 उदाहरण के लिए, फिलिप्पुस सामरिया शहर मे गया और उसने वहा के लोगो को मसीह के विषय मे बताया। 6 लोग उसकी बातो को, उसके आश्चर्यकर्मों के कारण बड़े ध्यान-मग्न होकर सुनते थे। 7 अनेक दुष्ट आत्माएं निकाली गईं, जो लोगो मे से बहुत चिल्लाते हुये निकलती थी, और लकुवे के मारे और लगड़े अनेक व्यक्ति चंगे किये गये, 8 और उस शहर मे बड़ा हर्ष छा गया!

9, 10, 11 शमौन नामक एक व्यक्ति वहा बहुत वर्षों से रहता था जो पहले जादू टोना किया करता था, उसकी वहाँ बड़ी धाक जमी थी। वह अत्यन्त अभिमानी भी था—वास्तव मे सामरी लोग उसे महा सामर्थी अर्थात मसीहा कहा करते थे 12 परन्तु अब उन्होने फिलिप्पुस के सदेश पर कि यीशु ही मसीह है, और परमेश्वर के राज्य के विषय मे उसके वचनो पर विश्वास किया, और अनेक स्त्री-पुरुषो ने बपतिस्मा लिया। 13 तब शमौन ने स्वयं विश्वास किया और बपतिस्मा लिया और जहा भी फिलिप्पुस जाता था उसके पीछे जाने लगा, और उसके चमत्कारों को देखकर चकित रह जाता था।

[a] मूलत "स्वर्गदूतो के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था।" [b] मूलत "मनुष्य का पुत्र।"
[1] मूलत "भक्तों।" यह स्पष्ट नहीं है कि वे सताव मे भी निर्भीक रहने वाले मसीही थे, या धर्मी अथवा सहानुभूति रखने वाले यहूदी। [2] मूलत "कलीसिया।"

14 जब यरूशलेम के बाकी प्रेरितों ने सुना कि सामरिया के लोगों ने परमेश्वर का वचन ग्रहण कर लिया है, तब उन्होंने पतरस और यूहन्ना को वहां भेजा। 15 वहां पहुंचते ही, उन्होंने इन नए मसीहियों के लिए प्रार्थना की कि उन्हें पवित्र आत्मा मिले, 16 क्योंकि अब तक पवित्र आत्मा उनमें से किसी पर न उतरा था। क्योंकि उन्होंने केवल मसीह यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। 17 तब पतरस और यूहन्ना ने अपने हाथ इन विश्वासियों पर रखे, और उन्हें पवित्र आत्मा मिला। 18 शमौन ने यह देखकर कि जब प्रेरितों ने अपने हाथ लोगों के सिरों पर रखे तब उन्हें पवित्र आत्मा मिला, उसने इस सामर्थ्य को खरीदने के लिए धन देने का प्रयत्न किया। 19 उसने कहा, "मुझे भी यह शक्ति दो, कि जब लोगों पर मैं अपना हाथ रखूं, तब उन्हें पवित्र आत्मा मिले!"

20 परन्तु पतरस ने उत्तर दिया, "तेरा धन तेरे ही साथ नाश हो, क्योंकि तूने यह सोचा कि परमेश्वर का वरदान खरीदा जा सकता है! 21 तेरा इसमें कोई भाग नही हो सकता, क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के सामने ठीक नही है। 22 इस महान दुष्टता से पश्चाताप और प्रार्थना कर। हो सकता है कि परमेश्वर अब भी तेरे बुरे विचारो को क्षमा करे— 23 क्योंकि मैं समझता हू कि तेरे मन में जलन[3] और पाप है।" 24 शमौन ने कहा, "मेरे लिए प्रार्थना करो कि उन भयानक बातों का मुझे सामना न करना पड़े।"

25 सामरिया में गवाही देने और प्रचार करने के बाद, पतरस और यूहन्ना यरूशलेम को लौट गए। मार्ग मे वे सामरिया के कई गावों में ठहरते गए कि उनको भी शुभ संदेश सुनाएं।

26 परन्तु फिलिप्पुस से परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने कहा, "उस सड़क पर जा जो यरूशलेम से गाज़ा मरुस्थल मे से होकर जाती है।" 27 उसने वैसा ही किया, और उस रास्ते पर आनेवाला व्यक्ति इथियोपिया निवासी एक खोजा था, वह कन्दाके की रानी का उच्च अधिकारी व कोषाध्यक्ष था। वह यरूशलेम के मन्दिर में आराधना करने को गया था, 28 और जब अपने रथ मे, यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक मे से ज़ोर ज़ोर से पढते हुए लौट रहा था। 29 पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, "वहां जा और रथ के साथ साथ चल।" 30 फिलिप्पुस दौड कर वहा गया और उसका पढना सुनकर उससे पूछा, "क्या तू इसे समझता है?" 31 उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "नहीं! जब तक कोई मुझे सिखाने वाला न हो, मैं कैसे समझ सकता हूं?" "और उसने फिलिप्पुस से विनती की कि रथ पर आए और उसके साथ बैठे। 32 धर्मशास्त्र से जो अध्याय वह पढ रहा था, वह यह था: "वह भेड के समान वध होने के लिए पहुंचाया गया, और जैसे मेम्ना ऊन कतरने वालों के सामने शान्त रहता है, वैसे ही उसने भी अपना मुह न खोला, 33 उसकी दीनता के अनुसार उसके साथ न्याय न हो पाया, और उसकी पीढ़ी[4] के लोगो की दुष्टता का वर्णन कौन कर सकता है? क्योंकि उसका जीवन इस पृथ्वी से ले लिया गया।" 34 मन्त्री से फिलिप्पुस से पूछा, "क्या यशायाह अपने विषय में कह रहा था या किसी और के विषय मे?" 35 तब फिलिप्पुस ने इसी शास्त्र से शुरू किया और दूसरे स्थलों मे भी उसे यीशु के विषय में बताया। 36 जब वे जा रहे थे, तब मार्ग में उन्हें जल मिला, और मन्त्री ने कहा, "देखो यहां पानी है। मैं बपतिस्मा क्यों नहीं ले सकता?" 37[5] फिलिप्पुस ने उत्तर दिया, ले सकते हो, "यदि तुम अपने सारे मन से विश्वास करते हो।" और मन्त्री ने उत्तर दिया, "मैं

[3] मूलत: "पित्त की सी कड़वाहट।" [4] यही आशय है। मूलत. "उसके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा।", अथवा, "उसके वंश का वर्णन करने के योग्य कौन होगा? क्योंकि......" [5] अनेक प्राचीन हस्तलेखों में पद 37 पूर्णत अथवा अंशत. छोड दिया गया है।

विश्वास करता हूं कि प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं।" 38 उसने रथ को रोका और वे नीचे उतरकर जल में गए और फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया। 39 और जब वे जल से बाहर निकले, तब प्रभु के आत्मा ने फिलिप्पुस को उठा लिया, और खोजे ने उसे फिर कभी नहीं देखा, परन्तु आनन्दित होते हुए अपने मार्ग पर चला गया। 40 इसी बीच, फिलिप्पुस ने स्वयं को अशदोद में पाया! उसने वहा, और कैसरिया को जाते हुए मार्ग मे,हर एक शहर में सुसमाचार का प्रचार किया।

9 1परन्तु पौलुस, हर समय डराते-धमकाते हुए और प्रत्येक मसीही को नाश करने के लिए उत्सुक रहता था। वह यरूशलेम मे महायाजक के पास गया। 2 उसने दमिश्क के आराधनालयो को एक पत्र लिखने की विनती की, जिससे वहा के सब विश्वासियो, स्त्री-पुरुष दोनों, के सताव के लिए उसे उनका सहयोग प्राप्त हो ताकि वह उन को हथकडियां पहिनाकर यरूशलेम को ला सके। 3 जब वह इस कार्य पर, दमिश्क के निकट पहुचा ही था तब, अचानक बडी तेज़ ज्योति ठीक उसी पर चमकी! 4 वह ज़मीन पर गिर पडा और उसने एक आवाज़ को अपने से यह कहते सुना, "पौलुस! पौलुस! तू मुझे क्यों सता रहा है?" 5 पौलुस ने पूछा, "महाशय, आप कौन बोल रहे हैं?" और आवाज़ ने उत्तर दिया, "मैं यीशु हू, जिसे तू सता रहा है! 6 अब उठ और शहर मे जा और आगे मैं जो कुछ कहूँ उसके लिए ठहरा रह।" 7 जो मनुष्य पौलुस के साथ थे वे अवाक् खडे रह गए, क्योंकि उन्होंने किसी की आवाज़ तो सुनी परन्तु किसी को नही देखा! 8, 9 जब पौलुस भूमि पर से उठा, तो उसने जाना कि वह अन्धा है। उसे पकड कर दमिश्क मे ले जाना पड़ा और वह वहा तीन दिन तक बिना खाए-पिए अन्धा रहा।

10 उस समय दमिश्क मे हनन्याह नामक एक विश्वासी था। प्रभु ने दर्शन मे उससे कहा, "हनन्याह!" उसने उत्तर दिया, "हां प्रभु!" 11 और प्रभु ने उससे कहा, "सीधी नामक सड़क पर जा और यहूदा नाम के पुरुष का घर खोज और वहां तरसुस के पौलुस के विषय में पूछना। ठीक अभी वह मुझसे प्रार्थना कर रहा है, क्योंकि 12 मैंने उसे एक दर्शन में हनन्याह नामक मनुष्य को जाते और अपना हाथ उस पर रखते दिखाया है ताकि वह फिर से देख सके!" 13 हनन्याह ने कहा, "परन्तु प्रभु, मैंने उन भयानक बातों के विषय में सुना है जो इस पुरुष ने यरूशलेम मे विश्वासियो के साथ की हैं! 14 और हम सुनते हैं कि उसने महायाजकों से दमिश्क के प्रत्येक विश्वासी को पकडने का आज्ञापत्र लिया है।" 15 परन्तु प्रभु ने कहा, "जा और जो मैंने कहा, कर। क्योंकि पौलुस मेरा चुना हुआ पात्र है कि मेरा संदेश विजातियों मे, राजाओं के सामने, साथ ही इस्राएल के लोगो तक पहुचाए 16 और मैं उसे दर्शाऊंगा कि उसे मेरे लिए कितना कष्ट सहना है।" 17 तब हनन्याह गया और उसने पौलुस को पाया और अपने हाथ उस पर रख कर कहा, "भाई पौलुस, प्रभु यीशु ने, जिन्होंने मार्ग मे तुझे दर्शन दिया, मुझे भेजा है ताकि तू पवित्र आत्मा से भर जाए और फिर देखने लगे।" 18 उसी क्षण (मानो उसकी आखो से छिलके गिरे हों) पौलुस देखने लगा, और तुरन्त उसका बपतिस्मा हुआ।

19 तब उसने भोजन किया और शक्ति पाई। वह दमिश्क मे विश्वासियो के साथ कुछ दिन ठहरा रहा 20 और तुरन्त आराधनालय को गया कि वहा सबको मसीह यीशु का शुभ-सन्देश बताए कि वास्तव मे वही परमेश्वर के पुत्र हैं! 21 जितनों ने उसकी सुनी सब चकित रह गए। उन्होने पूछा, "क्या यह वही मनुष्य नही जो यरूशलेम मे बडी कठोरता के साथ यीशु के शिष्यो को सताता था? और हम तो समझते हैं कि वह यहा इसीलिए आया कि उन सबको पकड़कर हथकडी पहनाकर महायाजको के पास ले

आए।" 22 पौलुस अपने प्रचार में अधिक से अधिक जोशीला होता गया, और दमिश्क के यहूदी उसके प्रमाणों के सामने कि यीशु ही वास्तव में मसीह हैं, निरुत्तर रह गए।

23 कुछ समय बाद यहूदी अगुओं ने उसको मार डालने की ठानी। 24 परन्तु पौलुस को उनकी चाल के विषय में बताया गया कि वे शहर के द्वारों पर उसकी हत्या करने के लिए पहरा दे रहे हैं। 25 तब रात में उसके द्वारा बने हुए कुछ विश्वासी लोगों ने उसे टोकरे में बैठाकर शहर की दीवार से नीचे उतार दिया।

26 यरूशलेम पहुंचने पर उसने विश्वासियों से मिलने की कोशिश की, परन्तु वे सब उसकी परछाईं तक से डरते थे। वे सोचते थे कि वह उनकी आंखों में धूल झोंकना चाह रहा है। 27 तब बरनबास उसे प्रेरितों के पास ले गया और उनको बताया कि पौलुस ने दमिश्क के मार्ग में प्रभु को किस प्रकार देखा था, प्रभु ने उससे क्या कहा था, और यीशु के नाम में उसके प्रबल प्रचार के विषय में भी सब कुछ बताया। 28 तब उन्होंने उसे ग्रहण किया, और उसके बाद वह सदा विश्वासियों के साथ रहा। 29 और उसने साहस के साथ प्रभु के नाम से प्रचार किया। परन्तु तब कई यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों ने, जिनके साथ उसने वाद-विवाद किया था, उसकी हत्या करने का षड्यन्त्र रचा 30 तौभी, जब दूसरे विश्वासियों ने उसके खतरे के विषय में सुना, तब वे उसे कैसरिया ले गए और उसे तरसुस में उसके घर को भेज दिया।

31 इस समय, पूरे यहूदिया, गलील और सामरिया की कलीसिया को शान्ति मिली, और उसकी सामर्थ्य और संख्या बढ़ी। विश्वासियों ने प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलना सीखा।

32 पतरस ने उनसे भेंट[1] करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा की, और अपनी यात्रा पर लुद्दा शहर के विश्वासियों के पास भी पहुंचा। 33 वहां उसकी भेंट एनियास नामक व्यक्ति से हुई जो आठ वर्षों से लकवे का मारा बिस्तर पर पड़ा था। 34 पतरस ने उससे कहा, "एनियास। यीशु मसीह ने तुझे चंगा कर दिया है। उठ और अपना बिस्तर बिछा।" और वह उसी क्षण चंगा हो गया। 35 जब लुद्दा और शारोन के लोगों ने एनियास को चलते-फिरते देखा तो सब के सब प्रभु की ओर फिर गए।

36 याफा शहर में दोरकास, नामक एक विश्वासी स्त्री थी, जो दूसरों के लिए विशेषकर निर्धनों के लिए दया के कार्य सदा करती रहती थी। 37 उन्हीं दिनों में वह बीमार पड़ी और मर गई। उसके मित्रों ने उसे दफनाने के लिए तैयार किया और ऊपरी मंजिल के एक कमरे में रख दिया। 38 परन्तु जब उन्होंने सुना कि पतरस निकट के ही शहर लुद्दा में है, तब उन्होंने दो पुरुषों को उससे विनती करने भेजा कि उनके साथ याफा आ जाए। 39 उसने विनती सुनी, वह जैसे ही वहां पहुंचे, वे उसे ऊपरी मंजिल में ले गए जहां दोरकास पड़ी थी कमरा विधवाओं से भरा था जो रो रही थी और एक दूसरे को कुरते और वस्त्र दिखा रही थी जिन्हें दोरकास ने उनके लिए बनाया था। 40 परन्तु पतरस ने उन सबको कमरे से चले जाने को कहा, तब उसने घुटने टेके और प्रार्थना की। शव की ओर फिरकर उसने कहा, दोरकास, उठ, और उसने अपनी आंखें खोली। और जब उसने पतरस को देखा, तो वह बैठ गई। 41 पतरस ने उसे अपना हाथ दिया और उठने में उसकी सहायता की और विश्वासियों को बुलाकर उसे उनको सौंप दिया। 42 शहर भर में तुरन्त यह समाचार फैल गया और बहुतों ने प्रभु पर विश्वास किया। 43 और पतरस याफा में चमड़े का धन्धा करने वाले शमौन के साथ बहुत दिनों तक ठहरा रहा।

[1] यही आशय है। [2] मूलतः "तबीता," उसका नाम इब्रानी भाषा में।

10 1 कैसरिया मे रोम सैन्याधिकारी कुरनेलियुस रहता था जो इतालियानी सेना टुकडी का कप्तान था। 2 वह भक्त पुरुष था और सपरिवार परमेश्वर का बहुत आदर करता था। वह दान देने में बहुत उदार था और प्रार्थना करने वाला व्यक्ति था। 3 एक दिन दोपहर मे जब वह जाग रहा था उसे दर्शन मिला—उस समय करीब तीन बजे थे—और इस दर्शन में उसने परमेश्वर के एक स्वर्गदूत को अपनी ओर आते देखा। स्वर्गदूत ने कहा, "कुरनेलियुस"। 4 कुरनेलियुस ने भयभीत होकर उसकी ओर देखा। उसने स्वर्गदूत से पूछा, "महाशय, आप क्या चाहते हैं ?" और स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "तेरी प्रार्थनाओं और दान पर परमेश्वर ने ध्यान दिया है। 5, 6 अब कुछ मनुष्यों को याफा भेज ताकि वे शमौन पतरस नामक व्यक्ति को खोजें, जो शमौन चमडे का धन्धा करने वाले के घर पर समुद्र के किनारे ठहरा हुआ है, और उससे बिनती करें कि आकर तुझसे मिले। 7 स्वर्गदूत के जाते ही कुरनेलियुस ने अपने घर के दो नौकरों और एक भक्त सिपाही को जो उसका अंगरक्षक था, बुलाया 8 और जो कुछ हुआ था उन्हें बताया और याफा को भेज दिया।

9, 10 अगले दिन, जब वे शहर के करीब पहुच रहे थे, पतरस अपने घर की अटारी पर प्रार्थना करने गया। दोपहर का समय था और उसे भूख लगी थी, परन्तु जब भोजन तैयार हो रहा था, वह मूर्छित हो गया। 11 उसने आकाश को खुला हुआ, और सन[1] से बनी हुई बडी चादर को, उसके चारों कोनों से लटकते हुए पृथ्वी पर उतरते देखा। 12 उस चादर में सब प्रकार के पशु, साप और चिड़िया थी (जिनको खाना यहूदियों को मना था[2])। 13 तब उसने आवाज़ सुनी, 'जा उसमें से जिसे चाहे मार और खा।' 14 पतरस ने कहा, "प्रभु, कभी नहीं, मैंने अपने जीवन भर कभी ऐसे जीवजन्तुओं को नहीं खाया है, क्योंकि हमारी यहूदी व्यवस्था के अनुसार उनको खाना मना है।" 15 फिर आवाज़ आई, "परमेश्वर की बात के विरुद्ध मत कहो! यदि वह कहे कोई वस्तु शुद्ध है, तो वह शुद्ध है।" 16 यही दर्शन तीन बार दोहराया गया। तब वह चादर फिर ऊपर आकाश मे उठा ली गई।

17 पतरस बड़े असमंजस में पड गया। दर्शन का क्या अर्थ हो सकता है ? अब उसे क्या करना चाहिए ? ठीक उसी समय कुरनेलियुस द्वारा भेजे गये व्यक्तियों को घर मिल गया था और वे दरवाज़े के बाहर खड़े, 18 पूछ रहे थे कि क्या यही वह स्थान है जहाँ शमौन पतरस रहता है। 19 इसी समय, जब पतरस दर्शन पर विचार कर रहा था, तब पवित्र आत्मा ने उससे कहा, "तीन पुरुष तुझसे मिलने आए हैं। 20 नीचे जाकर उनसे मिल और उनके साथ जा। सब ठीक है, मैंने उनको भेजा है।" 21 तब पतरस नीचे उतरा। उसने कहा, "मैं ही वह मनुष्य हूँ जिसको तुम खोज रहे हो, अब बताओ तुमको क्या चाहिए ?" 22 तब उन्होंने उसे रोमी अधिकारी कुरनेलियुस के विषय मे बताया कि वह भला और भक्त पुरुष है, यहूदियों में उसका आदर है, और किस प्रकार स्वर्गदूत ने उसे आज्ञा दी कि पतरस को बुलाने के लिए भेजे जो आकर उसे बताए कि परमेश्वर उससे क्या चाहता है।

23 तब पतरस ने उनको अन्दर बुलाया और रात भर वहाँ ठहराया। दूसरे दिन वह उनके साथ गया, याफा के कई दूसरे विश्वासी भी उनके संग हो लिए। 24 दूसरे दिन वे कैसरिया पहुँचे, और कुरनेलियुस उनकी प्रतीक्षा में था, और उसने अपने रिश्तेदारों और घनिष्ट मित्रों को भी पतरस से भेंट करने के लिए बुलवा लिया था। 25 जैसे ही पतरस ने घर में कदम रखा, कुरनेलियुस ने ज़मीन पर गिर कर उसे प्रणाम किया। 26 परन्तु पतरस ने कहा,

[1] यही आशय है। [2] यही आशय है। लै० अ० 11 मे निषेधात्मक सूची पढ़िये।

"खड़ा हो जा। मैं ईश्वर नहीं हूँ !" 27 तब वह उठा और उन्होंने कुछ समय तक बातचीत की और तब अन्दर गए जहाँ दूसरे लोग भी थे। 28 पतरस ने उनसे कहा, "तुम जानते हो कि मेरे लिए इस प्रकार विजातीय के घर में आना यहूदी व्यवस्था के विरुद्ध है। परन्तु परमेश्वर ने मुझे दर्शन दिया है कि मैं किसी को कभी अपने से तुच्छ न समझूँ। 29 इसीलिए जैसे ही मुझे बुलाया गया मैं चला आया। अब मुझे बताओ, तुम क्या चाहते हो।" 30 कुरनेलियुस ने उत्तर दिया, "चार दिन पहले मैं अपनी रीति के अनुसार दोपहर में इसी समय प्रार्थना कर रहा था, तब अचानक एक पुरुष मेरे सामने चमकीला वस्त्र पहने हुए आ खड़ा हुआ।" 31 उसने मुझसे कहा, "कुरनेलियुस, तेरी प्रार्थनाएं सुन ली गई हैं और तेरे दान पर परमेश्वर ने ध्यान दिया है ! 32 अब कुछ मनुष्यों को याफा भेज और शमौन पतरस को बुलवा ले, जो शमौन चर्मकार के घर में, समुद्र किनारे ठहरा हुआ है।"

33 तब मैंने तुरन्त तुझे बुलाने भेजा, और तूने अच्छा किया जो जल्दी आ गया। अब हम यहाँ, परमेश्वर के सामने ठहरे हुए हैं और यह सुनने के लिए उत्सुक हैं कि उसने तुझसे हमें बताने के लिए क्या कहा है ! 34 तब पतरस ने उत्तर दिया, "अब मैं स्पष्ट देख सकता हूँ कि यहूदी ही अकेले परमेश्वर के प्रिय लोग नहीं हैं। 35 सब देशों में ऐसे लोग हैं जो उसकी उपासना करते और भले कार्य करते हैं और उसके प्रिय हैं। 36, 37 मुझे निश्चय है तुमने इस्राएल के लोगों के लिए शुभ सन्देश को सुना है—कि यीशु मसीह के द्वारा जो सारी सृष्टि का स्वामी है, परमेश्वर के साथ मेल हो सकता है। यह सन्देश पूरे यहूदिया में फैल चुका है, इसका आरम्भ गलील में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से हुआ। 38 और उसमें सन्देह नहीं, तुम जानते हो कि परमेश्वर द्वारा नासरत के यीशु, पवित्र आत्मा तथा सामर्थ्य से अभिषिक्त थे, और वह भले कार्य करते हुए और दुष्टात्माओं से समाए हुए लोगों को चंगा करते हुए फिरते रहे, क्योंकि परमेश्वर उनके साथ था। 39 और हम "प्रेरित उन सब कामों के गवाह हैं जो उन्होंने इस्राएल और यरूशलेम में किए, जहाँ क्रूस पर उनकी हत्या कर दी गई। 40, 41 परन्तु परमेश्वर ने उनको तीसरे दिन जीवित किया और कुछ गवाहों को दिखाया जिनको परमेश्वर ने पहले से चुन लिया था, सब लोगों को नहीं, परन्तु हमको जिन्होंने उनको मरे हुओं में से जी उठने के बाद उनके साथ खाया पिया। 42 और मसीह ने हमको सब जगह शुभ सन्देश का प्रचार करने और यह गवाही देने भेजा कि यीशु परमेश्वर के अभिषिक्त हैं ताकि वह मृतकों और जीवितों सब के न्यायी बनें। 43 और सब भविष्यद्वक्ताओं ने उनके विषय में यह कहते हुए लिखा है, कि सब जो उन पर विश्वास रखते हैं उनके नाम से अपने पापों की क्षमा पाते हैं।"

44 जब पतरस ये बातें कह ही रहा था, तब पवित्र आत्मा सब सुननेवालों पर उतर आया। 45 पतरस के साथ आनेवाले यहूदी अवाक् थे कि पवित्र आत्मा का वरदान अन्य जातियों को भी दिया गया है। 46, 47 परन्तु उसके विषय में कोई सन्देह नहीं हो सकता था, क्योंकि उन्होंने उनको दूसरी भाषाएँ बोलते और परमेश्वर की प्रशन्सा करते सुना। पतरस ने पूछा, "क्या कोई उनके लिए बपतिस्मे का विरोध कर सकता है जिन लोगों ने हमारे समान ही पवित्र आत्मा प्राप्त किया है ?" 48 तब उसने उनको यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया। बाद में कुरनेलियुस ने उससे अनुरोध किया कि कुछ दिनों तक उनके साथ ठहर जाए।

11 1 यह समाचार शीघ्र ही प्रेरितों और यहूदिया के दूसरे भाइयों तक पहुँच गया कि अन्यजाति मसीह के विश्वासी हो रहे

है ! 2 परन्तु जब पतरस यरूशलेम वापिस पहुंचा, तो यहूदी विश्वासियों ने उसके साथ वाद-विवाद किया। 3 उन्होंने दोष लगाया, "तूने अन्यजातियों के साथ संगति की और उनके साथ भोजन किया।" 4 तब पतरस ने उनको पूरी कहानी सुनाई। 5 उसने कहा, "एक दिन याफा में, जब मैं प्रार्थना कर रहा था, मैंने एक दर्शन देखा—आकाश से एक बड़ी चादर अपने चारों कोनों से लटकती हुई उतरी। 6 चादर के अन्दर सब प्रकार के पशु, रेंगने वाले जन्तु और पक्षी थे (जिन्हें हमें नहीं खाना है[1])। 7 और मैंने एक आवाज सुनी, 'मार और तू जो चाहे खा।' 8 मैंने उत्तर दिया, "प्रभु, कभी नहीं, क्योंकि मैंने आज तक कभी कोई ऐसी वस्तु नहीं खाई जिसे खाना हमारी यहूदी-व्यवस्था के अनुसार मना है।" 9 परन्तु फिर आवाज आई, 'जिसे परमेश्वर ने ठीक कहा है उसके विषय में यह मत कह कि ठीक नहीं है।' 10 तीन बार ऐसा ही हुआ, तब चादर और उसमें की सब वस्तुएँ आकाश में गायब हो गईं। 11 ठीक उसी समय तीन पुरुष जो मुझे अपने साथ कैसरिया ले जाने के लिए आए थे, उस घर पर पहुंचे जहाँ मैं ठहरा था ! 12 पवित्र आत्मा ने मुझसे कहा कि मैं उनके साथ जाऊँ और उनके अन्यजाति होने की चिन्ता न करूं ! ये छः भाई भी मेरे साथ हो लिए, और हम शीघ्र ही उस मनुष्य के घर में पहुचे जिसने सेवकों को भेजा था। 13 उसने हमें बताया कि किस प्रकार एक स्वर्गदूत ने उसे दर्शन देकर कहा था कि याफा में मनुष्य भेजकर शमौन पतरस को बुलवा ले ! 14 स्वर्गदूत ने उससे कहा था, 'वह तुझे बताएगा कि तू और तेरा पूरा घराना किस प्रकार उद्धार पा सकता है ! 15 "तब मैंने उनको शुभ-सन्देश सुनाना शुरु किया, परन्तु जब मैंने अपना उपदेश आरम्भ ही किया था कि पवित्र आत्मा उन पर उतर गया, ठीक जैसे वह आरम्भ में हम पर उतरा था ! 16 तब मैंने प्रभु के इन वचनों का स्मरण किया जब उन्होंने कहा, 'हाँ यूहन्ना ने तुमको पानी से[2] बपतिस्मा दिया, परन्तु तुमको पवित्र आत्मा से[2] बपतिस्मा दिया जावेगा।' 17 और जबकि परमेश्वर ही ने इन अन्यजातियों को भी वैसा ही वरदान दिया जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था, तब मैं कौन था जो वाद-विवाद करता ? 18 जब दूसरों ने यह सुना, तब उनकी सब शंकाएँ दूर हुईं और वे परमेश्वर की बड़ाई करने लगे ! उन्होंने कहा, "हाँ, परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी, अपनी ओर लौटने और अनन्त-जीवन पाने का अधिकार दिया है !"

19 इसी बीच, विश्वासियों ने जो स्तिफनुस की मृत्यु के बाद होने वाले सताव के समय यरूशलेम से भागे थे, फीनीके, कुप्रुस और अन्ताकिया तक यात्रा की, मार्ग में वे सुसमाचार फैलाते गए, परन्तु केवल यहूदियों ही में। 20 तौभी, कुप्रुस और कुरेन से अन्ताकिया जाने वाले कई विश्वासियों ने कुछ यूनानियों को प्रभु यीशु के विषय में अपना सन्देश सुनाया। 21 और प्रभु ने इस कार्य पर आशिष दी जिससे इन अन्यजातियों में से बहुत लोग विश्वासी बने। 22 जब यरूशलेम की कलीसिया ने इसका समाचार सुना, तो उन्होंने बरनबास को नए विश्वासियों की सहायता करने के लिए अन्ताकिया भेजा। 23 वहाँ पहुचकर उसने परमेश्वर के अद्‌भुत कार्यों को देखा, तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ, और उसने विश्वासियों को उत्साह दिलाया कि वे किसी भी मूल्य पर, प्रभु के साथ रहें। 24 बरनबास दयालु व्यक्ति था, वह पवित्र आत्मा से भरपूर और विश्वास में दृढ़ था। परिणाम यह हुआ कि भारी संख्या में लोग प्रभु में मिल गए। 25 तब बरनबास पौलुस को खोजने के लिए तरसुस को गया। 26 जब वह मिला, तब उसे वापिस अन्ताकिया में लाया, और दोनों वहाँ पूरे एक वर्ष तक, अनेक नए

[1] यही आशय है। [2] अथवा "में।"

विश्वासियों को शिक्षा देते रहे। (अन्ताकिया ही में विश्वासी सबसे पहले "मसीही" कहलाए।)

27 इन्हीं दिनों यरूशलेम से कई भविष्यद्वक्ता अन्ताकिया में आए, 28 और उनमें अगबुस नामक व्यक्ति ने, एक सभा में खड़े होकर आत्मा के द्वारा भविष्यद्वाणी की, कि इस्राएल[3] देश पर एक बड़ा भारी अकाल आने पर है। (क्लौदियुस के राज्य के समय यह भविष्यद्वाणी पूरी हुई।) 29 तब विश्वासियों ने निर्णय किया कि यहूदिया के मसीहियों को सहायता भेजी जाए, प्रत्येक जितना दे सके उतना दे। 30 उन्होंने वैसा ही किया, बरनबास और पौलुस को अपनी भेंट यरूशलेम में कलीसिया के प्राचीनों के पास पहुंचाने के लिए सौंप दी।

12 1 उस समय राजा हेरोदेस ने कई विश्वासियों के विरुद्ध कदम उठाए, 2 और (यूहन्ना के भाई) प्रेरित[1] याकूब को मार डाला। 3 जब हेरोदेस ने देखा कि इससे यहूदी नेता कितने आनन्दित हुए, तो उसने पतरस को फसह के त्यौहार के समय पकड़ लिया 4 और उसे जेलखाने में, सोलह सिपाहियों के पहरे में रखा। हेरोदेस की इच्छा थी कि पतरस को फसह के बाद प्राणदण्ड के लिए यहूदियों को सौंप दे। 5 परन्तु जब वह जेलखाने में था, तो पूरे समय कलीसिया उसके बचाव के लिए परमेश्वर से लगन के साथ प्रार्थना कर रही थी। 6 प्राणदण्ड दिए जाने से पहले उस रात को पतरस दो सिपाहियों के बीच, दोहरी जंजीरों से बंधा हुआ था साथ ही अन्य पहरुए जेलखाने के फाटक के सामने खड़े पहरा दे रहे थे, 7 कि अचानक जेलखाने की कोठरी में ज्योति चमकी और प्रभु का एक स्वर्गदूत पतरस के बाजू में खड़ा हो गया! स्वर्गदूत ने उसे जगाने के लिए उसके बाजू को थपथपाया और कहा, "जल्दी उठ!" और उसकी हथकड़ियां गिर पड़ी! 8 तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, "अपने वस्त्र और अपनी जूतियां पहन ले।" और उसने वैसा ही किया। स्वर्गदूत ने आज्ञा दी, "अब अपना ऊपरी वस्त्र पहन और मेरे पीछे हो ले।" 9 तब पतरस कोठरी छोड़कर स्वर्गदूत के पीछे हो लिया। परन्तु पूरे समय सोचता रहा कि कोई स्वप्न या दर्शन है, और उसने विश्वास नहीं किया कि वैसा सचमुच उसके साथ हो रहा है। 10 उन्होंने कोठरियों की पहली और दूसरी कतार को पार किया और सड़क की ओर जानेवाले लोहे के फाटक पर आए, और वह आप ही आप उनके लिए खुल गया। तब वे पार हो गए और एक साथ गली से होकर जाने लगे, तब स्वर्गदूत ने उसे छोड़ दिया। 11 पतरस ने अन्त में समझ लिया कि क्या हुआ है! उसने अपने आप से कहा, "यह बिलकुल सच है! परमेश्वर ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस से और उन सबसे बचा लिया है जो यहूदी मुझे घात करने की आशा रखते थे!" 12 थोड़ा विचार कर लेने पर वह यूहन्ना मरकुस की माता, मरियम के घर गया। वहां बहुत लोग प्रार्थना सभा के लिए इकट्ठे थे। 13 उसने दरवाज़े की कुंडी खटखटाई, और रुदे नामक एक लड़की उसे खोलने आई। 14 जब उसने पतरस की आवाज़ सुनी, तो अति प्रसन्न हुई और द्वार खोलना भूलकर सबको यह बताने के लिए कि पतरस बाहर दरवाज़े पर खड़ा है, वह भीतर लौट आई। 15 परन्तु लोगों ने उसका विश्वास नहीं किया। उन्होंने कहा, "तू पागल हो गई है।" जब उसने ज़ोर देकर कहा तो उन्होंने निर्णय किया, "वह उसका स्वर्गदूत होगा।" 16 इसी बीच पतरस दरवाज़ा खटखटाता रहा। जब वे अन्त में बाहर गए और उन्होंने दरवाज़ा खोला, तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही। 17 पतरस ने उन्हें चुप रहने का संकेत किया और उनको बताया कि क्या हुआ है और प्रभु ने उसे किस प्रकार

[3] मूलत: "पृथ्वी पर।" [1] यही आशय है।

जेलखाने से बाहर निकाला है। उसने कहा, "जो कुछ हुआ है याकूब और दूसरों को बता देना" —और किसी सुरक्षित स्थान मे जाने के लिए वहाँ से निकल गया। 18 सुबह होते ही, जेलखाने मे बडी खलबली मची। पतरस को क्या हुआ? 19 जब हेरोदेस ने उसे बुलाने भेजा और जाना कि वह वहां नहीं है, तो उन्होंने सोलहो सिपाहियों को पकड लिया और सैनिक न्यायालय मे ले जाकर उन्हें मृत्यु दण्ड[*] दिया। इसके बाद वह कुछ समय के लिए कैसरिया में रहने को वहा से चला गया।

20 जब वह कैसरिया में था तब सूर और सैदा मे एक प्रतिनिधि-मण्डल उससे भेंट करने के लिए पहुँचा। वह उन दोनों शहरों के लोगो से बहुत अप्रसन्न था परन्तु प्रतिनिधि मण्डल ने, राजा के सचिव, बलास्तुस से मित्रता की, और मेल करने का अनुरोध किया, क्योंकि उसके शहर आर्थिक रूप से हेरोदेस के देश के साथ व्यापार करने पर निर्भर थे। 21 हेरोदेस मे भेंट का समय ठहराया गया, और जब वह दिन आ पहुचा, तब वह अपना राजकीय वस्त्र पहन कर अपने सिंहासन पर बैठा और उनको भाषण दिया। 22 भाषण के समाप्त होते ही लोगो ने उसका बडा सत्कार किया और पुकार उठे, "यह मनुष्य का नही परन्तु परमेश्वर का स्वर है।" 23 उसी क्षण, प्रभु के एक स्वर्गदूत ने हेरोदेस को रोग मे ऐसा मारा कि वह कीडों से भर गया और मर गया—क्योंकि उसने लोगों की उपासना स्वीकार की और परमेश्वर को महिमा नही दी।

24 परमेश्वर का शुभ समाचार तेजी से फैल रहा था और अनेक नए विश्वासी होते जा रहे थे।

25 इस समय बरनबास और पौलुस कुछ समय के लिए यरूशलेम आए और उन्होंने जैसे ही अपना काम पूरा किया, वे अन्ताकिया[*] को लौट गए, और यूहन्ना मरकुस को साथ लेते गए।

13 1 अन्ताकिया की कलीसिया के भविष्यद्वक्ताओं और शिक्षकों में बरनबास और शमौन (जो "नीगर" भी कहलाता था), (कुरेन का) लूकियुस (राजा हेरोदेस का पाला हुआ भाई) मनाहेम, और पौलुस थे। 2 एक दिन जब ये व्यक्ति आराधना और उपवास कर रहे थे, तब पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे एक विशेष कार्य के लिए बरनबास और पौलुस का अर्पण करो।" 3 तब उन्होंने और उपवास और प्रार्थना करने के बाद, उन पर अपने हाथ रखे और उन्हे विदा किया।

4 पवित्रआत्मा की अगुवाई से वे सिलूकिया को गए और तब कुप्रुस जाने के लिए जहाज पर चढे। 5 वहाँ, सलमीस शहर मे वे यहूदी-आराधनालय को गए और उन्होंने प्रचार किया। (यूहन्ना मरकुस उनका सहायक होकर उनके साथ गया।) 6, 7 इसके बाद वे पूरे द्वीप में एक शहर से दूसरे शहर प्रचार करते गए, अन्त मे पाफुस पहुंचे जहां उनकी भेंट बार-यीशु नामक जादू-टोना करने वाले एक यहूदी और पाखण्डी भविष्यद्वक्ता मे हुई। उसने अपनी मित्रता राज्यपाल, सिरगियुस पौलुस के साथ रखी थी, जो विवेकशील और ज्ञानी पुरुष था। राज्यपाल ने बरनबास और पौलुस को अपने साथ भेंट करने के लिए बुलाया, क्योंकि वह परमेश्वर की ओर से उनका संदेश सुनना चाहता था। 8 परन्तु जादूगर इलीमास ने बीच मे पडकर राज्यपाल से बिनती की, कि पौलुस और बरनबास की बात पर तनिक ध्यान न दें, इस प्रयत्न मे कि उनको प्रभु पर विश्वास करने से रोक रखे। 9 तब पौलुस ने पवित्र आत्मा से भरकर, जादूगर की ओर क्रोध से एकटक देखते हुए कहा, 10 "हे शैतान की सतान, सब प्रकार के कपट से भरे हुए दुष्ट, समस्त अच्छाइयों के शत्रु क्या तू कभी प्रभु का विरोध करना न छोडेगा? 11 और अब परमेश्वर ने अपने दण्ड का हाथ तुझ पर रखा है, और कुछ समय तक

[*] यही आशय है।

तू अन्धा रहेगा।" उसी क्षण उस पर धुंध और अन्धकार छा गया, और वह इधर-उधर टटोलने लगा कि कोई उसका हाथ पकड़कर उसे ले जाए। 12 यह देखकर राज्यपाल ने विश्वास किया और परमेश्वर के सन्देश की सामर्थ से चकित रह गया।

13 तब पौलुस और उसके साथी पाफुस से जहाज पर तुर्किस्तान के लिए निकले। उनका जहाज पिरगा शहर बन्दरगाह पर टिका। यहां यूहन्ना ने उनका साथ छोड़ दिया[1] और वह यरूशलेम लौट गया। 14 परन्तु बरनबास और पौलुस, पिसिदिया प्रांत के अन्ताकिया शहर को गए। सब्त के दिन वे उपासना के लिए आराधनालय को गए। 15 सदैव के समान मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में से पढ़ लेने के बाद, आराधनालय के अधिकारियों ने उनको यह सन्देश भेजा: "भाइयो, यदि हमारे लिए कोई उपदेश हो तो आकर दो!" 16 तब पौलुस खड़ा हुआ, उसने उनको नमस्कार[3] करके कहना शुरू किया। उसने कहा,

"इस्राएल के लोगो" और यहां उपस्थित सब अन्य सदस्यो जो परमेश्वर का आदर करते हो, (मुझे अपने सन्देश के आरम्भ में थोड़ा इतिहास बता लेने दो[4]।) 17 इस्राएल के परमेश्वर ने हमारे बापदादों को चुना और मिस्र से बड़े गौरव के साथ गुलामी से निकालकर उनका आदर किया। 18 और जंगल में यहां-वहां चालीस वर्षों तक फिरते रहने के समय उनकी देखभाल की। 19, 20 तब परमेश्वर ने कनान में सात जातियों का नाश किया, और उनका देश इस्राएलियों को मीरास में दिया। न्यायियों ने करीब 450 वर्ष तक शासन किया, और उनके बाद शमूएल भविष्यद्वक्ता ने न्याय किया। 21 "तब लोगों ने एक राजा की मांग की, और परमेश्वर ने उन्हें शाऊल (कीश का पुत्र) दिया, जो बिन्यामीन के गोत्र का था, जिसने चालीस वर्ष तक राज्य किया। 22 परन्तु परमेश्वर ने उसे अलग किया और उसके स्थान पर दाऊद को राजा बनाया, जिसके विषय में परमेश्वर ने कहा, '(यिशै का पुत्र) दाऊद मेरे मन के अनुसार व्यक्ति है, क्योंकि वह मेरी आज्ञाओं को मानेगा।' 23 और राजा दाऊद के वंश में से ही एक, यीशु हैं, जो परमेश्वर के प्रतिज्ञा किए हुए इस्राएल के उद्धारकर्ता हैं! 24 "परन्तु उनके आने से पहले, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने इस्राएल में हरएक के लिए, पाप से फिरकर परमेश्वर की ओर आने की आवश्यकता का प्रचार किया। 25 यूहन्ना ने अपना कार्य समाप्त करते समय पूछा, 'क्या तुम सोचते हो कि मैं मसीह हूं? नहीं! परन्तु वह शीघ्र आनेवाला है—और उसकी तुलना में मैं अत्यन्त अयोग्य हूं।' 26 "भाइयो—तुम जो इब्राहीम की सन्तान हो, और यहां उपस्थित तुम सब अन्यजाति भी जो परमेश्वर का आदर करते हो—यह उद्धार हम सब के लिए है! 27 यरूशलेम के यहूदियों और उनके अगुओं ने यीशु को मार डालने के द्वारा भविष्यवाणी पूरी की, क्योंकि उन्होंने यीशु को नहीं पहचाना, न जाना कि वही हैं जिनके विषय में भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा था, यद्यपि वे भविष्यद्वक्ताओं के वचनों को जो हर सब्त के दिन पढ़े जाते सुनते थे। 28 उन्होंने यीशु को मृत्युदण्ड देने का कोई उचित कारण न पाया, परन्तु तौभी पीलातुस से विनती की, कि उनको मार डालें। 29 जब उन्होंने यीशु की मृत्यु के विषय में सब भविष्यद्वाणियां पूरी कर ली, तब वह क्रूस से उतार कर कब्र में रखे गए। 30 "परन्तु परमेश्वर ने उनको फिर जीवित कर दिया! 31 और अगले कुछ दिनों में वह अनेक बार उन मनुष्यों को दिखाई दिए जो उनके साथ गलील से यरूशलेम को गए थे—इन लोगों ने लगातार इसकी गवाही लोगों के सामने दी है। 32, 33 "और

[1] मूलत: "पफूलिया।" [2] मूलत: "उनसे अलग हो गया।" देखिए अध्याय 15, पद 38। [3] मूलत: "हाथ से सैन करके।" [4] यही आशय है।

अब बरनबास और मैं इस शुभ-सन्देश को तुम तक पहुँचाने के लिए यहाँ हैं—कि हमारे ही युग में हमारे बापदादों को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा इस बात में सच हुई है कि परमेश्वर ने यीशु को फिर से जीवित किया है। दूसरे भजन में भी यही लिखा है जहाँ यीशु के सम्बन्ध में कहा गया है, "आज मैंने तुझे अपने पुत्र के समान आदर दिया है[5]।" 34 "क्योंकि परमेश्वर ने उनको फिर से जिलाने की प्रतिज्ञा दी थी, कि वह फिर न मरें। यह धर्मशास्त्र के इन वचनों में लिखा है, "मैं तेरे लिए एक अद्भुत कार्य करूंगा जिसकी प्रतिज्ञा मैंने दाऊद से की थी।" 35 दूसरे भजन में उसने अधिक अच्छी तरह समझाया है, यह कहकर कि "परमेश्वर अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा, 36 यह दाऊद के विषय में नहीं कहा गया, क्योंकि जब दाऊद परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपनी पीढ़ी की सेवा कर चुका, तो वह मर गया और गाड़ा गया, और उसकी देह सड़ गई 37 (नहीं, यह तो दूसरे के लिए कहा गया[6])—जिसे परमेश्वर ने फिर जिलाया, और जिसका शरीर सड़ने नहीं पाया[7]।

38 'हे भाइयो! सुनो! इस यीशु में, तुम्हारे पापों की क्षमा है! 39 हर एक जो यीशु पर विश्वास करता है सब अपराधों से छुड़ाया जाता है और धर्मी ठहराया जाता है—ऐसा यहूदी-व्यवस्था कभी नहीं कर सकती थी। 40 सावधान रहो! भविष्यद्वक्ताओं के वचन तुम पर लागू होने न पाएं। क्योंकि उन्होंने कहा था। 41 "(सत्य से) घृणा करने वालो तुम देखो और नाश हो, क्योंकि मैं तुम्हारे युग में कुछ कर रहा हूं—जिसका वर्णन सुनकर तुम विश्वास नहीं करोगे।"

42 उस दिन जब वे लोग आराधनालय से निकले, तो उन्होंने पौलुस से विनती की, कि अगले सप्ताह फिर आकर उन्हें सन्देश दें।

43 जब वे दोनों उनसे अनुरोध करते थे कि वे उस अनुग्रह को ग्रहण करें जो परमेश्वर उनको दे रहा था। तो अनेक यहूदी और अन्यजातियों के भक्त जो उस आराधनालय में उपासना करते थे, सड़क पर पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए।

44 अगले सप्ताह प्रायः पूरा शहर उनसे परमेश्वर का सन्देश सुनने को चला आया। 45 परन्तु जब यहूदी नेताओं[8] ने भीड़ को देखा, तो उनके मन में ईर्ष्या भड़क उठी। वे शाप[9] देने और पौलुस की हर बात पर विवाद करने लगे। 46 तब पौलुस और बरनबास ने निडरता पूर्वक कहा, "यह आवश्यक था कि परमेश्वर का यह शुभ-सन्देश पहले तुम यहूदियों को दिया जाता। परन्तु इसलिए कि तुमने उसे ग्रहण न करके अपने को अनन्त-जीवन के अयोग्य ठहराया देखो, अब हम इसे अन्यजातियों को देंगे। 47 क्योंकि परमेश्वर ने हमें ऐसी ही आज्ञा दी है, मैंने अन्यजातियों के लिए तुम्हें ज्योति ठहराया ताकि तुम समस्त संसार का मेरे उद्धार की ओर मार्ग दर्शन करो। 48 विजातीय लोग इसे सुन कर बड़े प्रसन्न हुए और पौलुस के सन्देश से आनन्दित हुए, और जितनों को अनन्त जीवन की इच्छा थी[10], उन्होंने विश्वास किया। 49 और परमेश्वर का सन्देश उस समस्त क्षेत्र में फैला। 50 तब यहूदी-अगुवों ने शहर की भक्त स्त्रियों और जनता के नेताओं को भड़काया और भीड़ को पौलुस और बरनबास के विरुद्ध बहका कर, उन्हें शहर से भगा दिया। 51 परन्तु उन्होंने उस शहर के विरुद्ध अपने पावों की धूल झाड़ी और इकुनियुम शहर को चले गए। 52 और उनके शिष्य[11] आनन्द और पवित्र आत्मा से भर गए।

14 [1] इकुनियुम में, पौलुस और बरनबास साथ साथ आराधनालय को गए और इतनी

---

[5] मूलत "आज मैंने ही तुम्हें जन्माया है।" [6] यही आशय है। [7] मूलत "सड़ने नहीं पाया।" [8] मूलत "यहूदियो।" [9] मूलत "निन्दा करते हुए।" [10] अथवा, "के लिए ठहराए गए थे" या "नियुक्त किए गए थे।" [11] मूलत "चेले।"

सामर्थ से प्रचार किया कि अनेक यहूदियों और अन्यजातियों ने विश्वास किया। 2 परन्तु परमेश्वर का सन्देश ग्रहण न करने वाले यहूदियों ने, सब प्रकार की बुरी बातें उनके लिए कहकर, अन्यजातियों में पौलुस और बरनबास के विरुद्ध अविश्वास उत्पन्न किया। 3 तौभी वे वहां निडर होकर प्रचार करते हुए बहुत दिनों तक ठहरे रहे, और प्रभु ने उनको महान आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ देने के द्वारा सिद्ध किया, कि उनका सन्देश उसकी ओर से था। 4 परन्तु उनके बारे में शहर के लोगों में मतभेद हो गया। कुछ लोग यहूदी-अगुओं के पक्ष में हो गए और कुछ लोगों ने प्रेरितों का साथ दिया। 5, 6 जब पौलुस और बरनबास को यह षड्यन्त्र मालूम हुआ कि अन्यजातियों, यहूदियों और यहूदी नेताओं की भीड़ उन पर हमला करने और उन्हें पत्थरवाह करने पर है, तब वे अपनी जान बचाकर भागे, और लुकाउनिया, लुस्त्रा, दिरबे और आसपास के स्थानों में होते हुए, 7 वहां सुसमाचार प्रचार करते गए।

8 जब वे लुस्त्रा में थे, तो वहां एक व्यक्ति था जो अपने पांवों से लाचार था, वह जन्म ही से लंगड़ा था। 9 पौलुस के प्रचार करते समय वह सुन रहा था, और पौलुस का ध्यान उस पर गया और उसने समझ लिया कि उसमें चंगा होने के लिए विश्वास है। 10 तब पौलुस ने उससे पुकार कर कहा, "खड़े हो?" और वह उछलकर खड़ा हो गया और चलने लगा! 11 जब लोगों ने जो सुन रहे थे, देखा कि पौलुस ने क्या किया है, तो बड़ी ज़ोर से (अपनी भाषा में) चिल्लाकर कहा, "ये मनुष्य देवता हैं।" 12 उन्होंने निर्णय किया कि बरनबास यूनानी देवता ज्यूस, और पौलुस हिरमेस है क्योंकि वह प्रमुख वक्ता था! 13 उस शहर की सीमा पर बसे, ज्यूस के मन्दिर का पुरोहित, बलिदान चढ़ाने के लिए बैलों और फूलों को लेकर जनसमूह के साथ फाटक पर आ पहुंचा। 14 परन्तु जब बरनबास और पौलुस ने देखा कि क्या हो रहा है तो निराश होकर अपने वस्त्र फाड़े और लोगों के बीच यह चिल्लाते दौड़े, 15 "लोगो! क्या कर रहे हो? हम तो केवल तुम्हारे ही समान मनुष्य हैं! हम तुमको यह शुभ-सन्देश सुनाने आए हैं कि तुम इन निरर्थक वस्तुओं से फिरकर उसके बदले जीवित परमेश्वर से प्रार्थना करो जिसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और उनमें की सब वस्तुओं को बनाया है। 16 बीते दिनों में उन्होंने सब जातियों को उन्हीं की इच्छा पर चलने दिया, 17 तौभी परमेश्वर ने अपने आप को बिना गवाह के नहीं छोड़ा, जो दया के कार्य उसने किए जैसे तुम्हें वर्षा भेजना और अच्छी फसल और भोजन और आनन्द देना-ये सदा उसका स्मरण दिलाने वाले रहे।"

18, 19 तौभी, कुछ ही दिनों के बाद, कई यहूदी अन्ताकिया और इकुनियुम से आए और उन्होंने लोगों को हिंसक भीड़ में बदल दिया जिसने पौलुस को पत्थरवाह किया और उसे मरा जानकर शहर के बाहर घसीटती ले गई। 20 परन्तु जब विश्वासी उसके चारों ओर आ खड़े हुए, तब वह उठा और वापिस शहर में गया। दूसरे दिन वह बरनबास के साथ दिरबे को गया। 21 वहां सुसमाचार प्रचार करने और अनेक शिष्य बनाने के बाद, वे दोनों फिर लुस्त्रा, इकुनियुम और अन्ताकिया को लौटे, 22 जहां उन्होंने विश्वासियों को सहायता दी कि वे परमेश्वर के और आपसी प्रेम में बढ़ें। उन्होंने उनको उत्साह दिलाया कि वे सब सताव के रहते हुए भी विश्वास में बने रहें, यह स्मरण दिलाकर कि उनको अनेक क्लेश सहकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा 23 पौलुस और बरनबास ने हर एक कलीसिया में प्राचीनों को नियुक्त किया और उपवास के साथ उनके लिए प्रार्थना करके, उनको प्रभु की देख-रेख में सौंप दिया जिन पर वे विश्वास रखते थे। 24 तब वे फिर पिसिदिया होते हुए पंफूलिया में लौटे, 25 और फिर पिरगा में प्रचार कर, अत्तलिया को चले गए। 26 अन्त में वे

जहाज द्वारा अन्ताकिया को लौट गए, जहां से उनकी यात्रा शुरू हुई थी, और जहां उस कार्य के लिए, जो अब पूरा हुआ, वे परमेश्वर को अर्पित किए गए थे। 27 वहा पहुंच कर उन्होंने विश्वासियो को इकट्ठा किया और अपनी यात्रा का हाल बताया, कि किस प्रकार से परमेश्वर ने विश्वास का द्वार अन्यजातियो के लिए भी खोला है 28 और वे वहां अन्ताकिया मे बहुत दिनो तक विश्वासियो के साथ ठहरे।

15 1 जब पौलुस और बरनबास अन्ताकिया मे थे, तब कई मनुष्य यहूदिया मे आए और विश्वासियो को सिखाने लगे कि जब तक वे खतने की प्राचीन यहूदी प्रथा का पालन न करे तब तक उद्धार नही पा सकते। 2 पौलुस और बरनबास ने उनके साथ लम्बे समय तक वाद-विवाद और विचार किया, और अन्त मे विश्वासियो ने उनको, और उनके साथ वहां के कुछ व्यक्तियो को यरूशलेम भेज दिया, कि इस प्रश्न पर वहा प्रेरितो और प्राचीनो के साथ बातें करें 3 पूरी मण्डली उनको शहर के बाहर तक पहुंचाने के लिए उनके साथ गई, इसके बाद वे यरूशलेम की ओर चल पडे, मार्ग मे फीनीके और सामरिया शहरो में ठहरते गए कि विश्वासियो से भेंट करें, उनको बताते गए कि अन्यजाति भी विश्वासी हो रहे हैं—जिससे सब आनन्दित हुए। 4 यरूशलेम पहुंचकर, उन्होंने कलीसिया के अगुओं से भेंट की—सब प्रेरित और प्राचीन उपस्थित थे—और पौलुस और बरनबास ने सब हाल सुनाया कि परमेश्वर ने उनकी सेवा-द्वारा क्या किया है। 5 परन्तु तब कुछ व्यक्तियों ने जो विश्वासी होने से पहले फरीसी थे, खड़े होकर कहा कि सब लोगों के लिए जो अन्यजातियो में से विश्वासी होते हैं, खतना अनिवार्य होना चाहिए और उन्हे सब यहूदी-प्रथाओ और रीतियों का पालन करना चाहिए।

6 तब प्रेरितों और कलीसिया के प्राचीनों ने इस प्रश्न का निर्णय करने के लिए आगे सभा ठहराई। 7 सभा में लम्बे वाद-विवाद, के बाद, पतरस ने खड़े होकर उनसे इस प्रकार कहा, "भाइयो, तुम सब जानते हो कि बहुत दिन पहले परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे बीच से अन्यजातियों को शुभ सन्देश सुनाने के लिऐ चुना, ताकि वे भी विश्वास कर सकें। 8 परमेश्वर ने, जो मनुष्यो के हृदयो को जानता है, हमारे ही समान अन्यजातियों को पवित्र आत्मा देने के द्वारा इस तथ्य को प्रमाणित किया कि वह उनको ग्रहण करता है। 9 उन्होंने हमारे और उनके मध्य कोई भेद नही किया, क्योंकि परमेश्वर ने जैसे हमारे, वैसे ही उनके जीवन को भी विश्वास के द्वारा शुद्ध किया। 10 और अब क्या तुम अन्यजातियो पर उस जुए का भारी बोझ लादने के द्वारा, जिसे न हम, न ही हमारे पूर्वज उठा सके, परमेश्वर को परखना चाहते हो? 11 क्या तुम्हें विश्वास नही कि सब एक ही प्रकार से, प्रभु यीशु के वरदान के द्वारा उद्धार पाते हैं?"

12 फिर और कोई वादविवाद नही हुआ, और अब सब बरनबास और पौलुस की सुनने लगे कि किस प्रकार से परमेश्वर ने उनके द्वारा अन्य जातियो के बीच आश्चर्यकर्म किए। 13 जब उनका बोलना समाप्त हुआ, तब याकूब ने सभा मे कहा, "भाइयो, मेरी सुनो।

14 पतरस ने तुम्हे उस समय के विषय में बताया जब परमेश्वर ने पहली बार अपने आप को अन्यजातियो पर प्रकट किया ताकि अपने नाम की बड़ाई के लिए उनमे से अपनी प्रजा चुन ले। 15 और अन्यजातियों के विश्वासी हो जाने का तथ्य भविष्यद्वक्ताओं के वचनों के अनुसार है। उदाहरण के लिए, भविष्यद्वक्ता आमोस[1] का लिखा हुआ यह वचन सुनो। 16 (प्रभु कहता है[2]), कुछ समय बाद मैं लौटूंगा और दाऊद के साथ टूटी हुई प्रतिज्ञा को नई

---

[1] यही आशय है। आमोस 9 11-12 पढ़िए। [2] मूलत "दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊंगा, उसके खंडहरों को फिर बनाऊंगा, और उसे फिर खड़ा करूंगा।"

करूंगा, 17 जिससे अन्यजाति भी, प्रभु को पाएं—अर्थात् वे सब जिन पर मेरे नाम का चिन्ह है। 18 ऐसा ही प्रभु कहता है, जो आरम्भ से बनाई हुई अपनी योजनाओं को प्रकट करता है। 19 "और इसलिए मेरा निर्णय है कि हमें जोर नहीं देना चाहिए कि परमेश्वर की ओर फिरने वाले अन्यजातियों को हमारी व्यवस्था का पालन अवश्य करना चाहिए, 20 सिवाय इसके कि हमें उनको लिखना चाहिए कि वे मूर्तियों को बलि किए हुए मांस को खाने से, सब व्यभिचार से, और गला घोंट कर मारे गए पशुओं के लोहू सहित मांस खाने से अपने को बचाए रखें। 21 क्योंकि इन बातों के विरुद्ध प्रचार कई पीढ़ियों से हर एक शहर के यहूदी आराधनालयों में हर सब्त के दिन, होता आया है।"

22 तब प्रेरितों और प्राचीनों और पूरी सभा ने पौलुस और बरनबास के साथ प्रतिनिधियों को अन्ताकिया भेजने के पक्ष में मत दिया कि वे इस निर्णय के विषय मे बताएँ। चुने गए व्यक्ति—यहूदा (जो बरसब्बा भी कहलाता है) और सीलास दोनों कलीसिया के अगुवों में से थे 23 वे अपने साथ यह चिट्ठी लेते गए : यरूशलेम के प्रेरित, प्राचीन और भाइयों की ओर से "प्रति अन्ताकिया, सूरिया और किलकिया के भाइयों के लिए नमस्कार! 24 हमने सुना है कि यहां के कुछ विश्वासियों ने तुम्हें चिन्ता मे डाल दिया है और तुम्हारे उद्धार पर प्रश्न[3] उठाया है, परन्तु उनको ऐसी कोई आज्ञा हमसे नहीं मिली थी। 25 इसलिए एकमत होकर इस निर्णय को लेने के बाद, हमें ठीक जान पड़ा कि अपने प्रिय बरनबास और पौलुस के साथ, इन दोनों प्रतिनिधियों को तुम्हारे पास भेजें। 26 ये व्यक्ति यहूदा और सीलास, जिन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के लिए अपना जीवन खतरे मे डाला है- अपने मुंह से बताएँगे कि हमने तुम्हारे प्रश्न के सम्बन्ध मे क्या निर्णय लिया है। 27, 28, 29 क्योंकि यह पवित्र आत्मा को और हमको अच्छा लगा कि इसके सिवाय यहूदी व्यवस्था का और अधिक बोझ तुम पर न डालें कि तुम मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन के करने और गला घोंटे हुए पशुओं को लोहू समेत खाने[4], और व्यभिचार से अवश्य अलग रहो। यदि इतना करो तो ठीक है आगे शुभ।"

30 चारों व्यक्ति तुरन्त अन्ताकिया गए, जहां उन्होंने मसीहियों की साधारण बैठक बुलाई और उन्हें चिट्ठी दे दी। 31 और उसे पढ़कर उस दिन पूरी कलीसिया बड़ी आनन्दित हुई। 32 तब यहूदा और सीलास दोनों ने, जिन्हें बोलने का वरदान[5] था, विश्वासियों को लम्बा उपदेश देकर, उन्हें विश्वास में दृढ़ किया। 33 वे कई दिनों[6] तक ठहरे रहे, और तब यहूदा और सीलास उनके लिए जिन्होंने उन्हें भेजा था, नमस्कार और धन्यवाद लेकर लौट गए। 34, 35 पौलुस और बरनबास अन्ताकिया में ही ठहरे रहे कि अन्य लोगों की सहायता करें जो वहां प्रचार करते और शिक्षा दे रहे थे।

36 कई दिनों बाद पौलुस ने बरनबास को सुझाव दिया कि वे दोनों फिर तुर्किस्तान को लौटें, और प्रत्येक शहर में जाएं जहां उन्होंने पहले प्रचार किया था[7], देखें कि नए विश्वासियों का क्या हाल है। 37 बरनबास सहमत हो गया, और उसने यूहन्ना-मरकुस को साथ ले जाना चाहा। 38 परन्तु पौलुस को यह विचार बिलकुल अच्छा नहीं लगा, क्योंकि यूहन्ना ने पंफूलिया में उसका साथ छोड़ दिया था। 39 इस पर उनका मतभेद इतना अधिक हुआ कि वे अलग हो गए। बरनबास ने मरकुस को साथ लिया और जहाज़ से कुप्रुस चला गया, 40, 41 जबकि पौलुस ने सीलास को चुना और, विश्वासियों की आशिष लेकर, सूरिया और

---

[3] मूलत "मन उलट दिए हैं।" [4] मूलत "और लोहू से।" [5] अथवा "भविष्यद्वक्ता।" [6] मूलत "कुछ दिन ठहर कर।" [7] यही तात्पर्य है। मूलत "जिन जिन नगरों में हम ने प्रभु का वचन सुनाया था, आओ, फिर उनमें चलकर .."

किलिकिया जाने के लिए निकला, कि वहां कलीसियाओं को उत्साह दिलाएँ।

16 1 पौलुस और सीलास पहले दिरबे गए। फिर लुस्त्रा गए जहां वे एक विश्वासी, तीमुथियुस, से मिले जिसकी माता मसीही यहूदी थी,परन्तु उसका पिता यूनानी था। 2 लुस्त्रा और इकुनियुम के विश्वासियों मे तीमुथियुस का अच्छा नाम था। 3 इसलिए पौलुस ने उसे यात्रा में साथ हो लेने को कहा। उस क्षेत्र के यहूदियों का मान रखते हुए, उसने वहां से जाने से पहले उसका खतना किया, क्योंकि सब जानते थे कि उसका पिता यूनानी है (और उसने पहले उसकी आज्ञा नही दी थी[1]।) 4 तब वे एक शहर से दूसरे शहर में गए, और अन्यजातियों के विषय में निर्णय सुनाते गए, जो यरूशलेम में प्रेरितों और प्राचीनों द्वारा लिया गया था। 5 इस प्रकार कलीसिया प्रतिदिन विश्वास और संख्या में बढ़ती गई।

6 इसके बाद वे फ्रूगिया और गलतिया से यात्रा करते गए, क्योंकि पवित्र आत्मा ने उनसे कहा था कि वे एशिया के तुर्की प्रान्त में उस समय न जाएँ। 7 तब मूसिया की सीमा तक जाकर वे उत्तर से बितूनिया प्रान्त को जाने के लिए निकले, परन्तु फिर यीशु के आत्मा ने अनुमति नही दी। 8 इसलिए उसके बदले वे मूसिया प्रान्त से होते हुए त्रोआस शहर को चले गए। 9 उस रात पौलुस ने एक दर्शन देखा। अपने स्वप्न मे उसने यूनान के मकिदुनिया में एक पुरुष को देखा, जो उससे विनती कर रहा था, "यहां पर आ और हमारी सहायता कर।" 10 अब निश्चय हुआ, हम[2] मकिदुनिया जाएँ, क्योंकि इसका हम केवल यही अर्थ ले सकते थे कि वहां शुभ सन्देश सुनाने के लिए परमेश्वर हमे भेज रहा है।

11 हमने त्रोआस से समुद्र यात्रा आरम्भ की और सीधे सुमात्रा पहुंचे, और दूसरे दिन नियापुलिस में, 12 और अन्त में मकिदुनिया की सीमा के ठीक अन्दर, रोमियों[3] की बस्ती, फिलिप्पी में पहुंचे और वहां कई दिनों तक रहे। 13 सब्त के दिन, हम शहर के बाहर कुछ दूर नदी किनारे गए जहां हमने सुना कि कुछ लोग प्रार्थना के लिए इकट्ठे होते हैं: और हमने कई स्त्रियों को जो वहां आई थी, धर्मशास्त्र में से सिखाया। 14 उनमें से एक लुदिया थी, जो थुआथीरा शहर की, बैंजनी कपड़ों का व्यापार करनेवाली, थी। वह पहले से ही परमेश्वर की उपासना करती थी और जब वह हमारी सुन रही थी, तब परमेश्वर ने उसका मन खोला और उसने पौलुस की कही हुई सब बातों को ग्रहण किया। 15 उसने अपने पूरे घराने समेत बपतिस्मा लिया और हमसे विनती की, कि उसके पाहुन बनें। उसने कहा, "यदि तुम मानते हो कि मैं प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य हूं, तो आओ और मेरे घर ठहरो।" और उसने हमसे तब तक बहुत विनती की जब तक हम नहीं गए।

16 एक दिन जब हम नदी किनारे प्रार्थना के स्थान से जा रहे थे, तब हमें भावी कहने वाली दुष्टात्मा से भरी हुई एक गुलाम लड़की मिली। वह अपने मालिकों के लिए बहुत धन कमाती थी। 17 वह चिल्लाते हुए हमारे पीछे लग गई, 'ये मनुष्य परमेश्वर के सेवक है और वे तुम्हें बताने आए हैं कि तुम अपने पापों की क्षमा कैसे पा सकते हो।' 18 बहुत दिनों तक ऐसा ही होता रहा, अन्त में पौलुस ने, अत्यन्त दुःख के साथ, फिरकर उसके अन्दर की दुष्टात्मा से कहा, "मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूँ कि उसमें से निकल जा।" और उसी क्षण दुष्टात्मा ने उसे छोड दिया।

19 उसके मालिकों की धन कमाने की आशा अब समाप्त हो गई, तो उन्होंने पौलुस और सीलास को पकड लिया और खींचते हुए बाजार में न्यायाधीशों के सामने ले आए।

[1] यही आशय है। [2] इस पुस्तक का लेखक, लूका, अब यात्रा में पौलुस के साथ हो लिया। [3] यही आशय है।

20, 21 उन्होंने चिल्लाकर कहा, "ये मनुष्य हमारे शहर का बिगाड़ कर रहे हैं। ये लोगों को सिखा रहे हैं कि वे रोमी नियमो के विरुद्ध कार्य करें।" 22 तब पौलुस और सीलास के विरुद्ध उपद्रवी मनुष्यों की भीड़ खड़ी हो गई, और न्यायाधीशों ने आज्ञा दी कि उनके वस्त्र उतारकर उन्हें बेंत से मारा जाए। 23 बार-बार बेंतो की मार उनकी नंगी पीठ पर पड़ती गई और बाद में उन्हें जेलखाने में डाल दिया गया। दारोगा को डराया गया कि उनके बच निकलने पर उसे मृत्युदण्ड मिलेगा, 24 इसलिए उसने जोखिम मे नही पड़ना चाहा, परन्तु उन्हें भीतरी तहखाने में रखा और उनके पावों को *काठ में जकड़* दिया।

25 लगभग आधी रात के समय, जब पौलुस और सीलास प्रार्थना कर रहे थे और प्रभु का भजन गा रहे थे—और दूसरे क़ैदी सुन रहे थे—26 तभी अचानक एक बड़ा भूकम्प आया और जेलखाने की नीव तक हिल गई। सब दरवाज़े खुल गए और सब क़ैदियों की हथकड़ियाँ खुल कर गिर गई। 27 दारोगा ने जागकर देखा कि जेलखाने के दरवाज़े खुले पड़े हैं, और यह सोचकर कि क़ैदी भागकर बच निकले हैं, उसने अपनी हत्या करने के लिए तलवार खींची। 28 परन्तु पौलुस ने उससे चिल्लाकर कहा, "ऐसा मत करो। हम सब यहाँ हैं।" 29 भय से कांपते हुए, दारोगा ने बत्ती मंगाई और तहखाने में दौड़ता हुआ आया और पौलुस तथा सीलास के सामने गिर पड़ा। 30 उसने उनको बाहर निकाला और उनसे पूछा, "महाशय मैं उद्धार पाने के लिए क्या करूं?" 31 तब उन्होंने उत्तर दिया, "प्रभु यीशु पर विश्वास कर तो तू और तेरा पूरा घराना भी उद्धार पाएगा।" 32 तब उन्होंने उसको और उसके पूरे घराने को प्रभु का शुभ-सन्देश सुनाया। 33 उसी समय उसने उनके घावों को धोया, और उसने और उसके पूरे घराने ने बपतिस्मा लिया। 34 तब उसने उनको अपने घर ले जाकर उनके आगे भोजन परोसा। तब उसने और उसके पूरे घराने ने बहुत आनन्द मनाया क्योंकि अब वे सब विश्वासी थे।

35 अगले दिन सुबह न्यायाधीशों ने सिपाहियों के अफसरों को दारोगा से यह कहने भेजा, "उन मनुष्यों को छोड़ दो।" 36 तब दारोगा ने पौलुस से कहा कि वे वहाँ से जाने के लिए स्वतन्त्र हैं। 37 परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया, "नहीं, वे ऐसा नही कर सकते! उन्होंने हम पर बिना मुकदमा चलाए हमें सबके सामने मारा और जेलखाने मे डाला—हम तो रोमी *नागरिक हैं! और अब वे चाहते हैं कि हम* चुपके से चले जाएँ? कभी नहीं! वे स्वयं आएं और हमें मुक्त करें।" 38 सिपाहियों के अफसरों ने न्यायाधीशों को बता दिया, जब उन्होंने सुना कि पौलुस और सीलास रोमी नागरिक हैं तो वे अत्यन्त डर गए। 39 और उन्होंने जेलखाने में आकर उनसे चले जाने की विनती की, और उनको बाहर लाकर अनुरोध किया कि शहर को छोड़ दें। 40 तब पौलुस और सीलास लुदिया के घर लौट गए जहाँ उन्होंने विश्वासियों से भेंट की और शहर छोड़ने से पहले एक बार फिर उनको सन्देश दिया।

17 1 अब वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया शहरों की यात्रा करते हुए थिस्सलुनीके मे आए, जहाँ एक यहूदी आराधनालय था। 2 पौलुस अपनी रीति के अनुसार वहाँ प्रचार करने गया और लगातार तीनों सब्त के दिन उसने लोगों के लिए धर्मशास्त्र को खोला, 3 और मसीह के दुख उठाने और उसके फिर जी उठने की भविष्यद्वाणियों को समझाते हुए, सिद्ध किया कि यीशु ही मसीह हैं। 4 कई सुननेवालों ने मान लिया और विश्वासी बन गए—जिनमें बड़ी संख्या मे भक्त-यूनानी पुरुष, और शहर[1] की अनेक प्रतिष्ठित स्त्रियाँ भी

[1] कई हस्तलेखों में लिखा है, "प्रमुख पुरुषों की अनेक स्त्रियों ने..।"

थीं। 5 परन्तु यहूदी अगुवे जल-भुन गए और उन्होंने गुन्डों को भड़काया कि भीड़ को जमा-कर दंगा शुरु करें। उन्होंने यासोन के घर पर इस विचार से धावा किया, कि पौलुस और सीलास को दंड दिलाने के लिए नगर परिषद के सामने ले जाए। 6 उनको वहाँ न पाकर वे यासोन और दूसरे विश्वासियों को, उनके बदले नगर परिषद के सामने ले गए। उन्होंने चिल्लाते हुए कहा, "पौलुस और सीलास ने सम्पूर्ण ससार को उलट-पुलट दिया है, और वे अब यहाँ हमारे शहर मे भी गड़बड़ी मचा रहे हैं। 7 और यासोन ने उन्हें अपने घर मे रहने दिया है। वे सब राजद्रोह के अपराधी हैं, क्योंकि वे कैसर के बदले किसी दूसरे राजा, यीशु, का दावा करते हैं।" 8, 9 शहर के लोग और साथ मे न्यायाधीश भी, ये बातें सुनकर चिन्तित हुए और उन्हें केवल जमानत ले लेने के बाद ही जाने दिया।

10 उस रात मसीहियों ने शीघ्र ही पौलुस और सीलास को बिरीया भेज दिया, और वे हमेशा के समान यहूदी आराधनालय मे प्रचार करने गए। 11 परन्तु बिरीया के लोग, थिस्स-लुनीके के लोगों से अधिक खुले मन के थे, और उन्होने आनन्द के साथ सन्देश को सुना। वे प्रतिदिन यह जाँचने के लिए धर्मशास्त्र मे से ढूढते रहे, कि पौलुस और सीलास के कथन सच हैं या नही। 12 परिणाम यह हुआ कि उनमे से बहुतो ने विश्वास किया, जिनमे कई प्रमुख यूनानी स्त्रिया और अनेक पुरुष भी थे। 13 परन्तु जब थिस्सलुनीके के यहूदियों ने सुना कि पौलुस बिरीया मे है, तो वे वहा गए और उन्होंने आपत्ति खड़ी कर दी। 14 विश्वासियों ने तुरन्त कदम उठाया, और पौलुस को समुद्र तट पर भेज दिया, जबकि सीलास और तीमु-थियुस वहीं रह गए। 15 पौलुस के संग हो लेने वाले उसके साथ एथेन्स तक गए और सीलास और तीमुथियुस के लिए यह सदेश लेकर वापिस आए कि वे शीघ्र वहां जाएं और उनके साथ हो लें।

16 जब पौलुस उनके लिए एथेन्स में ठहरा हुआ था, तो उसे पूरे शहर भर में हर जगह मूरतों को देखकर अत्यन्त दुख हुआ। 17 वह आराधनालय में गया कि वहाँ यहूदियों और भक्त-यूनानियों से वादविवाद करे, और उसने प्रतिदिन चौक में उनसे बातें कीं जो वहा आते थे। 18 उसकी भेंट कई इपिकूरी और स्तोईकी दार्शनिकों से हुई। जब उसने उनको यीशु और उनके मृतकों मे से फिर जी उठने के विषय मे बताया, तो उन्होंने कहा, "वह बकवादी है," या "वह किसी विदेशी धर्म को बढ़ावा दे रहा है।" 19 परन्तु उन्होंने उसे मार्स-पर्वत के बाजार मे बुलाया। उन्होंने कहा, 20 'आ और हमे इस नए धर्म के विषय में और बता, क्योंकि तू कई अनोखी बातें बता रहा है और हम अधिक सुनना चाहते हैं।' 21 (मैं समझा दूं कि एथेन्स के सब लोग साथ ही एथेन्स मे रहनेवाले सब विदेशी, सबसे नए से नए विचार पर बातचीत करने मे ही अपना समय बिताते थे।) 22 तब पौलुस ने मार्स-पर्वत के बाजार मे उनके सामने खड़े होकर, उनको इस प्रकार सन्देश दिया: "एथेन्स के लोगों, मै देखता हूं कि तुम बड़े धर्मी हो, 23 क्योंकि जब मैं घूम रहा था तब मैंने तुम्हारी अनेक वेदियो को देखा, और उनमे से एक पर यह लिखा था—'अनजाने परमेश्वर के लिए।' तुम उसकी उपासना करते रहे हो; बिना जाने कि वह कौन है, और अब मैं तुम्हे उसके बारे मे बताना चाहता हूं। 24 "उसने ससार और उसमे की हर वस्तु को बनाया है, और इसलिए कि वह स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु है, वह मनुष्यों के बनाए मन्दिरों में नही रहता। 25 और मनुष्य के हाथ उसकी आवश्यकता पूरी नही कर सकते—क्योंकि उसको कोई आवश्यकता नही है। वह स्वयं सबको जीवन और श्वास देता है। और सबकी आवश्यकताओ को पूरी करता है। 26 उसने एक पुरुष*, आदम, से

* यही आशय है।

संसार के सब लोगों की सृष्टि की, और सब जातियों को पृथ्वी भर में बिखेर दिया। उसने पहले ही ठहरा दिया कि किसे कब उठना और गिरना है। उसने उनकी सीमाएँ भी ठहरा दीं। 27 "इन सब में उसका उद्देश्य यह है कि वे परमेश्वर को खोजें, और शायद उस तक पहुंचने का अपना मार्ग अनुभव करें और उसको प्राप्त कर लें—यद्यपि वह हममें से किसी से भी दूर नहीं है। 28 क्योंकि उसमें हम जीवित रहते, चलते-फिरते और अस्तित्व रखते हैं! जैसे तुम्हारे ही एक कवि ने कहा है, "हम परमेश्वर की सन्तान हैं।" 29 यदि यह सच है, तो हमें परमेश्वर के विषय में ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि वह मनुष्यों द्वारा सोने या चांदी से बनाई हुई या पत्थर को काटकर बनाई गई कोई मूर्ति है। 30 इन बातों के विषय में परमेश्वर ने मनुष्यों की बीती हुई अज्ञानता को सहा, परन्तु अब उसकी यह आज्ञा सबके लिए है कि मूर्तियों को छोड़कर केवल उसी की उपासना करें। 31 क्योंकि उसने अपने ठहराए गए व्यक्ति के द्वारा संसार का उचित न्याय करने के लिए एक दिन ठहराया है, और उसको फिर से जिलाकर उसकी ओर संकेत किया है।"

32 जब उन्होंने मरे हुओं में से किसी व्यक्ति के फिर जी उठने के विषय में पौलुस को कहते सुना, तो कुछ हँसने लगे, परन्तु दूसरों ने कहा, "हम बाद में इसके विषय में और सुनना चाहते हैं।" 33 इस पर पौलुस के साथ उनकी बातचीत समाप्त हुई, 34 परन्तु कुछ लोग उसके साथ मिल गए और विश्वासी बन गए। उनमें दियुनुसियुस नामक, नगर-परिषद का एक सदस्य, और दमरिस नामक एक स्त्री, और दूसरे, भी थे।

18 1 तब पौलुस ने एथेन्स छोड़ दिया और कुरिन्थुस गया। 2, 3 वहाँ उसकी जान-पहचान अक्विला नामक एक यहूदी से हुई, जिसका जन्म पुन्तुस में हुआ था, जो हाल ही में अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ इटली से आया था। क्लौदियुस कैसर की इस आज्ञा के कारण कि सब यहूदियों को रोम से निकाल दिया जाए, उन्हें इटली छोड़ना पड़ा था। पौलुस ने उनके साथ रहकर काम किया, इसलिए पौलुस भी उनके साथ रहकर तम्बू बनाने का काम करने लगा। 4 हर सब्त के दिन पौलुस आराधनालय में आकर, यहूदियों और यूनानियों दोनों को प्रमाण देकर सन्तुष्ट करने की कोशिश करता था।

5 और सीलास और तीमुथियुस के मकिदुनिया से आ जाने के बाद, पौलुस ने अपना पूरा समय यहूदियों को प्रचार करने और गवाही देने में बिताया कि यीशु ही मसीह है। 6 परन्तु जब यहूदियों ने उसका विरोध किया और यीशु का विरोध करते हुए, परमेश्वर की निन्दा की, तब पौलुस ने अपने वस्त्र की धूल झाड़ी और कहा, "तुम्हारा खून तुम्हारे ही सिर पर हो—मैं निर्दोष हूं—अब से मैं अन्यजातियों में प्रचार करूंगा।" 7 इसके बाद वह एक अन्यजाति,[1] तितुस युस्तुस के घर ठहरा, जो परमेश्वर की आराधना करता था और यहूदी आराधनालय के पास रहता था। 8 तौभी, आराधनालय के अगुवे, क्रिस्पुस ने और उसके पूरे घराने ने प्रभु पर विश्वास किया और बपतिस्मा लिया—जैसे कुरिन्थुस के अनेक दूसरे लोगों ने भी किया। 9 एक रात प्रभु ने पौलुस से दर्शन में बातें की और कहा, "मत डर! कहे जा! मत रुक। 10 क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ और कोई तेरी हानि नहीं कर सकता। यहाँ इस शहर में मेरे बहुत से लोग हैं।" 11 इसलिए पौलुस वहाँ अगले डेढ़ साल तक, परमेश्वर के सत्य की शिक्षा देता रहा।

12 परन्तु जब गल्लियो अखाया देश का राज्यपाल बना, तब यहूदियों ने मिलकर पौलुस के विरुद्ध कार्यवाही की और उसे न्याय के लिए

[1] यही आशय है।

राज्यपाल के सामने लाए। 13 उन्होंने पौलुस पर दोष लगाया, "यह लोगों को ऐसी रीतियों से परमेश्वर की उपासना करने को विवश करता है जो रोमी कानून के विरुद्ध हैं।" 14 परन्तु जैसे ही पौलुस ने अपने बचाव में बोलना आरम्भ किया, गल्लियो ने उस पर दोष लगाने वालो की ओर फिरकर कहा, "हे यहूदियो, सुनो, यदि यह किसी अपराध का मामला होता, तो मैं तुम्हारी सुनने पर विवश होता, 15 परन्तु इसलिए कि यह शब्दो और नामो और तुम्हारी यहूदी-व्यवस्था का प्रश्न है, तुम्ही जानो। मेरी रुचि और मेरा कोई भाग इसमे नही।" 16 और उसने उन्हे अदालत से बाहर निकाल दिया। 17 तब उपद्रवी भीड ने आराधनालय के नए अगुए सोस्थिनेस को झपटकर पकड लिया, और अदालत के बाहर उसे पीटा। परन्तु गल्लियो ने इसकी कुछ चिन्ता न की।

18 पौलुस इसके बाद शहर में कई दिनों तक ठहरा रहा और तब उसने मसीहियो से विदाई ली और अपने साथ प्रिसकिल्ला और अक्विला को साथ ले, सूरिया जाने के लिए जहाज पर चल पडा। किंख्रिया में, पौलुस ने यहूदी-प्रथा के अनुसार अपना सिर मुण्डाया, क्योंकि उसने शपथ खाकर प्रतिज्ञा की थी[2]। 19 इफिसुस के बन्दरगाह पर पहुंचकर, उसने हमें जहाज पर छोड दिया जबकि वह आराधनालय मे यहूदियो के साथ विचार-विमर्श करने के लिए गया। 20 उन्होंने उनसे कुछ दिन ठहरने की विनती की, परन्तु उसने अनुभव किया कि उसके पास समय[3] की कमी थी। 21 उसने कहा, "मुझे यरूशलेम मे किसी न किसी प्रकार छुट्टी के लिए पहुंचना ही है[4]।" परन्तु उसने प्रतिज्ञा की कि यदि परमेश्वर चाहे तो वह बाद मे फिर इफिसुस आएगा और तब हमने फिर जहाज की यात्रा की। 22 हम फिर कैसरिया के बन्दरगाह पर रुके जहां से वह (यरूशलेम की[5]) कलीसिया से भेंट करने के लिए गया और तब जहाज पर अन्ताकिया चला गया। 23 वहाँ कुछ समय बिताकर वह फिर तुर्किस्तान जाने के लिए निकला और गलतिया और फ्रूगिया से होकर जाते हुए, उसने सब विश्वासियों से भेंट की, उन्हें उत्साह दिलाया और उनकी सहायता की, कि प्रभु मे उन्नति करें।

24 अपुल्लोस नामक एक यहूदी, विद्वान पवित्र-शास्त्र का शिक्षक और प्रचारक, उसी समय मिस्र के सिकन्दरिया से इफिसुस आया हुआ था। 25, 26 जब वह मिस्र मे था, तो किसी ने बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना के विषय में और यूहन्ना ने जो कुछ यीशु के बारे मे कहा था उसे बताया था, परन्तु वह केवल इतना ही जानता था। उसने बाकी कहानी कभी नही सुनी थी। इसलिए वह निडर होकर बड़े जोश से आराधनालय मे प्रचार कर रहा था, "मसीह आ रहा है। उसको ग्रहण करने के लिए तैयार रहो।" प्रिसकिल्ला और अक्विला वहा थे और उन्होंने उसकी बात सुनी—और वह बडा सुन्दर उपदेश था। बाद में वे उससे मिले और उसे समझाया कि यूहन्ना के समय से लेकर यीशु के साथ क्या हुआ है, और उन सबका क्या अर्थ है[6]। 27 अपुल्लोस यूनान जाने की सोच रहा था और विश्वासियो ने इसमे उसको उत्साहित किया। उन्होने वहा अपने साथी विश्वासियो को चिट्ठी लिखी, उनको बताते हुए कि उसका स्वागत करें। और यूनान मे उसके पहुंचने पर, कलीसिया को दृढ करने मे परमेश्वर ने उसका बड़ा प्रयोग किया, 28 क्योंकि उसने साधारण

---

[2] सम्भवत किसी प्रार्थना का उत्तर मिलने के कारण धन्यवाद स्वरूप यरूशलेम मे बलिदान चढाने की शपथ। सिर का मुण्डन, ऐसी भेंटो और बलिदानों को मन्दिर में परमेश्वर के लिए चढ़ाने के तीस दिन पूर्व किया जाता था।
[3] सम्भवत नियम तीस दिनो के अन्दर यरूशलेम पहुचने के लिए। [4] मूलत "भोजनोत्सव।" यह पूरा वाक्य अनेक प्राचीन हस्तलेखों में नहीं है। [5] यही आशय है। [6] मूलत "परमेश्वर का मार्ग उस को और भी ठीक-ठीक बताया।

वादविवाद में यहूदियों के सब तर्कों का खंडन किया और पवित्र शास्त्र से दर्शाया, कि यीशु ही वास्तव मे मसीह है।

19 1 जब अपुल्लोस कुरिन्थुस मे था, तब पौलुस ने तुर्किस्तान होते हुए यात्रा की और इफिसुस पहुंचा, जहा उसे कई विश्वासी मिले। 2 उसने उनमे पूछा, "क्या विश्वास करते समय तुम्हे पवित्र आत्मा मिला?" उन्होंने उत्तर दिया, "नही, हम नहीं जानते कि तेरे कहने का क्या अर्थ है। पवित्र आत्मा क्या है!" 3 उसने पूछा, "तो फिर तुमने बपतिस्मा लेते समय किस विश्वास को स्वीकार किया?" उन्होंने उत्तर दिया, "जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने सिखाया।" 4 तब पौलुस ने उनको बताया कि यूहन्ना का बपतिस्मा पाप से परमेश्वर की ओर फिरने की इच्छा को दर्शाने के लिए था और कि उसका बपतिस्मा लेनेवालो को आगे यीशु मे विश्वास करना चाहिए, जिनके विषय यूहन्ना ने कहा कि वह बाद मे आनेवाले हैं। 5 उन्होंने जैसे ही यह सुना, प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया। 6 तब, जब पौलुस ने अपने हाथ उनके सिर पर रखे, पवित्र आत्मा उन पर उतरा, और वे अन्य भाषाओं मे बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे। 7 इन व्यक्तियो की संख्या लगभग बारह थी।

8 तब पौलुस ने आराधनालय मे जाकर तीन माह तक हर सब्त के दिन[1] साहस के साथ प्रचार किया, यह बताते हुए कि उसका विश्वास क्या[2] था और क्यों, और अनेक लोगों को यीशु मे विश्वास करने को उत्साहित किया। 9 परन्तु कुछ लोगों ने उसका सन्देश ग्रहण नही किया और सब लोगो के सामने मसीह के विरोध मे कहा, तब उसने उनको फिर प्रचार करने से इन्कार किया और चला गया। विश्वासियो को इकट्ठा कर, उसने तुरन्नुस के व्याख्यानकक्ष मे अलग सभा शुरू की और वहा प्रतिदिन प्रचार किया। 10 ऐसा अगले दो वर्षों तक होता रहा, जिससे आसिया के तुर्की प्रान्त मे सबने-यहूदी और यूनानी दोनों ने प्रभु का सन्देश सुना। 11 और परमेश्वर ने पौलुस को असाधारण आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी, 12 यहां तक कि जब उसका रूमाल या उसके वस्त्र का कोई भाग बीमार लोगो पर रखा जाता था, तो वे चंगे हो जाते थे, और उनमे से दुष्टात्माएँ निकल जाती थी। 13 यहूदियो के एक दल ने, जो एक शहर से दूसरे शहर की यात्रा करते हुए झाड़ा फूंकी करता था, प्रभु यीशु का नाम लेकर इस काम को करने का विचार किया। उन्होंने इस मन्त्र का प्रयोग करने का निश्चय किया: "मैं यीशु के नाम से, जिसका प्रचार पौलुस करता है, तुझसे कहता हू निकल आ।" 14 एक यहूदी याजक, स्क्किवा के सात पुत्र ऐसा कर रहे थे। 15 परन्तु जब उन्होंने एक व्यक्ति पर, जिसमे दुष्टात्मा समाई थी, इस मन्त्र का प्रयोग किया, तो दुष्टात्मा ने उत्तर दिया, "मैं यीशु को जानती हू और मैं पौलुस को भी जानती हूँ, परन्तु तुम कौन हो?" 16 और वह मनुष्य उनमें से दो पर झपटा और उन्हें पीटा, जिससे वे उसके घर से नंगे और बुरी तरह घायल होकर भागे। 17 इस घटना की चर्चा पूरे इफिसुस के यहूदियों और यूनानियों, सबमे फैल गई, और शहर मे भय छा गया, और प्रभु यीशु के नाम का बड़ा आदर हुआ। 18, 19 कई विश्वासियो ने जो पहले काला जादू करते थे, अपने कामों का अंगीकार किया और अपने जादू-मन्त्रो की पुस्तको आदि को लाकर सब लोगों के सामने आग मे जला दिया। (किसी ने उन पुस्तको की कीमत लगभग 80,000 रुपये[4] आकी।) 20 इससे जान पड़ता है कि परमेश्वर के सन्देश का प्रभाव पूरे क्षेत्र पर कितना अधिक पड़ा था।

21 इसके बाद, पवित्र आत्मा[5] के द्वारा

---

[1] अथवा, "का।" [2] यही आशय है। [3] मूलत "परमेश्वर के राज्य के विषय मे।" [4] मूलत "50,000 चादी के ....सिक्के।" [5] मूलत "आत्मा मे ठाना"

पौलुस को प्रेरणा मिली कि यरूशलेम को लौटने से पहले यूनान जाए। उसने कहा, "और उसके बाद मुझे रोम को भी जाना है!" 22 उसने अपने दोनों सहयोगियों, तीमुथियुस और इरास्तुस को, पहले से यूनान भेज दिया जबकि वह कुछ अधिक समय तक तुर्किस्तान मे ठहरा रहा।

23 परन्तु करीब उसी समय, इफिसुम मे मसीहियो के विषय मे बड़ा दंगा शुरू हुआ। 24 यह देमेत्रियुस नामक सुनार से शुरू हुआ, जो कई कारीगरो को काम पर लगाए था कि वे यूनानी देवी डायना के चादी के मन्दिरों को बनाए। 25 उसने अपने कारीगरो के साथ-साथ उसी प्रकार के दूसरे धधो मे लगे हुए लोगों की बैठक बुलाई, और उनसे कहा, "सज्जनो, इस धधे मे हमारी कमाई है। 26 जैसा तुम देख सुन कर अच्छी तरह जानते हो, इस व्यक्ति पौलुस ने बहुत से लोगो को बहकाया है कि हाथ मे बनाए हुए देवता कोई ईश्वर नही हैं। जिसके कारण हमारी आमदनी घटती जा रही है! ऐसा केवल यहा इफिसुस ही मे नही हो रहा है, परन्तु पूरे प्रदेश मे हो रहा है। 27 हा मैं इस स्थिति मे केवल व्यापार के पहलू पर हमारी आमदनी की हानि पर ही नही सोच रहा हूँ परन्तु इस सम्भावना पर भी कि महान देवी डायना का मन्दिर अपना प्रभाव खो देगा, और कि डायना यह वैभवशाली देवी जिसकी पूजा न केवल तुर्किस्तान के इस भाग मे परन्तु समस्त ससार भर मे होती है भुला दी जाएगी।" 28 यह सुनते ही वे आगबबूला हो गये और चिल्लाने लगे, "इफिसियो की डायना महान है।" 29 भीड इकट्ठी होने लगी और देखते-देखते सारे शहर मे हुल्लड मच गया। सब भागते हुए रंगशाला मे गए, और मुकदमे के लिए, पौलुस की यात्रा के साथियो, गयुस और अरिस्तरखुस को भी खीचते ले गए। 30 पौलुस भी अन्दर जाना चाहता था, परन्तु शिष्यो ने उसे नही जाने दिया 31 उस प्रदेश के कई रोमी अफसरो ने भी, जो पौलुस के मित्र थे, उसे सन्देश भेजकर विनती की, कि अन्दर जाकर अपना जीवन खतरे मे न डालें। 32 अन्दर, सब लोग चिल्ला रहे थे, कोई कुछ तो कोई कुछ कहता था—सब ओर गडबड़ी थी। वास्तव मे, उनमे से अधिकाश लोगो को मालूम तक न था कि वे वहा क्यो हैं। 33 कुछ यहूदियो ने भीड मे से सिकन्दर को पहचान लिया और उसे सामने घसीटा। उसने चुपचाप रहने का सकेत किया और बोलने की कोशिश की। 34 परन्तु जब भीड को मालूम हुआ कि वह यहूदी है, तो लोग फिर चिल्लाने लगे और दो घटे तक चिल्लाते रहे: "इफिसियों की डायना महान है! इफिसियों की डायना महान है।" 35 अन्त मे नगर के अध्यक्ष ने उन्हें इतना शान्त किया कि बोल सके। उसने कहा, "इफिसुस के लोगो, सभी जानते हैं कि इफिसुस महान डायना के धर्म का केन्द्र* है, जिसकी मूर्ति हमारे पास स्वर्ग से गिरी है। 36 चूंकि यह ऐसा तथ्य है जिसका खण्डन नही हो सकता, चाहे कुछ भी कहा जाए, तुम्हें घबराना नहीं चाहिए और बिना सोचे-समझे कुछ नही करना चाहिए। 37 तौभी तुम इन पुरुषो को यहा लाए हो जिन्होने उसके मन्दिर से कुछ नही चुराया और न ही उसका अपमान किया है। 38 यदि देमेत्रियुस और कारीगरो का उनके विरुद्ध कोई मामला है, तो कचहरी खुली है और न्यायाधीश उस मुकदमे को एक दम ले सकते हैं। उन्हें कानून के अनुसार व्यवहार करने दो। 39 और यदि किन्ही दूसरे विषयो पर कोई विरोध हो, तो उनका निपटारा नगर-परिषद मे हो सकता है, 40 क्योंकि हमे डर है कि आज के दंगे के लिए हमे रोमी-सरकार को उत्तर देना पड़ेगा, इसलिए कि इसका कोई कारण नही है। और यदि रोम इसका कारण पूछे तो मुझे नही मालूम कि क्या कहना चाहिए।" 41 तब उसने उनको विदा किया, और वे चले गए।

* सुनत "मन्दिर का रक्षक।"

20 1 जब यह समाप्त हो गया, तो पौलुस ने शिष्यों को बुलवाया, उनको विदाई का सन्देश दिया, और विदा लेकर यूनान जाने के लिए निकल गया। 2 उसे मार्ग मे जितने शहर मिले उन सब मे उसने प्रचार किया। 3 वह यूनान मे तीन माह तक ठहरा और सीरिया की यात्रा जहाज पर करने के लिए तैयार हो ही रहा था कि तभी उसे यहूदियों के द्वारा अपने मार डाले जाने के षड्यन्त्र की जानकारी मिली, इसलिए उसने उत्तर की ओर पहले मकिदुनिया जाने का निर्णय किया। 4 कई व्यक्ति उसके साथ यात्रा करते हुए, तुर्किस्तान[1] तक जा रहे थे, वे बिरीया के पुर्रुस का पुत्र सोपत्रुस, थिस्सलुनीके के अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस, दिरबे के गयुस, और तीमुथियुस, और तुखिकुस और त्रुफिमुस थे, जो तुर्किस्तान में अपने घर लौट रहे थे, 5 वे पहले निकलकर हमारे लिए त्रोआस मे ठहरे हुए थे। 6 जैसे ही फसह का त्यौहार खत्म हुआ, हमने उत्तरी यूनान के फिलिप्पी में जहाज लिया और पांच दिन बाद तुर्किस्तान के त्रोआस में पहुंचे, जहां हम सप्ताह भर रहे।

7 इतवार के दिन,[2] हम प्रभु भोज लेने के लिए इकट्ठे हुए। पौलुस ने सन्देश दिया। और इसलिए कि वह अगले दिन चले जाने पर था, वह आधी रात तक बातें करता रहा। 8 ऊपरी मंजिल के जिस कमरे मे हम मिले, वहां कई दीये जल रहे थे, 9 और जब पौलुस बोलता ही गया, तो यूतुखुस नामक एक जवान, खिड़की की देहली पर बैठे हुए, गहरी नींद मे सो गया और तीन मंजिल ऊपर से गिर कर मर गया। 10, 11, 12 पौलुस नीचे उतरा और उसने उसे अपने हाथ मे उठाया। उसने कहा, "चिन्ता मत करो, वह ठीक है!" और वह ठीक हो गया! भीड़ में भय के साथ आनन्द की लहर दौड़ गई! वे सब वापिस ऊपरी मंजिल पर गए और उन्होने एक साथ मिलकर प्रभु-भोज लिया, तब पौलुस ने फिर इतना लम्बा उपदेश दिया कि सुबह हो गई। तब वह उनसे विदा हुआ।

13 पौलुस पैदल ही अस्सुस जाने के लिए निकल गया, और हम उससे पहले जहाज पर गए। 14 वहां वह हमसे मिला और हमने एक साथ मितुलेने की यात्रा जहाज पर की, 15 अगले दिन हमने खियुस को पार किया, फिर, सामुस तट पर पहुंचे, और एक दिन बाद हम मीलेतुस पहुंचे। 16 पौलुस ने निर्णय किया था कि इस समय मीलेतुस मे न रुके, क्योकि वह यरूशलेम पहुंचने की जल्दी मे था, ताकि यदि हो सके तो पिन्तेकुस्त का त्यौहार वहीं मनाए।

17 परन्तु जब हम मीलेतुस पहुंचे, तो उसने इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनो को सन्देश भेजकर उनसे विनती की, कि उससे मिलने जहाज पर आए। 18 उनके पहुंचने पर उसने उनको बताया, "तुम लोग जानते हो कि जिस दिन से मैंने तुर्किस्तान मे कदम रखा तब से लेकर आज तक 19 मैंने प्रभु का काम दीनता के साथ किया है—हां, और आंसुओ के साथ—और मैंने अपने प्राण के विरुद्ध यहूदियो के षड्यन्त्रो से महान खतरो का सामना किया है। 20 तौभी मैं लोगों के सामने या तुम्हारे घरों में तुम्हें सत्य बताने से कभी नही झिझका। 21 यहूदियो और यूनानियो दोनो के लिए मेरा यही सन्देश था—हमारे प्रभु यीशु मसीह मे विश्वास के द्वारा पाप से परमेश्वर की ओर फिरने की आवश्यकता। 22 "और अब मैं पवित्र आत्मा[3] के द्वारा खिंचकर यरूशलेम को जा रहा हूं, यह जाने बिना कि वहां मेरे साथ क्या होगा, 23 सिवाय इसके कि पवित्र आत्मा ने मुझसे एक शहर के बाद दूसरे शहर मे कहा है कि जेल और दुःख तेरे आगे हैं। 24 परन्तु जीवन का कोई मूल्य नहीं जब तक मैं उसे प्रभु यीशु द्वारा बताए गए कार्य परमेश्वर की महान

---

[1] मूलतः "आसिया।" [2] या "शनिवार रात को।" मूलतः "सप्ताह के पहले दिन," यहूदियों की गिनती के अनुसार एक शाम से दूसरी शाम तक। [3] या "भीतरी दबाव से।"

दया और प्रेम के विषय में दूसरों को शुभ-संदेश सुनाने में न लगाऊं। 25 "और अब मैं जानता हूं कि तुममें से कोई भी जिनके मध्य मैं राज्य की शिक्षा देते हुए फिरा, फिर से मुझे कभी न देखोगे। 26 मैं तुम्हें स्पष्ट बता दूं कि मैं किसी के लोहू का दोषी नहीं, 27 क्योंकि मैं परमेश्वर का सम्पूर्ण सन्देश तुम्हें सुनाने से पीछे नहीं हटा। 28 "और अब सावधान रहो! तुम परमेश्वर के झुंड को सिखाओ और उसकी देख-भाल करो—उसकी कलीसिया की, जिसे उसने अपने प्रिय लोहू से खरीदा—क्योंकि पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष की जिम्मेवारी सौंपी है। 29 मुझे अच्छी तरह मालूम है कि यहां से मेरे जाने के बाद, झूठे-शिक्षक फाड़ने वाले भेड़ियों के समान तुम्हारे बीच में प्रकट होंगे, जो भेड़ों को न छोड़ेंगे। 30 तुम में से कुछ व्यक्ति स्वयं सत्य का अर्थ बदल देंगे ताकि लोगों को अपने पीछे खींच लें। 31 सावधान रहो! स्मरण रखो उन तीन वर्षों को जब मैं तुम्हारे साथ था—और तुम्हारे लिए मेरे बहाए गए आंसुओं को, और किस प्रकार मैंने रात-दिन लगातार तुम्हारी देखभाल की। 32 "और अब मैं तुम्हें परमेश्वर के और उसके अनुग्रहमय वचन की देखरेख में सौंप देता हूं, जो तुम्हारे विश्वास को बढ़ाने और तुम्हें उन लोगों के साथ मीरास देने में समर्थ है जो परमेश्वर के लिए अलग किए गए हैं। 33 "मैं कभी धन और अच्छे कपड़ों का भूखा नहीं रहा—34 तुम जानते हो कि मेरे इन हाथों ने मेरी और उनकी भी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए काम किया जो मेरे साथ थे। 35 और मैं गरीबों की सहायता करने में सदा तुम्हारा आदर्श रहा, क्योंकि मैंने प्रभु यीशु का कथन स्मरण रखा, 'लेने से देना अधिक आशिषमय है।'"

36 बोलना समाप्त कर उसने घुटने टेके और उनके साथ प्रार्थना की, 37 और जब वे विदाई के लिए उसके गले लगे तो जोर से रो पड़े, 38 और सबसे अधिक इस बात के लिए दुखी होते हुए क्योंकि उसने कहा था कि वह उनको फिर कभी नहीं मिलेगा। तब वे उसके साथ जहाज तक गए।

21 1 इफिसी धर्मवृद्धों से विदाई लेने के बाद हम जहाज पर सीधे कोस नामक स्थान को गए। अगले दिन हम रुदुस और तब पतरा गए। 2 वहां हमने एक जहाज लिया जो कि सीरिया प्रदेश के फीनीके में जाने पर था। 3 हमने कुप्रुस द्वीप देखा, और अपनी बाईं ओर उसके पार निकल गए और सीरिया के सूर बन्दरगाह पर पहुंचे, और वहां जहाज का माल उतारा। 4 हम समुद्र किनारे गए, हमें वहां के विश्वासी मिले जिनके साथ हमने एक सप्ताह बिताया। इन शिष्यों ने पवित्र आत्मा के द्वारा भविष्यद्वाणी कर पौलुस को चेतावनी दी कि वह यरूशलेम न जाए। 5 सप्ताह के अन्त में जब हम जहाज पर लौटे, तो पूरी मण्डली, स्त्रियों और बच्चों सहित हमारे साथ समुद्र किनारे तक चलकर गई जहां हमने प्रार्थना की और सबसे विदाई ली। 6 तब हम जहाज पर चढ़े और वे घर लौट गए।

7 सूर से चले जाने के बाद हम पतुलिमयिस में रुके जहां हमने विश्वासियों को नमस्कार किया, परन्तु केवल एक दिन ठहरे। 8 तब हम कैसरिया चले गए और प्रचारक फिलिप्पुस के घर में ठहरे, जो पहले सात "डीकनों"[1] (सेवकों) में से एक था। 9 उसकी चार अविवाहित[2] बेटियां थीं जिनको भविष्यद्वाणी करने का वरदान था। 10 जब हम वहां कई दिनों तक ठहरे थे, इसी बीच अगबुस नामक एक व्यक्ति ने, जिसे भविष्यद्वाणी करने का वरदान था, यहूदिया से आकर 11 हमसे भेंट की। उसने पौलुस की कमर का पट्टा लिया, अपने पांवों और हाथों को उससे बांधा और कहा, "पवित्र आत्मा कहता है, "इसी प्रकार से इस पट्टे का मालिक यरूशलेम में यहूदियों के द्वारा बांधा जाएगा और तब

[1] प्रेरितों 6 5, 8 1-13 पढ़िए। [2] मूलत "कुंवारी।"

रोमियों को सौंपा जाएगा।" 12 यह सुनकर, हम सब स्थानीय विश्वासियों और उसकी यात्रा के साथियों ने पौलुस से विनती की, कि यरूशलेम न जाए। 13 परन्तु उसने कहा, "यह सब रोना क्यों? तुम मेरा दिल तोड़ रहे हो? क्योंकि मैं न केवल यरूशलेम मे कैदी होने के लिए परन्तु प्रभु यीशु के लिए मरने को भी तैयार हूँ।" 14 जब स्पष्ट हो गया कि वह रुकने की सलाह नही मान सकता, तो हमने मनाना छोड़ दिया और कहा, "प्रभु की इच्छा पूरी हो।"

15 थोड़े समय के बाद हमने अपना सामान बांधा और यरूशलेम जाने के लिए निकल गए 16 कैसरिया के कई शिष्य हमारे साथ हो लिए, और वहां पहुंचकर हम मनासोना के घर पाहुन हुए, जो आरम्भ के विश्वासियों में से खास कुप्रुस का था।

17 और यरूशलेम के सब विश्वासियो ने मित्रभाव से हमारा स्वागत किया। 18 दूसरे दिन पौलुस हमें याकूब और यरूशलेम की कलीसिया के धर्मवृद्धों के पास भेंट करने ले गया। 19 नमस्कार करने के बाद, पौलुस ने बहुत सी बातों का हाल उनको सुनाया जिन्हें परमेश्वर ने उसके काम के द्वारा अन्यजातियो मे किया था 20 उन्होंने परमेश्वर की प्रशंसा की, परन्तु तब कहा, "प्रिय भाई, तुम जानते हो, कि किस प्रकार हजारो की संख्या मे यहूदियों ने भी विश्वास किया है, और वे सब इस बात पर हठ किए हैं कि यहूदी विश्वासियो को यहूदी-प्रथाओ और रीतिरिवाजों[3] का पालन करते रहना चाहिए। 21 यहां यरूशलेम के यहूदी-मसीहियों को बताया गया है कि तू मूसा की व्यवस्था, और हमारी यहूदी प्रथाओं के विरुद्ध है और तू उनके बच्चों का खतना कराने से मना करता है। 22 अब क्या किया जा सकता है? क्योंकि यह बात निश्चय ही उनके कान मे पड़ेगी कि तू आया है। 23 "हम यह सलाह देते हैं; हमारे यहा चार व्यक्ति हैं जो अपने सिर का मुण्डन कराने और शपथ के साथ कुछ प्रतिज्ञा करने वाले हैं। 24 उनके साथ मन्दिर मे जा और तू भी अपने सिर का मुण्डन करा ले—और उनके मुण्डन कराने का भी पैसा दे दे।

"तब सब जान लेंगे कि तू इब्री-मसीहियो के लिए इस प्रथा का समर्थन करता है और इन बातो मे हमारे समान सोच-विचार रखता है। 25 "अन्यजाति-मसीहियों का जहां तक सम्बन्ध है, हम बिल्कुल नहीं कह रहे कि वे इन यहूदी-प्रथाओं का पालन करें—सिवाय उनके, जिनके विषय में हमने उन्हें लिखा था. देवताओं को चढाया गया भोजन न करना, गला घोंट कर मारे गए पशुओं को लोहू समेत न खाना, और व्यभिचार मत करना।"

26, 27 तब पौलुस ने उनकी विनती मान ली और अगले दिन उस धार्मिक कार्य के लिए उन व्यक्तियों के साथ मन्दिर गया, इस प्रकार उसने उनके साथ सात[4] दिनो के बाद बलिदान चढाने की प्रतिज्ञा को सब पर प्रकट किया। सात दिन समाप्त होने पर ही थे कि तुर्किस्तान से आए कुछ यहूदियों ने उसे मन्दिर मे देख लिया और उसके विरुद्ध भीड को भडका दिया। उन्होंने झपटकर चिल्लाते हुए उसे पकड लिया, 28 "इस्राएल के लोगो, सहायता करो! सहायता। यही वह व्यक्ति है जो हमारे लोगों के विरुद्ध प्रचार करता है और सबको बताता है कि यहूदी-व्यवस्था का उल्लघन करें। यहां तक कि वह मन्दिर के विरुद्ध भी बोलता है और अन्यजातियो को अन्दर घुसा कर उसे अशुद्ध करता है।" 29 क्योंकि उससे एक दिन पहले, उन्होंने उसे शहर में त्रुफिमुस के साथ देखा था जो तुर्किस्तान के इफिसुस का रहने वाला एक अन्यजाति[5] था, और अनुमान लगाया था कि पौलुस उसे मन्दिर मे ले गया था। 30 इन अभियोगो से शहर की पूरी जनता भड़क गई और बडा दगा मचा। पौलुस को घसीटते हुए मन्दिर के बाहर निकाला गया, और उसके निक-

[3] मूलत "सब व्यवस्था के लिए धुन लगाए हैं।" [4] मूलत "शुद्ध होने के दिन।" [5] यही आशय है।

सते ही तुरन्त दरवाज़ा बन्द कर दिया गया। 31 जब वे उसको मार डालने पर थे, तो उसकी सूचना नगर की रक्षा करने वाली सेना के रोमी सेनानायक को मिली कि पूरे यरूशलेम में कोलाहल मचा है। 32 उसने शीघ्र ही अपने सैनिकों और अफसरों को आज्ञा दी और दौड़ते हुए भीड़ में जा पहुंचा। जब भीड़ ने सैनिकों को आते देखा, तो पौलुस को पीटना छोड़ दिया। 33 सेनापति ने पौलुस को कैद कर लिया और उसे दोहरी हथकड़ी पहनाने की आज्ञा दी। तब उसने भीड़ से पूछा कि यह कौन है और उसने क्या किया है। 34 कोई कुछ चिल्लाया तो कोई कुछ। जब सारे कोलाहल और गड़बड़ी में वह कुछ जान न सका, तो उसने पौलुस को किले* में पहुंचाने की आज्ञा दी। 35 जब वे सीढ़ियों तक ही पहुंचे थे, कि भीड़ इतनी उग्र हो गई कि सैनिकों ने पौलुस को बचाने के लिए उसे अपने कन्धों पर उठा लिया। 36 और भीड़ चिल्लाते हुए पीछे हो ली, "उसे मारो, उसे मारो।"

37, 38 जब पौलुस अन्दर ले जाए जाने पर ही था, तो उसने सेनाध्यक्ष से कहा, "क्या मैं आपसे कुछ कह सकता हूं?" सेनाध्यक्ष ने आश्चर्य में पड़कर पूछा "क्या तू यूनानी भाषा जानता है? क्या तू वही मिस्री नहीं है जिसने कुछ वर्षों पूर्व† विद्रोह किया था और अपने साथ 4,000 हत्यारों का गुट बनाकर जंगल में ले गया था?" 39 पौलुस ने उत्तर दिया, "नहीं, मैं यहूदी हूं और किलकिया के तरसुस शहर का निवासी हूं जो कोई छोटा शहर नहीं। मुझे आज्ञा दीजिए कि इन लोगों से बातें करूं।" 40 सेनाध्यक्ष ने आज्ञा दी, तब पौलुस ने सीढ़ियों पर खड़े होकर लोगों को चुप रहने का संकेत किया, शीघ्र ही भीड़ में शान्ति छा गई, और उसने उनसे इब्रानी भाषा में इस प्रकार कहा।

22 1 "भाइयो और सम्मानित वृद्धजनो, मैं अपने बचाव में जो कुछ कहता हूं उसे सुनो।"

2 जब उन्होंने उसे इब्रानी भाषा में बोलते सुना, तो और भी अधिक सन्नाटा छा गया।

3 उसने कहा, "मैं यहूदी हूं। किलकिया के एक शहर तरसुस में मेरा जन्म हुआ, परन्तु मैंने यहां यरूशलेम में गमलीएल के आधीन शिक्षा पाई, जिसके पाँवों पर मैंने अपनी यहूदी-व्यवस्था और प्रथाओं का पालन बड़ी सावधानी के साथ करना सीखा। मैं अपने प्रत्येक काम में परमेश्वर की महिमा करने के लिए उत्सुक रहता था, जैसा तुम सबने आज प्रयत्न किया है। 4 और मैंने मसीहियों को सताया, उनको मार डालने के लिए उन्हें ढूंढ निकाला, स्त्रियों और पुरुषों दोनों को बान्धकर जेलखाने में डलवाया। 5 महायाजक या परिषद का कोई भी सदस्य गवाही दे सकता है कि मैंने सच कहा है। क्योंकि मैंने उनसे दमिश्क के यहूदी अगुओं के नाम पर चिट्ठी मांगी, यह निर्देश कि किसी भी मसीही को पाकर मैं उसे दण्ड दिलाने के लिए जंजीरों से बाँधकर यरूशलेम ले आऊँ। 6 जब मैं मार्ग पर था, और दमिश्क पहुंचने ही को था, कि सहसा लगभग दोपहर के समय एक बड़ी तेज ज्योति आकाश से मेरे चारों ओर चमकी। 7 मैं भूमि पर गिर पड़ा और मैंने ये शब्द सुने, "शाऊल, शाऊल तू मुझे क्यों सता रहा है?" 8 मैंने पूछा, "महाशय, आप कौन हैं जो मुझसे बोल रहे हैं?" और उन्होंने उत्तर दिया, "मैं नासरत का यीशु हूं, जिसे तू सता रहा है।" 9 मेरे साथ के व्यक्तियों ने प्रकाश तो देखा परन्तु जो कुछ बोला गया उसे नहीं समझा। 10 और मैंने कहा, "प्रभु, मैं क्या करूं?" "और प्रभु ने मुझे बताया, उठ और दमिश्क में जा, और वहाँ तुझे बताया जाएगा कि आने वाले वर्षों में तुझ पर क्या आने वाला है।" 11 "बहुत तीव्र प्रकाश के कारण मैं अन्धा हो गया था और अपने साथियों के द्वारा मैं दमिश्क पहुंचाया गया। 12 वहां हनन्याह नामक एक व्यक्ति, जो इतना भक्त-पुरुष था

* मूलतः "गढ़।" या किला।" † "इन दिनों के पहले।"

जितना तुम व्यवस्था का पालन करने के लिए पा सको, और जिसका दमिश्क के यहूदियों में बहुत अच्छा नाम था, 13 मेरे पास आया, और मेरे पास खड़े होकर उसने मुझसे कहा, "भाई शाऊल, तू फिर देखने लग, और उसी क्षण मैं उसे देख सका।" 14 तब उसने मुझसे कहा, 'हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुझे चुना है कि तू उसकी इच्छा को जाने और मसीह[1] को देखे और उसको बोलते सुने। 15 तुझे उसका संदेश हर जगह ले जाना है, यह बताते हुए कि तूने क्या देखा और सुना है। 16 और अब, देर क्यों? जा और बपतिस्मा ले और प्रभु का नाम लेकर, अपने पापों से शुद्ध हो जा। 17, 18 "एक दिन मेरे यरूशलेम लौटने के बाद, जब मैं मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था तो बेहोश हो गया और मैंने दर्शन मे परमेश्वर को यह कहते देखा, 'जल्दी कर! यरूशलेम छोड दे, क्योंकि जब तू लोगों को मेरा सन्देश देगा तो यहा कोई तेरा विश्वास नही करेगा।" 19 मैंने विवाद किया, 'परन्तु प्रभु, वे निश्चय ही जानते हैं कि मैंने आप पर विश्वास करने वाले सब लोगों को हर आराधनालय मे पीटा और जेलखाने में डलवाया 20 जब आपके गवाह स्तिफनुस की हत्या की गई तब मैं उसके हत्यारो मे सहमत था और मैं उनके वस्त्रों की रखवाली कर रहा था जो उन्होंने वहाँ उतार कर रख दिए थे। 21 परन्तु परमेश्वर ने मुझसे कहा, "यरूशलेम से निकल जा, क्योंकि मैं तुझे अन्यजातियो के पास दूर भेजूगा।"

22 पौलुस के इन शब्दों को सुनने के पश्चात भीड के लोग एक स्वर से चिल्लाए, "इस पुरुष का अन्त करो! उसे मार डालो! वह जीने के योग्य नहीं है।" 23 वे चीखते हुए अपने वस्त्र हवा मे उछालते और मुट्ठी भर भरकर धूल फेंकने लगे। 24 तब सेनाध्यक्ष ने उसे अन्दर ले जाकर आज्ञा दी कि उसे कोडे से मार जाए कि वह अपना अपराध मान ले। वह जानना चाहता था कि भीड इतनी क्रुद्ध क्यो हो गई है। 25 जब उन्होंने पौलुस को कोडे से मारने के लिए बाधा, तो पौलुस ने वहा खडे एक अधिकारी से कहा, "क्या यह नियम तुम्हारे लिए ठीक है कि तुम एक रोमी नागरिक को, जिस पर मुकदमा तक नहीं चलाया गया, कोडे से मारो?" 26 वह अधिकारी सेनाध्यक्ष के पास गया और उसने पूछा, "आप क्या कर रहे हैं? यह व्यक्ति रोमी नागरिक है!" 27 तब सेनाध्यक्ष ने पौलुस के पास आकर पूछा, "मुझे बता, क्या तू रोमी नागरिक है?" "हा, मैं सचमुच रोमी हूँ।" 28 सेनाध्यक्ष ने कहा, "मैं भी हू, और मुझे इसके लिए बडा मूल्य चुकाना पडा।" "परन्तु मैं तो जन्म ही से रोमी नागरिक हू!" 29 वहा उसे मारने के लिए खडे सैनिक, बात की बात में गायब हो गए जब उन्होने सुना कि पौलुस रोमी नागरिक है, और सेनाध्यक्ष सहम गया क्योंकि उसने उसे बाँधे जाने और कोड़े से मारने की आज्ञा दी थी।

30 अगले दिन सेनाध्यक्ष ने उसकी जजीरें खुलवा दी और यहूदी महासभा के साथ महायाजकों की भी बैठक की। उसकी आज्ञा से पौलुस उनके सामने लाया गया ताकि मालूम करे कि किस कारण से सब गडबडी मची है।

23

1 महासभा की ओर एकटक देखते हुए, पौलुस ने कहना आरम्भ किया: "भाइयो! मैंने सदा परमेश्वर के सामने अच्छे अन्तःकरण से जीवन बिताया है!" 2 उसी क्षण महायाजक हनन्याह ने पौलुस के पास खड़े लोगो को आज्ञा दी कि उसके मुह पर थप्पड मारें। 3 पौलुस ने उससे कहा, "हे पुती हुई दीवार,[1] परमेश्वर तुझे मारेगा। तू कैसा न्यायाधीश है कि इस प्रकार मुझे मारने की आज्ञा देकर स्वयं कानून का उल्लंघन करता है?" 4 पौलुस के पास खडे

---

[1] मूलत. "धर्मी।"

[1] मूलत "चूना फिरी हुई भीत।"

लोगों ने उससे कहा, "क्या परमेश्वर के महायाजक से बात करने का यही तरीका है?" 5 पौलुस ने उत्तर दिया, "भाइयो, मैं नहीं जानता था कि वह महायाजक है, क्योंकि धर्मशास्त्र में लिखा है, "अपने अधिकारियों में से किसी से कभी बुरा मत कह।" 6 तब पौलुस को कुछ सूझा। महासभा के आधे लोग सदूकी थे और आधे फरीसी! इसलिए उसने चिल्लाकर कहा, "भाइयो, मैं फरीसी हूं, जैसे मेरे सब पूर्वज थे! और आज यहां मुझ पर मुकदमा चल रहा है क्योंकि मैं मरे हुओं के फिर से जी उठने पर विश्वास रखता हूं।" 7 इस पर महासभा के बीच में फूट पड़ गई—फरीसी सदूकियों के विरुद्ध हो गए— 8 क्योंकि सदूकी कहते हैं कि मृतकों में से जी उठना नहीं है, न ही कोई स्वर्गदूत या हमारे अन्दर अनन्त आत्मा[2] है, परन्तु फरीसी इन सब पर विश्वास रखते हैं। 9 तब बड़ा हंगामा मचा। यहूदी अगुवों[3] में से कई खड़े हो कर तर्क करने लगे कि पौलुस बिल्कुल ठीक है। उन्होंने चिल्लाकर कहा, "हम उसमें कोई दोष नहीं पाते। सम्भव है किसी आत्मा या स्वर्गदूत ने उससे (दमिश्क के मार्ग पर[4]) बातें की होंगी।" 10 हंगामा और बढ़ता गया, और दोनों ओर के लोग पौलुस को अपनी ओर खींचने लगे, कभी इस ओर तो कभी उस ओर। अन्त में सेनाध्यक्ष ने इस डर से कि कहीं वे उसके टुकड़े टुकड़े न कर डालें, अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि उसे बलपूर्वक उन से अलग करो और किले में वापिस ले जाओ।

11 उस रात प्रभु ने पौलुस के पास खड़े होकर उससे कहा, "पौलुस, चिन्ता मत कर जिस प्रकार तू ने यहां यरूशलेम में लोगों को मेरे विषय में बताया है, वैसे ही तुझे रोम में भी बताना है।"

12, 13 अगले दिन सुबह लगभग चालीस से भी अधिक यहूदी एक साथ इकट्ठे हुए, उन्होंने शपथ ली कि पौलुस को मार डाले बिना न खाएंगे न पीएंगे! 14 तब उन्होंने महायाजकों और यहूदी-धर्मवृद्धों के पास जाकर उनसे बताया कि उन्होंने क्या किया है। 15 उन्होंने विनती की, "सेनाध्यक्ष से कहो कि पौलुस को फिर महासभा में ले आए। बहाना करो कि तुम उससे थोड़े और प्रश्न करना चाहते हो। हम उसे रास्ते में मार डालेंगे।" 16 परन्तु पौलुस के भांजे ने उनकी योजना सुन ली और उसने किले में आकर पौलुस को बता दिया। 17 पौलुस ने अधिकारियों में से एक को बुलाकर कहा, "इस लड़के को सेनाध्यक्ष के पास ले जाओ। यह कोई महत्व की बात उसको बताना चाहता है।" 18 अधिकारी ने उसे ले जाकर कहा, "बन्दी पौलुस ने मुझे बुलाया और मुझसे कहा कि इस जवान को आपसे कुछ बताने के लिए आपके पास पहुंचा दूं।" 19 सेनाध्यक्ष ने लड़के का हाथ पकड़ा, और उसे अलग ले जाकर पूछा, "लड़के, तू मुझे क्या बताना चाहता है?" 20 उसने उसे बताया, "कल, यह बहाना करके कि हम कुछ और जानना चाहते हैं यहूदी आपसे विनती करने वाले हैं कि पौलुस को आप फिर महासभा के सामने लाएं, 21 परन्तु ऐसा न कीजिए! चालीस से भी अधिक मनुष्य रास्ते में छिपे हुए हैं कि उस पर कूद पड़ें और उसे मार डालें। उन्होंने शपथ ली है कि जब तक उसे मार न डालें तब तक न खाएंगे न पीएंगे। वे अभी इस आशा में वहां बाहर हैं कि आप उनका अनुरोध मान लें।" 22 सेनाध्यक्ष ने लड़के को जाते जाते यह चेतावनी दी, "कोई न जान पाए कि तूने मुझे यह बताया है।" 23, 24 तब सेनाध्यक्ष ने अपने दो अधिकारियों को बुलाया और उन्हें आज्ञा दी, "आज रात नौ बजे कैसरिया जाने के लिए 200 सैनिकों को तैयार करो! 200 भाले चलाने वालों और 70 घुड़सवार सिपाहियों को साथ लो। पौलुस को भी सवार होने के लिए एक घोड़ा दो और राज्यपाल फेलिक्स तक उसे सकुशल पहुंचा

[2] मूलतः "न आत्मा।" [3] मूलतः "प्राचीनों।" [4] यही आशय है।

दो।" 25 तब उसने राज्यपाल को यह चिट्ठी लिखी :

26 "क्लौदियुस लूसियास की ओर से "सेवा मे, : परम आदरणीय, राज्यपाल फेलिक्स। नमस्कार! 27 यह मनुष्य यहूदियों द्वारा पकड़ा गया था और वे उसे मार डालने पर थे जब मैंने उसे बचाने के लिए सैनिकों को भेजा, क्योंकि मैंने सुना कि वह रोमी नागरिक है। 28 तब मैं उसे उनकी महासभा मे ले गया ताकि जानने का यत्न करूं कि उसने क्या किया है। 29 मैंने शीघ्र जान लिया कि ऐसा उनके किसी यहूदी विश्वास के कारण हो रहा है, जो निश्चय ही कैद या मृत्यु दण्ड के योग्य नही है। 30 परन्तु जब मुझे उसके मार डालने के षड्यन्त्र की सूचना मिली, तो मैंने उसे आपके पास भेजने का निर्णय किया और मैं उस पर अभियोग लगाने वाले व्यक्तियों से कह दूंगा कि वे आपके सामने अपने अभियोग रखें।"

31 तब उस रात, जैसे आज्ञा मिली थी, सैनिको ने पौलुस को अन्तिपत्रिस पहुंचा दिया। 32 अगले दिन सवेरे उन्होंने पौलुस को घुड़सवार सिपाहियों के साथ छोड़ दिया कि वे उसे आगे कैसरिया ले जाएं, और वे किले मे लौट आए। 33 उन्होंने कैसरिया पहुंचकर राज्यपाल को चिट्ठी दी : और पौलुस को भी उसके सामने खड़ा किया। 34 उसने चिट्ठी पढ़ी तब पौलुस से प्रश्न किया कि वह कहां का रहने वाला है। पौलुस ने उत्तर दिया, "किलकिया का।" 35 राज्यपाल ने उससे कहा, "जब तुझ पर दोष लगाने वाले आ जाएंगे तब मैं तेरा मामला पूरी रीति से सुनूंगा, और उसने आज्ञा दी कि उसे राजा हेरोदेस के राजमहल के बन्दीगृह मे रखा जाए।"

24 1 पांच दिन के बाद महायाजक हनन्याह, कई यहूदी अगुवों और वकील तिरतुल्लुस को साथ लेकर, पौलुस पर अभियोग लगाने को पहुंचा। 2 जब तिरतुल्लुस को सामने बुलाया गया, तो उसने राज्यपाल से इस प्रकार कहकर पौलुस पर दोष लगाया :

"परम आदरणीय राज्यपाल, आपने हम यहूदियों को शान्ति दी है और हमारे विरुद्ध भेद-भाव को बहुत कम कर दिया है। 3 और इसके लिए हम आपके बहुत बहुत आभारी हैं। 4 परन्तु इसलिए कि आपका अधिक समय नष्ट न करूं कृपा कर एक क्षण के लिए मैं आपका ध्यान, इस व्यक्ति के विरुद्ध हमारे मामले की ओर सक्षेप मे, खींचना चाहता हूं। 5 क्योंकि हमने इस व्यक्ति को आपत्ति खड़ी करने वाला पाया है, जो पूरे संसार के यहूदियों को रोमी सरकार के विरुद्ध विद्रोह और दंगा करने को लगातार भड़काता रहता है। वह नासरियो नामक उपद्रवी सम्प्रदाय का नेता है। 6 साथ ही हमने उसे उस समय पकड़ा, जब वह मन्दिर को अशुद्ध करने की कोशिश मे था। "हमने उसके साथ उसके योग्य व्यवहार किया होता, 7 परन्तु नगर की रक्षा के लिए तैनात सैनिको के सेनाध्यक्ष लूसियास ने आकर बलपूर्वक उसे हमसे अलग किया, 8 उसकी यह माग थी कि रोमी कानून के अनुसार उसका मुकदमा हो। अब आप स्वयं उसकी जाच कर हमारे अभियोगों को सच पा सकते हैं।" 9 तब सब दूसरे यहूदियो ने एक स्वर से कहा कि जो कुछ तिरतुल्लुस ने कहा है, वह सब सच है।

10 अब पौलुस की बारी आई। राज्यपाल ने उसे इशारा किया कि उठकर बोले। पौलुस ने कहा : "महोदय, मैं जानता हू कि आप अनेक वर्षों से यहूदी मामलों के न्यायाधीश रहे हैं, और इसी से मुझे अपने बचाव मे कहने का साहस होता है। 11 आप शीघ्र ही मालूम कर सकते हैं कि बारह दिन से अधिक नही हुए जब मैं यरुशलेम के मन्दिर मे आराधना करने को पहुंचा था, 12 और आप समझ लेंगे कि मैंने न कभी किसी आराधनालय मे और न किसी शहर की सड़क पर कभी दंगा करवाया, 13 और वे मनुष्य जिन बातों के करने का मुझ पर दोष

लगाते हैं, उन्हें कभी प्रमाणित नही कर सकेंगे। 14 परन्तु एक बात मैं मान लेता हूँ कि मैं उद्धार के मार्ग पर विश्वास करता हूँ, जिसे वे एक सम्प्रदाय कहते हैं ; मैं अपने पूर्वजों के परमेश्वर की सेवा करने की उस रीति का पालन करता हू, मैं दृढता के साथ यहूदी-व्यवस्था मे और भविष्यद्वाणी की पुस्तको मे लिखी सब बातो पर विश्वास रखता हू, 15 और मेरा विश्वास है, जैसा इन व्यक्तियो का है, कि धर्मियो और अधर्मियों दोनो का मरे हुओं में से फिर जी उठना होगा। 16 इसी कारण मैं अपनी शक्ति से परमेश्वर और मनुष्यो, दोनो के सामने सदा शुद्ध अन्तः करण बनाए रखने का प्रयत्न करता हू। 17 कई वर्षों के बाद, मैं यहूदियो की सहायता के लिए धन लेकर, और परमेश्वर को बलिदान चढाने के लिए आया था। 18 जब मैं अपना धन्यवाद मेंट[1] चढा रहा था, तब मुझ पर दोष लगाने वालो ने मुझे मन्दिर में देखा। मैंने अपने सिर का मुण्डन कराया था जैसा उनकी व्यवस्था के अनुसार आवश्यक है, और मेरे चारो ओर कोई भीड नही थी और दंगा नही हो रहा था ! परन्तु तुर्किस्तान से आए हुए कुछ यहूदी वहा थे 19 (जिन्हें यहा उपस्थित होना चाहिए था अगर उन्हें मेरे विरुद्ध कुछ कहना है)—20 परन्तु देखिए ! यहा आए लोगों मे पूछिए कि इनकी महासभा ने मुझे किस गलत काम मे पाया, 21 सिवाय इस एक बात को कहने के जिसे मुझे नही कहना था[2] जब मैंने चिल्लाकर कहा, "मैं यहा महासभा के सामने हू ताकि इस विश्वास के लिए कि मृतक फिर जी उठेंगे, अपना बचाव करूं।"

22 फेलिक्स ने, जो जानता था कि मसीही लोग दंगा शुरु करते नही,[3] यहूदियो से कहा कि वे नगर-रक्षक सेनाध्यक्ष, लूसियास के आने के लिए ठहरें, और तब वह मामले का निर्णय करेगा। 23 उसने पौलुस को फिर बंदीगृह मे रखने की आज्ञा दी परन्तु पहरेदारों से कहा कि उसके साथ कोमलता का व्यवहार करें और उसके किसी भी मित्र को उससे मिलने और उसके लिए भेंट लाने से न रोकें ताकि उसका यहा रहना अधिक आरामदायक हो सके।

24 कुछ ही दिनो के बाद फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिल्ला के साथ, जो यहूदी थी, आया तो उसने पौलुस को बुलाकर उसकी बातें सुनीं। जब उसने उनको प्रभु यीशु पर विश्वास के विषय मे बताया। 25 और जब वह उनके साथ धार्मिकता और संयम और आनेवाले न्याय पर विचार करता था, तो फेलिक्स बहुत डर गया। उसने उत्तर दिया, "अभी तो तू चला जा, और जब मुझे अधिक उपयुक्त अवसर मिलेगा, तब मैं फिर तुझे बुलाने के लिए भेजूंगा।" 26 वह यह आशा भी रखता था कि पौलुस उसको घूस देगा, इसलिए वह पौलुस को समय समय पर बुलाता था और उसके साथ बात करता था। 27 इस प्रकार दो वर्ष बीत गये ; तब फेलिक्स के स्थान पर पोर्शियस फेस्तुस नियुक्त हुआ। क्योकि फेलिक्स यहूदियो को प्रसन्न करना चाहता था, अतः वह पौलुस को बंदी ही छोड़ गया।

25

1 फेस्तुस अपना नया उत्तरदायित्व सम्भालने के लिए कैसरिया आने के तीन दिन पश्चात् यरूशलेम चला गया। 2 जहा महा-याजकों और दूसरे यहूदी नेताओ ने उससे भेंट की और पौलुस के विषय मे अपनी कहानी सुनाई। 3 उन्होने उससे विनती की कि पौलुस को तुरन्त यरूशलेम ले आए (उनकी योजना थी कि रास्ते ही मे उसे मार डालें।) 4 परन्तु फेस्तुस ने उत्तर दिया कि चूंकि पौलुस कैसरिया मे है और वह आप ही वहाँ शीघ्र लौट रहा है, 5 इसलिए इस काम मे अधिकार रखने वाले, मुकदमे के लिए उसके साथ जाएँ।

[1] यही आशय है। [2] मूलत. ("इस बात को मैंने अवश्य कहा, जब......")। [3] मूलत "पूर्णरूप से मसीहियो के विषय मे अच्छी जानकारी थी।"

6 आठ या दस दिन बाद वह कैसरिया लौटा और उसने अगले दिन पौलुस का मुकदमा रखा। 7 अदालत में पौलुस के पहुंचने पर यरूशलेम से आए यहूदियों ने इकट्ठे होकर, अनेक गम्भीर अभियोग लगाए जिनका प्रमाण वे नहीं दे सके। 8 पौलुस ने अपने विरुद्ध अभियोगों का इन्कार करते हुए कहा, "मैं दोषी नहीं हूं। मैंने यहूदी व्यवस्था का विरोध नहीं किया है न ही मन्दिर को अशुद्ध किया और न ही रोमी शासन के विरुद्ध विद्रोह किया है।" 9 तब फेस्तुस ने, यहूदियों को खुश करने के लिए उत्सुक होकर, उससे पूछा, "क्या तू यरूशलेम जाना और मेरे सामने मुकदमा खड़ा करना चाहता है?" 10, 11 परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया, "नहीं! मैं स्वयं महाराजा के सामने सुनवाई करने का अपना अधिकार चाहता हूं। आप अच्छी तरह जानते हैं मैं दोषी नहीं हूं। यदि मैंने मृत्यु के योग्य कुछ किया हो, तो मैं मरने से इन्कार नहीं करता। परन्तु यदि मैं निर्दोष हूं, तो न आपको और न किसी और को यह अधिकार है कि मुझे मार डालने के लिए इन लोगों के हाथ में सौंपे। मैं कैसर की दोहाई देता हूं।" 12 फेस्तुस ने अपने सलाहकारों से बातचीत की और तब उत्तर दिया, "तो फिर ठीक है। तू ने कैसर की दोहाई दी है और तू कैसर के पास जाएगा।"

13 कुछ दिनों बाद राजा अग्रिप्पा, बिरनीके[1] के साथ फेस्तुस से भेंट करने के लिए आया 14 वह वहां कई दिन ठहरा। फेस्तुस ने पौलुस के विषय में राजा के साथ बातचीत की। फेस्तुस ने उनको बताया, "यहां एक बन्दी है, जिसका मामला यहां फेलिक्स ने मेरे लिए छोड़ दिया। 15 जब मैं यरूशलेम में था, तो महायाजकों और दूसरे यहूदी-अगुओं ने मुझे अपनी ओर की बात बताई और मुझसे बिनती की, कि उसे मरवा डालूं। 16 हां, यह अवश्य मैंने उनको बताया कि रोमी विधान किसी व्यक्ति पर मुकदमा चलाए बिना उसे दोषी प्रमाणित नहीं कर सकता। उसे अवसर दिया गया कि अपने पर अभियोग लगाने वालों के आमने-सामने अपना बचाव करे। 17 "जब वे यहां मुकदमे के लिए पहुंचे, तो मैंने दूसरे ही दिन समय ठहराया और पौलुस को लाने की आज्ञा दी। 18 परन्तु जो दोष उस पर लगाए गए वैसे नहीं थे जैसे मैं सोचता था। 19 उनका सम्बन्ध उनके धर्म के विषय में और यीशु कहलाने वाले किसी व्यक्ति के विषय में था जो मर गया था, परन्तु पौलुस ज़ोर देता है कि वह जीवित है! 20 मैं असमंजस में था कि इस प्रकार के मामले का निर्णय कैसे करूं और मैंने उससे प्रश्न किया कि वह यरूशलेम में इन अभियोगों पर मुकदमे में खड़े होने को तैयार है या नहीं। 21 परन्तु पौलुस ने कैसर की दोहाई दी। इसलिए मैंने उसे सम्राट तक पहुंचाने का प्रबन्ध करने तक वापिस जेल में भेजने की आज्ञा दी।" 22 अग्रिप्पा ने कहा, "मैं स्वयं उस व्यक्ति की सुनना चाहूंगा।" और फेस्तुस ने उत्तर दिया, "आप कल सुनेंगे!"

23 तब अगले दिन, राजा और बिरनीके के अदालत में बड़े ठाट-बाट के साथ पहुंचने के बाद जिनके साथ सेना के अधिकारी और शहर के प्रमुख लोग भी थे, फेस्तुस ने पौलुस को अन्दर लाने की आज्ञा दी। 24 तब फेस्तुस ने श्रोताओं से कहा, "राजा अग्रिप्पा और सब उपस्थित लोगो, यह वह व्यक्ति है जिसकी मृत्यु की मांग यहां रहनेवाले यहूदी और साथ में यरूशलेम के यहूदी भी कर रहे हैं! 25 परन्तु मेरे विचार में उसने मृत्यु के योग्य कुछ नहीं किया है। तौभी, उसने अपने मामले में कैसर की दोहाई दी है, और मेरे पास इसके सिवाय कोई चारा नहीं कि उसे भेज दूं। 26 परन्तु मैं महाराजा को क्या लिखूं? क्योंकि उसके विरुद्ध कोई ठोस अभियोग नहीं है! इसलिए मैं यहां आप सब के सामने लाया हूं और विशेष कर आपके सामने, हे राजा अग्रिप्पा, कि आप उसकी जांच करें और तब मुझे बताएँ कि क्या लिखूं।

[1] वह उसकी बहिन थी।

27 क्योंकि यह उचित नहीं जान पड़ता कि एक बन्दी को बिना किसी अभियोग के सम्राट के पास भेजूं।"

26

1 तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "तू अपनी कहानी हमें बताना आरम्भ कर।" तब पौलुस ने हाव-भाव[1] के साथ अपने बचाव में कहना शुरू किया।

2 हे राजा अग्रिप्पा, यह मेरा सौभाग्य है कि मैं आपके सामने अपना उत्तर दे सकता हूँ, 3 क्योंकि मैं जानता हूं कि आप यहूदी-कानूनों और प्रथाओं से भली भांति परिचित हैं। अब कृपा-कर धीरज से मेरी सुनिए। 4 "जैसा यहूदी अच्छी तरह जानते हैं, मुझे मेरे बचपन से ही पूरी रीति से यहूदी शिक्षा दी गई, पहले तरसुस[2] में और उसके बाद यरूशलेम में, और मैंने उसके अनुसार अपना जीवन भी व्यतीत किया। 5 यदि वे इसे मान लें, तो वे जानते हैं कि यहूदी व्यवस्था और प्रथाओं के पालन में मैं सदा सबसे कट्टर फरीसी रहा। 6 परन्तु उनके अभियोगों के पीछे वास्तविक कारण तो कुछ और है—यह इसलिए हो रहा है क्योंकि मैं परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के पूरी होने की आशा कर रहा हूँ जो हमारे पूर्वजों को दी गई थी। 7 इस्राएल के बारहों गोत्र मेरे समान इसी आशा के पूरी होने के लिए रात-दिन जी-तोड़ प्रयत्न कर रहे हैं। तो भी, हे राजा, वे कहते हैं, मेरे लिए यह अपराध है। 8 परन्तु मरे हुओं के फिर से जी उठने में विश्वास करना क्या कोई अपराध है? क्या यह बात आपको अविश्वसनीय लगती है कि परमेश्वर, मनुष्यों को फिर से जीवित कर सकते हैं? 9 मेरा विश्वास था कि मुझे नासरत के यीशु के शिष्यों[3] के साथ बहुत क्रूर व्यवहार करना चाहिए। 10 मैंने यरूशलेम में अनेक भक्तों को बन्दी बनाया, जैसे मुझे महायाजकों द्वारा अधिकार दिया गया था, और जब उन्हें मृत्यु दण्ड मिलता था, तब मैं उनके विरुद्ध अपना मत देता था। 11 मैंने मसीहियों को सब जगह यातनाएं दीं, इस प्रयत्न में कि वे मसीह को शाप दें। मैं उनका इतना तीव्र विरोधी था कि मैंने दूर शहरों में विदेशों में भी उनका पीछा किया। 12 मैं ऐसे ही काम पर, महायाजकों से अधिकार और आज्ञा पत्र लेकर, दमिश्क जा रहा था, 13 तो हे राजा, एक दिन करीब दोपहर के समय, सूर्य के प्रकाश से भी तेज़ एक ज्योति स्वर्ग से मुझ पर और मेरे साथियों पर चमकी। 14 हम सब गिर पड़े, और मैंने एक आवाज़ को अपने से इब्रानी भाषा में यह कहते सुना, 'शाऊल, शाऊल तू मुझे क्यों सता रहा है? तू केवल स्वयं को चोट पहुंचा रहा है।'[4] 15 मैंने पूछा, "महाशय आप कौन हैं?"

"और प्रभु ने उत्तर दिया, 'मैं यीशु हूं, जिसे तू सता रहा है। 16 अब खड़ा हो। क्योंकि मैं तुझ पर इसलिए प्रकट हुआ हूँ कि तुझे अपना सेवक और अपना गवाह नियुक्त करूं। तुझे इस अनुभव के बारे में और कई अवसरों के विषय में जो मैं तुझ पर प्रकट करूंगा, संसार को बताना है। 17 और मैं तेरे निज लोगों से और अन्यजातियों से तेरी रक्षा करूंगा। हां, मैं तुझे अन्यजातियों के पास उनकी वास्तविक स्थिति के प्रति उनकी आंखों को खोलने के लिए भेजने जा रहा हूं, 18 ताकि वे पश्चात्ताप करें और शैतान के अन्धकार के बदले परमेश्वर की ज्योति में रहें, ताकि वे अपने पापों की क्षमा और परमेश्वर की मीरास को प्राप्त कर सकें, सब जगह के रहने वाले उन सब लोगों के साथ, जिनके पाप धुल गए हैं, जो मुझ में विश्वास करने के द्वारा अलग किए गए हैं।" 19 और इसलिए, हे राजा अग्रिप्पा, मैंने उस स्वर्गीय दर्शन का उल्लंघन नहीं किया। 20 मैंने पहले दमिश्क के लोगों में प्रचार किया, तब यरूशलेम और सारे यहूदिया के, और अन्य जातियों को भी कि सब अपने

[1] मूलतः "हाथ बढ़ाकर।" [2] मूलतः "अपनी जाति के बीच।" [3] मूलतः "के नाम से।" [4] मूलतः "पैने [illegible] लात मारना तेरे लिए कठिन है।"

पापों को छोड़कर परमेश्वर की ओर फिरें— और अच्छे कार्य करने के द्वारा अपने पश्चात्ताप करने का प्रमाण दें। 21 इसका प्रचार करने के कारण यहूदियों ने मुझे मन्दिर मे पकड़ा और मुझे मार डालने का प्रयत्न किया, 22 परन्तु परमेश्वर ने मुझे बचाया जिससे मैं आज भी अभी तक जीवित हूं कि इन तथ्यों के बारे मे छोटे बड़े सबको सुनाऊं। मैं इसके सिवाय और कोई शिक्षा नही देता जैसा भविष्यद्वक्ताओं और मूसा ने कहा था 23 कि मसीह दुख उठाएगा, और मृतकों मे से जी उठने वालो मे प्रथम होगा कि यहूदियो और अन्यजातियो दोनों को समान रूप से प्रकाश पहुँचाएं।"

24 अचानक फेस्तुस ने चिल्लाते हुए कहा, पौलुस तू पागल है। अधिक विद्या पाने से तेरा मस्तिष्क खराब हो गया है! 25 परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया, 'परम आदरणीय फेस्तुस, मैं पागल नही हूँ। मैं गम्भीर सत्यवचन कह रहा हूं। 26 क्योंकि मुझे निश्चय है कि इन घटनाओं की जानकारी राजा अग्रिप्पा को है क्योंकि ये घटनाएं किसी कोने में नहीं हुई! 27 राजा अग्रिप्पा, क्या आप भविष्यद्वक्ताओं पर विश्वास करते हैं? परन्तु मैं जानता हूँ कि आप करते हैं—" 28 अग्रिप्पा ने उसे बीच ही मे रोका। "इस प्रकार के तुच्छ प्रमाणों से[5] क्या तू मेरे मसीही बन जाने की आशा करता है?" 29 और पौलुस ने उत्तर दिया, "परमेश्वर करे कि चाहे मेरे प्रमाण तुच्छ हों या उत्तम, यहा श्रोताओं मे से आप और सब वैसे ही बन जाएं जैसा मैं हूँ, सिवाय इन जंजीरो के।"

30 तब राजा, राज्यपाल, बिरनीके, और दूसरे सब खड़े हुए और चले गए। 31 बाद मे जब उन्होंने उस पर बातचीत की तो सहमत हुए "इस व्यक्ति ने कुछ ऐसा नहीं किया है जो मृत्यु या कैद के योग्य हो।" 32 और अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, "यदि उसने कैसर की दोहाई न दी होती, तो वह छूट सकता था।"

27 1 अन्त मे प्रबन्ध किया गया कि हम जहाज द्वारा रोम की अपनी यात्रा शुरू करें। तब पौलुस और कई दूसरे बन्दियों को यूलियुस नामक अफसर की देखभाल मे रखा गया, जो राजकीय सैनिकों मे से एक था। 2 हम एक जहाज[1] पर निकले, जिसे तुर्किस्तान तट पर[2] कई स्थानों में ठहरना था। मैं यह भी लिख दू कि अरिस्तर्खुस,[3] थिस्सलुनीके का एक यूनानी, हमारे साथ था। 3 अगले दिन जब हमने सैदा मे लंगर बांधकर जहाज टिकाया, तो यूलियुस ने पौलुस पर बड़ी दया की और उसे मित्रो से भेंट करने और उनका सत्कार ग्रहण करने के लिए तट पर भेज दिया। 4 वहां से फिर समुद्र में आने के बाद हमें विरुद्ध दिशा की ओर बहने वाली हवा मिली जिससे जहाज को मार्ग पर बढ़ाने मे कठिनाई हुई, इसलिए हम कुप्रुस के उत्तर मे द्वीप और महाद्वीप[4] के बीच से होकर गए, 5 और किलिकिया और पंफूलिया प्रान्तों के तट से होते हुए, हम लूसिया प्रान्त के मूरा मे उतरे। 6 वहां हमारे अफसर को सिकन्दरिया से आता हुआ मिस्र का जहाज मिला जो इटली जाने पर था, और उसने हमे उस पर बैठा दिया। 7, 8 कई दिनो की कठिन यात्रा के बाद अन्त मे हम कनिदुस[5] के निकट पहुँचे, परन्तु हवाएँ बहुत तेज हो गई थी, इसलिए हम सलमोने के बन्दरगाह को पार करते क्रेते होते हुए बढ़े। हवा के थपेड़े खाते हुए बड़ी कठिनाई से दक्षिणी तट से होकर बहुत धीमी गति से आगे बढ़ते हुए, हम लसया शहर के पास, "शुभ-लंगरबारी" में पहुँचे।

---

[5] मूलत "थोड़े ही समझाने से।"

[1] मूलत "अद्रमुत्तियुम के एक जहाज।" [2] मूलत "असिया (एशिया) के किनारे।" [3] प्रेरितों 19 29, 20 4 पढ़िये। [4] यही आशय है। मूलत. "हम कुप्रुस की आड से होकर चले।" उस युग की कथाओं का यही अर्थ है जो उक्त व्याख्या मे दिया गया है। कनिदुस, तुर्किस्तान के दक्षिणपूर्वी तट का बन्दरगाह था।

9 वहाँ हम कई दिनों तक ठहरे रहे। यह वर्ष का अन्तिम समय था,[6] लम्बी यात्रा के लिए मौसम भयंकर होता जा रहा था[6] और पौलुस ने इस विषय पर जहाज़ के अधिकारी से बातें की। 10 उसने कहा, "सज्जनों, मेरा विश्वास है कि हम आगे बढ़ें तो खतरा मोल लेंगे—हो सकता है जहाज़ टूट जाए, जहाज़ के माल को हानि पहुंचे, हमें चोट लगे या हमारी मृत्यु हो जाए।" 11 परन्तु बन्दियों पर ठहराए गए अधिकारियों ने पौलुस की सुनने के बदले जहाज़ के कप्तान और मालिक की सुनी। 12 और चूंकि "शुभ-लंगरबारी" एक खुला हुआ[7] बन्दरगाह था—जो ठंड बिताने के लिए बड़ा खराब स्थान था—अधिकांश मल्लाहों ने सलाह दी कि फीनिक्स तट पर पहुंचने का प्रयत्न किया जाए, ताकि वहां ठंड बिता सकें, फीनिक्स अच्छा बंदरगाह था जो केवल उत्तर पश्चिम और दक्षिण पूर्व की ओर ही खुला हुआ था। 13 ठीक उसी समय दक्षिण से धीमी हवाएं चलने लगी, और यात्रा के लिए बड़ा सुहावना दिन सा प्रतीत हुआ, तब उन्होंने लंगर उठाया और तट के बहुत समीप से होकर जाने लगे। 14, 15 परन्तु कुछ ही समय बाद, अचानक मौसम बदला और जहाज़ बड़ी तेज आंधी (जिसे वे यूरकुलीन कहते हैं) की चपेट में आ गया जो उसे समुद्र में बहा ले गई। उन्होंने पहले तो फिर से तट की ओर जाने का प्रयत्न किया, परन्तु असफल रहे, इसलिए उन्हों ने प्रयत्न करना छोड़ दिया और समुद्र में जहाज़ को आंधी के आगे-आगे बढ़ने दिया। 16 अन्त में हम कौदा नामक एक छोटे द्वीप के पीछे में होकर गए, जहां बड़ी कठिनाई से हमने जीवन रक्षक नाव को जो हमारे पीछे बंधी थी, ऊपर उठाया, 17 और तब नाविकों ने जहाज़ के निचले भाग को दृढ़ रखने के लिए उसे रस्सियों से बांधा। और उथली खाड़ी की बालू[8] में फंस जाने के डर से, मस्तूल को नीचे झुका लिया, और इस प्रकार हवा के साथ साथ बहते चले गए। 18 अगले दिन जब समुद्र की आंधी और ऊंची उठने लगी, तब मल्लाहों ने जहाज़ का माल नीचे फेंकना शुरू किया। 19 अगले दिन उन्होंने जहाज़ की रस्सियों और उन सब वस्तुओं को बाहर फेंक दिया जो उनके हाथ लगीं। 20 इसी प्रकार भयानक आंधी कई दिनों[9] तक बनी रही, जब तक अन्त में उनकी सारी आशा जाती न रही। 21 बहुत समय से किसी ने भोजन नहीं किया था, परन्तु अन्त में पौलुस ने मल्लाहों को साथ बुलाया और कहा, "तुम लोगों को पहले ही मेरी बात मान लेनी चाहिए थी और "शुभ-लंगरबारी" नहीं छोड़ना था—तुम इस विपत्ति और हानि से बच सकते थे! 22 परन्तु तुम अब आनन्दित होओ! चाहे जहाज़ डूब जाए, तौभी हममें से किसी का प्राण नहीं जाएगा। 23 "क्योंकि पिछली रात, परमेश्वर जिसका मैं हूं और जिसकी मैं सेवा करता हूं, उसका एक स्वर्गदूत मेरे पास आया, 24 और उसने कहा, "पौलुस, मत डर—क्योंकि कैसर के सामने तुझे मुकदमे में अवश्य खड़ा होना पड़ेगा परमेश्वर ने तेरी बिनती सुन ली है और वह उन सब का जीवन बचाएगा जो तेरे साथ यात्रा कर रहे हैं।" 25 इसलिए हिम्मत से काम लो! क्योंकि मुझे परमेश्वर पर विश्वास है। जैसा उसने कहा ठीक वैसा ही होगा! 26 परन्तु एक द्वीप पर हमारा जहाज़ नष्ट हो जाएगा। और हमें किसी द्वीप पर ठहरना होगा।

27 आंधी की चौदहवीं रात को लगभग आधी रात के समय, जब हम अद्रिया समुद्र में आगे पीछे बह रहे थे, तो मल्लाहों ने अनुमान लगाया कि भूमि समीप है। 28 उन्होंने जल की गहराई नापी, और अपने नीचे 120 फुट पानी पाया। कुछ समय बाद उन्होंने फिर गह-

[6] मूलत "उपवास के दिन अब बीत चुके थे।" यह शरद ऋतु के समय होता था जब दिन और रात बराबर होते हैं। [7] यही आशय है। [8] मूलत "सुरतिस के छोर बालू पर टिक जाने के भय से।" [9] मूलत "न सूर्य न तारे दिखाई दिए।

राई नापी, और केवल 90 फुट गहराई पाई। 29 उन्होंने समझ लिया कि इसी गति में वे शीघ्र ही तट पर पहुंच जाएंगे, और तट पर बड़ी चट्टानों के डर से, उन्होंने जहाज के पिछले भाग से चार लंगर डाले और सवेरा होने की बाट जोहने लगे। 30 कई मल्लाहों ने जहाज छोड़ देने का विचार किया, और जहाज के अगले भाग से लंगर डालने के बहाने, संकट के समय काम आने वाली नाव को पानी में उतार दिया। 31 परन्तु पौलुस ने सैनिकों और उनके प्रधान अधिकारी से कहा, "यदि हरऐक जहाज पर न ठहरें तो हम सब मर जाएंगे।" 32 तब सैनिकों ने रस्सियां काट दीं और नाव को बह जाने दिया। 33 जब अन्धकार समाप्त हुआ और सवेरा होने लगा, तब पौलुस ने हर-एक से भोजन करने की विनती की। उसने कहा, "तुम सबने दो सप्ताह से कुछ भोजन नहीं किया है, 34 अब अपनी ही भलाई के लिए कृपा कर कुछ खालो! क्योंकि तुम्हारी कुछ भी हानि नहीं होगी!" 35 तब उसने कुछ रोटियाँ लीं और सबके सामने परमेश्वर को धन्यवाद दिया, और एक टुकड़ा तोड़कर उसे खाया। 36 तब सहसा सबको अच्छा लगा और सबने खाना शुरू किया, 37 हम सब दो सौ छिहत्तर लोगों ने—क्योंकि जहाज में हमारी इतनी ही संख्या थी—38 भोजन करने के बाद, मल्लाहों ने जहाज पर के सारे गेहूं को फेंककर जहाज को और हल्का किया। 39 जब दिन हुआ, तब उन्होंने समुद्र तट की रूप-रेखा को नहीं पहचाना, परन्तु एक खाड़ी को देखा जिसका चौड़ा तट था और सोचने लगे कि वे चट्टानों के बीच से होते हुए तट तक पहुंच सकेंगे या नहीं। 40 उन्होंने अन्त में कोशिश करने का निश्चय किया। उन्होंने लंगरों को काट डाला और उनको समुद्र में छोड़ दिया, तब पतवारों को नीचे किया और पाल उठाकर तट की ओर बढ़ चले। 41 परन्तु जहाज का अगला भाग जलमग्न बालू से टकरा कर धंस गया और पिछले भाग पर तेज़ लहरों की मार पड़ने लगी जिससे वह टूटने लगा। 42 सैनिकों ने अपने प्रधान अधिकारी को सलाह दी कि वे बन्दियों को मार डालें कहीं ऐसा न हो कि वे तैर कर किनारे चले आएं और भाग जाए। 43 परन्तु यूलियुस पौलुस को बचाना चाहता था, इसलिए उसने उन्हें मना किया। तब उसने उन सबसे जो तैर सकते थे, कहा कि वे तैरकर किनारे पर पहुंच जाएं, 44 और बाकी लोग लकड़ी के तख्तों और टूटे हुए जहाज के टुकड़ों पर किनारे जाएं। इस प्रकार सब सकुशल तट पर पहुंच गए।

28 1,2 हमने शीघ्र समझ लिया कि हम मिलिते द्वीप में हैं। द्वीप के लोगों ने हम पर बड़ी दया की, तट पर हमारे लिए आग जलाकर हमारा स्वागत किया कि हम बरसते पानी और ठंड में गरम रहें। 3 जब पौलुस ने लकड़ियों का गट्ठा बटोरकर आग पर रखा, तब एक ज़हरीला सर्प, आंच पाकर निकला, और पौलुस के हाथ में लिपट गया! 4 द्वीप के लोगों ने उसे वहां लटकते देखा और आपस में कहा, "निसन्देह यह खूनी है! यद्यपि वह समुद्र से बच गया है, तौभी न्याय इसे जीवित रहने नहीं देगा!" 5 परन्तु पौलुस की कुछ हानि नहीं हुई; उस ने सर्प को आग में झटक दिया। 6 लोग ठहरे रहे कि अब पौलुस सूज जाएगा या वह अचानक गिरकर मर जाएगा, परन्तु जब वे बहुत देर तक ठहरे रहे और उसकी कुछ हानि न हुई, तब उन्होंने अपना मन बदल दिया और निश्चय किया कि वह कोई देवता है।

7 तट के पास जहां हम उतरे थे एक ज़मीन थी, जो द्वीप के राज्यपाल पुबलियुस की थी। उसने आदर के साथ हमारा स्वागत किया और तीन दिन तक हमारी पहुनाई की। 8 उस समय ऐसा हुआ, कि पुबलियुस के पिता को बुखार

[10] यही आशय है।

चढ़ा था और वह पेट के रोग मे पीड़ित था। पौलुस ने अन्दर जाकर उसके लिए प्रार्थना की, और उस पर अपने हाथ रखकर उसे चंगा किया! 9 तब द्वीप के सब बीमार लोग आए और चंगे किए गए। 10 परिणाम यह हुआ कि हमें बहुतायत से भेंट मिली,[1] और जब फिर जहाज की यात्रा पर जाने का समय आया, तो लोगों ने यात्रा के लिए हमारी आवश्यकता की सब प्रकार की वस्तुएं लेकर जहाज पर रखीं।

11 तीन महीने के पश्चात् हम सिकन्दरिया के एक जहाज पर सवार हुए। इस जहाज का चिन्ह "जुड़वे-भाई" था और इसने इसी द्वीप मे शीतकाल बिताया था। 12 सबसे पहले हम सुरकूसा में रुके, जहां हम तीन दिन ठहरे रहे। 13 वहां से घूमकर हम रेगियुम में आए, एक दिन के बाद दक्षिणी हवा चलने लगी, जिससे अगले दिन हम पुतियुली पहुंचे, 14 वहां हमें कई विश्वासी मिले! उन्होंने हमसे अपने साथ सात दिन तक ठहरने का अनुरोध किया। तब हम रोम के लिए निकले। 15 रोम के भाइयों ने सुना था कि हम आने वाले हैं और वे हम से भेंट करने के लिए अप्पियुस के बाजार[2] तक आए। दूसरे हमसे तीन-सराय[3] मे मिले। जब पौलुस ने उन्हें देखा, तो उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया और उसका साहस बढ़ा।

16 जब हम रोम पहुंचे, तब पौलुस को आज्ञा मिली कि वह जहां चाहे, रहे; परन्तु उसे एक सैनिक के पहरे मे रहना पड़ेगा।

17 वहां पहुंचने के तीन दिन बाद उसने उस शहर के यहूदी अगुवों को साथ बुलाया और उनसे इस प्रकार बातें की: "भाइयो, मैं यरूशलेम में यहूदियों द्वारा पकड़ा गया और उन्होंने अभियोग लगाकर मुझे रोमी सरकार के हाथ मे सौंप दिया, यद्यपि मैंने न किसी का कुछ बिगाड़ा था, न ही हमारे पूर्वजों की प्रथाओं को तोड़ा था। 18 रोमियों ने मुझ पर मुकदमा किया और मुझे छोड़ देना चाहा, क्योंकि उन्होंने मृत्यु-दण्ड के योग्य कोई कारण न पाया जिसकी मांग यहूदी-अगुवे कर रहे थे। 19 परन्तु जब यहूदियों ने निर्णय का विरोध किया, तो मैंने उनके प्रति कोई द्वेष न रखकर, यह आवश्यक समझा कि कैसर की दोहाई दूं। 20 मैंने तुमसे आज यहां आने की विनती इसलिए की ताकि हम एक-दूसरे को पहचान सकें और मैं तुम्हें बता दूं कि मेरे इस विश्वास के कारण कि मसीह[4] आ चुका है, मैं इस जंजीर मे जकड़ा हूं।"

21 उन्होंने उत्तर दिया, "हमने तेरे विरुद्ध कुछ नहीं सुना है! हमें यहूदिया से कोई चिट्ठी नहीं मिली न ही यरूशलेम[5] से आने वालों ने कोई हाल बताया। 22 परन्तु हम सुनना चाहते हैं कि तू क्या विश्वास करता है, क्योंकि इन मसीहियों के विषय मे हम केवल यही जानते हैं कि सब स्थानों मे उनका अपमान किया जाता है।"

23 तब समय ठहराया गया और उस दिन बड़ी संख्या मे लोग उसके घर आए। उसने उन्हें परमेश्वर के राज्य के विषय मे बताया और उनको धर्मशास्त्र से मूसा की पांच पुस्तकों और भविष्यद्वाणी की पुस्तकों मे से, मसीह के बारे मे शिक्षा दी। उसने सुबह भाषण देना आरम्भ किया और शाम तक बोलता रहा। 24 कुछ लोगों ने विश्वास किया, और कुछ लोगों ने नहीं किया। 25 परन्तु आपस मे ही तर्क वितर्क करने के बाद वे चले गए और पौलुस के ये अन्तिम शब्द उनके कानों मे गूंजते रहे: पवित्र आत्मा ने भविष्यद्वक्ता यशायाह के द्वारा यह ठीक कहा, 26 यहूदियों से कहो, "तुम सुनोगे और देखोगे परन्तु नहीं समझोगे। 27 क्योंकि तुम्हारे मन बहुत मोटे हैं और तुम्हारे कान नहीं सुनते हैं और तुमने समझ के प्रति

[1] मूलतः "आदर।" [2] रोम से लगभग सैंतालीस मील दूर। [3] रोम से लगभग पैंतालीस मील दूर। [4] मूलतः "इस्राएल की आशा के लिए।" परन्तु सम्भवतः जैसे दूसरे स्थानों में वैसे ही यहां भी उसका संकेत मुर्दों के पुनः जी उठने के उसके विश्वास की ओर हो। [5] यही आशय है।

अपनी आंखें बन्द कर ली हैं क्योंकि तुम देखना और सुनना और समझना और मेरी ओर फिरना नहीं चाहते कि मैं तुम्हें चंगा करूं।"[6] 28, 29[7] "इसलिए मैं चाहता हूं तुम समझो कि परमेश्वर का यह उद्धार अन्यजातियों को भी मिला है, और वे उसे ग्रहण करेंगे।"

30 पौलुस अपने किराए के मकान[8] मे अगले दो वर्ष तक रहा और वह उन सबका स्वागत करता था जो उससे भेंट करने के लिए आते थे, 31 वह उन्हें निडर होकर परमेश्वर के राज्य के विषय में और प्रभु यीशु मसीह के विषय मे बताता था, और किसी ने उसे रोकने का प्रयत्न नही किया।

---

[6] यशायाह 6 9, 10। [7] कई प्राचीन हस्तलेखों में यह वाक्य जुड़ा है, "जब उसने यह कहा तो यहूदी आपस में बहुत विवाद करने लगे और वहां से चले गए।" [8] अथवा, "अपने स्वयं के धन से।"

रोमियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

1 1 रोम के प्रिय मित्रो। यह पत्र यीशु मसीह के सेवक, पौलुस की ओर से है, जो मिशनरी होने के लिए चुना गया, और परमेश्वर के शुभ सन्देश का प्रचार करने के लिए भेजा गया है। 2 इस शुभ सन्देश की प्रतिज्ञा, बहुत समय पहले परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा, पुराने नियम मे की गई थी। 3 यह शुभ सन्देश परमेश्वर के पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय मे है, जिनका जन्म राजा दाऊद के वंश मे हुआ, 4 और वह मरे हुओं मे से जी उठाए जाने के द्वारा परमेश्वर के सामर्थी पुत्र सिद्ध हुए, जिनमे स्वयं परमेश्वर का पवित्र स्वभाव था। 5 अब, मसीह के द्वारा, हम अयोग्य पापियो पर परमेश्वर की समस्त दया उंडेली गई है, और अब वह हमे सारे संसार मे भेज रहा है कि हम सब स्थानो में सब लोगो को परमेश्वर के महान कामो के विषय मे बताए, जिससे वे भी विश्वास करें और उसकी आज्ञा मानें। 6. 7 रोम के प्रिय मित्रो, तुम भी उन लोगो मे से हो जिनसे वह बहुत प्रेम रखता है। तुम भी यीशु मसीह के द्वारा बुलाए गए हो कि परमेश्वर के निज लोग अर्थात उसकी पवित्र प्रजा बनो। परमेश्वर की समस्त दया और शान्ति हमारे पिता परमेश्वर और हमारे स्वामी यीशु मसीह की ओर से तुम्हें मिले।

8 सबसे पहले मैं यह बता दूं कि जहा कही मैं जाता हूं, तुम्हारी चर्चा सुनता हूं। परमेश्वर पर तुम्हारे विश्वास के विषय मे सारे ससार के लोग जानने लगे हैं। मैं इस अच्छी सूचना के लिए और तुम मे से हर एक के लिए, यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का बहुत धन्यवाद करता हू। 9 परमेश्वर जानता है कितनी बार मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करता हूं। रात दिन मैं तुमको, और तुम्हारी आवश्यकताओं को प्रार्थना में उसके सामने रखता हूं जिसकी सेवा मैं अपनी पूरी शक्ति के साथ, दूसरो को उसके पुत्र के विषय में शुभ सन्देश सुनाते हुए करता हूं। 10 और जिन बातों के लिए मैं लगातार प्रार्थना किया करता हूं उनमें से एक यह है कि यदि परमेश्वर की इच्छा[1] हो, तो अन्त में मैं तुमसे भेंट करने के लिए जाऊँ, और यदि हो सके तो मेरी यात्रा सफल[2] हो। 11, 12 क्योंकि मैं तुमसे भेंट करने की बहुत इच्छा करता हूं ताकि तुम्हें विश्वास[3] दे सकूं जिससे तुम्हारी कलीसिया को प्रभु में बलवन्त बनने मे सहायता मिले। तब भी, मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए, क्योंकि मैं तुम्हें केवल अपने विश्वास मे ही सहभागी नही करना चाहता परन्तु तुम्हारे विश्वास से उत्साहित भी होना चाहता हूं : हम मे से प्रत्येक एक दूसरे के लिए आशिष का कारण हो। 13 प्रिय भाइयो, मैं चाहता हूं, तुम जानो कि इससे पहले भी कई बार मैंने आना चाहा (परन्तु न आ सका) ताकि मैं तुम्हारे बीच काम कर सकू और अच्छे परिणाम देख सकूं, जैसे मुझे दूसरी अन्य जातीय कलीसियाओं[4] में देखने को मिले। 14 क्योंकि मैं तुम्हारे और सबके शिष्ट और अशिष्ट दोनों का, हां शिक्षित और अशिक्षित सबका, समान रूप से बहुत ऋणी हूं। 15 इसलिए मैं अपनी पूरी योग्यता के साथ परमेश्वर का शुभ सन्देश सुनाने के लिए, रोम मे तुम्हारे पास भी आने को तैयार हूं। 16 मैं मसीह के विषय में इस शुभ सन्देश से नही लजाता, क्योंकि जितने इस पर विश्वास करते हैं, उन सब के लिए उद्धार प्राप्त करने का परमेश्वर का यही सामर्थी उपाय है। यह सन्देश सबसे पहले केवल यहूदियों ही को प्रचार किया गया, परन्तु अब हर एक इसी प्रकार परमेश्वर के पास आने के लिए

[1] मूलतः "परमेश्वर की इच्छा से।" [2] अथवा, "कि मैं अन्त में आने में सफल होऊ।" [3] मूलत कोई आत्मिक वरदान......अर्थात......विश्वास।" [4] मूलत "अन्यजातियों में।"

बुलाया गया है। 17 इस शुभ सन्देश से हम जानते हैं कि परमेश्वर हमें स्वर्ग के लिए तैयार करता है—जब हम अपने उद्धार के लिए मसीह पर विश्वास करते हैं तब परमेश्वर की दृष्टि मे धर्मी ठहरते हैं। यह आरम्भ से अन्त तक विश्वास के द्वारा पूरा होता है।[5] पवित्रशास्त्र मे लिखा है, "जो व्यक्ति जीवन पाता है वह परमेश्वर पर विश्वास रखने के द्वारा पाता है।[6]"

18 परन्तु परमेश्वर स्वर्ग से अपना क्रोध सब पापियो और बुरे लोगो पर दिखलाता है जो स्वयं से सत्य को दूर रखते हैं। 19 क्योंकि परमेश्वर का सत्य स्वभाव ही से उन के मनों मे प्रगट है। 20 आदि काल से ही मनुष्यों ने पृथ्वी, आकाश और परमेश्वर की बनाई सब वस्तुओ को देखा है, और उसके अस्तित्व और महान अनन्त सामर्थ्य[7] को जाना है। इसके लिए (जब वे न्याय के दिन परमेश्वर के सामने खड़े होंगे) वे कोई बहाना न कर सकेंगे। 21 हां वे परमेश्वर के विषय मे अच्छी रीति से जानते थे, परन्तु वे इसे स्वीकार नहीं करते, न ही उसकी आराधना करते और न ही उसको धन्यवाद देते थे। कुछ समय बाद उन्होंने, इस विषय पर कि परमेश्वर कैसा है और उनसे क्या चाहता है मूर्खता भरे विचार करना आरम्भ कर दिया। परिणाम यह हुआ कि उनके मूर्ख मन अन्धकारमय हो गए। 22 परमेश्वर को स्वीकार किए बिना ज्ञानी होने का दावा कर, वे स्वयं ही मूर्ख बन गए। 23 और तब, सर्वदा जीवित व तेजस्वी परमेश्वर की उपासना करने के स्थान पर, उन्होंने लकड़ी और पत्थर लिए और अपने लिए मूर्तिया बनाकर उन्हें पक्षियों, पशुओ सापो और दुर्बल[8] मनुष्यो का रूप दिया।

24 इसलिए परमेश्वर ने उन्हें हर प्रकार के व्यभिचार मे छोड़ दिया और उनको मनचाहा—करने दिया अर्थात एक दूसरे के शरीर के साथ गन्दे और पापपूर्ण कार्य। 25 परमेश्वर के विषय में सत्य को जानकर उस पर विश्वास करने के बदले, उन्होंने जानबूझ कर झूठ पर विश्वास करने का चुनाव किया। इसलिए उन्होंने परमेश्वर की सृजी हुई वस्तुओं से तो प्रार्थना की, परन्तु इन वस्तुओं के सृष्टिकर्ता आशिषमय परमेश्वर की आज्ञा न मानी।

26 इसलिए परमेश्वर ने उनको छोड दिया और उन्हें इन सब बुरे कामो को करने दिया, जिसमे उनकी स्त्रियो तक ने अपने लिए परमेश्वर के प्राकृतिक उपाय मे फिरकर एक दूसरे के साथ व्यभिचार किया। 27 और पुरुष, स्त्रियों के साथ सामान्य यौन—सम्बन्ध रखने के बदले, एक दूसरे पुरुष के लिए कामुकता से जलने लगे, फल यह हुआ कि उनके मनों को उनके योग्य दण्ड मिलने लगा।

28 इस प्रकार जब उन्होंने परमेश्वर को छोड़ दिया और उसको पहचानना तक न चाहा, तब परमेश्वर ने उनको छोड़ दिया कि वे उन सब कामों को करें जो वे अपने बुरे मन से सोच सकते थे। 29 उनके जीवन हर प्रकार की बुराई और पाप से लालच और घृणा, जलन, हत्या, झगड़े, झूठ, कड़ुवाहट, और दूसरों की बुराई से भर गए। 30 वे दूसरो की पीठ पीछे निन्दा करनेवाले, परमेश्वर से घृणा करनेवाले, अपमान करनेवाले, घमण्डी, डींग मारनेवाले हो गए। वे सदा पाप करने के लिए उपायों का विचार करने लगे और लगातार अपने माता पिता की आज्ञाओं का उल्लंघन करने लगे। 31 उन्होंने गलत[9] समझना चाहा, अपनी प्रतिज्ञाए तोड़ी, और निष्ठुर—निर्दयी बन गए। 32 उनको अच्छी रीति से ज्ञात था कि इन अपराधो के लिए परमेश्वर का दण्ड है, तौभी उन्होंने आगे बढ़कर इन कामो को किया, और उनको करने के लिए दूसरो को भी उत्साहित किया।

[5] मूलत. "परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से, और विश्वास के लिए प्रगट होती है।" [6] हबक्कूक 2 : 4।
[7] अथवा, "उनके पास कोई बहाना नहीं है कि परमेश्वर नहीं है।" [8] मूलत "मरणहार।" [9] अथवा "वे मूर्ख थे।"

2 1 तुम कह रहे होगे, "अरे किन दुष्ट लोगों के बारे में बातें कर रहे हो ?" परन्तु जरा ठहरो। तुम भी उतने ही बुरे हो। जब तुम जानते हो, वे दुष्ट हैं और उनको दण्ड मिलना चाहिए, तो तुम अपने ही विषय में कहते हो, क्योंकि तुम ठीक इन्ही कामों को करते हो। 2 और हम जानते हैं कि परमेश्वर, न्यायानुकूल, इस प्रकार के काम करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को दण्ड देगा। 3 क्या तुम सोचते हो कि परमेश्वर उन कामों को करने के लिए उन्हे तो दण्ड देगा और तुम्हें छोड़ देगा। 4 क्या तुम यह नही सोचते कि वह कितना धीरजवन्त है कि अब तक उसने तुम्हें दण्ड नही दिया और दया करके तुम्हें पाप से पश्चाताप का अवसर दिया। 5 परन्तु नही, तुम सुनते नही हो, और इसलिए तुम अपने लिए भयानक दण्ड इकट्ठा कर रहे हो, क्योंकि तुम अपने पापों से फिरने से इन्कार करने की हठ किए हो। क्योकि क्रोध का एक दिन आने वाला है जब परमेश्वर पूरे विश्व का न्याय बिना पक्षपात के करेगा। 6 वह हर एक को उसके कामो के योग्य प्रतिफल देगा। 7 वह उन लोगों को अनन्त जीवन देगा जो धीरज के साथ परमेश्वर की इच्छा पालन करते हैं[1] और अदृश्य[2] गौरव, आदर और अनन्त जीवन की खोज करते हैं जिन्हे परमेश्वर देता है। 8 परन्तु वह उनको भयानक दण्ड देगा जो परमेश्वर के सत्य के विरुद्ध लडते हैं और बुरे मार्गों पर चलते हैं—परमेश्वर का क्रोध उन पर उडेला जाएगा। 9 क्लेश और दुख यहूदियो और अन्यजातियो के लिए समान रूप से होंगे जो पाप करते जाते हैं। 10 परन्तु गौरव और आदर और शान्ति परमेश्वर की ओर से उसके सब आज्ञा मानने वालों के लिए होंगे[3], चाहे वे यहूदी हो या अन्यजाति। 11 क्योकि परमेश्वर सबके साथ समान व्यवहार करता है। 12—15 वह पाप का दण्ड अवश्य देगा। उन्हें भी जिन्हें परमेश्वर की लिखित व्यवस्था नहीं मिली थी क्योंकि वे अपने विवेक मे जानते थे कि वे बुरा कर रहे हैं। परमेश्वर की व्यवस्था उनके हृदयों पर लिखी हुई है, उनके स्वयं का विवेक उन्हे दोषी ठहराता है। और परमेश्वर यहूदियो को पाप करने के लिए दण्ड देगा क्योंकि उनके पास परमेश्वर की लिखी हुई व्यवस्था है परन्तु वे लोग उसका पालन नहीं करते। वे जानते हैं क्या ठीक है, परन्तु उसे करते नहीं। फिर, उद्धार तो उन लोगो को नही दिया जाता जो जानते हैं कि क्या करना उचित है जब तक वे उसे करते नही। 16 वह दिन अवश्य आएगा जब परमेश्वर की आज्ञा से यीशु मसीह प्रत्येक के गुप्त जीवन और उसके आन्तरिक विचारों का न्याय करेगा। यह सब परमेश्वर की महान योजना का भाग है जिसकी मैं घोषणा करता हूँ।

17 तुम यहूदी सोचते हो कि तुम्हारे और परमेश्वर के बीच सब कुछ ठीक है, क्योंकि उसने अपनी व्यवस्था तुमको दी[4], तुम डींग मारते हो कि तुम परमेश्वर के विशेष मित्र हो। 18 हां, तुम जानते हो वह क्या चाहता है, तुम भले और बुरे का अन्तर जानते हो और भलाई को चाहते हो क्योकि तुमको किशोरावस्था के आरम्भ से ही परमेश्वर की व्यवस्था की शिक्षा दी गई है। 19 तुमको परमेश्वर के मार्ग का इतना निश्चय है कि तुम किसी भी अन्धे को उसका मार्ग बता सकते हो। तुम स्वयं को मार्ग दर्शन ज्योति समझते हो जो अन्धकार मे खोए हुए व्यक्तियों को परमेश्वर तक पहुचा दे। 20 तुम सोचते हो कि तुम साधारण लोगो की अगुवाई कर सकते हो और बालको तक को परमेश्वर की बातें सिखा सकते हो, क्योकि तुम वास्तव में उसकी व्यवस्था को, जो समस्त ज्ञान और सत्य से भरपूर है, जानते हो। 21 हां, तुम दूसरो को सिखाते हो—तो फिर क्यो अपने आप को नहीं सिखाते ?

[1] मूलत "जो सुकर्म में स्थिर रह कर।" [2] यही आशय है। [3] मूलत "जो भला करता है।" [4] अथवा, "तुम अपने उद्धार के लिए व्यवस्था पर निर्भर रहते हो।"

तुम दूसरों से कहते हो चोरी न करना—क्या स्वयं भी चोरी नहीं करते हो ? 22 तुम कहते हो व्यभिचार करना ग़लत है—क्या स्वयं उसे नहीं करते हो ? तुम कहते हो, "मूरतों से प्रार्थना मत करो," और तब उनके स्थान पर धन को अपना देवता बनाते हो।[8] 23 तुम्हें परमेश्वर की व्यवस्था को जानने का इतना घमण्ड है, परन्तु उसका उल्लंघन कर तुम परमेश्वर का अनादर करते हो। 24 कोई आश्चर्य नहीं, पवित्र शास्त्र में लिखा है कि संसार तुम्हारे कारण परमेश्वर को बुरा कहता है। 25 यहूदी होने से तभी लाभ है यदि तुम परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करते हो, परन्तु यदि तुम नहीं करते तो तुम विधर्मी से किसी तरह बढ़कर नहीं। 26 और यदि अन्यजाति परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करते हैं, तो क्या परमेश्वर उनको सब अधिकार और आदर नहीं देगा जिनको उसने यहूदियों को देने का विचार किया था ? 27 सच तो यह है, उन अन्यजातियों की स्थिति तुम यहूदियों से कहीं अच्छी होगी, क्योंकि तुम यहूदी जो परमेश्वर के विषय में इतना अधिक जानते हो और उसकी प्रतिज्ञाएं तुमको मिली हैं परन्तु तुम उसकी व्यवस्था का पालन नहीं करते। 28 क्योंकि तुम सच्चे यहूदी नहीं हो केवल इसलिए कि यहूदी माता-पिता से तुम्हारा जन्म हुआ या कि खतने के यहूदी आरम्भिक संस्कार को तुमने पूरा किया है। 29 नहीं, सच्चा यहूदी तो वह है जिसका हृदय परमेश्वर के साथ ठीक है। क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि ऐसे लोगों पर नहीं है जो अपने शरीर का वास्तव में खतना कराके अपनी देह को काटते हैं, परन्तु उसकी दृष्टि उन लोगों पर है जिनके हृदयों और मनों का परिवर्तन हुआ है। जिस किसी के भी जीवन में इस प्रकार का परिवर्तन हुआ है उसकी प्रशंसा भले ही तुम्हारी ओर से न हो परमेश्वर की ओर से अवश्य होगी।

3

तो फिर यहूदी होने से क्या लाभ ? क्या उनके लिए परमेश्वर की ओर से कोई विशेष लाभ है ? क्या यहूदी खतने की प्रथा का कोई महत्व है ? 2 हां, यहूदी होने के कई लाभ हैं। सर्वप्रथम, परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था उनको सौंपी (ताकि वे जान सकें और उनकी इच्छा मान सकें[1]) 3 सच है, उनमें से कई विश्वासघाती निकले, परन्तु केवल इसीलिए कि उन्होंने परमेश्वर को दी गई अपनी प्रतिज्ञाएं तोड़ी, क्या उसका यह अर्थ है कि परमेश्वर भी अपनी प्रतिज्ञाएं तोड़ेगा। 4 कदापि नहीं। यद्यपि संसार के सब व्यक्ति झूठे हैं, पर परमेश्वर झूठा नहीं है। क्या तुम्हें याद है कि भजन संहिता की पुस्तक में इस विषय पर क्या लिखा है ?[2] लिखा है कि, परमेश्वर के वचन सदैव सच्चे और सही सिद्ध होंगे। चाहे कोई भी उन पर प्रश्न उठाए। 5 कई लोग कहते हैं, "परन्तु परमेश्वर के साथ हमारा विश्वासघात करना ठीक है क्योंकि हमारे पापों के कारण से भला काम होता है, लोग जब देखेंगे कि हम कितने बुरे हैं तब वे जान लेंगे कि परमेश्वर कितना भला है, तब क्या यह उसके लिए न्यायपूर्ण है कि हमें दण्ड दे जब हमारे पापों से उसकी सहायता हो रही है ?" (कुछ लोग इसी प्रकार की बातें करते हैं।) 6 परमेश्वर ऐसा न करे। फिर वह किस प्रकार से परमेश्वर होगा यदि वह पाप को देखकर भी अनदेखा कर देगा। वह कभी किसी को दण्ड किस प्रकार दे सकेगा ? 7 क्योंकि यदि मेरे विश्वासघात के द्वारा मेरे झूठ की तुलना में परमेश्वर की सच्चाई प्रगट हुई और इस प्रकार परमेश्वर की बड़ाई हुई, तो वह मेरा न्याय नहीं कर सकता और मुझे पापी नहीं ठहरा सकता। 8 यदि तुमने यह विचार समझ लिया है तो उसका सार यह है : हम जितने अधिक बुरे हैं, परमेश्वर को उतने ही अधिक प्रिय हैं। परन्तु ऐसी बातें करने

---

[8] मूलतः "क्या आप ही मन्दिरों को लूटता है।"

[1] यही आशय है। [2] भजन संहिता 51 : 4।

वालो का श्रापित होना उचित है। तौभी कुछ लोगों का दावा है कि मैं यही प्रचार करता हूँ।

9 तो फिर, क्या हम यहूदी दूसरों से अधिक अच्छे हैं? नही, बिल्कुल भी नहीं, क्योंकि हमने पहले ही दिखा दिया है कि सब मनुष्य समान रूप से पापी हैं, चाहे वे यहूदी हों या अन्यजाति। 10 जैसा पवित्र शास्त्र में लिखा है, "कोई भला नही है—और सारे संसार में कोई निर्दोष नही है[3]।" 11 किसी ने भी कभी वास्तव मे परमेश्वर के मार्गों का अनुसरण नही किया, न ही कभी सच्चाई से करना चाहा। 12 सब भटक गए हैं, सब बुरे हो गए हैं। कही भी कोई ऐसा नही जो निरन्तर वही करता है जो उचित है, एक भी नही। 13 उनकी बातचीत खुली कब्र की दुर्गन्ध के समान[4] अश्लील और गन्दी है। उनकी जीभ झूठ से भरी है। वे जो कुछ भी कहते हैं उसमे सर्पों का विष और डंक रहता है। 14 उनके मुख श्राप और कड़वाहट से भरे हुए हैं। 15 वे हत्या करने को उतारू रहते हैं, जो भी उनसे असहमत होता है[5] उनसे वे घृणा करते हैं। 16 जहां कही वे जाते हैं अपने पीछे दुख और विपत्ति छोड़ जाते हैं, 17 सुरक्षा का अनुभव करना और परमेश्वर की आशिषो का आनन्द लेना उन्होंने कभी जाना ही नहीं। 18 परमेश्वर की उन्हें कुछ चिन्ता नही, न ही इसकी कि वह उनके विषय मे क्या सोचता है।

19 इसलिए परमेश्वर का न्याय यहूदियों पर बहुत भारी पड़ा है, क्योंकि वे इन सब बुरे कामों को करने के बदले परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने के लिए उत्तरदायी हैं, इनमे से किसी के पास कोई बहाना नही, सच तो यह है, पूरा संसार सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने मौन और दोषी है। 20 क्या तुमने इसे समझा है? कोई भी व्यक्ति व्यवस्था की आज्ञाओ को मानने के द्वारा परमेश्वर की दृष्टि मे कभी धर्मी नहीं ठहरता। क्योंकि हम परमेश्वर की व्यवस्था को जितना अधिक जानते हैं, हम पर उतना ही स्पष्ट होता जाता है कि हम उन नियमों को नहीं मान रहे हैं, परमेश्वर की व्यवस्था इसलिए है ताकि हम जानें कि हम पापी हैं। 21, 22 परन्तु अब परमेश्वर ने हमे स्वर्ग[6] तक पहुंचने का एक दूसरा मार्ग दिखाया है—"भले बनने" और उसकी व्यवस्था का पालन करने के प्रयत्न द्वारा नही, परन्तु एक नये मार्ग द्वारा (यद्यपि वास्तव में यह नया नही, क्योंकि पवित्र शास्त्र में इसके विषय मे बहुत पहले से लिखा है)। अब परमेश्वर कहता है कि वह हमें ग्रहण करेगा और हमको मुक्त करेगा—हमे निर्दोष ठहराएगा—इसी प्रकार हम मसीह के पास आने के द्वारा अपने पापो से उद्धार पा सकते हैं। चाहें हम कोई क्यों न हो। 23 हां, सबने पाप किया है, और परमेश्वर कि महिमा से रहित हैं। 24 यद्यपि हमने अपराध कर परमेश्वर को अप्रसन्न किया, तौभी वह हमें "निर्दोष ठहराता है, यदि हम यीशु मसीह मे विश्वास रखें, जो अपनी दया से हमारे पापों को क्षमा करता है। 25 क्योंकि परमेश्वर ने मसीह यीशु को हमारे पापों का दण्ड उठाने और परमेश्वर के क्रोध का अन्त करने के लिए भेजा। अपने क्रोध से बचाने के लिए उसने मसीह के लोहू और हमारे विश्वास का प्रयोग किया। इस प्रकार मे वह पूरी रीति से न्यायी हुआ। यद्यपि उसने उनको दण्ड नही दिया जिन्होंने पूर्व समयों मे पाप किया। क्योंकि वह उस समय की प्रतीक्षा मे था जब मसीह आकर उन पापों को दूर करेगा। 26 और अब इन दिनों में भी वह इसी प्रकार से पापियो को ग्रहण कर सकता है, क्योंकि यीशु ने उनके पापों को उठा लिया। परन्तु क्या यह परमेश्वर के लिए पक्षपात करना

[3] भजन संहिता 14 : 3। [4] मूलत "उनका गला खुली हुई कब्र है।" सम्भवत अर्थ है "उनकी बातचीत से दूसरों को चोट पहुंचती है।" [5] यही आशय है। [6] यही आशय है। मूलत "परमेश्वर की यह धार्मिकता प्रकट हुई है।"

नहीं है कि वह अपराधियों को मुक्त कर दे, और कहे कि वे निर्दोष हैं ? नहीं, क्योंकि वह ऐसा इस आधार पर करता है क्योंकि उन लोगों ने यीशु पर जिन्होंने उनके पापों को उठा लिया, विश्वास किया। 27 तब हम उद्धार पाने के लिए, क्या अपने कामों पर घमण्ड कर सकते हैं ? बिल्कुल नहीं। क्यों ? क्योंकि हमारा छुटकारा हमारे भले कामों पर आधारित नहीं है, यह मसीह के काम और मसीह पर हमारे विश्वास पर आधारित है। 28 इसलिए हम मसीह में अपने विश्वास के द्वारा उद्धार[7] पाते हैं और अपने भले कामों के करने के द्वारा नहीं। 29 और, क्या परमेश्वर इस प्रकार से केवल यहूदियों ही का उद्धार करता है ? नहीं अन्यजाति के लोग भी, इसी प्रकार से परमेश्वर के पास आ सकते हैं। 30 परमेश्वर हम सबके साथ समान व्यवहार करता है, चाहे हम यहूदी या अन्यजाति हों यदि उसमें विश्वास है, तो सब छुटकारा पाते हैं। 31 तब फिर, यदि हम विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं, तो क्या इसका अर्थ यह है कि हमें अब परमेश्वर की व्यवस्था को मानने की आवश्यकता नहीं रही ? कदापि नहीं। सच तो यह है कि केवल जब हम यीशु पर विश्वास करते हैं तभी हम वास्तव में उनकी आज्ञा मान सकते हैं।

4 1, 2 मानवीय रूप से इब्राहीम हमारे यहूदी राष्ट्र का स्थापक था। विश्वास द्वारा उद्धार पाने के प्रश्न के सम्बन्ध में उसके क्या अनुभव थे ? क्या परमेश्वर ने उसे उसके भले कामों के कारण ग्रहण किया ? यदि ऐसा होता, तो उसके घमण्ड करने का विषय होता। परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में इब्राहीम के घमण्ड करने का कोई कारण न था। 3 क्योंकि पवित्र शास्त्र में लिखा है कि इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और इसीलिए परमेश्वर ने उसके पापों को क्षमा किया और उसे "निर्दोष" ठहराया। 4, 5 परन्तु क्या उसने अपने सब अच्छे कामों के करने के द्वारा स्वर्ग जाने का अधिकार प्राप्त नहीं किया ? नहीं, क्योंकि उद्धार पाना दान है, यदि "कोई व्यक्ति भला बनकर उसे कमा सकता, तो वह वरदान नहीं होता है। यह उन लोगों को दिया जाता है जिन्होंने उसके लिए कोई काम नहीं किया।" क्योंकि परमेश्वर पापियों को अपनी दृष्टि में धर्मी ठहराता है यदि वे परमेश्वर के क्रोध से[1] अपने बचाव के लिए मसीह पर विश्वास करते हैं। 6 राजा दाऊद ने इसके विषय में लिखा। उसने एक अयोग्य पापी की प्रसन्नता का वर्णन किया जो परमेश्वर के द्वारा "निर्दोष"[2] ठहराया गया है। 7 उसने लिखा, "धन्य हैं वे लोग जिनके पाप क्षमा किए गए हैं। 8 हां, वह व्यक्ति कितना आनन्दित है जिसके पापों को प्रभु अब उसके विरुद्ध न गिने।[3] 9 तो अब, प्रश्न है : क्या यह आशिष केवल उन्हीं को दी जाती है जिनका विश्वास मसीह में है, परन्तु साथ ही जो यहूदी व्यवस्था का पालन करते हैं, या यह आशीष उन लोगों को भी दी जाती है जो यहूदी-नियमों का पालन नहीं करते हैं, परन्तु केवल मसीह पर विश्वास करते हैं ? इब्राहीम के साथ क्या हुआ ? हम कहते हैं कि उसने इन आशीषों को विश्वास के द्वारा ग्रहण किया। क्या केवल विश्वास के द्वारा ? या इसलिए कि उसने यहूदी-नियमों का भी पालन किया ? 10 इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, इसका उत्तर दीजिए : परमेश्वर ने इब्राहीम को यह आशिष कब दी ? उसके यहूदी बनने से पहले— इससे पहले कि उसने खतने के आरम्भिक यहूदी संस्कार को माना। 11 जब परमेश्वर ने उसे उसके विश्वास के कारण आशिष देने की प्रतिज्ञा दी, तभी इसके बाद उसका खतना हुआ। खतने का संस्कार एक चिन्ह था

[7] मूलत "धर्मी ठहरता।"

[1] मूलत. "विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है।" [2] मूलत "धर्मी।" [3] भजन संहिता 32 : 1—2।

कि इब्राहीम को पहले ही विश्वास है और कि इस संस्कार के पूरा होने से पूर्व, परमेश्वर ने उन्हें पहले ही ग्रहण किया है और अपनी दृष्टि में धर्मी और भला ठहराया है। इसलिए इब्राहीम उन सब का आत्मिक पिता है जो विश्वास रखते हैं और बिना यहूदी नियमों को माने उद्धार पाते हैं। तब हम जानते हैं, कि जो इन नियमों का पालन नहीं करते वे परमेश्वर के द्वारा विश्वास से धर्मी ठहराए जाते हैं 12 और इब्राहीम उन यहूदियों का भी आत्मिक पिता है जिनका खतना हो चुका है। वे इस उदाहरण से देख सकते हैं कि इस संस्कार से उनका उद्धार नहीं होता, क्योंकि इब्राहीम ने खतने से पहले केवल विश्वास के द्वारा परमेश्वर का अनुग्रह पाया। 13 तब, यह स्पष्ट है, कि पूरे संसार को इब्राहीम और उसके वंश को देने की, परमेश्वर की प्रतिज्ञा नहीं थी कि इब्राहीम ने परमेश्वर की व्यवस्था का पालन किया परन्तु इसलिए कि उसने परमेश्वर पर विश्वास रखा कि वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेगा। 14 इसलिए यदि अब भी तुम्हारा दावा है कि परमेश्वर की आशिषें उन को मिलती हैं जो भले हैं, तो तुम कह रहे हो कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं उनके लिए जिनमें विश्वास है, व्यर्थ है, और विश्वास मूर्खता है। 15 परन्तु सच बात तो यह है : जब हम परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने के द्वारा परमेश्वर की आशिष और उद्धार प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं, तब हमारा अन्त सदा उसके क्रोध के द्वारा होता है, क्योंकि हम सदैव व्यवस्था का पालन करने में चूक जाते हैं। व्यवस्था का उल्लंघन करने से बचने का हमारा एक ही उपाय है कि उल्लंघन करने को कोई व्यवस्था ही नहीं हो। 16 इसलिए परमेश्वर की आशिषें हमें विश्वास द्वारा, बिना मूल्य वरदान के रूप में दी जाती हैं; हम उन्हें निश्चय ही पा सकते हैं चाहे हम यहूदी प्रथाओं का पालन करें या न करें, केवल यदि हम में इब्राहीम का सा विश्वास हो, क्योंकि जहां विश्वास की बात आती है इब्राहीम हम सबका पिता है। 17 पवित्र शास्त्र का यही अर्थ है जहां उसमें लिखा है कि परमेश्वर ने इब्राहीम को *बहुत सी जातियों का पिता बनाया। परमेश्वर हर जाति में उन सब लोगों को ग्रहण करेगा जो इब्राहीम के समान परमेश्वर पर विश्वास करते हैं। और यह प्रतिज्ञा स्वयं परमेश्वर की ओर से है, जो मरे हुओं को फिर जिलाता है और इतने निश्चय के साथ भविष्य की घटनाओं के विषय में कहता है मानो वे पहले ही बीत चुकी हैं। 18 इसलिए, जब परमेश्वर ने इब्राहीम को बताया कि वह उसे एक पुत्र देगा जिसकी अनेक सन्तान होंगी और जिससे एक बड़ी जाति बन जाएगी, इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया यद्यपि (मानवीय दृष्टि से) ऐसी प्रतिज्ञा पूरी हो ही नहीं सकती। 19 और इसलिए कि उसका विश्वास दृढ़ था, उसे इस बात की चिन्ता भी नहीं कि वह सौ वर्ष की आयु का पिता बनने के लिए बहुत वृद्ध है और उसकी पत्नी सारा भी, नब्बे वर्ष की आयु में, बालक उत्पन्न करने के लिए बहुत बूढ़ी है। *20* परन्तु इब्राहीम ने कभी सन्देह नहीं किया। उसने परमेश्वर पर विश्वास किया, क्योंकि उसका विश्वास और भरोसा और दृढ़ होता गया, और उसने इस आशिष के मिलने के पहले, इसके लिए परमेश्वर की प्रशंसा की। 21 उसे पूरी रीति से निश्चय था कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार कुछ भी करने में अच्छी तरह समर्थ है। 22 और इब्राहीम के विश्वास के कारण परमेश्वर ने उसके अपराधों को क्षमा किया और उसे "निर्दोष" ठहराया। 23 अब यह अद्भुत वचन---कि वह अपने विश्वास द्वारा ग्रहण किया गया और भला ठहराया गया---केवल इब्राहीम के ही लाभ के लिए नहीं था। 24 यह हमारे लिए भी था, हमें निश्चय दिलाने कि परमेश्वर हमें ग्रहण करेगा जिस प्रकार उसने

* उत्पत्ति 17 : 17।

इब्राहीम को ग्रहण किया—जब हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करेंगे जिसने हमारे प्रभु यीशु मसीह को मरे हुओ मे से फिर जिलाया। 25 वह हमारे पापों के लिए मरे और फिर जी उठे कि हमें परमेश्वर की अच्छाइयों से[a] भरकर परमेश्वर के साथ हमारा सम्बंध ठीक बनाएं।

5 1 इसलिए अब, क्योंकि हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करने के द्वारा उसकी दृष्टि मे भले बने, इसलिए हमारे प्रभु यीशु मसीह ने हमारे लिए जो कुछ किया है। उसके द्वारा हमे उसमे सच्ची शान्ति प्राप्त हो सकती है। 2 क्योंकि हमारे विश्वास के कारण, उसने हमे विशेषाधिकार के इस उच्च स्थान पर पहुंचाया है जहा अब हम खड़े हैं, अब हम विश्वास और हर्ष के साथ वास्तव मे वह सब बनने की आशा कर सकते हैं जो हमारे लिए परमेश्वर के मन में था कि हम बनें। 3 जब हम समस्याओं और परीक्षाओं मे पड़ें तब हम आनन्दित भी हो सकते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि उनका होना हमारे लिए अच्छा है—उनमे हमे धीरजवन्त बनने मे उनसे सहायता मिलती। 4 और धीरज से हमारे चरित्र का बल बढ़ता है और हर बार धीरज से काम लेने से हमे परमेश्वर पर अधिक विश्वास रखने मे सहायता मिलती है जब तक अन्त में हमारी आशा और विश्वास दृढ़ और स्थिर नहीं हो जाते। 5 तब ऐसा हो जाने पर, हम अपने सिरो को ऊचा उठा सकते हैं चाहे कुछ हो जाए हम जानते हैं कि सब ठीक है, क्योंकि हम जानते हैं कि परमेश्वर हमसे कितना अधिक प्रेम रखता है, और हम अपने अन्दर इस प्रेम का हर कही अनुभव करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने हमें पवित्र आत्मा दिया है कि वह हमारे हृदयों को अपने प्रेम से भरे। 6 जब हम अत्यन्त असहाय थे, हमारे बचाव का कोई मार्ग नही था, तब मसीह बिलकुल ठीक समय पर आया और हम पापियो के लिए मर गया जो उसके लिए किसी काम के न थे। 7 चाहे हम भले भी होते, हम वास्तव में किसी से आशा नही रख सकते थे कि वह हमारे लिए मरे, यद्यपि इसकी सम्भावना बहुत ही कम हो सकती है। 8 परन्तु जब हम पापी ही थे तब परमेश्वर ने मसीह को हमारे लिए मरने को भेजकर अपना महान प्रेम हम पर प्रकट किया। 9 और जबकि मसीह ने अपने रक्त के द्वारा हम पापियों के लिए इतना किया, तो फिर अब वह हमारे लिए और कितना अधिक नही करेगा जबकि उसने हमे निर्दोष ठहरा दिया है? अब वह हमें परमेश्वर के आने वाले सब क्रोध से बचाएगा। 10 और जबकि हम उसके शत्रु थे, हम उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर के पास वापस लाए गए। तो अब जब कि हम उसके मित्र हैं, और वह हममे रहता है, तो हमारे लिए उसकी आशीषें कितनी अधिक न होंगी। 11 अब हम परमेश्वर के साथ अपने अद्भुत नये सम्बन्ध से आनन्दित होते हैं—यह सब इसलिए है कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने हमारे अपराधो के लिए मर कर हमे परमेश्वर के मित्र बनाया है।

12 जब आदम ने पाप किया, पाप ने समस्त मानव जाति मे प्रवेश किया। उनके पाप से पूरे संसार मे मृत्यु फैल गई, इसलिए सब मरने[1] लगे। क्योंकि सबने पाप किया। 13 (हम जानते हैं कि आदम के पाप के कारण ही ऐसा हुआ) क्योंकि यद्यपि, लोग आदम के समय से लेकर मूसा तक पाप अवश्य कर रहे थे, उन दिनो मे परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था का उल्लघन करने के लिए उनका न्याय नही किया—क्योंकि उस समय तक परमेश्वर ने उन्हे अपनी व्यवस्था नही दी थी। न ही उनको बताया था कि वह उन लोगो से क्या चाहता

[a] मूलत "हमारे धर्मी ठहराने के लिए जिलाया भी गया।"

[1] मूलत "पाप जगत मे आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई।"

है। 14 इसलिए जब उनकी मृत्यु हुई तो उनके पापों के कारण नही हुई इसलिए कि उन्होंने स्वयं कभी परमेश्वर की इस विशेष व्यवस्था का, उल्लंघन नहीं किया जैसा आदम ने किया था। आदम और मसीह, जो आने पर था, उसमें बड़ा अन्तर है। 15 और मनुष्य के पाप और परमेश्वर की क्षमा में भी महान अन्तर है। क्योंकि प्रथम मनुष्य, आदम, के पाप के द्वारा बहुतों की मृत्यु हुई। परन्तु इस मनुष्य अर्थात यीशु मसीह ने, परमेश्वर की दया के द्वारा बहुतों को क्षमा दी। 16 आदम का एक पाप बहुतों के लिए मृत्यु दण्ड का कारण हुआ, जबकि मसीह मुफ्त अनेक पापों को दूर करता है और उनके स्थान पर तेजस्वी जीवन देता है। 17 प्रथम एक मनुष्य, आदम के पाप ने सब पर मृत्यु को राजा बनाया, परन्तु जो परमेश्वर की दया और छुटकारे का दान ग्रहण करेंगे, वे सब इस मनुष्य, यीशु मसीह, के कारण अनन्त जीवन में राज्य करेंगे। 18 हां, आदम का पाप सबके लिए दण्ड का कारण हुआ, परन्तु मसीह की धार्मिकता मनुष्यों को परमेश्वर के सामने धर्मी बनाती है, ताकि वे जीवन पाएं। 19 आदम बहुतों के पापी बनने का कारण हुआ क्योंकि उसने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, और मसीह बहुतों के लिए परमेश्वर के ग्रहणयोग्य बनने का कारण हुआ क्योंकि उसने आज्ञा मानी। 20 ये दस आज्ञाएं इसलिए दी गई थी जिससे सब देख सकें कि वे परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने में कितने असफल रहे हैं। परन्तु जितना अधिक हम अपनी पापमय अवस्था को देखते हैं, उतना ही अधिक हम परमेश्वर के अपार अनुग्रह पर ध्यान करते हैं जिससे हमें क्षमा मिलती है। 21 पहले, पाप सब लोगों पर राज्य कर उन्हें मृत्यु के वश में करता था, परन्तु अब उसके स्थान पर दया का राज्य है, जिससे परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध ठीक होता है और हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त होता है।

6 1 तो फिर, क्या हम पाप करते रहें जिससे परमेश्वर हमें अधिक से अधिक क्षमा करे और हम पर अधिक दया दिखाए। 2, 3 कदापि नही ! क्या हमें पाप करते रहना चाहिए जब कि हमें नही करना है ? क्योंकि हमारे जीवन से पाप की शक्ति तोड़ी गई जब हम मसीही हुए और मसीह यीशु के साथ सहभागी होने के लिए हमने बपतिस्मा लिया उनकी मृत्यु के द्वारा तुम्हारे पापमय स्वभाव की शक्ति नष्ट हो गई। 4 तुम्हारा पुराना पापप्रिय स्वभाव बपतिस्मा द्वारा गाड़ा गया जब उनकी मृत्यु हुई, और जब पिता परमेश्वर ने महिमायुक्त सामर्थ के साथ, उनको फिर से जिला उठाया, तब उनका अनुपम नया जीवन तुम्हें उपयोग करने के लिए दिया गया। 5 क्योंकि तुम उनका एक भाग बन गए हो, और इस प्रकार, जब उनकी मृत्यु हुई[1] तब तुम भी उनके साथ मरे। और अब उनके नये जीवन में सहभागी हो, अतः जैसे वह जी उठे, वैसे ही तुम भी जी उठोगे। 6 तुम्हारी पुरानी बुरी इच्छाएं उनके साथ क्रूस पर चढ़ाई गईं, तुम्हारा वह भाग जो पाप से प्रेम रखता है, समाप्त किया गया, इसलिए तुम्हारा पाप से प्रेम करने वाला शरीर अब पाप के नियंत्रण में नही है, न ही अब उसे पाप का दास बने रहने की आवश्यकता है, 7 क्योंकि जब तुम पाप के लिए मर गए तो तुम उसके सब आकर्षण और अपने ऊपर उसकी शक्ति से स्वतन्त्र हुए। 8 और इसलिए कि तुम्हारा पुराना पापी स्वभाव मसीह के साथ "मर" गया, हम जानते हैं कि तुम उसके नये जीवन में सहभागी होगे। 9 मसीह, मृतकों में से जी उठा और फिर कभी नहीं मरेगा। मृत्यु की अब आगे उस पर कोई शक्ति नही। 10 वह एक ही बार पाप की शक्ति का अन्त करने के लिए मर गया, परन्तु अब वह

[1] मूलत "उनकी मृत्यु की समानता में उनके साथ एक हो।"

परमेश्वर के साथ अटूट संगति में सर्वदा के लिए जीवित है। 11 इसलिए अपने पुराने पापी स्वभाव को पाप के लिए मरा समझो, और उसके स्थान पर तुम हमारे स्वामी यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर के लिए जीवित, और उसके प्रति सजग रहो।

12 पाप को अपने दुर्बल शरीर पर फिर से नियंत्रण न करने दो, उसकी इच्छाओं के वश में मत रहो। 13 अपने शरीर के किसी भी भाग को, पाप करने के लिए बुराई के हथियार न बनाओ, पर स्वयं को—अपने हर अंग को पूरी रीति से परमेश्वर को दे दो। क्योंकि तुम मरे हुओं में से जी उठे हो और तुम चाहते हो कि परमेश्वर के हाथों में हथियार बनो, ताकि उसके अच्छे अभिप्रायों के लिए तुम काम में लाए जाओ। 14 दोबारा पाप तुम्हारा स्वामी न बने, क्योंकि तुम व्यवस्था से नहीं बन्धे हो जो कि तुम्हें दास बना लेती है, परन्तु तुम परमेश्वर की कृपा और दया के अधीन स्वतन्त्र हो।

15 क्या इसका यह अर्थ हुआ कि अब हमें पाप करने की अनुमति है, और हमें उसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है? क्योंकि हमारा उद्धार व्यवस्था का पालन करने पर नहीं, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह को ग्रहण करने पर आधारित है, कदापि नहीं। 16 क्या तुम नहीं समझते कि तुम अपने स्वामी का चुनाव स्वयं कर सकते हो? तुम पाप को मृत्यु के साथ चुन सकते हो या फिर आज्ञाकारिता को छुटकारे के साथ चुन सकते हो। तुम जिस किसी को अपने आप को दोगे वह तुमको ले लेगा और तुम्हारा स्वामी हो जाएगा और तुम उसके दास हो जाओगे। 17 परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यद्यपि तुमने एक बार पाप के दास बनने का चुनाव किया, अब तुमने अपने सारे मन से उस शिक्षा को माना है जो तुम्हें परमेश्वर ने दी है। 18 और अब तुम अपने पुराने स्वामी, पाप से स्वतन्त्र हो, और अपने नये स्वामी, धार्मिकता के दास बन चुके हो। 19 मैं इस रीति से, दास और स्वामी का उदाहरण देकर कहता हूं, क्योंकि इसे समझना सरल है: और जैसे तुम सब प्रकार के पाप के दास हुआ करते थे, वैसे ही अब तुम्हें स्वयं को सब प्रकार की अच्छाई और पवित्रता के दास बनने देना चाहिए। 20 उन दिनों में जब तुम पाप के दास थे तुम्हें अच्छाई की अधिक चिन्ता नहीं थी। 21 और परिणाम क्या निकला? स्पष्ट है कि परिणाम अच्छा नहीं निकला। क्योंकि तुम जिन बातों को करते थे उनके विषय में अब सोचने से भी तुम्हें लज्जा आती है, क्योंकि उन सब का अन्त अनन्त विनाश है। 22 परन्तु अब तुम पाप की शक्ति से स्वतन्त्र हो और परमेश्वर के दास हो, और उस से तुम्हें जो लाभ प्राप्त है उसमें पवित्रता और अनन्त जीवन भी सम्मिलित है। 23 क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनन्त जीवन है।

7

1 मसीह में प्रिय यहूदी[1] भाइयो, क्या तुम अब तक नहीं समझते, कि जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो उस पर फिर व्यवस्था का अधिकार नहीं रहता? 2 एक उदाहरण लो, जब कोई स्त्री विवाह करती है, तो व्यवस्था के द्वारा तब तक अपने पति से बन्धी रहती है जब तक उसका पति जीवित है। परन्तु यदि वह मर जाए, तो वह उससे फिर बन्धी नहीं रहती, विवाह की व्यवस्था उस पर फिर लागू नहीं होती। 3 तब यदि वह चाहे तो फिर किसी दूसरे से विवाह कर सकती है। ऐसा करना तभी गलत होता यदि वह जीवित रहता, परन्तु उसकी मृत्यु के बाद ऐसा करना बिलकुल ठीक है। 4 पहिले यहूदी-व्यवस्था, तुम्हारे "पति", तुम्हारे स्वामी के समान थी, परन्तु तुम, मानो मसीह के साथ क्रूस पर मर गए, और इसलिए कि तुम

[1] यही आशय है। मूलत "व्यवस्था के जानने वालों।"

"मृतक" हो, तुम अब व्यवस्था से विवाहित नहीं हो, और उसका तुम पर कोई नियंत्रण नहीं है। जब मसीह जी उठा तब तुम फिर जी उठे, और नये व्यक्ति हो गए। और कहना चाहिए, तुम्हारा अब उसके साथ विवाह हुआ है जो मृतकों मे से जी उठा, ताकि तुम अच्छे फल अर्थात परमेश्वर के लिए भले कार्य उत्पन्न कर सको। 5 जब तुम्हारा पुराना स्वभाव तुम में सजीव था, तब पाप से भरी हुई अभिलाषाएं तुममें मनुष्य का फल उत्पन्न करने के लिए काम करती थी। 6 परन्तु अब तुमको यहूदी नियमों और प्रथाओं[2] की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उनके दासत्व में रहते हुए मर चुके, और अब तुम अपने सारे हृदय और मन के साथ वास्तव में परमेश्वर की सेवा कर सकते हो, पुरानी रीति से यंत्रवत् नियमों को पालन करते हुए नहीं, परन्तु नई रीति से।

7 तो क्या मैं यह सुझाव दे रहा हूं कि परमेश्वर की यह व्यवस्था बुरी है ? कदापि नहीं। व्यवस्था पापमय नहीं है परन्तु व्यवस्था ही मे मुझ पर मेरे पाप प्रगट हुए। यदि व्यवस्था में न लिखा होता, "तुम्हें अपने हृदय में बुरी इच्छाएं नही रखनी चाहिएं।" तो मैं अपने हृदय के पाप की—छिपी हुई बुरी अभिलाषाओं को कभी जान नही पाता। 8 परन्तु पाप ने, मुझे स्मरण दिलाकर कि ऐसी इच्छाएं गलत हैं और सब प्रकार की निषिद्ध अभिलाषाओ को मुझ मे उत्पन्न कर, बुरी अभिलाषाओ के विरुद्ध इस व्यवस्था का प्रयोग किया। यदि उल्लघन करने को कोई व्यवस्था ही नही होती, तो पाप भी नही होता। 9 यही कारण है कि जब तक मैंने नहो समझा कि व्यवस्था की वास्तव मे क्या माग है, तब तक मुझे लगा कि मैं भला व्यक्ति हू। परन्तु जब मैंने सत्य को पहचान लिया, तो जाना कि मैंने व्यवस्था का उल्लघन किया है और मैं पापी हूं जिसका अन्त मृत्यु है। 10 इसलिए जहा तक मेरा सम्बन्ध है, यह भली व्यवस्था जो मुझे जीवन का मार्ग दर्शाने के लिए थी, उसके बदले मेरे मृत्यु दण्ड दिए जाने का कारण बनी। 11 परमेश्वर की भली व्यवस्था को लेकर और मुझे मृत्यु का दोषी बनाने के लिए उसका प्रयोग कर, पाप ने मुझे धोखा दिया 12 तौभी तुमको मालूम है कि व्यवस्था स्वयं पूरी तरह से उचित और अच्छी है। 13 परन्तु यह कैसे हो सकता है ? क्या व्यवस्था मेरे विनाश का कारण नही बनी ? फिर यह अच्छी कैसे हो सकती है ? नहीं, यह वह पाप था, जो शैतान का काम है, जिसने अच्छी बात का प्रयोग मुझ पर दण्ड लाने के लिए किया। इसलिए आप जान सकते हैं कि यह कितना छलपूर्ण, घातक और धिक्कारयोग्य है। क्योंकि यह परमेश्वर की भली व्यवस्था का प्रयोग अपने बुरे अभिप्रायों के लिए करता है। 14 तब तो व्यवस्था भली है, और समस्या उसमे नही परन्तु मुझमे है, क्योकि मैं पाप की दासता मे बिका हुआ हूँ जो मेरा स्वामी है। 15 मैं अपने आपको बिलकुल नही समझ पाता, क्योंकि मैं वास्तव में वही करना चाहता हूँ जो उचित है, परन्तु कर नही पाता। मैं वही करता हू जो मैं करना नही चाहता—जिसमे मुझे घृणा है। 16 मुझे बहुत अच्छी तरह से मालूम है कि जो कुछ मैं कर रहा हूँ वह अनुचित है, और मेरा विवेक भी प्रमाण देता है कि मैं इस व्यवस्था से सहमत हूं जिसको तोड रहा हू। 17 परन्तु मैं अपनी सहायता आप नही कर सकता, क्योंकि अब उसका करनेवाला मैं नही रहा, पर मेरे भीतर बसा हुआ पाप ही है जो मुझसे प्रबल है और मुझमे इन बुरे कार्यों को करवाता है। 18 मैं जानता हूं कि जहा तक मेरे पुराने पापमय स्वभाव का सम्बन्ध है, मैं पूरी तरह से नष्ट हो चुका हू। चाहे मैं कोई भी कार्य क्यों न करूं मुझमें सच्चा काम नही होता। मैं करना तो चाहता हू परन्तु कर नही सकता। 19 जब मैं भला करना चाहता हू, तब नहीं करता, और जब मैं बुरा न करने का प्रयत्न करता हू, तब

[2] मूलतः "अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए।"

किसी न किसी प्रकार से बुरा कर ही डालता हूं। 20 अब यदि मैं वह कर रहा हूं जो करना नहीं चाहता, तो स्पष्ट है कि समस्या कहां है : पाप अब भी मुझे अपनी बुरी शक्ति में जकड़े हुए है। 21 यह जीवन की एक सच्चाई जान पड़ती है कि जब मैं वह करना चाहता हूं जो भला है, तो अवश्य वही करता हूं जो बुरा है। 22 जहां तक मेरे नये स्वभाव का सम्बन्ध है मैं परमेश्वर की इच्छा पूरी करने से प्रेम रखता हूं, 23, 24, 25 परन्तु मेरे अन्दर मेरे स्वभाव में कुछ और ही है, जो मेरी बुद्धि के साथ लड़ती है और लड़ाई में जीत कर मुझे पाप का, जो अब भी मुझ में है, दास बना देती है। मैं मन से तो परमेश्वर का आज्ञाकारी सेवक बनना चाहता हूं परन्तु उसके स्थान पर मैं अपने आप को अब भी पाप की दासता में पाता हूं। अब आपने जान लिया कि यह क्या है : मेरा नया—जीवन मुझे सही काम करने को कहता है, परन्तु मेरा पुराना-स्वभाव, जो अब भी मेरे भीतर है, पाप करने से प्रेम रखता है। ओह, मैं कितनी भयानक दुर्दशा में हूं। मुझे इस घातक नीच स्वभाव की दासता से कौन स्वतन्त्र करेगा ? परमेश्वर का धन्यवाद हो, यह हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हो चुका है[3], जिन्होंने मुझे स्वतन्त्र कर दिया है।

8

1 इसलिए अब जो मसीह यीशु के हैं उनके लिए कोई दण्ड नहीं है। 2 क्योंकि जीवनदायक आत्मा के सामर्थ ने, जो अब मसीह यीशु के द्वारा मेरा है, मुझे पाप और मृत्यु से छुड़ाया है। 3 हम परमेश्वर की आज्ञाओं को जानने के द्वारा पाप की जकड़ से नहीं छुड़ाए जाते, क्योंकि हम उनका पालन नहीं कर सकते और न करते हैं, परन्तु परमेश्वर हमारे छुटकारे के लिए एक दूसरा ही उपाय काम में लाया। उसने अपने निज पुत्र को हमारे समान मानवीय देह में भेजा—अन्तर इतना है कि हमारी देह पापमय है—और परमेश्वर ने हमारे पापों के लिए मसीह को बलिदान होने के लिए दिया तथा हम पर से पाप की प्रभुता को नाश किया। 4 इसलिए अब हम परमेश्वर की व्यवस्था का पालन कर सकते हैं यदि हम पवित्र आत्मा के अनुसार चलें और अपने भीतरी पुराने बुरे स्वभाव की आज्ञा न मानें। 5 जो अपने आपको अपने नीच स्वभाव के वश में छोड़ देते हैं वे केवल स्वयं को ही प्रसन्न करने के लिए जीते हैं, परन्तु जो पवित्र आत्मा के अनुसार चलते हैं वे परमेश्वर को प्रसन्न करने योग्य काम करते हैं। 6 पवित्र आत्मा के अनुसार चलने से जीवन और शान्ति मिलती है, परन्तु अपने पुराने स्वभाव के अनुसार चलने का अन्त मृत्यु है, 7 क्योंकि हमारे अन्दर का पुराना पापमय स्वभाव परमेश्वर के विरुद्ध है। उसने कभी न तो परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया और न कभी करेगा। 8 इसीलिए जो अब भी अपने पुराने पापमय स्वभाव के वश में हैं, और जिनका झुकाव लगातार अपनी पुरानी बुरी अभिलाषाओं को पूरा करने में लगा रहता है, वे कभी परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। 9 परन्तु तुम इस प्रकार के नहीं हो। यदि तुममें परमेश्वर का आत्मा निवास करता है, तो तुम अपने नये स्वभाव के द्वारा नियन्त्रित किए जाते हो। और स्मरण रखो कि यदि किसी में मसीह का आत्मा निवास नहीं करता, तो वह मसीही कदापि नहीं है। 10 यद्यपि मसीह तुममें निवास करता हो, तौभी पाप के कारण तुम्हारी देह मर जाएगी, परन्तु तुम्हारी आत्मा जीवित रहेगी, क्योंकि मसीह ने उसे क्षमा किया है[1] 11 और यदि परमेश्वर का आत्मा, जिसने मसीह को मृतकों में से जिलाया, तुममें निवास करता है, तो वह तुम्हारी मृत्यु के बाद, इसी पवित्र आत्मा के

[3] अथवा, "यह हो जाएगा।" मूलतः "मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं।"

[1] अथवा सम्भवतः, "परन्तु पवित्र आत्मा जो तुममें निवास करता है तुमको जीवन देगा, क्योंकि उसने तुम्हें पहिले ही धार्मिकता दे दी है।" परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है।

द्वारा जो तुम मे रहता है, तुम्हारी मरनहार देह को फिर से जिलाएगा।

12 इसलिए, प्रिय भाइयो, तुम्हारे पापमय स्वभाव का तुम पर कोई आभार नहीं है कि तुम वही करो जो वह तुमसे करने को कहे। 13 क्योंकि यदि तुम उसके अनुसार चलते रहो तो तुम खो गए हो और नाश हो जाओगे। 14 क्योंकि जितने पवित्र आत्मा की अगुवाई मे चलते हैं वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। 15 और इसलिए हमें लज्जित, तथा भयभीत दासों के समान नहीं होना चाहिए, परन्तु हमें परमेश्वर की निज सन्तानो के समान व्यवहार करना चाहिए, जो परमेश्वर के परिवार मे पाले गए हो और उसको "पिता, पिता" कहकर पुकारते हो। 16 क्योंकि परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमारे हृदयो से बातें करता है, और हमे बताता है कि हम वास्तव मे परमेश्वर की सन्तान हैं। 17 और इसलिए कि हम उसकी सन्तान हैं, हम उसकी सम्पत्ति मे सहभागी होगे—क्योंकि परमेश्वर जितना अपने पुत्र मसीह यीशु को देता है अब वह सब हमारा भी है। परन्तु यदि हमे उसकी महिमा मे सहभागी होना है, तो हमे उसके दुःखो मे सहभागी होना चाहिए।

18 तौभी जो दुःख हम अभी उठाते हैं वह उस महिमा की तुलना मे कुछ भी नही हैं जो वह भविष्य में हमें देगा। 19 क्योंकि सारी सृष्टि धीरज और आशा के साथ भविष्य के उस दिन की प्रतीक्षा मे है जब परमेश्वर अपनी सन्तानो को फिर जिलाएगा।[2] 20, 21 क्योंकि उस दिन परमेश्वर की आज्ञा से संसार पर उसकी इच्छा के विरुद्ध विजयी होने वाली बातें—काटे और कटीली झाडिया, पाप, मृत्यु, और सडाहट[3]—सब लुप्त हो जाएंगे, और हमारे चारो ओर का संसार पाप के महिमामयी छुटकारे मे सहभागी होगा, जिसका आनन्द परमेश्वर की सन्तान लेती है। 22 क्योंकि हम जानते हैं कि इस महान घटना[4] की बाट जोहते हुए सारी सृष्टि, पशु और पेड़ पौधे तक, रोग और मृत्यु की पीड़ा उठाते हैं। 23 और यहां तक कि हम मसीही भी, यद्यपि हममें पवित्र आत्मा है जो भविष्य की महिमा का पूर्व आनन्द है, पीडा और दुःख से छुटकारा पाने के लिए कहराते हैं। हम भी उत्सुकता के साथ उस दिन की बाट जोहते हैं जब परमेश्वर हमें अपने सन्तानों के समान हमारा पूरा अधिकार देगा जिसमें नई देह भी सम्मिलित होगी जिसकी प्रतिज्ञा उसने हमें दी है—ऐसी देह जो फिर कभी न रोगमय होगी न मरेगी। 24 भरोसा रखने मे हम उद्धार पाते हैं। और भरोसा रखने का अर्थ है कि हम उन वस्तुओं को पाने की आशा लगाए रहते हैं जो अब तक हमारे पास नही हैं—क्योंकि उस व्यक्ति को जिसके पास पहले से ही कोई वस्तु है यह आशा और भरोसा करने की आवश्यकता नही कि वह उसे मिलेगी। 25 परन्तु यदि हमें किन्ही बातों के लिए, जो अब तक नही घटीं, परमेश्वर पर भरोसा रखना पड़े, तो हमे शिक्षा मिलती है कि हम धीरज और विश्वास के साथ बाट जोहे।

26 और इसी प्रकार—हमारे विश्वास[5] के द्वारा—पवित्र आत्मा हमारी दैनिक समस्याओं और हमारी प्रार्थनाओं में हमारी सहायता करता है। क्योंकि हम इतना भी नही जानते कि क्या और किस तरह प्रार्थना करना चाहिए, परन्तु पवित्र आत्मा हमारे लिए ऐसी गम्भीरता के साथ प्रार्थना करता है जिसका वर्णन शब्दों में नही हो सकता। 27 और पिता जो सब हृदयों को जानता है यह अवश्य जानता है कि आत्मा क्या कह रहा है जब वह हमारे लिए परमेश्वर की निज इच्छा के साथ एक होकर बिनती करता है। 28 और हम जानते हैं कि यदि हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं और उसकी इच्छानुसार चलते हैं तो जो कुछ हमारे साथ होता है

[2] मूलत "परमेश्वर के पुत्रो के प्रकट होने की बाट जोह रही है।" [3] यही आशय है। [4] मूलत "सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीडाओं में पडी तडपती है।" [5] यही आशय है। मूलत "इसी रीति से।"

सब हमारी भलाई के लिए ही होता है। 29 क्योंकि आरम्भ से ही परमेश्वर ने निश्चय किया कि कितने उसके पास आएँ—और उसको पहले ही मालूम था कि कौन आएंगे—उसके पुत्र के सदृश बनें, ताकि उसके पुत्र बहुत भाइयों मे प्रथम ठहरें। 30 और परमेश्वर ने हमें चुन कर अपने पास बुलाया और जब हम उसके *पास गए तो परमेश्वर ने हमे "निर्दोष" ठहराया,* हमें मसीह की अच्छाइयों से भरपूर किया, अपने साथ हमारा सम्बन्ध ठीक कर हमें धर्मी बनाया, और हमें अपनी महिमा की प्रतिज्ञा दी।

31 हम इनके समान अद्‌भुत बातों के विषय मे क्या कह सकते हैं? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो कौन हमारे विरुद्ध हो सकता है? 32 जबकि उन्होंने अपने निज पुत्र तक को *नहीं रख छोड़ा परन्तु हम सब के लिए दे दिया,* तो क्या वह निश्चय ही हमें और सब कुछ नही देगा? 33 हम पर, जिन्हें परमेश्वर ने अपना होने के लिए चुना है, कौन दोष लगा सकता है? क्या परमेश्वर? नही। उसी ने तो हमको क्षमा किया है और अपनी दृष्टि मे भला गिना है। 34 फिर कौन हम पर दण्ड की आज्ञा देगा? क्या मसीह? नही। क्योंकि वही है जो हमारे लिए मर गया और हमारे लिए जी भी उठा, और अब वह परमेश्वर के बाजू मे सबसे अधिक आदर के स्थान पर बैठा, स्वर्ग मे हमारे लिए बिनती कर रहा है। 35 तब कौन हमको कभी मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है? *जब हम पर संकट या क्लेश आते हैं, जब सताव* के लिए हमारी खोज की जाती है या हमे नाश किया जाता है, तो क्या ऐसा इसलिए होता है कि मसीह हमसे फिर प्रेम नही रखता और यदि हम भूखे हों या हमारे पास धन न हो, या हम खतरे मे हो, या हमें मृत्यु का डर दिखाया गया हो, तो क्या परमेश्वर ने हमें छोड दिया है? 36 नही, क्योंकि पवित्रशास्त्र में *लिखा* है कि *उनके कारण हमें दिन में हर क्षण मृत्यु का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए—हम* वध होने वाली भेड़ो के समान हैं, 37 परन्तु इन सबके होते हुए भी, मसीह के द्वारा जिसने हमसे इतना प्रेम किया कि हमारे बदले मे मर गया, पूरी विजय हमारी है। 38 क्योंकि मुझे निश्चय है कि कोई बात हमे कभी मसीह के प्रेम से अलग नही कर सकती। न मृत्यु और न जीवन। स्वर्गदूत भी *नही, नरक की सारी शक्तियां भी हमसे पर-*मेश्वर का प्रेम दूर नही कर सकती हैं। आज के लिए हमारे भय, कल के लिए हमारी चिन्ताए, 39 या जहां कही हम हो—चाहे ऊँचे आकाश पर, या सबसे गहरे सागर मे—कोई भी बात हमे परमेश्वर के प्रेम से, जिसको प्रभु यीशु ने हमारे लिए अपनी मृत्यु के द्वारा प्रकट किया, अलग नही कर सकेंगी।

9

1-3 ओह, इस्राएल, मेरे लोगो। ओह, मेरे यहूदी भाइयो। मेरी कितनी इच्छा है कि तुम मसीह के पास आओ। मेरा हृदय भारी है और मुझे दिन रात तुम्हारे लिए बडा दुःख होता रहता है। मसीह को मालूम है और पवित्र आत्मा जानता है, मैं कोई झूठ नही कहता कि *मैं सदा के लिए स्रापित होने को तैयार होऊंगा* यदि इससे तुम्हारा उद्धार हो जाए। 4 परमेश्वर ने तुम्हें इतना अधिक दिया है, तौभी तुम उसकी नही सुनते। परमेश्वर ने तुम्हें अपनी निज विशेष प्रजा करके चुना और महिमा के उज्जवल बादल से मार्ग मे तुम्हारी अगुवाई की और बताया कि वह तुम्हें आशिष देने की कितनी अधिक इच्छा रखता है। परमेश्वर ने दैनिक—जीवन के लिए तुम्हे नियम दिए ताकि तुम जानो कि वह तुमसे क्या करवाना चाहता है। उसने तुमको अपनी आराधना करने दी और तुम्हें महान प्रतिज्ञाएं दी। 5 परमेश्वर के महापुरुष तुम्हारे पूर्वज थे, और मसीह स्वयं तुम्ही मे से एक था, वह मनुष्य की रीति से यहूदी था, जो अब सब वस्तुओं पर अधिकारी है। परमेश्वर *की प्रशंसा युगानुयुग हो। 6 तो क्या परमेश्वर,*

यहूदियों को दी गई अपनी प्रतिज्ञाएं पूरी करने मे असफल रहा ? नही। (क्योंकि ये प्रतिज्ञाएं केवल उन्हीं के लिए हैं जो वास्तव में यहूदी हैं[1]।) और यहूदी घराने में जन्मा हुआ हर व्यक्ति वास्तव मे यहूदी नही है। 7 केवल इसी सच्चाई के कारण कि वे इब्राहीम के वंश से हैं वे वास्तव मे इब्राहीम की सन्तान नही बन जाते। क्योंकि पवित्रशास्त्र मे लिखा है कि प्रतिज्ञाएं केवल इब्राहीम के पुत्र इसहाक, और इसहाक के वंश पर लागू होती हैं, यद्यपि इब्राहीम की दूसरी सन्तान भी थी। 8 इसका अर्थ है कि इब्राहीम की सब सन्तान परमेश्वर की सन्तान नही हैं। किन्तु केवल वे ही हैं जो इब्राहीम को दी गई उद्धार की प्रतिज्ञा पर विश्वास करते हैं। 9 क्योंकि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा दी थी, "अगले वर्ष मैं तुम्हें और सारा को एक पुत्र दूगा।" 10—13 और वर्षों बाद, जब यह पुत्र इसहाक बडा हुआ और उसने विवाह किया, और उसकी पत्नी रिबका उसके लिए जुडवां सन्तान उत्पन्न करने पर थी, तब परमेश्वर ने उसे बता दिया था कि पहला पुत्र, एसाव, अपने जुडवे भाई, याकूब का दास होगा। पवित्रशास्त्र के शब्दो मे, "मैंने याकूब को आशीष देने के लिए चुना, एसाव को नही।" और परमेश्वर ने ऐसा तब कहा था जब बालको ने जन्म ही नही लिया था और न ही कोई भला—बुरा किया था। इससे सिद्ध होता है कि परमेश्वर वही कर रहा था जिसके करने का निश्चय उसने आरम्भ ही मे किया था, इसलिए नही कि बालको ने ही कोई कार्य किया था, परन्तु इसलिए कि परमेश्वर ने ऐसा करना चाहा।

14 क्या परमेश्वर अन्याय कर रहा था ? कदापि नही। 15 क्योंकि परमेश्वर ने मूसा से कहा था, "यदि मैं किसी पर दया करना चाहूँ, तो उस पर दया करूंगा। और जिस पर चाहूँ, उस पर तरस खाऊगा।" 16 और इस प्रकार परमेश्वर की आशीषें केवल इसलिए नही मिलती कि कोई उन्हे पाने का निश्चय करता है या उन्हें पाने के लिए कठिन परिश्रम करता है। वह इसलिए दी जाती हैं क्योंकि परमेश्वर जिन पर चाहता है उन पर दया करता है। 17 इस तथ्य का उदाहरण मिस्र का राजा फिरौन था। क्योंकि परमेश्वर ने उससे कहा कि उसने उसे मिस्र का राज्य इसी अभिप्राय से दिया है कि उसके विरुद्ध अपनी अद्भुत सामर्थ को प्रकट करे: ताकि सारा संसार परमेश्वर के महिमावान नाम[2] को सुन सके। 18 इस प्रकार, परमेश्वर कुछ लोगों पर दया करता है क्योंकि वह ऐसा करना चाहता है, और वह कुछ लोगों को ऐसा कर देता है, कि वे उसकी अनसुनी कर दें।

19 तो फिर, परमेश्वर उन पर अनसुनी करने का दोष क्यों लगाता है ? क्या उसने वही नही किया जो परमेश्वर ने उससे करवाया ? 20 नही, ऐसा न कहो। तुम कौन हो कि परमेश्वर की आलोचना करो ? क्या बनी हुई वस्तु को अपने बनानेवाले से कहना चाहिए, "आपने मुझे ऐसा क्यों बनाया ? 21 जब कुम्हार मिट्टी के बरतन बनाए, तो क्या उसे यह अधिकार नही कि इसी मिट्टी के लौंदे से एक सुन्दर फूलदान बनाए और दूसरे बरतन को कूड़ा कर्कट फेंकने के लिए बनाए। 22 क्या परमेश्वर को अधिकार नही है कि उन लोगों के प्रति, जो केवल विनाश के योग्य है, जिनके साथ उसने इतने समय तक धीरज रखा, अपना क्रोध और शक्ति प्रकट करे ? 23, 24 और उनको हमारे समान, जो उसकी महिमा का धन उंडेलने के लिए बनाए गए हैं; दूसरो पर भी, चाहे यहूदी हों या अन्यजाति, दया करने का अधिकार है ताकि सब देख सकें कि उसकी महिमा कितनी अधिक है। 25 तुम्हे याद है होशे की पुस्तक मे क्या लिखा है ? उसमे परमेश्वर ने कहा है कि वह अपने लिए दूसरी सन्तानें खोजेगा (जो उसके यहूदी जाति मे से नही होंगे) और उसमे

[1] । आशय है। [2] मूलतः "मेरे नाम का प्रचार सारी पृथ्वी पर हो।"

प्रेम करेगा, यद्यपि किसी ने पहले उससे कभी प्रेम नही किया। 26 और अन्यजाति जिसके लिए एक बार कहा गया था, "तुम मेरे लोग नही हो," वही परमेश्वर के जीवते पुत्र कहलाएंगे। 27 यशायाह भविष्यद्वक्ता ने यहूदियों के विषय मे पुकारकर कहा कि चाहे वे लाखो की संख्या[3] मे हों तौभी केवल थोडे ही बचाए जाएगे। 28 "क्योंकि प्रभु इस संसार को दण्ड देगा, शीघ्र ही अपने कार्यों की अवधि कम करके उसे पूरा करेगा।[4]" 29 और यशायाह ने दूसरे स्थान मे कहा है कि परमेश्वर की दया के बिना सारे यहूदी, सब के सब नाश हो जाते, जैसे सदोम और अमोरा नगरों के सब रहनेवाले नाश हो गए[5]।

30 तो फिर, हम इन बातों के विषय मे क्या कहें? केवल यही कि परमेश्वर ने अन्यजातियो को विश्वास द्वारा छुटकारा प्राप्त करने का अवसर दिया है, यद्यपि वे वास्तव मे परमेश्वर की खोज नही कर रहे थे। 31 परन्तु यहूदी, जो परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने के द्वारा परमेश्वर की दृष्टि मे भले बनने का बड़ा प्रयत्न कर रहे थे, कभी सफल नही हुए। 32 क्यो नही? क्योंकि वे विश्वास पर निर्भर रहने के स्थान पर, भले बनने और व्यवस्था का पालन करने के द्वारा उद्धार पाने का प्रयत्न कर रहे थे। उन्होंने उस ठोकर खाने के बडे पत्थर से ठोकर खाई। 33 परमेश्वर ने यह कहकर पवित्रशास्त्र मे उन्हें इसके विषय मे चेतावनी दी थी, "मैंने यहूदियो के मार्ग मे एक चट्टान रखी है, और अनेक उस पर (यीशु पर) ठोकर खाएंगे। उस पर विश्वास रखनेवाले कभी निराश नही होंगे[6]।

10

1 प्रिय भाइयो, मेरी हार्दिक अभिलाषा और मेरी प्रार्थना है कि यहूदी लोग उद्धार पाएं। 2 मैं जानता हूं परमेश्वर के आदर के लिए उनमे कितना उत्साह है, परन्तु उनका उत्साह गलत दिशा की ओर है। 3 क्योकि वे नही समझते कि परमेश्वर के साथ उनका सम्बंध ठीक करने के लिए मसीह की मृत्यु हुई। उसके स्थान पर वे यहूदी नियमो और प्रथाओ का पालन करने के द्वारा परमेश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए, अपने आप को भला बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु परमेश्वर के उद्धार का मार्ग यह नही है। 4 वे समझते नहीं कि मसीह अपने विश्वास करने वालो को वह सब कुछ देता है जिसे वे व्यवस्था का पालन करने के द्वारा प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं। वह उन सबको समाप्त करता है। 5 क्योकि मूसा ने लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति पूरी रीति से सिद्ध होता है और अपने सारे जीवन भर पूरी शिक्षाओ पर विजयी बनता है और कभी एक बार भी पाप नही करता, तभी उसकी क्षमा हो सकती थी और वह उद्धार प्राप्त कर सकता था। 6 परन्तु उद्धार, जो विश्वास के द्वारा प्राप्त होता है, कहता है, "तुम्हें मसीह को पाने के लिए स्वर्ग को खोजने और अपनी सहायता के लिए उसको उतार लाने की कोई आवश्यकता नही है, 7 और तुम्हें मसीह को फिर से जिलाने के लिए मृतकों के बीच मे जाने की आवश्यकता नही है।" 8 क्योकि उद्धार, जो मसीह पर विश्वास रखने से आता है—जिसका हम प्रचार करते हैं—पहले से ही हमारे निकट है, वास्तव मे, यह इतना समीप है जितना हमारे हृदय और मुह। 9 क्योकि यदि तुम अपने मुह से दूसरो को यह बताओ कि मसीह यीशु तुम्हारा प्रभु है, और अपने मे विश्वास करो कि परमेश्वर ने मसीह को मृतको मे से जिलाया है, तो तुम उद्धार पाओगे। 10 क्योंकि अपने हृदय मे विश्वास करने से कोई व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि मे ठीक बनता है, और अपने मुह से वह दूसरो को अपने विश्वास के विषय मे बताकर,

[3] मूलत "समुद्र के बालू के बराबर," अर्थात असंख्य। [4] यशायाह 10 : 22, 28 . 22। [5] यशायाह 1 . 9।
[6] यशायाह 28 · 16।

अपने उद्धार[1] को दृढ़ करता है। 11 क्योंकि पवित्रशास्त्र में लिखा है कि मसीह पर विश्वास करनेवाला कोई भी व्यक्ति कभी निराश नही होगा। 12 इस सम्बन्ध मे यहूदी और अन्यजाति समान हैं : उन सब का एक ही प्रभु है जो सब विनती करनेवालो को उदारता से अपना धन देता है। 13 जो कोई प्रभु का नाम पुकारेगा वह उद्धार पाएगा। 14 परन्तु वे मसीह से अपने उद्धार के लिए कैसे विनती कर सकते हैं जब तक उस पर विश्वास न करें ? और वे उस पर कैसे विश्वास कर सकते हैं जब तक उन्होंने मसीह के विषय मे कभी सुना ही न हो ? और वे उसके विषय मे सुन ही कैसे सकते हैं जब तक कोई उनको न बताए। 15 और कोई जाकर उनको कैसे बता सकता है जब तक कोई बताने वाले को न भेजे? पवित्रशास्त्र में इसी का वर्णन है, जहा लिखा है "उनके पैर कितने सुन्दर हैं जो परमेश्वर से मेल करने का सुसमाचार का प्रचार करते हैं और अच्छी बातों का शुभ सन्देश लाते हैं[2]।" दूसरे शब्दों मे, जो परमेश्वर का शुभ समाचार सुनाते हैं वे स्वागत के कितने योग्य हैं।

16 परन्तु शुभ सन्देश के सब सुनने वाले उसका स्वागत नही करते, क्योंकि यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा, "प्रभु जब मैंने उन्हें बताया तो किसने मेरा विश्वास किया[3]?" 17 तौभी विश्वास, इस शुभ सन्देश—मसीह के विषय मे शुभ —समाचार को सुनने से आता है। 18 परन्तु यहूदियो के विषय मे क्या है ? क्या उन्होंने परमेश्वर का वचन सुन लिया है ? हाँ, क्योंकि यह हर जगह पहुचा है, शुभ सन्देश पृथ्वी की छोर तक सुनाया गया है। 19 और क्या उन्होंने समझा (कि यदि वे उसे ग्रहण करने से इन्कार कर दें तो परमेश्वर अपना उद्धार दूसरों को दे देगा[4]) ? हां, क्योंकि इससे पहले मूसा के समय मे ही, परमेश्वर ने कहा था कि वह अपना उद्धार मूर्ख अन्यजातियों को देने के द्वारा अपने लोगों मे जलन पैदा करेगा और उन्हें जगाएगा। 20 और बाद मे यशायाह ने साहस के साथ कहा कि जो लोग परमेश्वर को खोजते तक न थे उन्होंने परमेश्वर को पा लिया[5]। 21 वह बराबर अपने हाथ यहूदियों की ओर बढ़ाए हुए है परन्तु वे वाद-विवाद[6] करने में लगे रहते और आने से इन्कार करते रहते हैं।

11 1 तब मैं पूछता हूँ, क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा अर्थात यहूदियों का इन्कार किया है और उनको छोड़ दिया है ? नहीं, कदापि नही। याद रखो कि मैं स्वयं एक यहूदी हूं, इब्राहीम का वंशज और बिन्यामीन के घराने का सदस्य हूं। 2, 3 नहीं परमेश्वर ने अपनी निज प्रजा को, जिसे उसने आरम्भ से चुना, नही त्यागा है। क्या तुम्हें स्मरण है कि इस के विषय मे पवित्रशास्त्र का क्या कथन है। एलिय्याह भविष्यद्वक्ता यहूदियो के विषय मे परमेश्वर के सामने कुड़कुड़ा रहा था, परमेश्वर को यह बताते हुए कि यहूदियों ने किस प्रकार भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला है और परमेश्वर की वेदियो को उलट दिया है, एलिय्याह का दावा था कि सारे देश मे वही अकेला बचा हुआ है जो अब भी परमेश्वर से प्रेम रखता है, और अब वे उसको भी मार डालने का प्रयत्न कर रहे हैं। 4 और तुम्हें याद है परमेश्वर ने क्या उत्तर दिया था ? परमेश्वर ने कहा, "नहीं तुम ही अकेले नही बचे हो। तुम्हें छोड़ मेरे सात हज़ार और लोग हैं जो अब भी मुझसे प्रेम रखते हैं और जिन्होंने मूर्तियो के आगे सिर नहीं झुकाया है[7]।" 5 ऐसा ही आज भी है। सभी यहूदी परमेश्वर से नही फिर गए हैं, कुछ ही हैं जो परमेश्वर की दया से चुने जाकर उद्धार पा रहे हैं। 6 और यदि

[1] मूलत "उद्धार के लिए मुह से अंगीकार किया जाता है।" [2] यशायाह 52 : 7 [3] यशायाह 53 : 1
[4] यही आशय है। [5] यशायाह 65 : 1। [6] मूलत "आज्ञा न मानने वाली और विवाद करने वाली।"
[7] राजा 19 : 18।

यह परमेश्वर की दया के कारण है तो फिर इसका कारण उनका भला होना नही है। "क्योंकि ऐसे में तो सेंतमेंत दिया गया वरदान सेंतमेंत नहीं रहेगा—जब यह कमाया जाता है तब सेंतमेंत नही रह जाता। 7 इस प्रकार परिस्थिति यह है : अधिकांश यहूदियों ने परमेश्वर का अनुग्रह नही पाया है, जिसकी खोज मे वे हैं। कुछ लोगों ने पाया है—जिन्हें परमेश्वर ने चुना है—परन्तु दूसरों की आंखें अंधी की गई हैं। 8 पवित्रशास्त्र मे इसी के विषय मे कहा गया है, जहा लिखा है कि परमेश्वर ने उन्हें निद्रा मे डाल दिया है, उनकी आखें और उनके कान बन्द कर दिए हैं ताकि जब हम उन्हें मसीह के विषय मे बताएं तो वे समझ न सकें कि हम क्या कह रहे हैं। 9 राजा दाऊद ने भी इसी विषय की चर्चा की, जब उन्होंने कहा, "उनका भोजन और दूसरी आशीषें उन्हें इस विचार में फसा लें कि उनके और परमेश्वर के बीच सब कुछ ठीक है। ये सारी अच्छी वस्तुएं उनके लिए ऐसे हथियार के समान हों जो फेंकी जाकर वापिस उनके सिरो पर आ गिरें और उन्हें न्यायपूर्वक कुचल डालें।" 10 राजा दाऊद ने कहा, "उनकी आखें धुधली हो जाएं, जिससे वे देख न सकें, और वे भारी बोझ उठाकर सदा कुबड़े होकर चलें।" 11 क्या इसका अर्थ यह हुआ कि परमेश्वर ने अपनी यहूदी प्रजा का सदा के लिए इन्कार किया है? कदापि नही। परमेश्वर का अभिप्राय था कि अन्यजातियों को भी उनका उद्धार प्राप्त हो, जिससे यहूदियों मे जलन उत्पन्न हो और वे अपने लिए भी परमेश्वर का उद्धार चाहने लगें। 12 अब यदि सारा ससार परमेश्वर के उद्धार के दान के कारण धनी हो गया, जब यहूदियों ने इसके कारण ठोकर खाई और इसे इन्कार कर दिया, तो सोचो ससार उस समय कितनी अधिक आशीषों मे सहभागी न होगा, जब यहूदी भी मसीह के पास आएंगे।

13 जैसा तुम जानते हो, परमेश्वर ने मुझे तुम अन्यजातियों के लिए एक विशेष दूत नियुक्त किया है। मैं इस बात पर बहुत बल देता हूं और इसका स्मरण यहूदियों को जितना हो सके उतना दिलाता हूं, 14 ताकि यदि हो सके तो मैं उनमे उसे प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न करूं जो तुम्हारे पास है और इस प्रकार से यहूदियो मे से कई को बचा लू। 15 और यह कितना अद्भुत होगा जब वे मसीही बनेंगे। जब परमेश्वर ने उनकी ओर अपनी पीठ फेर ली तो उसका अर्थ हुआ कि अपना उद्धार देने के लिए उसने ससार की ओर मुह कर लिया है, और अब तो यह और भी अधिक अद्भुत है जब यहूदी लोग मसीह के पास आते हैं। यह मृतको के फिर जी उठने के सदृश्य होगा। 16 और इसलिए कि इब्राहीम और भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के लोग हैं, उनकी सन्तान भी परमेश्वर के लोग होंगे। क्योंकि यदि पेड़ की जड़ें पवित्र हैं, तो डालिया भी पवित्र होंगी। 17 परन्तु इब्राहीम के वृक्ष की इनमे मे कुछ डालिया, अर्थात कुछ यहूदी, तोड़ डाले गए हैं। और तुम अन्यजाति, जो कहना चाहिए एक जगली जैतून के वृक्ष की डालिया थे, इसमे कलम किए गए, इसलिए अब तुम भी उन आशीषो को पाते हो जिनकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने इब्राहीम और उसकी सन्तानों को दी, और परमेश्वर के निज विशेष जैतून वृक्ष के पोषण मे सहभागी होते हो। 18 परन्तु तुम्हें सावधान होना चाहिए कि तुम घमण्ड न करो क्योंकि तुम तो उन डालियों के स्थान पर साटे गए हो जो तोड़ डाली गईं। स्मरण रखो कि तुम महत्वपूर्ण केवल इसलिए हो क्योंकि अब तुम परमेश्वर के वृक्ष के एक भाग हो, तुम मात्र डालिया हो, जड नही। 19 तुम कहते होगे, "अच्छा, वे डालिया इसी कारण तोड़ी गईं कि वहा मुझे स्थान मिले इसलिए कि मैं बडा अच्छा रहा होऊंगा।" 20 देखो। याद रखो कि वे डालियां, यहूदी इसलिए तोड़े गए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया, और तुम वहां केवल इस-

लिए हो कि तुम विश्वास करते हो। घमण्डी न हो, दीन, और आभारी—और सावधान बनो। 21 क्योंकि यदि परमेश्वर ने उन डालियों तक को नही बचा रखा जिनको उसने वहाँ पहले रखा था, तो वह तुमको भी नही बचा रखेगा। 22 ध्यान दो कि किस प्रकार परमेश्वर कोमल और कठोर दोनो है। वह उनके लिए बडा कठोर है जो आज्ञा नही मानते, परन्तु तुम पर बडा कोमल है यदि तुम उसमे प्रेम रखना जारी रखो और उस पर भरोसा रखे रहो। परन्तु यदि तुम ऐसा न करो, तो तुम भी काट डाले जाओगे। 23 दूसरी ओर, यदि यहूदी अपना अविश्वास अपने पीछे छोड दें और परमेश्वर के पास आ जाएं, तो परमेश्वर उनको फिर से वापिस उस वृक्ष मे साट लेगा। उसमे ऐसा करने की सामर्थ है। 24 क्योंकि यदि परमेश्वर तुम्हे, जो जंगली जैतून वृक्ष के एक भाग होते हुए उससे बहुत दूर थे तुम्हें लेने और अपने निज अच्छे वृक्ष पर सांटने को तैयार हुआ—जो बडा असाधारण काम था—तो क्यों नही समझते कि वह यहूदियों को फिर वापिस लेने के लिए कहीं अधिक बढकर तैयार होगा जो वहा पहले से ही थे?

25 प्रिय भाइयो, मैं चाहता हू कि तुम परमेश्वर के इस सत्य को जानो, ताकि तुम घमण्डी होकर आत्मप्रशंसा न करने लगो। हा, यह सच है कि कई यहूदियों ने अब अपने आप को शुभ सन्देश के विरुद्ध कर लिया है, परन्तु ऐसा केवल उस समय तक रहेगा जब तक मसीह के पास तुम सब अन्यजाति के लोग न आ जाओ अर्थात जितने तुममें से आना चाहते हो, 26 और तब सारा इस्राएल उद्धार पाएगा। तुम्हें याद है इसके विषय मे भविष्यद्वक्ताओं ने क्या कहा? "सिय्योन से एक मुक्तिदाता आएगा और वह यहूदियो को सब अधर्म से फेरेगा। 27 उस समय मैं उनके पापों को दूर करूगा, जैसे मैंने उनको प्रतिज्ञा दी थी।"

28 अब यहूदियों मे से अनेक शुभ-सन्देश के शत्रु हैं। वे उससे घृणा करते हैं। परन्तु इससे तुम्हारा लाभ हुआ है, क्योंकि इसके फलस्वरूप परमेश्वर ने तुम अन्यजातियों को अपने वरदान दिए हैं तौभी इब्राहीम, इसहाक और याकूब को दी गई प्रतिज्ञाओं के कारण अब भी यहूदी लोग परमेश्वर को प्रिय हैं। 29 क्योंकि परमेश्वर के वरदान और उसकी बुलाहट कभी हटाई नही जा सकती, वह अपनी प्रतिज्ञाओं से कभी नही मुकर सकता। 30 कभी तुम परमेश्वर के बैरी थे, परन्तु जब यहूदियों ने उसके वरदानो मे इन्कार किया तब उनके स्थान पर परमेश्वर तुम पर दयालु हुआ। 31 परन्तु अब यहूदी बैरी हैं, परन्तु किसी दिन वे भी, परमेश्वर की दया मे सहभागी होंगे। 32 क्योंकि परमेश्वर ने उन सब को पाप* मे छोड़ दिया है ताकि वह सब पर बराबरी से दया कर सके।

33 ओह हमारा परमेश्वर कितना अद्भुत है। उसका ज्ञान और बुद्धि तथा धन कितना विशाल है। उसके निर्णयों और उसके उपायों को समझना हमारे लिए कितना असम्भव है! 34 क्योंकि हममे से कौन प्रभु का मन जान सकता है? किसमे इतना ज्ञान है कि वह उसका सलाहकार और अगुवा बने? 35 और कौन प्रभु को इतना दे सकता है कि उसको किसी काम को करने के लिए प्रेरित करे। 36 क्योंकि सब कुछ केवल परमेश्वर की ओर ही से आता है। सब कुछ उस ही की सामर्थ से जीवित है। और सब कुछ उस ही की महिमा के लिए है। उसकी महिमा युगयुग तक होती रहे।

12 1 इसलिए, प्रिय भाइयो, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम अपने शरीरों को परमेश्वर को सौंप दो। उनको जीवित बलिदान, पवित्र रहने दो—जिसे परमेश्वर ग्रहण कर सके। यह सोचते हुए कि परमेश्वर ने तुम्हारे लिए कितना किया है, क्या यह मांग बहुत अधिक

* व "सब को आज्ञा न मानने के कारण बन्द कर रखा।"

है ? 2 इस संसार के व्यवहार और रीतियों की नकल मत करो, परन्तु नये और भिन्न व्यक्ति बनो जिसके सब कार्यों और विचारों में नवीनता आई हो। तब तुम अपने ही अनुभव से सीखोगे कि परमेश्वर के मार्गों से वास्तव में तुमको कितना सन्तोष होगा।

3 परमेश्वर का दूत होकर मैं तुममें से प्रत्येक को परमेश्वर की चेतावनी देता हूँ: परमेश्वर के दिए हुए विश्वास के अनुसार अपना मूल्य आंकते हुए अपने आपको ईमानदारी से उतना ही समझो जितना समझना चाहिए, परमेश्वर ने तुमको कितना विश्वास दिया है उसी के अनुसार अपना मूल्य आंको। 4, 5 जैसे तुम्हारे देह के अनेक अंग हैं, वैसे ही मसीह की देह के भी हैं। हम सब उसकी देह के अंग हैं। और उसे पूरा बनाने के लिए हम में से प्रत्येक की आवश्यकता है, क्योंकि हममें से हरएक का अलग-अलग काम है। इसलिए हम आपस में एक-दूसरे के हैं, और हममें से हरएक को एक-दूसरे की आवश्यकता है। 6 परमेश्वर ने हममें से हरएक को योग्यता दी है कि हम कुछ कार्यों को अच्छी तरह से कर सकें। इसलिए यदि परमेश्वर ने तुम्हें भविष्यद्वाणी करने की योग्यता दी है, तो जब कभी भविष्यद्वाणी कर सकते हो करो—जितनी बार तुम्हारा विश्वास परमेश्वर से सन्देश ग्रहण करने के लिए प्रबल हो। 7 यदि तुम्हारा वरदान दूसरों की सेवा करने का है, तो उनकी सेवा अच्छी तरह से करो। यदि तुम शिक्षक हो तो सिखाने का काम अच्छी रीति से करो। 8 यदि तुम प्रचारक हो, तो ध्यान दो कि तुम्हारे सन्देश सामर्थ से पूर्ण और सहायक हों। यदि परमेश्वर ने तुम्हें धन दिया है, तो उससे दूसरों की सहायता करने में उदार बनो। यदि परमेश्वर ने तुम्हें प्रबन्ध करने की योग्यता दी है और तुम्हें दूसरों के कार्यों की देखरेख करने वाला ठहराया है, तो अपना उत्तरदायित्व गम्भीरता से सम्भालो। जो दुखियों को सांत्वना देते हैं वे मसीही आनन्द के साथ ऐसा करें। 9 केवल ढोंग मत करो कि तुम दूसरों से प्रेम करते हो, उनसे वास्तव में प्रेम रखो। जो कुछ बुरा है, उससे घृणा करो। सच्चाई की ओर रहो। 10 भाई के सदृश स्नेह से एक-दूसरे से प्रेम रखो और एक-दूसरे का आदर करने में प्रसन्न रहो। 11 अपने काम में कभी आलसी न हो परन्तु उत्साह के साथ प्रभु की सेवा करो। 12 अपने लिए परमेश्वर के सारे प्रबन्ध से आनन्दित रहो। संकट में धीरज धरो और सदा प्रार्थना करो। 13 जब परमेश्वर की सन्तान आवश्यकता में हो, तब तुम ही उनकी सहायता करो। अतिथि सत्कार करते रहो। अतिथियों को भोजन के लिए बुलाने की आदत डालो और यदि आवश्यकता हो तो उनकी पहुनाई किया करो। 14 यदि कोई तुम्हारे मसीही होने के कारण तुमसे बुरा व्यवहार करे, तो उसे स्राप न दो, प्रार्थना करो कि परमेश्वर उसे आशीष दे। 15 जब दूसरे प्रसन्न हों, तब तुम भी उनके साथ प्रसन्न हो। यदि वे दुखी हों तो उनके दुःख में सहभागी हो। 16 एक साथ आनन्द से काम करो। अपने को बड़ा बतलाने का प्रयत्न न करो। प्रधान लोगों की संगति में जाने का प्रयत्न मत करो, परन्तु साधारण लोगों की संगति का आनन्द लो। और मत सोचो कि तुम सब जानते हो। 17 बुराई का बदला कभी बुराई से न दो। काम इस प्रकार करो जिससे सब देख सकें कि तुम पूरी रीति से विश्वास-योग्य हो। 18 किसी से न झगड़ो। जहां तक हो सके, सबसे मेल रखो। 19 प्रिय मित्रो, कभी अपना बदला न लो। इसे परमेश्वर पर छोड़ दो, "क्योंकि उसने कहा है कि जिनको उचित है उनको वह बदला देगा।" (अपने हाथ में कानून को न लो।) 20 परन्तु इसके बदले यदि तुम्हारा बैरी भूखा हो तो उसको खाना खिलाओ। यदि वह प्यासा हो तो उसे पानी पिलाओ। इस प्रकार तुम "उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाओगे।" दूसरे शब्दों में, उसने तुम्हारे साथ जैसा किया है उसके लिए वह अपने आप पर लज्जित होगा। 21 बुराई को

जीतने न दो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।

13 1 सरकार की आज्ञा मानो, क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने उसे रखा है। कहीं कोई ऐसा शासन नहीं जिसे परमेश्वर ने न ठहराया हो। 2 इसलिए जो देश के कानूनों का पालन करने से इन्कार करते हैं, वे परमेश्वर की आज्ञा मानने से इन्कार कर रहे हैं, और वे दण्ड पाएंगे। 3 क्योंकि पुलिस ठीक काम करनेवालों को डराने का प्रयत्न नहीं करती, परन्तु बुरा काम करनेवाले लोग सदा उससे डरेंगे। इसलिए यदि तुम डरना न चाहो, तो कानूनों का पालन करो और तुम्हारा जीवन ठीक बीतेगा। 4 पुलिस तुम्हारी सहायता के लिए परमेश्वर के द्वारा भेजी जाती है। परन्तु यदि तुम कोई गलत काम कर रहे हो, तो तुम्हें अवश्य डरना चाहिए, क्योंकि वह तुम्हें दण्ड दिलाएगी। वह परमेश्वर के द्वारा इसी अभिप्राय के लिए भेजी गई है 5 अतः दो कारणों से कानूनों का पालन करो : पहला, दण्ड से बचने के लिए, और दूसरा केवल इसलिए क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें कानूनों का पालन करना चाहिए। 6 इन्हीं दो कारणों से, अपने कर भी चुकाओ। क्योंकि सरकारी कर्मचारियों के लिए वेतन आवश्यक है ताकि वे परमेश्वर का कार्य, अर्थात तुम्हारी सेवा करते रहें। 7 जितना जिसे देना है उतना उसे दो : आनन्द के साथ अपने कर और आयात कर चुकाओ, जो तुम पर अधिकारी हैं उनकी आज्ञा मानो, और उन सब को आदर दो जिनको देना चाहिए।

8 परस्पर प्रेम के ऋण को छोड़ अपने सब ऋण चुकाओ क्योंकि यदि तुम उनसे प्रेम रखो, तो तुम परमेश्वर की सारी व्यवस्था का पालन करोगे, और उसकी सब आज्ञाओं को पूरी करोगे। 9 यदि तुम जितना अपने आप से प्रेम रखते हो उतना ही अपने पडोसी से प्रेम रखो, तो तुम नहीं चाहोगे कि उसकी हानि करो या उससे छल करो, या उसकी हत्या करो या उसकी चोरी करो। और तुम उसकी पत्नी के साथ पाप नहीं करोगे, न ही कोई ऐसा काम करोगे जो दस आज्ञाओं के अनुसार अनुचित हो। सब दस आज्ञाओं का सार इसी एक आज्ञा में है—अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो। 10 प्रेम किसी का कोई बुरा नहीं करता। इसी कारण यह परमेश्वर की सब मांगों को पूरी रीति से सन्तुष्ट करता है। केवल इसी व्यवस्था की तुमको आवश्यकता है।

11 अच्छा जीवन बिताने का एक दूसरा कारण यह है : तुम जानते हो कितनी देर हो चुकी है, समय तीव्रता से निकला जा रहा है। जाग जाओ, क्योंकि प्रभु का आना अब उस समय से अधिक निकट है जिस समय हमने उस पर विश्वास किया था। 12, 13 रात बहुत बीत चुकी है, प्रभु के वापिस आने का दिन शीघ्र ही यहां आ जाएगा। इसलिए अंधकार के बुरे कामों को त्याग दो और भले जीवन का हथियार पहन लो, जैसा हम दिन के प्रकाश में रहनेवालों के लिए उचित है। अपने हर काम में सच्चे और शिष्ट बनो ताकि सब तुम्हारे व्यवहार की सराहना करें। अपना समय भोग विलास और पियक्कड़पन या व्यभिचार और अभिलाषा, या लड़ाई—झगड़ों या ईर्ष्या में, बर्बाद मत करो। 14 परन्तु प्रभु यीशु मसीह से, जैसा चाहिए, वैसा जीवन व्यतीत करने की सहायता मांगो, और बुराई का आनन्द लेने की योजनाएं मत बनाओ।

14 1, 2 जो भी भाई तुम्हारे साथ मिलना चाहे उसका स्वागत करो, चाहे उसका विश्वास कितना ही निर्बल क्यों न हो। उसकी आलोचना मत करो—यदि भले और बुरे[1] के

[1] मूलतः "जो विश्वास में निर्बल है, उसे अपनी संगति में ले लो, परन्तु उसकी शंकाओं पर विवाद करने के लिए नहीं।" सम्भवतः "इसका अर्थ है उनको भी ग्रहण करो जिनका मन उन्हें ऐसे कार्यों के करने से कलीसिया में विरोध उत्पन्न कर सकता है, परन्तु तौभी पौलुस उनका स्वागत करने को कहता है।"

विषय में उसके विचार तुमसे भिन्न हों। उदाहरण के लिए, मूर्तियों को चढ़ाया गया मास खाएं कि नही ? इस विषय पर उनसे वाद-विवाद मत करो। तुम विश्वास कर सकते हो कि इसमें कोई हानि नही है, परन्तु दूसरों का विश्वास तुमसे निर्बल है, वे सोचते हैं यह ग़लत है, और बिना मांस खाए रह जाएंगे और मास खाने के बदले साग-पात खाएंगे। 3 जो सोचते हैं कि मास खाना बिल्कुल ठीक है, वे उनको तुच्छ न समझें जो मांस नही खाते। और यदि तुम न खाने वालों में से हो तो खाने वालों को बुरा न समझो। क्योंकि परमेश्वर ने उन्हे अपनी सन्तान होने के लिए ग्रहण किया है। 4 वे परमेश्वर के सेवक हैं, तुम्हारे नहीं। वे उसके प्रति उत्तरदायी हैं, तुम्हारे प्रति नही। परमेश्वर को उन्हें बताने दो कि वे ठीक कर रहे हैं या गलती पर हैं। और परमेश्वर इस योग्य है कि उन्हें वैसा ही बनाए जैसा उन्हें करना चाहिए। 5 कुछ लोग सोचते हैं कि मसीहियों को यहूदियों के उत्सवों के दिनों को मनाना चाहिए और उन्हें परमेश्वर की आराधना के लिए विशेष दिन समझना चाहिए, परन्तु दूसरे इसे गलत और मूर्खता का काम समझते हैं, क्योंकि प्रति दिन परमेश्वर के लिए समान है। इस प्रकार के प्रश्नों का हरएक को अपने लिए निर्णय करना चाहिए। 6 यदि प्रभु की आराधना के लिए तुम्हारे विशेष दिन हैं, तो तुम परमेश्वर का आदर करने का प्रयत्न कर रहे हो, तुम अच्छा काम कर रहे हो। वैसा ही वह व्यक्ति भी करता है जो मूर्ति पर चढ़ाया हुआ मास खाता है, वह इसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता है, वह ठीक कर रहा है। और वह व्यक्ति जो मांस को छूता नही, वह भी परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए उत्सुक है, और धन्यवाद देता है। 7 हम अपने आप के अधिकारी नहीं हैं कि जैसा चाहें वैसा जीएं या मरें। 8 जीवन से या मृत्यु से हम परमेश्वर के पीछे चलते हैं। हम दोनों तरह से उसके हैं। 9 मसीह इसी उद्देश्य से मरा और फिर जी उठा, ताकि हमारे जीवन मे और हमारी मृत्यु मे वह हमारा प्रभु हो। 10 तुम्हारा कोई अधिकार नही कि अपने भाई की आलोचना करो या उसको नीचा समझो। याद रखो, हम मे से प्रत्येक व्यक्तिगत रीति से परमेश्वर के न्याय आसन के सामने खड़ा होगा। 11 क्योंकि लिखा है प्रभु कहता है, "मेरे जीवन की शपथ, प्रत्येक घुटना मेरे सामने झुकेगा और हर जीभ परमेश्वर को मान लेगी।" 12 हां, हम मे से प्रत्येक अपना लेखा परमेश्वर को देगा।

13 इसलिए अब फिर एक दूसरे की आलोचना मत करो। उसके बदले ऐसा जीवन बिताओ कि तुम्हारे भाई को तुम्हें कोई भी ऐसा कार्य करते देखकर, जिसे वह ग़लत समझता है, ठोकर न पहुचे। 14 जहा तक मेरा सम्बन्ध है, मुझे प्रभु यीशु के प्रभुत्व पर पूरा निश्चय है कि मूर्ती पर चढ़ाया हुआ मास खाने मे वास्तव मे कोई बुराई नहीं। परन्तु यदि किसी का विश्वास है कि यह गलत है, तो उसे नही खाना चाहिए क्योंकि उसके लिये वह गलत है। 15 और यदि तुम्हारे भोजन से तुम्हारे भाई को कष्ट पहुचता हो, तो यदि तुम उस भोजन को खा लो तो तुम प्रेम का व्यवहार नही कर रहे हो। अपने भोजन के द्वारा किसी व्यक्ति को जिसके लिए मसीह मरा, नाश न होने दो। 16 यह जानते हुए भी कि जो तुम कर रहे हो वह ठीक है, कोई ऐसा कार्य न करें जिससे तुम्हारी आलोचना हो। 17 क्योंकि मसीही होने के नाते हमारे लिए मुख्य बात यह नहीं है कि हम क्या खाएं या पीएं, परन्तु पवित्र आत्मा की ओर से भलाई और शान्ति और आनन्द को बढावा दें। 18 यदि तुम इन बातों मे मसीह को स्वामी बनने दो, तो परमेश्वर प्रसन्न होगा। और दूसरों को भी आनन्द होगा। 19 इस प्रकार से कलीसिया मे मेल रखने का लक्ष्य रखो और एक दूसरे की उन्नति करने का प्रयत्न करो। 20 मास के टुकड़ो के लिए परमेश्वर का काम मत बिगाड़ो।

स्मरण रखो कि मांस में कोई बुराई नही है, परन्तु यदि उसके खाने से दूसरे को ठेस पहुंचती है तो उसे खाना बुरा है। 21 उचित तो यह है कि मास खाना या शराब पीना या कोई भी ऐसा काम करना छोड दो जिससे तुम्हारे भाई को ठोकर लगती है, या वह पाप करता है। 22 तुम जानते होगे कि जो कुछ तुम करते हो, उसमे परमेश्वर की दृष्टि मे भी कोई बुराई नही है, परन्तु उसे अपने तक मे ही रखो, अपने विश्वास का दूसरो के सामने झूठा प्रदर्शन मत करो जिससे उन्हें चोट पहुँच सकती है। इस स्थिति में वह व्यक्ति आनन्दित है जो उस काम को करने के द्वारा जिसे वह जानता है कि ठीक है, पाप नही करता। 23 परन्तु यदि किसी को विश्वास है कि जिस काम को वह करना चाहता है वह अनुचित है उसे उस काम को नही करना चाहिए। यदि वह उस काम को करे तो वह पाप करता है, क्योंकि वह सोचता है कि वह अनुचित है, और इस कारण उसके लिए वह काम अनुचित है। वह जिस काम को करना ठीक समझता है और नही करता, पाप है।

15

1, 2 चाहे हमारा विश्वास हो कि हमारे इस काम को करने से प्रभु को कोई अन्तर नही पडता, तौभी हम आगे बढ़कर केवल अपने आपको प्रसन्न करने के लिए वह कार्य नही कर सकते। क्योंकि, हमें उन लोगों के भी भय और सन्देशों का "बोझ" उठाना चाहिए जिसके विचार मे यह काम अनुचित है। हम दूसरे व्यक्ति को प्रसन्न करें, अपने आप को नही, और वही करें जो उसकी भलाई के लिए हो और इस प्रकार उसको प्रभु मे दृढ करें। 3 मसीह ने भी अपने आप को प्रसन्न नही किया। जैसा भजनकार ने लिखा, "वह इसी अभिप्राय के लिए आया कि प्रभु का विरोध करने वालों मे अपमान सहे।" 4 बहुत समय पहले पवित्रशास्त्र मे लिखी ये बातें इसलिए हैं कि हम धीरज रखना सीखें और हमें उत्साह मिले कि हम आशा के साथ उस समय की बाट देखें जब परमेश्वर पाप और मृत्यु पर जय पाएगा। 5 धीरज, स्थिरता और उत्साह का देनेवाला परमेश्वर तुम्हारी सहायता करे कि तुम आपस में मेल से रह सको। हरएक दूसरे के साथ मसीह का सा व्यवहार करे। 6 और तब हम सब एक साथ अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता, परमेश्वर, को महिमा देते हुए, एक स्वर से प्रभु की बड़ाई कर सकते है। 7 इसलिए कलीसिया मे एक दूसरे का उत्साह के साथ स्वागत करो, जैसा मसीह ने उत्साह के साथ तुम्हारा स्वागत किया है : तब परमेश्वर की महिमा होगी। 8 याद रखो कि यीशु मसीह यह प्रकट करने के लिए आए कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं मे और यहूदियों को सहायता देने में सच्चा है। 9 और स्मरण रखो कि वह इसलिए भी आए कि अन्यजातियों को उद्धार मिले और वे अपने ऊपर उनकी दया के लिए परमेश्वर की महिमा कर सकें। भजनकार का यही अर्थ था जब उसने लिखा, "मैं अन्यजातियों के मध्य तेरी प्रशंसा करूंगा और तेरे नाम के भजन गाऊंगा।" 10 और दूसरे स्थान मे लिखा, "हे अन्यजातियो! उसकी प्रजा, यहूदियों, के साथ आनन्दित हो।" 11 और फिर, "हे अन्यजातियो, प्रभु की प्रशंसा करो ; हरएक उसकी प्रशंसा करे।" 12 और भविष्यद्वक्ता यशायाह ने कहा, "यिशै के घर मे एक उत्तराधिकारी होगा, और वह अन्यजातियो पर राजा होगा, वे केवल उसी पर अपनी आशा लगाएंगे।" 13 इसलिए मैं तुम अन्यजातियो के लिए प्रार्थना करता हूं कि तुम्हें आशा देने वाला परमेश्वर तुम्हें आनन्द और शान्ति से भरपूर रखे जब कि तुम्हारा विश्वास उस पर है। मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर तुम्हारी सहायता करे कि तुम अपने अन्दर पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा परमेश्वर में आशा मे बढ़ते जाओ।

14 मेरे भाइयो, मैं जानता हूँ कि तुम बुद्धिमान और भले हो और तुम इन बातों को

इतनी अच्छी रीति से जानते हो कि उनके विषय में दूसरों को सब कुछ सिखा सकते हो। 15, 16 परन्तु तौभी मैंने साहस के साथ इनमें से कुछ बातों पर ज़ोर दिया है, यह जानते हुए कि तुमको केवल मेरे स्मरण दिलाने की ही आवश्यकता है, क्योंकि मैं, परमेश्वर के अनुग्रह से, तुम अन्यजातियों के लिए यीशु मसीह की ओर से एक विशेष दूत होकर तुम तक शुभ सन्देश लाता हूं और तुम्हें परमेश्वर के लिए सुगन्धित बलिदान करके चढ़ाता हूं, क्योंकि तुम पवित्र आत्मा के द्वारा पवित्र और परमेश्वर को भाने योग्य बनाए गए हो। 17 इसलिए मेरे लिए ठीक है कि मसीह यीशु ने मेरे द्वारा जितना किया है उन सब पर थोड़ा घमण्ड करूं। 18 मैं दूसरों को परखने का साहस नहीं कर सकता कि कितने प्रभाव के साथ मसीह ने दूसरों को प्रयोग किया है, परन्तु मैं यह जानता हूं, कि उसने अन्यजातियों को परमेश्वर के लिए जीतने में मुझे काम में लिया है। 19 मैंने उनको जीता है अपने संदेशों के द्वारा और उनके सामने अपने जीवन के द्वारा, और परमेश्वर की ओर से चिन्हों के रूप में आश्चर्यकर्मों के करने के द्वारा—जो पवित्र आत्मा की सामर्थ से किए गए। इस प्रकार मैंने यरूशलेम से लेकर इल्लुरिकुम तक मसीह के पूरे[1] सुसमाचार का प्रचार किया है। 20 परन्तु पूरे समय मेरी महत्वाकांक्षा रही है कि और भी आगे जाऊं और प्रचार करूं जहां लोगों ने मसीह का नाम तक कभी नहीं सुना, इसके बदले कि वहां जाऊं जहां पहले ही किसी दूसरे के द्वारा कलीसिया की स्थापना हो चुकी है। 21 मैं पवित्रशास्त्र में किये गए उस उपाय को अपना रहा हूं जहां यशायाह ने लिखा कि जिन्होंने पहले कभी मसीह का नाम नहीं सुना, वे देखेंगे और समझेंगे।

22 वास्तव में इसी कारण से मैं तुमसे भेंट करने के लिए आने से रुका रहा। 23 परन्तु अब अन्त में मेरा यहां का काम समाप्त हो चुका है, और मैं इतने लम्बे वर्षों की प्रतिक्षा के बाद तुम्हारे पास आने के लिए तैयार हूं। 24 क्योंकि मैं स्पेन की यात्रा करने की सोच रहा हूं, और जब करूं तो मैं रोम में रहूंगा, और थोड़े समय तक तुम्हारी अच्छी संगति में रह लेने के बाद, तुम मुझे फिर मेरी यात्रा पर विदा कर सकते हो। 25 परन्तु इससे पहले कि मैं आऊं, मुझे यहूदी मसीहियों के लिए भेंट लेकर यरूशलेम जाना है। 26 क्योंकि तुम्हें ज्ञात हो कि मकिदुनिया और अखया के मसीहियों ने यरूशलेम में रहनेवालों के लिए, जो इतने कठिन समय में हैं दान दिया है। 27 उन्होंने ऐसा बड़े हर्ष के साथ किया है, क्योंकि वे सोचते हैं कि वे यरूशलेम के मसीहियों के वास्तव में ऋणी हैं। क्यों? क्योंकि मसीह का शुभ सन्देश इन अन्यजातियों तक यरूशलेम की कलीसिया से आया। और इसलिए कि उन्होंने वहां से सुसमाचार का यह अनोखा आत्मिक वरदान प्राप्त किया, वे सोचते हैं कि कम से कम वे उनकी आर्थिक सहायता[2] कर सकते हैं। 28 जितनी जल्दी मैं यह पैसा पहुंचा दूं और उनका यह भला काम पूरा कर लूं, मैं स्पेन को अपनी यात्रा में तुमसे भेंट करने के लिए आऊंगा। 29 और मुझे निश्चय है कि जब मैं आऊंगा तब प्रभु तुम्हारे लिए मुझे बड़ी आशिष देगा।

30 क्या तुम प्रार्थना में मेरे साथी होगे? प्रभु यीशु मसीह के कारण और मेरे लिए अपने प्रेम के कारण—जो तुम्हें पवित्र आत्मा के द्वारा दिया गया है—मेरे साथ मेरे काम के लिए बहुत प्रार्थना करो। 31 प्रार्थना करो कि मैं यरूशलेम में उन लोगों से बचाया जाऊं जो मसीही नहीं हैं। इसके लिए भी प्रार्थना करो कि वहां के मसीही उस धन (दान) को ग्रहण करने के लिए भी तैयार हों जो मैं उनके लिए ले जा रहा हूं। 32 तब मैं परमेश्वर की इच्छा

[1] या, "मैंने अपनी सुसमाचार की सेवा को पूरी रीति से पूर्ण किया है।" [2] मूलत. "क्योंकि यदि अन्यजाति उनकी बातों में भागी हुए, तो उन्हें भी उचित है, कि शारीरिक बातों में उनकी सेवा करें।"

रहा है और वैसे ही मसीही भाई क्वारतुस भी। 24 हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब पर बना रहे।

25, 26, 27 मैं तुम्हें परमेश्वर को सौंपता हूं जो तुम्हें प्रभु में दृढ़ और स्थिर बनाने में समर्थ है, जैसा सुसमाचार में लिखा है, और जैसा मैंने बताया भी है। तुम अन्यजातियों के उद्धार के लिए यह परमेश्वर की योजना है, जो आदि से गुप्त थी। परन्तु अब जैसे भविष्यद्वक्ता ने पहले ही कहा था और जैसे परमेश्वर की आज्ञा है, इस सन्देश का प्रचार हर स्थान में किया जा रहा है, जिससे सारे संसार के लोग मसीह में विश्वास करें और उसकी आज्ञा मानें। हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा एकमात्र-ज्ञानवान-परमेश्वर की महिमा युग-युग तक होती रहे। आमीन।

विनीत, पौलुस

से तुम्हारे पास आनन्दित हृदय के साथ आ सकूंगा, और हम एक दूसरे को भी शक्ति दे सकेंगे। 33 और अब शान्ति का दाता, हमारा परमेश्वर, तुम सब के साथ रहे। आमीन।

16 1, 2 एक प्रिय बहिन, फीबे, किंख्रिया नगर से, शीघ्र ही तुमसे भेंट करने को आएगी। उसने वहा कलीसिया मे बडे परिश्रम के साथ काम किया है। इसे उत्साह के साथ मसीही स्वागत करते हुए, प्रभु में अपनी बहिन मानकर ग्रहण करो। इसकी भरसक सहायता करो, क्योंकि उसने आवश्यकता मे अनेक लोगों की सहायता की है जिनमे से मैं भी एक हूं।

3 प्रिसकिल्ला और अक्विला को मेरा नमस्कार कहना। मसीह के कार्यों मे वे मेरे सहकर्मी रहे है 4 वास्तव में, उन्होंने अपना जीवन मेरे कारण खतरे मे डाला है, और केवल मैं ही अकेला नही सारी अन्यजाति कलीसियाएं भी उनके लिए धन्यवाद से भरी हैं।

5 कृपया मेरा नमस्कार उन सब को दो जो उनके घर में आराधना के लिए एकट्ठे होते हैं। मेरे मित्र इपैनितुस को नमस्कार। एशिया मे सबसे प्रथम मसीही बनने वाला व्यक्ति वही था। 6 मरियम को भी मेरा नमस्कार, जिसने हमारी सहायता के लिए बडा परिश्रम किया। 7 अन्द्रुनीकुस और यूनियास को, जो मेरे सम्बन्धी हैं, और मेरे साथ बन्दीगृह मे रहे हैं, मेरा नमस्कार। उनका आदर प्रेरित भी करते हैं और वे मुझसे पहले मसीही बने। 8 अम्पलियातुस को, जिसमे मैं परमेश्वर की निज सन्तान के समान प्रेम रखता हूं, 9 और उरबानुस, हमारे सहकर्मी को, और प्रिय इस्तखुस को मेरा नमस्कार देना। 10 अपिल्लेस, सज्जन को, जिससे प्रभु प्रसन्न है, मेरा नमस्कार। और अरिस्तुबुलुस के घर काम करने वालों को मेरा नमस्कार। 11 मेरे रिश्तेदार हेरोदियोन को नमस्कार। नरकिस्सुस के परिवार के मसीही दासो को भी मेरा नमस्कार। 12 प्रभु के सेवको, त्रूफैना और त्रूफोसा को, और प्रिय पिरसिस को, जिन्होंने प्रभु के लिए बड़ा परिश्रम किया, मेरा नमस्कार। 13 रूफुस को, जिसे प्रभु ने अपना होने के लिए चुन लिया, और उसकी प्रिय माता को, जो मेरी भी माता है, नमस्कार। 14 और कृपया मेरा नमस्कार असुंक्रितुस, फिलगोन, हिमस, पत्रुबास हिर्मास और उनके साथ रहने वालों को कहना। 15 मेरा प्यार फिलुलुगुस, यूलिया, नेर्युस और उसकी बहिन, और उलुम्पास और उनके साथ रहनेवाले सब मसीहियों को देना। 16 एक दूसरे को प्रेम से नमस्कार करो। यहाँ की सब कलीसियाओं का तुम्हें नमस्कार।

17 और अब इस पत्र को समाप्त करने से पहले मुझे एक बात और कहनी है। जो लोग फूट डालते हैं और मसीह के बारे मे ऐसी शिक्षा देकर, जो उस शिक्षा के विपरीत है जो तुमको दी गई है, लोगो के विश्वास को हिला देते हैं, अतः उनसे दूर रहो। 18 ऐसे शिक्षक हमारे प्रभु यीशु मसीह के लिए कार्य नहीं कर रहे हैं, परन्तु केवल अपना ही लाभ चाहते हैं। वे अच्छे भाषण देने वाले हैं, और सरल बुद्धि वाले लोग उनके द्वारा मूर्ख बन जाते हैं। 19 परन्तु सब जानते हैं कि तुम विश्वास योग्य और सच्चे हो। इससे मुझे बड़ा आनन्द होता है। मैं चाहता हूँ कि तुम स्पष्टता से जानो, कि सच क्या है और हर बुराई से बचे रहो। 20 शान्ति का परमेश्वर शीघ्र ही शैतान को तुम्हारे पैरो तले कुचल देगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह की आशीषें तुम पर बनी रहें।

21 मेरा सहकर्मी तीमुथियुस, और लूकियुस और यासोन और सोसिपत्रुस जो मेरे कुटुम्बी हैं, तुम्हें अपनी शुभ-कामना भेजते हैं। 22 मैं, तिरतियुस, जो पौलुस के लिए इस पत्र को लिख रहा हूं, मसीही भाई के सदृश तुम्हें नमस्कार कहता हू। 23 गयुस तुम्हें अपना नमस्कार देने को कह रहा है। मैं उसका अतिथि हूं और कलीसिया यहां उसके घर में एकत्र होती है। इरास्तुस नगर कोषाध्यक्ष तुम्हें नमस्कार भेज

रहा है और वैसे ही मसीही भाई क्वारतुस भी। 24 हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब पर बना रहे।

25, 26, 27 मैं तुम्हें परमेश्वर को सौंपता हूं जो तुम्हें प्रभु में दृढ़ और स्थिर बनाने में समर्थ है, जैसा सुसमाचार में लिखा है, और जैसा मैंने बताया भी है। तुम अन्यजातियों के उद्धार के लिए यह परमेश्वर की योजना है, जो आदि से गुप्त थी। परन्तु अब जैसे भविष्यद्वक्ता ने पहले ही कहा था और जैसे परमेश्वर की आज्ञा है, इस सन्देश का प्रचार हर स्थान में किया जा रहा है, जिससे सारे संसार के लोग मसीह में विश्वास करें और उसकी आज्ञा मानें। हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा एकमात्र-ज्ञानवान-परमेश्वर की महिमा युग-युग तक होती रहे। आमीन।

विनीत, पौलुस

कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री

1 पौलुस की ओर से, जो यीशु मसीह का सुसमाचार प्रचारक होने के लिए परमेश्वर की ओर से चुना गया, और भाई सोस्थिनेस की ओर से। 2 कुरिन्थुस के मसीहियों को, जो परमेश्वर द्वारा उसके लोग होने के लिए बुलाए गए और मसीह यीशु द्वारा परमेश्वर के ग्रहणयोग्य[1] बनाए गए। और हर स्थान के मसीहियों को—जो अपने और हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं।

3 हमारा पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह अपनी सब आशीषें, हृदय और मन की असीम शान्ति तुम्हें प्रदान करें।

4 उन सब अनोखे वरदानों के लिए जो परमेश्वर ने तुमको दिये हैं, मैं उसका धन्यवाद करने से कभी नही रुक सकता, अब इसलिए कि तुम मसीह के हो · 5 परमेश्वर ने तुम्हारे सारे जीवन को सुशोभित किया है। उसने तुम्हारी सहायता की है कि तुम उसके विषय में बोल सको और उसने तुम्हें सत्य का पूरा ज्ञान दिया है, 6 मैंने जो तुमसे कहा था कि मसीह तुम्हारे लिए कर सकता है, वह सब हो चुका है। 7 अब तुम्हे अनुग्रह और हर आशिष प्राप्त है, और इस समय जबकि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के लौटने की बाट जोह रहे हो, तो उनकी इच्छा पूरी करने के लिए हर आत्मिक वरदान और सामर्थ तुम्हारे पास है। 8 और वह अन्त तक तुमको यह दृढ निश्चय देते हैं कि उस दिन जब वह फिर लौटेंगे, तुम पाप और दोष से मुक्त गिने जाओगे। 9 परमेश्वर अवश्य तुम्हारे लिए ऐसा ही करेगा, क्योंकि वह जो कहता है ठीक वैसा ही करता भी है। और वही है जिसने तुम्हे अपने पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह की अद्‌भुत संगति मे बुलाया है।

10 परन्तु प्रिय भाइयो, मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम में तुमसे बिनती करता हूं कि आपस में वाद-विवाद करना बन्द कर दो। सच्ची एकता बनाए रखो ताकि कलीसिया मे फूट न पडे। मैं तुमसे बिनती करता हूँ कि एक मन रहो, तुम्हारे विचार और लक्ष्य एक हो। 11 क्योंकि प्रिय भाइयो कुछ लोगो ने जो खलोए के घर मे रहते हैं, मुझे तुम्हारे वाद-विवाद और झगडो के विषय मे बताया है। 12 तुम मे से कई कह रहे हैं, "मैं पौलुस का शिष्य हूं" और दूसरे करते हैं कि वे अपुल्लोस की या पतरस की ओर हैं, और अनेक यह कहते हैं कि केवल वे ही मसीह के सच्चे शिष्य हैं। 13 और इस प्रकार तुमने मसीह को कई टुकडों मे बाट दिया है। परन्तु क्या मैं, पौलुस तुम्हारे पापो के लिए मरा? क्या तुममें से किसी ने मेरे नाम से बपतिस्मा लिया? 14 मैं अब धन्यवाद करता हूँ कि मैंने क्रिस्पुस और गयुस को छोड तुममे से किसी को बपतिस्मा नही दिया। 15 क्योंकि इसी कारण अब कोई भी यह विचार नही कर सकता कि मैं कोई नई बात आरम्भ करने, "पौलुस की कलीसिया" प्रारम्भ करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। 16 और हा, मैंने स्तिफनास के घराने को भी बपतिस्मा दिया। और मुझे याद नही कि मैंने कभी किसी और को बपतिस्मा दिया हो?

17 क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने नहीं, परन्तु सुसमाचार प्रचार के लिए भेजा, और यद्यपि मेरा प्रचार मामूली प्रतीत होता है, क्योंकि मैं अपने संदेशों को कठिन शब्दों और ज्ञान पूर्ण विचारो से व्यक्त नही करता इस भय से कि मसीह के क्रूस के सरल सन्देश मे जो महान शक्ति है वह कम न हो।

18 मैं अच्छी तरह जानता हूं कि जो भटके हुए हैं[2] जब वे सुनते हैं कि मसीह उनके उद्धार के लिए मरा, तो यह बात उन्हें कितनी मूर्खता

[1] "मसीह यीशु द्वारा चुने गए।" मूलतः "मसीह यीशु में पवित्र किए गए।" [2] अथवा, "मरते हैं।"

मरो लगती है। परन्तु हम, जिन्होंने उद्धार पा लिया है इस सत्य को स्वीकार करते हैं। कि यही सन्देश परमेश्वर की सामर्थ है। 19 क्योंकि परमेश्वर ने कहा है, "मैं उद्धार के लिए मनुष्यों की बनाई हुई सारी योजनाओं को नष्ट करूँगा, और मनुष्यों के उत्तम से उत्तम विचारों की उपेक्षा करूँगा, चाहे वे ज्ञान से कितने ही पूर्ण क्यों न हों।" 20 इसीलिए इन ज्ञानी पुरुषों, इन विद्वानों, वाद-विवाद करने वालों का क्या हुआ? परमेश्वर ने उनको तथा उनके ज्ञान को भी व्यर्थ ठहराया है। 21 क्योंकि परमेश्वर ने अपने ज्ञान में यह निर्णय किया कि संसार, मनुष्यों के ज्ञान से कभी परमेश्वर को न पा सकेगा, और तब परमेश्वर ने आगे आ कर उन सब का उद्धार किया जिन्होंने उसके सन्देश पर विश्वास किया जिसे जगत मूर्खता और व्यर्थ कहता है। 22 जो सन्देश सुनाया गया वह सत्य है, या नहीं इसके लिए यहूदी चिन्ह चाहते हैं। और ज्ञान की खोज में हैं। 23 इसलिए जब हम प्रचार करते हैं कि उनका उद्धार करने के लिए मसीह मरा, तो यहूदियों को क्रोध आता है और अन्य-जाति कहते हैं यह सब मूर्खता है। 24 परन्तु परमेश्वर ने उन लोगों की आँखें खोली हैं जो उद्धार के लिए बुलाये गए हैं, यहूदियों और अन्य-जातियों दोनों की ताकि वे देखें कि उनके उद्धार के लिए मसीह स्वयं उन्हें बचाने के लिए परमेश्वर की सामर्थ और परमेश्वर की योजना का केन्द्र है।

25 यह तथाकथित परमेश्वर का "मूर्खता" से पूर्ण उपाय महाज्ञानी पुरुष की उत्तम, ज्ञानपूर्ण योजना से कहीं अधिक श्रेष्ठ है, और परमेश्वर की निर्बलता—मसीह की क्रूस पर मृत्यु—किसी भी व्यक्ति से कहीं अधिक शक्तिमान है।

26 प्रिय भाइयो, अपने ही बीच में देखो, कि तुममें से जो मसीह के शिष्य हैं, उनमें बहुत कम लोगों को उपाधि या पद या धन प्राप्त है। 27 परन्तु इसके स्थान पर, परमेश्वर ने जानबूझ कर उन विचारों का प्रयोग करना उचित समझा है जिन्हें संसार मूर्खता समझता है ताकि उन लोगों को लज्जित करे जो संसार की दृष्टि में ज्ञानी और महान् समझे जाते हैं। 28 परमेश्वर ने संसार द्वारा तुच्छ और व्यर्थ समझा जाने वाला उपाय प्रयोग किया है और उसके द्वारा उन लोगों को तुच्छ ठहराया है जो संसार की दृष्टि में महान् हैं। 29 जिसमें परमेश्वर के सामने कोई अभिमान न कर सके। 30 क्योंकि केवल परमेश्वर ही से मसीह यीशु के द्वारा तुम्हें जीवन प्राप्त है। मसीह ने हम पर परमेश्वर के उद्धार की योजना प्रकट की, उस ही ने हमें परमेश्वर के ग्रहणयोग्य बनाया, उसने हमें शुद्ध और पवित्र[3] किया और हमारे उद्धार[4] का मूल्य चुकाने के लिये अपने आप को दे दिया। 31 जैसा पवित्रशास्त्र में लिखा है, "यदि किसी को घमण्ड करना हो तो केवल उसी पर घमण्ड करे जो परमेश्वर ने उसके लिए किया है।"

2

1 प्रिय भाइयो, जब मैं पहली बार तुम्हारे पास आया तब मैंने तुम्हें परमेश्वर का सन्देश सुनाने के लिये कठिन शब्दों और लुभाने वाले विचारों का प्रयोग नहीं किया। 2 क्योंकि मैंने निर्णय कर लिया है कि केवल मसीह यीशु और क्रूस पर उनकी मृत्यु ही का सन्देश दूँगा। 3 मैं दुर्बल अवस्था में डरता और काँपता हुआ तुम्हारे पास आया। 4 और मेरा प्रचार बहुत साधारण था, सुन्दर भाषण देने की कला और मनुष्य के ज्ञान के साथ नहीं, परन्तु मेरे शब्दों में पवित्र आत्मा की सामर्थ थी जो सुनने वालों को प्रमाण देती थी कि यह सन्देश परमेश्वर की ओर से है। 5 मैंने ऐसा इसलिये किया क्योंकि मैं चाहता था कि तुम्हारा विश्वास, मनुष्यों के महान विचारों पर नहीं, परन्तु परमेश्वर पर दृढ़ता से स्थिर हो।

6 तौभी जब मैं परिपक्व मसीहियों के मध्य रहता हूँ तो ज्ञान के वचनों का प्रयोग

[3] अथवा, "उन्होंने हमें मसीह के निकट पहुँचाया।" [4] अथवा, "हमें पाप की दासता से छुड़ाने के लिए।"

करता हूँ, परन्तु उस प्रकार के ज्ञान का नही जो इस ससार से आता है, और उस प्रकार का नही जो इस ससार के महापुरुषों को भाता है, जिनका अन्त विनाश है। 7 हमारे वचन ज्ञान से भरे है क्योंकि वे परमेश्वर की ओर से है, जो हमे स्वर्ग के वैभव मे पहुचाने के लिये परमेश्वर की ज्ञानपूर्ण योजना को बताते है, पहिले समयों में यह योजना छिपी हुई थी, यद्यपि यह सृष्टि के आरम्भ से पहले हमारे लाभ के लिये बनाई गई थी। 8 परन्तु ससार के महान लोगों ने उसे कभी नही समझा, यदि वे समझ जाते तो महिमा के प्रभु को कभी क्रूस पर न चढाते। 9 यही पवित्रशास्त्र के इस कथन का अर्थ है कि किसी ने न कभी देखा, न सुना और न कल्पना की है कि परमेश्वर ने प्रभु से प्रेम रखनेवालों के लिये कितनी अद्भुत बातें तैयार रखी है। 10 परन्तु हम उन बातों के विषय मे जानते हैं क्योंकि परमेश्वर ने हमें बताने के लिए अपना आत्मा भेजा है, और परमेश्वर का आत्मा खोजता है और हम पर परमेश्वर के सब गूढ रहस्यो को प्रगट करता है। 11 जैसे स्वय विचार करने वाले व्यक्ति के विचारों को उसके अतिरिक्त और कोई नही जान सकता वैसे ही परमेश्वर के विचारो को उसके आत्मा के अतिरिक्त कोई नही जान सकता। 12 और परमेश्वर ने वास्तव में हमें अपना आत्मा दिया है (संसार की आत्मा नही) ताकि वह हमे परमेश्वर की दी हुई आशिष और अनुग्रह के आश्चर्यजनक सेंतमेंत वरदानो के विषय मे बताए। 13 इन वरदानों के बारे में तुमको बताने मे भी हमने उन्ही शब्दों का प्रयोग किया है जो हमें पवित्र आत्मा की ओर से मिले, न कि उन शब्दों का जो हम मनुष्य होकर चुन सकते हैं। इस प्रकार हम पवित्र आत्मा के तथ्यो[1] को समझाने के लिए पवित्र आत्मा के शब्दों का प्रयोग करते हैं। 14 परन्तु वह मनुष्य जो मसीही नहीं है परमेश्वर के इन विचारों को जिनकी शिक्षा हमे पवित्र आत्मा देता है, नही समझ सकता और न ही ग्रहण कर सकता है। वे विचार उसे मूर्खता से भरे लगते है, क्योंकि केवल वे ही जिनमे पवित्र आत्मा है, पवित्र आत्मा की बातो को समझ सकते हैं। दूसरे उसे समझ ही नही सकते। 15 परन्तु आत्मिक व्यक्ति हर बात को समझता है, और इससे सांसारिक व्यक्ति चकित होता है और वह घबरा जाता है क्योंकि वह उसे बिल्कुल नही समझ पाता। 16 वह समझ भी कैसे सकता है? क्योंकि निश्चय ही उसने न कभी प्रभु के विचारो को जाना, न ही उन पर प्रभु के साथ विचार विमर्श किया और न प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर को किसी कार्य को करने का अवसर दिया[2]। परन्तु जैसा, हम मसीहियों में वास्तव में मसीह के मन और विचारो का एक अंश है।

3 1 प्रिय भाइयो, मैं तुमसे ऐसे बातें कर रहा हूं मानो तुम अब भी मसीही जीवन मे बालक हो, जो प्रभु के पीछे नही, परन्तु अपनी इच्छाओ पर चल रहे हो, मैं तुमसे इस प्रकार बातें नही कर सकता जैसे स्वस्थ्य मसीहियों से क्योंकि मैंने तुमको भोजन नही खिलाया केवल दूध पिलाया। 2 क्योंकि तुम दूध के अतिरिक्त और कुछ भी नही पचा सकते थे। और अब तक तुम्हे दूध ही पिलाना पड रहा है। 3 क्योंकि तुम अब भी मसीही जीवन मे केवल बच्चे हो और परमेश्वर की इच्छा के नही परन्तु अपनी ही इच्छाओं के नियंत्रण मे रहते हो। जब तुम एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या रखते हो और झगडा करते और विरोधी दलों में बंट जाते हो, तो क्या इससे सिद्ध नही होता कि तुम अब भी बच्चे हो, और अपनी ही इच्छा पूरी करना चाहते हो? सच तो यह है कि तुम ऐसे लोगों के समान व्यवहार कर रहे हो जो प्रभु को

[1] या "आत्मिक बातों से आत्मिक सत्य का अर्थ समझाना।" [2] अथवा, "कौन उसको सलाह दे सकता है?"

बिलकुल नहीं जानते। 4 तुम झगड़ा करते हो कि मैं अपुल्लोस से बढ़कर हूँ या नहीं, और कलीसिया में फूट डालते हो। क्या इससे प्रगट नहीं होता कि तुम प्रभु[1] में बहुत कम बढ़े हो? 5 मैं कौन हूं, और अपुल्लोस कौन है, कि हम झगड़े का कारण बनें? हम केवल परमेश्वर के सेवक हैं, हममें से हर एक को कुछ विशेष योग्यतायें हैं; और हमारी सहायता से तुमने विश्वास किया है। 6 मेरा काम था कि तुम्हारे हृदयों में बीज बोऊं, और अपुल्लोस का काम था कि उनको सींचे, परन्तु परमेश्वर ही था, जिसने तुम्हारे हृदयों में उन पौधों को बढ़ाया है। 7 बीज बोने वाले और सींचने वाले का इतना महत्व नहीं है जितना परमेश्वर का जो बढ़ाता है। 8 अपुल्लोस और मैं, एक ही लक्ष्य से, एक दल होकर काम कर रहे हैं, यद्यपि हम में से हर एक को अपने कठिन कामों का प्रतिफल मिलेगा। 9 हम केवल परमेश्वर के सहकर्मी हैं। तुम परमेश्वर की वाटिका हो, हमारी नहीं, तुम परमेश्वर के भवन हो, हमारे नहीं।

10 परमेश्वर ने, अपनी दया से मुझे सिखाया है कि मैं एक कुशल कारीगर कैसे बनूं। मैंने नेव डाली है और अपुल्लोस ने उस पर घर बनाया है। परन्तु नींव पर बनाने वाले को बहुत सावधान रहना चाहिए। 11 और कोई कभी कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता सिवाय उसके जो हमारे पास पहिले से है अर्थात मसीह यीशु। 12 परन्तु कई प्रकार की वस्तुएं हैं जिनका प्रयोग उस नींव पर भवन बनाने के लिए किया जा सकता है। कुछ लोग सोना और चाँदी और बहुमूल्य पत्थरों का प्रयोग करते हैं, और कुछ लोग लकड़ी और घासफूस का। 13 जिस दिन मसीह न्याय करेगा उस दिन प्रगट हो जाएगा कि कारीगरों ने किस प्रकार की वस्तुओं का प्रयोग किया है। हर एक का काम यह देखने के लिए आग से परखा जाएगा कि वह कैसा है। 14 तब हर एक मजदूर जिसने नींव पर बनाने के लिए सही वस्तुओं का प्रयोग किया है, और जिसका काम उस समय तक बना रहेगा, अपनी मजदूरी पाएगा। 15 परन्तु यदि उसने जो घर बनाया है वह जल जाए, तो उसको बड़ी हानि होगी। वह स्वयं तो बच जाएगा, परन्तु उस व्यक्ति के समान जो जलते-जलते बचा हो।

16 क्या तुम समझते नहीं कि तुम सब मिलकर परमेश्वर का घर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम्हारे मध्य अपने घर में रहता है? 17 यदि कोई परमेश्वर के घर को अशुद्ध करता और तोड़ता-फोड़ता है, तो परमेश्वर उसको नाश करेगा। क्योंकि परमेश्वर का घर पवित्र और शुद्ध है, और वह घर तुम हो।

18 अपने आप को धोखा देना छोड़ दो। यदि तुम अपने आपको अन्य लोगों से अधिक ज्ञानी समझते हो, तो तुम्हारे लिए भला है कि यह सब छोड़कर मूर्ख बनो, कि तुम उस ज्ञान से वंचित न रह जाओ। जो स्वर्ग से आता है। 19 क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर की दृष्टि में मूर्खता है। जैसा अय्यूब की पुस्तक में लिखा है, परमेश्वर मनुष्य के ही ज्ञान को उसके लिए फंदा बनाता है, मनुष्य अपने ही "ज्ञान" के कारण ठोकर खाता और गिर जाता है। 20 और भजन की पुस्तक में हमें बताया गया है कि प्रभु अच्छी तरह जानता है, मनुष्य का मन किस रीति से सोचता है और उसके विचार कितने मूर्खतापूर्ण और व्यर्थ होते हैं। 21 इसलिए इस संसार[2] के ज्ञानी मनुष्यों के पीछे चलने पर घमण्ड न करो। क्योंकि परमेश्वर ने वह सब तुम्हें पहिले ही दे दिया है जिसकी तुम्हें आवश्यकता है। 22 परमेश्वर ने पौलुस और अपुल्लोस और पतरस को तुम्हारा सहायक नियुक्त किया है। उसने काम में लाने को तुम्हें पूरा संसार दिया है, और जीवन और यहां तक कि मृत्यु भी तुम्हारे सेवक हैं। उसने तुम्हें वर्तमान और भविष्य का सब कुछ दे दिया है। सब कुछ तुम्हारा है, 23 और तुम मसीह के हो,

[1] मूलत "तो क्या तुम मनुष्य नहीं।" [2] मूलत. "मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे।"

और मसीह परमेश्वर का है।

4 1 इसलिए अपुल्लोस को और मुझे परमेश्वर के सेवक समझना चाहिए जो परमेश्वर के रहस्यों को समझाते हुए उसकी आशिषों को बाटते हैं। 2 अब सेवक के लिए सबसे महत्व की बात यह है कि वह ठीक वैसा ही करे जैसा उसका स्वामी उससे करने को कहता है। 3 मेरे विषय में क्या कह सकते हो ? क्या मैं अच्छा सेवक रहा हूँ ? मुझे चिन्ता नही कि इस विषय मे तुम या अन्य लोग क्या सोचते हो, इस बात पर मैं अपने ही निर्णय पर भी भरोसा नहीं रखता। 4 मेरा विवेक शुद्ध है, परन्तु यह भी अन्तिम प्रमाण नही है। प्रभु स्वयं मुझे जांचेगा और निर्णय करेगा। 5 इसलिए प्रभु के फिर लौटने से पहिले यह निर्णय करने के प्रति सावधान रहो कि कोई अच्छा सेवक है या नही। जब प्रभु आएगा, तब वह प्रगट करेगा कि कौन मुझ जैसा है। उस समय परमेश्वर हरएक की प्रशंसा उसके कार्यों के अनुसार करेगा।

6 मैं जो कुछ कह रहा हूं उसे स्पष्ट करने के लिए मैंने अपुल्लोस को और अपने को उदाहरण के रूप मे प्रस्तुत किया है : ताकि तुम किसी एक का पक्ष न करो। तुम्हे परमेश्वर के एक शिक्षक पर दूसरे शिक्षक से बढकर घमण्ड नही करना चाहिए। 7 तुम किस लिए इतने घमण्ड से फूले हुए हो ? तुम्हारे पास ऐसा क्या है, जिसे परमेश्वर ने तुम्हे नही दिया ? और यदि तुम्हारे पास जितना है, सब परमेश्वर का दिया हुआ है, तो फिर ऐसा क्यों प्रकट करते हो जैसे कि तुम बहुत बडे हो, और तुमने अपने ही बल पर सब कुछ किया है ? 8 तुम सोचते हो कि जितना आत्मिक भोजन तुम्हे आवश्यक है वह सब तुम्हें पहले ही से प्राप्त है। तुम भरपूर और आत्मिक रूप से सन्तुष्ट हो चुके हो। और हमारे बिना राज्य कर रहे हो ! अच्छा होता यदि तुम वास्तव मे राज्य करते होते, क्योंकि जब वह समय आएगा तो तुम्हें निश्चय हो कि हम भी तुम्हारे साथ राज्य करेंगे। 9 कभी-कभी तो मुझे ऐसा लगता है कि परमेश्वर ने हम प्रेरितो को पंक्ति के सबसे अन्त मे रखा है, उन कैदियों के समान जो खेल के मैदान में शीघ्र ही मार डाले जाने वाले हों, कि मनुष्य और स्वर्गदूत दोनों हमारा तमाशा देखें। 10 तुम कहते हो, धर्म ने हमें मूर्ख बना दिया है, परन्तु अवश्य तुम सब बुद्धिमान मसीही हो। हम निर्बल हैं, परन्तु तुम नहीं ! लोग तुम्हे अच्छा सोचते हैं जबकि हम पर हँसते हैं। 11 इस क्षण तक हम भूखे और प्यासे और बिना अधिक वस्त्रो के रहे हैं। हम मार सहते हैं और मारे फिरते हैं। रहने के लिए हमारे पास अपना घर भी नही है। 12 हमने अपनी जीविका के लिए अपने ही हाथों से कठिन परिश्रम किया है। जिन्होंने हमें शाप दिया हमने उनको आशिष दी है। जिन्होंने हमको चोट पहुंचाई है हमने उनके साथ धीरज रखा। 13 जब हमारे विषय मे बुरा कहा गया हमने बड़ी शान्ति से उत्तर दिया है। तौभी इस क्षण तक हम पैर की धूल और कूडे करकट के समान हैं !

14 मैं इन बातो को इसलिए नहीं लिख रहा हूं कि तुम्हें लज्जित करूँ, परन्तु इसलिए कि प्रिय बच्चो के समान तुम्हे चेतावनी और सलाह दूं। 15 क्योंकि तुम्हे चाहे मसीह की शिक्षा देने वाले दूसरे दस हजार भी हो, तौभी स्मरण रखो कि तुम्हारे लिए पिता के समान केवल मैं ही हूं। क्योंकि मैं ही था जो सुसमाचार सुनाने के द्वारा तुम्हें मसीह के पास लाया। 16 इसलिए मैं तुमसे बिनती करता हूं कि तुम मेरे आदर्श पर चलो, और वैसा ही करो जैसा मैं करता हूँ। 17 इसी कारण मैं तुम्हारे पास तीमुथियुस को भेज रहा हूं—कि वह ऐसा करने मे तुम्हारी सहायता करे। क्योंकि वह उनमें से एक है जिन्हें मैंने मसीह के लिए जीता, वह प्रिय और प्रभु मे विश्वास योग्य पुत्र है। वह तुम्हें उन बातो का स्मरण दिलाएगा जिनकी शिक्षा,

मैं जहां कहीं जाता हूं कलीसियाओं में देता हूं। 18 मैं जानता हूं कि तुम में से कई घमण्डी हो गए होंगे, यह सोच कर कि मैं तुम्हारे सामने आने से डरता हूं 19 परन्तु मैं आऊंगा, और यदि प्रभु की इच्छा हुई तो, शीघ्र ही, और तब देखूंगा ये घमण्डी व्यक्ति केवल बड़ी बातें ही करने वाले हैं या उनमें वास्तव में परमेश्वर की सामर्थ है या नहीं ? 20 परमेश्वर का राज्य केवल बातें करना ही नहीं है, यह परमेश्वर की सामर्थ से जीवन बिताना है। 21 तुम क्या चाहते हो क्या मैं डांटने और दण्ड देने के लिए आऊ, या शान्तिमय और नम्रता लेकर आऊं।

5 1 हर व्यक्ति उस भयानक कार्य की चर्चा कर रहा है जो तुम्हारे मध्य हुआ है, इतना बुरा कार्य तो अन्यजाति भी नहीं करते : तुम्हारी कलीसिया में एक पुरुष है जो अपने पिता की पत्नी[1] के साथ पाप में जीवन बिता रहा है। 2 और क्या तुम अब तक घमण्डी हो और अपने आपको "आत्मिक" समझते हो ? तुम शोक और लज्जा अनुभव क्यों नहीं करते, और इस व्यक्ति को अपनी कलीसिया से बाहर क्यों नहीं निकाल देते ? 3, 4 यद्यपि मैं तुम्हारे साथ वहां नही हूं, तौभी इसके बारे में बहुत विचार करता रहा हूं, और मैंने पहले ही प्रभु यीशु के नाम से निर्णय कर लिया है कि क्या करना चाहिए, जैसे मानों मैं वहां हूं। तुम्हें अपनी कलीसिया की बैठक बुलानी है—और अब तुम मिलो तो प्रभु यीशु की सामर्थ तुम्हारे साथ होगी, और मैं आत्मा मे वहा रहूंगा— 5 और तुम इस व्यक्ति को कलीसिया की संगति से बाहर निकाल दो और शैतान के हाथों में कर दो[2] उसे इस आशा से दण्ड देने के लिए, कि जब हमारे प्रभु यीशु मसीह फिर लौटें तब उसकी आत्मा बचाई जाए। 6 कैसी भयानक बात है कि तुम अपनी पवित्रता पर घमण्ड कर रहे हो और इस प्रकार के काम को होते रहने देते हो। क्या तुम समझते नहीं कि यदि एक भी व्यक्ति को पाप करते रहने दिया जाए तो शीघ्र ही सब पर प्रभाव पड़ेगा ? 7 इस बुरे रोग—इस दुष्ट जन को—अपने मध्य से निकाल दो, ताकि तुम शुद्ध बने रह सको। मसीह, परमेश्वर का मेम्ना, हमारे लिए बध किया गया है। 8 इसलिए आओ उसका भोज करें और रोग के समान पुराने जीवन को उसकी सारी बुराई और दुष्टता सहित पूरी रीति से पीछे छोड़ते हुए, मसीही जीवन में बलवन्त होते जाएं। उसके स्थान पर हम आदर और सच्चाई और सत्यता की पवित्र रोटी का भोज करें।

9 जब मैं ने तुमको पहले लिखा था तो दुष्ट लोगों की संगति करने को मना किया था। 10 परन्तु जब मैं ने ऐसा कहा था कि मैं उन अविश्वासियों के विषय में नहीं बोल रहा था जो व्यभिचार में जीवन बिताते हैं या जो लालची, धोखा देने वाले, चोर और मूर्तिपूजक हैं। क्योंकि इस प्रकार के लोगों के साथ रहे बिना तो तुम इस संसार मे नही रह सकते हो। 11 मेरे कहने का अर्थ यह था कि तुम्हें किसी ऐसे व्यक्ति की संगति नही करनी है जो भाई मसीही होने का दावा करता है परन्तु व्यभिचार करता है, या जो लालची, या ठग कर धन लेने वाला या मूर्ति-पूजक या शराबी या गाली देने वाला है। ऐसे व्यक्ति के साथ भोजन भी मत करो। 12 बाहर वालों का न्याय करना हमारा काम नहीं। परन्तु निश्चय ही उन लोगों का न्याय करना और उनसे दृढ़ता से व्यवहार करना हमारा काम है जो कलीसिया के सदस्य हैं, और जो इस प्रकार से पाप कर रहे हैं। 13 बाहर वालों का न्यायी केवल परमेश्वर ही है। परन्तु इस व्यक्ति का न्याय तुम्हें आप ही करना चाहिए और उसे कलीसिया से बाहर निकाल देना चाहिए।

6 1 यह कैसी अजीब बात है कि जब तुम मे आपस मे झगड़ा होता है तो तुम मसीही

[1] सम्भवत: अपनी सौतेली माँ। [2] मूलत: "शरीर के विनाश के लिए।

भाइयों के पास जाने के बदले अन्य जातियों के न्यायालय में निर्णय कराने के लिए जाते हो, इसकी अपेक्षा यह निर्णय करने के लिए कि तुम में से कौन ठीक है दूसरे मसीहियों के पास उस विषय को ले जाओ ? 2 क्या तुम नही जानते कि किसी दिन हम मसीही इस संसार का न्याय करेंगे और संसार पर राज्य करेंगे ? तो इतनी छोटी बातों का आपस में निर्णय क्यो नही कर लेते ? 3 क्या तुम नही जानते कि हम मसीही स्वर्ग के स्वर्गदूतों तक का न्याय कर उनको प्रतिफल देंगे ? इसलिए तुम्हें यहीं इस पृथ्वी पर अपनी समस्याओं का निर्णय सरलता से करने के योग्य होना चाहिए। 4 फिर हम बाहर वाले न्यायाधीशो के पास क्यों जाएं जो मसीही[1] नही हैं ? 5 मैं तुम्हें लज्जित करने का प्रयत्न कर रहा हूं। क्या पूरी कलीसिया मे एक भी इतना बुद्धिमान नही है जो इन विवादों को निपटा सके ? 6 परन्तु, इसके बदले, कचहरी में एक मसीही दूसरे पर दोष लगाता और अपने मसीही भाई को अविश्वासियों के सामने अपराधी ठहराता है। 7 इस प्रकार के मुकद्दमे करना ही वास्तव में तुम मसीहियो की पराजय है। अपनी हानि और बुरा व्यवहार क्यो नही सह लेते ? अन्याय को सह लेना तुम्हारे लिए कहीं अधिक प्रभु की महिमा करने का कारण होगा। 8 परन्तु इसके बदले, तुम आप ही ऐसे अन्यायी हो, कि दूसरों को, यहां तक कि अपने भाइयों को भी धोखा देते हो। 9, 10 क्या तुम नही जानते कि ऐसे अन्यायियों का परमेश्वर के राज्य मे कोई भाग नही होगा ? धोखा न खाओ। जो बुरी चाल चलते हैं, मूर्तिपूजक हैं, व्यभिचारी और पुरुषगामी हैं उनका परमेश्वर के राज्य मे कोई भाग नही होगा न ही चोरों, लालचियो, शराबियो, निन्दको या डाकुओं का होगा। 11 कोई समय था जब तुममे से कई इस प्रकार के थे परन्तु अब तुम्हारे पाप धुल गए हैं, और तुम परमेश्वर के लिए अलग किए गए हो, और परमेश्वर ने तुम्हे, प्रभु यीशु मसीह और हमारे परमेश्वर के आत्मा द्वारा किए गए काम के कारण तुम्हें ग्रहण किया है।

12 यदि मसीह ने भी किसी कार्य के लिए मना नही[2] किया है तब भी मैं वह नही करूंगा, क्योकि वे सब मेरे लाभ के लिए नही हैं। यदि मुझे उन्हें करने की आज्ञा भी दे दी जाए, तो भी मैं इन्कार कर दूगा ताकि मैं उनमे फंस न जाऊं। 13 उदाहरण के लिए, भोजन करने का उदाहरण लो। परमेश्वर ने हमे भोजन के लिए भूख और उसे पचाने के लिए पेट दिया है। परन्तु इसका यह अर्थ नही कि हमे आवश्यकता से अधिक भोजन करना चाहिए। भोजन करने को अधिक महत्व की बात मत समझो, क्योंकि किसी दिन पेट और भोजन दोनो को परमेश्वर नही रहने देगा। परन्तु व्यभिचार किसी भी दशा मे ठीक नही है: हमारी देह इसके लिए नही, परन्तु परमेश्वर के लिए बनाई गई थी, और प्रभु की इच्छा है कि हमारी देह को अपने आप से भरे। 14 और परमेश्वर अपनी सामर्थ से हमारी देह को मरे हुओं में से जिलाएगा जैसे कि उसने प्रभु यीशु मसीह को जिलाया था। 15 क्या तुम नहीं समझते कि तुम्हारी देह वास्तव मे मसीह का अग और भाग है ? तो क्या मुझे मसीह के अंग को लेकर उसे वेश्या से जोड़ना चाहिए ? कभी भी नहीं। 16 और क्या तुम नही जानते कि यदि कोई पुरुष वेश्या से मिल जाए तो वह उसका एक अग बन जाता है ? क्योकि परमेश्वर ने हमे पवित्रशास्त्र में

[1] या, "कलीसिया में कम से कम योग्यता रखने वाले लोगों को भी तुम्हारे लिए इन विषयों पर निर्णय करना चाहिए।" दोनों अर्थ सम्भव हैं। [2] मूलत- "सब वस्तुएं मेरे लिए उचित हैं।" स्पष्ट है कि पौलुस उन बातों के करने की अनुमति नहीं दे रहा है जिनको करने के लिए उसने पद 8, 9 में मना किया है। प्रगट है कि वह अभिलाषा से भरे हुए कुरिन्थ की कलीसिया के कुछ लोगों के विषय में कह रहा है जो अपने अपराधों को पाप न कहकर टाल रहे थे।

बताया है कि उसकी दृष्टि में दोनों एक व्यक्ति बन जाते हैं। 17 परन्तु यदि तुम अपने आपको प्रभु को दे दो, तो तुम और मसीह एक व्यक्ति के समान मिल जाते हो। 18 इसलिए मैं व्यभिचारी से दूर भागने को कहता हूं। और किसी दूसरे पाप का शरीर पर उतना प्रभाव नहीं पड़ता जितना इस पाप का। जब तुम यह करते हो तो अपनी ही देह के विरुद्ध पाप करते हो। 19 क्या तुमने अब तक नहीं सीखा है कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का घर है जिसे परमेश्वर ने तुम्हें दिया है, और वह तुममें रहता है? तुम्हारी अपनी देह तुम्हारी नहीं है। 20 क्योंकि परमेश्वर ने तुमको बड़ा मूल्य देकर खरीदा है। इसलिए अपनी देह के हर अंग को परमेश्वर की महिमा करने के लिए काम में लाओ, क्योंकि वह परमेश्वर का है।

7 1 अब उन प्रश्नों के विषय में जिन्हें तुमने अपने अन्तिम पत्र में पूछा: मेरा उत्तर है कि यदि तुम विवाह न करो तो अच्छा है। 2 परन्तु साधारण रीति से विवाह करना, हर पुरुष के पास अपनी पत्नी का होना, और हर स्त्री के पास अपने ही पति का होना उत्तम है, नहीं तो तुम पाप में गिर सकते हो। 3 पुरुष को अपनी पत्नी को विवाहित स्त्री के समान सब अधिकार देने चाहिएं, और पत्नी को भी अपने पति के लिए वैसा ही करना चाहिए। 4 क्योंकि विवाह कर लेने के बाद, लड़की को अपनी देह पर पूरा अधिकार नहीं रह जाता, क्योंकि उस पर उसके पति का भी अधिकार हो जाता है, और उसी प्रकार पति का भी अब अपनी देह पर पूरा अधिकार नहीं रह जाता है क्योंकि वह उसकी पत्नी का भी हो जाता है। 5 इसलिए एक दूसरे को इन अधिकारों से मत रोको। इस नियम का पालन केवल तभी नहीं होगा जब दोनों पति-पत्नी सहमत हों कि सीमित समय के लिए विवाह के अधिकारों से परे रहें, ताकि वे अपने आप को पूरी रीति से प्रार्थना के लिए दे सकें। बाद में, उन्हें फिर से एक साथ रहना चाहिए ताकि अपने को वश में रखने की कमी के कारण शैतान उनको परीक्षा में न डाल सके। 6 मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि तुम्हें विवाह अवश्य करना है: परन्तु यदि तुम चाहते हो तो निश्चय ही कर सकते हो। 7 मैं चाहता हूं कि सब मेरे समान बिना विवाह किये रह सकते। परन्तु हम सब एक जैसे नहीं हैं। परमेश्वर किसी को पति या पत्नी का वरदान देता है। और किसी को प्रसन्नतापूर्वक अविवाहित रहने के योग्य होने का।

8 इसलिए मैं अविवाहितों और विधवाओं से कहता हूँ—यदि रह सको तो अविवाहित रहना अच्छा है, जैसा मैं हूं। 9 परन्तु यदि अपने को वश में न कर सको, तो विवाह कर लो। काम वासना से भरे रहने की अपेक्षा विवाह करना अधिक अच्छा है। 10 अब विवाहितों के लिए मुझे केवल सलाह ही नहीं वरन् एक आज्ञा देनी है, और यह आज्ञा मेरी ओर से नहीं है, क्योंकि यह प्रभु ने आप ही कहा है: पत्नी अपने पति को कदापि नहीं छोड़े। 11 परन्तु यदि वह उससे अलग हो जाए, तो फिर अकेली ही रहे या फिर उसके पास वापिस जाए। और पति अपनी पत्नी को तलाक न दे। 12 यहां मैं अपने ही कुछ सुझाव देना चाहता हूँ। ये आज्ञाएं सीधे प्रभु की ओर से नहीं, परन्तु मुझे उचित जान पड़ता है: यदि किसी मसीही की ऐसी पत्नी हो जो मसीही न हो, परन्तु वह उसके साथ रहना चाहती हो, तो उसे उसको त्यागना या तलाक नहीं देना चाहिए। 13 और यदि किसी मसीही स्त्री का ऐसा पति हो जो मसीही न हो और वह चाहता हो कि वह उसके साथ रहे तो स्त्री को उसे नहीं छोड़ना चाहिए। 14 क्योंकि हो सकता है कि पति जो मसीही नहीं है अपनी मसीही स्त्री की सहायता से मसीही हो जाए। और पत्नी जो मसीही नहीं है अपने मसीही पति की सहायता से मसीही बन जाए। नहीं तो यदि माता-पिता अलग हो जाएं, तो हो

सकता है कि बच्चे कभी प्रभु को न जान पाएं, जबकि परमेश्वर की योजना के अनुसार माता-पिता के एक साथ रहने से बच्चों का उद्धार हो सकता है 15 परन्तु पति या पत्नी जो मसीही नही हैं अलग होने को उत्सुक हों, तो होने दो। ऐसी परिस्थितियों में मसीही पति या पत्नी को जोर नही देना चाहिए कि दूसरा उससे अलग न हो, क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि उनकी संतान शान्ति और मेल से रहे । 16 क्योंकि अन्त मे तुम पत्नियो के लिए कोई निश्चय तो है नही कि तुम्हारे पति यदि रहें तो मसीही बन जाएगे, और तुम पतियो से भी तुम्हारी पत्नियों के विषय मे ठीक ऐसा ही कहा जा सकता है। 17 परन्तु इन विषयो पर निर्णय लेते समय निश्चय जानो कि तुम परमेश्वर की इच्छानुसार परमेश्वर की अगुवाई और सहायता से विवाहित रह रहे हो, और जिस भी परिस्थिति मे परमेश्वर ने तुम्हे रखा है, उसे स्वीकार कर रहे हो। सब कलीसियाओ के लिए यह मेरा नियम है। 18 उदाहरण के लिए, जिस व्यक्ति ने मसीही बनने से पहले ही खतने की 'यहूदी प्रथा' को पूरा किया हो, उसे उसकी चिन्ता नही करनी चाहिए, और यदि उसका खतना न हुआ हो, तो अब उसे कराना भी नही चाहिए। 19 क्योंकि इससे कुछ अन्तर नही पड़ता कि किसी मसीही ने इस प्रथा को पूरा किया है या नही परन्तु इससे बहुत अधिक अन्तर पड़ता है कि वह परमेश्वर को प्रसन्न कर रहा है और परमेश्वर की आज्ञाओ का पालन कर रहा है या नही। 20 साधारणतया किसी व्यक्ति को वही काम करते रहना चाहिए जो वह उस समय कर रहा था जब परमेश्वर ने उसे बुलाया था। 21 क्या तुम दास हो? इसकी चिन्ता न करो—परन्तु हा, यदि स्वतन्त्र होने का अवसर मिले, तो उसका लाभ उठाओ। 22 यदि परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया है और तुम दास हो, तो स्मरण रखो कि मसीह ने तुम्हे पाप की भयानक शक्ति से स्वतंत्र किया है, और यदि परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया है और तुम स्वतंत्र हो, तो स्मरण रखो कि तुम अब मसीह के दास हो। 23 मसीह के द्वारा तुम मोल लिये गये और तुम्हारा मूल्य दिया गया है इसलिए तुम उसके हो—अब इन सब सांसारिक घमण्ड और भय से स्वतंत्र रहो। 24 इसलिए, प्रिय भाइयो, मसीह होते समय जो व्यक्ति जिस परिस्थिति में रहा हो, उसे वही रहने दो, क्योंकि वहाँ अब प्रभु उसकी सहायता करने को उपस्थित है।

25 अब मैं तुम्हारे दूसरे प्रश्न का उत्तर देने का प्रयत्न करूंगा। उन लड़कियों के विषय मे जिन्होंने अभी तक विवाह नही किया? क्या उन्हे विवाह[1] करने दिया जाए? इस प्रश्न के उत्तर में, इसके विषय मे मेरे पास प्रभु की ओर से कोई विशेष आज्ञा नही है, परन्तु परमेश्वर ने अपनी करुणा के अनुसार मुझे ज्ञान दिया है। जिस पर भरोसा किया जा सकता है, और अपने विचार तुम्हें बताने मे मुझे प्रसन्नता होगी। 26 समस्या यह है: वर्तमान समय मे हम मसीही अपने प्राणों का जोखिम उठा रहे हैं। ऐसे समयो मे मेरा विचार है कि किसी व्यक्ति के लिए अविवाहित बने रहना ही उत्तम है। 27 हाँ, यदि तुम पहले ही विवाहित हो, तो इसके कारण अलग मत हो, परन्तु यदि नही हो, तो इस समय इसमे जल्दी मत करो। 28 परन्तु यदि तुम पुरुष फिर भी विवाह करना ही चाहो, तो ठीक है, और यदि कोई लडकी ऐसे समय मे विवाह कर ले, तो यह पाप नही। तो भी विवाह करने से और समस्याएं आ जाती हैं जिनका मैं चाहता हूं कि अभी इसी समय तुमको सामना न करना पड़े। 29 स्मरण रखने की बात यह है कि हमारे रहने का समय बहुत कम है, (और इसलिए प्रभु के काम करने के लिए अवसर भी कम है)। इसी कारण जिनकी पत्नियां हैं उन्हें प्रभु के लिये जितना हो सके उतना स्वतंत्र रहना चाहिए,[2] 30 आनन्द या दुःख धन किसी भी व्यक्ति को

[1] यही आशय है। [2] मूलतः "जिन के पत्नी हों, वे ऐसे हो मानो उनके पत्नी नहीं।"

परमेश्वर के काम करने से न रोके। 31 जो संसार की उत्तेजनापूर्ण बातों के सम्पर्क मे बार-बार आते हैं उन्हें उनका आनन्द लेने से नही रुकना चाहिए परन्तु उस अवसर का अच्छा उपयोग करना चाहिए, क्योंकि संसार का वर्तमान रूप शीघ्र ही मिट जाएगा। 32 तुम जो कुछ करो, मैं चाहता हूँ कि तुम चिन्ता रहित रहो। अविवाहित व्यक्ति अपना समय प्रभु का काम करने में और यह सोचने में बिता सकता है कि वह प्रभु को कैसे प्रसन्न करे। 33 परन्तु विवाहित व्यक्ति ऐसा इतनी अच्छी तरह नही कर सकता, उसे अपने सांसारिक उत्तरदायित्वों के बारे में सोचना पड़ता है और यह भी कि वह अपनी पत्नी को कैसे प्रसन्न रखे। 34 उसका ध्यान बट जाता है। ऐसा ही विवाहित स्त्री के साथ भी होता है। वह भी उसी समस्या का सामना करती है। कुवारी लडकी अपने आचरण और सब कार्यों मे प्रभु को प्रसन्न करने के लिए उत्सुक रहती है।[3] परन्तु विवाहित स्त्री को दूसरी बातो की चिन्ता करनी पडती है जैसे घर का काम और अपने पति की रुचि या अरुचि की। 35 मैं यह तुम्हारी सहायता के लिए कह रहा हूं, तुम्हें विवाह करने से रोकने का प्रयत्न करने के लिए नही। मैं चाहता हूं तुम वही करो जिससे प्रभु की सेवा उत्तम रीति से करने में तुम्हें सहायता मिले और प्रभु की ओर से तुम्हारा ध्यान हटाने में कम से कम बाधाएं हों। 36 परन्तु यदि कोई सोचता है कि उसे विवाह करना ही चाहिए क्योंकि उसे लालसाओ को वश मे करने में कठिनाई होती है, तो वह बिलकुल ठीक है, यह पाप नही है, उसे विवाह करने दो। 37 परन्तु यदि किसी पुरुष में विवाह न करने की इच्छा शक्ति हो और वह निर्णय करे कि उसे विवाह करने की आवश्यकता नही और नही करेगा, तो उसने बुद्धिमानी का निर्णय लिया है। 38 इस प्रकार जो व्यक्ति विवाह करता है वह अच्छा करता है, और जो व्यक्ति विवाह नही करता वह उससे भी अच्छा करता है। 39 पत्नी अपने पति के जीते जी उसका अंग रहती है, यदि उसका पति मर जाए, तब वह फिर विवाह कर सकती है, परन्तु तभी जब कि वह मसीही से विवाह करे। 40 परन्तु मेरे विचार से यदि वह फिर से विवाह न करे तो अधिक आनन्दित रहेगी, और मैं सोचता हू कि यह कहते समय मैं परमेश्वर की आत्मा की ओर से तुमको सलाह दे रहा हूँ।

8 1 तुम्हारा अगला प्रश्न उस भोजन को करने के विषय मे है जो मूर्तियों को चढाया गया है। इस प्रश्न के विषय मे हर एक का विचार है कि केवल उसी का उत्तर ठीक है। परन्तु यद्यपि यह समझना कि 'हम सब जानते हैं' हमे अपने आप को बडा बनाता है, क्योंकि वास्तव मे कलीसिया के निर्णय के लिए जिस बात की आवश्यकता है वह प्रेम है। 2 यदि कोई सोचे कि वह सब बातो के उत्तर जानता है, तो वह केवल अपनी मूर्खता प्रगट करता है। 3 परन्तु जो व्यक्ति वास्तव में परमेश्वर से प्रेम रखता है वही, परमेश्वर का ज्ञान ग्रहण करता है। 4 इसलिए, अब क्या कहे ? क्या मूर्तियो को चढाया हुआ भोजन हमे करना चाहिए ? हम सब जानते हैं कि मूर्ति वास्तव मे ईश्वर नही है, और यह कि केवल एक ही परमेश्वर है और कोई दूसरा नही। 5 कुछ लोगों के अनुसार, स्वर्ग और पृथ्वी दोनो मे बहुत से ईश्वर हैं। 6 परन्तु हम जानते हैं कि केवल एक ही परमेश्वर है, अर्थात पिता, जिसने सब वस्तुओं[4] की सृष्टि की और हमे अपना होने के लिए बनाया, और एक ही प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने सब कुछ बनाया और हमे जीवन देते हैं। 7 तौभी, कुछ मसीही इसे नही समझते। अपने पूरे जीवन भर वे यह सोचने के अभ्यस्त

[3] मूलत "देह और आत्मा दोनो में पवित्र।"
[4] मूलत "जिस की ओर से सब वस्तुए हैं।"

रहे हैं कि मूर्ति सजीव है, और वे विश्वास करते रहे हैं कि मूर्तियों को चढ़ाया हुआ भोजन वास्तविक ईश्वरों को चढ़ाया गया भोजन है। इसलिए अब वे ऐसा भोजन करते हैं तो उन्हें व्याकुलता अनुभव होती है और उनके कोमल विवेक को चोट लगती है। 8 इतना याद रखो कि परमेश्वर को चिंता नहीं कि हम उसे खाएं या न खाएं। उसे न खाने से हम कोई बुरे नही हो जाते, और खाने से कोई भले नही बन जाते। 9 परन्तु सावधान रहो कि अपनी स्वतन्त्रता का उपयोग उसे खाने मे न करो, कही ऐसा न हो कि तुम किसी मसीही भाई के जिसका विवेक[2] तुमसे निर्बल है, पाप करने का कारण बनो। 10 ऐसा हो सकता है: यदि कोई व्यक्ति जो ऐसे भोजन को अनुचित समझता है, तुझे मन्दिर में भोजन करते देखे, क्योंकि तू जानता है कि उसके खाने से कोई हानि नही, तो वह भी उसे करने का साहस करेगा, यद्यपि पूरे समय वह तब भी यही सोचता है कि ऐसा करना अनुचित है। 11 इसलिए क्योंकि तुम "जानते हो कि ऐसा करना ठीक है," तुम उस कोमल विवेक वाले भाई के प्रति, जिसके लिए मसीह मरा उसके आत्मिक पतन के लिए उत्तरदायी होगे। 12 अपने भाई के विरुद्ध पाप करना मसीह के विरुद्ध पाप करना है। 13 इसलिए यदि मूर्तियों के सामने चढाए गए भोजन करने से मेरा भाई पाप में पड़े, तो मैं उस भोजन को कदापि नही खाऊंगा, क्योंकि मैं नही चाहता कि मैं उसके पाप का कारण बनू।

9 1 मैं एक प्रेरित, परमेश्वर का दूत हूँ। मैं मात्र व्यक्ति के प्रति उत्तरदायी नही हू। मैं वह हूँ जिसने वास्तव में अपनी आखों से हमारे प्रभु यीशु को देखा है। और तुम्हारा बदला हुआ जीवन प्रभु के लिए मेरे कठिन परिश्रम का परिणाम है। 2 यदि दूसरों के विचार में मैं प्रेरित नहीं हूं, तो निश्चय ही तुम्हारे लिए हू। क्योंकि तुम मेरे द्वारा मसीह के लिए जीते गए हो। 3 यह उनके लिए मेरा उत्तर है जो मेरे अधिकारों पर प्रश्न करते हैं। 4 या क्या मेरे कोई अधिकार नही हैं? क्या मुझे दूसरे प्रेरितों के समान तुम्हारे घरों मे अतिथि बन कर रहने का अधिकार नही है? 5 यदि मेरी पत्नी होती और यदि[1] वह विश्वासी होती, तो क्या मैं उसे इन यात्राओं मे अपने साथ नही लाता जैसे दूसरे शिष्य और प्रभु के भाई लाते हैं, और जैसे पतरस लाता है? 6 और क्या केवल मुझे और बरनबास को ही अपनी जीविका के लिए परिश्रम करना आवश्यक है, जबकि शेष लोगो का भार तुम उठाते हो? 7 सेना का कौन सा सैनिक अपना खर्च उठाता है? और क्या तुमने कभी किसी किसान के विषय में सुना है जो अपनी फसल की कटनी करे और उसे यह अधिकार न हो कि उसमे से कुछ खाए? कौन सा चरवाहा भेड बकरियो के झुड की देखभाल करता है और उनका दूध नही पीता? 8 और मैं केवल मनुष्यों के विचार ही नही बता रहा हूँ कि क्या ठीक है। मैं तुम्हें बता रहा हूं परमेश्वर की व्यवस्था में क्या लिखा है। 9 क्योंकि उस व्यवस्था में जो परमेश्वर ने मूसा को दी, उसने कहा कि तुम दाय मे चलते हुए बैल को खाने मे रोकने के लिए उसका मुख न बाधना। क्या तुम सोचते हो कि जब परमेश्वर ने ऐसा कहा तो उसको केवल बैलो ही की चिंता थी? 10 क्या उसको हमारी भी चिंता नहीं थी। उसने हम पर स्पष्ट करने के लिए यह कहा कि मसीही कार्यकर्त्ताओं को उनके द्वारा मजदूरी मिलनी चाहिए जिनकी सेवा वे करते हैं। हल जोतने वालों और दाय करने वालो को फसल का कुछ न कुछ भाग मिलने की आशा करनी ही चाहिए।

---

[2] यही आशय है। मूलत "विश्वास।"

[1] यही आशय है। मूलत "क्या हमें यह अधिकार नहीं, कि किसी मसीही बहिन को ब्याह करके लिये फिरें?"

11 हमने तुम्हारी आत्माओं में अच्छे आत्मिक बीज बोये हैं। क्या बदले मे केवल भोजन और वस्त्र की माग करना बहुत अधिक है? 12 तुम दूसरे लोगों को ये वस्तुएं देते हो जो तुम्हारे बीच प्रचार करते हैं। और तुम्हे उनको देना भी चाहिए। परन्तु क्या हमारा उनसे भी बढ़कर अधिकार नही होना चाहिए? तौभी हमने इस अधिकार का पूरा उपयोग कभी नही किया है, परन्तु बिना तुम्हारी सहायता के हम अपनी आवश्यकताओ को पूरी करते हैं। हमने कभी किसी भी प्रकार की मजदूरी नही मांगी है इस भय से कि यदि मांगें, तो कही ऐसा न हो कि मसीह की ओर से जो सन्देश हम तुम्हें सुनाते हैं उसमें तुम्हारा उत्साह कम हो जाए। 13 क्या तुम नही समझते कि परमेश्वर ने अपने मन्दिर में काम करने वालों से कहा था कि उसके लिए चढाई गई भेंटों मे से कुछ वे अपनी आवश्यकताओं के लिए ले लें? और परमेश्वर की वेदी पर काम करने वाले उस भोजन का भाग पाते हैं जो वहां प्रभु को भेंट चढ़ानेवालों के द्वारा लाई जाती हैं। 14 इसी प्रकार प्रभु ने आज्ञा दी है कि सुसमाचार प्रचार करने वालों का भार वे लोग उठाए जो उसे ग्रहण करते हैं। 15 तौभी मैंने कभी तुमसे एक पैसे की मांग नहीं की है। और मैं यह संकेत करने के लिए नही लिख रहा हूं कि अब ऐसा मागना चाहूँगा। वास्तव में, मैं भूखा मरना अधिक चाहूँगा इसकी अपेक्षा कि वह संतोष खो दूं, जो मुझे तुम्हें बिना दाम प्रचार करने से मिलता है। 16 क्योंकि केवल सुसमाचार प्रचार करना मेरी कोई विशेष बात नही,—मैं चाहते हुए भी प्रचार करने से नही रुक सकता था। मैं बड़ा दुखित होता। धिक्कार मुझ पर यदि मैं प्रचार न करूं। 17 यदि मैं अपनी ही स्वतन्त्र इच्छा से अपनी सेवाएं अर्पित करता, तो प्रभु मुझे विशेष प्रतिफल देता, परन्तु 'परिस्थिति' ऐसी नही है, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे चुना है और मुझे यह पवित्र काम सौंपा है और यह मेरा अपना चुनाव नही है। 18 इस परिस्थिति में मेरा वेतन क्या है? मेरा वेतन यह विशेष आनन्द है जो बिना किसी पर भार बने, बिना किसी से कुछ मागे, मुझे सुसमाचार प्रचार करने से प्राप्त होता है। 19 और इससे वास्तव में लाभ है। मैं किसी को मानने के लिए बाध्य नही करता कि वह मुझे मेरा वेतन देता है, तौभी मैं अपनी इच्छा से हर्ष के साथ सबका दास बना हू ताकि उनको मसीह के लिए जीत सकूं। 20 जब मैं यहूदियो के साथ होता हू तो उन्ही मे से एक लगता हू ताकि वे सुसमाचार को सुनें और मैं उन्हे मसीह के लिए जीत सकू। जब मैं अन्य-जातियों के साथ रहता हू जो यहूदी प्रथाओ और रीतियों को मानते है तो मैं वादविवाद नही करता यद्यपि मैं उनसे सहमत नही होता, क्योंकि मैं उनकी सहायता करना चाहता हू। 21 जब मैं अन्यजाति के साथ रहता हू तो जितना हो सके उनसे सहमत होता हू, परन्तु वही तक जहा तक आवश्यक है क्योकि मुझे मसीही होते हुए वही करना चाहिए जो उचित है। और इस प्रकार सहमत होकर मैं उनका विश्वास[*] जीत सकता हूं और उनकी सहायता भी कर सकता हू। 22 जब मैं उन लोगों के साथ रहता हूँ जिनका विवेक सरलता मे व्याकुल कर देता है, तो मैं ऐसा व्यवहार नही करता मानो सब जानता हूं और यह नही कहता कि वे मूर्ख है: परिणाम यह होता है कि वे मुझसे सहायता लेने के लिए तैयार रहते हैं। हा, जैसा जो व्यक्ति होता है, मैं प्रयत्न करता हूं, कि उसी के साथ मिल जाऊं ताकि वे मुझे मसीह के विषय मे बताने दें और मसीह से उद्धार पाएं। 23 मैं ऐसा उन तक सुसमाचार पहुचाने के लिए करता हूं और उस आशिष के लिए भी जो उन्हे मसीह के पास आते देखकर मुझे स्वय भी मिलती है। 24 दौड मे, सब दौडते हैं परन्तु केवल एक व्यक्ति को पहला इनाम मिलता है। 25 इसलिए जीतने के

[*] यही आशय है।

लिए अपनी दौड़ दौड़ो। इनाम जीतने के लिए तुम्हें कई बातो का त्याग करना पड़ता है जो तुम्हें भरसक प्रयत्न करने से रोकती हैं। खिलाड़ी केवल एक इनाम पाने के लिए या स्वर्ण पदक[1] पाने के लिए इतने सारे कष्ट सहता है, परन्तु हम स्वर्गीय इनाम के लिए जो कभी अदृश्य नही होता ऐसा करते हैं। 26 इसलिए मैं हर कदम पर उद्देश्य को दृष्टि में रख कर लक्ष्य की ओर दौड़ता हूं। मैं जीतने के लिए लड़ता हूं। मैं केवल हवा मे मुक्के नही मारता या केवल खेल ही नहीं खेलता। 27 खिलाड़ी के समान मैं अपनी देह को दुःख पहुंचाता हूं, उस से बड़ी कठोरता का व्यवहार करता हूं, उसे सिखाता हूं कि वह वही करे जो उसे करना चाहिए, वह नही जो उसकी इच्छा हो। ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही अयोग्य ठहरूं।

10

1 "क्योंकि प्रिय भाइयो, हमें कभी नही भूलना चाहिए कि बहुत समय पहले जंगल में हमारे लोगो के साथ क्या हुआ। परमेश्वर ने एक बादल भेजकर उनकी अगुवाई की जो उनके आगे-आगे जाता था, और परमेश्वर ने उन सब को लाल सागर के जल मे से सुरक्षित पहुंचाया। 2 इसे उनका "बपतिस्मा" कहा जा सकता है—उन्होंने मूसा के पीछे चलने वाले होकर—उसी को अपना अगुवा मानकर अपने को उसे सौंपते हुए—सागर और बादल दोनों मे बपतिस्मा लिया। 3, 4 और एक आश्चर्यकर्म[2] के द्वारा परमेश्वर ने उन्हे उस जंगल मे खाने के लिए भोजन और पीने के लिए पानी दिया, उन्होंने वह जल पिया जो मसीह ने उन्हें दिया[3] वह उनके साथ वहा आत्मा मे नई शक्ति देनेवाली चट्टान के समान था। 5 तौभी इतना सब होते हुए उनमें मे बहुतेरों ने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी, और परमेश्वर ने उन्हें जंगल में नाश कर दिया। 6 इस पाठ मे हमें चेतावनी दी गई है कि हम उनके समान बुरी बातों की लालसा न करें, 7 न ही उनके समान मूर्तिपूजा करें (पवित्रशास्त्र में लिखा है, "लोग बने हुए बछड़े की पूजा मे लोग भोजन करने और पीने बैठे और नाचने के लिए उठे।) 8 हमारे लिए दूसरी शिक्षा है कि क्या हुआ जब उनमें से कुछ लोगों ने दूसरों की पत्नियों के साथ पाप किया, और एक ही दिन में 23,000 मर गए। 9 और परमेश्वर के धीरज को मत परखो—उन्होंने वैसा ही किया, और सांपों के काटने से मर गए। 10 और परमेश्वर और अपने प्रति उसके व्यवहार के विरुद्ध मत कुड़कुड़ाओ, जैसा उनमें से कुछ लोगों ने किया, क्योंकि उसी कारण परमेश्वर ने उन्हें नाश करने के लिए अपना दूत भेजा। 11 ये सब बातें उदाहरण के रूप में उनके साथ घटी—हमारी शिक्षा के लिए—हमारी चेतावनी के लिए कि हम उन बातो को न करें, वे बातें इसलिए लिखी गईं कि हम इन अन्तिम दिनों में, उनके विषय मे पढ सकें और उनसे शिक्षा ले सकें। 12 इसलिए सावधान रहो। यदि तुम सोच रहे हो, "मैं कभी ऐसा व्यवहार नहीं करूंगा"—तो यह तुम्हारे लिए एक चेतावनी है। क्योंकि तुम भी पाप मे गिर सकते हो। 13 परन्तु यह स्मरण रखो—जो गलत इच्छाएं तुम्हारे जीवन में आती हैं वे कोई नई और अलग प्रकार की नही हैं। तुमसे पहले बहुतेरे दूसरों ने भी ठीक उसी प्रकार की समस्याओं का सामना किया है। कोई परीक्षा तुम्हारे सहने से बाहर नही है। तुम परमेश्वर पर विश्वास रख सकते हो कि वह परीक्षा को तुम पर इतना अधिक प्रबल न होने देगा कि तुम उसका सामना न कर सको, क्योंकि उसने इसकी प्रतिज्ञा की है और वह अपने कहे अनुसार करेगा। वह

[1] मूलतः "मुरझाने वाले मुकुट," जो पौलुस के युग मे मूल ओलम्पिक दौड़ो में विजेताओं को दिया जाता था।
[2] यही आशय है। मूलतः "सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया और सबने एक ही आत्मिक जल पीया।" [3] मूलतः "क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे, जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था।"

तुम्हें दिखाएगा कि तुम परीक्षा की शक्ति से किस प्रकार बच सकते हो ताकि धीरज से उसमे से निकल सको।

14 इसलिए प्रिय मित्रो, हर प्रकार की मूर्तिपूजा से सावधानी से बचे रहो। 15 तुम बुद्धिमान लोग हो। अब देखो और आप ही परखो कि जो मैं कहने पर हूँ वह सच है कि नही। 16 जब हम प्रभु की मेज़ पर दाखरस के प्याले में से पीते समय प्रभु की आशिष मांगते हैं, तो क्या इसका यह अर्थ नही होता, कि जितने उसे पी रहे हैं वे सब मसीह के लोहू की आशिष में सहभागी हो रहे हैं ? और जब हम वहां एक साथ खाने के लिए रोटी तोड़ते हैं, तो प्रकट है कि हम मसीह की देह के लाभ मे सहभागी हो रहे हैं। 17 चाहे हम वहा कितने ही क्यों न हों, हम सब एक ही रोटी में से खाते हैं, यह प्रगट करते हुए कि हम सब मसीह की एक देह के एक अंग हैं। 18 और यहूदी लोग, सब जो बलिदानो को खाते हैं, इस काम के द्वारा एक हो जाते हैं। 19 मैं क्या कहने का प्रयत्न कर रहा हूं ? क्या मैं यह कह रहा हूँ कि मूर्तियां, जिनके निकट मूर्तिपूजक बलिदान लाते हैं, वास्तव में जीवित हैं और वास्तव मे ईश्वर हैं और इन बलिदानो का कुछ महत्व है ? नही, बिल्कुल नहीं। 20 जो मैं कह रहा हूं वह यह है कि जो लोग इन मूर्तियो को भोजन चढ़ाते हैं, वे दुष्टात्माओं को बलिदान चढाने मे सहभागी हो जाते हैं, निश्चय ही परमेश्वर को नही। और मैं नही चाहता कि तुम में से कोई इन मूर्तियों को चढाए गये भोजन मे मूर्तिपूजकों का साथ देता हुआ दुष्टात्माओं का साथी बने। 21 तुम प्रभु की मेज़ के प्याले मे से और शैतान की मेज़ पर के प्याले से नहीं पी सकते। तुम प्रभु की मेज और शैतान की मेज दोनो पर रोटी नही खा सकते। 22 क्या ? क्या तुम प्रभु को परख रहे हो कि वह तुम पर क्रोध करे ? क्या तुम उससे अधिक शक्तिशाली हो ?

23 तुम निश्चय ही यदि चाहो तो मूर्तियो को चढाया गया भोजन करने के लिए स्वतंत्र हो, ऐसा भोजन करना परमेश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध नही है, परन्तु इसका यह अर्थ नही कि तुम इस काम मे आगे बढो और भोजन कर लो। यह पूरी रीति से उचित हो सकता है, परन्तु मेरे लिए श्रेष्ठ और सहायक कार्य नही हो सकता। 24 केवल अपने ही लिए मत सोचो। दूसरे व्यक्ति के लिए और उसके भले के लिए भी सोचने का प्रयत्न करो। 25 तुम्हे यह करना चाहिए। बाजार मे बिकने वाला कोई भी मन चाहा मास लो। पूछो मत कि यह मूर्ति को चढ़ाया गया था या नही, कही ऐसा न हो कि उसके उत्तर से तुम्हारे विवेक को चोट पहुचे। 26 क्योकि संसार और उस मे की हर अच्छी वस्तु प्रभु की है और वह तुम्हारे आनन्द के लिए भी है। 27 यदि कोई व्यक्ति जो मसीही नही है तुम्हे भोजन पर बुलाए, तो जाओ, यदि तुम चाहो तो निमत्रण स्वीकार करो। जो कुछ भोजन के लिए रखा जाए उसे खाओ और उसके बारे मे कोई प्रश्न मत पूछो। तब तुम नहीं जानोगे कि वह मूर्तियो के आगे बलि चढाया हुआ है या नही, और उसे खाने के विषय मे विवेक की चोट का भय तुमको नही रहेगा। 28 परन्तु यदि कोई तुमको चेतावनी दे कि यह भोजन मूर्तियो पर चढाया हुआ है, तो जिसने बताया उस व्यक्ति के कारण और उसके विवेक के कारण मत खाओ। 29 इस स्थिति में तुम्हारी नही परन्तु उसकी भावना का अधिक महत्व है। परन्तु क्यों, तुम पूछ सकते हो, क्या मुझे दूसरो के विचारो द्वारा चलना और सीमा में बन्धना है ? 30 यदि मैं भोजन के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देकर उसका स्वाद ले सकता हूं, तो फिर क्यों दूसरे को सब कुछ बिगाड़ने दूं, केवल इसीलिए कि उसका विचार है कि मैं अनुचित कार्य कर रहा हू ? 31 अच्छा, मैं तुम्हे बताता हूं, क्यों। यह इसलिये क्योकि तुम्हे हर काम, अपना खाना और पीना तक परमेश्वर की महिमा के लिए करना चाहिए। 32 इसलिए

इकट्ठे होते हो, तो प्रभु भोज नहीं लेते। 21 परन्तु अपना ही भोजन करते हो। क्योंकि मुझे बताया गया है कि हर व्यक्ति जितना खा सके उतना जल्दी-जल्दी निगल जाता है और दूसरों के साथ बांटकर खाने के लिये नहीं ठहरता, इससे एक को तो भरपेट नहीं मिलता और वह भूखा रह जाता है जबकि दूसरा बहुत पी लेता है और मतवाला हो जाता है। 22 क्या यह वास्तव में सच है? क्या तुम अपना खाना पीना घर पर नहीं कर सकते, जिससे कलीसिया का अपमान और उनको लज्जित करने से बचे रहो जो गरीब हैं और कुछ भोजन नही ला सकते? क्या तुम चाहते हो मैं तुम्हारी प्रशंसा करूं? निश्चय ही मैं नही करता। 23 क्योंकि प्रभु ने अपनी मेज के विषय में आप ही यह कहा है, और मैंने उसे पहले ही तुम तक पहुंचा दिया है: कि जिस रात यहूदा ने उसका विश्वासघात किया, प्रभु यीशु ने रोटी ली। 24 और जब उन्होंने परमेश्वर को उसके लिए धन्यवाद दे दिया, तब उसे तोड़ा और अपने शिष्यों को देकर कहा, "इसे लो और खाओ।" यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए दी गई है*। मेरे स्मरण के लिए यही किया करो। 25 इसी प्रकार, उन्होंने भोजन के बाद दाखरस का प्याला यह कहते हुए लिया, "यह प्याला तुम्हारे और परमेश्वर के मध्य नया समझौता है जो मेरे लोहू के द्वारा स्थापित किया गया और ठहराया गया है। जब कभी तुम इसे पीओ तो मेरे स्मरण के लिए ऐसा किया करो।" 26 क्योंकि जब कभी तुम वह रोटी खाते और इस प्याले मे से पीते हो, तो तुम प्रभु की मृत्यु के सन्देश को फिर से बताते हो, कि वह तुम्हारे लिए मरा। उसके फिर से आने तक ऐसा ही करते रहो। 27 इसलिए यदि कोई अयोग्य रीति से रोटी मे से खाए और प्रभु के इस प्याले में से पीये तो वह प्रभु की देह और लोहू के विरुद्ध पाप करने का दोषी होगा। 28 इसीलिए व्यक्ति को रोटी खाने और प्याले में से पीने के पहले सावधानी से अपनी जांच कर लेनी चाहिए। 29 क्योंकि यदि वह मसीह की देह और उसके अर्थ का विचार किये बिना, अयोग्य रीति से रोटी खाए और प्याले मे से पीये, तो वह अपने आप पर परमेश्वर के न्याय को खा पी रहा है, क्योंकि वह मसीह की मृत्यु के साथ तुच्छ व्यवहार कर रहा है। 30 इसी लिये तुम मे से बहुतेरे निर्बल और बीमार हैं, और कुछ तो मर भी गये। 31 परन्तु यदि तुम खाने से पहले सावधानी के साथ अपनी जांच कर लो तो तुम्हें न्याय का भागी हो कर दण्ड पाने की आवश्यकता नही रहेगी। 32 तो भी जब प्रभु के द्वारा हमारा न्याय होता है और हमे दण्ड मिलता है, तो यह इसलिये होता है कि हम शेष संसार के साथ दण्ड न पाएं। 33 इसलिए प्रिय भाइयो जब तुम प्रभु भोज के लिए इकट्ठे होते हो—तो एक दूसरे के लिए ठहरो, 34 यदि कोई वास्तव मे भूखा हो तो उसे घर पर खाना चाहिए ताकि उसे अपने आप पर दण्ड न लाना पड़े जब तुम इकट्ठे हो। दूसरी बातो के विषय में आने के बाद मैं तुमसे बातें करूंगा।

12 1 और अब, भाइयो, मे विशेष योग्यताओं के विषय मे लिखना चाहता हू जिन्हें पवित्र आत्मा तुम मे से हर एक को देता है, क्योंकि मैं चाहता हूं कि उनके बारे मे तुम गलत न समझो। 2 तुम्हें स्मरण होगा कि तुम्हारे मसीही बनने से पहले तुम एक के बाद एक मूर्तियों के सामने घूमते फिरते थे, जिन मे से कोई भी एक शब्द तक नही बोल सकती थी। 3 परन्तु अब तुम उन लोगों मे मिल रहे हो जो परमेश्वर के आत्मा की ओर से सन्देश देने का दावा करते हैं। तुम कैसे जान सकते हो कि क्या वे वास्तव मे परमेश्वर से प्रेरित हैं या धोखा देने वाले हैं? जांच यह है: परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ के द्वारा बोलने वाला कोई भी व्यक्ति मसीह को श्राप नही दे सकता, और

* कुछ प्राचीन हस्तलेखों मे लिखा है, "तोड़ी गई।"

किसी के लिये, चाहे वह यहूदी हो या अन्यजाति या मसीही, ठोकर का कारण न बनो। 33 मैं भी इसी रीति को अपनाता हूं। मैं अपने हर काम मे सबको प्रसन्न करने का प्रयत्न करता हूं, अपनी इच्छानुसार और अपने ही हित के लिए नही, परन्तु दूसरो के हित के लिये ऐसा करता हूं ताकि वे उद्धार पाए।

11 1 और तुम्हे मेरे आदर्श पर चलना चाहिए, जैसे मैं मसीह के आदर्श पर चलता हूँ। 2 प्रिय भाइयो, मैं बहुत प्रसन्न हू कि जो शिक्षाएँ मैंने तुम्हे दी, तुम उन सबको स्मरण रखते हो और उनके अनुसार चलते हो। 3 परन्तु मैं तुम्हे एक बात का स्मरण दिलाना चाहता हूँ: कि पत्नी अपने पति के प्रति उत्तरदायी है, उसका पति मसीह के प्रति उत्तरदायी है, और मसीह परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी है। 4 इसी कारण, यदि कोई पुरुष प्रार्थना करते या प्रचार करते समय अपना सर ढाकता है, तो वह मसीह का अपमान करता है। 5 और यही कारण है कि जब कोई स्त्री बिना अपना सिर ढाँके सबके सामने प्रार्थना करती या भविष्यवाणी करती है वह अपने पति का अपमान करती है (क्योंकि उसका सिर ढाकना अपने पति के अधीन रहने का चिन्ह है[1]।) 6 हां, यदि वह अपना सिर ढाँकने से इन्कार करे, तो उसे अपने बाल काट लेने चाहिए। और यदि स्त्री के लिये अपना सिर मुडाना लज्जा की बात हो, तो उसे सिर ढाकना चाहिए। 7 परन्तु पुरुष को (आराधना करते समय) अपने सिर पर कुछ नही पहिनना चाहिए क्योंकि उसका सिर ढाकना मनुष्यो[2] के अधीन होने का चिन्ह है[2])। पुरुष परमेश्वर की महिमा और उसके स्वरूप मे बना हुआ है, और पुरुष की महिमा स्त्री है। 8 पहला पुरुष स्त्री से नही हुआ, परन्तु पहली स्त्री पुरुष से हुई[3]। 9 और पहला पुरुष आदम, हव्वा के लाभ के लिए नही सृजा गया, परन्तु हव्वा आदम के लिए सृजी गई। 10 इसलिए स्त्री को उस चिन्ह के रूप मे अपना सिर ढाकना चाहिए कि वह पुरुष के अधीन है[4] जो स्वर्गदूतो के ध्यान देने और आनन्दित होने का विषय है[5]। 11 परन्तु स्मरण रखो कि परमेश्वर के उपाय मे पुरुष और स्त्री को एक दूसरे की आवश्यकता है। 12 क्योंकि यद्यपि पहली स्त्री पुरुष से निकली, तो भी तब से सब पुरुष स्त्रियों से जन्मे हैं, और दोनों स्त्री-पुरुष अपने रचने वाले परमेश्वर से हैं। 13 तुम स्वयं भी इसके विषय मे वास्तव में क्या सोचते हो? क्या बिना सिर ढाके लोगों के सामने स्त्री को प्रार्थना करना उचित है? 14, 15 क्या हमारी सहज बुद्धि भी हमे यह नही सिखाती कि स्त्रियों के सिर ढंकने चाहिए। क्योंकि स्त्रियो को अपने लम्बे बालो पर गर्व होता है, जबकि लम्बे बालो वाले पुरुष को लज्जा आ जाती है। 16 परन्तु यदि कोई इस पर वाद-विवाद करना चाहे, तो मैं इतना ही कह सकता हूँ कि हम इसको छोड और कभी कोई शिक्षा नही देते—कि कलीसिया मे लोगों के सामने भविष्यद्वाणी करते और प्रार्थना करते समय स्त्री को सिर ढाकना चाहिए, और सब कलीसियाए इस विषय मे ऐसा ही सोचती है।

17 अगली बात जो मैं तुमको बताना चाहता हू उसमे मैं तुमसे सहमत नही हू। क्योंकि ऐसा लगता है कि जब तुम प्रभु भोज की सभाओं मे इकट्ठे होते हो तो भलाई से बढकर बुराई होती है। 18 सब लोग मुझे इन सभाओ मे होने वाले वाद-विवाद के विषय मे, और तुम्हारे बीच बढती हुई फूट के बारे मे बताते रहते है, और मुझे कुछ-कुछ विश्वास होता है। 19 परन्तु मुझे तो लगता है कि तुम इसे *आवश्यक समझते हो ताकि तुम सदा* उचित बात पर दृढ रहते हो, ताकि तुम प्रसिद्ध हो जाओ। 20 जब तुम खाने के लिए

[1] पद 7, 10 से यही आशय निकलता है। [2] यही आशय है। [3] उत्पत्ति 2 - 21, 22। [4] मूलत "इसी कारण स्त्री को उचित है कि अधिकार अपने सिर पर रखे।" [5] मूलत "स्वर्गदूतों के कारण।"

इकट्ठे होते हो, तो प्रभु भोज नहीं लेते। 21 परन्तु अपना ही भोजन करते हो। क्योंकि मुझे बताया गया है कि हर व्यक्ति जितना खा सके उतना जल्दी-जल्दी निगल जाता है और दूसरों के साथ बांटकर खाने के लिये नही ठहरता, इससे एक को तो भरपेट नही मिलता और वह भूखा रह जाता है जबकि दूसरा बहुत पी लेता है और मतवाला हो जाता है। 22 क्या यह वास्तव में सच है? क्या तुम अपना खाना पीना घर पर नहीं कर सकते, जिससे कलीसिया का अपमान और उनको लज्जित करने से बचे रहो जो गरीब हैं और कुछ भोजन नही ला सकते? क्या तुम चाहते हो मैं तुम्हारी प्रशंसा करूं? निश्चय ही मैं नहीं करता। 23 क्योंकि प्रभु ने अपनी मेज के विषय में आप ही यह कहा है, और मैंने उसे पहले ही तुम तक पहुंचा दिया है: कि जिस रात यहूदा ने उसका विश्वासघात किया, प्रभु यीशु ने रोटी ली। 24 और जब उन्होंने परमेश्वर को उसके लिए धन्यवाद दे दिया, तब उसे तोड़ा और अपने शिष्यों को देकर कहा, "इसे लो और खाओ।" यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए दी गई है*। मेरे स्मरण के लिए यही किया करो। 25 इसी प्रकार, उन्होंने भोजन के बाद दाखरस का प्याला यह कहते हुए लिया, "यह प्याला तुम्हारे और परमेश्वर के मध्य नया समझौता है जो मेरे लोहू के द्वारा स्थापित किया गया और ठहराया गया है। जब कभी तुम इसे पीओ तो मेरे स्मरण के लिए ऐसा किया करो।" 26 क्योंकि जब कभी तुम वह रोटी खाते और इस प्याले में से पीते हो, तो तुम प्रभु की मृत्यु के सन्देश को फिर से बताते हो, कि वह तुम्हारे लिए मरा। उसके फिर से आने तक ऐसा ही करते रहो। 27 इसलिए यदि कोई अयोग्य रीति से रोटी में से खाए और प्रभु के इस प्याले में से पीये तो वह प्रभु की देह और लोहू के विरुद्ध पाप करने का दोषी होगा। 28 इसीलिए व्यक्ति को रोटी खाने और प्याले में से पीने के पहले सावधानी से अपनी जांच कर लेनी चाहिए। 29 क्योंकि यदि वह मसीह की देह और उसके अर्थ का विचार किये बिना, अयोग्य रीति से रोटी खाए और प्याले मे से पीये, तो वह अपने आप पर परमेश्वर के न्याय को खा पी रहा है, क्योंकि वह मसीह की मृत्यु के साथ तुच्छ व्यवहार कर रहा है। 30 इसी लिये तुम में से बहुतेरे निर्बल और बीमार हैं, और कुछ तो मर भी गये। 31 परन्तु यदि तुम खाने से पहले सावधानी के साथ अपनी जांच कर लो तो तुम्हें न्याय का भागी होने कर दण्ड पाने की आवश्यकता नहीं रहेगी। 32 तो भी जब प्रभु के द्वारा हमारा न्याय होता है और हमे दण्ड मिलता है, तो यह इसलिये होता है कि हम शेष संसार के साथ दण्ड न पाएं। 33 इसलिए प्रिय भाइयो जब तुम प्रभु भोज के लिए इकट्ठे होते हो—तो एक दूसरे के लिए ठहरो, 34 यदि कोई वास्तव मे भूखा हो तो उसे घर पर खाना चाहिए ताकि उसे अपने आप पर दण्ड न लाना पड़े जब तुम इकट्ठे हो। दूसरी बातों के विषय में आने के बाद मैं तुमसे बातें करूंगा।

12 1 और अब, भाइयो, मे विशेष योग्यताओं के विषय मे लिखना चाहता हूं जिन्हें पवित्र आत्मा तुम मे से हर एक को देता है, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि उनके बारे में तुम गलत न समझो। 2 तुम्हे स्मरण होगा कि तुम्हारे मसीही बनने से पहले तुम एक के बाद एक मूर्तियों के सामने घूमते फिरते थे, जिन मे से कोई भी एक शब्द तक नही बोल सकती थी। 3 परन्तु अब तुम उन लोगो मे मिल रहे हो जो परमेश्वर के आत्मा की ओर से सन्देश देने का दावा करते है। तुम कैसे जान सकते हो कि क्या वे वास्तव मे परमेश्वर से प्रेरित हैं या धोखा देने वाले है? जाँच यह है: परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ के द्वारा बोलने वाला कोई भी व्यक्ति मसीह को स्राप नही दे सकता, और

* कुछ प्राचीन हस्तलेखों में लिखा है, "तोड़ी गई।"

जब तक पवित्र आत्मा उसकी सहायता न करे तब तक कोई नही कह सकता, "यीशु ही प्रभु है"

4 अब परमेश्वर हमे कई प्रकार की विशेष योग्यताएँ देता है, परन्तु एक ही पवित्र आत्मा उन सब का स्रोत है। 5 परमेश्वर की सेवा कई प्रकार की है, परन्तु हम एक ही प्रभु की सेवा करते हैं। 6 परमेश्वर कई प्रकार से हमारे जीवनो मे कार्य करता है, परन्तु परमेश्वर एक ही है जो हम सबमे और हम सबके द्वारा जो उसके हैं, कार्य करता है। 7 पवित्र आत्मा हममे से हरएक के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ को प्रगट करता है ताकि पूरी कलीसिया की सहायता हो। 8 एक व्यक्ति को आत्मा बुद्धिमानी की सलाह देने की योग्यता देता है, कोई दूसरा व्यक्ति पढने और सिखाने का कार्य अच्छी तरह कर सकता है, और यह भी उसी आत्मा के द्वारा उसका वरदान है। 9 वह लोगो को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ देता है, और दूसरों को भविष्यद्वाणी और प्रचार करने की शक्ति। वह किसी और को यह जानने की शक्ति देता है कि जो परमेश्वर का सन्देश देने का दावा करते हैं उनके द्वारा क्या दुष्ट आत्माएं बोल रही हैं—10 या सच मे परमेश्वर का आत्मा बोल रहा है। फिर कोई व्यक्ति उन भाषाओ मे बातें कर सकता है जिन्हें उसने कभी नही सीखा, और दूसरो को जो आप भी उन भाषाओ को नही जानते, यह समझने की शक्ति दी जाती है कि वह क्या कह रहा है। 11 यह वही पवित्र आत्मा है जो इन सब वरदानो और शक्तियो को देता है, वही यह निर्णय करता है कि हममे से हर एक को क्या मिलना चाहिए।

12 हमारी देह के बहुत से अंग हैं, परन्तु जब उन सब अगों को एक साथ रखा जाए तो वे सब मिल कर एक ही देह बनाते हैं। ऐसा ही मसीह की "देह" के साथ भी होना है। 13 हम मे से हर एक मसीह की देह का एक अग है। हममे से कई यहूदी हैं, कई अन्यजाति हैं, कई दास हैं और कई स्वतंत्र हैं। परन्तु पवित्र आत्मा ने हम सब को एक देह मे एक साथ जोडा है। हमने एक आत्मा के द्वारा मसीह की देह मे होने के लिए बपतिस्मा लिया है, और हम सबको वही एक ही पवित्र आत्मा दिया गया है। 14 हा, देह के केवल एक नही कई अग हैं। 15 यदि पाव कहे, "मैं हाथ नही हूँ इसलिये देह का अंग नही हूँ," तो क्या इसलिये वह देह का अंग नही। 16 और तुम क्या सोचोगे यदि कान को ऐसा कहते सुनो, "मैं देह का अग नही हू क्योकि मैं केवल कान हूँ आंख नही?" क्या इससे वह देह का अंग नही रह जाएगा? 17 मान लो सारी देह आख होती—तो तुम सुनते कैसे? या यदि तुम्हारी सारी देह केवल एक बड़ा कान होती, तो फिर तुम सूघते कैसे? 18 परन्तु परमेश्वर ने हमे इस प्रकार का नही बनाया। उसने हमारी देह के लिए कई अंग बनाए हैं और हर एक को उसी स्थान पर रखा है जहा उसकी इच्छा है। 19 देह कितनी विचित्र होती यदि उसका केवल एक ही अंग होता। 20 इसलिए उसने कई अग बनाए हैं, परन्तु फिर भी देह केवल एक ही है। 21 आख कभी हाथ से नही कह सकती, "मुझे तुम्हारी आवश्यकता नही।" सिर, पैर से नही कह सकता, "मुझे तुम्हारी आवश्यकता नही।" 22 और कुछ अग जो सबसे निर्बल और सबसे कम महत्व के लगते हैं वे ही वास्तव मे सबसे अधिक आवश्यक हैं। 23 हा, हमे उन कुछ अगो के लिये विशेष हर्ष है जो कुछ विचित्र से लगते हैं। और हम उन अगो को जिन्हें नही दिखाना चाहिए सावधानी से दूसरों की दृष्टि से बचा कर रखते हैं। 24 जबकि हा जिन अंगो को दिखा सकते हैं—उनको इस विशेष सावधानी की आवश्यकता नही पडती। परमेश्वर ने इस प्रकार से देह को जोडा है कि उन अगो को और अधिक आदर और देख भाल मिले जो कम आवश्यक लगते हैं। 25 इसमे सब अंगो को प्रसन्नता होती है, जिसमे वे आपस मे एक दूसरे

की वैसी ही चिन्ता करते हैं जैसे अपने आप की। 26 एक अंग दुःखित होता है, तो उसके साथ सब अंग दुःखित होते हैं, यदि एक अंग का आदर होता है, तो सब अंग प्रसन्न होते हैं। 27 मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह है: तुम सब मिलकर मसीह की एक देह हो और तुममें से हरएक उसका अलग और आवश्यक अंग है। 28 अपनी कलीसिया में जो उसकी देह है उसने जिन अंगों को रखा है उनमें से कुछ इस प्रकार हैं: प्रेरित, भविष्यद्वक्ता—जो परमेश्वर के वचन का प्रचार करते हैं, शिक्षक, आश्चर्यकर्म करने वाले, चंगाई का वरदान रखने वाले, दूसरों की सहायता कर सकने वाले, दूसरो से एक साथ काम करा सकने वाले, उन भाषाओं में बातें करने वाले जिन्हे उन्होंने कभी न सीखा हो। 29 क्या हर व्यक्ति प्रेरित है? बिल्कुल नही। क्या सब प्रचारक हैं? नही। क्या सब शिक्षक हैं? क्या हरएक को आश्चर्यकर्म करने की शक्ति प्राप्त है? 30 क्या हर व्यक्ति बीमार को चंगा कर सकता है? कदापि नही। क्या परमेश्वर हम सब को उन भाषाओं मे बातें करने की योग्यता देता है जिन्हें हमने कभी नही सीखा? जिनको दूसरी भाषाएं बोलने का वरदान प्राप्त है क्या उनको कोई भी व्यक्ति समझ सकता है और उनका अनुवाद कर सकता है? 31 नहीं परन्तु इन सब वरदानों से भी अधिक महत्व का वरदान पाने का भरसक प्रयत्न करो। पहले, मुझे उस दूसरे वरदान के विषय बताने दो, जो उन सबमें श्रेष्ठ है।

13 1 यदि मुझे बिना सीखे दूसरी भाषाओ के बोलने का वरदान प्राप्त होता और मैं स्वर्ग और संसार की हर बोली बोल सकता, परन्तु दूसरो से प्रेम न रखता, तो मैं केवल शोर मचाने वाली ध्वनि होता। 2 यदि मुझे भविष्यवाणी करने का वरदान प्राप्त होता और मैं सब जानता कि भविष्य मे क्या होने जा रहा है, हर बात के विषय मे सब कुछ जानता, परन्तु दूसरों से प्रेम नहीं रखता तो इससे क्या भला होता? चाहे मुझे विश्वास का वरदान प्राप्त होता जिससे मैं पहाड़ से कह कर उसे हटा सकता, तो भी बिना प्रेम के मैं किसी काम का न होता। 3 यदि जितना मेरे पास है सब गरीबों को दे देता, और यदि मुझे सुसमाचार सुनाने के कारण जीवित जला दिया जाता परन्तु दूसरों से प्रेम न रखता तो इससे मुझे कुछ लाभ न होता। मैं दूसरो से प्रेम नही रखता, तो किसी भी लाभ का न होता। 4 प्रेम अत्यन्त धीरजवन्त और दयालु है, कभी जलन या ईर्ष्या नही करता, कभी अपनी बडाई नही करता, कभी घमण्ड नही करता, 5 कभी फूलता नही, स्वार्थी नही, प्रेम मन मानी नही करता वह शीघ्र ही क्रोध नही करता, बुरा नही मानता। वह मन मे बैर नही रखता और जब दूसरे उससे बुरा करें तो ध्यान ही नही देता। 6 वह अन्याय पर अभी आनन्दित नही होता, परन्तु सत्य के जीतने से आनन्दित होता है। 7 यदि तुम किसी से प्रेम रखो तो उसके लिये विश्वासयोग्य रहोगे चाहे कितना ही मूल्य क्यों न चुकाना पड़े। तुम सदा उस पर विश्वास रखोगे, हमेशा उसमें अच्छे से अच्छे काम की आशा रखोगे, और सदा उसके बचाव में खड़े रहोगे। 8 परमेश्वर की ओर से प्राप्त सब विशेष वरदान और सामर्थ किसी दिन समाप्त हो जाएंगे, परन्तु प्रेम सदा काल तक बना रहेगा। किसी दिन भविष्यद्वाणी और अनजानी भाषाओ मे बोलना, और विशेष ज्ञान ये सब वरदान मिट जाएंगे। 9 विशेष वरदानो के होते हुए भी हमारा प्रचार निर्बल है। 10 परन्तु जब हम सब सिद्ध और पूर्ण बनाये जा चुकेंगे, तब इन अपूर्ण विशेष वरदानो की आवश्यकता नही रह जायेगी। 11 यह इस प्रकार है: जब मैं बच्चा था तो मैं बच्चे के समान बोलता और सोचता विचारता था। परन्तु जब मैं बडा हुआ तो मेरे विचार कही अधिक बढ गए, और अब मैंने बच्चो की सी बातें छोड दी हैं। 12 इसी प्रकार से, अभी परमेश्वर के विषय मे हम बहुत थोडा देख और समझ सकते हैं,

मानों हम धुधले दर्पण मे उसके रूप को झाक रहे हो, परन्तु किसी दिन हम उसको उसकी पूर्णता मे, आमने-सामने देखेंगे। अभी जितना मैं जानता हू वह अस्पष्ट और धुधला है, परन्तु तब मैं सब कुछ उतनी ही स्पष्टता से देखूंगा, जितनी स्पष्ट रीति से परमेश्वर मेरे हृदय को देखता है। 13 तीन बातें बनी रहेंगी—विश्वास, आशा और प्रेम—और इनमे सबमे महान प्रेम है।

14 1 प्रेम तुम्हारा सबसे बडा उद्देश्य हो, तौभी उन विशेष योग्यताओं के लिये भी विनती करो जिन्हे पवित्र आत्मा देता है, और विशेषकर भविष्यद्वाणी के वरदान, परमेश्वर के सदेशों को प्रचार करने की योग्यता। 2 परन्तु यदि तुम्हारा वरदान अन्य-अन्य भाषाओ मे बोलने का हो, उन भाषाओं को जिन्हें तुमने कभी नही सीखा, तो तुम परमेश्वर से बातें करते होगे, दूसरो से नही, क्योंकि वे तुम्हारी बातें नही समझ सकेंगे। तुम आत्मा की सामर्थ मे बातें करते होगे, परन्तु वह सब गुप्त होगा 3 परन्तु जो परमेश्वर के सदेशों का प्रचार कर, भविष्यद्वाणी करता है, वह प्रभु मे बढने में दूसरो की सहायता कर रहा है, उनको उत्साह और शान्ति दिला रहा है। 4 इस प्रकार जो व्यक्ति अन्य-अन्य भाषाओ मे बोलता है वह आत्मिक रूप से बढने में अपनी ही सहायता करता है, परन्तु जो परमेश्वर की ओर से सदेशों का प्रचार कर, भविष्यद्वाणी करता है, वह पवित्रता और आनन्द मे बढने मे पूरी कलीसिया की सहायता करता है। 5 मैं चाहता हूं तुम सबको अन्य-अन्य भाषाओ मे बोलने का वरदान प्राप्त होता परन्तु, उससे अधिक, मैं चाहता हू तुम सब परमेश्वर की ओर से सदेशों का प्रचार, भविष्यद्वाणी कर सकते, क्योंकि यदि अन्य-अन्य भाषा बोलने वाला कलीसिया कि उन्नति के लिए अनुवाद न कर सके तो भविष्यद्वाणी अर्थात परमेश्वर के सदेशों को सुनाने वाला अन्य-अन्य भाषा बोलने वाले से बढकर है। 6 प्रिय मित्रो, यदि मैं भी तुम्हारे पास उन भाषाओं मे बातें करता आऊं जिन्हे तुम नही समझते, तो उसमे तुम्हारी सहायता कैसे होगी? परन्तु यदि मैं स्पष्ट रीति से बताऊं जो परमेश्वर ने मुझ पर प्रगट किया है, और जो मैं जानता हूं कि क्या होने वाला है, और परमेश्वर के वचन के महान सत्य तुम्हे बताऊं—तो यही तुम्हारी आवश्यकता है, इसी से तुम्हे सहायता पहुचेगी। 7 गाने के बाजे—जैसे बासुरी या बीन, अनजानी भाषाओ मे बोलने के बदले स्पष्ट, सरल भाषा मे बोलने की आवश्यकता के उदाहरण हैं। क्योकि कोई पहचानेगा नही कि बासुरी मे कौन सी राग बज रही है जब तक हर स्वर स्पष्ट रीति से न बजे। 8 और यदि सेना का बिगुल ठीक स्वर मे न बजे तो सैनिक कैसे जानेंगे कि उन्हे लडाई पर बुलाया जा रहा है? 9 इसी प्रकार, यदि तुम ऐसी भाषा मे दूसरे व्यक्ति से बातें करो जिसे वह नही समझता, तो वह तुम्हारा अर्थ कैसे समझेगा? तुम तो मानो हवा से बातें करने वाले जैसे ठहरोगे। 10 मैं सोचता हू कि संसार मे हजारो दूसरी भाषाए हैं और वे सब उन लोगो की दृष्टि मे श्रेष्ठ हैं जो उन्हे समझते हैं. 11 परन्तु मेरे लिए उनका कोई अर्थ नही है। उनमें से किसी भी एक भाषा मे मुझसे बातें करने वाला व्यक्ति मेरे लिए अजनबी ठहरेगा और मैं उसके लिए अजनबी ठहरूंगा। 12 इसलिए कि तुम पवित्र आत्मा की ओर से विशेष वरदान पाने के लिए इतने उत्सुक हो, उससे उन वरदानो के लिए विनती करो जो सबमे श्रेष्ठ हो, उनके लिए जिनसे पूरी कलीसिया को वास्तव मे सहायता पहुचे। 13 यदि किसी को अन्य भाषाओ में बोलने का वरदान मिले, तो उसे इसके लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए कि जो कुछ उसने कहा है उसे जानने का वरदान भी मिले, ताकि बाद मे वह लोगों को स्पष्ट रीति मे बता सके। 14 क्योकि यदि मैं उस भाषा मे प्रार्थना करूं जिसे मैं नही समझता, तो

मेरी आत्मा तो प्रार्थना कर रही है, परन्तु मैं नहीं जानता कि मैं क्या कह रहा हूं। 15 तो फिर, मैं क्या करूं ? मैं दोनों करूंगा। मैं अन्य भाषाओं में प्रार्थना करूंगा और अपनी साधारण भाषा मे भी जिसे सब समझते हैं। मैं अन्य भाषाओं में गाऊंगा और अपनी साधारण भाषा में भी, ताकि जो स्तुति मैं कर रहा हूं उसे समझ सकूं, 16 क्योंकि यदि तुम दूसरी भाषा में बोलकर, अकेले आत्मा से ही परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करो, तो वे जो तुम्हारी नहीं समझते तुम्हारे साथ कैसे परमेश्वर की स्तुति करेंगे ? वे धन्यवाद देने में तुम्हारे साथ कैसे मिल सकते हैं जब वे जानते नही कि तुम क्या कह रहे हो ? 17 कोई सन्देह नहीं कि तुम बहुत अच्छी रीति से धन्यवाद देते होगे, परन्तु दूसरे उपस्थित लोगो को लाभ नही पहुंचेगा। 18 मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं कि मैं तुम सबसे बढ़कर गुप्त[1] रीति से अन्य भाषाओ में बोलता हूं। 19 परन्तु सबके साथ आराधना मे मैं अनजान भाषा में "अन्य भाषा मे बोलते हुए" दस हज़ार शब्द बोलने से बढ़कर चाहूंगा कि पांच ही शब्द बोलूं जिसे लोग समझ सकें और जिसके द्वारा उन्हें सहायता पहुंचे।

20 प्रिय भाइयो, इन बातों की समझ में बालक जैसे न बनो, बुराई की योजना मे निर्दोष बालक बनो, परन्तु इस प्रकार की बातो के समझने मे ज्ञानी पुरुष बनो। 21 प्राचीन पवित्र शास्त्र में हमे बताया गया है कि परमेश्वर दूसरे देशों से लोगों को भेजेगा कि वे उसके लोगों से विदेशी भाषाओं मे बातें करें, परन्तु इस पर भी वह नही सुनेंगे। 22 इस प्रकार तुम जान सकते हो कि "अन्य भाषाओं मे बोल" सकने के योग्य होना परमेश्वर की संतानो के लिए उसकी शक्ति का चिन्ह नहीं है, परन्तु उद्धार न पाए हुओ के लिए चिन्ह है। तौभी, भविष्यद्वाणी (परमेश्वर के गूढ सत्यो का प्रचार) ही मसीहियो की आवश्यकता है, और अविश्वासी अब तक उसके लिए तैयार नहीं है। 23 इसी प्रकार, यदि कोई उद्धार न पाया हुआ व्यक्ति, या कोई और जिसे ये वरदान प्राप्त नही, कलीसिया में आए और तुम सबको दूसरी भाषाओं मे बातें करते सुने तो बहुत सम्भव है कि वह तुम्हें पागल समझे। 24 परन्तु यदि तुम परमेश्वर के वचन का प्रचार और भविष्यद्वाणी करो, (यद्यपि ऐसा प्रचार अधिकतर विश्वासियों के लिए है) और कोई उद्धार न पाया हुआ व्यक्ति या नया मसीही जो इन बातों को न समझता हो, तो ये सब उपदेश उसे इस बात का निश्चय दिलाएंगे कि वह पापी है, और जो कुछ वह सुने उससे उसका विवेक उसे दोषी ठहराएगा। 25 सुनते ही, उसके गुप्त विचार खुल जाएंगे और वह यह कहते हुए घुटनों पर गिरकर परमेश्वर की आराधना करेगा, कि परमेश्वर वास्तव मे तुम्हारे मध्य मे है। 26 अब, मेरे भाइयो, जो कुछ मैं कह रहा हूं उसे दोहरा लें। जब तुम एक साथ इकट्ठे हो तो कोई गाएगा, दूसरा सिखाएगा, या कोई विशेष सूचना देगा जो परमेश्वर ने उसे दी है, या अनजानी भाषा मे बोलेगा, या बताएगा कि अन्य भाषा मे बातें करने वाला क्या कह रहा है, परन्तु जो कुछ किया जाये वह सबके लिए लाभदायक हो और सबको प्रभु में दृढ करे। 27 अनजानी भाषा में दो या तीन से अधिक न बोलें, और उन्हें भी एक-एक करके बोलना चाहिए, और किसी दूसरे को उनकी कही जाने वाली बातों का अनुवाद करने के लिए तैयार रहना चाहिए। 28 परन्तु यदि कोई उपस्थित न हो जो अनुवाद कर सके, तो उन्हें ज़ोर से नही बोलना चाहिए। उन्हें सबके सामने नही परन्तु अपने आप से और परमेश्वर से अनजानी भाषा में चुपचाप बातें करना चाहिए। 29,30 दो या तीन, यदि उन्हें वरदान प्राप्त हो, तो एक एक करके भविष्यवाणी करें जबकि दूसरे सुनें। परन्तु यदि, जब कोई भविष्यद्वाणी कर रहा हो और दूसरे को

[1] यही आशय है। पद 19 और 28 पढ़िये।

परमेश्वर से सन्देश या विचार मिले, तो जो बोल रहा है वह चुप हो जाए। 31 इस प्रकार से जितनों को भविष्यद्वाणी करने का वरदान प्राप्त है वे सब एक के बाद एक बोल सकते हैं, और सब सीखेंगे और उत्साहित होंगे और सहायता पाएंगे। 32 स्मरण रखो कि जिस व्यक्ति को परमेश्वर से सन्देश मिला है उसमें यह शक्ति है कि अपने को रोके और अपनी बारी[2] तक रुका रहे। 33 परमेश्वर गडबडी और अव्यवस्था नही चाहता। वह शान्ति चाहता है और दूसरी सब कलीसियाओ मे हम यही पाते हैं।

34 कलीसिया की सभाओं में स्त्रियां चुपचाप रहें। उन्हें वाद-विवाद मे भाग नही लेना है क्योकि वे पुरुषो[3] के आधीन हैं जैसा पवित्रशास्त्र मे भी लिखा है। 35 यदि कोई प्रश्न पूछना हो, तो वे घर पर अपने अपने पति से पूछें, क्योकि कलीसिया की सभाओं मे स्त्रियो के लिए अपने विचार प्रकट करना ठीक नही है। 36 तुम मानते नही? और क्या तुम सोचते हो कि परमेश्वर की इच्छा का ज्ञान तुम कुरिन्थियों के साथ आरम्भ और अन्त होता है? तुम भूल कर रहे हो।

37 तुम जो पवित्र आत्मा से भविष्यद्वाणी का वरदान या कोई भी दूसरी विशेष योग्यता प्राप्त करने का दावा करते हो तुम्हें ही सबसे पहले यह जानने वाला होना चाहिए कि जो मैं कह रहा हू वह प्रभु की ही आज्ञा है। 38 परन्तु तब भी यदि कोई न माने तो फिर हम उसे उसकी अज्ञानता[4] पर छोड देंगे।

39 इसलिए मेरे साथी विश्वासियो, भविष्यद्वक्ता बनने की इच्छा रखो ताकि तुम परमेश्वर के सन्देश का प्रचार स्पष्ट रीति से कर सको, कभी न कहो कि, "अन्य भाषाओं मे बोलना गलत है, 40 तौभी निश्चय जानो कि सब कुछ उचित रीति से क्रमानुसार अच्छी रीति से किया जाये।"

15 1 भाइयो, अब मैं तुम्हे याद दिला दू कि सुसमाचार वास्तव मे क्या है, क्योंकि यह बदला नही है—यह वही शुभ सन्देश है जिसका प्रचार मैंने तुम में किया। तुमने तब उसे ग्रहण किया और आज भी करते हो। क्योंकि तुम्हारा विश्वास इसी अद्भुत संदेश पर आधारित है, 2 और यही शुभ समाचार है जो तुम्हारा उद्धार करता है यदि तुम अब भी दृढ़ता से उस पर विश्वास करते हो, हा यदि तुमने उस पर वास्तव में विश्वास किया ही न हो तो बात दूसरी है। 3 मैंने पहले ही तुम तक वह पहुंचा दिया जो मुझे बताया गया था कि पवित्रशास्त्र के अनुसार मसीह हमारे पापों के लिए मरा। 4 और वह गाडा गया, और तीन दिन बाद वह कब्र मे से जी उठा जैसा भविष्यद्वक्ताओ ने पहले से कहा था। 5 उसको पतरस और फिर बाद मे—शेष बारहो[1] ने देखा। 6 उसके बाद वह एक ही समय मे पाच सौ से अधिक मसीही भाइयो को दिखाई दिया, जिनमे से अधिकांश आज भी जीवित हैं, यद्यपि कुछ लोग अब मर गये हैं। 7 तब याकूब ने और बाद मे सब प्रेरितो ने उसको देखा। 8 सबसे अन्त में मैंने भी उसको देखा, मानो मेरा जन्म इसके लिए बहुत देर से हुआ हो। 9 क्योकि मैं सब प्रेरितों मे सबसे कम योग्य हूं—और जिस प्रकार से मैंने परमेश्वर को कलीसिया से व्यवहार किया मुझे प्रेरित तक नही कहलाया जाना चाहिए। 10 परन्तु मैं अब जो कुछ हू वह सब इसलिए कि

[2] मूलत "भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा भविष्यद्वक्ताओ के वश में है।" [3] मूलत "उन्हें बातें करने की आज्ञा नही।" उन्हें प्रार्थना करने और भविष्यद्वाणी करने की अनुमति है। (1 कुरि० 11 : 5). प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक सभाओं मे, परन्तु पुरुषो को सिखाने की अनुमति नहीं। (1 तीमु० 2 . 12)। [4] या, "यदि वह असहमत हो, तो उसके विचार की अपेक्षा करो।"

1 यह नाम यीशु के बारह शिष्यो को दिया गया, और उनके बीच से यहूदा के चले जाने के बाद भी इसका प्रयोग होता रहा।

परमेश्वर ने ऐसी दया और अनुग्रह मुझ पर उडेला—और वह व्यर्थ नही हुआ : क्योंकि मैंने सब दूसरे प्रेरितों से बढ़कर कठिन परिश्रम किया है, तो भी वास्तव में उसका करने वाला मैं नही था परन्तु परमेश्वर, जिसने मुझे आशिष देने के लिए, मुझमें काम किया। 11 इससे कोई अन्तर नही पड़ता कि किसने सबसे अधिक परिश्रम किया, मैंने या उन्होंने, विशेष बात यह है कि हमने शुभ संदेश तुमको सुनाया, और तुमने उस पर विश्वास किया।

12 परन्तु मुझे यह बताओ! इसलिए कि तुम हमारे संदेश पर विश्वास करते हो, कि मसीह मुर्दों में से जी उठा, तो फिर तुममे से कई क्यों कह रहे हैं कि मरे हुए लोग फिर कभी नही जी उठेंगे? 13 क्योंकि यदि मरे हुओं का कोई पुनरुत्थान नहीं तो मसीह भी अब तक मरा हुआ है। 14 और यदि मसीह अब तक जी नही उठा तो हमारा प्रचार व्यर्थ है और परमेश्वर पर तुम्हारा विश्वास खोखला, व्यर्थ तथा आशा रहित है। 15 और हम प्रेरित सब झूठे हैं क्योंकि हमने कहा है कि परमेश्वर ने मसीह को मरे हुओं मे से जिलाया। 16 यदि वे नही जी उठते, तो फिर मसीह अब भी मृतक है 17 और तुम अपने उद्धार के लिए परमेश्वर पर भरोसा करते रहने के कारण बड़े मूर्ख हो, और तुम अपने पापों के लिये अभी भी दंड के अधीन हो, 18 ऐसे में तो सब मसीही जो मर चुके हैं वे भी नाश हुए। 19 और यदि मसीही होना केवल अभी इस जीवन मे हमारे लाभ का है, तो हम सब प्राणियो मे सबसे अधिक अभागे हैं।

20 परन्तु सच यह है कि मसीह वास्तव मे मरे हुओ मे से जी उठा, और उन लाखो[2] मे सबसे पहले जीवित हुआ जो किसी दिन फिर जीवित होंगे। 21 एक मनुष्य (आदम) ने जो कुछ किया उसके कारण मृत्यु इस ससार मे आई, और इस दूसरे मनुष्य (मसीह) ने जो कुछ किया है उसके कारण अब मृतको में से पुनरुत्थान है। 22 सब मरते हैं क्योंकि हम सब आदम के पाप मय वंश के सदस्य होकर उससे जुड़े हुए हैं, और जहा कही पाप है, उसका परिणाम मृत्यु है। परन्तु जितनो का सम्बन्ध मसीह से है वे फिर जी उठेंगे। 23 तौभी सब अपने समय मे, मसीह पहले जी उठा; तब जब मसीह फिर आएगा, उस समय उसके सब लोग फिर से जीवित हो जाएंगे। 24 उसके बाद अन्त आ जायेगा जब वह हर प्रकार के सब शत्रुओं को नीचे गिराकर, परमेश्वर पिता को राज्य फेर देगा। 25 क्योंकि मसीह राजा होगा जब तक वह अपने शत्रुओं को न हरा दे। 26 जिनमे अन्तिम शत्रु —मृत्यु भी सम्मिलित है। इसे भी हराना और इसका अन्त करना है। 27 क्योंकि सब वस्तुओं पर राज्य और प्रभुत्व पिता के द्वारा मसीह को दिया गया है, केवल, हा मसीह स्वयं पिता के ऊपर राज्य नही करता जिसने उसको राज्य करने की यह सामर्थ दी। 28 जब मसीह अन्त मे अपने सब शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध जीत लेगा, तब तक परमेश्वर का पुत्र अपने आप को अपने पिता की आज्ञाओं के अधीन कर देगा, ताकि परमेश्वर जिसने उसको सब वस्तुओ पर विजय दी है पूरी रीति से सर्वप्रथम रहे।

29 यदि मुर्दे फिर जी नही उठेंगे, तो लोगों का मरे हुओं के लिये बपतिस्मा लेने का क्या अर्थ? उसे लो ही क्यों जब तक विश्वास न हो कि मृतक किसी दिन फिर जी उठेंगे? 30 और हम भी क्यों अपने जीवनो को निरन्तर खतरे मे डालते रहें, हर क्षण मृत्यु का सामना करते रहें? 31 क्योंकि यह सच है कि मैं हर दिन मृत्यु का सामना करता हूं; यह उतना ही सच है जितना प्रभु मे तुम्हारी बढती पर मेरा गर्व। 32 और जगली पशुओ—इफिसुस के उन पुरुषों—से लड़ने मे क्या लाभ था—यदि वह केवल यहां इस जीवन मे लाभ प्राप्त करने के लिए था? यदि हम मरने के बाद कभी जी उठने वाले नही हैं, तब तो अच्छा होगा कि हम जाकर मौज उड़ाएं:

[2] मूलत "जो सो गए है उनमें पहिला फल।"

खाएं, पीएं, और आनन्द मनाएं। क्या अन्तर है? क्योंकि कल तो हम मर जाएंगे, और तब सब कुछ समाप्त हो जायेगा। 33 उन लोगों के द्वारा मूर्ख न बनो जो ऐसी बातें कहते हैं। यदि तुम उनकी सुनोगे तो उन्हीं के समान काम करने लगोगे। 34 बुद्धि से काम लो और पाप करते रहना छोड़ दो। क्योंकि मैं तुम्हें यह लज्जित करने के लिए कहता हूं, तुम में से कई मसीही तक नहीं हैं और तुमने वास्तव में कभी परमेश्वर[3] को नहीं पहचाना है।

35 परन्तु कोई प्रश्न कर सकता है, "मृतक कैसे फिर से जी उठाए जाएंगे? उनकी देह किस प्रकार की होगी?" 36 कितना मूर्खता भरा प्रश्न है। तुम अपने बगीचे मे ही इसका उत्तर पाओगे। जब तुम भूमि मे बीज डालते हो तो जब तक वह पहले "मर" नही जाता तब तक वह बढ़कर पौधा नही बनता। 37 और जब बीज में से अंकुर फूट जाता है तो वह उस बीज से बिल्कुल भिन्न होता है जिसे तुमने पहले बोया था। क्योंकि तुम भूमि मे जो कुछ डालते हो वह गेहूं का सूखा छोटा दाना ही होता है या जो कुछ बोते उसका बीज, 38 तब परमेश्वर उसे एक सुन्दर नई देह देता है—ठीक वैसा ही जैसा वह उसके लिए चाहता है, हर प्रकार के बीज से अलग-अलग प्रकार का पौधा बढ़ता है। 39 और जिस प्रकार अलग-अलग प्रकार के बीज और पौधे हैं, वैसे ही अलग अलग प्रकार की देह भी हैं। मनुष्यों का, पशुओं का, मछलियों का और पक्षियों का शरीर अलग-अलग प्रकार का है। 40 स्वर्ग मे स्वर्गदूतों[4] का शरीर हमसे एक दम अलग प्रकार का है, और उनकी देह की सुन्दरता और तेज हम से भिन्न है। 41 सूर्य का तेज एक प्रकार का होता है जबकि चन्द्रमा और तारों का दूसरे ही प्रकार का होता है, और तारे भी अपनी सुन्दरता और चमक मे एक दूसरे से भिन्न हैं। 42 इसी प्रकार हमारी सांसारिक देह जो मर जाती है और सड़ जाती है उस देह से भिन्न है जो हमारे फिर से जी उठने पर हमारी होगी क्योंकि वह कभी नहीं मरेगी। 43 जो देह अभी हमारी है वह हमे कठिनाई मे डालती है क्योंकि वह बीमार पड़ जाती और मर जाती है, परन्तु जब हम फिर जी उठेंगे तब वह तेजस्वी रहेगी। हां, वह अभी निर्बल, मरणहार है, परन्तु जब हम फिर जीयेंगे तब वह शक्ति से भरपूर होगी। 44 मृत्यु के समय वह केवल मानवीय देह रहती है, परन्तु जब वह जी उठेगी तब उच्च मानवीय देह होगी। क्योंकि जिस प्रकार स्वाभाविक मानवीय देह है, उसी प्रकार उच्च मानवीय आत्मिक देह भी है। 45 पवित्रशास्त्र में लिखा है कि पहले पुरुष, आदम को स्वाभाविक मानवीय देह[5] दी गई, परन्तु मसीह[6] उससे बढ़कर है, क्योंकि वह जीवन—दायक आत्मा था। 46 तो, पहले, हमारी देह मानुषिक होती है और बाद मे परमेश्वर हमे आत्मिक, स्वर्गीय देह देता है। 47 आदम पृथ्वी की मिट्टी से बनाया गया था, परन्तु मसीह स्वर्ग पर से आया। 48 हरएक मनुष्य की देह मिट्टी से बनी आदम की देह के ही समान होती है, परन्तु जितने मसीह के हो जाते हैं उन सबकी उस ही के समान स्वर्गीय देह होगी। 49 जैसे अभी हममे से हरएक की देह आदम के समान है, वैसे ही किसी दिन हमारी देह मसीह के सदृश्य होगी।

50 मेरे भाइयो, मैं तुम्हें यह बताता हूं: मास और लोहू का बना सांसारिक शरीर परमेश्वर के राज्य मे प्रवेश नही कर सकता। हमारी यह नाशमान देह उस प्रकार की नही है कि सदाकाल तक जीवित रहे। 51 परन्तु मै तुमको यह विचित्र और अद्भुत रहस्य सुना रहा हूं: हम सब नही मरेंगे, परन्तु हम सब को नई देह दी जाएगी। 52 यह सब एक क्षण मे

---

[3] या, "कई लोग ऐसे हैं जो परमेश्वर के विषय मे नहीं जानते।" [4] मूलत. "स्वर्गीय देह है।" परन्तु सम्भवत इसका संकेत सूर्य चन्द्रमा, ग्रहों और तारो की ओर भी हो सकता है। [5] मूलत. "जीवित प्राणी बना।" [6] मूलत "अन्तिम आदम।"

पलक मारते ही हो जाएगा, जब अन्तिम तुरही फूंकी जाएगी। क्योंकि आकाश से तुरही का स्वर होगा और जितने मसीही मर चुके हैं वे सब अचानक नई देह सहित जी उठेंगे, जो कभी भी नहीं मरेगी, और हम जो उस समय भी जीते रहेंगे, हम भी अचानक नई देह प्राप्त करेंगे। 53 क्योंकि हमारी सासारिक देह, जो अभी हमारी है जो मर सकती है, अवश्य है कि स्वर्गीय देह मे बदल जाए जो कभी नाश न होगी परन्तु सदाकाल तक जीवित रहेगी। 54 जब यह होगा, तब अन्त मे यह पवित्रशास्त्र का वचन पूरा होगा—"विजय ने मृत्यु को निगल लिया।" 55, 56 हे मृत्यु फिर तेरी विजय कहा है? फिर तेरा डंक कहां है? क्योंकि पाप-डंक जो मृत्यु उत्पन्न करता है—सब नाश हो जाएगा, और व्यवस्था, जो हमारे पाप प्रगट करती है, फिर हमारा न्याय करने वाली नहीं रह जाएगी। 57 हम इन सबके लिए परमेश्वर का कितना धन्यवाद करते हैं। वही है जो हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा विजयी बनाता है। 58 इसलिए, मेरे प्रिय भाइयो, भविष्य में विजय निश्चित है, इस कारण सामर्थी और स्थिर बनो, परमेश्वर के काम में सदा बढ़ते जाओ, क्योंकि तुम जानते हो कि प्रभु के लिए किया गया तुम्हारा कोई भी काम कभी व्यर्थ नहीं जाता, यदि कोई पुनरुत्थान न होता तो यह व्यर्थ जाता।

16 1 अब उस पैसे के विषय मे जो तुम यरूशलेम के मसीहियों को भेजने के लिए एकत्र कर रहे हो यही आज्ञाएं हैं (और, वैसे, ये वे ही आज्ञाएं हैं जो मैं ने गलतियों की कलीसियाओं को दी)। 2 प्रभु के हर दिन पर तुम में से हर एक को अपनी सप्ताह भर की कमाई का कुछ भाग अलग रखना चाहिए और उसे इस भेंट के लिए काम मे लाना चाहिए। कितना दोगे यह इस बात पर निर्भर रहेगा कि प्रभु ने कमाई करने में तुम्हारी कितनी सहायता की है। मेरे वहां आने तक मत रुके रहो कि मेरे पहुंचने पर सब एक साथ इकट्ठा करने का प्रयत्न करो। 3 जब मैं आऊंगा तो मैं तुम्हारी प्रेमपूर्ण भेंट को एक पत्र के साथ यरूशलेम, तुम्हारे द्वारा चुने गए विश्वासयोग्य व्यक्तियों के द्वारा भेज दूंगा। 4 और यदि मुझे भी साथ जाना उचित जान पड़े, तो हम एक साथ यात्रा कर सकते हैं। 5 मकिदुनिया से पहले आने के बाद मैं तुम से भेंट करने के लिए आ रहा हूं, परन्तु वहां मैं केवल कुछ ही समय के लिए ठहरूंगा। 6 यह हो सकता है कि मैं तुम्हारे साथ अधिक समय तक ठहरूं, सम्भवत: पूरे जाड़ो तक, और तब तुम मुझे मेरे अगले स्थान तक भेज दो। 7 इस बार मैं केवल मार्ग मे ही तुमसे भेंट कर आगे चले जाना नहीं चाहता, मैं चाहता हूं कि यदि प्रभु की इच्छा हो तो आऊं और कुछ समय तक ठहरूं।

8. मैं यहां इफिसुस में पिन्तेकुस्त के अवकाश के दिन तक ठहरा रहूंगा, 9 क्योंकि मेरे लिए यहां प्रचार करने और शिक्षा देने को द्वार खुला हुआ है। बहुत कुछ हो रहा है, परन्तु बहुत से शत्रु भी हैं।

10 यदि तीमुथियुस आए तो उसे ऐसे रखना कि अपना घर जैसा लगे, क्योंकि मेरी तरह वह भी प्रभु का काम कर रहा है। 11 किसी को उसे तुच्छ जानने या उसकी उपेक्षा करने न दो क्योंकि वह जवान है परन्तु तुम्हारे साथ कुछ दिन रहने के बाद उसे कुशलतापूर्वक मेरे पास भेज दो, मैं उन सबके साथ जो लौटेंगे उसके शीघ्र आने की बाट जोह रहा हूं। 12 मैं ने अपुल्लोस से बहुत बिनती की, कि दूसरो के साथ तुमसे भेंट करने के लिए जाए, परन्तु उसने सोचा कि अभी उस के लिए जाना परमेश्वर की इच्छा के अनुकूल नहीं है, बाद मे जब उसे अवसर मिलेगा तब वह तुमसे भेंट करने के लिए आएगा।

13 आत्मिक खतरे के लिए अपनी आंखें खुली रखो, प्रभु के प्रति सच्चे बने रहो, पुरुषों

के समान कार्य करो, सामर्थी बनो, 14 और जो कुछ तुम करो, दया और प्रेम के साथ करो।

15 क्या तुम स्तिफनास और उसके परिवार को याद करते हो? वे अखया (यूनान) में सब से पहले मसीही बने और वे हर कहीं मसीहियों की सेवा और सहायता करने में अपना जीवन बिता रहे हैं। 16 कृपया उनकी शिक्षाओं को मानो और उनकी तथा साथ ही उनके समान सब की जो सच्चाई से बड़ी भक्ति के साथ कठिन परिश्रम करते हैं, सहायता के लिये जितना कर सकते हो करो। 17 मुझे बहुत हर्ष है कि स्तिफनास, फ़ूरतूनातुस, अखइकुस यहां, भेंट करने के लिये पहुंचे हैं? तुम मुझे यहा सहायता देने के लिये नही हो, इस कमी को वे पूरा कर रहे है। 18 उन्होंने मुझको बहुत आनन्दित किया है और आशा है कि तुम इनके जैसे व्यक्तियो के कार्य की उचित सराहना करोगे।

19 यहां आसिया की कलीसियाएं तुम्हें अपना स्नेह नमस्कार भेजती हैं। अक्विला और प्रिसका, और साथ ही दूसरे सब जो उनके घर पर अपनी कलीसियाई आराधना के लिये इकट्ठे होते हैं तुम्हे नमस्कार भेजते हैं। 20 यहाँ सब मित्रो ने मुझसे कहा है कि उनका नमस्कार तुम्हे दूं। और जब तुम मिलो तो आपस मे प्रेम से नमस्कार किया करो।

21 इस पत्र के अन्तिम शब्द मैं आप ही अपने हाथ से लिखूंगा। 22 यदि कोई प्रभु से प्रेम नही करता तो वह स्रापित है। प्रभु यीशु आने वाले हैं। 23 प्रभु यीशु मसीह का प्रेम और अनुग्रह तुम पर बना रहे। 24 तुम सभों को मेरा नमस्कार, क्योकि हम सब मसीह यीशु के हैं।

विनीत, पौलुस

कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री

1 1 प्रिय मित्रो, यह पत्र मुझ पौलुस की ओर से जो परमेश्वर के द्वारा मसीह यीशु का सन्देश पहुंचानेवाला नियुक्त किया गया हूँ : और हमारे प्रिय भाई तीमुथियुस की ओर से है। हम कुरिन्थियुस और सारे यूनान[1] मे तुम सब मसीहियों को लिख रहे हैं।

2 हमारा पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह तुम मे से हरएक को भरपूर आशिष और शान्ति दें।

3, 4 हमारा परमेश्वर कितना अनोखा है। वह हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता, हर दया का स्रोत है, जो हमारी कठिनाइयो और परीक्षाओं मे हमें इतनी अद्‌भुत रीति से सान्त्वना और सामर्थ देता है। और वह ऐसा क्यों करता है ? ताकि जब दूसरे व्याकुल हों, उन्हें हमारी सहानुभूति और उत्साह की आवश्यकता हो, तो हम इस सहायता और सान्त्वना को जो परमेश्वर ने हमें दी है उनको दे सकें। 5 तुम निश्चय जान सकते हो कि जितना अधिक हम मसीह के लिए दुःख उठाते हैं, उतनी ही अधिक अपनी शान्ति और उत्साह वह हम पर बरसाएगा। 6,7 परमेश्वर की शान्ति और उद्धार तुम तक पहुंचाने के लिए हम बडी कठिनाई में पडे। परन्तु हमारे संकट मे परमेश्वर ने हमें शान्ति दी—और यह भी, तुम्हे सहायता पहुंचाने के लिए ' तुम्हें अपने व्यक्तिगत अनुभव से यह दर्शाने के लिए कि इन्ही दुःखो का जब तुम सामना करो तो परमेश्वर किस प्रकार बडे स्नेह के साथ तुम्हे शान्ति देगा। वह तुम्हें सहने की शक्ति देगा। 8 प्रिय भाइयो, मैं सोचता हूं तुम्हें उन कठिन समयो के बारे मे जानना चाहिए जो हम पर आसिया मे पडे। हम वास्तव में कुचले और पूरी रीति से सताए गए, और डरते थे कि हम उनमे से जीवित नहीं बचेंगे। 9 हमे लगता था कि हम मर ही जाएंगे और हमने देखा कि हममे अपनी सहायता करने की शक्ति नहीं थी, परन्तु यह अच्छा ही हुआ, क्योंकि तब हमने सब कुछ परमेश्वर के हाथ मे सौंप दिया, केवल वही हमें बचा सकता था, क्योंकि वह मृतको को भी जिला सकता है। 10 और परमेश्वर ने हमारी सहायता की, और भयानक मृत्यु से हमें बचाया, हा, और ऐसी आशा हम उससे बार बार करते हैं। 11 परन्तु तुम्हे भी, हमारे लिए प्रार्थना करने के द्वारा हमारी सहायता करनी चाहिए। क्योंकि तुम्हारी ओर से जो प्रार्थनाएं हमारे बचाव के लिए की गई हैं उनके अद्‌भुत उत्तरों के द्वारा परमेश्वर को बहुत धन्यवाद और प्रशंसा मिलेगी।

12 हम बड़े आनन्दित हैं कि हम पूरी ईमानदारी के साथ कह सकते हैं कि हम अपने सारे व्यवहार मे पवित्र और सच्चे रहे हैं और हम अपनी कुशलता पर नही परन्तु पूर्णतः, प्रभु पर उसकी सहायता के लिए निर्भर रहे हैं। और यदि हो सके तो, यह बात तुम्हारे प्रति हमारे व्यवहार के बारे मे, और भी अधिक सच्ची है। 13, 14 मेरे पत्र सीधे और सच्चे रहे हैं उन मे कुछ भी व्यर्थ नही लिखा है। और यद्यपि तुम मुझे बहुत अच्छी रीति से नही जानते हो (मेरी आशा है कि किसी दिन तुम जानोगे), मैं चाहता हू कि तुम मुझे ग्रहण करने का प्रयत्न करो और मुझ पर घमण्ड करो जैसा कुछ हद तक करते ही हो, जिस प्रकार मैं तुम पर उस दिन घमण्ड करूंगा जब हमारे प्रभु यीशु फिर आएंगे।

15, 16 इसलिए कि मुझे तुम्हारे समझने और भरोसा रखने का इतना निश्चय था मैंने मकिदुनिया जाते समय अपने मार्ग मे ठहरकर तुमसे भेंट करने का प्रबन्ध किया और लौटते मे भी, कि मैं तुम्हारे लिए दुगनी आशिष बनूं

[1] या, "सारे अखया के।"

ताकि तुम मुझे यहूदिया को मेरे मार्ग पर भेज सको। 17 तुम पूछते होगे, तब क्यों मैंने अपना विचार बदला ? तब क्या मैंने पूरा निर्णय नही किया था ? या क्या मैं उस सांसारिक व्यक्ति के समान हूं जो कहता है "हां" जबकि उसका अर्थ रहता है "नही" ? 18 कभी नही ! परमेश्वर के सच्चे होने की बात जितनी सत्य है उतनी ही यह भी कि मैं उस प्रकार का व्यक्ति नही हूं। मेरे "हां" का अर्थ "हां" होता है। 19 तीमुथियुस और सिलवानुस और मैं तुम्हें परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के विषय मे बताते रहे हैं। वह उस प्रकार के नही कि "हां" कहें जब "नही" का अर्थ हो। वह सदैव ठीक वैसा ही करते हैं जैसा कहते हैं। 20 वह परमेश्वर की सब प्रतिज्ञाओं को, चाहे वे कितनी ही क्यों न हो पूरी करते हैं, और हमने उनके नाम को महिमा देते हुए, सब को बताया कि वह कितने विश्वासयोग्य हैं। 21 यही वह परमेश्वर है जिसने तुमको और मुझको विश्वासयोग्य मसीही बनाया है और हम प्रेरितो को शुभसंदेश प्रचार करने की आज्ञा दी है। 22 उन्होंने अपनी छाप हम पर लगाई है—अपने स्वामित्व का चिन्ह—और हमारे हृदयों मे अपना पवित्र आत्मा इस निश्चय से दिया है कि हम उनके है, और जितना कुछ वह हमे देनेवाले हैं, यह उसका पहला भाग है।

23 परमेश्वर मेरा गवाह है, मैं तुमसे इस-लिए भेंट करने के लिए नही आया कि मैं तुम्हें अपनी कडी डाट से दुःखित नहीं करना चाहता। 24 जब मैं आऊं, तो यद्यपि मैं तुम्हारे विश्वास की सहायता के लिए अधिक नही कर सकता, क्योंकि वह पहले से ही दृढ है, मैं चाहता हूं कि तुम्हारे आनन्द के लिए कुछ करूं : मैं तुम्हें दुःखित नही परन्तु हर्षित करना चाहता हूं।

2 1 मैंने अपने मन मे यही ठान लिया था कि फिर तुम्हारे पास उदास होकर न आऊं। 2 क्योंकि यदि मैं तुम्हें उदास करूं, तो कौन मुझे आनन्दित करेगा ? तुम्ही ऐसा कर सकते हो, परन्तु तुम करोगे कैसे यदि मैं तुम्हें दुःख पहुंचाऊंगा ? 3 इसी कारण मैंने लिखा जो मेरे पिछले पत्र में है, ताकि तुम मेरे आने से पहले सब बातें ठीक कर लो। तब, जब मैं आऊंगा तो उन्ही के द्वारा मुझे उदास नही होना पड़ेगा जिन्हे मुझे सबसे अधिक प्रसन्न करना चाहिए। मुझे निश्चय था कि तुम्हारा आनन्द मेरे हर्ष से इतना बन्धा हुआ है कि जब तक मैं आनन्द के साथ न आऊं तब तक तुम भी हर्षित नही होगे। 4 ओह, मुझे उस पत्र को लिखने मे कितना कष्ट हुआ। उससे मेरा हृदय टूट गया और मैं तुमसे सच कहता हूं कि मैं उस पर रो पड़ा। मैं तुम्हे चोट पहुंचाना नही चाहता था, परन्तु मैं तुमको यह दिखाना चाहता था कि मैं तुमसे कितना अधिक प्रेम रखता हूं और तुम्हारे साथ जो कुछ हो रहा था उसकी मुझे चिन्ता थी।

5, 6 स्मरण रखो कि जिस व्यक्ति के विषय में मैंने तुम्हें लिखा, जिसने सब कठिनाइया उत्पन्न की, उसने उतना दुःख मुझको नही पहुंचाया जितना तुम सब लोगों को—यद्यपि मैं भी उसमे भागी हुआ। जितना चाहिए उसमे बढकर उसके प्रति कठोर मैं नही होना चाहता। तुम्हारी सामूहिक निन्दा से उसे जितना चाहिए था उतना दण्ड मिल चुका। 7 अब उसे क्षमा करने और शान्ति देने का समय है। नही तो वह इतना कडुवाहट से भरा और निराश हो जाएगा कि जैसा पहले था वैसा नही हो सकेगा। 8 उसे कृपाकर अब दर्शाओ कि तुम उससे अब भी बहुत अधिक प्रेम रखते हो। 9 मैंने जैसा तुमको लिखा वह इसलिए ताकि मैं जान सकूं कि तुम कहा तक मेरी मानोगे। 10 जब तुम किसी को क्षमा करते हो, तो मैं भी करता हूं। और जो कुछ मैंने क्षमा किया है वह मसीह के अधिकार के द्वारा और तुम्हारे भले के लिए किया है। 11 क्षमा करने का एक और कारण यह है कि शैतान की चालाकी से बचे रहें, क्योंकि हम जानते हैं कि

वह क्या करने का प्रयत्न कर रहा है।

12 जब मैं त्रोआस शहर तक पहुँचा, तो परमेश्वर ने सुसमाचार प्रचार करने के लिए विशाल अवसर मुझे दिया। 13 परन्तु मेरा प्रिय भाई तीतुस वहाँ नहीं था कि मुझसे भेंट करे और मुझे चैन न पड़ा, यह सोचकर कि वह कहाँ होगा और उसे क्या हुआ होगा। इसलिए मैंने विदा ली और सीधे मकिदुनिया गया कि उसे खोजने का यत्न करूँ। 14 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो। क्योंकि मसीह ने जो कुछ किया है उसके द्वारा उसने हम पर जय पाई है इसलिए अब हम जहा भी जाते हैं वह प्रभु के बारे में दूसरों को बताने और सुगन्धित इत्र के समान शुभ सन्देश फैलाने में हमे काम मे लाता है। 15 जहाँ तक परमेश्वर का सम्बन्ध है, हमारे जीवनों मे मधुर सुगन्ध है। यह हमारे अन्दर मसीह की सुगन्ध है, जो हमारे चहुं ओर के उद्धार पाए हुओं और उद्धार न पाए हुओं के लिए मधुर है। 16 जो उद्धार नही पा रहे हैं, उनके लिए हम मृत्यु और विनाश की भययोग्य दुर्गन्ध हैं, जबकि उन लोगों के लिए जो मसीह को जानते हैं हम जीवनदायक सुगन्ध हैं। परन्तु ऐसे कार्य करने के योग्य कौन हैं? 17 केवल वे ही, जो हमारे समान सच्चे, परमेश्वर के द्वारा भेजे गए, और मसीह की सामर्थ से बोलनेवाले हैं जिन पर परमेश्वर की दृष्टि है। हम तुच्छ वस्तुओं के बेचने वालों के समान नहीं हैं—और ऐसे अनेक लोग हैं—जो सुसमाचार का प्रचार उससे अपना लाभ प्राप्त करने के लिए करते हैं।

3 1 क्या हम तुम्हारे उन झूठे शिक्षकों के समान हो रहे हैं जिन्हें अपने बारे मे सब बताना पडता है और अपने साथ सिफारिश की लम्बी चिट्ठिया लानी पडती हैं? मैं सोचता हूं कि हमारे विषय में बताने के लिए तुम्हें किसी के पत्र की आवश्यकता ही नही है, और हमे तुम्हारी सिफारिश भी नही चाहिए। 2 जिस पत्र की मुझे आवश्यकता है वह तुम आप ही हो। तुम्हारे हृदय के अच्छे बदलाव को देखकर सब जान सकते हैं कि हमने तुम्हारे मध्य अच्छा काम किया है। 3 वे देख सकते हैं कि तुम हमारे द्वारा लिखी गई मसीह की पत्री हो। यह पत्री कलम और स्याही से नही, परन्तु जीवते परमेश्वर के आत्मा से लिखी गई है, पत्थर पर खुदी हुई नही, परन्तु मनुष्यों के हृदयों मे खुदी हुई है। 4 हम अपने विषय में ऐसी अच्छी बातें कहने का साहस केवल इसीलिए करते हैं क्योंकि मसीह के द्वारा परमेश्वर पर हमारा बडा भरोसा है कि वह जैसा हम कहते हैं वैसा करने मे हमारी सहायता करेगा। 5 और इसलिए नहीं कि हम सोचते हैं कि हम अपने आप से कोई ऐसा काम कर सकते हैं जिसका महत्व बना रहे। हमारी एकमात्र सामर्थ और सफलता परमेश्वर की ओर से है। 6 वही है जिसने दूसरों को उनका उद्धार करने के लिए अपने नये समझौते के विषय बताने मे हमारी सहायता की है। हम उन्हें यह नहीं बताते कि उनको परमेश्वर की हरएक व्यवस्था को या तो मानना है या फिर मरना है, परन्तु हम उनको बताते हैं कि पवित्र आत्मा की ओर से उनके लिए जीवन है। पुराना मार्ग, अर्थात दस आज्ञाओं को मानने के द्वारा उद्धार पाने के प्रयत्न करने का अन्त मृत्यु है, नए मार्ग मे, पवित्र आत्मा उनको जीवन देता है। 7 तौभी व्यवस्था की वह पुरानी प्रथा जो मृत्यु लाई ऐसे तेज से आरम्भ हुई कि लोग मूसा के चेहरे तक पर दृष्टि नहीं कर सकते थे। क्योंकि जब उसने उनको परमेश्वर की व्यवस्था मानने के लिए दी, तब उसका मुख परमेश्वर के ही तेज से चमका—यद्यपि वह चमक उसी समय कम हो रही थी। 8 तो क्या हम इन दिनो मे जब पवित्र आत्मा जीवन दे रहा है उससे कहीं अधिक तेज की आशा न करें? 9 यदि वह उपाय जो विनाश की ओर ले जाता है इतना तेजस्वी था, तो उससे कहीं अधिक व तेजस्वी वह उपाय है जो मनुष्यों का सम्बन्ध परमेश्वर मे ठीक करता है। 10 वास्तव मे, वह तेज जो

मूसा के मुख पर चमका उस नये समझौते के तेज की तुलना मे कुछ भी नही है। 11 इसलिए यदि पुरानी प्रथा जो घट कर मिट गई स्वर्गीय महिमा से भरपूर थी, तो हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर के नये उपाय की महिमा निश्चय ही कही बढ़कर है, क्योकि यह अनन्त है।

12 इसलिए कि हम जानते हैं कि यह नया तेज कभी नही मिटेगा, इसलिए हम बड़े साहस के साथ प्रचार कर सकते हैं, 13 और मूसा के समान नही, जिसने अपना मुख परदे से ढांपा ताकि इस्राएली उस तेज को घटते न देख सकें। 14 न केवल मूसा का मुख परदे से ढपा था परन्तु उसके लोगों का मन और समझ भी परदे से ढपी थी। यहा तक कि अब भी जब पवित्रशास्त्र पढा जाता है तो ऐसा जान पडता है मानो यहूदी हृदय और मन मोटे परदे से ढपे हैं, क्योंकि वे पवित्रशास्त्र का सच्चा अर्थ न देख सकते हैं और न समझ सकते हैं। क्योंकि समझ न सकने का यह परदा केवल मसीह पर विश्वास करने के द्वारा ही हटाया जा सकता है। 15 हा, आज जब कभी वे मूसा के लेखो को पढते हैं, उनके हृदयों मे अन्धापन है और वे सोचते हैं कि उद्धार पाने का मार्ग दस आज्ञाओ को मानना है। 16 परन्तु जब कभी कोई अपने पापो से प्रभु की ओर फिरता है, तब परदा उठा लिया जाता है। 17 प्रभु आत्मा हैं जो उनको जीवन देता है, और जहा वह है वहां स्वतन्त्रता है अर्थात परमेश्वर की व्यवस्था के मानने के द्वारा उद्धार पाने का प्रयत्न करने से, 18 परन्तु हम मसीहियो के मुख पर कोई परदा नही रहता, हम दर्पण बन सकते हैं जिससे प्रभु के तेज की चमक प्रगट होती है। और जैसे-जैसे प्रभु का आत्मा हमारे अन्दर काम करता है, हम उसके समान अधिक से अधिक बनते जाते हैं।

4 1 परमेश्वर ने आप ही, अपनी दया से हमे दूसरों को शुभ सन्देश सुनाने का यह अद्भुत कार्य सौंपा है, इसलिए हम कभी साहस नही छोडते। 2 हम लोगों को चालाकी से विश्वास मे फंसाने की कोशिश नही करते—हम किसी को धोखा देने में रुचि नही रखते। हम किसी को कभी यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न नही करते कि "वचन मे मिलावट है परन्तु सत्य को प्रगट करते हैं। सब ऐसे लज्जाजनक तरीको को हम छोड देते हैं। हम परमेश्वर की उपस्थिति मे खड़े होते हैं तो सच बोलते हैं। 3 जिस शुभ सन्देश का हम प्रचार करते हैं यदि वह किसी से छिपा है, तो उसी से जो अनन्त मृत्यु के मार्ग पर है। 4 शैतान ने, जो इस बुरे संसार का ईश्वर है, उसे अन्धा कर दिया है कि वह सुसमाचार के महिमामय प्रकाश को न देख सके अथवा मसीह जो परमेश्वर[1] है उसकी महिमा के अद्भुत सुसमाचार को न समझ सके। 5 हम यहां अपने विषय मे प्रचार नहीं करते फिरते, परन्तु इसकी अपेक्षा मसीह यीशु के विषय में कि वह प्रभु है। हम अपने बारे मे इतना ही कहते हैं कि यीशु ने हमारे लिए जो कुछ किया, उसके कारण हम तुम्हारे दास हैं। 6 क्योंकि परमेश्वर जिसने कहा, अन्धकार मे प्रकाश हो, हमें यह समझ दी है कि उसकी महिमा की चमक यीशु मसीह के मुख पर दिखाई देती है।

7 परन्तु यह बहुमूल्य धन—यह प्रकाश और सामर्थ जो अब हमारे अन्दर चमकता है—नाशमान पात्र में अर्थात हमारी निर्बल देहों मे रखा है। सब देख सकते हैं कि यह भीतरी तेजस्वी सामर्थ परमेश्वर की ओर से होनी चाहिए और यह हमारी नही है। 8 हम संकटों से चारो ओर से दबे हैं, परन्तु कुचले और टूटे नही। हम व्याकुल हैं क्योंकि नही जानते कि जो बातें बीत रही हैं उनका कारण क्या है, परन्तु हम साहस त्यागकर काम नही छोडते। 9 हमे सताया जाता है परन्तु परमेश्वर हमे कभी नहीं छोडता। हमे गिरा दिया जाता है, परन्तु हम फिर उठ जाते हैं और चलने लगते हैं। 10 हमारी यह देह

[1] मूलत "जो परमेश्वर का प्रतिरूप है।"

निरन्तर मृत्यु का सामना करती रहती है जैसे मसीह ने किया, इसलिए यह सब पर स्पष्ट है कि हमारे अन्दर केवल जीवित मसीह है जो हमे बचाए रखता है। 11 हां हमे अपने जीवन मे लगातार खतरा बना रहा है क्योंकि हम प्रभु की सेवा करते हैं, परन्तु इससे हमें निरन्तर अवसर मिलता रहता है कि अपनी मरनहार देह से यीशु मसीह की सामर्थ को दर्शाएं। 12 अपने प्रचार के कारण हम मृत्यु का सामना करते हैं, परन्तु इसका परिणाम तुम्हारे लिए अनन्त जीवन में हुआ है। 13 हम निडर होकर अपने विश्वास के अनुसार बोलते हैं। जैसा भजन लेखक ने किया जब उसने कहा, मैं विश्वास करता हूं और इसलिए मैं बोलता हूं। 14 हम जानते हैं कि वही परमेश्वर जिसने प्रभु यीशु को मरे हुओ मे से फिर जिलाया, मसीह के साथ हमे भी फिर से जिलाएगा। और तुम्हारे साथ अपने सामने उपस्थित करेगा। 15 हमारे यह क्लेश तुम्हारे लाभ के लिए हैं क्योंकि जितने अधिक मसीह के लिए जीते हैं उतना ही अधिक उसको धन्यवाद दिया जाता है तथा उतनी ही अधिक प्रभु की महिमा होती है।

16 इसीलिए हम कभी साहस नहीं छोड़ते। यद्यपि हमारी देह मरती जाती है, तौभी प्रभु में हमारी भीतरी सामर्थ हर दिन बढ़ती जाती है। 17 हमारे ये संकट और दु ख बहुत थोड़े हैं और अधिक समय तक नहीं रहेंगे। तौभी क्लेश के इस थोड़े समय का परिणाम होगा कि हम पर सदा सर्वदा के लिए परमेश्वर की बहुतायत की आशिष बनी रहेगी। 18 इसलिए हम इस अभी के संकट को जो हमारे चहुं ओर है नही देखते परन्तु हम स्वर्गीय आनन्द की ओर देखते हैं। संकट शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे, परन्तु आने वाला आनन्द सदा काल तक बना रहेगा।

5 1 क्योंकि हम जानते है कि जब यह तम्बू (देह) जिसमे हम अभी रहते हैं गिरा दिया जाएगा—जब हम मर जाएंगे और यह देह छोड देंगे—तब स्वर्ग मे हमारी अद्भुत नई देह होगी, घर होंगे जो सदाकाल के लिए हमारे होंगे, जो मनुष्यों के हाथों के बने हुए नही, परन्तु स्वयं परमेश्वर के द्वारा हमारे लिए बनाए गए होंगे। 2 हम अपनी वर्तमान देह से कितने थक जाते हैं। इसलिए हम उत्सुकता के साथ उस दिन की बाट देखते हैं जब हमारी स्वर्गीय देह होगी जिन्हें हम नए वस्त्रों के समान पहन लेंगे। 3 क्योंकि हम बिना देह के केवल आत्मा ही नही होंगे। 4 इन सासारिक शरीरो के कारण हम कराहते और आहे भरते हैं, हम अपनी नई देहों मे चले जाना चाहते है। ताकि यह मरणहार देह अनन्त जीवन मे बदल जाए। 5 यही परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार किया है और बयाने के रूप मे, उसने हमें अपना पवित्र आत्मा दिया है। 6 सो हम सदा ढाढस बान्धे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह मे रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं। 7 हम देखने से नही परन्तु विश्वास करने से जानते हैं कि ये बाते सच है। 8 और हम मरने मे डरते नही, क्योंकि तब तो हम प्रभु के साथ होंगे। 9 इसलिए हमारा लक्ष्य है कि हम जो कुछ करते हैं,उसमें सदा उसको प्रसन्न करें चाहे हम यहां इस शरीर मे हो या इस शरीर से अलग और उसके साथ स्वर्ग मे हो। 10 क्योंकि हम सबको मसीह के सामने खडा होना पडेगा कि हमारा न्याय हो और उसके सामने हमारा जीवन खुल जाएगा। हममे से हरएक अपने भले या बुरे कामो के योग्य बदला पाएगा जो उसने अपनी सासारिक देह में किए हैं।

11 प्रभु के इसी गम्भीर भय के कारण जो हमारे मन मे सदा बना रहता है, हम दूसरो को जीतने के लिए इतना कठिन परिश्रम करते हैं। परमेश्वर हमारे हृदयो को जानता है, कि वे इस बात मे शुद्ध हैं, और मेरी आशा है कि अपने मन मे तुम भी इस बात को जानते हो। 12 क्या हम फिर अपनी पीठ थपथपाने का प्रयत्न कर रहे हैं? नही, मैं तुम्हे कसौटी की

अच्छी बात बता रहा हूं। तुम इसे अपने उन प्रचारकों पर काम में ला सकते हो जो घमण्ड करते हैं कि वे कितने अच्छे दिखते हैं और सन्देश देते हैं, परन्तु उनका हृदय सच्चा नही होता। तुम हम पर घमण्ड कर सकते हो, कि कम से कम हमारा उद्देश्य अच्छा है और हम सच्चे हैं। 13, 14 क्या हम पागल हैं (जो अपने विषय मे ऐसी बातें कहते हैं)? यदि हैं, तो परमेश्वर की महिमा करने के लिए और यदि हमारा मन ठीक है तो यह तुम्हारे लाभ के लिए है। जो कुछ हम करते हैं, निश्चय ही हम अपने लाभ के लिए नही करते, परन्तु इसलिए कि अब मसीह का प्रेम हम पर नियन्त्रण करता है। चूंकि हम विश्वास करते हैं कि मसीह हम सबके लिए मरा, हमे यह भी विश्वास रखना चाहिए कि हम उस पुराने जीवन के लिए जिसे हम जीते थे, मर गए हैं। 15 वह सबके लिए मरा ताकि जितने उससे अनन्त जीवन पा कर जीते हैं—अपने आप को प्रसन्न करने के लिए न जीए परन्तु मसीह को प्रसन्न करने के लिए अपना जीवन बिताएं जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा। 16 इसलिए ससार मसीहियों के विषय में क्या सोचता है या वे बाहर से कैसे दिखाई देते हैं, इस आधार पर उनका मूल्य आकना छोड दो। किसी समय मैं भी मसीह को इस प्रकार भूल से, अपने ही समान केवल एक मनुष्य जैसा सोचता था। अब मैं कितने अलग प्रकार से सोचता हू। 17 जब कोई मसीही बन जाता है तो वह अपने अन्दर पूरी रीति से नया व्यक्ति बन जाता है। वह फिर पहले जैसा नही रह जाता। एक नया जीवन आरम्भ हो जाता है।

18 ये सारी नई बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह यीशु के द्वारा हमे अपने पास बुलाया। और परमेश्वर ने हमें यह अधिकार दिया है कि हम हर एक को उसके अनुग्रह मे लाने और उसके साथ फिर से मेल कर लेने को प्रेरित करें। 19 अर्थात परमेश्वर ने मसीह मे हो कर अपने साथ ससार का मेलमिलाप कर लिया, और उनके अपराधो का दोष उन पर नही लगाया और उसने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है।

20 हम मसीह के राजदूत हैं। परमेश्वर तुमसे बातें करने के लिए हमे काम में ला रहा है: हम तुमसे बिनती करते हैं, मानो मसीह आप ही तुमसे बिनती कर रहा है—परमेश्वर के साथ फिर से मेल कर लो। 21 क्योकि परमेश्वर ने पाप रहित मसीह को लिया और हमारे पापों को उस पर उण्डेल दिया। और उसके बदले मे, उसने परमेश्वर की अच्छाई को हममें[1] उण्डेल दिया।

6

1 परमेश्वर के सहकर्मी होकर हम तुमसे बिनती करते हैं कि परमेश्वर की इस बडी दया का अद्भुत सन्देश न टालो। 2 क्योकि परमेश्वर कहता है, "बिलकुल ठीक समय पर तुम्हारी पुकार मुझ तक पहुची। मैंने उस दिन तुम्हारी सहायता की जब उद्धार दिया जा रहा था।" ठीक इसी समय अभी परमेश्वर तुम्हें ग्रहण करने के लिए तैयार है। वह आज तुम्हे बचाने के लिए तैयार है। 3 हम इस प्रकार से रहने का प्रयत्न करते हैं कि कभी किसी को चोट न पहुंचे और हमारे व्यवहार के कारण कोई कभी प्रभु को पाने से न रह जाए, ताकि कोई हममे दोष न पा कर प्रभु को दोषी न ठहराए। 4 वास्तव मे, जो कुछ हम करते हैं हम यह दिखाने का प्रयत्न करते हैं कि हम परमेश्वर के सच्चे सेवक हैं। हम हर प्रकार के दुख और कठिनाई और संकट को धीरज के साथ सहते है। 5 हमने मार सही, बन्दीगृह, क्रोध से भरी भीड का सामना किया, कडी मेहनत से काम किया, बिना सोए जागते हुए कई रातें काटी, और भूखे रहे। 6 हमने अपने

[1] मूलत "जो पाप मे अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उस मे होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाए।"

सच्चे जीवन से, और सुसमाचार को अपनी समझ से और अपने धीरज से अपने दावे के अनुसार अपने आप को सिद्ध कर दिखाया। हम दयालु और सच्चे प्रेम से भरे और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण रहे। 7 हम परमेश्वर की सामर्थ से जो हमारे सब कार्यों में सहायता करता है सच्चे रहे। धर्मी मनुष्य के आक्रमण और बचाव के सब हथियार हमारे रहे हैं। 8 हम प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहते हैं चाहे दूसरे हमारा आदर करें या हमें तुच्छ समझें, चाहे वे हमारी आलोचना करें या हमें सराहें। हम ईमानदार हैं, परन्तु वे हमें झूठे कहते हैं। 9 संसार हमारी अवहेलना करता है, परन्तु परमेश्वर हमें जानता है हम मृत्यु के बहुत निकट रहते हैं, परन्तु देखो, अभी तक जीते हैं। हमें चोट लगी है परन्तु मृत्यु से बचे रहे हैं। 10 हमारा मन दुखता है, परन्तु साथ ही हममें प्रभु का आनन्द है। हम निर्धन हैं, परन्तु हम दूसरों को आत्मिक वरदान देते हैं। हमारा अपना कुछ भी नहीं है, परन्तु हम सब चीजों का आनन्द लेते हैं।

11 ओह, मेरे प्रिय कुरिन्थी मित्रो! मैंने तुम्हें अपने सारे विचार बता दिए: मैं तुमसे अपने सारे मन से प्रेम रखता हूं। 12 यदि कहीं हमारे बीच इसमें कमी है तो मेरी ओर से प्रेम की घटी के कारण नहीं; परन्तु इसलिए कि तुम्हारा प्रेम मेरे लिए बहुत कम है। 13 मैं अब तुमसे इस प्रकार बातें कर रहा हूं जैसे तुम सच में मेरी ही सन्तान हो। हमारे लिए अपने मन खोलो। हमारे प्रेम का बदला दो।

14 उन लोगों के गुट में न मिलो जो प्रभु से प्रेम नहीं रखते, क्योंकि परमेश्वर के लोगों और पापी लोगों में क्या मेल जोल? प्रकाश अन्धकार के साथ कैसे रह सकता है? 15 और मसीह और शैतान के मध्य क्या मेल हो सकता है? जो विश्वास नहीं रखता उसका साथी मसीही कैसे बन सकता है? 16 और परमेश्वर के मन्दिर और मूरतों के बीच क्या सम्बन्ध हो सकता है? क्योंकि तुम परमेश्वर के मन्दिर, जीवते परमेश्वर के घर हो, और परमेश्वर ने तुम्हारे विषय में कहा है, मैं उनमें रहूंगा और उनके मध्य चलूंगा, और मैं उनका परमेश्वर होऊंगा और वे मेरे लोग होंगे। 17 इसलिए परमेश्वर ने कहा है, उन्हें छोड़ दो, उनसे अपने आप को अलग करो, उनकी अशुद्ध वस्तुओं को न छूओ, और मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा, 18 और तुम्हारा पिता ठहरूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होगे।

7 1 प्रिय मित्रो, ऐसी बड़ी प्रतिज्ञाओं के रहते, हम हर अपराध से चाहे वह देह का हो या आत्मा का, अलग रहें। और परमेश्वर के भय में रहते हुए, और अपने को उसे अर्पित करते हुए शुद्ध करें। 2 कृपा कर अपने मन फिर से हमारे लिए खोल दो, क्योंकि तुममें से किसी ने भी हमसे कोई दुःख नहीं पाया है। तुममें से किसी एक को भी हमने नहीं भटकाया। हमने किसी को न धोखा दिया है न किसी से लाभ उठाया है। 3 मैं यह तुम्हें डाटने या तुम पर दोष लगाने के लिए नहीं कह रहा हूं, क्योंकि जैसा मैंने पहले कह दिया है, तुम सदा के लिए मेरे मन में हो और मैं तुम्हारे साथ जीता या मरता हूं। 4 मेरा तुम पर बहुत अधिक विश्वास है और तुम पर मुझे बड़ा घमण्ड है। तुमने मुझे बहुत उत्साहित किया है, मेरे सब दुखों के रहते हुए भी तुमने अत्यन्त आनन्दित किया है।

5 जब हम मकिदुनिया में पहुंचे तब वहां हमें चैन नहीं मिला, बाहर, हर समय हमारे चहुं ओर संकट था, अन्दर हमारे हृदयों में बहुत भय समाया हुआ था। 6 तब परमेश्वर ने जो निराशा में पड़े हुओं को हर्षित करता है, तीतुस के आने के द्वारा हमें फिर से नई शक्ति दी। 7 न केवल उसकी उपस्थिति परन्तु उसने तुम्हारे साथ जो अद्भुत समय बिताया, उसका समाचार भी हमारे लिए हर्ष का कारण हुआ। जब उसने मुझे बताया कि तुम मेरे भेंट करने के लिए आने की कितनी अधिक आशा कर रहे थे, और जो

हुआ था उसके विषय मे तुम कितने दु खित थे, और तुम्हारी ईमानदारी और मेरे लिए तुम्हारे अपार प्रेम की बातें सुनकर, मै आनन्द से परिपूर्ण हो गया। 8 उस पत्र के भेजने के कारण अब मैं दु खी नही हू, यद्यपि कुछ समय के लिए मैं दु खित था, यह समझ कर कि उससे तुमको कितनी पीड़ा होगी। परन्तु उससे तुम्हे केवल थोड़े ही समय के लिए चोट पहुची। 9 अब मुझे आनन्द है कि मैंने उसे भेजा, इसलिए नही कि उससे तुम्हे चोट पहुची, परन्तु इसलिए कि उस दु ख ने तुम्हे परमेश्वर की ओर फेरा। तुमने अच्छे प्रकार के दु ख का अनुभव किया, उस प्रकार के दु ख का जिसे परमेश्वर अपने लोगो के लिए चाहता है, इसलिए कठोरता के साथ तुम्हारे पास आने की मुझे आवश्यकता नही। 10 क्योंकि परमेश्वर कभी-कभी हमारे जीवनो मे दुःख को इसलिए काम मे लाता है कि पाप से फिरने और अनन्त जीवन खोजने मे हमारी सहायता करे। हमे कभी नही पछताना चाहिए कि परमेश्वर ने उसे क्यो भेजा। परन्तु उस व्यक्ति का दु ख जो मसीही नही है, सच्चे पश्चाताप का दु ख नही है और वह अनन्त मृत्यु मे नहीं बचाता। 11 केवल ध्यान दो कि प्रभु की ओर इस शोक ने तुम्हारे लिए कितना अधिक किया है। परन्तु तुम उत्साही और निष्कपट बन गए और उस पाप मे छुटकारा पाने के लिए जिसके विषय मे मैंने तुमको लिखा था, बड़े उत्सुक हो गए। जो कुछ हुआ था उस सम्बन्ध मे तुममे डर समा गया और तुम चाहने लगे कि मैं आकर तुम्हारी सहायता करूँ। तुमने ठीक प्रकार से समस्या को हल किया अर्थात पापी मनुष्य को दण्ड दिया। उसे सुधारने के लिए तुम जितना कर सकते थे तुमने किया। 12 मैंने जैसा लिखा था वह इसलिए कि परमेश्वर दिखा सके कि तुम वास्तव मे हमारी कितनी चिन्ता करते हो। यही मेरा अभिप्राय था इससे बढ़कर कि उस व्यक्ति की सहायता करूँ जिसने पाप किया था, या उसके पिता की जिसके विरुद्ध उसने गलती की। 13 अपने प्रेम के द्वारा तुमने हमे जो उत्साह दिलाया उसके साथ ही, हमे तीतुस के हर्ष से और अधिक प्रसन्नता हुई जब तुमने उसका इतनी अच्छी रीति से स्वागत किया और उसके मन को चैन पहुचाया। 14 मैंने उसे बताया था कि कैसा होगा—तुम पर मुझे जो घमण्ड था उसके विषय मे मैंने उसे बता दिया था जब वह मुझे छोड़ कर तुम्हारे पास आया था। और तुमने मुझे निराश नही किया। मैंने सदा तुमसे सच कहा है और अब तीतुस के सामने मेरा घमण्ड करना भी सच सिद्ध हुआ है। 15 वह स्मरण कर वह तुमसे पहले से भी अधिक प्रेम करता है कि तुमने किस प्रकार इतने इच्छुक होकर उसकी सुनी और बड़ी उत्सुकता के साथ और बड़ी चिन्ता करते हुए उसको ग्रहण किया। 16 मुझे इससे कितना आनन्द होता है जबकि मुझे निश्चय है कि हमारा आपसी सम्बन्ध अब फिर से ठीक है। एक बार फिर मे मैं तुम पर अपना पूरा भरोसा रख सकता हू।

8 1 अब मैं तुम्हे बताना चाहता हू कि परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से मकिदुनिया की कलीसियाओं के लिए क्या किया है। 2 यद्यपि उन पर बड़ा सकट और कठिन समय बीत रहा है, तौभी उन्होंने अपनी बड़ी गरीबी मे अपने अद्भुत हर्ष को मिला लिया है, जिसका परिणाम उदारता से दूसरो को देने मे हुआ है। 3 वे जितना दे सकते थे उन्होने न केवल उतना ही दिया है, परन्तु उससे कही बढ़कर। मैं यह साक्षी दे सकता हू कि उन्होने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे करना चाहते थे, इसलिए नही कि मैंने बार-बार उनको ऐसा करने के लिए कहा। 4 उन्होंने हमसे पैसे को साथ ले जाने की बहुत बिनती की, ताकि वे यरूशलेम के मसीहियो की सहायता करने के हर्ष मे सहभागी हो सकें। 5 हमारी आशा से भी कही अधिक बढ़कर किया, क्योंकि उनका पहला कार्य था अपने आप को प्रभु को और हमको सौंप देना, कि परमेश्वर

हमारे द्वारा उनकी अगुवाई करे। 6 उनमें हमके विषय में इतनी उत्सुकता थी कि हमने तीतुस से विनती की जिसने सबसे पहले तुम्हें दान देने के लिए उभारा था, कि तुममें भेंट करे और दान देने की इस सेवकाई में तुम्हारा भाग पूरा करने का उत्साह तुम्हें दिलाए। 7 तुम लोग यहां बहुत सी बातों में अगुवे हो—तुममें बहुत अधिक विश्वास है, बहुत से अच्छे प्रचारक हैं, बहुत अधिक ज्ञान है, बहुत अधिक उत्साह है, हमारे लिए बहुत प्रेम है। अब मैं चाहता हूं कि तुम हर्षपूर्वक देने में भी आगे रहो। 8 मैं तुम्हें आज्ञा नहीं दे रहा हूँ, मैं नहीं कह रहा हूँ तुम्हें करना ही चाहिए, परन्तु दूसरे इसके लिए उत्सुक हैं। यह इसे सिद्ध करने का एक उपाय है कि तुम्हारा प्रेम सच्चा है, कि वह केवल बातों तक ही सीमित नहीं है। 9 तुम जानते हो कि हमारे प्रभु यीशु प्रेम और दया से कितने भरपूर थे: यद्यपि वह बहुत अधिक धनी थे, तौभी तुम्हारी सहायता करने के लिए वह कंगाल हो गये, ताकि कंगाल बनकर वह तुमको धनी बना सकें। 10 मैं सुझाव देना चाहता हूं कि तुमने एक वर्ष पहले जिसे आरम्भ किया था उसे समाप्त करो, क्योंकि इस विचार का प्रस्ताव रखने में तुम ही न केवल सबसे पहले थे, परन्तु उस सम्बन्ध में तुम ही ने सबसे पहले कुछ करना आरम्भ किया था। 11 इतने उत्साह के साथ एक बार इस काम को आरम्भ कर, तुम्हें इस योजना को उतने ही आनन्द के साथ, जितना तुम्हारे पास है उसमें से जितना तुम दे सकते हो, देकर पूरा करना चाहिए। अपने आरम्भ के उत्साहपूर्ण विचार को अब अपने वास्तविक कार्य द्वारा पूरा होने दो। 12 यदि तुम वास्तव में देने के लिए उत्सुक हो, तो यह महत्व का नहीं है कि तुम्हें कितना देना है। परमेश्वर चाहता है कि जो तुम्हारे पास है तुम दो, वह नहीं जो तुम्हारे पास नहीं है। 13 हां, मेरा यह अर्थ नहीं है कि तुम्हारी भेंट ग्रहण करने वाले तो चैन करें और तुम्हें क्लेश मिले, 14 परन्तु तुम्हें उनके साथ बाँटना चाहिए। अभी इस समय तुम्हारे पास बहुतायत से है और उनकी सहायता कर सकते हो, तब समय आने पर जब तुम्हें उनकी आवश्यकता हो, तब वे तुम्हारे साथ बांट सकते हैं, इस प्रकार से जितना जिसको आवश्यक है उसके पास होगा। 15 क्या तुम्हें स्मरण है कि पवित्रशास्त्र में इसके विषय में क्या लिखा है? जिसने बहुत बटोरा उसके पास कुछ बचा नहीं रहा, और जिसने कम बटोरा उसके पास पर्याप्त बचा रहा। इसलिए तुम्हें भी उनके साथ बांटना चाहिए जो आवश्यकता में पड़े हैं।

16 मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उसने तीतुस के मन में तुम्हारे लिए वैसी ही सच्ची चिन्ता डाल दी है जैसी मुझे भी है। 17 वह मेरी सलाह को आनन्द से मानता है कि वह दुबारा तुमसे भेंट करे—परन्तु मैं सोचता हूँ कि वह ऐसे भी आता, क्योंकि तुम्हें देखने को वह बहुत उत्सुक है। 18 मैं दूसरे नामी भाई को उसके साथ भेज रहा हूं, जिसकी सब कलीसियाओं में सुसमाचार प्रचारक के रूप में बड़ी प्रशंसा है। 19 सच पूछा जाए तो, इस व्यक्ति का चुनाव कलीसिया ने किया है कि यह मेरे साथ यात्रा कर, भेंट यरूशलेम पहुंचाए। इससे प्रभु की महिमा होगी और एक दूसरे की सहायता करने का हमारा उत्साह प्रकट होगा। 20 एक साथ यात्रा करने से हम किसी भी सन्देह से बचे रहेंगे, क्योंकि हम भी चिन्तित हैं कि इस बड़ी भेंट को ले जाने के सम्बन्ध में कोई हम पर दोष न लगा सके। 21 परमेश्वर जानता है कि हम ईमानदारी से यह कार्य कर रहे हैं और हम ईमानदार हैं, परन्तु हम चाहते हैं कि हर कोई यह जाने। इसलिए हमने यह प्रबन्ध किया है। 22 और मैं एक दूसरे भाई को भी तुम्हारे पास भेज रहा हूं जिसे हम अनुभव से जानते हैं कि वह उत्साही मसीही है। इस यात्रा की प्रतीक्षा करते हुए उसे विशेष उत्साह है क्योंकि मैंने उसे बताया है कि तुममें सहायता करने को कितनी उत्सुकता है। 23 यदि कोई पूछे कि तीतुस कौन है तो कहना कि वह तुम्हारी सहायता करने में मेरा साथी,

मेरा सहायक है, और तुम यह भी कह सकते हो कि दूसरे दो भाई यहां की सभाओ के प्रतिनिधि हैं और प्रभु के लोगो के सुन्दर उदाहरण हैं। 24 कृपा कर इन व्यक्तियों पर मुझसा अपना प्रेम प्रगट करो और उनके लिए वह सब कुछ करो जिसके विषय मे मैंने सबके सामने घमण्ड किया है कि तुम करोगे।

9 1 मैं समझता हू कि परमेश्वर के लोगो की सहायता करने के विषय मे मुझे वास्तव में तुम्हे कुछ लिखने की आवश्यकता नही है। 2 क्योकि मैं जानता हू कि उसके करने के लिए तुम कितने उत्सुक हो, और मैंने मकिदुनिया के भाइयो से घमण्ड के साथ कहा था कि तुम एक वर्ष पहले ही अपना दान भेजने के लिए तैयार थे। वास्तव मे वह तुम्हारा ही उत्साह था जिसने उनमें से बहुतो को सहायता आरम्भ करने के लिए उभारा था। 3 परन्तु मैं इन व्यक्तियों को केवल इसी निश्चय के लिए भेज रहा हू कि तुम वास्तव मे तैयार हो, जैसा मैंने उनको बताया कि तुम अपना पैसा इकट्ठा कर तैयार रहोगे, मैं नही चाहता कि इस बार मेरा तुम पर घमण्ड करना गलत निकल जाए। 4 मुझे बहुत लज्जा आएगी—और तुम्हे भी—यदि इनमे से कई मकिदुनिया के लोग मेरे साथ आएं, केवल यह पाएं कि उन्हे इतना सब बताने के बाद भी तुम अब तक तैयार नही हो। 5 इसलिए मैंने इन दूसरे भाइयो से कहा है कि वे यह देखने के लिए मुझसे पहले पहुचें कि जिस भेंट की तुमने प्रतिज्ञा की वह इकट्ठी हो चुकी है और तैयार है। मैं चाहता हू कि वह सचमुच दान रहे और ऐसा न दिखाई पडे कि वह दबाव से दिया जा रहा है।

6 परन्तु यह स्मरण रखो—यदि तुम थोडा दोगे, तो थोडा पाओगे। एक किसान जो थोडे बीज बोता है, कम फसल पाएगा, परन्तु यदि वह बहुत बोता है, तो बहुत काटेगा। 7 हर एक को अपने मन मे निर्णय करना है कि उसे कितना देना चाहिए। किसी को जितना वह देना चाहता है उससे अधिक देने को विवश न करो, क्योकि हर्ष से देने वालों का ही परमेश्वर आदर करता है। 8 परमेश्वर इस योग्य है कि जितनी आपको आवश्यकता है उससे भी अधिक देने के द्वारा उस कमी को भर दे, जिससे न केवल तुम्हारी आवश्यकताओ के लिए पर्याप्त रह जाए, परन्तु दूसरो को हर्ष के साथ देने के लिए बहुत बच भी जाए। 9 यह इस प्रकार है जैसा पवित्रशास्त्र मे लिखा है: धर्मी व्यक्ति उदारता से गरीबो को देता है। उसके भले कार्य सदाकाल तक उसकी प्रशन्सा के कारण रहेंगे। 10 क्योकि परमेश्वर, जो किसान को बोने के लिए बीज, और बाद में काटकर खाने के लिए अच्छी फसल देता है, तुम्हें भी बोने के लिए अधिक से अधिक बीज देगा। और उसे बढाएगा ताकि तुम अपनी फसल में से अधिक से अधिक फल बाट सको। 11 हा, परमेश्वर तुमको बहुतायत से देगा, ताकि तुम बहुतायत से बाट सको, और जब हम तुम्हारी भेंट उन तक पहुँचाएंगे जिन्हे उसकी आवश्यकता है तो वे धन्यवाद से भर जाएंगे और तुम्हारी सहायता के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देंगे। 12 इसलिए, तुम्हारी भेंट के परिणाम के रूप मे दो बातें होती हैं—आवश्यकता मे पडे हुओ को सहायता पहुचती है, और उनका मन परमेश्वर के लिए धन्यवाद से भर जाता है। 13 जिनकी तुम सहायता करते हो वे अपने लिए और दूसरों के लिए तुम्हारी उदार भेंट को पाकर न केवल प्रसन्न होंगे, परन्तु इस प्रमाण के लिए परमेश्वर की प्रशन्सा करेंगे कि तुम्हारे कार्य भी उतने ही अच्छे हैं जैसा तुम्हारा विश्वास है। 14 और वे परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह के लिए जो तुम्हारे लिए प्रगट हुआ, बडी लगन और सहानुभूति के साथ तुम्हारे लिए प्रार्थना करेंगे। 15 परमेश्वर को उसके पुत्र—उसके वरदान के लिए जो वर्णन से परे है, धन्यवाद दो।

10 1 मैं पौलुस नम्रता से मसीह की नाई विनती करता हूँ, जैसा मसीह आप भी

करेगा। तौभी तुममें से कई कहते हैं, "पौलुस के पत्र जब वह दूर रहता है तो कड़े होते हैं परन्तु जब वह यहाँ आएगा तो ऊंची आवाज से बोलने से भी घबराएगा।" 2 आशा है कि मुझे आने पर तुम्हें यह दर्शाने की आवश्यकता नही रहेगी कि मैं कितना कठोर और निर्दयी हो सकता हूं। मैं नहीं चाहता कि तुममें से कई के विरुद्ध कुछ करूं जो मेरे कार्यों और वचनों को केवल एक साधारण व्यक्ति के समझते हो। 3 यह सच है कि मैं एक साधारण, दुर्बल मनुष्य हूं, परन्तु मैं अपनी लड़ाई जीतने के लिए मनुष्य के उपायों और तरीकों को काम में नही लाता। 4 शैतान के किलो को गिराने के लिए, मैं मनुष्यो के बनाए हुए नहीं परन्तु परमेश्वर के शक्तिशाली हथियारों को काम मे लाता हूं। 5 ये हथियार परमेश्वर के विरुद्ध घमण्ड से भरे हर विवाद को और हर दीवार को जो मनुष्य को परमेश्वर के पास आने से रोकती है, तोड़ सकते हैं। इन हथियारो से मैं विद्रोहियो को पकड़कर उनको परमेश्वर के समीप फिर ला सकता हूं और उन्हे ऐसे व्यक्तियो मे बदल सकता हू जिनकी हार्दिक इच्छा मसीह की आज्ञा का पालन करना हो। 6 मैं इन हथियारों का प्रयोग हर विद्रोही के विरुद्ध करूंगा-परन्तु पहले तुम्हारे विरुद्ध ताकि तुम मसीह के अधीन हो जाओ। 7 तुम्हारी समस्या यह है कि तुम मुझे बाहर से एक निर्बल और शक्तिहीन समझते हो, परन्तु तुम भीतर नही देखते हो। तौभी यदि कोई मसीह की सामर्थ और अधिकार का दावा कर सकता है तो निश्चय मैं ही कर सकता हूं। 8 ऐसा जान पड सकता है कि मैं तुम पर अपने अधिकार के विषय मे—आवश्यकता से अधिक घमण्ड कर रहा हू—परन्तु मैं अपने हर दावे को पूरा कर सकता हूं। 9 मैं यह इसलिए कहता हू ताकि तुम्हें अपनी चिट्ठियो के द्वारा डराने वाला न ठहरूं। 10 कुछ लोग कहते हैं, "उसकी चिट्ठियों पर ध्यान मत दो। वह अपने को बड़ा दर्शाता है परन्तु यह सब दिखावा है। जब वह यहां आएगा तब तुम देखोगे कि उसमे ऐसी कोई बड़प्पन की बात नही है।" 11 इस बार जब मैं आप ही आऊंगा तो तुम पर उतना ही कठोर होऊंगा जितनी मेरी चिट्ठियां हैं। 12 अरे, चिन्ता न करो, मैं यह कहने का साहस नहीं कर सकता कि मैं इन दूसरे व्यक्तियों के समान अनोखा हूं जो तुमसे कहते हैं कि वे कितने अच्छे हैं। उनकी समस्या है कि वे आपस में एक-दूसरे से ही अपने आपका मिलान करते हैं, और अपने ही तुच्छ विचारों के अनुसार अपने आपको तौलते हैं। परन्तु वे कितने मूर्ख हैं! 13 परन्तु जो अधिकार हमारा नही है हम उस पर घमण्ड नहीं करेंगे। हमारा लक्ष्य है कि हम अपने लिए परमेश्वर के उपाय के अनुसार खरे निकलें और इस उपाय मे हमारा वहा तुम्हारे साथ काम करना भी आता है। 14 जब हम तुम पर अधिकार का दावा करते हैं तो हम सीमा से अधिक नही बढते, क्योंकि मसीह के विषय मे शुभ सन्देश लेकर तुम्हारे पास आनेवालों में हम ही पहले थे। 15 हम उस काम का दावा नही करते हैं जो किसी और ने तुम्हारे बीच मे किया है। परन्तु इसके बदले, हम आशा करते हैं कि तुम्हारा विश्वास बढे और जो सीमा हमारे लिए ठहराई गई है, उसके भीतर तुम्हारे मध्य हमारा कार्य बहुत अधिक बढ़े। 16 उसके बाद, हम दूसरे शहरों मे भी जो तुमसे बहुत अधिक दूर है शुभ सन्देश का प्रचार कर सकेंगे, तब किसी और के क्षेत्र मे रहने का कोई प्रश्न ही नही उठेगा। 17 जैसा पवित्र शास्त्र मे लिखा है, "यदि किसी को घमण्ड करना है तो प्रभु ने जो कुछ उसके लिए किया है उस पर घमण्ड करे अपने आप पर नहीं।" 18 जब कोई अपनी ही बड़ाई करता है, कि उसने कितना अच्छा किया है, तो उसका महत्व नही रखता। परन्तु जब प्रभु उसकी बड़ाई करता है तब वह दूसरी बात है।

11

1 मुझे आशा है कि जैसे मैं मूर्ख के समान बातें करता जा रहा हूं तो तुम मेरे

साथ धीरज रखोगे। मेरे साथ सह लो और जो मेरे मन मे है वह मुझे कहने दो। 2 मुझे तुम्हारी चिन्ता है, जैसी स्वयं परमेश्वर को है—यह चिन्ता कि तुम्हारा प्रेम अकेले मसीह के लिए हो, जैसे एक पवित्र कुवारी अपना प्रेम केवल एक ही पुरुष के लिए बचाए रखती है, उसी के लिए जो उसका पति होगा। 3 परन्तु मैं डरता हू—इस भय से कि हमारे प्रभु के प्रति तुम अपनी पवित्र और सरल भक्ति से कही बहकाए न जाओ, जैसे अदन के बगीचे मे हव्वा शैतान के द्वारा धोखे मे आ गई थी। 4 तुम ऐसे लगते हो कि सहज ही तुम्हे कोई ठग सकता है · तुम हर किसी के बताए पर विश्वास कर लेते हो चाहे दूसरे मसीह के बारे मे हो जिसका प्रचार हमने नही किया, या पवित्र आत्मा को छोडकर किसी दूसरी आत्मा के विषय मे हो, या उद्धार पाने का कोई दूसरा मार्ग दर्शाता हो। तुम सब ग्रहण कर लेते हैं। 5 मुझे नही लगता कि ये अद्भुत "परमेश्वर के दूत" जैसे वे अपने आप को कहते हैं, मुझसे कही अच्छे हैं। 6 चाहे मैं अच्छा वक्ता न होऊं, तो भी कम-से-कम जानता तो हूं कि मैं क्या कह रहा हूं, जैसा मैं सोचता हूं अब तुम जान गए होगे, क्योकि हमने ऐसा बार-बार प्रमाणित किया है। 7 क्यों मैंने कोई गलती की और अपने आपको निकम्मा कर दिया और तुम्हारी दृष्टि में अपने आपको गिरा दिया इसलिए कि मैंने बिना कुछ लिए परमेश्वर के शुभ सन्देश का तुमको प्रचार किया ? 8,9 लेकिन इसके बदले मैंने दूसरी कलीसियाओ का भेजा हुआ धन तुम्हारे साथ रहते हुए उसे खर्च किया है, ताकि मैं बिना खर्च तुम्हारी सेवा कर सकूं। और जब वह भी खर्च हो चुका और मैं भूखा रहा तब भी मैंने कभी तुमसे कुछ नही मागा, क्योकि मकिदुनिया के मसीही मेरे लिए दूसरी भेंट ले आए। मैंने तुमसे कभी एक पैसा तक नही मांगा और न कभी मांगूगा। 10 मैं पूरी सच्चाई से यह प्रतिज्ञा करता हूं—मैं इसके बारे मे यूनान मे सबको बताऊंगा। 11 क्यों ? क्या इसलिए कि मैं तुमसे प्रेम नही रखता ? परमेश्वर जानता है कि मैं रखता हूं। 12 परन्तु मैं ऐसा इसलिए करूंगा कि उनके घमण्ड करने का आधार मिटा दूं। जो कहते हैं कि वे परमेश्वर का काम ठीक उसी प्रकार कर रहे हैं जिस प्रकार हम कर रहे हैं। 13 परमेश्वर ने उन व्यक्तियो को कदापि नही भेजा, वे धूर्त हैं जिन्होने तुम्हें धोखे मे डाला है कि तुम उन्हें मसीह के प्रेरित सोचो। 14 तो भी मुझे आश्चर्य नही होता। शैतान अपने आप को ज्योति के स्वर्गदूत के रूप मे बदल सकता है, 15 इसलिए कोई आश्चर्य नही कि उसके सेवक भी ऐसा कर सकते हैं, और धर्मी सेवकों के समान दिख सकते हैं। अन्त मे वे अपने दुष्ट कामों के योग्य पूरा-पूरा दण्ड पाएगे।

16 मैं फिर बिनती करता हू, मत सोचो कि इस प्रकार बात करने मे मेरी बुद्धि फिर गई है, परन्तु यदि सोचते भी होगे, तो मुझ—मूर्ख की सुनो जबकि मैं भी थोडा घमण्ड कर रहा हूं जैसा वे करते हैं। 17 ऐसी घमण्ड भरी बातें करने की आज्ञा मुझे प्रभु से नही मिली है, क्योंकि मैं मूर्ख के समान व्यवहार कर रहा हूं: 18 तो भी ये दूसरे व्यक्ति तुम्हें बताते रहते हैं कि वे कितने अनोखे हैं, इसलिए मैं कहता हूं: 19,20, (तुम सोचते हो कि तुम बहुत बुद्धिमान हो—तो भी तुम आनन्द के साथ उन मूर्खो की सुनते हो, तुम सब सह लेते हो जब वे तुम्हें अपने दास बनाते हैं, और तुम्हारा सब छीन लेते हैं, और तुमसे लाभ उठाते है, और अपने गाल बजाते हैं, और तुम्हारे मुह पर थप्पड मारते हैं। 21 मुझे यह कहने मे लज्जा आती है कि मैं वैसा सामर्थी और साहसी नहीं हूं। परन्तु जिन बातो का वे घमण्ड कर सकते हैं—मैं फिर मूर्ख जैसा कह रहा हू—उन बातों का मैं भी घमण्ड कर सकता हू।) 22 वे अपनी बडाई करते हैं कि वे इब्रानी हैं ? तो मैं भी हूं। और वे कहते हैं कि वे इस्राएली, परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं ?

वैसा ही मैं भी हूं। और वे इब्राहीम के वंश के हैं, मैं भी हूं। 23 वे कहते हैं कि मसीह की सेवा करते हैं, परन्तु मैंने उसकी सेवा कहीं अधिक की है। (क्या मैं पागल हो गया हूं कि इस प्रकार घमण्ड करता हूं ?) मैंने उनसे अधिक परिश्रम किया है, उनसे अधिक जेलखाने में डाला गया हूं, असंख्य बार मैंने कोड़े खाये हैं, और बार-बार मृत्यु का सामना किया है। 24 पांच बार अलग अलग समय में यहूदियों ने मुझे भयानक उन्तालीस-उन्तालीस कोड़े मारे। 25 तीन बार मुझे बेंत से मारा गया। एक बार मुझे पत्थरवाह किया गया। तीन बार मेरा जहाज टूट गया। एक बार मैं बीच स मुद्र में सारी रात और पूरे दिन तक रहा। 26 मैंने मीलों की यात्रा की है और कई बार बाढ़ के खतरों में घिरा, और डाकुओं का, और अपने लोगों, यहूदियों का, साथ ही अन्य जातियों का जोखिम उठाना पड़ा है। मैंने शहरों की दंगा करने वाली भीड़ का, और निर्जन स्थानों में मृत्यु का और समुद्र की आंधी का और उन मनुष्यों का खतरा सहा है जो मसीह में भाई होने का दावा करते हैं परन्तु हैं नहीं। 27 मैंने थकावट और दुःख भरे दिन और जागते हुए रातें काटी हैं। बार-बार मैं भूखा और प्यासा रहा, कई बार मैं बिना गर्म कपड़ों के ठंड में ठिठुरता रहा। 28 फिर, इन सबके सिवाय, मुझे निरन्तर चिन्ता बनी रहती है कि कलीसियाएं किस प्रकार चल रही हैं: 29 वह कौन है जो गलती करता है और मैं उसके लिए उदास नहीं होता। कौन गिर जाता है जिसकी सहायता करने का मैं इच्छुक नहीं रहता ? कौन है जिसे आत्मिक चोट पहुंचती है और मुझे पहुंचानेवालों पर क्रोध नहीं आता ? 30 परन्तु यदि मुझे घमण्ड करना ही है, तो मैं सबसे अधिक अपनी निर्बलता दर्शाने वाली बातों पर घमण्ड करूंगा। 31 हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता, परमेश्वर, जिसकी प्रशंसा सदा सर्वदा तक होती है, जानता है कि मैं सच कहता हूं। 32 उदाहरण के लिए, दमिश्क में अरितास राजा के समय के राज्यपाल ने मुझे पकड़ने के लिए नगर-द्वार पर पहरे लगवाए, 33 परन्तु मुझे शहरपनाह के एक छेद में से टोकरी और रस्सी के द्वारा उतारा गया और इस प्रकार मैं बच निकला।

12 1 यह सारा घमण्ड करना कितना मूर्खतापूर्ण है, परन्तु मुझे करने दो। मुझे अपने दर्शनों के विषय में जो मुझे मिले, और प्रभु की ओर से मिले प्रकाशन के बारे में बताने दो। 2, 3 चौदह वर्ष पहले मुझे घूमने के लिए स्वर्ग ले जाया गया। मुझ से मत पूछो कि मेरी देह वहां गई या केवल मेरी आत्मा, क्योंकि मैं नहीं जानता, केवल परमेश्वर ही इसका उत्तर दे सकता है। परन्तु तौभी, मैं वहां स्वर्गलोक में था, 4 और मैं ने इतनी आश्चर्य-जनक बातें सुनी जो मनुष्य के वर्णन करने और शब्दों में कहने की शक्ति से बाहर है (और वैसे मुझे इनको दूसरों को बताने की आज्ञा नहीं है।) 5 वह अनुभव ही कुछ ऐसा है जो घमण्ड करने योग्य है, परन्तु मैं ऐसा नहीं करूंगा। मैं तो केवल यही घमण्ड करूंगा कि मैं कितना दुर्बल हूं और अपनी महिमा के लिए ऐसी दुर्बलता को काम में लाने के लिए परमेश्वर कितना महान है। 6 घमण्ड करने के लिए तो मेरे पास बहुत सी बातें हैं और करने पर मूर्ख नहीं ठहरूंगा, परन्तु मैं नहीं चाहता कि कोई मेरे जीवन और मेरे सन्देश को वास्तव में देख कर जैसा सोचना चाहिए उससे बढ़कर मेरे विषय में सोचे। 7 मैं यह कहूंगा : इसलिए कि ये अनुभव जो मुझे हुए इतने महान थे, और इसलिए कि उनके कारण मैं फूल न जाऊं, मेरे शरीर में बीमारी का एक कांटा-सा चुभाया गया अर्थात शैतान का एक दूत जो मुझे कष्ट पहुंचाए और मेरे घमण्ड को चूर करे। 8 तीन बार अलग-अलग समय में मैंने परमेश्वर से विनती की कि मुझे फिर चंगा कर दे। 9 हर बार उसने कहा, "नहीं। परन्तु मैं तेरे

साथ हूं, तेरे लिए इतना ही बहुत है : दुर्बल लोगो में मेरी सामर्थ सबसे उत्तम रीति से प्रगट होती है ।" अब मैं यह घमण्ड करता हू कि मैं कितना दुर्बल हू, अपनी शक्ति और योग्यता को दर्शाने के बदले मसीह की सामर्थ का जीवता उदाहरण बनने में मुझे हर्ष है। *10 अब यह जानकर कि सब कुछ मसीह के भले के लिए है* मुझे अपने "काटे" के बारे, अनादर और *कठिनाइयों, क्लेशों और समस्याओ के विषय मे* हर्ष है, क्योंकि जब मैं निर्बल हूं, तभी मैं सामर्थी हू—जितना कम मेरे पास है, उतना ही अधिक *मैं मसीह पर निर्भर रहता हूं ।*

11 इस प्रकार बडाई करने में—तुमने मुझे मूर्ख जैसा बना दिया है—क्योंकि चाहिए तो था कि तुम लोग मेरे विषय मे लिखते और मुझे अपने बारे मे लिखना न पडता । कोई भी ऐसी बात नही है जो इन अद्‌भुत लोगों मे है और मुझ में नही है, यद्यपि मैं वास्तव में बिलकुल अयोग्य हूं । 12 जब मैं वहां था तब मैंने निश्चय ही तुमको हर प्रमाण दिया कि मैं स्वयं परमेश्वर *की ओर से तुम्हारे पास भेजा गया, सचमुच एक* प्रेरित हू क्योंकि मैंने धीरज के साथ तुम्हारे बीच बहुत से आश्चर्यकर्म और चिन्ह और सामर्थ के काम किए। 13 केवल एक ही बात मैंने तुम्हारे लिए नही की, जो मैं बाकी हर कहीं सब कलीसियाओ में करता हू कि मैं, तुम पर बोझ नही बना—मैंने तुममें भोजन और ठहरने का स्थान नही मांगा। मेरी इस गलती के लिए कृपा कर मुझे क्षमा करो ।

14 अब मैं फिर तुम्हारे पास, तीसरी बार आ रहा हूं, और अब भी तुम पर बोझ नही बनूंगा, क्योंकि मैं तुम्हारा पैसा नही चाहता, मैं तुम्हें चाहता हूं। और फिर भी, तुम मेरे बच्चे हो, और छोटे बच्चे अपने माता-पिता के भोजन के लिए कुछ पैसे नही देते—परन्तु माता पिता ही अपने बच्चों का भोजन जुटाते हैं। *15 मैं तुम्हारी आत्मिक भलाई के लिए* अपने आप को और जितना मेरे पास है सब देने को प्रसन्न हूं, यद्यपि ऐसा जान पड़ता है कि मैं जितना अधिक तुमसे प्रेम करता हूं, उतना ही कम तुम मुझसे प्रेम करते हो। 16 तुममें से कई कह रहे हैं, "यह सच है कि उसके यहां आने से हमें कुछ देना नही पडा, परन्तु वह पौलुस, बडा कपटी व्यक्ति है, और उसने हमे धोखा दिया । हो न हो उसने किसी न किसी प्रकार से हमसे पैसा कमाया होगा ।" 17 परन्तु *कैसे ? जिन व्यक्तियों को मैंने* तुम्हारे पास भेजा था क्या उनमे से किसी ने भी तुम से अनुचित लाभ उठाया ? 18 जब मैंने तीतुस को तुमसे *भेंट करने भेजा और दूसरे भाई को भी उसके* साथ भेजा, तब क्या उन्होंने कुछ लाभ कमाया ? नही, कदापि नही । क्योंकि हममे एक ही पवित्र *आत्मा है, और हम एक-दूसरे के क़दमो पर* चलते, और एक जैसे काम करते हैं ।

19 मेरे विचार से तुम सोचते हो कि मैं यह सब तुम्हारी कृपा दृष्टि, फिर से पाने के लिए लिख रहा हूं। ऐसा कदापि नही है। प्रिय मित्रो, परमेश्वर की उपस्थिति मे मैं तुम से कहता हू कि मैंने *यह तुम्हारी सहायता के* लिए—तुम्हें आत्मिक रूप से दृढ़ करने के लिए कहा है, अपनी सहायता के लिए नहीं । *20 क्योंकि मुझे डर है कि जब मैं तुमसे भेंट* करने के लिए आऊंगा तो जैसा चाहता हू वैसा नही पाऊंगा, और तब मुझे जिस प्रकार का व्यवहार करना पड़ेगा उसे तुम नही चाहोगे । मुझे डर है कि मैं तुम्हे लड़ते हुए, और एक-दूसरे मे जलन रखते हुए, और आपस मे क्रोध करते हुए, और अपने को बडा जताते हुए और एक दूसरे की बुराई करते हुए और एक दूसरे की पीठ पीछे बोलते हुए, झूठे घमण्ड और फूट मे भरे हुए पाऊंगा। 21 हां मुझे डर है कि *जब मैं आऊंगा तब परमेश्वर मुझे तुम्हारे* सामने दीन करेगा और मुझे दुःख और शोक होगा क्योंकि तुममे से जिन्होंने पाप किया और अपने बुरे, गन्दे कामों के विषय मे जो तुमने किए , अपनी वासना और अनैतिकता, और

दूसरे पुरुषों की पत्नियों को अपनी बना लेने के विषय में तुम्हे चिन्ता तक नहीं है।

13 1 अब तीसरी बार मैं तुमसे भेंट करने के लिए आ रहा हूं। पवित्रशास्त्र में लिखा है कि यदि दो या तीन ने किसी को गलत काम करते देखा है, तो उसको दण्ड मिलना चाहिए। 2 जब पिछली बार मैं वहा था तो मैंने पहले ही उन लोगों को चेतावनी दी थी जो पाप कर रहे थे, अब मैं फिर से उनको और दूसरो को भी चेतावनी देता हूं, जैसी मैंने उस समय दी थी, कि इस बार बडी कठोरता से दण्ड देने के लिए तैयार होकर आ रहा हू और उनको नही छोडूंगा। 3 मैं तुम सबको वह प्रमाण दूंगा जो तुम चाहते हो कि मसीह मेरे द्वारा बोलता है। तुम्हारे साथ अपने व्यवहार में मसीह निर्बल नही है, परन्तु तुममे महान सामर्थ है। 4 उसकी निर्बल, मानवीय देह क्रूस पर मर गई, परन्तु अब वह परमेश्वर की महान सामर्थ के द्वारा जीवित है। हम भी, अपनी देह मे निर्बल हैं, जैसा वह था, परन्तु अब हम जीवित हैं और शक्तिशाली हैं, और हममे तुम्हारे साथ व्यवहार करने के लिए परमेश्वर की पूर्ण सामर्थ है। 5 अपनी जाच करो। क्या तुम वास्तव मे मसीही हो? क्या तुम जाच मे सच्चे निकलते हो? क्या तुम अपने भीतर मसीह की उपस्थिति और सामर्थ का अधिक मे अधिक अनुभव करते हो? या क्या तुम केवल मसीही होने का ढोंग रचते हो जबकि वास्तव मे तुम बिलकुल नही हो? 6 मेरी आशा है तुम सहमत होगे कि मैं जाच मे सच्चा निकला हूं और सचमुच प्रभु का हूं। 7 मेरी प्रार्थना है कि तुम अच्छा जीवन बिताओ, इसलिए नहीं कि वह हमारी बडाई का कारण हो[1], यह सिद्ध करते हुए कि जो हम सिखाते हैं वह सही है, नहीं, क्योकि हम चाहते हैं कि तुम अच्छे काम करो भले ही हमारा अनादर हो। 8 हमारा काम है कि हम सब समय सही बात को प्रोत्साहन दें, बुराई की आशा न करें[2] 9 यदि तुम सचमुच सामर्थी हो तो हम निर्बल और तुच्छ होने से प्रसन्न हैं। हमारी सबसे बड़ी इच्छा और प्रार्थना है कि तुम परिपक्व मसीही बनो। 10 मैं अब यह तुम्हे इस आशा से लिख रहा हूं कि जब मैं आऊं तब मुझे डाटने और दण्ड देने की आवश्यकता न रहे, क्योकि मैं प्रभु के अधिकार को जिसे उसने मुझे दिया है, तुम्हें दण्ड देने के लिए नही परन्तु तुम्हें सामर्थी बनाने के लिए काम मे लाना चाहता हूं।

11 मैं इन अन्तिम शब्दों के साथ यह पत्र समाप्त करता हू: आनन्दित रहो। मसीह में बढो। जो कुछ मैंने लिखा उस पर ध्यान दो। शान्ति और मेल से रहो। प्रेम और शान्ति का परमेश्वर तुम्हारे साथ रहे। 12 प्रभु मे एक दूसरे को प्रेमपूर्वक नमस्कार करो। 13 यहा के सब मसीही तुम्हे अपना नमस्कार कहते हैं। 14 हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब के साथ बना रहे। परमेश्वर का प्रेम और आत्मा की संगति तुम्हारी हो।

विनीत, पौलुस

[1] मूलत "इसलिए नही, कि हम खरे दिखें।" [2] मूलत· "क्योंकि हम सत्य के विरोध मे कुछ नहीं कर सकते, पर सत्य के लिए कर सकते हैं।"

गलतियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

1 1, 2 प्रचारक पौलुस, और यहा के सब दूसरे मसीहियो की ओर से, गलतिया की कलीसिया[1] के नाम पत्री। मैं किसी झुण्ड या सस्था के द्वारा प्रचारक होने के लिए नही बुलाया गया। मेरी बुलाहट स्वय यीशु मसीह, और परमेश्वर पिता की ओर से है, जिसने उनको मरे हुओं में से जिलाया। 3 परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें शान्ति और आशिष मिले। 4 जो हमारे पापो के लिए मरे जैसा हमारे पिता परमेश्वर का प्रबन्ध था, और उसने हमे इस बुरे संसार से जिसमे हम रहते है, छुडाया। 5 युगानुयुग परमेश्वर की महिमा होती रहे। आमीन।

6 मुझे आश्चर्य है कि तुम परमेश्वर से इतनी जल्दी फिर रहे हो, जिसने अपने प्रेम और दया से तुम्हे बुलाया कि उस अनन्त-जीवन के भागी हो जिसे वह मसीह के द्वारा देता है: तुम पहले ही "स्वर्ग तक पहुंचने के अन्य मार्ग" पर चल रहे हो, जो वास्तव मे स्वर्ग तक कदापि नही जाता। 7 क्योकि जो मार्ग हमने तुम्हे दिखाया उसके अतिरिक्त कोई दूसरा है ही नही, तुम उन लोगो के द्वारा बहकाए जा रहे हो जो मसीह के विषय मे सत्य को तोड-मरोड़ कर बदल डालते है। 8 परमेश्वर का शाप मुझ पर, या उस व्यक्ति पर भी पड़े, जो उद्धार पाने के लिए उस मार्ग को छोड, जिसके विषय मे हमने तुझे बताया, किसी और मार्ग का प्रचार करता है, हा, यदि कोई स्वर्गदूत भी स्वर्ग से आए और किसी दूसरे सन्देश का प्रचार करे, तो वह सदाकाल के लिए शापित हो। 9 मै यह फिर कहूगा: यदि कोई उस सुसमाचार को छोड, जिसे तुमने ग्रहण किया, कुछ और प्रचार करे, तो परमेश्वर का शाप उस पर पडे। 10 तुम देख सकते हो कि मैं मीठी और चिकनी-चुपडी बातें करके तुम्हे प्रसन्न करने का प्रयत्न नही कर रहा हूं, यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयत्न करता हू तो मसीह का दास नही हो सकता था।

11 प्रिय मित्रो, मैं गम्भीरता से दृढता के साथ कहता हू कि स्वर्ग के जिस मार्ग का मैं प्रचार करता हूं वह मनुष्य की किसी कल्पना या स्वप्न पर आधारित नही है। 12 क्योकि मेरा सन्देश किसी मनुष्य की ओर से नही परन्तु स्वयं यीशु मसीह से है, जिन्होंने मुझे बताया कि क्या कहना है 13 तुम जानते हो कि जब मैं यहूदी धर्म पर चलता था तो मैं किस प्रकार का व्यक्ति था कैसे मैं निर्दयता के साथ मसीहियों के पीछे पडता, उनको खोज निकालता और उन सबको मिटा देने का भरसक प्रयत्न करता था। 14 पूरे प्रदेश मे अपनी ही आयु के सबसे अधिक धर्मी यहूदियो मे से मैं एक था, और अपने धर्म की सब पुरानी प्रथाओं और नियमो को मानने का मैं भरसक प्रयत्न करता था। 15 परन्तु अचानक एक घटना घटी! क्योकि इससे पहले कि मैं जन्म लू परमेश्वर ने मुझे अपने लिए चुना—और मुझे बुलाया—(कितनी दया और कितना अनुग्रह का विषय है)—16 कि वह मुझ में अपने पुत्र को प्रकट करे ताकि मैं अन्य जातियो के पास जा सकू और उन्हे यीशु का शुभ-सन्देश बता सकू। जब यह सब मेरे साथ हुआ तो मैंने तुरन्त जा कर उस विषय पर किसी और से बातें नही की। 17 मैं यरूशलेम को नही गया कि (उनसे जो मुझसे पहले प्रेरित थे) सलाह लू। नही, मैं अरब के मरुस्थल मे चला गया, और तब दमिश्क आया।

18 तब तीन वर्ष बाद मैं पतरस से मिलने यरूशलेम को गया। 19 और उस समय मैंने एक अन्य प्रेरित से भेंट की, वह हमारे प्रभु का भाई, याकूब था। 20 (जो मैं कह रहा हू उसे

[1] अभी जो तुर्किस्तान कहलाता है गलतिया उसमे एक प्रान्त था।

सुनो, क्योंकि परमेश्वर की ही उपस्थिति में मैं तुम्हें यह बता रहा हूं।) यह ठीक वैसा ही है जैसा हुआ—मैं तुमसे झूठ नहीं बोल रहा हूं।) 21 तब इस भेंट के बाद मैं सूरिया और किलिकिया मे गया। 22 और तब तक यहूदिया के मसीही जानते तक न थे कि मैं कैसा दिखता हू। 23 वे केवल इतना ही जानते थे, जो लोग कहते थे, कि "हमारा पुराना शत्रु अब उसी विश्वास का प्रचार कर रहा है जिसे नाश करने का उसने प्रयत्न किया था।" 24 और उन्होने मेरे कारण परमेश्वर की महिमा दी।

2 1 तब चौदह वर्ष बाद मैं फिर वापिस यरूशलेम लौटा, इस बार बरनबास के साथ, और तीतुस भी संग गया। 2 मैं परमेश्वर के निश्चित आदेश से वहा गया कि उस सन्देश के सम्बन्ध में भाइयों से सलाह लूं जिसका प्रचार मैं अन्यजातियों को कर रहा था। मैंने कलीसिया के अगुओं से गुप्त रूप से बात-चीत की ताकि जो शिक्षा मैं दे रहा था उसे वे समझें, और मेरी आशा थी कि वे उसे ठीक समझकर उससे सहमत होंगे। 3 और वह सहमत भी हुए, उन्होंने इतनी भी माग नही की, कि मेरे साथी तीतुस का खतना किया जाए, यद्यपि वह अन्य-जाति था। 4 यह प्रश्न तो न उठता परन्तु केवल कुछ नामधारी मसीहियों के कारण उठा जो हमारा भेद लेने और यह देखने आए कि हम यहूदी व्यवस्था को मान रहे हैं या नही मान रहे हैं, मसीह यीशु मे किस स्वतन्त्रता का आनन्द ले रहे हैं। उन्होंने यह प्रयत्न किया कि जंजीरों से बन्धे हुए दास के समान हमें अपने नियमों से बाध लें। 5 परन्तु हमने एक क्षण भी उनकी न सुनी, क्योंकि हम नहीं चाहते थे कि तुम सोचने लगो कि खतने के द्वारा और यहूदी व्यवस्था को मानने के द्वारा उद्धार प्राप्त हो सकता है। 6 और कलीसिया के बड़े अगुओं ने, जो वहा थे, मेरे प्रचार मे कुछ और नही जोड़ा। (फिर, उनके बड़े अगुवे होने से मुझे कोई अन्तर नही पड़ा, क्योकि परमेश्वर के लिए सब समान हैं।) 7, 8, 9 वास्तव मे जब पतरस, याकूब और यूहन्ना ने, जो कलीसिया के खम्भे माने जाते थे, देखा कि परमेश्वर ने अन्यजातियो को जीतने के लिए मुझे कितना अधिक काम मे लिया, जिस प्रकार यहूदियों को प्रचार करने में पतरस को बहुत अधिक आशिष मिली थी—क्योकि एक ही परमेश्वर ने हममें से हरएक को हमारा विशेष वरदान दिया—तो उन्होंने बरनबास और मुझसे हाथ मिलाया और हमें उत्साहित किया कि हम अन्यजातियो को प्रचार करने मे लगे रहें जबकि वे यहूदियो के साथ अपने काम मे लगे रहे। 10 केवल जो सलाह उन्होंने दी वह यह कि हम गरीबो की सहायता करना सदा स्मरण रखें, और मैं भी, इसके लिए उत्सुक था।

11 परन्तु जब पतरस अन्ताकिया मे आया तो मुझे सबके सामने, जो कुछ वह कह रहा था, उसका कड़ा विरोध करना पड़ा और ज़ोर देकर कहना पड़ा क्योकि उसका काम बहुत गलत था। 12 क्योकि जब वह पहले पहुचा तो उसने अन्यजाति-मसीहियो के साथ भोजन किया (जो खतने की और दूसरे अनेक यहूदी नियमो की चिन्ता नही करते)। परन्तु बाद मे जब याकूब के कई यहूदी मित्र आए, तो उसने फिर अन्यजातियों के साथ भोजन करना न चाहा क्योंकि उसे डर था कि धर्म के कट्टर यहूदी क्या कहेंगे, जो ज़ोर देते थे कि उद्धार के लिए खतना आवश्यक है। 13 और तब सब दूसरे यहूदी मसीही और बरनबास तक, पतरस का उदाहरण अपनाकर पाखन्डी बन गए, यद्यपि वे सच्चाई जानते थे। 14 जब मैंने देखा कि क्या हो रहा है और वे जो वास्तव मे विश्वास करते हैं उसके प्रति ईमानदार नही हैं, और शुभ-सन्देश के सत्य पर नही चल रहे है, तो मैंने सबके सामने पतरस से कहा, यद्यपि तू जन्म से यहूदी है, तौभी तूने बहुत पहले ही यहूदी नियमो को छोड़ दिया है, फिर क्यो, अचानक, तू यह

प्रयत्न कर रहा है कि ये अन्यजाति उनका पालन करें ? 15 तू और मैं जन्म से यहूदी हैं, पापी अन्यजाति नही, 16 और तौभी हम यहूदी मसीही अच्छी तरह जानते हैं कि यहूदी-व्यवस्था को मानने से हम परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नही बन सकते हैं। परन्तु केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने से जो हमे पापों मे छुडाता है और इसलिए हमने भी, यीशु मसीह पर भरोसा रखा है कि विश्वास के कारण हम परमेश्वर के द्वारा ग्रहण किए जाएं—यहूदी-व्यवस्था का पालन करने के द्वारा नही। क्योंकि उनका पालन करने से कोई कभी उद्धार नही पाएगा। 17 और क्या होगा यदि हम अपने उद्धार के लिए मसीह पर भरोसा रखें और तब जानें कि हम गलती पर हैं, और कि हम खतना कराए बिना और सब दूसरे यहूदी नियमों को माने बिना उद्धार नही पा सकते ? क्या हम यह न कहेंगे कि मसीह पर विश्वास ने हमे नाश कर दिया ? परमेश्वर न करे कि हमारे प्रभु के विषय मे ऐसी बातें सोचने का कोई साहस तक करे। 18 परन्तु इसकी अपेक्षा, यदि हम यहूदी-व्यवस्था को मानने के द्वारा उद्धार पाने की उन पुरानी रीतियों को, जिनको मैं नष्ट कर रहा हू, फिर से बनाना आरम्भ कर दें तो हम पापी ठहरेंगे, 19 क्योकि पवित्रशास्त्र को पढ़ने ही के द्वारा मैंने जाना कि व्यवस्था को मानने का प्रयत्न करने—और असफल हो जाने के द्वारा—हम परमेश्वर की कृपा कभी नही पा सकते। मैंने यह समझ लिया कि मसीह पर विश्वास करने के द्वारा ही परमेश्वर हमे ग्रहण करता है*। 20 मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं: और मैं स्वयं अब जीवित नही हूं, परन्तु मसीह मुझ मे जीवित है। और जो वास्तविक जीवन अभी मेरी इस देह मे है वह परमेश्वर के पुत्र पर, जिसने मुझसे प्रेम किया और अपने आप को मेरे लिए दे दिया, विश्वास रखने का परिणाम है। 21 मैं उनमें से नही हू जो मसीह की मृत्यु को व्यर्थ समझते हैं। क्योंकि यदि यहूदी-व्यवस्था का पालन करने से हम उद्धार पा सकते, तो मसीह को मरने की कोई आवश्यकता ही नही थी।

3 1 अरे मूर्ख गलतियो ! किस जादूगर ने तुमको मोहित किया और तुम पर टोना किया है ? क्योकि तुम तो यीशु मसीह की मृत्यु का अर्थ इतनी स्पष्टता से समझते थे कि मानो मैंने तुम्हारे सामने क्रूस पर मसीह की मृत्यु का चित्र खीच रखा हो। 2 मुझे तुमसे एक प्रश्न पूछना है: क्या तुमने यहूदी-व्यवस्था को मानने का प्रयत्न करने के द्वारा पवित्र-आत्मा पाया ? कदापि नही; क्योकि पवित्र-आत्मा तुम पर उसके बाद ही आया जब तुमने मसीह के विषय मे सुना और अपने उद्धार के लिए उस पर विश्वास रखा। 3 तब क्या तुम इतने मूर्ख हो गए हो ? क्योकि यदि यहूदी-व्यवस्था को मानने का प्रयत्न करने से पहले ही तुम्हे कभी आत्मिक जीवन नही मिला, तो फिर क्यों सोचते हो कि *अब उनको मानने का प्रयत्न करने से तुम* शक्तिशाली मसीही बन जाओगे ? 4 तुमने सुसमाचार के लिए बहुत दुःख सहा है। अब क्या तुम उस सब को भूल जाना चाहते हो ? मुझे ऐसा विश्वास ही नही होता। 5 मैं तुमसे फिर पूछता हूं, क्या परमेश्वर तुम्हारे यहूदी-नियमो को मानने का प्रयत्न करने ही के कारण तुम्हे पवित्र आत्मा की सामर्थ देता है और तुम्हारे बीच मे आश्चर्यकर्म करता है ? नही, कदापि नही। ऐसा तभी होता है जब तुम मसीह मे विश्वास करते और उस पर पूरी रीति से विश्वास रखते हो। 6 इब्राहीम का भी ऐसा ही अनुभव था—परमेश्वर ने उसे स्वर्ग के योग्य केवल इसीलिए ठहराया क्योकि उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास किया। 7 इससे तुम जान सकते हो कि इब्राहीम की सच्ची सन्तान वे सब विश्वासी हैं जो वास्तव मे परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं। 8, 9 इससे बढ़कर, पवित्रशास्त्र मे

* मूलत "मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिए मर गया, कि परमेश्वर के लिए जीऊं।"

इस समय की प्रतीक्षा थी जब परमेश्वर अन्य-जातियों का भी उनके विश्वास के द्वारा उद्धार करेगा। परमेश्वर ने इसके विषय में इब्राहीम को बहुत समय पहले बताया था, "तुम्हारी तरह सब जातियों में जो मुझ पर विश्वास करते हैं, आशिष दूगा।" और ऐसा ही है : जितने मसीह पर विश्वास करते हैं उस आशिष में सहभागी होते हैं जो इब्राहीम को मिली। 10 हां और जितने अपने उद्धार के लिए यहूदी व्यवस्था पर निर्भर रहते हैं वे परमेश्वर के स्राप के आधीन हैं, क्योंकि पवित्रशास्त्र मे बहुत स्पष्ट रीति से प्रकट है, स्रापित है हर व्यक्ति जो किसी भी समय परमेश्वर की (व्यवस्था की) पुस्तक मे लिखे इन नियमों में से किसी एक को भी तोड़ता है। 11 इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि यहूदी-व्यवस्था को मानने का प्रयत्न करने के द्वारा कोई कभी परमेश्वर की दया नही पा सकता, क्योंकि परमेश्वर ने कहा है कि उनकी दृष्टि में धर्मी बनने का एक ही मार्ग है, और वह है विश्वास। जैसा भविष्यद्वक्ता हबक्कूक ने कहा है, जो व्यक्ति जीवन पाता है वह उसे परमेश्वर पर भरोसा रखने के द्वारा ही पाता है। 12 विश्वास की अपेक्षा व्यवस्था का मार्ग कितना भिन्न है जिसके अनुसार बिना चूके, परमेश्वर की हर व्यवस्था का पालन करने से व्यक्ति उद्धार पाता है। 13 परन्तु मसीह ने हमारे पापों का शाप अपने ऊपर लेने के द्वारा हमें शाप से बचाया है। क्योंकि पवित्रशास्त्र मे लिखा है, जो कोई वृक्ष पर लटकाया जाए वह शापित है (जैसा यीशु लकड़ी के बने क्रूस पर लटकाए गए)। 14 अब परमेश्वर इसी आशिष से, जिसकी प्रतिज्ञा उसने इब्राहीम को दी, अन्यजातियों को भी आशिषित कर सकता है, और मसीही होने के नाते हम सब इस विश्वास के द्वारा इस प्रतिज्ञा के पवित्र आत्मा को पा सकते हैं।

15 प्रिय भाइयो, यहां तक कि दैनिक जीवन मे भी एक व्यक्ति की दूसरे से की गई प्रतिज्ञा यदि लिखी गई हो और उस पर हस्ताक्षर हो चुके हों, तो नही बदली जा सकती। उसके बदले बाद में कुछ और करने का निर्णय वह नही ले सकता। 16 अब परमेश्वर ने इब्राहीम और उसके पुत्र को कुछ प्रतिज्ञाएं दीं : और ध्यान दो कि ऐसा नही लिखा है कि प्रतिज्ञाएं उसके वंश को दी गईं तब तो उसमे सारे यहूदी सम्मिलित होते परन्तु एक सन्तान को दी गई अर्थात मसीह को। 17 मैं जो कहने का प्रयत्न कर रहा हू वह यह है:विश्वास के द्वारा उद्धार करने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा—और परमेश्वर ने इस प्रतिज्ञा को लिख दिया और उस पर हस्ताक्षर किये—चार सौ तीस वर्षों के बाद भी जिस समय परमेश्वर ने दस-आज्ञाएं दी थी, बदली या तोड़ी नही जा सकती। 18 यदि इस व्यवस्था का पालन करने से हमारा उद्धार हो सकता है, तब तो स्पष्ट है कि परमेश्वर की कृपा प्राप्त करने का यह इब्राहीम के मार्ग से दूसरा मार्ग भिन्न होता, क्योंकि इब्राहीम ने केवल परमेश्वर की प्रतिज्ञा को ग्रहण किया। 19 अच्छा तो फिर व्यवस्था क्यो दी गई ? यह प्रतिज्ञा दिए जाने के बाद दी गई, मनुष्यों को यह दिखाने के लिए कि वे परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लघन करने के कितने दोषी हैं। परन्तु व्यवस्था की यह प्रथा केवल मसीह के आने तक ही लागू थी अर्थात उस सन्तान तक जिसमे परमेश्वर की प्रतिज्ञा की गई थी। और एक अन्तर यह भी है। परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था मूसा को देने के लिए स्वर्गदूतों को दी, जिसने तब उसे लोगों को दिया, 20 परन्तु जब परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा इब्राहीम को दी, तो उसने ऐसा स्वय किया अर्थात बिना स्वर्गदूतों के। 21, 22 तो क्या परमेश्वर की व्यवस्था और परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं एक दूसरे के विरुद्ध हैं ? कदापि नही ! यदि हम उसकी व्यवस्था के द्वारा उद्धार पा सक्ते, तो परमेश्वर को हमे पाप की जकड़ से निकालने के लिए कोई दूसरा मार्ग नही देना पड़ता—क्योंकि पवित्रशास्त्र मे दृढता से लिखा है कि हम सब उसके क़ैदी हैं। उससे निकलने का एक ही मार्ग

है अर्थात यीशु मसीह पर विश्वास करना। अतः बच निकलने का मार्ग सबके लिए खुला है जो उन पर विश्वास करते हैं।

23 मसीह के आने तक व्यवस्था के द्वारा हमारी चौकसी हुई, आने वाले उद्धारकर्ता पर विश्वास लाने तक हम उसकी शरण मे रखे गए। 24 मुझे इसे दूसरे प्रकार से कहने दो। हमारे विश्वास के द्वारा, परमेश्वर की दृष्टि मे हमे धर्मी ठहराने के लिए मसीह के आने तक यहूदी-व्यवस्था हमारा शिक्षक और अगुवा थी। 25 परन्तु अब इसलिए कि मसीह आ चुका, हमे उस तक पहुंचाने और हमारी चौकसी करने के लिए इस व्यवस्था की अब अधिक आवश्यकता नही। 26 क्योकि अब यीशु मसीह मे विश्वास के द्वारा हम सब परमेश्वर की सन्तान हैं, 27 और हम जिन्होने मसीह के साथ एक होकर बपतिस्मा लिया है उसके द्वारा ढापे गए है। 28 हम फिर यहूदी या यूनानी, दास या स्वतन्त्र या केवल स्त्री या पुरुष तक नही रहे, परन्तु हम सब समान हो गए—हम मसीही हैं, हम मसीह यीशु मे एक हैं। 29 और अब इसलिए कि हम मसीह के हैं हम इब्राहीम के वास्तविक वशज हैं, और उसको दी गई परमेश्वर की सारी प्रतिज्ञाए हमारी हैं।

4 1 परन्तु इतना याद रखो, कि यदि कोई पिता मर जाए और अपने छोटे पुत्र के लिए अपार धन-सम्पत्ति छोड जाए, तौभी जब तक वह बडा न हो तब तक दास से बढकर नहीं, यद्यपि जितना उसके पिता का था वह सब वास्तव में उसका है। 2 जैसा उसके संरक्षक बताएं वैसा ही उसे करना पड़ेगा, जब तक वह अपने पिता की ठहराई हुई आयु का न हो ले। 3 और मसीह के आने से पहले हमारी भी यही स्थिति थी। हम यहूदी व्यवस्था और रीति—विधियों के दास थे क्योकि हम सोचते थे कि उनके द्वारा हमारा उद्धार हो सकता है। 4 परन्तु जब उचित समय आया, अर्थात परमेश्वर के द्वारा ठहराया गया समय, तब उसने अपने पुत्र को भेजा, जो व्यवस्था के आधीन एक स्त्री से यहूदी होकर जन्मा। 5 ताकि हमारे लिए, जो व्यवस्था के दास थे, वह स्वतन्त्रता मोल ले जिससे वह हमे अपने निज पुत्रों के समान गोद ले सके। 6 और इसलिए कि हम उसके पुत्र हैं परमेश्वर ने हमारे हृदयों मे अपने पुत्र का आत्मा भेजा है, इसलिए अब सही री से परमेश्वर को अपना प्रिय-पिता कह सकते हैं। 7 अब हम फिर दास नही रहे, परन्तु परमेश्वर के निज पुत्र हैं। और इसलिए कि हम उसके पुत्र हैं, जो कुछ उसका है वह सब हमारा है, क्योकि परमेश्वर ने इसी प्रकार प्रबन्ध किया है।

8 तुम अन्यजाति, परमेश्वर को जानने मे पहले, नाम के ईश्वरों के दास थे जिनका अस्तित्व तक नही था। 9 और अब जबकि तुमने परमेश्वर को पा लिया है (या मुझे कहना चाहिए। अब जबकि परमेश्वर ने तुम्हें पा लिया है) यह कैसे हो सकता है कि तुम फिर वापिस जा कर एक बार और दूसरे तुच्छ, निर्बल और व्यर्थ धर्म की ओर फिरो और परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने के द्वारा स्वर्ग जाने का प्रयत्न करो? 10 नियत दिनों, महीनो, ऋतुओं, और वर्षों में तुम जो कुछ करते हो, या नही करते हो, उसके द्वारा तुम परमेश्वर की दया पाने का प्रयत्न कर रहे हो। 11 मुझे तुम्हारे लिए डर है। मुझे भय है कि तुम्हारे लिए मेरा सारा कठिन परिश्रम व्यर्थ गया।

12 प्रिय भाइयो, इन बातों के विषय मे जैसा मैं सोचता हूँ वैसा ही तुम भी सोचो, क्योकि मैं इन बन्धनों से उतना ही स्वतन्त्र हूं जितने तुम पहले थे। तुमने उस समय तो मुझे तुच्छ नही जाना जब मैंने पहले तुमको प्रचार किया, 13 यद्यपि मैंने जब पहले मसीह का शुभ-सन्देश तुम तक पहुचाया तब मैं बीमार था। 14 परन्तु यद्यपि मेरी बीमारी तुम्हारे लिए

कारण थी, तौभी तुमने मुझे तुच्छ नहीं जाना, न ही मुझसे घृणा की । परन्तु तुमने मुझे ग्रहण किया और मेरी इस प्रकार देख-भाल की मानो मैं परमेश्वर की ओर से, या स्वयं मसीह यीशु की ओर से, भेजा गया स्वर्गदूत हूं। 15 वह आनन्द की आत्मा अब कहा है जिसका अनुभव हमने एक साथ मिलकर उस समय किया ? क्योंकि मैं जानता हू कि तुमने मेरी आखों मे लगाने के लिए[1] आनन्द के साथ अपनी आखें तक निकाल कर दे दी होती यदि उनसे मुझे सहायता पहुंचती । 16 और अब क्या मैं तुम्हारा शत्रु बन गया हू क्योंकि मैं तुमको सच्चाई बतलाता हूं ? 17 वे झूठे शिक्षक, जो तुम्हारी कृपा पाने के लिए इतने उत्सुक हैं, यह तुम्हारी भलाई के लिए नही कर रहे हैं । वे जो करने का प्रयत्न कर रहे हैं वह यह कि तुमको मुझसे अलग कर दें ताकि तुम उन पर अधिक ध्यान दे सको। 18 यह अच्छी बात है जब लोग अच्छे उद्देश्यों से और सच्चे मन से तुम्हारे साथ अच्छा बर्ताव करते हैं। 19 आह, मेरे बालकों, तुम मुझे कितना दुख पहुंचा रहे हो। मैं एक बार फिर तुम्हारे लिए उस माता की सी पीडा सह रहा हूं जो अपने पुत्र को जन्म देने पर सहती है। उस समय की इच्छा करते हुए जब तुम अन्त मे मसीह से भरपूर हो जाओगे। 20 मेरी कितनी इच्छा है कि मैं इसी समय तुम्हारे साथ वहा होता और तुम्हारे साथ इस प्रकार मुझे विवाद करना न पडता, क्योंकि इतनी दूर से मैं सच नही जानता कि क्या करूं।

21 हे मेरे मित्रो, जो सोचते हो कि उद्धार पाने के लिए तुम्हें यहूदी-व्यवस्था को मानना ही है तो मेरी सुनो : तुम पता क्यों नहीं लगाते कि उस व्यवस्था का वास्तव मे क्या अर्थ है ? 22 क्योंकि लिखा है कि इब्राहीम के दो पुत्र थे, एक उसकी दासी (पत्नी) की ओर से और एक उसकी स्वतन्त्र-जन्मी पत्नी से । 23 दासी-पत्नी के बच्चे के विषय मे कुछ भी असाधारण नही था। परन्तु स्वतन्त्र-जन्मी पत्नी का बच्चा उसके बाद ही जन्मा जब परमेश्वर ने विशेष रूप से प्रतिज्ञा दी कि उसका जन्म होगा। 24,25 अब यह सच्ची कहानी परमेश्वर के लोगों की दो प्रकार से सहायता करने का उदाहरण है। एक प्रकार तो अपनी व्यवस्था देना था कि वे उसका पालन करें। उसने ऐसा सीनै पर्वत पर किया, जब उसने मूसा को दस आज्ञाएं दीं। संयोगवश, अरब के लोग सीनै पर्वत को "हाजिरा पर्वत" कहते हैं—और मेरे उदाहरण में इब्राहीम की दासी-पत्नी हाजिरा, यरूशलेम को दर्शाती है जो यहूदियों की माता शहर है, और आज्ञाओं को मानने का प्रयत्न करने के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करने के प्रयत्न की प्रथा का केन्द्र है, और जो यहूदी उस प्रथा के पालन करने का प्रयत्न करते हैं, वे उसके दास-पुत्र हैं। 26 परन्तु हमारी माता-शहर स्वर्गीय यरूशलेम है और वह यहूदी व्यवस्था की दासी नही है। 27 यशायाह के इस कथन का यही अर्थ था जब उसने भविष्यवाणी की, "हे बाझ स्त्री, अब तू प्रसन्न हो सकती है, तू हर्ष से चिल्ला सकती है यद्यपि इससे पहले तेरी कभी कोई सन्तान नही हुई। क्योंकि मैं तुझे अनेक सन्तान देने पर हू—उससे अधिक सन्तान जितनी दासी-पत्नी के पास हैं।" 28 प्रिय भाइयो, मैं और तुम इसहाक के समान ऐसी सन्तान हैं जिनकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की। 29 और इसलिए हम जो पवित्र आत्मा से जन्मे हैं जब उन लोगो के द्वारा सताए जाते हैं जो हमसे यहूदी-व्यवस्था का पालन करवाना चाहते हैं, जिस प्रकार प्रतिज्ञा की सन्तान, इसहाक, दासी-पत्नी के पुत्र, इश्माएल, के द्वारा सताया गया। 30 परन्तु पवित्र शास्त्र मे लिखा है कि परमेश्वर ने इब्राहीम से दासी-पत्नी और उसके पुत्र को बाहर निकाल देने को कहा, क्योंकि दासी-पत्नी का पुत्र स्वतन्त्र-स्त्री के पुत्र के साथ इब्राहीम के घर, और भूमि का उत्तराधिकारी नही हो सकता था। 31 प्रिय भाइयो, हम

[1] ऐसा परम्परागत अनुमान है कि आँखों की बीमारी के कारण पौलुस को असुविधा थी।

दास-पुत्र नही हैं जो यहूदी-व्यवस्था के आभारी रहे, परन्तु स्वतन्त्र-स्त्री की सन्तान हैं जो अपने विश्वास के कारण परमेश्वर के ग्रहण योग्य है।

5 1 अत मसीह ने हमे स्वतन्त्र किया है। अब ध्यान रखो कि तुम स्वतन्त्र बने रहो और यहूदी-व्यवस्था और प्रथाओ के बन्धन मे फिर से मत जकड जाओ। 2 मेरी सुनो क्योकि यह गम्भीर बात है: **यदि तुम परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी बनने के लिए खतने पर और यहूदी व्यवस्था का पालन करने पर भरोसा रख रहे हो, तो मसीह तुम्हारा उद्धार नहीं कर सकता।** 3 मैं इसे फिर से कहूगा। खतना कराने के द्वारा जो कोई परमेश्वर की दया पाने का प्रयत्न करता है उसे सदा सारी यहूदी-व्यवस्था का पालन करना होगा या फिर नाश होना पडेगा। 4 यदि तुम इस व्यवस्था का पालन करने के द्वारा परमेश्वर का अपना ऋण चुका देने पर भरोसा कर रहे हो तो तुम्हारे लिए मसीह व्यर्थ है, तुम परमेश्वर के अनुग्रह से गिर चुके हो। 5 परन्तु हम पवित्र आत्मा की सहायता के द्वारा मसीह की मृत्यु पर भरोसा रखे हुए है कि उससे हमारे पाप मिट जाएं और परमेश्वर की दृष्टि मे हम धर्मी बने। 6 और हमे, जिन्हें मसीह ने अनन्त-जीवन दिया है, यह चिन्ता करने की आवश्यकता नही कि हमारा खतना हुआ है या नही, या हम यहूदी प्रथाओ का पालन कर रहे हैं कि नही, क्योकि हमे केवल विश्वास ही की आवश्यकता है जो प्रेम के द्वारा कार्य करे। 7 तुम इतनी अच्छी तरह बढ रहे थे। तुम्हारे मध्य किसने बाधा डाली कि सत्य पर चलने मे तुम्हे रोक ले? 8 निश्चय ही परमेश्वर ने ऐसा नही किया क्योकि वही है जिसने तुम्हें मसीह मे स्वतन्त्र होने के लिए बुलाया। 9 परन्तु तुम्हारे मध्य केवल एक ही बुरा व्यक्ति सब लोगो को भ्रष्ट कर सकता है। 10 मैं प्रभु पर भरोसा रखता हूं कि वह इन बातो के विषय मे मेरे जैसे विश्वास में तुम्हें वापिस ले आये। परमेश्वर उस व्यक्ति के साथ उचित व्यवहार करेगा, जो तुम्हें घबराकर भ्रम में डाल रहा है, चाहे वह कोई क्यों न हो। 11 कुछ लोग तो यहा तक कहते हैं कि मैं आप भी यह प्रचार कर रहा हू कि उद्धार की योजना के लिए खतना और यहूदी-व्यवस्था का पालन आवश्यक है। यदि मैंने यह प्रचार किया होता, तो मुझे फिर नही सताया जाता—क्योकि उस सन्देश मे किसी को ठोकर नही लगती। अतः यह तथ्य, कि मुझे अब भी सताया जा रहा है, सिद्ध करता हैं कि मैं अब भी केवल मसीह के क्रूस पर विश्वास रखने के द्वारा उद्धार का प्रचार कर रहा हूं। 12 मेरी एकमात्र यही इच्छा है कि वे शिक्षक जो चाहते हैं कि तुम खतना कराने के द्वारा अपने आपको काट डालो, वे स्वयं अपने आपको तुमसे अलग कर लें और तुम्हें अकेले छोड दें।[1]

13 क्योकि, प्रिय भाइयो, तुम्हें स्वतन्त्रता दी गई है: बुराई करने की स्वतन्त्रता नही, परन्तु एक-दूसरे से प्रेम करने और सेवा करने की स्वतन्त्रता दी गयी है। 14 क्योकि पूरी व्यवस्था का सार इस एक आज्ञा मे हो सकता है: "जैसा तुम अपने आपसे प्रेम रखते हो वैसा ही दूसरो से भी प्रेम रखो।" 15 परन्तु यदि आपस मे प्रेम दर्शाने के बदले तुम सदा दूसरो के दोष निकालने वाले और दूसरो को काट खाने वाले बनते हो, तो सावधान। चौकस रहो कि एक-दूसरे का नाश न कर डालो।

16 मैं तुम्हें सलाह देता हू कि तुम केवल पवित्र आत्मा के आदेशो को मानो। वह तुम्हें बताएगा कि तुम्हें कहा जाना और क्या करना है, और तब तुम सदा बुरे कामों को ही नही करते रहोगे जिन्हें तुम्हारा बुरा स्वभाव करना चाहता है। 17 क्योकि हम स्वभाव मे ही बुरे कामों को करना चाहते हैं जो उन कामो के बिल्कुल विरुद्ध होते हैं जिन्हें करने को पवित्र आत्मा हमसे कहता है, और जब हम पवित्र आत्मा की मान

[1] या, "अच्छा होता कि जो तुमसे व्याकुल करते है वे जाकर अपने आप को काट लेते।"

कर जिन भले कामों को करना चाहते हैं वे हमारी स्वाभाविक इच्छाओं के ठीक विरुद्ध होते हैं। हमारे अन्दर ये दोनों शक्तियां हम पर जीत पाने के लिए एक-दूसरे से निरन्तर लड़ती रहती हैं, और हमारी इच्छाएं उनके दबाव से कभी मुक्त नहीं होतीं। 18 जब तुम पवित्र आत्मा की अगुवाई से चलते हो तब तुम्हें यहूदी-व्यवस्था को मानने की और अधिक आवश्यकता नहीं रही। 19 और जब तुम अपनी बुरी प्रवृतियों के अनुसार चलोगे तो तुम्हारे जीवन में ये बुरे परिणाम उत्पन्न होंगे अर्थात्: अशुद्ध विचार, लालसा से पूर्ण विलास के लिए उत्सुकता, 20 मूर्तिपूजा, टोना (जो दुष्ट आत्माओं के कामों को बढावा देना है), घृणा और झगडा, जलन और क्रोध, अपने आप के लिए अच्छे से अच्छा पाने का लगातार प्रयत्न, असंतोष और दूसरों की बुराई, ऐसी भावना कि मेरे छोटे झुण्ड को छोड़कर हर व्यक्ति गलत है—और गलत सिद्धांत, 21 ईर्ष्या, हत्या, पियक्कड़पन, भोग विलास और इसी प्रकार के सब दूसरे काम होंगे। जैसा मैंने पहले कह दिया है वैसा ही फिर तुमसे कह दूं, कि इस प्रकार का जीवन बिताने वाला कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकारी नहीं हो सकता। 22 परन्तु जब पवित्र आत्मा हमारे जीवन पर नियंत्रण करेगा तो वह हममे इस प्रकार का फल उत्पन्न करेगा: प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, दया, भलाई, विश्वास, 23 नम्रता और संयम, और *इसमें यहूदी-व्यवस्था से कोई मतभेद नहीं।* 24 जो मसीह के हैं उन्होंने अपनी स्वाभाविक बुरी इच्छाओं को क्रूस पर ठोककर चढा दिया।

25 यदि अब हम पवित्र आत्मा की सामर्थ से जी रहे हैं, तो हम अपने जीवन के हर भाग में पवित्र आत्मा की अगुवाई पर चलें। 26 तब हम बड़ाई और आदर और लोगों मे प्रिय बनना नही चाहेंगे, जिससे जलन और बुरी भावना उत्पन्न होती है।

6 1 प्रिय भाइयो, यदि कोई मसीही किसी पाप में पकड़ा जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, उसे ठीक मार्ग पर फेर लाने में नम्रता और दीनता के साथ उसकी सहायता करो, यह स्मरण रखते हुए कि अगली बार हो सकता है तुममें से कोई गलत काम में पड़ जाए। 2 एक-दूसरे की कठिनाइयों और समस्याओं में साथ दो, और इस प्रकार हमारे प्रभु की आज्ञा मानो। 3 यदि कोई अपने आपको यहाँ तक झुकाने के लिए बहुत बड़ा समझे, तो वह अपने आपको धोखा दे रहा है। वास्तव में उसका महत्व कुछ भी नहीं है। 4 हर व्यक्ति निश्चय जाने कि वह जितना अच्छा कर सकता है उतना कर रहा है या नहीं, क्योंकि तभी उसे अच्छी रीति से किए गए काम का व्यक्तिगत सन्तोष मिलेगा, और उसे दूसरों से अपने आपको मिलाने की आवश्यकता नहीं रहेगी। 5 प्रत्येक को अपने कुछ दोष सहने और बोझ उठाने हैं, क्योंकि हममे से कोई सिद्ध नहीं है।

6 जो परमेश्वर के वचन की शिक्षा पाते हैं, उन्हें अपने शिक्षकों को वेतन देकर सहायता करनी चाहिए। 7 धोखा न खाओ, याद रखो कि तुम परमेश्वर को टाल कर उससे बच नहीं सकते: मनुष्य सदा वही काटेगा जो बोएगा। 8 यदि वह अपनी बुरी इच्छाओं को सन्तुष्ट करने के लिए बोएगा, तो वह बुराई के बीज लगाएगा और वह निश्चय ही आत्मिक पतन और मृत्यु की कटनी काटेगा, परन्तु यदि वह आत्मा की अच्छी बातें बोएगा, तो वह अनन्त जीवन की कटनी काटेगा जिसे पवित्र आत्मा उसे देता है। 9 और हम भले काम करने से न थकें, क्योंकि यदि हम निराश न हों और छोड़ न दें तो कुछ समय बाद आशिष की कटनी काटेंगे। 10 इसीलिए जब कभी हमसे हो सकता है हमें सदा सबकी भलाई करनी चाहिए, और विशेषकर अपने मसीही भाइयों की।

11 मैं ये अन्तिम शब्द अपने ही हाथ से लिखूंगा। देखो मैंने कितने बड़े अक्षरों मे तुम्हें

लिखा है। 12 तुम्हारे जो शिक्षक तुम्हें खतना करा लेने के लिए प्रभावित करने का प्रयत्न कर रहे हैं वे केवल एक ही कारण से कर रहे हैं : कि वे लोकप्रिय बनें और उस सताव से बचे रहें जो उन पर पड़ेगा यदि वे यह मान लें कि केवल मसीह का क्रूस ही उद्धार कर सकता है। 13 और वे शिक्षक तक जो खतना करा लेते हैं यहूदी-व्यवस्था के दूसरे नियमों को मानने का प्रयत्न नहीं करते, परन्तु वे चाहते हैं कि तुम खतना कराओ जिससे वे घमण्ड कर सकें कि तुम उनके शिष्य हो। 14 अब मेरे लिए, ऐसा न हो कि मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के क्रूस को छोड़ किसी और बात पर घमण्ड करूं। उस क्रूस के कारण संसार की सब आकर्षक बातों में मेरी रुचि बहुत पहले ही मर गई। 15 अब इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता कि हमारा खतना हुआ है या नहीं, महत्व इस बात का है कि हम सचमुच नये और भिन्न लोगों में बदल गए हैं या नहीं। 16 परमेश्वर की दया और शान्ति तुम सब पर बनी रहे जो इस सिद्धान्त के अनुसार जीते हैं, और हर कहीं उन सब पर भी जो सचमुच परमेश्वर के निज लोग हैं।

17 अब से कृपया मुझसे इन बातों पर वाद-विवाद मत करना, क्योंकि मैं अपनी देह पर मसीह के शत्रुओं से मिले कोड़ों की मार और घाव के चिन्हों को लिए फिरता हूं जिससे मैं मसीह का दास पहचाना जाऊं।

18 प्रिय भाइयो, प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सबके साथ रहे।

विनीत, पौलुस

इफिसियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

1 1 इफिसुस के प्रिय मसीही मित्रो, जो प्रभु के सदा विश्वास योग्य हो: यह मैं अर्थात् पौलुस तुमको लिख रहा हू, जो परमेश्वर के द्वारा प्रभु यीशु मसीह का दूत होने के लिए चुना गया हू।

2 हमारे पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से भेजी गई आशिष और शान्ति तुम्हारी हो।

3 हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की प्रशसा हो, जिसने हमे मसीह के होने के कारण स्वर्ग की हर आशिष से आशिषित किया है। 4 सृष्टि की रचना से पहले ही परमेश्वर ने मसीह के द्वारा हमे अपने लिए चुन लिया अर्थात् हमे जो उसके प्रेम से ढंके हुए है। उसने यह निश्चय किया कि हमे पवित्र बनाए। 5 उसका न बदलने वाला उपाय यही रहा है कि यीशु मसीह को हमारे लिए मरने के लिए भेजने के द्वारा हमे अपने पुत्र के समान गोद ले ले। और ऐसी ही उसकी इच्छा थी। 6 परमेश्वर की अद्‌भुत दया और उसकी कृपा के लिए जो उसने हम पर इसलिए उंडेली क्योंकि हम उसके अति प्रिय पुत्र के है, सारी प्रशसा परमेश्वर की हो। 7 हमारे लिए उसकी दया इतनी उमडती हुई है कि उसने अपने पुत्र के द्वारा, जिसके द्वारा हमारा उद्धार हुआ है हमारे सब पापो को दूर कर दिया, 8 और उसने अपना अनुग्रह बहुतायत से हम पर बरसाया है—क्योकि वह कितनी अच्छी रीति से हमें समझाता है और जानता है कि सब समयों मे हमारे लिए भला क्या है। 9 मसीह को भेजने का अपना गुप्त कारण उसने हमको बताया है, ऐसा उपाय जिसका निश्चय उसने अपनी दया से बहुत समय पहले किया, 10 और उसका उद्देश्य यह था कि जब समय पूरा हो जाए तो वह हमे, चाहे हम पृथ्वी पर हो या स्वर्ग पर हमको एकत्रित करे कि हम सदाकाल के लिए मसीह मे उसके साथ रहे।

11 इसके अतिरिक्त मसीह ने जो कुछ किया है इस कारण हम परमेश्वर के लिए भेंट बन चुके है जिससे वह हर्षित होता है, क्योकि परमेश्वर के प्रधान उपाय के अनुसार हम आरम्भ मे ही उसके होने के लिए चुने गए, और जिस प्रकार बहुत समय पहले उसने निश्चय किया वैसे ही सब बातें होती रही। 12 इसमें परमेश्वर का उद्देश्य यह था कि हम जिन्होंने मसीह पर सबसे पहले विश्वास किया अपने लिए इन महान कार्यों के करने के कारण परमेश्वर की प्रशंसा करें और उसको महिमा दें। 13 और मसीह ने जो कुछ किया इसलिए, तुम सब दूसरो पर भी, जिन्होंने शुभ सन्देश के विषय मे सुना कि उद्धार कैसे पाना चाहिए, और मसीह पर विश्वास किया, पवित्र आत्मा के द्वारा जिसकी प्रतिज्ञा हम सब मसीहियो को बहुत पहले दी गई थी, मसीह के होने की छाप पडी। 14 उसकी हमारे अन्दर उपस्थिति परमेश्वर का यह दृढ निश्चय है कि उसने जो प्रतिज्ञा की है वह सब हमें वास्तव मे देगा, और हम पर पवित्र आत्मा की छाप का अर्थ है कि परमेश्वर ने हमें पहले ही मोल ले लिया है और वह दृढ निश्चय देता है कि हमें अपने निकट लाएगा। यह हमारे महिमावान परमेश्वर की प्रशंसा करने का हमारे लिए एक और कारण है।

15 इसीलिए, जब से मैंने प्रभु यीशु मे तुम्हारे दृढ़ विश्वास और सब ही मसीहियो के लिए, तुम्हारे प्रेम के विषय मे सुना है, 16, 17 मैंने तुम्हारे लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना नही छोडा है। मै निरन्तर तुम्हारे लिए प्रार्थना करता रहता हू, हमारे प्रभु यीशु मसीह के महिमावान पिता परमेश्वर से यह मागते हुए कि वह तुम्हें ज्ञान दे ताकि तुम स्पष्ट देखो और वास्तव मे समझो कि मसीह कौन है और उसने तुम्हारे लिए क्या कुछ किया है। 18 मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे मन प्रकाश से भर जाएं

ताकि तुम भविष्य की कुछ झलक पा लो जिसमें सहभागी होने के लिए उसने तुम्हें बुलाया है। मैं चाहता हू कि तुम यह जान लो कि परमेश्वर धनी हो गया है क्योंकि हम जो मसीह के हैं उसको दे दिए गए हैं। 19 मैं प्रार्थना करता हू कि तुम यह समझने लगो कि जो लोग उस पर विश्वास करते हैं उन लोगों की सहायता करने की उसकी सामर्थ ऐसी महान है जिस पर सहज ही विश्वास नही होता है। यह वही महान सामर्थ है। 20 जिसने मसीह को मरे हुओं मे से जिला दिया और स्वर्ग मे परमेश्वर की दाहिनी ओर आदर के स्थान पर बैठा दिया, 21 किसी राजा या शासक या अधिपति या नेता के स्थान मे भी कहीं अधिक ऊंचे स्थान पर। हां, उसका आदर इस ससार मे या आने वाले संसार में किसी और से बढकर अधिक महिमामय है। 22 और परमेश्वर ने सब कुछ उसके पावों तले कर दिया है और उसको कलीसिया का प्रधान ठहराया है। 23 कलीसिया उसकी देह है, स्वय उससे परिपूर्ण है जो सभी जगह प्रत्येक वस्तु का दाता है।

2 1 किसी समय तुम परमेश्वर के श्राप के आधीन, अपने पापों के कारण सदा के लिए नाश के भागी थे, 2 तुम भीड के साथ हो लेते थे, और ठीक दूसरों के ही जैसे, पाप से पूर्ण शैतान की आज्ञा मानते थे, जो हवा की सामर्थ का शक्तिशाली राजकुमार है और इस समय उन लोगों के हृदयों मे कार्य कर रहा है जो प्रभु के विरुद्ध हैं। 3 हम सब भी वैसे ही थे जैसे वे हैं, हमारे जीवनों मे हमारे भीतर की बुराई प्रगट होती थी, हम हर प्रकार के दुष्ट कार्य करते थे जिस ओर हमारी लालसाए या हमारे बुरे विचार हमें ले जाते थे। हम आरम्भ से ही बुरे थे, बुरे स्वभाव के साथ जन्मे थे, और सब दूसरों के जैसे परमेश्वर के कोप के आधीन थे। 4 परन्तु परमेश्वर दया का बड़ा धनी है, उसने हमसे इतना अधिक प्रेम किया 5 कि यद्यपि हम अपने पापों के कारण आत्मिक रूप से मरे हुए और दण्ड के भागी थे, उसने हमको हमारा जीवन फिर से दे दिया[1] जब उसने मसीह को मुर्दों में से जिलाया—केवल उसकी कृपा के ही कारण जिसके हम योग्य नहीं थे हमने उद्धार पाया है 6 और उसने हमें मसीह के साथ महिमा मे कब्र में से उठाकर ऊंचे पर चढ़ाया, जहां हम स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठते हैं—यह सब मसीह यीशु के ही किए गए कामों के कारण हुआ। 7 और अब परमेश्वर सदा हमारा उदाहरण दे सकता है यह दर्शाने के लिए कि उसकी दया कितनी अधिक है, जो मसीह यीशु के द्वारा हमारे लिए किए गए उसके सब कामों मे प्रगट है। 8 उसकी दया के कारण मसीह पर विश्वास रखने से तुमने उद्धार पाया है। और विश्वास[2] करना भी तुम्हारी ओर से नहीं है, यह भी परमेश्वर का दान है। 9 उद्धार हमारे द्वारा किए गए भले कामों का प्रतिफल नहीं है, इसलिए हममें से कोई भी अपनी बड़ाई नहीं कर सकता। 10 परमेश्वर ने ही स्वयं हमें बनाया है जो हम हैं और हमें मसीह यीशु के द्वारा नया जीवन दिया है, और युगों पहले उसने योजना बनाई कि हम यह जीवन दूसरों की सहायता करने में बिताएँ।

11 यह कभी मत भूलो कि किसी समय तुम अन्यजाति थे, और यहूदियों द्वारा तुम अधर्मी और "अशुद्ध" कहे जाते थे। (परन्तु उनके हृदय उस समय भी अशुद्ध थे, यद्यपि वे धार्मिक उत्सवों और रीतियों का पालन करते थे, क्योंकि वे धार्मिकता के चिन्हों के रूप में अपना खतना कराते थे।) 12 स्मरण रखो कि उन दिनों मे तुम पूरी रीति से मसीह से अलग जीवन बिता रहे थे, तुम परमेश्वर के लोगों के शत्रु थे और उसने तुमको कोई प्रतिज्ञा नहीं दी थी। तुम बिना परमेश्वर, बिना आशा के भटके हुए थे। 13 परन्तु अब तुम मसीह यीशु

[1] "हमें मसीह के साथ जिलाया।" [2] या, "उद्धार तुम्हारी ओर से नहीं है।"

के हो, और यद्यपि किसी समय तुम परमेश्वर से बहुत दूर थे, तौभी मसीह यीशु ने अपने लोहू के द्वारा तुम्हारे लिए जो कुछ किया है उसके कारण तुम अब परमेश्वर के बहुत निकट लाए गए हो। 14 क्योंकि मसीह स्वयं ही हमारे मेल का मार्ग है। उसने हम यहूदियों और तुम अन्यजातियों के मध्य, हम सबको एक परिवार बनाकर,[3] अनादर[4] की उस दीवार को जो हमें अलग करती थी तोड़कर, हमारा मेल करा दिया है। 15 अपनी मृत्यु के द्वारा उसने हमारे मध्य बैर का अन्त कर दिया। जिसका कारण यहूदी व्यवस्था थी जिसमें यहूदियों का पक्ष लिया गया था और अन्यजातियों को छोड़ दिया गया था। परन्तु वह यहूदी व्यवस्था की पूरी प्रथा को मिटा डालने के लिए मरा। तब उसने दोनों समूहों को जो एक-दूसरे के विरोधी रहे थे लिया, और उन्हें अपना निज भाग बना दिया, इस प्रकार उसने हमको एक साथ जोड़ दिया कि हम एक नए व्यक्ति बनें, और अन्त में हमारा मेल हो गया। 16 एक ही देह के अंग होकर, एक-दूसरे के प्रति हमारा क्रोध मिट गया है, क्योंकि हम दोनों का मेल-मिलाप परमेश्वर से हो चुका है। और इस प्रकार अन्त में यह झगड़ा क्रूस पर समाप्त हो गया है। 17 और उसने मेल का यह शुभ सन्देश तुम अन्यजातियों तक जो उससे बहुत दूर थे, और हम यहूदियों तक जो निकट थे पहुँचाया है। 18 अब हम सब चाहे यहूदी हों या अन्यजाति, मसीह ने हमारे लिए जो कुछ किया है इस कारण पवित्र आत्मा की सहायता से परमेश्वर पिता के पास आ सकते हैं। 19 अब तुम फिर परमेश्वर के लिए अनजान और स्वर्ग के लिए विदेशी नहीं रहे, परन्तु तुम परमेश्वर के निज घराने के सदस्य, परमेश्वर के देश के नागरिक हो, और तुम सब दूसरे मसीहियों के साथ परमेश्वर के घराने के हो। 20 अब तुम जिस नींव पर खड़े हो : वह प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की है, और इस भवन के कोने का पत्थर स्वयं मसीह यीशु हैं। 21 हम जो विश्वास करते हैं मसीह के साथ परमेश्वर के बनते हुए सुन्दर मन्दिर के भाग हैं। 22 और तुम भी आत्मा के द्वारा उसके साथ और एक दूसरे के साथ जोड़े जाते हो, और परमेश्वर के इस निवास स्थान के भाग हो।

3 1 यह प्रचार करने के लिए कि तुम अन्यजाति परमेश्वर के भवन का एक भाग हो। मैं पौलुस, मसीह का सेवक, तुम्हारे कारण बन्दीगृह में हूं—2,3 कोई सन्देह नहीं कि तुम पहले ही जानते हो कि परमेश्वर ने मुझे तुम अन्यजातियों को परमेश्वर की दया दर्शाने का यह विशेष काम सौंपा है, जैसा मैंने पहले अपनी एक पत्री में संक्षेप में लिखा था। परमेश्वर ने आप ही मुझ पर अपनी यह गुप्त योजना प्रगट की, कि अन्यजाति भी उसकी दया में सहभागी हैं। 4 मैं तुम्हें यह समझाने के लिए कहता हूं कि मैं इन बातों के विषय में कैसे जानता हूं। 5 पुराने समयों में परमेश्वर ने लोगों को अपनी यह योजना नहीं बताई, परन्तु अब उसने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर यह प्रगट किया है। 6 और रहस्य यह है : कि अन्यजाति यहूदियों के साथ मीरास में भागी और कलीसिया में सम्मिलित होने के लिए बुलाए गए हैं। और मसीह के द्वारा परमेश्वर की महान आशिषों की सब प्रतिज्ञाएं उन दोनों पर लागू होती हैं जबकि वे मसीह के शुभ सन्देश को ग्रहण करते हैं। 7 परमेश्वर ने मुझे अपनी इस योजना के विषय में सबको बताने का अद्भुत सौभाग्य दिया है, और उसने मुझे इस काम को अच्छी रीति से करने की सामर्थ और विशेष योग्यता दी है। 8 ज़रा सोचो! यद्यपि मैंने इस योग्य बनने के लिए कुछ भी नहीं किया, और मैं सबसे अधिक निकम्मा मसीही हूं, तौभी मैं ही इस विशेष आनन्द के लिए चुना गया कि अन्यजातियों को यह शुभ

[3] मूलत: "दोनों को एक कर लिया।" [4] यही आशय है।

सन्देश सुनाऊ कि मसीह मे अनन्त धन उन्हे प्राप्त है, 9 और सबको समझाऊ कि परमेश्वर अन्यजातियो का भी उद्धारकर्ता है। यह योजना उसने जो सब वस्तुओ का बनाने वाला है सृष्टि के आरम्भ मे गुप्त रूप से बनाई थी। 10 इसका कारण? स्वर्ग के अधिकारियो को यह दर्शाने के लिए कि वह कितने ज्ञानवान है जबकि उसका पूरा परिवार यहूदी अर्थात और अन्यजाति एक समान उसकी कलीसिया मे एक साथ पाए जाते है, 11 ठीक उसी प्रकार जैसे उसने हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा सदा से कार्य करने की योजना बनाई थी। 12 अब हम निडर होकर परमेश्वर की उपस्थिति मे आ सकते हैं, इस बात का निश्चय कर कि जब हम मसीह के साथ आते हैं और उस पर विश्वास रखते है तो वह हमे आनन्द के साथ ग्रहण करेगा 13 इसलिए मेरे साथ जो वे यहा कर रहे है उससे निराश मत हो। मैं तुम्हारे ही लिए दुःख सह रहा हू और इससे तुम्हे आदर और उत्साह का अनुभव करना चाहिए।

14, 15 जब मैं उसकी योजना के ज्ञान और उसके क्षेत्र पर विचार करता हू तो अपने घुटनों पर गिर जाता हूं और इस विशाल परिवार के पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं—जिसके अनेक सदस्य पहले से ही स्वर्ग मे हैं और कई यहा इस पृथ्वी पर हैं—16 कि अपने महिमामय असीमित साधनो मे से वह तुम्हें अपने पवित्र आत्मा की प्रबल भीतरी सामर्थ दे। 17 और मैं प्रार्थना करता हूं कि जब तुम मसीह पर विश्वास करते हो तो वह तुम्हारे हृदयों मे अधिक से अधिक रहे। तुम्हारी जड़ें परमेश्वर के अद्‌भुत प्रेम की गहराई में जाए, 18, 19 और जैसे परमेश्वर की सब सन्तानो को चाहिए वैसे ही तुम अनुभव कर सको और समझ सको, कि उसका प्रेम सचमुच कितना लम्बा, कितना चौड़ा कितना गहरा और कितना ऊंचा है, और अपने लिए इस प्रेम को अनुभव करो, यद्यपि यह इतना विशाल है कि तुम कभी उसका अन्त नही देख सकोगे न ही उसे पूरी रीति से समझ सकोगे और इस प्रकार अन्त मे तुम स्वयं परमेश्वर से परिपूर्ण हो जाओगे।

20 अब परमेश्वर की महिमा हो जो हमारे अन्दर अपनी महान सामर्थ के कार्य द्वारा हमारी बिनती या हमारे अनुमान से कही अधिक बढ़कर कार्य कर सकता है। हमारी प्रार्थनाओं, उच्च से उच्च इच्छाओं, विचारो और आशाओ से भी बहुत बढ़कर कार्य करने मे समर्थ है। 21 कलीसिया के उद्धार की उसकी सिद्ध योजना के कारण उसकी महिमा युगानुयुग तक होती रहे।

4

1 मैं तुमसे बिनती करता हूं—मैं जो प्रभु की सेवा करने के कारण यहा बन्दीगृह मे बन्दी हूं—कि तुम उन लोगों के योग्य जीवन बिताओ और कार्य करो जो इन जैसी अद्‌भुत आशिषो के लिए चुने गए हैं। 2 दीन और नम्र बनो। एक-दूसरे के साथ धीरज धरो और अपने प्रेम के कारण एक-दूसरे के दोष सह लो। 3 सदा प्रयत्न करो कि पवित्र आत्मा के द्वारा एकता से काम करो, और इस प्रकार एक दूसरे के साथ मेल से रहो। 4 हम सब एक ही देह के अंग हैं, एक ही आत्मा है, और हम सबको एक ही जैसी तेजस्वी भविष्य की बुलाहट मिली है। 5 हमारे लिए केवल एक ही प्रभु, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा है, 6 और हम सबका एक ही परमेश्वर और पिता है जो हम सबके ऊपर और हम सबमे है, और हमारे प्रत्येक अंग मे बास करता है। 7 तौभी, मसीह ने हम मे से हरएक को विशेष योग्यता दी है—उसने चाहा है कि हम वरदानों के उसके बड़े भण्डार से प्राप्त करें। 8 भजन लिखने वाले ने हमें इसके विषय मे बताया है, क्योंकि उसने लिखा है कि जब मसीह फिर से जी उठने और शैतान पर जीत पाने के बाद विजय के साथ स्वर्ग को फिर लौटा, तो उसने मनुष्यों को उदारता मे दान दिया। 9 ध्यान दो कि लिखा है वह स्वर्ग को

फिर लौटा। इसका अर्थ है कि वह पहले स्वर्ग की ऊंचाइयों से नीचे, पृथ्वी के सबसे निचले भागों में उतरा था। 10 जो नीचे उतरा वही है जो फिर वापिस ऊपर गया, ताकि वह सबसे निचली जगह से लेकर सबसे ऊंचे स्थान[1] को स्वयं से भरपूर करे। 11 हममें से कई को प्रेरितों के रूप में विशेष योग्यता दी गई है, कई को अच्छे प्रचार का वरदान दिया है, कई को मसीह के लिए लोगों को जीतने की योग्यता मिली है, और कई को परमेश्वर के लोगों की देखभाल करने जैसे चरवाहा अपनी भेड़ों की करता है, उनकी अगुवाई करने और उनको परमेश्वर के मार्ग की शिक्षा देने का वरदान मिला है। 12 वह क्यों हमें यह विशेष योग्यतायें देता है कि हम कुछ कार्यों, को अच्छी रीति से कर सकें ? इसलिए कि परमेश्वर के लोग कार्य को उसके लिए उत्तम रीति से करने को तैयार हों, वे मसीह की देह कलीसिया को, शक्ति और सिद्धता की स्थिति तक पहुंचाएं, 13 अन्त में जब हम सब अपने उद्धार के विषय में और अपने उद्धारकर्ता, परमेश्वर के पुत्र के विषय में एक जैसा विश्वास करें। और सब, प्रभु में पूरे डील-डौल में बढ़ जाएं—अर्थात उस सीमा तक जब तक हम मसीह से पूरी रीति से परिपूर्ण न हो जाएं। 14 तब हम फिर बच्चे जैसे नहीं रह जाएंगे, कि सदा अपने विश्वास के विषय में अपना मन बदलते रहें इसलिए कि किसी ने हमें कोई दूसरी बात बताई हो, या चतुराई से हमसे झूठ बोला हो और उस झूठ को ऐसा कहा हो कि हमें सच लगे। 15, 16 परन्तु इसके बदले, हम हर समय प्रेम के साथ सच बोलते हुए, सत्य का व्यवहार करते हुए[2], सच्चाई से जीवन व्यतीत करते हुए सत्य पर चलेंगे—और इस प्रकार हर बात में अधिक से अधिक मसीह के समान बनते जाएंगे जो कि अपनी देह कलीसिया का, सिर है। उसकी अगुवाई में पूरी देह सिद्ध रूप से एक-दूसरे के साथ जुड़ी है, और हर अंग अपनी विशेष रीति से दूसरे अंगों की सहायता करता है, जिससे सारी देह स्वस्थ बनी रहती, और बढ़ती और प्रेम से पूर्ण रहती है।

17, 18 तो फिर मुझे यह कहने दो, और प्रभु की ओर से भी बोलने दो : उद्धार न पाये हुओं के समान अब फिर जीवन मत बिताओ, क्योंकि वे अन्धे कर दिए गए हैं और बौखला गए हैं। उनके कठोर हृदय अन्धकार से पूर्ण हैं, वे परमेश्वर के जीवन से बहुत दूर हैं क्योंकि उन्होंने अपना मन उसकी ओर से फेर लिया है, और वे उसके मार्गों को नहीं समझ सकते। 19 उन्हें अब भले और बुरे की तनिक चिन्ता नहीं है और उन्होंने अपने आपको अशुद्धता के लिए सौंप दिया है। वे अपने बुरे मन और दुष्ट अभिलाषाओं के द्वारा चलाए जाते हैं और कभी नहीं रुकते। 20 परन्तु इस मार्ग की शिक्षा मसीह ने तुम्हें नहीं दी। 21 यदि तुमने सचमुच उसकी आवाज़ सुनी है और उसके विषय में की सच्चाई को उससे सीखा है, 22 तो अपने पुराने बुरे स्वभाव को छोड़ दो—तुम्हारे पुराने स्वभाव को जो तुम्हारे दुष्ट मार्गों में साथी था—जो पूरी रीति से सड़ाहट, लज्जा और धोखे से भरा था। 23 अब तुम्हारे व्यवहार और विचार सब निरन्तर भले के लिए बदलते रहने चाहिएं। 24 हाँ तुम्हें नया और भिन्न प्रकार का, पवित्र और भला व्यक्ति बनना चाहिए। इस नये स्वभाव को पहन लो।

25 एक दूसरे से झूठ बोलना बन्द करो, सच बोलो, क्योंकि हम एक-दूसरे के अंग हैं और जब हम एक-दूसरे से झूठ बोलते हैं तो अपने आपको ही चोट पहुंचाते हैं। 26 यदि तुम क्रोध में हो, तो अपने मन में क्रोध को पालकर पाप मत करो। सूर्य के अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध बना न रहे—उस पर शीघ्र ही जय पाओ। 27 क्योंकि जब तुम क्रोधित रहते हो तो शैतान को अवसर देते हो। 28 यदि कोई चोरी करता

[1] मूलतः "कि सब कुछ परिपूर्ण करे।" [2] अन्य अनुवाद से।

हो तो वह उसे छोड़ दे और अपने उन हाथों को ईमानदारी के कामों में लगाये ताकि दूसरों को जिन्हें आवश्यकता हो वह दे सके। 29 बुरी बात मत बोलो। वही बोलो जो उनकी भलाई और सहायता के लिए हो, जिनसे तुम बातें कर रहे हो, और जिससे उन्हें आशिष मिले। 30 पवित्र आत्मा को अपने रहन-सहन के द्वारा दुःखी मत करो। स्मरण रखो, वही है जो तुम पर छुटकारे³ के दिन मोहर लगाता है। जब तुम्हारा पाप से पूर्ण उद्धार हो जाएगा। 31 नीचता करना, कड़वाहट रखना और क्रोध करना छोड़ दो। तुम्हारे जीवन में झगड़ा, कटुवचन और दूसरों से घृणा की भावना का कोई स्थान न हो। 32 परन्तु इसके बदले, एक-दूसरे पर दयालु, कृपालु हो, और एक-दूसरे को क्षमा करो, जैसे परमेश्वर ने तुम्हें मसीह के होने के कारण क्षमा दी है।

5 1 तुम जो भी काम करो परमेश्वर के आदर्श पर चल कर करो, जिस प्रकार से बालक जो बहुत प्यार पाता है और अपने पिता का अनुकरण करता है। 2 दूसरों के लिए प्रेम से भरे रहो, मसीह के आदर्श पर चलकर जिसने तुमसे प्रेम किया और तुम्हारे पापों को दूर करने के लिए अपने आपको बलिदान कर दिया। और जिससे परमेश्वर प्रसन्न हुआ, क्योंकि तुम्हारे लिए मसीह का प्रेम उसको दृष्टि में सुगन्धित इत्र सा था। 3 तुम्हारे मध्य कोई व्यभिचार, अशुद्धता या लोभ न हो। ऐसी किसी बात का कोई तुम पर दोष न लगाने पाये। 4 गन्दी कहानियां, अश्लील बातें और भद्दे मजाक—ये तुम्हारे लिए नहीं हैं। परन्तु इनके बदले एक-दूसरे को परमेश्वर की भलाई का स्मरण दिलाओ और धन्यवाद से भरे रहो। 5 तुम यह निश्चय जान सकते हो : मसीह का और परमेश्वर का राज्य कभी किसी ऐसे का नहीं होगा जो अशुद्ध और लालची हो, क्योंकि लालची व्यक्ति वास्तव में मूर्तिपूजक है—वह परमेश्वर की अपेक्षा इस जीवन की सांसारिक वस्तुओं से अधिक प्रेम रखता और उनकी पूजा करता है। 6 उनके द्वारा धोखा न खाओ जो अपने पापों के लिए बहाना करने का प्रयत्न करते हैं, क्योंकि परमेश्वर का भयानक क्रोध उन सब पर है जो ऐसा करते हैं। 7 ऐसे लोगों के साथ तक मत रहो। 8 क्योंकि यद्यपि किसी समय तुम्हारा मन अन्धकार से पूर्ण था, तौभी अब प्रभु के प्रकाश से भरपूर है, और यह तुम्हारे व्यवहार से प्रगट होना चाहिए। 9 इसी ज्योति के कारण जो तुममें है, तुमको केवल वही करना चाहिए जो अच्छा, भला तथा सत्य है। 10 जीवन में आगे बढ़ते हुए सीखो कि प्रभु को क्या भाता है¹। 11 बुराई और अन्धकार के व्यर्थ सुखों में कोई भाग न लो, परन्तु इसके बदले उनका विरोध करो 12 अन्धकार के उन सुखों का नाम तक लेना लज्जाजनक होगा जिनमें अधर्मी रहते हैं। 13 परन्तु जब तुम उन्हें प्रगट करते हो, तो प्रकाश उनके पापों पर चमकता है और उन्हें दर्शाता है, और जब वे देखेंगे कि वे वास्तव में कितने बुरे हैं तब हो सकता है कि उनमें से कई प्रकाश की सन्तान बन जाएं। 14 इसीलिए पवित्रशास्त्र में परमेश्वर ने कहा है, "हे सोने वाले, जाग, और मुर्दों में से जी उठ, और मसीह तुझे प्रकाश देगा।"

15, 16 इसलिए सावधान रहो कि कैसा व्यवहार करते हो; ये बुरे दिन हैं। मूर्ख मत बनो, बुद्धिमान हो : हरएक अवसर को भलाई करने के लिए काम में लाओ। 17 सोच विचार कर काम करो और वही करो जो परमेश्वर तुमसे चाहता है। 18 शराब से मतवाले मत बनो, क्योंकि उस मार्ग में कई बुराइयां हैं; परन्तु इसके बदले पवित्र आत्मा से भरपूर हो,

---

³ मूलत "जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है।"
¹ या, "तुम्हारा जीवन आदर्श होना चाहिए।"

और उसके वश में रहो। 19 एक-दूसरे से प्रभु के बारे में बातचीत करो, भजन और गीत सुनाओ और पवित्र गीत गाओ, और अपने मन में प्रभु के गीत गाते रहो। 20 सदा हमारे परमेश्वर पिता को हमारे यीशु मसीह के नाम में हर बात के लिए धन्यवाद दो। 21 एक-दूसरे के आधीन रहकर मसीह का आदर करो।

22 तुम पत्नियों को चाहिए कि तुम जिस प्रकार प्रभु के आधीन रहती हो उसी प्रकार अपने पति के आधीन रहो। 23 क्योंकि पति अपनी पत्नी का अधिकारी है वैसे ही जैसे मसीह अपनी देह अर्थात् कलीसिया का अधिकारी है (उसने उसकी देखभाल करने और उसका उद्धारकर्ता होने के लिए अपना जीवन भी दे दिया।) 24 इसलिए तुम पत्नियों को हर्ष के साथ अपने अपने पति की आज्ञा माननी चाहिए जिस प्रकार कलीसिया मसीह की आज्ञा मानती है। 25 और तुम पतियो, उसी प्रकार का प्रेम अपनी पत्नियों से करो जैसा मसीह ने कलीसिया से कर दिखाया जब उसने उसके लिए अपना प्राण दिया, 26 कि उसे परमेश्वर के वचन और बपतिस्मे[2] के द्वारा धोकर पवित्र और निर्मल बनाए, 27 ताकि वह उसे तेजस्वी कलीसिया के रूप में बिना एक भी दाग या झुर्री या किसी और दोष के, पवित्र और निर्दोष करके अपने लिए ग्रहण कर सके 28 इसी प्रकार प्रत्येक पति को अपनी-अपनी पत्नियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करना चाहिए और अपने अंग के समान उनसे प्रेम रखना चाहिए। चूंकि पुरुष और उसकी पत्नी अब एक हैं, इसीलिए पुरुष जब अपनी पत्नी से प्रेम करता है तो वास्तव में अपना ही हित करता है और अपने आपसे प्रेम रखता है। 29, 30 कोई अपनी ही देह से घृणा नहीं करता परन्तु प्रेम से उसकी देखभाल करता है, जिस प्रकार मसीह अपनी देह कलीसिया की जिसके हम अंग हैं, देखभाल करता है। 31 (पति और पत्नी एक देह हैं यह पवित्र शास्त्र द्वारा सिद्ध होता है जिसमें लिखा है, "पुरुष जब विवाह करता है तो उसे अपने माता-पिता को छोड़ना चाहिए, ताकि वह अपनी पत्नी से पूरी तरह मिल जाए, और वे दोनों एक होंगे।") 32 मैं जानता हूं कि इसे समझना कठिन है, परन्तु यह एक उदाहरण है कि हम किस प्रकार मसीह की देह के अंग हैं। 33 इसलिए मैं फिर कहता हूं, पुरुष अपनी पत्नी से अपने अंग के समान ही प्रेम रखे, और पत्नी भी ध्यान रखे कि वह अपने पति की आज्ञा मानने, उसकी प्रशंसा और बड़ाई करने के द्वारा उसका बहुत अधिक आदर करे।

6 1 हे बालको, अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, ऐसा करना उचित है क्योंकि परमेश्वर ने उनको तुम्हारे ऊपर अधिकारी ठहराया है। 2 अपने माता-पिता का आदर करो। परमेश्वर की दस आज्ञाओं में से यह पहली आज्ञा है जिसका अन्त प्रतिज्ञा से होता है। 3 और प्रतिज्ञा यह है: कि यदि तू अपने माता-पिता का आदर करे तो दीर्घायु होगा, और आशिष से भरपूर रहेगा 4 और तुम माता-पिताओ, अपने बच्चों को डाँटते और धमकाते मत रहो, कि वे क्रोधी और बुरा माननेवाले हो जाएं। परन्तु इसके बदले उन्हें सुझाव और उचित सलाह देकर प्रेम पूर्ण अनुशासन में बढ़ाओ जिससे प्रभु भी सहमत है।

5 हे दासो, अपने स्वामियों की मानो, जितना अच्छे से अच्छा तुम कर सकते हो, करने के उत्सुक रहो। जैसे तुम मसीह की सेवा करते हो वैसे ही उनकी भी सेवा करो। 6, 7 केवल उस समय परिश्रम से काम मत करो जब तुम्हारा स्वामी देख रहा हो और जब वह न देख रहा हो तो काम से मत भागो, पूरे समय परिश्रम से हर्ष के साथ काम करो मानो मसीह के लिए कार्य करते हो, अपने सारे मन से परमेश्वर की इच्छा पूरी करो। 8 स्मरण रखो, कि चाहे तुम दास हो या स्वतन्त्र, प्रभु तुमको तुम्हारे हर भले काम करने का प्रतिफल देगा। 9 और तुम

[2] मूलतः "वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके।"

स्वामियो को अपने दासों के साथ उचित व्यवहार करना चाहिए, जैसा मैंने उनसे तुम्हारे साथ व्यवहार करने को कहा उन्हें डराते धमकाते मत रहो, स्मरण रखो कि तुम आप भी मसीह के दास हो, तुम्हारा भी वही स्वामी है जो उनका है, और वह किसी का पक्षपात नही करता।

10 अन्त मे मैं तुम्हे याद दिलाना चाहता हू कि तुम्हे अपने भीतर प्रभु की महान सामर्थ से शक्ति प्राप्त करना चाहिए। 11 परमेश्वर के सब हथियार पहन लो ताकि तुम शैतान के सब छल-कपट की चालो से बचे रह सको। 12 परन्तु हमारा युद्ध अनदेखे ससार के दुष्ट अधिकारियो से, अर्थात शक्तिशाली शैतान और अन्धकार की दुष्ट शक्तियो से है जो इस ससार मे राज्य कर रही हैं तथा विशाल सख्या मे दुष्ट आत्माओ से जो दुष्ट आत्माओ के संसार मे रहती हैं। 13 इसलिए परमेश्वर के हर हथियार को शत्रु का सामना करने मे काम मे लाओ, जब भी वह आक्रमण करे, और जब सब कुछ समाप्त हो जाये तो तुम स्थिर रहोगे। 14 परन्तु ऐसा करने के लिए तुम्हे सत्य के शक्तिशाली कमर के पट्टे और परमेश्वर के धार्मिकता के कवच की आवश्यकता होगी। 15 ऐसे जूते पहनो जो तुम्हे परमेश्वर के मेल का शुभ सन्देश सुनाते समय आगे शीघ्रता से ले चलें। 16 हर युद्ध मे तुम्हे अपने ढाल के रूप मे विश्वास की आवश्यकता होगी जो शैतान के द्वारा तुम पर छोडे गए तेज तीरों को रोक सके। 17 और तुम्हे उद्धार के टोप और आत्मा की तलवार की भी आवश्यकता होगी जो परमेश्वर का वचन है। 18 हर समय प्रार्थना करो। परमेश्वर से ऐसी कोई भी विनती करो जो पवित्र आत्मा की इच्छा के अनुसार हो। उससे गिड़गिड़ाकर, अपनी आवश्यकताओ का स्मरण दिलाते हुए प्रार्थना करो, और सब स्थानों के सब मसीहियो के लिए लगन के साथ लगातार प्रार्थना करते रहो। 19 मेरे लिए भी प्रार्थना करो, और मांगो कि परमेश्वर मुझे उचित वचन दे जबकि मैं साहस के साथ दूसरो को प्रभु के विषय मे सुनाता हू, और उन्हे समझाता हूँ कि उद्धार अन्यजातियों के लिए भी है। 20 मैं परमेश्वर की ओर से इस सन्देश का प्रचार करने के कारण अभी हथकड़िया पहने हू। परन्तु प्रार्थना करो कि जैसा मुझे चाहिए वैसे ही मैं यहां बन्दीगृह में भी उसके लिए साहस के साथ बोलू।

21 तुखिकुस, जो अति प्रिय भाई और प्रभु के कार्य मे ईमानदार सहायक है, तुम्हे मेरा हाल सुनाएगा। 22 मैं उसे तुम्हारे पास इसी एक उद्देश्य से भेज रहा हूं, कि तुम जानो कि हम कैसे हैं और उससे सब कुछ सुनकर उत्साहित हो।

23 मेरे मसीही भाइयो, परमेश्वर तुम्हे शान्ति और विश्वास सहित प्रेम दे जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह की ओर से है। 24 परमेश्वर का अनुग्रह और आशिष उन सब पर हो जो सच्चाई से हमारे प्रभु यीशु मसीह से प्रेम रखते हैं।

विनीत, पौलुस

फिलिप्पियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

1 1 यीशु मसीह के दास, पौलुस और तीमुथियुस की ओर से, फिलिप्पी शहर के सब पासवानों, सेवकों और मसीहियों को। 2 प्रभु परमेश्वर तुम सभों को आशिष दे। अवश्य, मेरी *यह प्रार्थना है कि हमारा पिता परमेश्वर और* प्रभु यीशु मसीह अपनी अपार आशिषें और शान्ति तुम्हारे हृदयों तथा जीवनों में दे।

3 मैं जब कभी तुम्हें अपनी प्रार्थना में स्मरण करता हूँ तब परमेश्वर का धन्यवाद और उसकी स्तुति करता हूँ। 4 तुम्हारे लिए बिनती करते समय मेरा हृदय हर्ष से भरा रहता है। 5 क्योंकि मसीह का सुसमाचार जिस समय तुमने पहली बार सुना था, तब से आज तक उस *सुसमाचार के फैलाने में तुमने मेरी अनोखी रीति* से सहायता की। 6 मुझे पूर्ण निश्चय है कि प्रभु परमेश्वर, जिसने तुम्हारे अन्दर अच्छा कार्य आरम्भ किया है, अपने अनुग्रह के द्वारा, बढ़ने में तब तक तुम्हारी सहायता करेगा, जब तक कि उसका कार्य तुम्हारे अन्दर यीशु मसीह के वापस लौटने के दिन तक पूरा न हो ले। 7 यह स्वाभाविक है कि मैं तुम्हारे लिये ऐसा ही विचार रखूं क्योंकि मेरे हृदय में तुम्हारे लिए विशेष स्थान है। जब मैं जेलखाने में था और जेलखाने से बाहर सत्य और मसीह का प्रचार कर रहा था तब तुम परमेश्वर की आशिषों में मेरे सहभागी हुए। 8 केवल प्रभु जानता है कि मसीह की सी प्रीति के साथ मैं तुमसे कितना अधिक प्रेम करता हूँ और तुम्हें चाहता हूं। 9 तुम्हारे लिये मेरी यही प्रार्थना है कि तुम एक दूसरे से अधिक से अधिक प्रेम रखो और साथ ही साथ आत्मिक ज्ञान तथा सूझ-बूझ में दिन प्रति दिन बढ़ते जाओ। 10 ताकि तुम भले और बुरे के भेद को जानो और तुम्हारा हृदय पवित्र रहे, जिससे अब से लेकर मसीह के वापस आने तक कोई तुम्हारी आलोचना न कर सके। 11 सर्वदा तुम भले और दया के कार्य करो जिससे यह प्रगट हो कि तुम मसीह की सन्तान हो क्योंकि इससे प्रभु परमेश्वर की अधिक महिमा और स्तुति होगी।

12 प्रिय भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम यह *जानो कि यहां मुझ पर जो कुछ बीता है उससे* मसीह का सुसमाचार और अधिक फैला है। 13 क्योंकि *यहां* के सारे लोग, तथा सिपाही भी, जानते हैं कि मुझे हथकड़ियां केवल इसलिए पहनाई गई हैं क्योंकि मैं मसीही हूँ। 14 अब तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे क़ैदी हो जाने के कारण यहां के बहुत से मसीहियों में से अब क़ैदी हो जाने का डर चला गया। मेरे धैर्य ने किसी न किसी तरह उन्हें उत्साहित किया है *और वे अब और अधिक जोश के साथ दूसरों को* मसीह के विषय में बता रहे हैं। 15 अवश्य कुछ *लोग* सुसमाचार का प्रचार इस कारण कर रहे हैं क्योंकि उन्हें इस बात से जलन है कि प्रभु मुझे अजीब रीति से प्रयोग कर रहा है। वे अपने आप को एक निडर प्रचारक बताते हैं। परन्तु कुछ लोग सच्चाई तथा सही उद्देश्य के साथ प्रचार करते हैं। 16, 17 कुछ लोग इस कारण प्रचार करते हैं क्योंकि वे मुझसे प्रेम रखते हैं और वे जानते हैं कि प्रभु ने मुझे सच्चाई का पक्ष लेने के लिए यहां भेजा है। परन्तु कुछ लोग जलन और ईर्ष्या के कारण यह सोच कर प्रचार करते हैं कि उनकी सफलता से यहां जेल में मेरा दुःख और अधिक बढ़ जायेगा। 18 पर भले ही उद्देश्य कुछ भी हो, मैं इस बात से प्रसन्न हूं कि मसीह का सुसमाचार सुनाया जा रहा है जो एक सच्चाई है। 19 मैं प्रसन्न रहूंगा क्योंकि मैं जानता हूं कि जैसा तुम सब मेरे लिए प्रार्थना कर रहे हो और पवित्र आत्मा भी मेरी सहायता कर रहा है, इस सब के कारण मेरी भलाई ही होगी। 20 क्योंकि मैं इसी प्रबल आकांक्षा और आशा से जीवित हूँ कि मैं कोई ऐसा कार्य न करूं जिसके कारण मुझे

स्वामियों को अपने दासों के साथ उचित व्यवहार करना चाहिए, जैसा मैंने उनसे तुम्हारे साथ व्यवहार करने को कहा उन्हें डराते धमकाते मत रहो, स्मरण रखो कि तुम आप भी मसीह के दास हो; तुम्हारा भी वही स्वामी है जो उनका है, और वह किसी का पक्षपात नहीं करता।

10 अन्त में मैं तुम्हें याद दिलाना चाहता हूं कि तुम्हें अपने भीतर प्रभु की महान सामर्थ से शक्ति प्राप्त करना चाहिए। 11 परमेश्वर के सब हथियार पहन लो ताकि तुम शैतान के सब छल-कपट की चालों से बचे रह सको। 12 परन्तु हमारा युद्ध अनदेखे संसार के दुष्ट अधिकारियों से, अर्थात शक्तिशाली शैतान और अन्धकार की दुष्ट शक्तियों से है जो इस संसार में राज्य कर रही हैं तथा विशाल संख्या में दुष्ट आत्माओं से जो दुष्ट आत्माओं के संसार में रहती हैं। 13 इसलिए परमेश्वर के हर हथियार को शत्रु का सामना करने में काम में लाओ, जब भी वह आक्रमण करे, और जब सब कुछ समाप्त हो जाये तो तुम स्थिर रहोगे। 14 परन्तु ऐसा करने के लिए तुम्हें सत्य के शक्तिशाली कमर के पट्टे और परमेश्वर के धार्मिकता के कवच की आवश्यकता होगी। 15 ऐसे जूते पहनो जो तुम्हें परमेश्वर के मेल का शुभ सन्देश सुनाते समय आगे शीघ्रता से ले चलें। 16 हर युद्ध में तुम्हें अपने ढाल के रूप में विश्वास की आवश्यकता होगी जो शैतान के द्वारा तुम पर छोड़े गए तेज तीरों को रोक सके। 17 और तुम्हें उद्धार के टोप और आत्मा की तलवार की भी आवश्यकता

होगी जो परमेश्वर का वचन है। प्रार्थना करो। परमेश्वर से ऐसी करो जो पवित्र आत्मा की हो। उससे गिड़गिड़ाकर, अपनी का स्मरण दिलाते हुए प्रार्थना, स्थानों के सब मसीहियों के लि लगातार प्रार्थना करते रहो। प्रार्थना करो, और मांगो उचित वचन दे जबकि मैं को प्रभु के विषय में सुनाता म्भाता हूं कि उद्धार है। 20 मैं परमेश्वर की प्रचार करने के कारण हूं। परन्तु प्रार्थना करो वैसे ही मैं यहां बन्दी साहस के साथ बोलूं

21 तुखिकुस,
के कार्य में
सुनाएगा। 22 मैं
उद्देश्य से भेज
कैसे हैं और
हो।

23 मेरे
शान्ति और
पिता और प्र
24 परमेश्वर
पर हो जो
से प्रेम रखते हैं।

तब तुमने सदा मेरे निर्देशों को सावधानी के साथ माना था। और अब, जब मैं तुमसे दूर हूँ तो तुम्हें और अधिक सावधानी उन अच्छे कार्यों को करने में बरतनी चाहिए जो कि उद्धार के परिणाम स्वरूप होते हैं। बड़े ही, आदर के साथ उसकी आज्ञा मानो और उन बातों से अलग रहो जिनसे उसे कुछ दुःख पहुंचता है। 13 परमेश्वर तुम्हारे अन्दर कार्य कर रहा है और तुम्हारी सहायता कर रहा है ताकि तुम उसकी आज्ञा मानो और उसकी इच्छा पर चल सको। 14 सारे कामों में जो तुम करते हो, बड़बड़ाने और बहस करने से अलग रहो। 15 ताकि कोई भी किसी तरह का दोष तुम पर न लगा सके। इस अंधेरे संसार में, जो बुरे लोगों से भरा हुआ है, तुम मसीह के पुत्रों की तरह साफ और निर्दोष जीवन बिताओ और उनके बीच प्रकाश के समान चमको। 16 और उनमें जीवन का वचन सुनाओ। तब जब मसीह वापस आएगा, मैं यह देखकर कितना आनन्दित होऊंगा कि तुम्हारे बीच मे मेरा कार्य कितना सही था। 17 यदि मान लो, तुम्हारे विश्वास पर, जिसे मैं प्रभु को बलिदान के रूप मे चढ़ा रहा हूँ, मुझे अपना खून बहाना भी पड़े—अर्थात मुझे तुम्हारे लिए मरना भी पड़े—तब भी मैं आनन्दित होऊंगा और तुममें से हर एक को अपने आनन्द में सहभागी बनाऊंगा। 18 इसलिए तुम्हें भी इस बात से आनन्दित होना चाहिए और मेरे साथ प्रसन्न होना चाहिए इस सौभाग्य के लिए कि मैं तुम्हारे लिए मर रहा हूं।

19 यदि प्रभु की इच्छा हुई तो मैं तीमुथियुस को जल्दी ही तुम्हारे पास भेजूंगा। और जब वह लौटकर वापस मेरे पास आयेगा तब मैं उससे तुम्हारे हाल चाल जानकर बहुत प्रसन्न होऊंगा। 20 तीमुथियुस के समान और कोई नही है जो वास्तव में तुममें रुचि ले सके। 21 ऐसा लगता है कि दूसरे लोग अपनी-अपनी ही योजनाओं की चिन्ता में हैं न कि यीशु मसीह की। 22 परन्तु तुम तो तीमुथियुस को जानते ही हो। सुसमाचार प्रचार करने मे सहायता करने के द्वारा वह मेरे पुत्र के समान ही रहा है। 23 जितनी जल्दी मैं जान लूंगा कि मेरे साथ यहा क्या होने जा रहा है, आशा करता हूँ कि उतनी जल्दी ही मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा। 24 मैं भी प्रभु पर भरोसा रखता हू कि मैं स्वयं तुम्हें देखने आ सकूंगा। 25 इस बीच मैंने यह सोचा कि इपफ्रुदीतुस को वापस तुम्हारे पास भेज दूं? तुमने उसे मेरे पास मेरी आवश्यकताओं में सहायता करने के लिए भेजा था। वास्तव में मैं और वह एकदम भाई—भाई जैसे हो गये हैं—और आपस मे साथ-साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं और इस बड़ी लड़ाई को लड रहे हैं। 26 पर अब मैं उसे वापस घर भेज रहा हूं क्योंकि जैसा कि तुमने सुना है कि वह बीमार था, इस कारण वह तुम सभों को याद करता है और अपने घर के लिए चिन्तित रहता है। 27 वास्तव में वह एकदम मरने पर था पर प्रभु का अनुग्रह उस पर और मुझ पर भी हुआ और प्रभु ने ऐसा नही होने दिया कि मेरे दुःखों मे एक और दुःख बढ़ जाये। 28 सो मैं अधिक उत्सुक हूं कि उसे तुम्हारे पास वापस भेजूं। क्योंकि मैं जानता हूं कि उसे देख कर तुम कितने धन्यवादी होगे और इस बात से मुझे प्रसन्नता होगी और मेरी चिन्तायें कम हो जाएंगी। 29 आनन्द के साथ उसका स्वागत करना और उसका आदर करना। 30 क्योंकि उसने मसीह की सेवा के लिए अपने जीवन को जोखिम मे डाला और मुझसे दूर होने के कारण जो कार्य तुम नही कर सकते थे, उसे मेरे लिए करने के कारण वह मरने पर हो गया था।

3 1 प्यारे मित्रो, जो कुछ भी हो, प्रभु मे सदा आनन्दित रहो। यह बात कहने से मैं कभी नही थकता और यह तुम्हारे लिए अच्छा भी है कि तुम इसे बार-बार सुनो। 2 उन बुरे लोगों से सावधान रहो—जिन्हें मैं खतरनाक कुत्ते कहता हू—जो यह कहते हैं कि उद्धार पाने

लज्जित होना पड़े। परन्तु चाहे मैं जीवित रहूँ या मर जाऊं, मैं साहस से मसीह के विषय मे बता सकूँ जबकि मुझ पर यहा पहले की तरह ये सारी परीक्षायें हैं। 21 मेरे लिए, जीवित रहने का अर्थ है—मसीह के प्रचार का सुअवसर और मर जाना उससे भी अच्छा और लाभकारी है। 22 परन्तु यदि मैं जीवित रहता हूं तो इसमे मुझे दूसरे लोगो को मसीह के लिये जीतने का सुअवसर मिलेगा, इस कारण मैं वास्तव में नही जानता कि क्या अच्छा है—जीना या मरना। 23 कभी-कभी मैं जीना चाहता हू पर कभी-कभी नही भी, क्योकि मैं चाहता हूं कि जाकर मसीह के साथ रहू। यहा रहने के बदले मेरे लिए वहा रहना कितना अधिक आनन्दप्रद होगा। 24 परन्तु सच्चाई यह है कि मेरे यहाँ रहने से तुम्हारी और अधिक सहायता हो सकती है। 25 अवश्य, तुम्हें मेरी आवश्यकता है, इस कारण मुझे मालूम है कि मैं, विश्वास मे बढने और आनन्दित बनने मे तुम्हारी सहायता करने के लिए, इस ससार में और थोड़े समय तक रहूँगा। 26 मेरे रहने से तुम्हें आनन्द मिलेगा और जब मैं तुमसे भेंट करने के लिए फिर आऊंगा तो मेरे सुरक्षित रहने के कारण तुम मसीह की महिमा करोगे। 27 लेकिन मेरे साथ चाहे जो हो, तुम वैसा ही जीवन बिताओ जैसा मसीहियों का होना चाहिए ताकि चाहे मैं फिर तुम्हें देखू या न देखूं, मैं तुम्हारे बारे मे अच्छी ही बात सुनूं कि तुम सभो का एक ही प्रबल उद्देश्य है कि सुसमाचार सुनाया जाए। 28 डरो मत, चाहे तुम्हारे दुश्मन कुछ भी करें। क्योंकि ये सब उनके पतन का कारण ही होगा। लेकिन तुम्हारे लिए यह स्पष्ट चिन्ह प्रभु की ओर से होगा कि वह तुम्हारे साथ है और तुम्हें अनन्त जीवन दिया है। 29 क्योंकि तुम्हें यह अच्छा मौका दिया गया है कि न केवल तुम उस पर विश्वास करो, पर उसके लिए दु:ख भी उठाओ। 30 हम सब एक साथ इस लड़ाई को लड़ रहे हैं। तुमने स्वयं देखा है कि पि दिनों मे मैंने उसके लिए कितना दु:ख उठा और अभी भी तुम अच्छी रीति से जानते हो मैं किस बड़ी मुसीबत और परेशानी मे हूं।

2 1 क्या मसीहियो के लिए इससे बड़ी कोई बात है कि वे आपस में एक दूसरे को प्रसन्न रखें? क्या तुम मेरी सहायता करने के लिए मुझसे प्रेम रखते हो? क्या इसका तुम्हारे लिए कोई अर्थ है कि हम सब परमेश्वर में भाई हैं और एक ही आत्मा के सहभागी हैं? क्या तुम्हारे हृदय कोमल और दयालु हैं? 2 तब आपस में प्रेम रख कर मुझे आनन्दित करो। और पूर्ण सच्चे हृदय और विचार से एक दूसरे के साथ सहमत हो और मिल कर कार्य करो। 3 स्वार्थी न बनो, केवल दूसरे मनुष्यों पर अपना अच्छा प्रभाव डालने के लिये मत जियो। नम्र बनो, अपने समान दूसरों के लिये भी अच्छी बातें ही सोचो। 4 केवल अपने ही कार्यों के विषय में मत सोचो, पर दूसरों के कार्यों मे भी रुचि लो। 5 तुम्हारा स्वभाव वैसा ही दयालु हो जैसा यीशु मसीह का था। 6 यद्यपि वह परमेश्वर था, तब भी उसने न तो परमेश्वर के किसी अधिकार को चाहा और न ही उनका उपयोग किया। 7 लेकिन उसने अपनी शक्ति और महिमा को छोड़ दिया और मनुष्य के स्वरूप[1] मे होकर दास बन गया। 8 और उसने अपने आप को इतना नम्र और दीन बनाया कि क्रूस[2] पर एक अपराधी के समान मरने को तैयार हो गया। 9 यह सब इस कारण हुआ कि परमेश्वर ने उसे स्वर्ग से भी ऊंचा उठाया और उसे ऐसा नाम दिया जो सारे नामों मे महान है। 10 ताकि स्वर्ग मे, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे, सब यीशु के नाम मे घुटना टेकें। 11 और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक यह मान ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।

12 प्यारे दोस्तो, जब मैं तुम्हारे साथ था

[1] "मनुष्य के रूप में पैदा हुआ।" [2] "यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां क्रूस की मृत्यु भी सह ली।"

तब तुमने सदा मेरे निर्देशों को सावधानी के साथ माना था। और अब, जब मैं तुमसे दूर हूँ तो तुम्हें और अधिक सावधानी उन अच्छे कार्यों को करने मे बरतनी चाहिए जो कि उद्धार के परिणाम स्वरूप होते हैं। बड़े ही, आदर के साथ उसकी आज्ञा मानो और उन बातों से अलग रहो जिनसे उसे कुछ दुःख पहुंचता है। 13 परमेश्वर तुम्हारे अन्दर कार्य कर रहा है और तुम्हारी सहायता कर रहा है ताकि तुम उसकी आज्ञा मानो और उसकी इच्छा पर चल सको। 14 सारे कामों में जो तुम करते हो, बड़बडाने और बहस करने से अलग रहो। 15 ताकि कोई भी किसी तरह का दोष तुम पर न लगा सके। इस अंधेरे संसार मे, जो बुरे लोगों से भरा हुआ है, तुम मसीह के पुत्रों की तरह साफ और निर्दोष जीवन बिताओ और उनके बीच प्रकाश के समान चमको। 16 और उनमें जीवन का वचन सुनाओ। तब जब मसीह वापस आएगा, मैं यह देखकर कितना आनन्दित होऊंगा कि तुम्हारे बीच में मेरा कार्य कितना सही था। 17 यदि मान लो, तुम्हारे विश्वास पर, जिसे मैं प्रभु को बलिदान के रूप मे चढा रहा हूँ, मुझे अपना खून बहाना भी पड़े—अर्थात मुझे तुम्हारे लिए मरना भी पड़े—तब भी मैं आनन्दित होऊंगा और तुममें से हर एक को अपने आनन्द में सहभागी बनाऊंगा। 18 इसलिए तुम्हें भी इस बात से आनन्दित होना चाहिए और मेरे साथ प्रसन्न होना चाहिए इस सौभाग्य के लिए कि मैं तुम्हारे लिए मर रहा हूं।

19 यदि प्रभु की इच्छा हुई तो मैं तीमुथियुस को जल्दी ही तुम्हारे पास भेजूंगा। और जब वह लौटकर वापस मेरे पास आयेगा तब मैं उससे तुम्हारे हाल चाल जानकर बहुत प्रसन्न होऊंगा। 20 तीमुथियुस के समान और कोई नहीं है जो वास्तव मे तुममें रुचि ले सके। 21 ऐसा लगता है कि दूसरे लोग अपनी-अपनी ही योजनाओं की चिन्ता मे हैं न कि यीशु मसीह की। 22 परन्तु तुम तो तीमुथियुस को जानते ही हो। सुसमाचार प्रचार करने मे सहायता करने के द्वारा वह मेरे पुत्र के समान ही रहा है। 23 जितनी जल्दी मैं जान लूंगा कि मेरे साथ यहा क्या होने जा रहा है, आशा करता हूँ कि उतनी जल्दी ही मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा। 24 मैं भी प्रभु पर भरोसा रखता हू कि मैं स्वयं तुम्हें देखने आ सकूंगा। 25 इस बीच मैंने यह सोचा कि इपफ्रुदीतुस को वापस तुम्हारे पास भेज दूं? तुमने उसे मेरे पास मेरी आवश्यकताओं मे सहायता करने के लिए भेजा था। वास्तव मे मैं और वह एकदम भाई—भाई जैसे हो गये हैं—और आपस मे साथ-साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं और इस बड़ी लडाई को लड रहे हैं। 26 पर अब मैं उसे वापस घर भेज रहा हू क्योकि जैसा कि तुमने सुना है कि वह बीमार था, इस कारण वह तुम सभों को याद करता है और अपने घर के लिए चिन्तित रहता है। 27 वास्तव मे वह एकदम मरने पर था पर प्रभु का अनुग्रह उस पर और मुझ पर भी हुआ और प्रभु ने ऐसा नही होने दिया कि मेरे दुःखों मे एक और दु ख बढ जाये। 28 सो मैं अधिक उत्सुक हूं कि उसे तुम्हारे पास वापस भेजूं। क्योकि मैं जानता हू कि उसे देख कर तुम कितने धन्यवादी होगे और इस बात से मुझे प्रसन्नता होगी और मेरी चिन्तायें कम हो जाएंगी। 29 आनन्द के साथ उसका स्वागत करना और उसका आदर करना। 30 क्योकि उसने मसीह की सेवा के लिए अपने जीवन को जोखिम मे डाला और मुझसे दूर होने के कारण जो कार्य तुम नही कर सकते थे, उसे मेरे लिए करने के कारण वह मरने पर हो गया था।

3 1 प्यारे मित्रो, जो कुछ भी हो, प्रभु मे सदा आनन्दित रहो। यह बात कहने से मैं कभी नहीं थकता और यह तुम्हारे लिए अच्छा भी है कि तुम इसे बार-बार सुनो। 2 उन बुरे लोगों से सावधान रहो—जिन्हें मैं खतरनाक कुत्ते कहता हूं—जो यह कहते हैं कि उद्धार पाने

के लिए तुम्हें खतना कराने की आवश्यकता है। 3 क्योंकि अपने शरीर को काटना हमें प्रभु की सन्तान नहीं बनाता, परन्तु सच्ची आत्मा से उसकी आराधना करने के द्वारा हम उसकी सन्तान बनते हैं। यही केवल सही "खतना" है हम मसीही इस बात पर प्रफुल्लित होते हैं कि यीशु मसीह ने हमारे लिए क्या-क्या किया है और हम इस बात को मानते हैं कि हम अपने को बचाने में असहाय हैं। 4 तौभी यदि किसी के पास इस आशा का कारण है, कि वह अपने आपको बचा सकता है तो वह मैं हूं। यदि दूसरे व्यक्ति अपने स्वयं के द्वारा उद्धार प्राप्त कर सकते हैं तो मैं भी ऐसा कर सकता हूं। 5 क्योंकि जब मैं आठ दिन का बालक था तब मेरा एक यहूदी के रूप में संस्कार किया गया। मेरा जन्म बिन्यामीन के वंश के एक यहूदी घराने में हुआ। इस कारण मैं वास्तव में यहूदी था। इससे अधिक और क्या हो सकता है कि मैं फरीसियों में से एक था जो कि यहूदी प्रथा और नियमों का बड़ी कठोरता से पालन करते हैं। 6 मैं इतना वफादार था कि मैंने कलीसिया के लोगों को बहुत सताया और अन्त तक यहूदी रीति रिवाजों को मानने का प्रयत्न किया। 7 परन्तु इन सब बातों को जिन्हें मैं कभी लाभ की समझता था, अब मैंने फेंक दिया है ताकि मैं अपना सारा भरोसा और आशा केवल मसीह पर रख सकूं। 8 जो बहुमूल्य लाभ मुझे प्रभु को जानने में प्राप्त हुआ है उसकी तुलना में बाकी सारी वस्तुएं व्यर्थ हैं। मैंने इन बेकार वस्तुओं को गिनकर छोड़ दिया है ताकि मसीह को पा सकूं। 9 और उसके साथ एक हो सकूं, धर्मी बनने के द्वारा या मसीह के नियमों को मानने के द्वारा नहीं, पर उद्धार के लिए मसीह पर विश्वास रखने के द्वारा, क्योंकि परमेश्वर हमें केवल मसीह यीशु पर विश्वास रखने के ही द्वारा धर्मी बनाता है। 10 अब मैंने सब कुछ छोड़ दिया है—मसीह को अच्छी तरह जानने और उसकी महान शक्ति, जिसके कारण वह फिर जी उठा, को जानने का और इस बात को जानने का कि उसके साथ दुःख उठाने और मर जाने का क्या अर्थ है, यही केवल एक रास्ता मैंने पाया है। 11 इस कारण, चाहे कुछ भी हो, मैं उनकी तरह नया जीवन जीऊंगा जो मरे हुओं में से जी उठे हैं। 12 मेरे कहने का यह मतलब नहीं है कि मैं बिलकुल निर्दोष हूं। जितना मुझे अभी तक सीखना चाहिए था उतना मैंने नहीं सीखा। परन्तु मैं उस दिन के लिए कार्य कर रहा हूं जब मैं मसीह की इच्छानुसार बन सकूंगा क्योंकि उसने मुझे बचाया है 13 नहीं, प्रिय भाइयो, मैं अभी तक वैसा नहीं हूं जैसा मुझे होना चाहिए था लेकिन पुरानी बातों को भूलते हुए और भविष्य की बातों को देखते हुए मैं अपनी सारी शक्ति केवल इस एक बात पर लगा रहा हूं। 14 जो कुछ मसीह ने मेरे लिए किया, उसके कारण मैं इस दौड़ को जीतने और इनाम पाने के लिए जी तोड़ परिश्रम कर रहा हूं जिसके लिए परमेश्वर हमें स्वर्ग में बुला रहा है। 15 मैं आशा करता हूं कि तुम, जो परिपक्व मसीही हो मेरी इन सब बातों से सहमत होगे और यदि तुम मेरे किसी विचार से असहमत हो तो मैं विश्वास करता हूं कि प्रभु इन बातों को तुम पर सफाई से प्रगट करेगा। 16 यदि तुम उस सच्चाई की आज्ञा पालन करोगे जो तुम्हारे पास है।

17 प्यारे भाइयो, मेरी तरह अपने जीवन को बिताओ और इस बात पर ध्यान दो कि और कौन मेरी तरह जीवन बिता रहा है। 18 क्योंकि मैंने तुमसे पहले भी अक्सर कहा और अभी भी फिर आंसुओं के साथ कहता हूं कि कितने ऐसे लोग हैं जो मसीह के मार्ग पर तो चलते हैं पर मसीह के क्रूस के शत्रु हैं। 19 उनका भविष्य अन्धकारपूर्ण है, क्योंकि उनकी इच्छा ही उनका ईश्वर है, वे उन बातों पर घमण्ड करते हैं जिन पर उन्हें लज्जित होना चाहिए था। और वे केवल इस सांसारिक जीवन के विषय में ही सोचते हैं। 20 परन्तु हमारी

जगह स्वर्ग में है जहां कि हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह हैं। और हम वहां से उनके वापस लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। 21 जब वह फिर से आयेंगे तो वह हमारे इन नाशवान शरीरों को लेकर तेजस्वी शरीरों में, जैसा कि उनका शरीर है अपनी उस महान शक्ति के द्वारा जो कि वह अन्य दूसरी बातों पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रयोग करेंगे, बदल देंगे।

4 1 प्रिय मसीही भाइयो, मैं तुमसे प्रेम करता हूं और तुम्हें देखना चाहता हूं क्योंकि तुम ही मेरा आनन्द हो तथा मेरे कार्यों का प्रतिफल हो। मेरे प्रिय मित्रो, प्रभु के प्रति सच्चे बने रहो।

2 अब मैं उन दो प्रिय स्त्रियो, यूओदिया और सुन्तुखे, को समझाना चाहता हूं। कि कृपया अब और न झगड़ो पर मसीह की सहायता से आपस मे मित्र बन जाओ। 3 मैं अपने सहकर्मी से प्रार्थना करता हूं कि इन स्त्रियों की सहायता करें क्योंकि इन्होंने मेरे और क्लेमेंस के साथ मिलकर दूसरों को सुसमाचार सुनाने का कार्य किया है और उन अन्य मेरे साथियों के साथ कार्य किया है जिनके नाम जीवन की पुस्तक मे लिखे हैं।

4 प्रभु मे सदा आनन्दित रहो। मैं फिर से कहता हूं कि प्रसन्न रहो। 5 ताकि सब लोग यह जान सकें कि तुम स्वार्थी नही हो और हर कार्य सोच समझकर करते हो। याद रखो कि प्रभु जल्द ही आने वाला है। 6 किसी बात की चिन्ता मत करो बल्कि हर बात के लिए प्रार्थना करो। परमेश्वर को अपनी आवश्यकताएं बताओ और उसके किसी उपकार के लिए धन्यवाद देना, मत भूलो। 7 यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम्हे प्रभु की उस अनोखी शान्ति का अनुभव होगा जोकि मनुष्य के विचारों से परे है। जैसा कि तुम मसीह यीशु पर विश्वास रखते हो, उसकी शान्ति तुम्हारे दिल और दिमाग को शुद्ध और शान्त रखेगी।

8 और अब भाइयो, जबकि मैं इस पत्री को लिखना बन्द करने जा रहा हूँ, मैं तुमसे एक और बात कहना चाहता हू। कि अपने विचारों को उन्ही बातो पर लगाओ जो कि सही और भली हैं। उन्ही बातों के विषय में सोचो जो पवित्र और प्रिय है। और दूसरो की अच्छी बातो पर ध्यान दो। उन सब बातो के विषय मे सोचो जिनके लिए तुम प्रभु की स्तुति कर सकते हो और प्रसन्न हो सकते हो। 9 जो कुछ तुमने मुझसे सीखा और मुझसे देखा, उन बातो को प्रयोग में लाओ और शान्ति का प्रभु तुम्हारे साथ रहेगा।

10 मैं बेहद कृतज्ञ हू और प्रभु का धन्यवाद करता हू कि तुम फिर से मेरी सहायता कर रहे हो। मैं जानता हूँ कि जो कुछ तुम भेज सकते थे उसे भेजने के लिए तुम कितने उत्सुक थे, पर कुछ समय के लिए तुम्हे ऐसा अवसर नही मिला। 11 ऐसी बात नही कि मुझे हर समय किसी न किसी वस्तु की आवश्यकता रही क्योंकि चाहे मेरे पास अधिक रहे या कम, मैं ने उसी मे प्रसन्न रहना सीखा है। 12 मैं जानता हू कि मुझे सब कुछ रहते हुए या कुछ भी नही रहते हुए कैसे जीवन बिताना चाहिए। मैंने हर स्थिति में सन्तोष करना सीखा है, चाहे मेरा पेट भरा हो या खाली। 13 क्योंकि मैं मसीह की सहायता से वह सब कर सकता हूं जो प्रभु मुझे करने को कहता है क्योंकि वही मुझे शक्ति देता है। 14 परन्तु तौभी, तुम मेरी इन वर्तमान कठिनाइयों मे जो कुछ भी कर रहे हो, ठीक कर रहे हो। 15 जैसा कि तुम अच्छी तरह जानते हो कि जब मैं पहली बार सुसमाचार तुम्हारे पास लाया था और जब मैं मकिदुनिया को छोड़ कर जा रहा था तो तुम केवल फिलिप्पी के लोग लेने-देने मे मेरे सहभागी हुए थे। किसी और कलीसिया ने ऐसा नही किया था। 16 यहा तक कि जब मैं थिस्सलुनीके मे था तो वहा भी तुमने मेरी दो बार सहायता की थी। 17 परन्तु यद्यपि मैं तुम्हारी भेंट की सराहना करता हूं पर उससे अधिक प्रसन्नता मुझे, तुम्हारे दया के

कार्यों द्वारा कमाये गये प्रतिफल के कारण होगी। 18 इस समय मेरे पास वह सब कुछ है जिसकी मुझे आवश्यकता है—आवश्यकता से अधिक भी है। इपफ्रुदितुस के हाथ से भेजी गई तुम्हारी भेंटों के कारण मेरी सारी आवश्यकतायें उदारता के साथ पूरी हुई हैं। वे ऐसे सुगन्धित बलिदान हैं जो परमेश्वर प्रभु को भाते हैं। 19 प्रभु ही है जो अपने महिमायुक्त धन से तुम्हारी हरएक घटी को पूरी करेगा और यही मसीह यीशु ने हम सभी के लिए किया। 20 अब हमारे परमेश्वर पिता की महिमा सर्वदा होती रहे आमीन।

विनीत—पौलुस

21 यहां के सब मसीहियों को, मेरी तरफ से और उन भाइयों की तरफ से, जो मेरे साथ हैं, नमस्कार कहो। 22 यहां के दूसरे मसीही, विशेष तौर से जो कैसर के महल में कार्य करते हैं, तुम्हें याद करते हैं और नमस्कार भेज रहे हैं।

23 हमारे प्रभु यीशु मसीह की आशिष तुम्हारी आत्मा के साथ रहे।

कुलुस्सियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

1 1 पौलुस की ओर से जिसे परमेश्वर ने यीशु मसीह का दूत होने के लिए चुना और भाई तीमुथियुस की ओर से। 2 कुलुस्से शहर में रहने वाले विश्वासी मसीही भाइयो और परमेश्वर के लोगों को। परमेश्वर हमारा पिता तुम पर आशिष बरसाये और तुमको अपनी बड़ी शान्ति से भरपूर रखे।

3 जब कभी हम तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हैं हम सदा अपने प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर को धन्यवाद देने के द्वारा आरम्भ करते हैं, 4 क्योंकि हमने सुना है कि तुम प्रभु पर कितना विश्वास रखते हो, और उसके लोगों से तुम कितना प्रेम करते हो। 5 और तुम स्वर्गीय आनन्द की बाट जोह रहे हो, उस समय से जब से सुसमाचार का प्रचार तुम तक पहले हुआ था। 6 वही शुभ संदेश जो तुम तक पहुंचा पूरे संसार मे पहुंचाया जा रहा है और जीवनों को सब जगह बदल रहा है जिस प्रकार उस दिन तुम्हारा मन परिवर्तन हुआ था जब तुमने उसे सुना और पापियो के लिए परमेश्वर की बडी दया के विषय मे समझा। 7 हमारे अति प्रिय सहकर्मी, इपफ्रास ही ने तुम तक यह शुभ संदेश पहुँचाया। वह यीशु मसीह का विश्वासयोग्य दास है, जो तुम्हारे स्थान में हमारी सहायता करने के लिये यहां है। 8 और उसी ने दूसरो के लिए तुम्हारे प्रेम के विषय मे जिसे पवित्र आत्मा ने तुम्हें दिया है, हमें बताया है।

9 इसलिए जब से हमने तुम्हारे विषय में पहली बार सुना तब से हम परमेश्वर से प्रार्थना और बिनती करते रहे हैं कि वह जो तुमसे करवाना चाहता है उसके समझने में तुम्हारी सहायता करे, यह मागते हुए कि वह आत्मिक बातों में तुम्हें बुद्धिमान बनाये, 10 और यह मांगते हुए कि जिस प्रकार का जीवन तुम बिताते हो वह सदा प्रभु को प्रसन्न करे और उसकी महिमा करे, ताकि तुम दूसरो के लिए सर्दव अच्छे, भले कार्य करते रहो, जब कि तुम हर समय परमेश्वर की अधिक से अधिक पहचान में बढते जाते हो। 11 हम यह प्रार्थना भी कर रहे हैं कि तुम उसकी महान, महिमा-युक्त सामर्थ से भरपूर हो जाओ ताकि चाहे कुछ हो जाए तुम आगे बढते रहो—प्रभु के आनन्द से सदा परिपूर्ण रहकर, 12 और पिता का सदा धन्यवाद करो जिसने हमें इस योग्य बनाया कि उन सारी अद्‌भुत बातो मे सहभागी हो सकें जो ज्योति के राज्य मे निवास करने वालो की हैं। 13 क्योंकि उसने हमे शैतान के राज्य के, अन्धकार से छुड़ाया है और हमे अपने प्रिय पुत्र के राज्य मे पहुचाया है, 14 जिसने हमारी स्वतंत्रता को अपने लोहू से खरीदा है और हमारे सब पापो की क्षमा हमें दी है 15 मसीह अदृश्य परमेश्वर का यथार्थ स्वरूप है। परमेश्वर के कुछ भी बनाने से[1] पहले वह था, और वास्तव मे, 16 मसीह स्वय सृष्टिकर्ता है जिसने आकाश और पृथ्वी की सब वस्तुओ को सृजा, उन वस्तुओ को जिन्हे हम देख सकते हैं और उन वस्तुओं को जिन्हे हम नहीं देख सकते, आत्मिक ससार को उसके राजाओ और राज्यों, उसके शासकों और अधिकारियो सहित, सब मसीह के द्वारा उन ही के उपयोग और महिमा के लिए बनाए गए। 17 सब वस्तुओं की उत्पत्ति से पहले वह था, और उस ही की सामर्थ से सब वस्तुएं स्थिर हैं। 18 वह देह का जो उसके लोगो से बनी है, सिर है—अर्थात् अपनी कलीसिया का—जिसका आरम्भ उसने किया, और वह उन सब का अगुवा है जो मृतकों मे से जी उठे[2] हैं, इस प्रकार वह सब

[1] मूलत "वह तो...... सारी सृष्टि में पहिलौठा है।" [2] मूलत "वही आदि है और मरे हुओ में से जी उठनेवालो में पहिलौठा।"

बातो मे प्रथम है। 19 क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि वह स्वय पूर्णतः अपने पुत्र मे वास करे। 20 जो कुछ उसके पुत्र ने किया उसी के द्वारा परमेश्वर ने मार्ग तैयार किया कि सब कुछ— आकाश और पृथ्वी की सब वस्तुएं उसके पास पहुच सकें—क्योंकि क्रूस पर मसीह की मृत्यु ने उसके लोहू के द्वारा सब का परमेश्वर से मेल करा दिया। 21 इसके अन्तर्गत तुम भी आते हो जो कभी परमेश्वर से बहुत दूर थे। तुम उसके शत्रु थे और उससे घृणा करते थे और अपने बुरे विचारो और कार्यों के द्वारा उससे दूर थे, तौभी अब उसने तुमको अपने मित्रो के सदृश्य वापिस पहुचाया है। 22 ऐसा उसने अपनी निज मानवीय देह की क्रूस पर मृत्यु के द्वारा किया है, और अब परिणाम स्वरूप मसीह ने तुम्हे परमेश्वर की उपस्थिति मे पहुचाया है, और तुम वहा उसके सामने खड़े हो और तुम्हारे विरुद्ध कुछ भी बाकी नही रहा है—कुछ भी नही जिसके कारण वह तुमको डाट सके, 23 शर्त केवल यही है कि तुम पूरी रीति से सत्य पर विश्वास करो, उस पर दृढ और स्थिर रहो, प्रभु मे सामर्थी रहो, शुभ सदेश का दृढ निश्चय कर कि मसीह तुम्हारे लिए मरा, और अपने उद्धार के लिए उस पर भरोसा रखने से कभी न हटो। यही अद्‌भुत सदेश है जो तुम मे से हर एक तक पहुचा और अब सारे संसार मे फैल रहा है। और मुझ पौलुस को इसे दूसरो को बताने का आनन्द प्राप्त हुआ है।

24 परन्तु मेरे कार्य का एक भाग तुम्हारे लिए दु ख उठाना है, और मुझे हर्ष है, क्योंकि मैं उसकी देह, कलीसिया के लिए मसीह के बचे हुए दु:खो को पूरा करने मे सहायता कर रहा हूं। 25 परमेश्वर ने मुझे भेजा है कि उसकी कलीसिया की सहायता करूँ और तुम अन्य जातियों को उसकी गुप्त योजना बताऊं। 26, 27 उसने शताब्दियो और युगो से इसे गुप्त रखा है, परन्तु अब अन्त मे उसको भाया है कि इसे उन लोगों को बताए जो उससे प्रेम रखते है और उसके लिए जीते हैं, और उसकी योजना का विभव और महिमा तुम अन्य जातियों के लिए भी है। और रहस्य यह है कि : तुम्हारे हृदय में मसीह ही महिमा की तुम्हारी एक मात्र आशा है। 28 इसलिए हम जहा कहीं जाते हैं हम सब सुननेवालो को मसीह के विषय मे बताते है, जितनी अच्छी तरह हम जानते है उनको सावधान करते और शिक्षा देते हैं। हम चाहते है कि मसीह ने हर एक के लिए जो कुछ किया है उसके कारण प्रत्येक को परमेश्वर के सामने लाने के योग्य बनें। 29 यही मेरा कार्य है, और मैं इसे इसी लिए कर सकता हू क्योंकि मसीह की महान शक्ति मेरे अन्दर कार्य कर रही है।

2 1 मैं चाहता हूं तुम जानो कि मैंने तुम्हारे लिए और लौदीकिया की कलीसिया के लिए और मेरे अनेक दूसरे मित्रो के लिए जिनमे मेरा व्यक्तिगत परिचय कभी नही रहा है : मैंने प्रार्थना मे कितना अधिक परिश्रम किया है। 2 तुम्हारे लिए मैंने परमेश्वर से यही बिनती की है कि तुम उत्साहित हो और प्रेम के दृढ बन्धन में एक साथ बन्धे रहो, और दृढ निश्चय और स्पष्ट समझ के साथ मसीह को जानने का बहुतायत का अनुभव तुम्हारा हो। क्योंकि परमेश्वर की गुप्त योजना जो अब अन्त में प्रगट की गई है, स्वयं मसीह है। 3 उसमे ज्ञान और बुद्धि के समस्त भण्डार छिपे है। 4 मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मुझे डर है कि कोई अपनी चिकनी चुपडी बातों से तुम्हे धोखा न दे। 5 क्योंकि यद्यपि मैं तुमसे दूर हूँ तौभी मेरा हृदय तुम्हारे साथ है और मैं आनन्दित हूं क्योंकि तुम बहुत अच्छी रीति से बढ रहे हो और मसीह मे तुम्हारा दृढ विश्वास है।

6 और अब, जिस प्रकार तुमने अपने उद्धार के लिए मसीह पर भरोसा रखा, उसी प्रकार हर दिन की समस्या के लिये भी उस पर भरोसा रखो, उसके सग संगठित होकर

रहो। 7 तुम्हारी जड़ें उसमें गहरी पहुंचें और उससे भोजन वस्तु खींचें। ध्यान रखो कि तुम प्रभु में बढ़ते ही रहो, और उस सत्य में जिसकी शिक्षा तुम्हें दी गई सामर्थी और प्रबल बनते जाओ। तुम्हारा जीवन उसके सब कामों के लिए आनन्द और धन्यवाद से उमड़ता रहे।

8 मसीह के कथन की अपेक्षा दूसरे तुम्हारे विश्वास और आनन्द को अपने तत्वज्ञान और झूठे उत्तरों के द्वारा जो मनुष्यों के विचारों पर आधारित हैं न बिगाड़ें। 9 क्योंकि मसीह की मानवीय देह में परमेश्वर की परिपूर्णता है, 10 इसलिए जब मसीह तुम्हारे पास है तो तुम्हारे पास सब कुछ है, और मसीह के साथ तुम्हारे एक होने से तुम परमेश्वर से भरपूर हो गए हो। वही हर अन्य अधिकार के ऊपर प्रभुता लिए हुए, सर्वोच्च शासक है। 11 जब तुम मसीह के पास आए तब उसने तुम्हें तुम्हारी बुरी लालसाओं से मुक्त किया, मनुष्यों के हाथ के खतने के द्वारा नही परन्तु आत्मिक रीति से मसीह के आत्मिक खतने के द्वारा। 12 क्योंकि बपतिस्मे में तुम देखते हो कि तुम्हारा पुराना बुरा स्वभाव किस प्रकार उसके साथ मर गया और उसके साथ गाड़ा गया, और तब तुम उसके साथ मृत्यु में से निकलकर नये जीवन में आए क्योंकि तुमने सामर्थी परमेश्वर के, जिसने मसीह को मृतकों में से जिलाया, वचन पर विश्वास किया। 13 तुम पापों में मरे हुए थे, और तुम्हारी पापमय इच्छाएं अब तक दूर नही हुई थी। तब उसने तुम्हें मसीह के निज जीवन में भाग दिया, क्योंकि उसने तुम्हारे सब पापों की क्षमा दी, 14 और सब दोष जो तुम पर लगाए गए थे उसकी आज्ञाओं की वह सूची जिसका पालन तुमने नही किया था, मिटा दिया। उसने पापों की सूची को लिया और उसे मसीह के क्रूस पर कीलों से ठोक कर नाश किया। 15 इस प्रकार परमेश्वर ने तुम पर पाप का दोष लगाने की शैतान की शक्ति छीन ली, और परमेश्वर ने क्रूस पर जहा तुम्हारे सब पाप दूर किये गये थे मसीह की विजय को पूरे संसार के सामने खुलकर प्रदर्शित किया।

16 इसलिए अपने खाने पीने, और यहूदी त्योहारों और पर्व्वों या नये चांद के उत्सवों या सब्तों को न मानने के लिए किसी को अपनी आलोचना मत करने दो। 17 क्योंकि ये सब कुछ ही समय के लिए बनाए गए नियम थे जो मसीह के आने पर समाप्त हो गए। वे वास्तविक वस्तु स्वयं मसीह की छाया मात्र थे। 18 कोई तुम को दोषी ठहराने न पाए जब तुम स्वर्गदूतों की पूजा करने में इन्कार करो, जैसा वह कहते हैं कि यह आवश्यक है कि कोई तुमसे यह न कहे कि तुम खो गए हो। वे कहते हैं कि उन्होंने दर्शन देखा है, और जानते हैं। इन घमण्डी मनुष्यों में (यद्यपि वे बड़े दीन बनने का दावा करते हैं) बहुत चतुर कल्पनाशक्ति है। 19 परन्तु वे मसीह से सम्बन्धित नही हैं अर्थात मसीह के सिर से, जिससे हम सब जो उसकी देह हैं, जुड़े हैं, क्योंकि हम उसकी बलवन्त मांस पेशियों के द्वारा उसके साथ जुड़े हुए हैं और हम तभी बढ़ते हैं जब हम अपना पौष्टिक आहार और शक्ति परमेश्वर से लेते हैं।

20 जबकि तुम मसीह के साथ मर गये और इसके द्वारा तुम संसार के इन सुझावों पर चलने से स्वतन्त्र हो गये कि उद्धार, भले काम करने और विभिन्न नियमों[1] को मानने से प्राप्त होता है—तो फिर तुम किसी न किसी प्रकार उन पर क्यों चलते हो, इन नियमों से अब तक क्यों बन्धे हो 21 जैसे कुछ भोजन पदार्थों को न खाना, न चखना या छूना तक नही? 22 ऐसे नियम केवल मनुष्य की शिक्षाएं हैं, क्योंकि भोजन खाने और उपयोग के लिए ही बनाया गया है। 23 ये नियम अच्छे प्रतीत हो सकते हैं, क्योंकि इस प्रकार के नियमों के लिए दृढ़ भक्ति आवश्यक होती है और यह दीन बनाती है और देह के लिए कष्टप्रद होती है, परन्तु जब व्यक्ति के बुरे

[1] मूलत "संसार की आदि शिक्षा की ओर से।"

विचारों और इच्छाओं पर जय पाने का प्रश्न उठता है तो इनसे कोई सहायता नहीं पहुचती। इनसे वह घमण्डी बन जाता है।

3 1 जब कि मसीह मुर्दों में से जी उठा तो मानो तुम भी जी उठे, इसलिए अब तुम स्वर्ग की विशाल धन सम्पत्ति और आनन्द पर अपनी दृष्टि लगाओ जहा वह परमेश्वर की दाहिनी ओर महिमा और सामर्थ के स्थान में बैठा है। 2 तुम्हारे विचार स्वर्गीय बातों से भरे रहें, यहा पृथ्वी पर की बातों की चिन्ता करने में अपना समय मत बिताओ। 3 तुममें एक मृतक व्यक्ति के सदृश्य इस संसार के लिए कम से कम इच्छा हो। तुम्हारा वास्तविक जीवन, मसीह और परमेश्वर के साथ स्वर्ग में है। 4 और जब मसीह जो हमारा वास्तविक जीवन है फिर से वापिस आयेगा, तब तुम उसके साथ चमकोगे और उसकी सारी महिमा में सहभागी होगे।

5 इसलिए पापमय, सांसारिक बातों से दूर रहो, उन बुरी लालसाओं को मार डालो जो तुम्हारे अन्दर उमडती हैं, व्यभिचार, अशुद्धता, वासना और लज्जाजनक लालसाओं से कोई लगाव मत रखो, जीवन की अच्छी वस्तुओं का लालच मत करो, क्योंकि यह मूर्तिपूजा है। 6 परमेश्वर का भयानक क्रोध उन सब पर है जो ऐसे कार्य करते हैं। 7 तुम उन्हे किया करते थे जब तुम्हारा जीवन संसार का ही एक भाग था; 8 परन्तु अभी समय है कि क्रोध, घृणा, श्राप और गाली रूपी इन चिथडो को उतार फेंको। 9 एक दूसरे से झूठ मत बोलो, तुम्हारा पुराना जीवन अपनी समस्त बुराइयों सहित इस प्रकार का काम करता था; अब वह मर चुका और मिट गया है। 10 तुम बिल्कुल नये प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहे हो जो लगातार सीखता रहा है कि उचित क्या है, और सतत प्रयत्न कर रहा है कि मसीह के सदृश्य जिसने तुममे यह नया जीवन सृजा अधिक से अधिक बने। 11 इस नये जीवन मे किसी के देश या जाति या शिक्षा या सामाजिक पद का कोई महत्व नहीं; ऐसी बातें व्यर्थ हैं। महत्व इस बात का है कि क्या किसी व्यक्ति के पास मसीह है, और वह बराबरी से सबको मिल सकता है।

12 इसलिए कि तुम परमेश्वर के द्वारा चुने गए को उसने तुम्हें इस प्रकार का नया जीवन दिया है, और तुम्हारे लिए उसके गहरे प्रेम और चिन्ता के कारण, तुम्हें दूसरों के साथ कोमलता और दयालुता का व्यवहार करना चाहिए। उन पर अच्छा प्रभाव डालने की चिन्ता मत करो परन्तु शान्त रहकर धीरज के साथ दुःख उठाने को तैयार रहो। 13 दीन बनो और क्षमा करने को तैयार रहो, कभी किसी के विरुद्ध मन मे कोई कड़वाहट न रखो। स्मरण रखो कि प्रभु ने तुम्हे क्षमा किया, इसलिए तुम्हें भी दूसरो को क्षमा करना चाहिए। 14 सबसे बढ़कर, प्रेम को अपने जीवन की अगुवाई करने दो, क्योंकि तब पूरी कलीसिया सिद्ध एकता के साथ बन्धी रहेगी। 15 मसीह की ओर से आनेवाली मन की शान्ति सदैव तुम्हारे हृदयों और जीवनों में उपस्थित रहे, क्योंकि उसकी देह के अंग के रूप मे यही तुम्हारा उत्तरदायित्व और सौभाग्य है। और सदा धन्यवाद करते रहो। 16 स्मरण रखो कि मसीह ने क्या शिक्षा दी और उसके वचन तुम्हारे जीवनो को सुखद बनाएं और तुम्हें बुद्धिमान बनाएं; उनको शिक्षा दो कि वह दूसरों को शिक्षा दें। धन्यवाद भरे हृदय से प्रभु के लिए भजन और सगीत और आत्मिक गीत गाओ। 17 और जो कुछ तुम कहो या करो, प्रभु यीशु के प्रतिनिधि होकर कहो, और उसके साथ पिता परमेश्वर की उपस्थिति मे उसको धन्यवाद देने के लिए आओ।

18 हे पत्नियो, अपने आप को अपने-अपने पति के आधीन रखो क्योंकि प्रभु ने तुम्हारे लिए यही उपाय किया है। 19 और तुम पतियो को अपनी अपनी पत्नियो के प्रति प्रेमी और दयालु होना चाहिए, उनके विरुद्ध तीखे और कठोर नहीं। 20 तुम बच्चों को सदा अपने माता—पिता की

आज्ञा माननी चाहिए, क्योंकि यह प्रभु को भाता है। 21 हे पिताओ, अपने बच्चों को इतना मत डांटो कि वे निराश हो जाएं और प्रयत्न करना छोड़ दें। 22 तुम दासों को सदा अपने सांसारिक स्वामियों की आज्ञा मानना चाहिए, केवल उसी समय उन्हें प्रसन्न करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए, जब वे देख रहे हों परन्तु पूरे समय, प्रभु के लिए अपने प्रेम के कारण और प्रभु को प्रसन्न करने की अपनी इच्छा के कारण हर्ष के साथ उनकी आज्ञा मानो। 23 अपने सब कामों को परिश्रम से प्रसन्नतापूर्वक करो, ठीक उसी प्रकार मानो तुम प्रभु के लिए कार्य कर रहे हो और न कि केवल अपने स्वामियों के लिए, 24 यह स्मरण रखते हुए कि प्रभु मसीह ही तुम्हें बदला देगा, अपनी सब सम्पत्ति का तुम्हारा पूरा हिस्सा तुम्हें देगा। वही है जिसके लिए वास्तव में तुम काम कर रहे हो। 25 और यदि तुम उसके लिए अपना काम अच्छे से अच्छा नहीं करोगे, तो वह तुम्हें इस प्रकार का प्रतिफल देगा जो तुम्हें प्रिय नहीं होगा—क्योंकि वह किसी का पक्षपात नहीं करता।

4 1 तुम दासों के स्वामियों को भी अपने सब दासों के साथ निष्पक्ष और न्यायी होना चाहिए। सदा स्मरण रखो कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है जो तुम्हें ध्यान से देख रहा है।

2 लगातार प्रार्थना करते रहो परमेश्वर के उत्तरों की प्रतीक्षा करो और मिल जाने पर धन्यवाद करना स्मरण रखो। 3 हमारे लिए भी प्रार्थना करना न भूलो, कि परमेश्वर हमें मसीह के शुभ संदेश को प्रचार करने के अनेक अवसर दे जिसके लिए मैं यहां जेलखाने में हूं। 4 प्रार्थना करो कि मैं इसे स्वतन्त्रता से पूरी रीति से साहस के साथ बताऊं, और इतना स्पष्ट बताऊं जैसा, मेरे लिए करना अवश्य है। 5 दूसरों को शुभ संदेश सुनाने के अपने अवसरों से लाभ उठाओ। उनके साथ अपने सब सम्पर्क में बुद्धिमान बनो। 6 तुम्हारी बातचीत अनुग्रह सहित और साथ ही विचार शील हो, क्योंकि तब हर एक के लिए तुम्हारा उत्तर उचित होगा।

7 हमारा अति प्रिय भाई, तुखिकुस तुम्हें मेरा हाल सुनायेगा। वह परिश्रमी है और मेरे साथ प्रभु की सेवा करता है। 8 मैंने उसे इस विशेष यात्रा पर केवल यही देखने भेजा कि तुम कैसे हो, और तुम्हें शान्ति और उत्साह दिलाने के लिए भेजा है। 9 मैं उनेसिमुस को भी भेज रहा हूं जो तुम ही में से एक, विश्वासयोग्य और अति प्रिय भाई है। वह और तुखिकुस तुम्हें सब ताजा समाचार देंगे।

10 अरिस्तर्खुस, जो यहां कैदी होकर मेरे साथ है, तुम्हें अपना नमस्कार भेजता है, और वैसे ही बरनबास का सम्बन्धी मरकुस भी। और जैसे मैंने पहले कह दिया है, यदि मरकुस तुम्हारे पास आए तो उसका हार्दिक स्वागत करो।[1] 11 यीशु यूस्तुस भी तुम्हें नमस्कार भेज रहा है। केवल ये ही यहूदी मसीही यहां मेरे साथ काम कर रहे हैं, और उनसे मुझे कितनी शान्ति मिली है। 12 इपफ्रास, जो तुम्हारे शहर का है और मसीह यीशु का सेवक है, तुम्हें अपना नमस्कार दे रहा है। वह लगन के साथ सदा तुम्हारे लिए प्रार्थना करता है, परमेश्वर से यह मांगते हुए कि वह तुमको सामर्थी और सिद्ध बनाये और तुम्हारे हर काम में तुम्हारी सहायता करे कि तुम उसकी इच्छा को जान सको। 13 मैं तुम्हें निश्चय दिलाता हूं कि उसने अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हारे लिए, और लौदीकिया और हियरापुलिसवालों के लिए कठिन परिश्रम किया है। 14 प्रिय डाक्टर लूका तुम्हें अपना नमस्कार भेजता है, और वैसे ही देमास भी। 15 कृपया मेरा नमस्कार लौदीकिया के मसीही मित्रों को, और नुमफास को, और उन लोगों को जो उसके घर में एकत्रित होते हैं, देना। 16 जब तुम यह पत्र पढ़ लोगे तो पढ़कर क्या इसे लौदीकिया की

[1] मूलतः "उससे अच्छी तरह व्यवहार करना।"

कलीसिया तक पहुचा सकोगे ? और उस पत्र को पढना जो मैंने उनको लिखा था। 17 और अखिप्पुस से कहना, "तुझे प्रभु ने जो कुछ करने को कहा है उसे निश्चय ही करना।"

18 मेरा नमस्कार मेरी ही लिखाई से लिखा हुआ मिले। मुझे यहाँ जेलखाने में स्मरण रखो, परमेश्वर की आशिषें तुम्हें घेरे रहें।

विनीत : पौलुस

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री

1 1 पौलुस, सीलास, और तीमुथियुस की ओर से। थिस्सलुनीकियो की कलीसिया के नाम—तुम जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह के हो। हमारा पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से आशिष और हृदय की शान्ति तुम्हारा मूल्यवान उपहार हो।

2 हम सदा तुम्हारे लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते और लगातार तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हैं। 3 तुम्हारे विषय मे अपने पिता परमेश्वर से बातें करते समय हम तुम्हारे प्रेमपूर्ण कार्यों, और तुम्हारे दृढ विश्वास तथा हमारे प्रभु यीशु मसीह के फिर से लौटने की स्थिर आशा को कभी नही भूलते। 4 प्रिय भाइयो, परमेश्वर के अति प्रिय लोगो, हम जानते हैं कि परमेश्वर ने तुम्हें चुना है। 5 क्योंकि जब हमने तुम तक शुभ सदेश पहुचाया तो तुमने उसे व्यर्थ नही समझा, नही, तुमने उसे बडी रुचि के साथ सुना। हमने तुमको जो कुछ बताया उसका प्रबल प्रभाव तुम पर पडा, क्योंकि पवित्र आत्मा ने तुम्हे बडा निश्चय दिलाया कि हमारी कही हुई बातें सच हैं। और तुम जानते हो कि किस प्रकार हमारे जीवन तुम्हारे लिए हमारे सन्देश की सत्यता का आगे प्रमाण रहे। 6 इसलिए तुम हमारे और प्रभु के पीछे चलने वाले बन गए, क्योंकि तुमने हमारा संदेश हर्ष के साथ पवित्र आत्मा की ओर से ग्रहण किया यद्यपि इसके कारण तुम पर क्लेश और दुख आए। 7 फिर तुम आप भी मकिदुनिया और अखया के सब अन्य मसीहियों के लिए आदर्श बन गए, 8 और अब प्रभु का वचन तुम्हारे पास से सब जगह मकिदुनिया और अखया की सीमा से आगे तक फैल चुका है, क्योकि जहा कही हम जाते हैं लोगो से परमेश्वर मे तुम्हारे आश्चर्यजनक विश्वास के विषय मे सुनते हैं। हमे इसके विषय मे उन्हे बताने की आवश्यकता नही, 9 क्योंकि वे हमे बताते रहते हैं कि तुमने हमारा कितना भव्य स्वागत किया, और तुम किस प्रकार अपनी मूर्तियो से परमेश्वर की ओर फिर गए जिससे अब जीवित और सच्चा प्रभु ही तुम्हारा एकमात्र स्वामी है। 10 और वे बताते हैं कि तुम किस प्रकार स्वर्ग मे परमेश्वर के पुत्र के फिर आने की बाट जोह रहे हो... यीशु की—जिनको परमेश्वर ने फिर जिला दिया—और पाप के विरुद्ध परमेश्वर के भयानक क्रोध से केवल वही हमे बचानेवाले हैं।

2 1 प्रिय भाइयो, तुम आप ही जानते हो, वहाँ हमारा आना कितना लाभप्रद रहा। 2 तुम जानते हो कि वहा ठीक तुम्हारे पास आने से पहले फिलिप्पी मे हमे कितनी बुरी तरह सताया गया और हमने वहाँ कितना दुख

सहा। तौभी परमेश्वर ने हमें साहस दिया कि फिर से वही संदेश निडर होकर तुमको सुनाएं यद्यपि हम शत्रुओं से घिरे हुए थे। 3 इसलिए तुम समझ सकते हो कि हम किसी झूठी प्रेरणा से या मन में बुरे उद्देश्य को लेकर प्रचार नहीं कर रहे थे, हम स्पष्ट बोलनेवाले और सच्चे थे; 4 क्योंकि हम परमेश्वर के दूत होकर बोलते हैं, उन्होंने हम पर भरोसा रखा है कि हम सत्य को बताएं, हम सुननेवालों की रुचि के अनुसार उसका सन्देश तनिक भी नहीं बदलते, क्योंकि हम केवल परमेश्वर की सेवा करते हैं, जो हमारे हृदयों के गूढ़ विचारों को जांचता है। 5 कभी एक बार भी हमने झूठी बढ़ाई करके तुमको जीतने का प्रयत्न नहीं किया, जैसा तुम बहुत अच्छी तरह से जानते हो, और परमेश्वर जानता है कि हम तुम्हारे मित्र होने का ढोंग नहीं कर रहे थे जिससे तुम हमें पैसा दो। 6 जहां तक आदर का प्रश्न है, हमने तुमसे या किसी और से यह मांगा तक नहीं, यद्यपि मसीह के प्रेरित होने के कारण तुमसे आदर पाने का निश्चय ही हमारा अधिकार था। 7 परन्तु हम तुम्हारे मध्य इतने दयालु रहे जैसे कोई माता जो अपने निज बच्चों को खिलाती-पिलाती और उनकी देख-रेख करती है। 8 हमने तुमसे अधिक प्रेम किया—इतना अधिक कि हमने तुमको न केवल परमेश्वर का संदेश दिया, परन्तु अपना जीवन भी। 9 प्रिय भाइयो, क्या तुम स्मरण नहीं करते कि हमने तुम्हारे मध्य कितना कठिन परिश्रम किया? रात-दिन हमने काम किया और पसीना बहाया कि अपनी जीविका के योग्य कमा सकें ताकि तुम्हारे मध्य परमेश्वर के शुभ-संदेश का प्रचार करते समय, हमारे खर्च से वहां किसी पर भार न पड़े। 10 तुम आप ही हमारे गवाह हो—जैसा परमेश्वर है कि हम तुममें से हर एक के प्रति शुद्ध, ईमानदार, और निर्दोष रहे हैं। 11 हमने तुम्हारे साथ ऐसे बातें की जैसे पिता अपनी निज सतान के साथ करता है—क्या तुम्हें स्मरण नहीं?—तुमसे बिनती करते हुए, तुम्हें उत्साह दिलाते हुए और मांग करते हुए भी 12 कि तुम्हारे दैनिक जीवन परमेश्वर को लज्जित न करें, परन्तु उसको आनन्दित करें जिसने तुम्हें अपनी महिमा में सहभागी करने के लिए अपने राज्य में बुलाया है।

13 और हम इसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना कभी नहीं छोड़ेंगे कि जब हमने तुमको प्रचार किया, तुमने हमारे कहे गए वचनों को केवल हमारा ही नहीं समझा परन्तु तुमने हमारे कथन को परमेश्वर का निज वचन स्वीकार किया—जैसा, निश्चय ही, वह था—और जब तुमने उस पर विश्वास किया तो उसने तुम्हारा जीवन बदल दिया। 14 और फिर, प्रिय भाइयों, तुमने अपने ही शहर के लोगों से सताव सहा, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार यहूदिया में कलीसियाओं ने अपने ही निज लोगों, यहूदियों, के द्वारा सताव सहा। 15 अपने ही भविष्यद्वक्ताओं को मार डालने के बाद, उन्होंने प्रभु यीशु तक का वध किया, और अब उन्होंने निर्दयता के साथ हमें सताया है और हमें बाहर निकाल दिया है। वे परमेश्वर और मनुष्य दोनों के विरुद्ध हैं, 16 हमें अन्यजातियों को प्रचार करने से रोकने का प्रयत्न कर इस भय से कि कहीं कुछ लोग उद्धार न पा लें, और इस प्रकार उनका पाप बढ़ता जाता है। परन्तु अन्त में परमेश्वर का क्रोध उन पर आ जाता है।

17 प्रिय भाइयो, तुम्हें छोड़ने के बाद, और कुछ ही समय के लिए तुमसे दूर रहने के बाद (यद्यपि हमने तुम्हें कभी नहीं भुलाया), हमने बहुत प्रयत्न किया कि एक बार फिर तुमसे भेंट करने के लिए आए। 18 हमने आना बहुत चाहा और मैंने, हां मुझ पौलुस ने, बार-बार प्रयत्न किया, परन्तु शैतान ने हमें रोका। 19 क्योंकि क्या है जिसके लिए हम जीते हैं, जिससे हमें आशा और आनन्द मिलता है और जो हमारा घमण्ड में भरा प्रतिफल और मुकुट

है ? यह तुम ही हो। हा, तुमसे हमे बहुत आनन्द मिलेगा जब हम प्रभु यीशु मसीह के फिर आने पर उनके सामने एक साथ खड़े होंगे। 20 क्योंकि तुम हमारे विजय का उपहार और आनन्द हो।

3 1 अन्त मे, जब मुझसे और अधिक सहन नही हुआ, मैंने निर्णय किया कि एथेन्स मे अकेला ठहरू 2, 3 और हमारे भाई और सह-कर्मी, परमेश्वर के सेवक, तीमुथियुस को तुमसे भेंट करने, तुम्हारे विश्वास को दृढ करने और तुम्हे उत्साह दिलाने, और तुम पर बीतने वाले सब संकटों मे तुम्हें डरपोक बनने से रोकने के लिए भेजू। (परन्तु निश्चय ही तुम जानते हो कि इस प्रकार के संकट हम मसीहियो के लिए परमेश्वर की योजना का एक भाग हैं। 4 जब हम तुम्हारे साथ ही थे तभी हमने समय से पहले तुम्हें चेतावनी दी थी कि क्लेश शीघ्र ही आएगा—और वह आया भी।) 5 जैसे मैं कह रहा था, जब मैं इस अनिश्चय को और अधिक नही सह सका तो मैंने तीमुथियुस को यह पता लगाने के लिए भेज दिया कि तुम्हारा विश्वास अब तक दृढ है या नही। मुझे डर था कि कदा-चित—शैतान ने तुमसे भी लाभ उठाया हो और हमारा सारा काम व्यर्थ हो गया हो। 6 और तीमुथियुस अभी अभी लौटा है और उसने यह आनन्द का समाचार सुनाया है कि तुम्हारा विश्वास और प्रेम पहले ही के समान दृढ है और तुम हमारी यात्रा का आनन्द के साथ स्मरण करते हो और हमे देखने की उतनी ही इच्छा रखते हो जितनी इच्छा हम तुम्हे देखने की रखते हैं। 7 इसलिए प्रिय भाइयो, हमारे सब दुःखदायी क्लेशो और दुःखों मे यहा हमें बडी सान्त्वना-मिली है, अब जब कि हमने जान लिया है कि तुम प्रभु के प्रति सच्चाई मे स्थिर हो। 8 जब तक हम जानते है कि तुम उसमे दृढ बने हो तब तक हम सब कुछ सह सकते हैं। 9 तुम्हारे और तुम्हारे लिए हमारी प्रार्थनाओ मे हमे मिले आनन्द और हर्ष के लिए हम परमेश्वर को जितना चाहिए उतना धन्यवाद कैसे दे सकते हैं ? 10 क्योकि रात दिन हम तुम्हारे लिए प्रार्थना करते रहते हैं, परमेश्वर से यह मांगते हुए कि वह हमे तुम्हें फिर से मिलाए ताकि हम, तुम्हारे विश्वास की घटी पूरी कर सकें।

11 स्वयं हमारा पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु हमे तुम्हारे पास फिर से वापिस भेज दें। 12 और प्रभु ऐसा करे कि तुम्हारा प्रेम आपस मे एक दूसरे के लिए और हर एक के लिए बढता और उमडता रहे, जैसा हमारा प्रेम तुम्हारे लिए रहता है। 13 इसका परिणाम यह होगा कि तुम्हारे हृदय हमारे पिता परमेश्वर के द्वारा शक्तिशाली, निष्पाप, और पवित्र बनाये जाएगे, जिससे तुम उसके सामने उस दिन निर्दोष खडे रह सकोगे जब हमारे प्रभु यीशु मसीह उन सबके साथ लौटेंगे जो उनके हैं।[1]

4 1, 2 प्रिय भाइयो, मुझे यह भी कहने दो: तुम पहले ही जानते हो कि अपने दैनिक जीवन मे परमेश्वर को कैसे प्रसन्न किया जाए, क्योकि तुम आज्ञाओ को जानते हो जो हमने स्वयं प्रभु यीशु की ओर से तुम्हे दी। अब हम तुमसे विनती करते है—हाँ, हम तुमसे प्रभु यीशु के नाम मे माग करते हैं—कि तुम उस आदर्श के अधिक से अधिक निकट रहो। 3, 4 क्योकि परमेश्वर चाहता है कि तुम पवित्र और शुद्ध बनो, और सब व्यभिचार से बचे रहो ताकि तुम मे से हर एक पवित्रता और आदर के साथ विवाह करे— 5 लालसा से भरी वासना के साथ नही जैसा अन्य जाति परमेश्वर और उसके मार्गों से अज्ञात रहकर करते हैं। 6 और पर-मेश्वर की इच्छा यह भी है: कि तुम दूसरे पुरुष की पत्नी को लेने के द्वारा इस विषय मे कभी धोखा न दो, क्योकि प्रभु इसके

[1] मूलत "अपने सब पवित्र लोगों के साथ लौटेंगे। आमीन।"

लिए तुम्हें भयानक दंड देगा, जैसा हमने पहले ही तुम्हें इसके विषय में गम्भीरता से बता दिया है। 7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें गंदे मन के और वासना से भरे होने के लिए नहीं, परन्तु पवित्र और शुद्ध होने के लिए बुलाया है। 8 यदि कोई इन नियमों के अनुसार रहने से इन्कार करे तो वह मनुष्यों के नहीं परन्तु परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन कर रहा है जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है।

9 परन्तु भाई के शुद्ध प्रेम के सम्बन्ध में, जो परमेश्वर के लोगों के मध्य होना चाहिए, मुझे निश्चय है कि मुझे बहुत अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। क्योंकि परमेश्वर आप ही तुम्हें एक दूसरे से प्रेम करना सिखा रहा है। 10 वास्तव में, तुम्हारे सारे देश भर में सब मसीही भाइयों के प्रति तुम्हारा प्रेम प्रबल है। तौभी, प्रिय भाइयो, हम तुमसे विनती करते हैं कि तुम उससे अधिक से अधिक प्रेम रखो। 11 यह तुम्हारी महत्वाकांक्षा होनी चाहिए: शान्त जीवन बिताना, अपने काम से काम रखना, जैसा हमने पहले भी तुमसे कहा। 12 परिणाम यह होगा कि जो लोग मसीही नहीं है तुम पर विश्वास रखेंगे और तुम्हारा आदर करेंगे, और तुम्हें अपने खर्च के लिए किसी दूसरे पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

13 और अब, प्रिय भाइयो, मैं चाहता हूं तुम जानो कि किसी मसीही के मरने पर क्या होता है, जिससे जब ऐसा हो तो तुम शोक से भरे न रहो, जैसा वे कहते हैं जिनके पास कोई आशा नहीं। 14 क्योंकि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरे और फिर से जी उठे, इसलिए हम यह विश्वास भी कर सकते हैं कि जब यीशु फिर से लौटेंगे, तब परमेश्वर उनके साथ उन सब मसीहियों को लाएगा जो मर चुके हैं। 15 मैं यह तुमको प्रभु की ओर से बताता हूं: कि हम जो तब भी जीते रहेंगे जब प्रभु लौटेगा, तो हम प्रभु से मिलने के लिए उनसे कभी आगे न बढ़ेंगे जो अपनी कब्रों में हैं। 16 क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से महान ललकार के साथ और मन को हिला देने वाली प्रधानदूत की चिल्लाहट और परमेश्वर की तुरही की आवाज़ के साथ उतरेगा। और विश्वासी जो मरे हुए हैं पहले मिलने के लिए जी उठेंगे। 17 तब हम जो उस समय तक जीवित रहेंगे, हवा में प्रभु से मिलने के लिए बादलों में उनके साथ उठा लिए जाएंगे और सदाकाल तक उसके साथ रहेंगे। 18 इसलिए इस सन्देश में एक दूसरे को शान्ति और उत्साह दो।

5 1 यह सब कब होने वाला है? प्रिय, भाइयो, वास्तव में मुझे इसके विषय में तुमसे अधिक कहने की आवश्यकता नहीं, 2 क्योंकि तुम बहुत अच्छी तरह से जानते हो कि इसे कोई नहीं जानता। प्रभु का वह दिन रात में चोर के समान अचानक आ जाएगा। 3 जब लोग कहते होंगे, सब कुछ ठीक है, सब कुशल और चैन से है—तब, अचानक ही उन पर आपत्ति आ पड़ेगी जैसे बच्चे के जन्म के समय स्त्री को अचानक प्रसव-पीड़ा आरम्भ हो जाती है। और ये लोग कहीं भाग नहीं सकेंगे—छिपने का कहीं स्थान न होगा। 4 परन्तु, प्रिय भाइयो, इन बातों के विषय में तुम अन्धकार में नहीं हो, और तुमको आश्चर्य नहीं होगा जब चोर के समान प्रभु का वह दिन आ जाएगा। 5 क्योंकि तुम सब ज्योति और दिन की सन्तान हो, और अन्धकार और रात्री की नहीं। 6 इसलिए जागते और सावधान रहो, दूसरों के समान सोते न रहो। उसके फिर से लौटने की बाट जोहते रहो और गम्भीर बने रहो। 7 रात ही सोने का समय है और इसी समय लोग नशे में धुत हो जाते हैं। 8 परन्तु हम जो ज्योति में चलते हैं विश्वास और प्रेम के कवच के द्वारा सुरक्षित रहकर, और उद्धार की सुखद आशा का टोप पहनकर शान्त बने रहें। 9 क्योंकि परमेश्वर ने हम पर अपना कोप उंडेलने के लिए नहीं, परन्तु यीशु मसीह के द्वारा हमारा उद्धार

करने के लिए चुना। 10 वह हमारे लिए मर गए, ताकि हम उनके साथ सर्वदा के लिए रह सकें, चाहे हम उनके फिर से आने के समय मरे हुए हों या जीवित हों। 11 इस लिए एक दूसरे की उन्नति के लिए एक दूसरे को उत्साहित करो, जैसा तुम पहले ही से कर रहे हो।

12 प्रिय भाइयो, अपनी कलीसिया के अधिकारियों का आदर करो जो तुम्हारे मध्य परिश्रम करते हैं और सब बुराइयों के विरुद्ध तुम्हें चेतावनी देते हैं। 13 उनके लिए मन में बड़ी उच्च भावना रखो और पूरे हृदय से उनसे प्रेम रखो क्योंकि वे तुम्हारी सहायता के लिए श्रम कर रहे हैं। और स्मरण रखो, तुम्हारे बीच कोई झगड़ा न हो। 14 प्रिय भाइयो, जो सुस्त हैं उनको चेतावनी दो, जो भयभीत हैं उनको सान्त्वना दो, जो निर्बल हैं उनकी प्रेम से देख-भाल करो और प्रत्येक से धीरज रखो। 15 ध्यान दो कि कोई किसी की बुराई का बदला बुराई से न दे, परन्तु सदा एक दूसरे के साथ और सबके साथ भलाई करने का प्रयत्न करो। 16 सदा आनन्दित रहो। 17 सदा प्रार्थना में लगे रहो। 18 चाहे कुछ हो जाए, सदा धन्यवाद दो, क्योंकि तुम्हारे लिए, जो मसीह यीशु के हो, यही परमेश्वर की इच्छा है। 19 पवित्र आत्मा को न दबाओ। 20 उनकी हंसी न उड़ाओ जो भविष्यद्वाणी करते हैं, 21 परन्तु हर बात को परखो यह निश्चय करने के लिए कि वह सच है या नहीं, और यदि वह सच हो, तो उसे ग्रहण करो। 22 हर प्रकार की बुराई से दूर रहो।

23 शान्ति का परमेश्वर आप ही तुमको पूरी रीति से शुद्ध रखे, और तुम्हारी आत्मा और मन और देह उस दिन तक शक्तिमान और निर्दोष रखे जाएं जब हमारे प्रभु यीशु मसीह फिर से वापिस आएंगे। 24 परमेश्वर, जिसने तुम्हें अपनी सन्तान बनने के लिए बुलाया, तुम्हारे लिए यह सब करेगा, जैसी उसने प्रतिज्ञा की है।

25 प्रिय भाइयो, हमारे लिए प्रार्थना करो।

26 मेरी ओर से वहां के सब भाइयों को नमस्कार कहो। 27 मैं प्रभु के नाम से तुम्हें आज्ञा देता हूं कि तुम यह पत्र सब मसीहियों को पढ़कर सुनाओ।

28 और हमारे प्रभु यीशु मसीह की अपार आशिषें तुम में से हर एक पर बनी रहें।

विनीत, पौलुस

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री

1 1 पौलुस, सीलास और तीमुथियुस की ओर से। थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम जो हमारे पिता परमेश्वर और यीशु मसीह में सुरक्षित है।

2 पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह तुम्हें अपार आशिष और शान्ति से भरा हृदय और मन दें।

3 प्रिय भाइयो, तुम्हारे लिए परमेश्वर को धन्यवाद देना न केवल उचित है, परन्तु यह परमेश्वर के प्रति हमारा कर्तव्य है, क्योंकि तुम्हारा विश्वास वास्तव में अद्भुत रीति से बढ़ा है और एक दूसरे के लिए तुम्हारा प्रेम बढ़ता जा रहा है। 4 हमें दूसरी कलीसियाओं को यह बताने में प्रसन्नता होती है कि सब संकटों और कठिनाइयों का सामना करते हुए भी तुममें धीरज और परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास

है। 5 यह तो केवल एक ही उदाहरण है कि परमेश्वर किस प्रकार निष्पक्ष हो कर न्याय के साथ काम करता है, क्योंकि वह तुम्हारे दुःखों को तुम्हें अपने राज्य के लिए तैयार करने के लिए काम में ला रहा है, 6 जबकि साथ ही वह उन लोगों के लिए न्याय और दण्ड तैयार कर रहा है जो तुम्हें दुःख पहुँचा रहे हैं। 7 और इसलिए मैं तुम से जो दुःख उठा रहे हो कहूंगा, कि परमेश्वर तुम्हें हमारे साथ विश्राम दे उस समय जब प्रभु यीशु धधकती हुई आग में अपने सामर्थी दूतों के साथ स्वर्ग से एकाएक प्रगट होंगे, 8 उन लोगों का न्याय करेंगे जो परमेश्वर को जानना नहीं चाहते, और जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अपने उद्धार की उनकी योजना को स्वीकार नहीं करते हैं। 9 वे प्रभु से सदा के लिए दूर रहकर अनन्त नरक में दण्ड पाएंगे, कि उनके सामर्थ की महिमा को कभी न देखें, 10 जब वह अपने लोगों, अपने भक्तों के लिए किए गए अपने सब कामों के कारण प्रशंसा और सराहना पाने के लिए आएंगे। और तुम उनके साथ होंगे, क्योंकि उनके विषय में हमने तुम्हें जो कुछ बताया उस पर तुमने विश्वास किया है। 11 इसलिए हम तुम्हारे लिए प्रार्थना करते रहते हैं कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस प्रकार की सन्तान बनाए जैसा वह चाहता है—तुम्हें इतना अच्छा बनाए जितना बनने का तुम सोचते भी नहीं हो। अपनी सामर्थ से तुम्हारे विश्वास का प्रतिफल दे। 12 तब सब तुम पर पड़े हुए प्रभावों को देख कर प्रभु यीशु मसीह के नाम की बड़ाई करेंगे, और तुम्हारी सबसे बड़ी महिमा इसमें होगी *कि तुम उनके हो। हमारे* परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की कोमल दया से तुम्हारे लिए यह सब सम्भव किया गया है।

2 1, 2 और अब, हमारे प्रभु यीशु मसीह के फिर से आने, और उनसे भेंट करने के लिए हमारे इकट्ठे होने के विषय में क्या कहें— प्रिय भाइयो, उस अफवाह से कि प्रभु का यह दिन पहले से ही आरम्भ हो चुका है, कृपा कर व्याकुल और उत्तेजित न होओ। यदि तुम लोगों से सुनो कि उन्होंने इसके विषय में परमेश्वर से दर्शन या विशेष सन्देश पाया है, या चिट्ठियों के विषय में कि वे मेरे द्वारा भेजी गई हैं, तो उन पर विश्वास मत करो। 3 चाहे वे कुछ भी कहें उनके बहकावे और धोखे में मत आओ। क्योंकि जब तक दो बातों का पूरा होना न हो ले तब तक वह दिन नहीं आएगा : पहले, परमेश्वर के विरुद्ध भारी विद्रोह का समय होगा, और तब विद्रोह का पुरुष—नरक का पुत्र आएगा। 4 वह जितने देवता होंगे सब का तिरस्कार करेगा, और श्रद्धा और भक्ति की हर अन्य वस्तु को नष्ट करेगा। वह अन्दर जायेगा और परमेश्वर के मन्दिर में परमेश्वर के समान बैठेगा, यह दावा कर कि वह स्वयं परमेश्वर है। 5 क्या तुम्हें स्मरण नहीं कि मैंने तुम्हें यह बताया था जब मैं तुम्हारे साथ था? 6 और तुम जानते हो कि अब तक उसके यहां होने से उसे क्या रोक रहा है, क्योंकि वह केवल तभी आ सकता है जब उसका समय आ जाए। 7 उसके काम के विषय में जो विद्रोह और नरक का यह पुरुष अपने आने पर करेगा, वह तो पहले से ही हो रहा है[1]? परन्तु वह आप ही तब तक नहीं आएगा जब तक वह जो उसे रोके हुए है उसके मार्ग से दूर न हो जाए। 8 तब वह दुष्ट जन प्रकट होगा जिसे प्रभु यीशु जब वह लौटेंगे तब अपने मुंह की श्वास से जला देंगे और अपनी उपस्थिति से नष्ट कर देंगे। *9 यह पुरुष शैतान के हथियार के रूप में, शैतान* की शक्तियों से भरा हुआ आएगा, और अनोखे प्रमाणों से सबको ठगेगा और बड़े आश्चर्यकर्म करेगा। 10 वह उन लोगों को जो पहले ही नरक के मार्ग पर हैं धोखा देगा क्योंकि उन्होंने सत्य का इन्कार कर दिया है, उन्होंने उस पर विश्वास करने से और उससे प्रेम रखने से,

[1] मूलत "अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है।"

और उसके द्वारा अपने उद्धार पाने से इन्कार कर दिया है, 11 इसलिए परमेश्वर उनको उनके सारे मन से झूठ पर विश्वास करने देगा, 12 और झूठ पर विश्वास रखने, सत्य का इन्कार करने, और अपने पापों का आनन्द लेने के कारण वे सब उचित न्याय पाएंगे।

13 परन्तु हमारे प्रभु के प्रिय भाइयो, हमें तुम्हारे लिए परमेश्वर को सदा धन्यवाद देना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर ने आरम्भ से ही तुम्हें चुना कि पवित्र आत्मा के काम के द्वारा और सत्य पर तुम्हारे विश्वास रखने के द्वारा शुद्ध करे, तुम्हें उद्धार दे*। 14 हमारे द्वारा उन्होंने तुमको शुभ-सन्देश सुनाया। हमारे द्वारा उन्होंने तुमको हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा में सहभागी होने के लिए बुलाया। 15 प्रिय भाइयो, इन सब बातों को मन में रख कर, स्थिर रहो और उस सत्य को जकड़े रहो जिसकी शिक्षा हमने अपनी चिट्ठियों में और उस समय तुम्हें दी जब हम तुम्हारे साथ थे।

16 हमारे प्रभु यीशु मसीह स्वयं, और हमारा पिता परमेश्वर, जिसने हमसे प्रेम किया, और हमें अनन्त शान्ति और आशा दी जिसके हम योग्य नहीं थे, 17 तुम्हारे मनों को शान्ति दें, और हर भली बात और काम में तुम्हारी सहायता करें।

3 1 अन्त में, प्रिय भाइयो, जब मैं इस पत्र को समाप्त करने पर हूँ, मैं तुम से निवेदन करता हूं कि तुम हमारे लिए प्रार्थना करो। पहले प्रार्थना करो कि प्रभु का सन्देश तेजी से फैले और जहाँ कहीं जाए हर जगह विश्वासियों को जीतते हुए विजयी हो जैसा उस समय हुआ था जब यह तुम तक पहुंचा था। 2 यह भी प्रार्थना करो कि हम दुष्ट व्यक्तियों के चंगुल से बचाए जाएं क्योंकि हर व्यक्ति प्रभु में प्रेम नहीं रखता।

3 परन्तु प्रभु विश्वासयोग्य है, वह तुम्हें दृढ़ बनाएगा और शैतान के हर प्रकार के आक्रमण से तुम्हारी रक्षा करेगा। 4 और हम प्रभु पर विश्वास रखते हैं कि तुम हमारी शिक्षाओं के अनुसार चल रहे हो, और सदा चलोगे। 5 प्रभु तुम्हें परमेश्वर के प्रेम की समझ और मसीह के धीरज में पहुंचाए।

6 प्रिय भाइयो, अब एक आज्ञा है जो हमारे प्रभु यीशु के नाम में उनके अधिकार के द्वारा दी जाती है: किसी भी ऐसे मसीही से दूर रहो जो अपने दिन सुस्ती में बिताता है और कठिन काम करने के उस आदर्श पर नहीं चलता जो हमने तुम्हारे लिए ठहराया। 7 क्योंकि तुम अच्छी रीति से जानते हो कि तुम्हें हमारे उदाहरण पर चलना चाहिए; तुमने हमें आवारा घूमते कभी नहीं देखा, 8 हमने बिना खरीदे कभी किसी से भोजन-वस्तु ग्रहण नहीं की; अपनी जीविका कमाने के लिए हमने रात-दिन परिश्रम किया, जिससे हम तुम में से किसी पर भार न बनें। 9 यह नहीं कि हमें तुमसे भोजन मांगने का अधिकार नहीं था, परन्तु हम तुमको आप यह करके दिखाना चाहते थे, कि तुम्हें अपनी जीविका के लिए कैसे काम करना चाहिए। 10 जब हम वहां तुम्हारे साथ थे, तभी हमने तुम्हें यह आज्ञा दी थी: "जो काम न करे वह न खाए।" 11 तौभी हमारे सुनने में आता है कि तुम में से कई सुस्ती में, काम करने से इन्कार कर, और दूसरों की बुराई करने में समय बर्बाद कर जीवन बिता रहे हो। 12 प्रभु यीशु मसीह के नाम में हम ऐसे लोगों से बिनती करते हैं—हम उनको आज्ञा देते हैं—कि वे चुप रहें, काम करें, और अपनी जीविका के लिए कमाएं। 13 और प्रिय भाइयो शेष तुम सब से मैं कहता हूं, भला करने से कभी न थको। 14 जो कुछ हमने इस पत्र में लिखा है यदि कोई उसे मानने से इन्कार करे, तो ध्यान दो वह कौन है और उससे अलग रहो, ताकि उसे अपने आप पर लज्जा आए। 15 उसे शत्रु जैसे

* मूलत "या, क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें सबसे पहले विश्वास लाने वालों में चुना।"

न समझो, परन्तु उससे इस प्रकार बोलो जिस प्रकार उस भाई से बोलते हो जिसे चेतावनी देने की आवश्यकता हो।

16 शान्ति का प्रभु आप ही तुम्हें अपनी शान्ति हर समय दे। प्रभु तुम सब के साथ रहे।

17 अब यह मेरा नमस्कार है जो मैं अपने ही हाथ से लिख रहा हूं, जैसा मैं अपनी सब चिट्ठियों के अन्त में करता हू, यह प्रमाण देने के लिए कि यह सचमुच मेरी ओर से है। यह मेरी ही लिखाई में लिखी हुई है। 18 हमारे प्रभु यीशु मसीह की आशिष तुम सब पर हो।

विनीत, पौलुस

तीमुथियुस के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री

1 1 यीशु मसीह के प्रचारक पौलुस के द्वारा जो हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की आज्ञा से और हमारी एक मात्र आशा—हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा भेजा गया।

2 तीमुथियुस के नाम। तीमुथियुस, प्रभु की बातों में तू मेरे पुत्र के सदृश है। हमारा पिता परमेश्वर, और हमारे प्रभु यीशु मसीह तुझ पर अपनी कृपा और दया प्रकट करें और तेरे हृदय और मन में बड़ी शान्ति दें।

3, 4, मकिदुनिया को जाने से पहले जैसे मैंने कहा, इफिसुस में कृपया ठहरा रह और उन पुरुषों को जो गलत सिद्धान्त की शिक्षा दे रहे हैं रोक। उनकी कल्पित कथाओ और झूठी कहानियों और ऐसे विचारो को बन्द कर अर्थात बुद्धिहीन विचारो को जो विश्वास की परमेश्वर की योजना को ग्रहण करने में लोगों की सहायता करने के स्थान पर प्रश्न और विवाद खड़ा करते हैं। 5 मैं जिस बात के लिए उत्सुक हूं वह यह है कि वहां के सब मसीही शुद्ध हृदयों से उत्पन्न होने वाले प्रेम से परिपूर्ण रहें, और उनके मन शुद्ध रहें और उनका विश्वास दृढ़ रहे। 6 परन्तु इन शिक्षको ने इस मत को छोड़ दिया है और वे अपना समय वाद-विवाद और मूर्खता की बातो में बिताते हैं। 7 वे मूसा की व्यवस्था के सिखानेवालो के समान प्रसिद्ध होना चाहते हैं जबकि उन्हें थोडा भी ज्ञान नही कि वह व्यवस्था हम पर वास्तव में क्या प्रगट करती है। 8 वह व्यवस्था भली है यदि उसका प्रयोग वैसा ही किया जाए जैसा परमेश्वर ने ठहराया है। 9 परन्तु वह हमारे लिए नही है, जिनका परमेश्वर ने उद्धार किया है, वह पापियों के लिए है जो परमेश्वर से घृणा करते हैं, जिनके हृदयो में विरोध भरा है, जो शाप देते और शपथ खाते हैं, अपने माता-पिता पर आक्रमण करते और हत्या करते हैं। 10, 11 यह व्यवस्था पापियों को पहिचानने के लिए बनाई गई है अर्थात उनको जो अनैतिक, पुरुषगामी, व्यभिचार करने वाले, अपहरण करने वाले तथा झूठ बोलते हैं। और वे सब जो हमारे धन्य परमेश्वर के शुभ-सन्देश का विरोध करते हैं जिसका मैं दूत हूं।

12 मैं अपने प्रभु यीशु मसीह का धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने मुझे अपना दूत होने के लिए चुना, और अपने प्रति विश्वासयोग्य रहने की शक्ति दी। 13 यद्यपि मैं मसीह के नाम की हंसी उडाया करता था। मैं उसके लोगों को ढूंढ निकालता था और उन्हें हर सम्भव कष्ट देता था। परन्तु परमेश्वर ने मुझ पर दया की

क्योंकि मैं नहीं जानता था कि मैं क्या कर रहा हूं, क्योंकि मैं उस समय मसीह को नहीं जानता था। 14 ओह! हमारे प्रभु की दया कितनी अधिक है, क्योंकि उसने मुझ पर प्रगट किया कि मैं किस प्रकार उस पर विश्वास रखूं और मसीह यीशु के प्रेम से भरपूर हो जाऊं। 15 यह कितना सत्य है, और मेरी कितनी अभिलाषा है कि सब इसे जानें, कि मसीह यीशु इस संसार में पापियों का उद्धार करने के लिए आए—और मैं उनमें सबसे बड़ा पापी था। 16 परन्तु परमेश्वर ने मुझ पर दया की जिससे मसीह यीशु मुझे सबके लिए उदाहरण करके दिखा सकें कि वह सबसे बड़े पापी के साथ भी कितने धीरजवन्त हैं, ताकि दूसरे जान लें कि वे भी अनन्त जीवन पा सकते हैं। 17 परमेश्वर की महिमा और बड़ाई युग-युग तक होती रहे। वह सनातन राजा, अदृश्य-अमर है, ज्ञान में परिपूर्ण, केवल वही परमेश्वर है।

18 अब, हे मेरे पुत्र, तीमुथियुस, यह तेरे लिए मेरी आज्ञा है, प्रभु के युद्ध में अच्छी रीति से लड़, जैसा प्रभु ने हमें अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बताया था कि तुम लड़ोगे। 19 मसीह में अपने विश्वास में दृढ़ रहो और उस काम को करने के द्वारा जिसे तू जानता है कि उचित है, अपना विवेक सदा शुद्ध रख। क्योंकि कुछ लोगों ने अपने विवेक की आज्ञा नहीं मानी है और जान-बूझ कर वही किया है जिसे वे जानते थे कि गलत है। कोई आश्चर्य नहीं कि इस प्रकार से परमेश्वर का तिरस्कार करके शीघ्र ही उन्होंने मसीह पर से अपना विश्वास खो दिया। 20 हुमिनयुस और सिकन्दर इसके दो उदाहरण हैं। मुझे उन्हें दण्ड देने के लिए शैतान को सौंपना पड़ा जब तक कि वे न सीखें कि मसीह के नाम पर कलंक नहीं लगाना चाहिए।

2 1 मेरे निर्देश यह हैं: दूसरों के लिए बहुत प्रार्थना करो, विनती करो कि परमेश्वर की दया उन पर हो, उन सबके लिए धन्यवाद दो जो वह उनके लिए करने पर है। 2 शासकों और अधिकारियों के लिए प्रार्थना करो, जिससे हम शान्ति और चैन के साथ, अपना समय धार्मिकता से बिताते हुए और प्रभु के विषय[1] में ध्यान करते हुए जी सकें। 3 यह अच्छा है, और हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को भाता है। 4 क्योंकि उसकी इच्छा है कि सब उद्धार पाएं इस सत्य को समझें। 5 कि परमेश्वर एक ओर है और सब लोग दूसरी ओर हैं, और मसीह यीशु मानवीय रूप से उनके मध्य में हैं कि 6 समस्त मानव जाति के लिए अपना प्राण देकर उनको एक दूसरे से मिलाएं यही सन्देश है जिसे उचित समय में परमेश्वर ने संसार को दिया। 7 और यह पूर्णरूप से सत्य है कि मैं परमेश्वर का सेवक और प्रचारक चुना गया हूं ताकि अन्य जातियों को यह सत्य सिखाऊं, और विश्वास के द्वारा परमेश्वर के उद्धार की योजना उन पर प्रगट करूं।

8 इसलिए मैं चाहता हूं कि पुरुष पाप, क्रोध और द्वेष से मुक्त रहकर, प्रत्येक स्थान में पवित्र हाथों को परमेश्वर की ओर उठाकर प्रार्थना करें। 9, 10 और इसी प्रकार स्त्रियों को भी शान्त और व्यवहार कुशल रहना चाहिए और वस्त्र के सम्बन्ध में विवेकशील बनना चाहिए। मसीही स्त्रियां भली और दयालु होने के लिए पहचानी जाएं, अपने बालों के संवारने की रीति या अपने आभूषणों या भड़काने वाले वस्त्रों के कारण नहीं। 11 स्त्रियों को शान्ति और नम्रता के साथ सुनना और सीखना चाहिए। 12 मैं स्त्रियों को कभी पुरुषों को सिखाने या उन पर प्रभुता करने नहीं देता। वे तुम्हारी कलीसिया की सभाओं में शान्त रहें। 13 क्यों? क्योंकि परमेश्वर ने पहले आदम को बनाया, और उसके बाद उसने हव्वा को बनाया। 14 और आदम नहीं, परन्तु हव्वा शैतान के धोखे में आई, और उसका परिणाम पाप हुआ।

[1] मूलतः "सारी भक्ति और गम्भीरता से।"

15 इसलिए परमेश्वर ने स्त्रियों को बच्चों को जन्म देने के समय दुःख और पीड़ा भेजी, परन्तु यदि वे शान्त, अच्छा, और प्रेमपूर्ण जीवन बिताते हुए, उस पर भरोसा रखें तो वह उनकी आत्माओं का उद्धार करेगा।

3 1 यह कथन सत्य है कि यदि कोई पुरुष सेवक बनना चाहता है तो उसमें यह अच्छी महत्वकांक्षा है। 2 क्योंकि सेवक को एक अच्छा व्यक्ति होना चाहिए जिसके जीवन के विरुद्ध कोई अंगुली न उठा सके। उसके पास केवल एक ही पत्नी होनी चाहिए, और उसे परिश्रमी और विचारशील, अनुशासित और सभ्य होना चाहिए। उसे पहुनाई करने वाला और अच्छा बाइबल-शिक्षक होना चाहिए। 3 उसे पियक्कड़ या झगड़ालू नहीं होना चाहिए, परन्तु कोमल और दयालु होना चाहिए। और पैसों से प्रेम करने वाला नहीं होना चाहिए। 4 उसके परिवार का आचरण और व्यवहार अच्छा होना चाहिए और उसके बच्चे ऐसे होने चाहिएं जो शीघ्रता से चुपचाप आज्ञा मानें। 5 क्योंकि यदि कोई पुरुष अपने ही छोटे परिवार को नहीं सम्भाल सकता, तो वह पूरी कलीसिया की सहायता कैसे कर सकता है? 6 सेवक को एक नया मसीही नहीं होना चाहिए, क्योंकि उसे घमण्ड हो सकता है कि वह इतने शीघ्र चुना गया, और विनाश से पहले घमण्ड होता है। (शैतान का विनाश इसका एक उदाहरण है।) 7 साथ ही उसका कलीसिया के बाहर लोगों में—जो मसीही नहीं हैं—अच्छा नाम होना चाहिए—ताकि शैतान उस पर अनेक दोष लगाकर उसे फंसा न सके, और कलीसिया की अगुवाई करने की उसकी स्वतन्त्रता छीन न ले। [1]8 सेवकों को भी वैसे ही प्रचारकों के समान भले, दृढ़ पुरुष होना चाहिए। उन्हें बहुत पियक्कड़ और पैसों का लोभी नहीं होना चाहिए। 9 उन्हें मसीह का, जो उसके विश्वास का छिपा हुआ स्रोत है, उत्सुक व सम्पूर्ण हृदय का शिष्य होना चाहिए। 10 इससे पहले कि उन्हें सेवक बनने के लिए कहा जाए, उन्हें कलीसिया में दूसरे कार्य सौंपे जाने चाहिए जिससे उनके आचरण और योग्यता की परख हो सके, और यदि वे ठीक सिद्ध हों, तब वे सेवक होने के लिए चुने जा सकते हैं। 11 उनकी पत्नियों को विचारशील होना चाहिए, पियक्कड़ और बुराई करने वालियां नहीं, परन्तु अपने हर काम में विश्वासयोग्य होना चाहिए। 12 सेवक की केवल एक ही पत्नी हो और उसका परिवार सुखी और आज्ञाकारी हो। 13 जो सेवक का कार्य अच्छा करते हैं उन्हें अच्छा प्रतिफल मिलेगा दूसरों से उन्हें आदर मिलेगा और उनका आत्म-विश्वास बढ़ेगा और प्रभु पर उन्हें अधिक भरोसा रहेगा।

14 मैं अभी तुम्हें ये बातें लिख रहा हूं, यद्यपि शीघ्र ही तुम्हारे पास आने की मेरी आशा है। 15 जिससे यदि कुछ समय तक मैं न आऊं तो तुम जान लो कि जीवित परमेश्वर की कलीसिया के लिए, जो परमेश्वर के सत्य को रखती और उसका आदर करती है, तुम किस प्रकार के पुरुषों को पद के अधिकारी होने के लिए चुनो। 16 यह पूरी रीति से सच है कि ईश्वरीय जीवन बिताना सहज नहीं है। परन्तु इसका उपाय मसीह में है, जो मनुष्य होकर इस संसार में आया, अपनी आत्मा में कलंकहीन और पवित्र प्रमाणित हुआ, स्वर्गदूतों ने जिसकी सेवा की, सब देशों में जिसका प्रचार हुआ, सब स्थानों में मनुष्यों ने जिसको ग्रहण किया और जो स्वर्ग में अपनी महिमा में फिर से ग्रहण कर लिया गया।

4 1 परन्तु पवित्र आत्मा हमें स्पष्ट बताता है कि अन्तिम समयों में कलीसिया के कुछ लोग मसीह से फिर जाएंगे और ऐसे शिक्षकों के उत्साही अनुयायी बन जाएंगे जिनके विचारों

[1] अक्षरश, "कलीसिया का अग्रणी" अथवा "सभापतित्व करने वाला धर्मवृद्ध।"

की प्रेरणा शैतान से मिली हो। 2 ये शिक्षक झूठ बोलेंगे और इतना अधिक बोलेंगे कि उनका विवेक भी उन्हें कष्ट नही देगा। 3 वे कहेंगे विवाह करना गलत है और मास खाना गलत है, यद्यपि परमेश्वर ने यह वस्तुएं शिक्षित मसीहियो को दी हैं कि वे इनका आनन्द लें और उनके लिए धन्यवाद दें। 4 क्योकि परमेश्वर की बनाई हुई प्रत्येक वस्तु अच्छी है, और हम उसे खा सकते है यदि हम उसके लिए धन्यवाद दें, 5 और यदि हम उस पर परमेश्वर की आशिष मागें, क्योकि परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के द्वारा वह शुद्ध हो जाती है।

6 यदि तू दूसरो को इसे समझाए तो तू उस योग्य प्रचारक का अपना कर्तव्य पूरा करेगा जिसका पालन-पोषण विश्वास के द्वारा और उस सच्ची शिक्षा के द्वारा होता है जिसे तूने अपनाया है। 7 मूर्खता भरे विचारो और कल्पित तथा गढी हुई व्यर्थ कथाओ पर वादविवाद करने मे समय न गंवाओ। आत्मिक रूप से योग्य बने रहने के अभ्यास मे अपना समय और शक्ति लगाओ। 8 शारीरिक-अभ्यास उचित है, परन्तु आत्मिक-अभ्यास उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है और तुम्हारे सब कामो के लिए बल बढाने वाली दवा है। इसलिए अपना आत्मिक अभ्यास करो और अधिक उत्तम मसीही बनने का अभ्यास करो, क्योकि इससे तुम्हे न केवल इस जीवन मे, परन्तु अगले जीवन में भी सहायता पहुचेगी। 9, 10 यह सत्य है और सबको इसे स्वीकार करना चाहिए। हम परिश्रम करते हैं और बहुत दुःख उठाते हैं ताकि लोग इस पर विश्वास करें, क्योकि हमारी आशा जीवित परमेश्वर पर है जिसने सबका उद्धार किया है विशेषकर उनका जो उसके उद्धार को ग्रहण करते हैं।

11 इन बातो को सिखा और निश्चय जान कि प्रत्येक इसे अच्छी रीति से सीखे। 12 तू जवान है इसलिए कोई तुझे तुच्छ न समझे। उनके लिए आदर्श बन, उन्हें अपनी शिक्षा और जीवन के अनुसार चलने दे, अपने प्रेम, अपने विश्वास और अपने शुद्ध विचारों मे उनके लिए उदाहरण बन जा। 13 जब तक मैं वहा न पहुंचूं, कलीसिया के लिए पवित्र शास्त्र को पढ और दूसरो को समझा परमेश्वर के वचन का प्रचार कर 14 परमेश्वर ने तुझे जो योग्यताएं अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा दी हैं जब कलीसिया के प्राचीनों ने अपने हाथ तेरे सिर पर रखे, उनको निश्चय ही उपयोग मे ला। 15 इन योग्यताओं को काम में ला, अपने काम में अपनी भरपूर शक्ति लगा दे ताकि सब तेरी बढती और उन्नति देख सकें। 16 अपने सब कामों और विचारो के प्रति सावधान रह। जो उचित है उसके प्रति सच्चा बना रह और परमेश्वर तुझे आशीष तथा दूसरो की सहायता करने में तेरा उपयोग करेगा।

5 1 किसी बूढ़े से तीखी बात मत कर, परन्तु आदर के साथ, मानो वह तेरा पिता हो, उसे समझा। जवानों से इस प्रकार बात कर जैसे तू अति प्रिय भाई से करेगा। 2 बूढी स्त्रियो से माता का सा, और युवतियो से अपनी बहिन का सा, उनके विषय मे पवित्र विचार रखकर, व्यवहार कर। 3 कलीसिया को विधवाओ की प्रेम के साथ देख-रेख करनी चाहिए, यदि उनकी सहायता करने वाला कोई और न हो। 4 परन्तु यदि उनके बाल-बच्चे या नाती-पोते हों, तो उन ही को उनका उत्तरदायित्व उठाना चाहिए, क्योकि दया अपने ही घर से आरम्भ होनी चाहिए, जैसे माता-पिता का भार उठाने के द्वारा जो आवश्यकता मे पडे हुए हो इससे परमेश्वर को प्रसन्नता होती है। 5 कलीसिया को उन विधवाओं की देख-भाल करनी चाहिए जो गरीब और संसार मे अकेली हों, यदि वे सहायता के लिए परमेश्वर की ओर ताक रही हो और प्रार्थना मे बहुत समय बिता रही हों, 6 पर उनकी नही जो इधर-उधर [illegible] की बुराई करने मे [illegible] रही

की खोज में हों, और इस प्रकार अपनी आत्माओं का बिगाड कर रही हों । 7 यह तुम्हारी कलीसिया का नियम होना चाहिए जिसमे मसीही जानें और वही करें जो ठीक है । 8 परन्तु किसी को भी, जो अपने निज-सम्बन्धियों की उनकी आवश्यकता मे देख-रेख नही करेगा, विशेषकर उनकी जो उसी के निज घराने में रह रही हों, यह कहने का अधिकार नही कि वह मसीही है । ऐसा व्यक्ति अन्यजातियो से भी अधिक बुरा है । 9 जो विधवा कलीसिया के विशेष कार्यकर्ताओं[1] मे से एक बनना चाहती है, उसकी आयु कम से कम साठ वर्ष की होनी चाहिए और उसका केवल एक ही बार विवाह हुआ हो । 10 अपने अच्छे कामों के कारण लोगों में उसका अच्छा नाम होना चाहिए। क्या उसने अपने बच्चो का पालन-पोषन ठीक रीति से किया है ? क्या वह पाहुनों, तथा दूसरे मसीहियों के प्रति दयालु रही है ? क्या उसने बीमारो और पीडितों की सेवा की है ? क्या वह दया करने को हमेशा तैयार रहती है ? 11 जवान विधवाओ को इस विशेष झुंड की सदस्य नहीं बनना चाहिए, क्योंकि सम्भव है कि कुछ समय बाद वे मसीह की दी गई अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दें और फिर से विवाह कर लें । 12 और इस प्रकार वे दण्ड की भागी ठहरेंगी क्योंकि उन्होंने अपनी पहली प्रतिज्ञा तोड दी । 13 इसके अतिरिक्त सम्भव है कि वे सुस्त हो जाएं और घर-घर फिरकर बुराई करने में, दूसरो के काम मे हाथ डाल कर समय बिताएं, 14 इसलिए मैं सोचता हू कि इन जवान विधवाओ के लिए अधिक उत्तम है कि वे फिर विवाह करें और सन्तान उत्पन्न करें और अपने ही घर को सम्भालें, तब कोई उनके विरुद्ध कुछ कह नही सकेगा । 15 क्योकि मुझे डर है कि उनमे से कई कलीसिया से पहले ही दूर हो गई है और शैतान के द्वारा भटका दी गई हैं । 16 मैं तुम्हें फिर से स्मरण दिला दूं कि विधवा की देख-रेख उसके सम्बन्धियो को करनी चाहिए, और यह काम कलीसिया पर नही छोडना चाहिए । तब कलीसिया अपना पैसा उन विधवाओं की देख-रेख मे खर्च कर सकती है जो बिल्कुल अकेली हैं और सहायता के लिए कोई नही है ।

17 जो प्रचारक अपना काम अच्छा करते हैं उन्हें अच्छा वेतन मिलना चाहिए और उनका बहुत आदर होना चाहिए, विशेषकर उनका जो प्रचार करने और शिक्षा देने, दोनों, मे कठिन परिश्रम करते हैं । 18 क्योकि पवित्रशास्त्र मे लिखा है, 'किसी बैल का मुह कभी न बाधना यदि वह अन्न का दायं कर रहा हो—उसे जाते-जाते खाने देना ।' 'और दूसरे स्थान मे लिखा है, 'काम करने वाले को उसका वेतन अवश्य मिलना चाहिए । 19 प्रचारक के विरुद्ध लगाए गए दोष को न सुनना जब तक कि उसको दोषी ठहराने वाले दो या तीन गवाह न हो । 20 यदि उसने वास्तव मे पाप किया हो, तो उसे सारी कलीसिया के सामने डाट पडनी चाहिए ताकि कोई और उसके उदाहरण पर न चले । 21 मैं परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह और पवित्र स्वर्गदूतों की उपस्थिति मे तुझे गम्भीरता के साथ ऐसा करने की आज्ञा देता हू चाहे प्रचारक तेरा घनिष्ठ मित्र हो या न हो । सब के साथ एक सा व्यवहार होना चाहिए । 22 प्रचारक का चुनाव करने मे शीघ्रता कभी न करना, क्योकि तू उसके पापों को अनदेखा कर सकता है और ऐसा प्रतीत हो सकता है कि तू उससे सहमत है । तू आप भी निश्चय ही सब पापों से दूर रह । 23 (फिर, इसका यह अर्थ नही कि तुझे शराब पीना पूरी रीति से छोड देना चाहिए । तुझे थोडा सा कभी-कभी दवा के रूप में अपने पेट के लिए लेना चाहिए क्योकि तू बहुदा बीमार रहता है ।) 24 स्मरण रख कि कुछ

[1] मूलत. "उसी विधवा का नाम लिखा जाए ।" या, "जो विधवा कलीसिया मे विशेषाधिकार प्राप्त करने के लिए अपना नाम दर्ज कराना चाहती है,"......।

मनुष्य, यहां तक कि प्रचारक भी पापमय जीवन व्यतीत करते हैं और सब इसे जानते हैं। इन परिस्थितियों में तू इस सम्बन्ध में कुछ कर सकता है। परन्तु दूसरी घटनाओं में केवल न्याय का दिन ही भयानक सत्य को प्रगट करेगा। 25 इसी प्रकार, सब जानते हैं कि कई प्रचारक कितना अच्छा काम करते हैं, परन्तु कभी कभी उनके अच्छे कार्य नहीं जाने जाते जब तक बहुत समय न बीत जाए।

6 1 मसीही दासों को अपने स्वामियों के लिए परिश्रम से काम करना चाहिए और उनका आदर करना चाहिए, कभी ऐसा कहने का अवसर मत दो कि मसीही लोग अच्छे काम करने वाले नहीं होते। इसके कारण परमेश्वर के नाम की या उसकी शिक्षाओं की हंसी न होने दो। 2 यदि उनके स्वामी मसीही हों, तो यह उनकी लापरवाही करने का कोई बहाना नहीं है, परन्तु इसके बदले उन्हें और भी अधिक परिश्रम से काम करना चाहिए क्योंकि उनके प्रयत्न से विश्वासी भाई की सहायता पहुंच रही है। तीमुथियुस तू इन सच्चाइयों को सिखा, और उनको मानने का सबको उत्साह दिला।

3 कुछ लोग इन बातों से इन्कार कर सकते है, परन्तु ये प्रभु यीशु मसीह की गम्भीर शिक्षाएं हैं और भक्ति के जीवन की नेव हैं। 4 जो भी कोई दूसरी बात कहता है वह घमण्डी और मूर्ख, दोनों, है। वह मसीह के वचनों के अर्थ को तोड़-मरोड कर बताता है और विवाद खडे करता है जिनसे ईर्ष्या और क्रोध उत्पन्न होते है, जिनका अन्त नाम रखने, दोष लगाने, और सन्देह करने में होता है। 5 ये विवाद करने वाले—जिनकी बुद्धि पाप से बिगड़ गई है—जानते नहीं कि किस प्रकार सत्य को बताएं, उनके लिए सुसमाचार केवल कमाई का साधन है, उनसे दूर रहो। 6 क्या तुम वास्तव में धनवान होना चाहते हो? तुम पहले ही धनवान हो यदि तुम सुखी और अच्छे हो। 7 फिर, हम अपने साथ कोई धन तो लाए नहीं थे जब हम इस संसार में आए, और हम मरने पर एक पैसा भी नहीं ले जा सकते। 8 इसलिए हमें बिना धन के भी अच्छी तरह सन्तुष्ट रहना चाहिए यदि हमारे पास पर्याप्त भोजन और वस्त्र हो। 9 परन्तु जो लोग धनी होने की लालसा रखते हैं वे पैसा कमाने के लिए शीघ्र ही सब प्रकार के बुरे काम करना आरम्भ कर देते हैं, ऐसे काम जिनसे उन्हें चोट पहुंचती है और वे बुरे मनवाले बन जाते हैं और जो अन्त में उन्हें नरक में पहुंचा देते हैं। 10 क्योंकि धन का प्रेम सब प्रकार के पापों की ओर पहला कदम है। कुछ लोग तो इसके प्रेम के कारण परमेश्वर से भी फिर गए हैं, और परिणाम यह हुआ है कि उन्होंने अपने आपको अनेक दुःखों में छलनी बना लिया है।

11 हे तीमुथियुस, तू परमेश्वर का जन है। इन सब बुराइयों से भाग और इसके बदले भली और अच्छी बात के लिए परिश्रम कर, उन पर भरोसा रखना और दूसरों से प्रेम करना, धीरजवन्त और दयालु बनना सीख। 12 परमेश्वर के लिए लड़ता रहना। उस अनन्त जीवन को कसकर जकडे रह जिसे परमेश्वर ने तुझे दिया है और जिसकी अच्छी साक्षी तू ने बहुत गवाहों के सामने दी है। 13 मैं परमेश्वर के सामने जो सबको जीवन देता है, और मसीह यीशु के सामने जिन्होंने पुन्तियुस पीलातुस के सामने निडर होकर साक्षी दी, तुझे आज्ञा देता हूं। 14 कि तू उन सब कामों को पूरा कर जिन्हें करने को उन्होंने तुझसे कहा है, ताकि अब से लेकर हमारे प्रभु यीशु मसीह के लौटने तक कोई तुझमें दोष न पा सके। 15 क्योंकि समय आने पर वह मसीह को स्वर्ग से प्रगट करेगा। जो धन्य और एक मात्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है। 16 जो अकेला अमर है, जो इतने भयानक प्रकाश में रहता है कि कोई मानव-प्राणी उस तक नहीं पहुंच सकता। किसी मनुष्य ने उसको

परन्तु यह कि तू बुद्धिमान और सामर्थी बने, और उनसे प्रेम रखे और उनके साथ रहना तुझे भाए। 8 यदि तू इस भीतरी शक्ति को उत्तेजित करे, तो तू प्रभु के विषय में दूसरो को बताने से, या उन पर प्रगट करने से कभी नही डरेगा कि मैं तेरा मित्र हूँ यद्यपि मसीह के कारण मे मैं यहा जेल मे हूँ। तू मेरे साथ प्रभु के लिए दुःख उठाने को तैयार रहेगा, क्योकि वह दुःख में तुझे शक्ति देगा। 9 वही है, जिसने हमारा उद्धार किया और हमे अपने पवित्र काम के लिए चुना, इसलिए नही कि हम इसके योग्य थे परन्तु इसलिए कि संसार की उत्पत्ति से बहुत पहले यह उसकी योजना थी—कि मसीह के द्वारा हमको अपना प्रेम और अनुग्रह दर्शाए। 10 और जब उसने हम पर यह सब स्पष्ट कर दिया है, हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के आने के द्वारा, जिन्होने मृत्यु की शक्ति को तोड दिया और उन पर भरोसा रखने के द्वारा अनन्त-जीवन का मार्ग हमें दर्शाया 11 और परमेश्वर ने मुझे उनका प्रचारक चुना है, कि अन्यजातियो को प्रचार करूं और उनको शिक्षा दूं। 12 इसीलिए तो मैं यहा जेल मे दु ख सह रहा हू और निश्चय ही मुझे इसमे लज्जा नही होती, क्योकि मैं उसको, जिस पर मैंने विश्वास किया है, जानता हूँ, और मुझे निश्चय है कि मैंने उसको जो कुछ सौंपा है उसे वह उस दिन तक सुरक्षित रखने मे समर्थ है जब तक वह फिर से न लौट आए। 13 जिस सत्य की शिक्षा मैंने तुझे दी, विशेषकर विश्वास और प्रेम की, जिसे मसीह तुझे देता है*, उसे आदर्श जानकर पकड़े रह। 14 पवित्र आत्मा की ओर से जो तुझ मे रहता है परमेश्वर के द्वारा दी गई जो श्रेष्ठ योग्यता तू ने पाई उसकी अच्छी चौकसी कर।

15 जैसा तू जानता है, एशिया से जितने मसीही यहा आए थे, सबने मुझे छोड़ दिया है, यहाँ तक की फूगिलुस और हिरमुगिनेस भी मुझे छोडकर चले गए। 16 उनेसिफुरुस और उसके सारे परिवार को प्रभु आशिष दे, क्योंकि उसने कई बार मुझसे भेंट की और मुझे उत्साहित किया। उसके आने से मुझे ताजी हवा मे सांस लेने का सा आनन्द मिला, और वह मेरे यहा बन्दीगृह में रहने के कारण कभी लज्जित नहीं हुआ। 17 वास्तव में, रोम आने पर उसने मुझे सब जगह ढूँढा और अन्त में मुझे ढूंढ लिया। 18 मसीह के फिर से लौटने के दिन प्रभु उसे विशेष आशिष दे। और जितना मैं तुम्हें बता सकता हूँ उससे बढ़कर तुम जानते हो कि उसने इफिसुस में मेरी कितनी अधिक सहायता की।

2

1 हे मेरे पुत्र तीमुथियुस, उस सामर्थ्य से जो मसीह यीशु तुझे देते हैं बलवन्त हो जा। 2 क्योंकि तुझे उन बातों की शिक्षा दूसरो को देनी चाहिए जो तूने और बहुतो ने मुझसे सुनी हैं। इन महान सच्चाइयों को ऐसे विश्वासयोग्य पुरुषों को सिखा जो उसे दूसरों तक पहुँचा दें। 3 मसीह यीशु के अच्छे सैनिक के सदृश्य मेरे समान दु ख मे सहभागी हो, 4 और मसीही सैनिक होने के नाते अपने आपको सांसारिक बातो मे न फंसा, नही तो तू उनको प्रसन्न नही कर सकेगा जिन्होंने तुझे अपनी सेना मे भरती किया। 5 प्रभु का काम करने के लिए उसके नियमों पर चल, जिस प्रकार कोई पहलवान, या तो नियमों का पालन करता है, या फिर अयोग्य समझा जाता है और कोई पुरस्कार नहीं जीतता। 6 उस किसान के समान कठिन परिश्रम कर जिसे अच्छी फसल आने पर अच्छा भुगतान मिलता है। 7 इन तीनों उदाहरणों पर सोच-विचार कर, और प्रभु यह समझने में तेरी सहायता करे कि वे तुझ पर कैसे लागू होते हैं। 8 इस अपूर्व तथ्य को कभी न भूल कि यीशु मसीह, मनुष्य थे, जिनका जन्म राजा दाऊद के वंश में हुआ था, और वह परमेश्वर

* मूलतः "प्रेम के साथ जो मसीह यीशु मे है।"

ये, जैसा इस तथ्य से प्रगट है कि वह मृतकों मे से फिर जी उठे। 9 और इसलिए क्योंकि मैंने इन महान सच्चाइयों का प्रचार किया है, मैं यहां कष्ट मे हूं और अपराधी के समान जेल में रखा गया हूं। परन्तु परमेश्वर का वचन जंजीरो से नहीं जकड़ा गया है, यद्यपि मैं जकडा गया हूं। 10 मैं दुःख सहने के लिए हर्ष के साथ तैयार हूं यदि इससे उन लोगों को जिन्हें परमेश्वर ने चुना है, मसीह यीशु मे उद्धार और अनन्त महिमा मिले। 11 मुझे इस सत्य से शान्ति मिलती है कि जब हम मसीह के लिए दुःख सहते हैं और मर जाते हैं तब इसका केवल यही अर्थ होता है कि हम उसके साथ स्वर्ग में रहना आरम्भ करेंगे। 12 और यदि हम सोचते हैं कि उसके लिए हम जो काम अभी कर रहे हैं वह कठिन है, तो केवल स्मरण रखो कि किसी दिन हम उसके साथ बैठने और उसके साथ राज्य करने जा रहे हैं। परन्तु यदि दुःख सहने पर हम साहस छोड़ दें, और मसीह के विरुद्ध हो जाएं, तो उसको भी हमारे विरुद्ध होना पड़ेगा। 13 और उस समय, जब हममें थोड़ा भी विश्वास करने की शक्ति न रह जाए, तब भी वह हमारे प्रति विश्वासयोग्य रहता है और हमारी सहायता करेगा, क्योंकि वह हमें, जो उस ही के अंग हैं, अपनाने से इन्कार नहीं कर सकता, और वह हमें दी गई अपनी प्रतिज्ञाओं को सदा पूरी करेगा।

14 इन महान तथ्यों का स्मरण अपने लोगों को दिला, और उन्हें प्रभु के नाम से आज्ञा दे कि वे महत्वहीन बातों पर विवाद न करें। ऐसे वाद-विवाद गड़बडी फैलाने वाले व्यर्थ और हानिकारक तक होते हैं। 15 परिश्रम कर ताकि परमेश्वर तुझसे कह सके, तूने अच्छा किया। अच्छा कार्यकर्ता बन, जिससे लज्जित होने की आवश्यकता न हो जब परमेश्वर उसका कार्य जांचे। यह जान कि पवित्रशास्त्र मे क्या लिखा है और उसका क्या अर्थ है। 16 मूर्खता के विवादों से अलग रह जो लोगों को आपसी क्रोध के पाप मे पहुंचाते हैं। 17 भविष्य मे ऐसी बातें कही जाएंगी जो लम्बे समय तक दुःख और चोट पहुंचाएगी। हुमिनयुस और फिलेतुस, जिन्हें ऐसे वादविवादों से प्रेम है, इसी प्रकार के मनुष्य हैं। 18 उन्होंने इस झूठ का प्रचार कर, कि मरे हुओं का फिर से जी उठना पहले ही हो चुका है, सत्य का मार्ग त्याग दिया है, और उन्होंने कुछ लोगों के विश्वास को निर्बल कर दिया है जो उनकी मानते हैं। 19 परन्तु परमेश्वर का सत्य बड़ी चट्टान के सदृश्य अटल रहता है, और कोई इसे हिला नही सकता। यह नेव की वह चट्टान है जिस पर ये शब्द लिखे हुए हैं, "प्रभु उन लोगो को पहचानता है जो वास्तव मे उसके हैं", और "स्वयं को मसीही कहने वाले व्यक्ति को अनुचित कामो को नही करते रहना चाहिए।" 20 धनी घर में सोने और चादी, साथ ही कुछ लकड़ी और मिट्टी, के बने बर्तन होते हैं। मूल्यवान बर्तनो को अतिथियों के लिए काम मे लाया जाता है, और साधारण बर्तनो को रसोईघर मे या कूड़ा कचरा फेंकने के लिए काम में लाया जाता है। 21 यदि तू पाप से अलग रहे तो तू उस शुद्ध सोने से बने किसी पात्र के समान होगा—जो घर की सबसे श्रेष्ठ वस्तु हो—जिससे मसीह स्वयं अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए तुझे काम मे ला सके। 22 किसी भी ऐसी बात से भाग जो तुझमे बुरे विचार उत्पन्न करे, जो बहुधा जवानो मे होती है, परन्तु हर एक ऐसी बात के निकट रह जो तुझमे ठीक काम को करने की चाह उत्पन्न करती है। विश्वास और प्रेम रख, और उनकी संगति से आनन्दित रह जो प्रभु से प्रेम रखते हैं जिनके हृदय शुद्ध हैं। 23 मैं फिर से कहता हू, मूर्खता के विवादो मे मत पड़ जिनसे लोग दुःखी हो जाते हैं और क्रोध करने लगते हैं। 24 परमेश्वर के लोगों को झगडालू नहीं होना चाहिए उन्हे कोमलता और धीरज से उन लोगो को सिखाना चाहिए जो गलती पर हैं। 25 उन लोगों को सिखाते समय, जिन्होने सत्य को

बिगाड दिया है, दीन बन। क्योंकि यदि तू उनके साथ दीनता और सम्यता से बातें करे तो अधिक सम्भव है कि वे परमेश्वर की सहायता से अपने गलत विचारों से फिर जाएं और सत्य पर विश्वास लाएं। 26 तब वे समझ जाएंगे और शैतान की पाप की दासता से परमेश्वर की इच्छा पूरी करने लगेंगे।

3 1 तीमुथियुस, साथ ही तू यह भी जान सकता है, *कि अन्तिम दिनों में मसीही* विश्वास में बने रहना कठिन हो जाएगा। 2 क्यों कि लोग केवल अपने आप में और अपने धन से प्रेम रखेंगे, वे घमण्डी और अपनी बडाई करने वाले, परमेश्वर का ठट्ठा करनेवाले, अपने माता-पिता के अनाज्ञाकारी, उनके प्रति अकृतज्ञ और बहुत बुरे बन जाएगे। 3 वे कठोर मन के होंगे और कभी किसी की नहीं सुनेंगे, वे लगातार झूठ बोलनेवाले और बखेडा खडा करने वाले होंगे *और अनैतिकता की कुछ नहीं सोचेंगे। वे असभ्य* और निर्दयी होंगे और उनकी हसी उडाएंगे जो अच्छा बनने का प्रयत्न करते हैं। 4 वे अपने मित्रों का विश्वासघात करेंगे, वे कठोर मन के होंगे, घमण्ड से फूल जाएगे, और परमेश्वर की आराधना से अधिक सुख-विलास को चाह करेंगे, 5 वे तो आराधनालय[1] जायेंगे, परन्तु किसी बात पर विश्वास नहीं करेंगे। ऐसे लोगों के बहकावे में न आना। 6 वे उस प्रकार के हैं जो चालाकी से चोर की तरह दूसरों के घर में घुस जाते हैं, और मूर्ख तथा पाप के बोझ से दबी स्त्रियों से मित्रता करते हैं और उन्हें अपने नये सिद्धान्त सिखाते हैं। 7 इस प्रकार की स्त्रिया सदा नये शिक्षकों के पीछे हो लेती हैं, परन्तु वे सत्य को कभी नहीं समझती। 8 और *यह शिक्षक सत्य का विरोध* वैसे ही करते हैं जैसे यन्नेस और यम्ब्रेस ने मूसा का विरोध किया था। उनका मन गंदा, बिगडा हुआ है, और वे मसीही-विश्वास से फिर गए हैं। 9 परन्तु वे सदा इसी प्रकार करते नहीं रह सकते। *किसी दिन उनका छल सब पर प्रकट हो* जाएगा जैसे यन्नेस और यम्ब्रेस का पाप प्रगट हो गया था। 10 परन्तु तुम मुझे देखने से जान सकते हो कि मैं इस प्रकार का व्यक्ति नहीं हू। मेरा विश्वास, मेरा जीवन और मेरी इच्छा तुम जानते हो। तुम मसीह पर मेरे विश्वास के विषय में जानते हो और यह भी कि मैंने कैसे दु ख सहे हैं। तुम अपने लिए मेरे प्रेम, और मेरे धीरज को जानते हो। 11 तुम जानते हो कि शुभ-*सन्देश के मेरे प्रचार करने के कारण मैंने कितना* क्लेश सहा है। तुम यह भी जानते हो कि मेरे साथ क्या हुआ जब मैं अन्ताकिया, इकुनियुम और लुस्त्रा की यात्रा पर था, परन्तु प्रभु ने मुझे छुडाया। 12 हा, और जितने धार्मिकता का जीवन बिताने के द्वारा मसीह यीशु को प्रसन्न करने का निर्णय करते हैं वे उनके हाथों से, जो उनसे घृणा करते हैं, दु ख पाएंगे। 13 सच तो यह है कि दुष्ट मनुष्य और झूठे शिक्षक, दूसरों को धोखा देते हुए, बुरे से बुरे होते जाएगे, क्योंकि वे आप भी शैतान के द्वारा धोखा खाए हुए हैं। 14 परन्तु तुझे उन बातों पर अटल विश्वास रखना चाहिए जो तूने सीखी हैं। तू जानता है कि वे सच हैं क्योंकि तू यह भी जानता है कि तू सब पर भरोसा रख सकता है जिन्होंने तुझे सिखाया है। 15 तू जानता है कि कैसे *जब तू छोटा बालक था, तब तुझे पवित्र*-शास्त्र की बातें सिखाई गयी थी, और यही पवित्रशास्त्र है जो तुझे मसीह यीशु में विश्वास रखने के द्वारा परमेश्वर का उद्धार ग्रहण करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है। 16 पवित्र-शास्त्र हमें परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया है और यह हमें सत्य को सिखाने, और हमारे जीवन की गलतियों के पहचानने में लाभदायक है, यह हमें सुधारता है और उचित काम करने में हमारी सहायता करता है। 17 हमें हर बात में अच्छी रीति से तैयार बनाने का, और हर एक के साथ भलाई करने के लिए पूरी रीति से

[1] मूलतः "भक्ति का भेष तो धरेंगे।"

तत्पर बनाने का यह परमेश्वर का उपाय है।

4 1 और इसलिए मैं परमेश्वर और मसीह यीशु के सामने—जो किसी दिन अपना राज्य स्थापित करने के लिए प्रकट होने पर हैं जीवितों और मृतकों का न्याय करेंगे तुझे गम्भीरता के साथ प्रेरित करता हूं— 2 कि तू हर समय मे सुविधा और असुविधा दोनों के रहते, परमेश्वर के वचन का प्रचार कर। जब कभी आवश्यकता पड़े तो अपने लोगों को सुधार और डाट, उन्हे ठीक काम करने का उत्साह दिला और पूरे समय उन्हें परमेश्वर का वचन धीरज से सिखा। 3 क्योंकि ऐसा समय आने वाला है जब लोग सत्य को नही सुनेंगे, परन्तु उन शिक्षकों की खोज मे यहा-वहा फिरेंगे जो उनको वे ही बातें सुनायेंगे जिन्हें वे सुनना चाहेंगे। 4 वे पवित्रशास्त्र मे लिखी बातो को नही सुनेंगे और अपने ही बहके हुए विचारों पर चलेंगे। 5 स्थिर बना रह, और प्रभु के लिए दुःख उठाने से मत डर। दूसरों को मसीह के पास ला किसी काम को अधूरा मत छोड़। 6 मैं इसलिए कहता हूं क्योंकि मैं और अधिक समय तक तुम्हारी सहायता करने के लिए नही रहूगा। मेरा समय लगभग पूरा हो चुका है। शीघ्र ही अब मैं स्वर्ग के अपने मार्ग पर होऊंगा। 7 मैंने अपने प्रभु के लिए लम्बे समय तक परिश्रम से युद्ध किया है, और इन सब मे, मैं उसके प्रति, विश्वासयोग्य रहा हूं। और अब समय आ चुका है कि मैं युद्ध बन्द कर विश्राम करूं। 8 स्वर्ग मैं मेरे लिए एक मुकुट रखा हुआ है जिसे प्रभु जो धर्मी-न्यायी है, मुझे अपने फिर से लौटने के दिन देगा। और न केवल मुझको, परन्तु उन सबको भी देगा जिनके जीवनो मे प्रकट होता है कि वे उसके फिर से लौटने की उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।

9 कृपया जितनी जल्दी हो मेरे पास आ, 10 क्योंकि देमास ने मुझको छोड़ दिया है। उसने इस संसार की अच्छी बातो को प्रिय जाना और वह थिस्सलुनीके को चला गया है। क्रेसकेंस गलतिया को, तीतुस दलमतिया को चला गया है। 11 केवल लूका मेरे साथ है, जब तू आए तो अपने साथ मरकुस को लेता आ, क्योंकि मुझे उसकी आवश्यकता है। 12 (तुखिकुस भी चला गया है, क्योंकि मैंने उसे इफिसुस भेज दिया है।) 13 जब तू आए, तो उस कोट को अवश्य लाना जिसे मैंने त्रोआस मे भाई करपुस के पास छोड़ा था। और पुस्तकों को भी लाना, परन्तु विशेषकर चर्मपत्रों को लाना। 14 सिकन्दर ठठेरे ने मेरी बहुत हानि की है। प्रभु उसे दण्ड देगा। 15 उससे सावधान रह, क्योंकि उसने हमारी कही गई सब बातों का विरोध किया है। 16 पहली बार जब मुझे न्यायाधीश के सामने लाया गया तब यहा मेरी सहायता के लिए कोई भी नही था। सब भाग गए थे। आशा है कि इसके लिए वे दोषी नही ठहराए जाएगे। 17 परन्तु प्रभु मेरे साथ रहा और उसने मुझे यह अवसर दिया कि एक पूरा सन्देश निडर होकर प्रचार करूं जिसे सारा संसार सुने। और उसने मुझे सिंहों के सामने फेंके जाने से बचाया[1]। 18 हा, और प्रभु मुझे सदा सब बुराइयो से छुड़ाएगा और मुझे अपने स्वर्गीय राज्य मे पहुँचाएगा। परमेश्वर की महिमा सदा-सर्वदा तक होती रहे। आमीन्।

19 कृपा कर मेरा नमस्कार प्रिसकिल्ला और अक्विला, और उन सबको देना जो उनेसिफुरुस के घर मे रहते हैं। 20 इरास्तुस कुरिन्थुस मे रुक गया है, और मैंने त्रुफिमुस को मीलेतुस मे बीमार छोड़ा है। 21 यहा ठंड से पहले पहुचने का प्रयत्न कर। यूबूलुस, और पूदेंस, लीनुस,* क्लौदिया और दूसरे सब तुझे नमस्कार दे रहे हैं।

22 प्रभु यीशु मसीह तेरी आत्मा के साथ रहे।

विनीत: पौलुस

[1] मूलत "मैं तो सिंह के मुह से छुड़ाया गया।"

तीतुस के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

1 1, 2 परमेश्वर के दास और मसीह यीशु के दूत पौलुस की ओर से। मैं इसलिए भेजा गया हूं कि उन लोगों को विश्वासी बनाऊं जिन्हें परमेश्वर ने चुना है और उन्हें परमेश्वर के सत्य को जानना सिखाऊं—उस सत्य को जो जीवनों में परिवर्तन ला देता है—ताकि वे अनन्त जीवन पा सकें, जिसकी प्रतिज्ञा संसार के आरम्भ होने से पहले परमेश्वर ने उनको दी—और वह झूठ नहीं बोल सकता। 3 और अब अपने उचित समय में उसने इस शुभ सन्देश को प्रगट किया है और इसे सबको बताने की मुझे अनुमति दी है। हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की आज्ञा के द्वारा मुझे यह काम सौंपा गया है। 4 तीतुस, के नाम जो वास्तव में प्रभु के कामों में मेरा पुत्र है। परमेश्वर पिता और हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु तुम्हें अपनी आशिष और शान्ति दें।

5 मैंने तुझे वहां क्रेते द्वीप में इसलिए छोड़ा कि तू वहां की सब कलीसियाओं को दृढ़ बनाने में आवश्यकतानुसार सहायता कर सके, और मैंने तुझसे हर शहर में सेवकों को नियुक्त करने को कहा था जो उन आदेशों का पालन करें जो मैंने तुझे दिये थे। 6 जिन पुरुषों को तू चुने वे अपने अच्छे जीवन के लिए प्रतिष्ठित हों, उनमें से हरएक की एक ही पत्नी हो और उनके बालक प्रभु से प्रेम करनेवाले हों और माता पिता के अनाज्ञाकारी न हों। 7 इन सेवकों का जीवन निर्दोष होना चाहिए क्योंकि वे परमेश्वर के सेवक हैं। उन्हें घमण्डी या अधीर नहीं होना चाहिए, उन्हें पियक्कड़ या लड़ाकू या पैसों का लालची नहीं होना चाहिए। 8 उन्हें अपने घर में पहुनाई करने में आनन्दित होना चाहिए और हर भली बात का प्रेमी होना चाहिए। उन्हें समझदार और निष्पक्ष पुरुष होना चाहिए। उन्हें शुद्ध मन के और संयमी होना चाहिए। 9 उनका विश्वास, जिसकी शिक्षा उन्हें दी गई है, दृढ़ और स्थिर होना चाहिए, ताकि वे उसे दूसरों को सिखाने के योग्य हो सकें और जो उनसे असहमत होते हैं उनको बता सकें कि वे गलत हैं।

10 क्योंकि ऐसे अनेक हैं जो आज्ञा मानने से इन्कार करते हैं और यह बात अधिकतर उन में है जो कहते हैं कि सब मसीहियों को यहूदी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए, मूर्खता है, इससे सत्य के प्रति लोगों की आंखें अंधी हो जाती हैं, 11 और इसे बन्द करना चाहिए। अब तक घराने के घराने परमेश्वर के अनुग्रह से फिर चुके हैं। ऐसे शिक्षक केवल तुम्हारे पैसों के पीछे पड़े हुए हैं। 12 उन में से एक पुरुष ने जो कि क्रेते का एक भविष्यद्वक्ता था, उनके विषय में कहा है, क्रेते के ये लोग सब झूठे हैं, वे सुस्त पशु के समान केवल अपने पेट पालन के लिए जी रहे हैं, 13 और यह सत्य है। इसलिए वहां के मसीहियों से जितनी कड़ाई से हो सके बातें कर ताकि तू उन्हें विश्वास में दृढ़ बनाए, 14 और उनको यहूदियों की लोक कथाओं और ऐसे पुरुषों की बातों को सुनने से रोके जिन्होंने सत्य की ओर से अपनी पीठ फेर ली है। 15 जो व्यक्ति शुद्ध हृदय का है वह हर बात में अच्छाई और शुद्धता को देखता है परन्तु जो व्यक्ति अविश्वासी और बुरा है वह हर बात में बुराई देखता है, क्योंकि जितनी बातें वह देखता और सुनता है सब पर उसके गंदे मन और विद्रोही हृदय का प्रभाव पड़ता है। 16 ऐसे व्यक्ति परमेश्वर को जानने का दावा करते हैं, परन्तु उनके व्यवहार को देखकर कोई भी समझ लेता है कि वे नहीं जानते। वे घृणित और अनाज्ञाकारी, और अच्छे काम करने के अयोग्य हैं।

2 1 परन्तु जहां तक मेरा प्रश्न है, तू धार्मिक जीवन के पक्ष में बोला कर जिसका सम्बन्ध सच्ची मसीहियत से है। 2 वृद्ध पुरुषों

को सिखा कि वे गम्भीर और शान्त रहें, उन्हें समझदार होना चाहिए, सत्य को जानते और विश्वास करते हुए प्रेम और धीरज से हर काम करना चाहिए। 3 बूढ़ी स्त्रियों को सिखा कि वे अपना हर काम शान्ति से सम्मानपूर्वक करें। उन्हें दूसरों की बुराई करते हुए नही फिरते रहना चाहिए और बहुत पियक्कड़ नही होना चाहिए, परन्तु उन्हें भली बातों का शिक्षक होना चाहिए। 4 इन वृद्ध स्त्रियों को जवान स्त्रियो को शिक्षा देनी चाहिए कि वे शान्ति के साथ *जीवन बिताएं, और अपने पति और बच्चों से* प्रेम रखें। 5 और सूझ-बूझ और शुद्ध मन से अपना समय अपने घर मे व्यतीत करें, अपने-अपने पति के प्रति दयालु और आज्ञाकारी बनें, ताकि उनके जान पहचान वाले मसीही विश्वास के विरुद्ध न बोल सकें। 6 इसी प्रकार, जवान *पुरुषों को प्रेरणा दे कि वे जीवन को गम्भीरता* से लेकर, सावधानी से बर्ताव करें। 7 और यहां तुझे स्वय भी हर प्रकार के भले कामों में आदर्श बनना चाहिए। तू जो कुछ करे उससे सत्य के प्रति तेरा प्रेम और यह तथ्य प्रगट हो कि उसके करने की तुझमें लगन है। 8 तेरी बातचीत *इतनी सूझ-बूझ के साथ और तर्क संगत हो कि* कोई विवाद करना चाहे वह अपने आप पर इसलिए लज्जित हो जाए कि तेरी कही गई किसी बात मे उसे आलोचना करने के लिए कुछ न मिले। 9 दासों को प्रेरित कर कि वे अपने स्वामियों की आज्ञा मानें और उन्हें संतुष्ट करने का भरसक प्रयत्न करें। उन्हें पलट कर उत्तर नहीं देना चाहिए, 10 न ही चोरी करनी चाहिए, परन्तु अपने आप को पूरी रीति से विश्वासयोग्य दर्शाना चाहिए। इस प्रकार से वे हमारे उद्धारकर्ता और परमेश्वर पर विश्वास करने की इच्छा लोगो मे उत्पन्न करेंगे। 11 क्योंकि अनन्त उद्धार का सेंतमेंत वरदान अब हरएक को दिया जा रहा है। 12 और इस वरदान के साथ यह जानकारी भी आ जाती है कि परमेश्वर चाहता है कि हम अधर्म के जीवन और पापमय सुखविलास से फिरें और दिन प्रति दिन अच्छा और परमेश्वर का भय मानने वाला जीवन बिताएं, 13 उस अद्भुत समय की प्रतिक्षा करते हुए जिसकी आशा हम लगाए हुए हैं, जब उनकी महिमा—हमारे महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा प्रगट होगी। 14 वह हमारे पापों के विरुद्ध परमेश्वर के न्याय के आधीन मर गए, ताकि हमें पाप मे लगातार गिरने से बचा सकें और हमें अपनी निज प्रजा बना सकें, जिनमे शुद्ध हृदय और *दूसरों की भलाई करने के लिए वास्तविक* उत्साह हो।

15 तुझे इन बातो को सिखाना चाहिए और अपने लोगो को उनको करने का उत्साह दिलाना चाहिए, जब आवश्यकता हो तो उन्हें सुधारना चाहिए उस व्यक्ति के सदृश्य जिसे ऐसा *करने का पूरा अधिकार हो। किसी को ऐसा मत* सोचने दे कि तेरी बातें महत्व की नहीं हैं।

3 1 अपने लोगों को स्मरण दिला कि वे सरकार और अपने अधिकारियो की आज्ञा मानें और सदा आज्ञाकारी बने रहे और किसी *भी ईमानदारी के काम के लिए तैयार रहें।* 2 उन्हें किसी की बुराई नही करनी चाहिए, न ही झगड़ना चाहिए, परन्तु कोमल और सबके साथ वास्तव में सभ्य होना चाहिए। 3 किसी समय हम भी मूर्ख और अनाज्ञाकारी थे, हम दूसरो के बहकावे में आ गए थे और अनेक बुरे सुख *विलासो और दुष्ट लालसाओ के दास बन गए* थे। हमारे जीवन क्रोध और ईर्ष्या से भरे थे। हम दूसरो से घृणा करते थे और वे हमसे घृणा करते थे। 4 परन्तु जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की दया और प्रेम के प्रगट होने का समय आया। 5 तब उसने हमारा उद्धार किया—इस कारण नही कि हम उद्धार पाने के *योग्य थे,* परन्तु अपनी दया और करुणा के कारण—हमारे अपराधों को धोने और हमारे अन्दर निवास करने वाले पवित्र आत्मा का नया आनन्द हमको

देने के द्वारा। 6 जिसे उसने अपूर्व बहुतायत के साथ हम पर उंडेला—यह सब हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के काम के कारण हुआ—7 ताकि वह हमें परमेश्वर की दृष्टि मे धर्मी ठहरा सके—*यह सब उनकी बड़ी दया के कारण* हुआ, और अब हम अनन्त जीवन के धन मे सहभागी हो सकते हैं जिसे वह हमे देते हैं, और हम उसे ग्रहण करने की उत्सुकता मे प्रतीक्षा कर रहे हैं। 8 ये बातें जो मैंने तुझसे कही सब सच हैं। इन पर विशेष ज़ोर दे ताकि मसीही पूरे समय भले काम करने के लिए सावधान रहे, क्योंकि न केवल यह उचित है, परन्तु इससे लाभ भी होता है। 9 जिन प्रश्नों का उत्तर न दिया जा सके और परमेश्वर के सम्बन्ध में जिन विचारों पर मतभेद हो, उन पर वादविवाद करने मे मत फंस, यहूदी व्यवस्था का पालन करने सम्बन्धी विवादों और झगड़ों मे दूर रह, क्योंकि इस प्रकार की बात अनुचित है, इससे केवल हानि होती है। 10 यदि कोई तुम्हारे मध्य फूट डाल रहा हो, तो उसे एक दो चितौनी देनी चाहिएं। इसके बाद उससे *कोई सम्बन्ध मत रख।* 11 *क्योंकि इस प्रकार का व्यक्ति महत्व की बात को नही समझता। वह जान कर पाप कर रहा* है।

12 मैं तुम्हारे पास अरतिमास या तुखिकुस को भेज रहा हूं। जितनी जल्दी उनमें से एक पहुंच जाए, कृपाकर जितनी जल्दी तुझसे हो सके मुझको नीकुपुलिस में मिलने का प्रयत्न कर क्योंकि मैंने वहीं ठंड की ऋतु बिताने की ठानी है। 13 जेनास वकील और अपुल्लोस की यात्रा मे *जितनी सहायता तू कर सके कर*, ध्यान दे कि उन्हें आवश्यकता की सब वस्तुएं मिलें। 14 क्योंकि हमारे लोगों को उन सबकी सहायता करना सीखना चाहिए जिन्हें उनकी सहायता की आवश्यकता हो, ताकि जीवन फलवन्त हो।

15 यहां के सब तुझे नमस्कार देते हैं। वहा के सब मसीही मित्रो को कृपया हमारा नमस्कार देना। परमेश्वर की आशिषें तुम सब के साथ रहें।

विनीत, पौलुस

......

फिलेमोन के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

1 1, 2 पौलुस जो यीशु मसीह के शुभ सन्देश का प्रचार करने के कारण जेल में है, और भाई तीमुथियुस की ओर से। फिलेमोन को, जो हमारा अति प्रिय सहकर्मी है, और वह कलीसिया जो तेरे घर मे इकट्ठी होती है, और हमारी बहन अफफिया, और अरखिप्पुस जो मेरे सदृश्य क्रूस का सैनिक है।

3 हमारा पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह तुझे अपनी आशिषें और अपनी शान्ति दें।

4 प्रिय फिलेमोन, जब मैं तेरे लिए प्रार्थना करता हूं तब सदा परमेश्वर का धन्यवाद करता हू, 5 क्योंकि मैं प्रभु यीशु व उनके लोगों पर तेरे प्रेम और विश्वास की चर्चा सुनता रहता हू। 6 और मैं प्रार्थना करता हूं कि जब तू अपने विश्वास की चर्चा दूसरों से करता है *तो इससे उनका जीवन प्रभावित हो*, और वे तेरे जीवन मे भली बातों का भण्डार देखें जो मसीह यीशु की ओर से आती हैं। 7 मेरे भाई, *मैंने आप भी तेरे प्रेम से बहुत आनन्द और* शान्ति पाई है, क्योंकि तेरी दया से बहुत बार परमेश्वर के लोगों के मन आनन्दित हुए हैं।

8, 9 अब मैं चाहता हूं कि तू मेरे लिए एक काम कर। मसीह के नाम से मैं तुझसे इसकी मांग भी कर सकता हूं क्योंकि इसे करना तेरे लिए उचित है, परन्तु मैं तुझसे प्रेम रखता हूं और इसी कारण तुझसे विनती करना चाहता हूं—मैं, पौलुस, जो अब एक वृद्ध पुरुष हूं और यीशु मसीह के नाम के कारण यहा जेल मे हूं। 10 मेरी बिनती है कि तू मेरे बच्चे उनेसिमुस पर दया करे, *जिसे मैंने यहां अपनी बेड़ियो मे* प्रभु के लिए जीना है। 11 उनेसिमुस (जिसके नाम का अर्थ "उपयोगी" है) पिछले दिनों में तेरे अधिक काम का नही था, परन्तु अब वह हम दोनो के लिए वास्तविक उपयोगी होने को है 12 मैं उसे वापिस तेरे पास भेज रहा हूं, जो मेरे हृदय का टुकड़ा है। 13 मैंने वास्तव मे उसे यहां अपने साथ रखना चाहा जबकि मैं यहां शुभ सन्देश का प्रचार करने के लिए जंजीरों में हूं, और उसके द्वारा तू मेरी सहायता करता होता, 14 परन्तु तेरी सहमति के बिना मैंने ऐसा करना न चाहा। मैं नही चाहता था कि तू दया करे इसलिए कि यह आवश्यक है परन्तु इसलिए कि तू करना चाहता है। 15 कदाचित तू इसे इस प्रकार सोच सके : कि वह तेरे पास से कुछ समय के लिए भाग गया ताकि अब वह सदा के लिए तेरा हो सके, 16 आगे को केवल दास होकर नही, परन्तु उससे भी उत्तम—प्रिय भाई होकर, विशेषकर मेरे लिए। अब वह तेरे लिए भी और अधिक महत्व का होगा, क्योंकि वह न केवल एक दास है परन्तु मसीह मे तेरा भाई भी है। 17 यदि मैं वास्तव मे तेरा मित्र हूं, तो उसका वैसा ही स्वागत कर जैसा मेरा करता यदि मैं आता। 18 यदि उसने किसी भी प्रकार से तेरी हानि की है या तेरी कुछ भी चोरी की है, तो उसे मेरे नाम पर लिख दे। 19 मैं उसे वापिस भर दूंगा (मैं, पौलुस स्वयं यहा अपने ही हाथ मे लिखकर तुझे इसका निश्चय दिलाता हूं) परन्तु *मैं यह कहना नही चाहता हूं कि तू मेरा कितना* ऋणि है। सच तो यह है कि तू अपनी आत्मा के लिए ही मेरा ऋणि है। 20 हां, प्रिय भाई अपने इस प्रेम पूर्ण कार्य के द्वारा मुझे प्रसन्न कर तब मेरा दुःखित थकित हृदय प्रभु की प्रशसा करेगा। 21 मैंने तुझे यह पत्र लिखा है क्योंकि मुझे दृढ निश्चय है कि जो बिनती मैंने की है तू उसके अनुसार वरन उससे कही बढकर करेगा। 22 कृपया मेरे लिए ठहरने का एक कमरा तैयार रख, क्योंकि मैं आशा लगाए हूं कि परमेश्वर तुम्हारी प्रार्थनाओ के उत्तर देगा और मुझे शीघ्र तुम्हारे पास आने देगा।

23 मेरा साथी कैदी इपफ्रास, जो मसीह यीशु का प्रचार करने के कारण यहा है, अपना नमस्कार तुझे भेज रहा है। 24 वैसे ही मेरे सहकर्मी मरकुस, अरिस्तर्खुस, देमास और लूका भी भेज रहे हैं।

25 हमारे प्रभु यीशु मसीह की आशिषें तुम पर होती रहें।

विनीत, पौलुस

इब्रानियों के नाम पत्री

1 1 बहुत समय पहले परमेश्वर ने कई प्रकार से हमारे पूर्वजों के साथ भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा (दर्शनों में, स्वप्नों में, और यहां तक कि आमने-सामने भी[1]) बातें की और उन्हें अपनी योजनाओं के बारे में थोडा-थोडा करके बताया। 2 परन्तु अब इन दिनों में उसने हमसे अपने पुत्र के द्वारा बातें की हैं जिसने उसको सब कुछ दे दिया है, और जिसके द्वारा उसने संसार और उसमें की सब वस्तुओं की सृष्टि की है। 3 परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर की महिमा से प्रकाशमान है, और जो कुछ परमेश्वर का पुत्र करता है उससे यह दर्शाता है कि वह परमेश्वर है। वह अपनी महान सामर्थ्य के द्वारा सृष्टि को चलाता है, जो हमें शुद्ध करने और हमारे पापों का लेखा मिटाने के लिए मर गया, और तब स्वर्ग के महान परमेश्वर के समीप सर्वोच्च स्थान में बैठ गया। 4 इस प्रकार वह स्वर्ग-दूतों से कहीं उत्तम हो गया जैसा इस तथ्य से सिद्ध होता है कि उसका नाम "परमेश्वर का पुत्र", जो उसको उसके पिता से मिला, स्वर्ग-दूतों के नामों और उपनामों से कहीं उत्तम है। 5, 6 क्योंकि परमेश्वर ने कभी किसी स्वर्गदूत से नहीं कहा, "तू मेरा पुत्र है, और आज मैं तुझे वह सम्मान दूंगा जो इस नाम के साथ जुड़ा है।"[2] परन्तु परमेश्वर ने यीशु के विषय में यह कहा। दूसरी बार उसने कहा, "मैं उसका पिता हूं और वह मेरा पुत्र है।" इसके अतिरिक्त जब परमेश्वर का एकलौता पुत्र पृथ्वी पर आया तब परमेश्वर ने कहा, "कि सब दूत उसको दण्डवत करें।" 7 परमेश्वर अपने स्वर्गदूतों के विषय में कहता है कि वे वायु के समान शीघ्र चलने वाले दूत और धधकती हुई आग के बने सेवकों के समान हैं, 8 परन्तु वह अपने पुत्र के विषय में कहता है, "हे परमेश्वर, तेरा राज्य युगानुयुग बना रहेगा, जिसके नियम सदा न्यायपूर्ण और उचित हैं। 9 तू उचित से प्रेम और अनुचित से घृणा करता है, सो पर-मेश्वर, ने सबसे अधिक प्रसन्नता तुझ पर उंडेली है।" 10 परमेश्वर ने उसको "प्रभु" भी कह-कर पुकारा जब उसने कहा, "प्रभु, आदि में तूने संसार को बनाया और स्वर्ग तेरे हाथों की कला है। 11 वे मिट जाएंगे, परन्तु तू सदाकाल तक बना रहेगा। वे पुराने वस्त्रों के समान नष्ट हो जाएंगे। 12 और किसी दिन तू उन्हें पुराने कपड़ों की तरह हटा देगा और उनके स्थान पर दूसरे स्थापित करेगा। परन्तु तू स्वयं कभी नहीं बदलेगा, और तेरे वर्षों का कभी अन्त न होगा।" 13 और क्या परमेश्वर ने कभी किसी स्वर्गदूत से ऐसा कहा, जैसा उसने अपने पुत्र से कहा, "यहां मेरे समीप सम्मान में बैठ, जब तक मैं तेरे सब शत्रुओं को तेरे पांवों तले न कर दूं? 14 नहीं, क्योंकि स्वर्गदूत केवल आत्मिक संदेश-वाहक हैं जो उन लोगों की सहायता और देख-भाल करने के लिए भेजे जाते हैं जो उद्धार पाने वाले हैं।

2 1 इसलिए जिन सच्चाइयों को हमने सुना है उन पर हमें बहुत ध्यान देना चाहिए, नहीं तो हम बहक कर उनसे दूर हो जाएंगे। 2 क्योंकि जबकि स्वर्गदूतों के द्वारा मिला संदेश सदा सत्य सिद्ध हुआ है और उनका उल्लंघन करने में लोगों को सदा दण्ड मिला है, 3 तो फिर हम क्योंकर यह सोच सकते हैं कि हम इस महान उद्धार के प्रति उदासीन रहकर बच सकते हैं जिसके विषय में प्रभु यीशु ने स्वयं बताया, और जो हम तक उन लोगों के द्वारा पहुंचा जिन्होंने उनको कहते सुना? 4 परमेश्वर ने सदा चिन्हों, चमत्कारों और कई प्रकार के आश्चर्यकर्मों के द्वारा, और विश्वास करनेवालों को पवित्र आत्मा के द्वारा कुछ विशेष योग्यताएं

[1] यही आशय है। [2] शब्दश: "आज तू मुझसे उत्पन्न हुआ।"

देने के द्वारा हम पर यह प्रकट किया है कि ये सन्देश सत्य हैं, हां, परमेश्वर ने हम में से हर-एक को ऐसे वरदान दिए हैं।

5 और जिस भविष्य के संसार की हम चर्चा कर रहे हैं उस पर स्वर्गदूतो द्वारा शासन नही होगा। 6 नही, क्योंकि भजनसंहिता की पुस्तक मे दाऊद ने परमेश्वर से कहा है, "मनुष्य है ही क्या जो तू उसकी चिन्ता करे? और यह मनुष्य का पुत्र कौन है जिसका तू इतना अधिक सम्मान करता है? 7 क्योंकि यद्यपि तूने उसको कुछ ही समय के लिए स्वर्गदूतो से नीचा किया, तौभी अब तूने उसे महिमा और आदर का मुकुट पहनाया। 8 और तूने उसे सब वस्तुओं का पूरा अधिकारी ठहराया। उससे कुछ भी बचा नहीं रखा।" हमने अब तक इन सबको पूरा होते नही देखा है, 9 परन्तु हम यीशु को देखते हैं—जो कुछ ही समय के लिए स्वर्गदूतों से कुछ नीचे हुए—जिन्होंने अब हमारे लिए मृत्यु सह लेने के कारण परमेश्वर के द्वारा महिमा और आदर का मुकुट पहना। हाँ, परमेश्वर की बडी दया के कारण, यीशु ने संसार के सब लोगो के लिए मृत्यु का स्वाद चखा। 10 और यह ठीक और उचित था कि परमेश्वर जिसने सब कुछ स्वयं अपनी बडी प्रतिष्ठा के लिए बनाया, यीशु को दुःख सहने दे, क्योंकि ऐसा करने से वह परमेश्वर के लोगों की बडी भीड को स्वर्ग मे ला रहा था, क्योंकि उनके दुःख उठाने से यीशु सिद्ध अगुवा बनें, जो इस योग्य थे कि लोगों को उद्धार में पहुंचा सकें। 11 हम जो यीशु के द्वारा पवित्र किए गए हैं, अब हमारा भी वही पिता है जो उनका है। इसीलिए यीशु हमे अपने भाई कहने से नहीं लजाते। 12 क्योंकि उन्होंने भजनसंहिता मे कहा है, "मैं अपने पिता परमेश्वर के विषय में अपने भाइयो से बातें करूंगा, और हम एक साथ उसकी स्तुति गाएगे।" 13 दूसरे समय उन्होंने कहा, "मैं अपने भाइयो के साथ-साथ परमेश्वर पर अपना भरोसा रखूंगा।" और किसी दूसरे समय यह भी कहा, "देख, मैं और वे बच्चे यहां हैं जो परमेश्वर ने मुझे दिए हैं।" 14 इसलिए कि हम, परमेश्वर की सन्तान मानव हैं जो, मांस और लोहू से बने प्राणी हैं। वह भी मानव रूप मे जन्म लेने के द्वारा मांस और लोहू बन गए, क्योंकि केवल मानव प्राणी होकर ही वह मर सकते थे और मरकर शैतान की शक्ति को तोड सकते थे, जिसको मृत्यु की शक्ति प्राप्त थी। 15 केवल ऐसा ही करने से वह उनको छुडा सकते थे जो अपने जीवन भर मृत्यु के डर मे जी रहे थे। 16 हम सब जानते हैं कि वह स्वर्गदूत बनकर नही आए, परन्तु मनुष्य बनकर, हाँ, यहूदी होकर आए। 17 और यीशु के लिए हमारे समान, अर्थात् अपने भाइयो के समान, बनना आवश्यक था, ताकि वह परमेश्वर के सामने हमारे दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बन सकें, एक ऐसे याजक जो अपने लोगों के पापो के सम्बन्ध में हमारे प्रति दयालु और परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य, हों। 18 क्योंकि अब जबकि उन्होंने आप भी दुःख और परीक्षा सही है, वह जानते हैं कि हमारा दुःख उठाना और परीक्षा मे पड़ना कैसा होता है, और वह हमारी सहायता करने मे अद्भुत रूप से समर्थ हैं।

3 1 इसलिए प्रिय भाइयो, जिन्हे परमेश्वर ने अपने लिए अलग किया है—तुम जो स्वर्ग के लिए चुने गए हो—मैं चाहता हूं कि तुम अब इस यीशु के विषय मे सोचो जो परमेश्वर के दूत और हमारे विश्वास के महायाजक हैं। 2 क्योंकि यीशु परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य थे जिसने उनको महायाजक नियुक्त किया, जिस प्रकार मूसा ने भी विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर के घर में सेवा की। 3 परन्तु यीशु की महिमा मूसा से कही बढकर है, जिस प्रकार सुन्दर घर बनाने वाले की प्रशंसा उसके घर की अपेक्षा कही अधिक होती है? 4 और अनेक लोग घर बना सकते हैं, परन्तु सब वस्तुओं का बनाने वाला

केवल परमेश्वर ही है। 5 हां मूसा ने परमेश्वर के घर मे बहुत अच्छा काम किया, परन्तु वह केवल एक सेवक था, और उसका काम अधिकतर उन बातों का उदाहरण और संकेत देना था जो बाद मे होने वाली थी। 6 परन्तु परमेश्वर का विश्वास योग्य पुत्र मसीह, परमेश्वर के घर का पूरा अधिकारी है। और हम मसीही परमेश्वर के घर हैं वह हममें रहता है, यदि हम अपना साहस अपना आनन्द, और अपना विश्वास प्रभु मे अन्त तक दृढ़ बनाये रखें। 7, 8 और इसलिए कि मसीह इतना बड़ा अधिकारी है, पवित्रशास्त्र हमें चेतावनी देता है कि हम उसकी सुनें, आज उसका स्वर सुनने के लिए सावधान रहें और अपने मनो को उसके विरुद्ध न करें, जैसे इस्राएली लोगो ने किया था। जंगल मे जब वह उनको परख रहा था तब उन लोगों ने उसके प्रेम के विरुद्ध अपने आप को कठोर किया और उसके विरुद्ध असन्तोष प्रगट किया था। 9 परन्तु परमेश्वर ने चालीस वर्ष तक उनके साथ धीरज रखा, यद्यपि उन्होंने उसके धैर्य को बहुत परखा, वह उनके लिए अपने महान आश्चर्यकर्म करता ही रहा ताकि वे देखें। 10 परन्तु परमेश्वर ने कहा, मैं उनसे अति क्रोधित हुआ, क्योंकि उनके मन मेरी ओर लगे रहने के बदले सदा कहीं और लगे रहते थे, और उन्होंने उन मार्गों को कभी नहीं पाया जिन पर मैं चाहता था कि वे चलें। 11 तब परमेश्वर ने, उनके विरुद्ध क्रोध मे भरकर शपथ ली कि वह उन्हे अपने विश्राम के स्थान मे कभी आने नहीं देगा। 12 प्रिय भाइयो, इसलिए अपने मनो की चौकसी करो, कहीं तुम भी ऐसा न पाओ कि वे भी बुरे और अविश्वासी हो और तुम्हें जीवते परमेश्वर से अलग खींचते हो। 13 प्रति दिन इन बातों पर एक दूसरे से बातचीत करो जबकि अब भी समय है, ताकि तुममे से कोई भी पाप के धोखे से अन्धा होकर, परमेश्वर के विरुद्ध कठोर न बन जाए। 14 क्योंकि यदि हम अन्त तक विश्वासयोग्य रहें और परमेश्वर पर उसी प्रकार भरोसा रखे रहें जैसे हमने उस समय रखा था जब हम सबसे पहले मसीही बने थे, तो हम उन सब बातों में सहभागी होंगे जो मसीह की हैं। 15 परन्तु अभी समय है। कभी यह चेतावनी न भूलो, आज यदि तुम परमेश्वर की वाणी सुनो, तो उसके विरुद्ध अपने मन कठोर मत करो, जैसे इस्राएली लोगों ने जगल मे उसका विरोध किया था। 16 और ये कौन लोग थे जिनके विषय मे मैं कहता हू, जिन्होंने परमेश्वर की वाणी को सुना परन्तु उसका विरोध किया? ये वही लोग थे जो अपने अगुवा मूसा के साथ मिस्र से निकलकर आए थे। 17 और परमेश्वर को चालीस वर्ष तक क्रोध दिलाने वाले कौन थे? ये वही लोग थे जिन्होंने पाप किया और परिणाम यह हुआ कि वे जंगल मे मर गए। 18 और परमेश्वर किनसे बोल रहा था जब उसने शपथ ली कि वे उस देश मे कभी नही जा सकेंगे जिसकी प्रतिज्ञा उसने अपने लोगों से की थी? वह उन सबसे बोल रहा था जिन्होंने उसकी आज्ञा तोड़ी। 19 और वे वहा क्यो नही जा सके? इसलिए कि उन्होंने उस पर भरोसा नही रखा।

4 1 यद्यपि परमेश्वर की प्रतिज्ञा अभी तक है—यह प्रतिज्ञा: कि सब उसके विश्राम स्थान मे प्रवेश कर सकते हैं...तौभी हमे भय से थरथराना चाहिए क्योंकि हो सकता है हममे से कई वहां पहुंचने मे असफल रहें। 2 क्योंकि यह अद्भुत समाचार, यह संदेश कि परमेश्वर हमारा उद्धार करना चाहता है...हमे दिया गया है जैसे उन लोगों को दिया गया था जो मूसा के युग मे रहते थे। परन्तु इससे उन्हें कुछ लाभ नही हुआ क्योंकि उन्होंने उस पर विश्वास नही किया उन्होंने उसका सम्बन्ध विश्वास से नही जोड़ा। 3 क्योंकि केवल हम जो परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, उसके विश्राम स्थान मे प्रवेश कर सकते हैं। उसने कहा है, मैंने अपने क्रोध मे

शपथ ली है कि जो मुझ पर विश्वास नहीं करते वे कभी प्रवेश करने नहीं पाएंगे, यद्यपि यह उनके लिए उस समय मे तैयार ठहरा हुआ है जब से संसार का आरम्भ हुआ। 4 हम जानते हैं कि वह तैयार है और ठहरा हुआ है क्योंकि लिखा है कि परमेश्वर ने सृष्टि की रचना के सातवें दिन, अपनी योजना के अनुसार सब कुछ बनाकर विश्राम किया। 5 इस पर भी उन्होंने प्रवेश नही किया, क्योंकि परमेश्वर ने अन्त मे कहा, वे मेरे विश्राम में कभी प्रवेश न करेंगे। 6 तौभी प्रतिज्ञा अभी भी वैसी ही है और कुछ लोग प्रवेश करते हैं...परन्तु वे नही जिनको पहले अवसर मिला था, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा नही मानी और प्रवेश करने मे असफल रह गए। 7 परन्तु उसने भीतर आने के लिए दूसरा समय ठहराया है, और वह समय अभी है। बहुत वर्षों बाद राजा दाऊद के द्वारा उसने मनुष्य के प्रवेश करने की असफलता के विषय में घोषणा की थी, आज जब तुम उसकी पुकार सुनो, तो उसके विरुद्ध अपने मन कठोर मत करो। 8 विश्राम के इस नये स्थान का अर्थ जिसके विषय मे वह कह रहा है, इस्राएल का देश नही है जहां यहोशू ने उन्हे पहुंचाया। यदि परमेश्वर का यही अर्थ होता, तो उसने बहुत समय बाद ऐसा नही कहा होता कि आज ही प्रवेश करने का समय है। 9 इसलिए परमेश्वर के लोगों के लिए पूर्ण विश्राम अब भी शेष है। 10 मसीह ने उसमें पहले ही प्रवेश कर लिया है। वह अपने कार्य मे विश्राम कर रहा है, जिस प्रकार परमेश्वर ने सृष्टि की रचना के बाद किया। 11 विश्राम के उस स्थान मे पहुंचने का हम भी भरसक प्रयत्न करें, पर सावधान रहते हुए कि परमेश्वर की आज्ञा न तोड़ें जैसा इस्राएलियों ने किया, और इस प्रकार प्रवेश न कर सकें 12 क्योंकि परमेश्वर हमसे जो कुछ कहता है वह जीवित सामर्थ्य से भरा होता है :- वह सबसे तेज कटार से भी अधिक धार वाला होता है, जो हमारे मन के भीतरी विचारो और इच्छाओं को वेग से गहरा काट-छांट कर, हम वास्तव मे जैसे भी हैं हमें प्रगट करता है। 13 वह हर कहीं, हर एक को जानता है। हमारे जीवित परमेश्वर की सब कुछ देखने वाली आंखो के सामने, जिनको हमे अपने सब कामों का लेखा देना है, हमारे विषय मे सब कुछ खुला हुआ है, उससे कुछ नही छिपा रह सकता है।

14 परन्तु परमेश्वर के पुत्र यीशु हमारे महायाजक हैं जो हमे सहायता पहुंचाने के लिए स्वर्ग को गए हैं, इसलिए हम उन पर भरोसा रखना कभी न छोड़ें। 15 हमारे यह महायाजक हमारी दुर्बलता को समझते हैं, क्योंकि उन पर भी हमारे समान परीक्षाएं आयी, यद्यपि उन्होंने उनमे गिर कर कभी पाप नही किया। 16 इसलिए हम निडर होकर परमेश्वर के सिंहासन के समीप आएं और उसकी दया के भागी होने के लिए और आवश्यकता के समय मे उसकी सहायता का अनुग्रह पाने के लिए वहा ठहरे रहे।

5 1-3 यहूदी महायाजक किसी भी दूसरे व्यक्ति के समान मनुष्य ही है, परन्तु वह इसलिए चुना गया है कि दूसरे मनुष्यो के लिए परमेश्वर के साथ उसके विषय मे बोले। वह उनकी भेंटें परमेश्वर को देता है और उसको उन पशुओं का लोहू चढाता है जो लोगो के पापो और स्वयं उसी के पापो को ढाकने के लिए बलिदान चढाए जाते हैं। और इसलिए कि वह मनुष्य है वह दूसरे मनुष्यो के साथ, उनके मूर्ख और बुद्धिहीन होने पर भी नम्रता के साथ व्यवहार कर सकता है, क्योंकि वह भी, उन्ही परीक्षाओं से घिरा होता है और उनकी समस्याओं को अच्छी तरह समझता है। 4 स्मरण रखने के लिए दूसरी बात यह है कि कोई भी अपनी ही इच्छा से महायाजक नही बन सकता। उसे इस काम के लिए परमेश्वर की बुलाहट मिलनी चाहिए जिस प्रकार परमेश्वर ने हारून को चुना था। 5 इसलिए मसीह ने अपने आपको महायाजक बनने के सम्मान के लिए नही चुना : नही,

परमेश्वर के द्वारा उसका चुनाव हुआ। परमेश्वर ने उससे कहा, "मेरे पुत्र, आज मैंने तेरा सम्मान[1] किया है।" 6 और दूसरे समय परमेश्वर ने उससे कहा, "तू मलिकिसिदक के समान पद पर सदा के लिए महायाजक होने को चुना गया है"। 7 तौभी जब मसीह इस पृथ्वी पर था तब उसने मन से आंसू बहा-बहाकर परमेश्वर से बिनती की कि उसको उसकी मृत्यु से बचा ले। और परमेश्वर ने उसकी प्रार्थनाओं को सुना क्योंकि उसकी यह प्रबल इच्छा थी वह परमेश्वर की आज्ञा हर समय माने। 8 और यद्यपि यीशु परमेश्वर के पुत्र थे, तौभी उनको अनुभव से सीखना पड़ा कि आज्ञा मानना कैसा होता है जब आज्ञा मानने में दुःख उठाना पड़ता है। 9 इस अनुभव में अपने आप को सिद्ध प्रकट कर लेने के बाद ही यीशु उन सबको अनन्त उद्धार के देने वाले बने जो उनकी आज्ञा मानते हैं। 10 क्योंकि स्मरण रखो कि परमेश्वर ने उनको मलिकिसिदक के सदृश महायाजक होने के लिए चुना है।

11 और भी बहुत कुछ है जो मैं इस सम्बन्ध मे तुमसे कहना चाहूंगा, परन्तु ऐसा लगता है कि तुम सुनते नही हो इसलिए तुम्हे समझाना कठिन है। 12, 13 तुम्हें मसीही बने हुए अब बहुत समय हो चुका है, और तुम्हे अब तक दूसरो को सिखाना चाहिए था, परन्तु इसके बदले तुम उस स्थान तक पीछे हट गए हो जहाँ तुम्हें किसी और को परमेश्वर के वचन के प्रारम्भिक सिद्धांतो की फिर से शिक्षा देने की आवश्यकता है। तुम उन बच्चों के समान हो जो केवल दूध ही पी सकते हैं, अन्न खाने के योग्य बड़े नही हैं। और जब कोई व्यक्ति अब भी दूध पर जी रहा हो, तो यह दर्शाता है कि वह मसीही जीवन मे बहुत आगे नही बढ़ा है, और भले और बुरे के मध्य अन्तर बहुत नही समझता। वह अभी भी मसीह मे बच्चा है। 14 तुम ठोस आत्मिक भोजन तब तक नही खा सकोगे, और परमेश्वर के वचन की गूढ़ बातें तब तक नही समझ सकोगे, जब तक तुम उत्तम मसीही न बन जाओ और भले काम को करते रहने के अभ्यास द्वारा भले—बुरे का अन्तर न पहचान लोगे।

6 1 हम बार-बार उन्ही पुरानी मूल बातों को दोहराना और मसीह के विषय में उन्ही प्रारम्भिक शिक्षाओं को देते रहना छोड़ दें। इसके बदले हम दूसरी बातों पर जाए और अपनी समझ मे परिपक्व बनें, जैसे दृढ़ मसीहियों को बनना चाहिए। अच्छे बनने के द्वारा उद्धार पाने का प्रयत्न करने की मूर्खता के विषय मे, या परमेश्वर पर विश्वास रखने की आवश्यकता के विषय में निश्चय ही हमें और आगे कहने की आवश्यकता नही है, 2 तुम्हे बपतिस्मा और आत्मिक वरदानो[1] और मृतको के फिर से जी उठने और अनन्त-न्याय के सम्बन्ध मे और आगे शिक्षा देने की आवश्यकता नही है। 3 यदि प्रभु की इच्छा हुई तो अब हम दूसरी बातो की चर्चा करेंगे। 4 तुम्हे प्रभु के पास फिर से वापिस लाने का प्रयत्न करने से कोई लाभ नही यदि तुमने एक बार सुसमाचार को समझ लिया है और स्वर्ग की अच्छी बातो का स्वाद स्वयं चख लिया है, और पवित्र आत्मा मे सहभागी हो चुके हो, 5 और जानते हो कि परमेश्वर का वचन कितना अच्छा है, और तुमने आनेवाले संसार की सामर्थी शक्तियो का अनुभव कर लिया है, 6 और तब परमेश्वर के विरुद्ध हो लिए हो। यदि तुमने परमेश्वर के पुत्र का इन्कार करने के द्वारा, उसका ठट्ठा करने और लोगों मे उसका अपमान करने के द्वारा उसको क्रूस पर दोबारा कीलों से ठोक दिया है, तो तुम अपने आप से फिर पश्चाताप नहीं कर सकते। 7 जब किसी किसान

[1] मूलत "तुझे जन्माया है।" सम्भव है कि इसका संकेत मसीह के मृतकों में से जी उठने के दिन से है।

[1] मूलत "हाथ रखने।"

की भूमि पर बार-बार वर्षा हो जाती है और अच्छी उपज होती है, तो उस भूमि को परमेश्वर की आशिष का अनुभव है। 8 परन्तु यदि वह लगातार काटे और कंटीली झाड़ियाँ उगाती है, तो वह भूमि अच्छी नहीं समझी जाती परन्तु शापित और जलाए जाने के योग्य है।

9 प्रिय मित्रो, यद्यपि मैं इस तरह बातें कर रहा हूं, तौभी सचमुच मैं विश्वास नहीं करता कि जो कुछ मैं कह रहा हूं, वह तुम पर लागू होता है। मुझे निश्चय है कि तुम अच्छे फल उत्पन्न कर रहे हो जिसका सम्बन्ध तुम्हारे उद्धार के साथ है। 10 क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं है। वह अपने लिए तुम्हारे कठिन काम को कैसे भूल सकता है, या वह कैसे भूल सकता है कि उसके प्रति तुम अपना प्रेम किस प्रकार दर्शाया करते थे—और अब भी—उसकी सन्तानों की सहायता करने के द्वारा दर्शाते हो? 11 और हम उत्सुक हैं कि तुम जीवन के अन्तिम श्वास तक दूसरों से प्रेम करते रहो, जिससे तुम अपना पूरा प्रतिफल पाओ। 12 तब फिर यह जानकर कि भविष्य में तुम्हारे लिए क्या रखा गया है, तुम्हें मसीही होना नीरस नहीं लगेगा, न ही तुम आत्मिक रूप से उदासीन और लापरवाह होगे, परन्तु उन लोगों के आदर्श पर चलने को लालायित रहोगे जो अपने दृढ़ विश्वास और धीरज के कारण परमेश्वर की सब प्रतिज्ञाओं के अनुसार चलते हैं।

13 उदाहरण के लिए, इब्राहीम को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा को ही लो: परमेश्वर ने अपने ही नाम से शपथ ली, क्योंकि शपथ खाने के लिए उससे बड़ा कोई और न था, 14 कि वह बार-बार इब्राहीम को आशिष देगा और उसे एक पुत्र देगा और उसे लोगों की बड़ी जाति का पिता बनाएगा। 15 तब इब्राहीम ने धीरज के साथ प्रतीक्षा की जब तक अन्त में परमेश्वर ने उसे एक पुत्र, इसहाक नहीं दे दिया, जैसी प्रतिज्ञा उसने की थी। 16 जब कोई पुरुष शपथ खाता है, तो वह अपने से किसी बड़े की शपथ खाता है ताकि वह उसे शपथ पूरा करने के लिए विवश करे या ऐसा न करने पर उसे दण्ड दे सके, शपथ सब विवाद को समाप्त कर देती है। 17 परमेश्वर ने भी अपने आप को शपथ से बांध लिया, ताकि जिनको उसने सहायता करने की प्रतिज्ञा दी उनको पूरा निश्चय हो, और यह सोचने की कभी आवश्यकता न पड़े कि क्या वह अपना उपाय तो नहीं बदल देगा। 18 उसने हमको अपनी प्रतिज्ञा और अपनी शपथ, दोनों दी हैं, दोनों बातें जिन पर हम पूरी रीति से भरोसा रख सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर के लिए झूठ बोलना असम्भव है। अब वे सब जो उद्धार पाने के लिए उसके पास दौड़ते हैं, परमेश्वर की ओर से ऐसे निश्चय को सुनकर साहस ले सकते हैं, अब वे बिना सन्देह जान सकते हैं कि वह उस उद्धार को उनको देगा जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनको दी है। 19 उद्धार पाने की यह दृढ़ आशा हमारी आत्माओं के लिए प्रबल और विश्वासयोग्य लंगर है, जो हमारा सम्बन्ध स्वयं परमेश्वर से स्वर्ग के पवित्र परदे के पीछे जोड़ता है, 20 जहां मसीह ने पहले ही महायाजक के[*] अपने पद से, मलिकिसिदक के पद के सम्मान हमारे लिए बिनती करने को प्रवेश किया है।

7 1 यह मलिकिसिदक शालेम शहर का राजा और सर्वोच्च परमेश्वर का याजक भी था। जब इब्राहीम कई राजाओं के विरुद्ध युद्ध जीत कर घर लौट रहा था, तब मलिकिसिदक ने उससे भेंट की और उसे आशिष दी, 2 तब इब्राहीम ने युद्ध में जितना जीता था उस सबका दसवां भाग निकाल कर मलिकिसिदक को दिया। मलिकिसिदक के नाम का अर्थ है न्याय, इसलिए वह न्याय का राजा है, और वह अपने शहर, शलेम नाम के कारण, जिसका अर्थ है "शान्ति", शान्ति का भी राजा है। 3 मलिकिसिदक के कोई

[*] मूलतः "महायाजक बनकर।"

माता[1]-पिता नही थे और उसके पूर्वजो मे से किसी का भी वर्णन नही है। उसका कभी जन्म नहीं हुआ और उसकी कभी मृत्यु नहीं हुई परन्तु उसका जीवन परमेश्वर के पुत्र का सा है —सदाकाल का याजक।

4 तो फिर ध्यान दो कि यह मलिकिसिदक कितना महान है: (क) इब्राहीम तक ने, जो परमेश्वर के सब चुने हुए लोगों मे प्रथम और सबसे अधिक आदरणीय था, राजाओ की लड़ाई मे ली गई लूट का दसवा भाग मलिकिसिदक को दिया। 5 यदि मलिकिसिदक यहूदी याजक रहा होता तो इब्राहीम ने ऐसा क्यो किया यह कोई भी समझ सकता था, क्योंकि बाद मे व्यवस्था के द्वारा लोगों से माग की गई कि वे अपने याजको की सहायता के लिए भेंट दें क्योंकि याजक उनके सगे सम्बन्धी थे। 6 परन्तु मलिकिसिदक सम्बन्धी नही था, और तौभी इब्राहीम ने उसे दिया। (ख) मलिकिसिदक ने शक्तिशाली इब्राहीम को आशिष दी, 7 और जैसा सब जानते है, कि जिस व्यक्ति को आशिष देने का अधिकार रहता है वह सदा उस व्यक्ति से बडा होता है जिसे वह आशिष देता है। 8 (ग) यहूदी याजको ने नाशवान होने पर भी दसवाश ग्रहण किया, परन्तु हमे बताया गया है कि मलिकिसिदक जीवित रहता है। 9 (घ) कोई यहा तक कह सकता है कि लेवी ने आप भी (सब यहूदी याजको के, जो दसवाश लेते हैं, पूर्वज ने), इब्राहीम के द्वारा मलिकिसिदक को दसवाश दिया। 10 क्योंकि यद्यपि लेवी का जन्म अब तक नही हुआ था, तौभी जब इब्राहीम ने मलिकिसिदक को दसवांश दिया, तो वह बीज जिससे वह उत्पन्न हुआ, इब्राहीम में था।

11 (ङ) यदि यहूदी-याजकों और उनकी व्यवस्था से हमारा उद्धार हो सकता था, तो फिर परमेश्वर को क्यों मसीह को याजक के सदृश्य मलिकिसिदक के ही पद पर भेजने की आवश्यकता हुई, इसके बदले कि वह हारून के पद पर किसी और को भेजे—जो पद सब दूसरे याजकों का था? 12, 13, 14, और जब परमेश्वर नये प्रकार का याजक भेजता है, तो उसे आने की आज्ञा देने के लिए व्यवस्था को भी बदलना है। जैसा हम सब जानते हैं कि मसीह लेवी के याजक गोत्र मे से नही था, परन्तु यहूदा के गोत्र में से आया, जो याजक पद के लिए नहीं चुना गया था, मूसा ने कभी उसको यह कार्य नही सौंपा था। 15 इस प्रकार हम स्पष्ट देख सकते हैं कि परमेश्वर की रीति बदली क्योंकि नये महायाजक, मसीह जो मलिकिसिदक के पद पर आया, 16 लेवी के गोत्र के होने की पुरानी शर्तों को पूरी करने के द्वारा याजक नही बना, परन्तु उस सामर्थ के आधार पर बना जो जीवन मे से निकलती है जिसका अन्त नही हो सकता है। 17 और भजन के लिखने वाले ने यही दर्शाया है, जब उसने मसीह के विषय मे कहा, तू मलिकिसिदक के पद पर सदाकाल का याजक है। 18 हा, वंश-क्रम पर आधारित याजक-पद की पुरानी प्रथा मिटा दी गई क्योंकि यह निष्फल थी। लोगों का उद्धार करने के लिए यह निर्बल और अनुपयोगी थी। 19 इसने कभी किसी को परमेश्वर के प्रति धर्मी नही बनाया। परन्तु अब हमारे पास कही और उत्तम आशा है, क्योंकि मसीह हमे परमेश्वर के ग्रहण-योग्य बनाता है, और अब हम उसके समीप जा सकते हैं। 20 परमेश्वर ने शपथ ली कि मसीह सदा के लिए याजक होगा, 21 यद्यपि ऐसा उसने किसी भी दूसरे याजक के लिए नही कहा। केवल उसने मसीह से कहा, प्रभु ने शपथ खाई है और वह अपना मन कभी नही बदलेगा: तू मलिकिसिदक के पद पर सदाकाल का याजक है। 22 परमेश्वर की शपथ के कारण, मसीह

---

[1] यह निश्चयपूर्वक कोई नही जान सकता कि इसका अर्थ यह है कि मलिकिसिदक मसीह था जो मनुष्य के रूप में इब्राहीम पर प्रगट हुआ, या केवल यही कि मलिकिसिदक के माता-पिता कौन थे इसका कोई वर्णन नहीं है, न ही उसके जन्म या मृत्यु का कोई वर्णन है।

इस नये और उत्तम प्रबन्ध की सफलता का दृढ निश्चय सदाकाल के लिए दे सकता है। 23 पुराने प्रबन्ध के अनुसार बहुत से याजकों का होना आवश्यक था, ताकि जब वृद्ध लोग मर जाएं, तो उनका स्थान लेने वाले दूसरे लोगों के द्वारा तब भी यह प्रथा चलती रहे। 24 परन्तु यीशु सदा तक जीवित रहते हैं और याजक बने रहते हैं, इसलिए किसी और की आवश्यकता नहीं है। 25 वह उन सबका पूरी रीति से उद्धार करने में समर्थ हैं जो उनके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं। इसलिए कि वह सदाकाल तक जीवित रहेंगे, वह परमेश्वर को यह स्मरण दिलाने के लिए सर्वदा रहेंगे कि उनके पापो के लिए उन्होंने अपने लोहू से दाम चुकाया है। 26 इसलिए वह, जैसी हमको आवश्यकता है, ठीक उसी प्रकार के महायाजक हैं, क्योंकि वह पवित्र और निर्दोष, व पाप से निष्कलंक, पापियों से अलग हैं, और उनको स्वर्ग में प्रतिष्ठा का स्थान दिया गया है। 27 उनको कभी भी प्रतिदिन बलि किए हुए पशुओं के लोहू की आवश्यकता नहीं रहती, जैसी दूसरे याजकों को रहती थी, कि पहले अपने ही पापों को और तब लोगों के पापों को ढांप लें, क्योंकि उन्होंने अपने आप को क्रूस पर बलिदान करके, एक ही बार में सब बलिदानो को सदा के लिए समाप्त कर दिया। 28 पुरानी प्रथा में, महायाजक तक निर्बल और पापमय पुरुष थे जो ग़लती करने से नहीं बच सकते थे, परन्तु बाद मे परमेश्वर ने अपनी शपथ के द्वारा अपने पुत्र को नियुक्त किया जो सदाकाल के लिए सिद्ध है।

8 1 हम जो कह रहे हैं : वह यह है मसीह, जिसके याजक पद का अभी हमने वर्णन किया, हमारा महायाजक है, और स्वर्ग में स्वय परमेश्वर की दाहिनी ओर सबसे अधिक प्रतिष्ठा के स्थान में है। 2 वह स्वर्ग के मन्दिर में, सेवा करता है जो मनुष्य के हाथों से बना हुआ नहीं परन्तु प्रभु के द्वारा बनाया गया आराधना का वास्तविक स्थान है, 3 और इसलिए कि हर महायाजक भेंट और बलिदान चढ़ाने के लिए नियुक्त किया जाता है, मसीह को भी भेंट चढ़ाना है। 4 उसके द्वारा चढाया गया बलिदान सासारिक याजकों द्वारा चढाए गए बलिदान से कहीं उत्तम है। (परन्तु इस पर भी, यदि वह यहां पृथ्वी पर होता तो उसको याजक होने की आज्ञा नहीं होती, क्योंकि यहां पृथ्वी पर याजक अब भी बलिदानों की पुरानी यहूदी-प्रथा का पालन करते हैं।) 5 उसके काम का सम्बन्ध स्वर्ग के वास्तविक तम्बू के केवल सांसारिक प्रतिरूप मे है, क्योंकि जब मूसा तम्बू को बनाने के लिए तैयार हो रहा था, तब परमेश्वर ने उसे चेतावनी दी कि वह स्वर्गीय तम्बू के नमूने को ठीक-ठीक उतारे जैसा उसे सीने पहाड पर दिखाया गया था। 6 परन्तु मसीह को स्वर्ग में सेवक के रूप मे पुरानी व्यवस्था के अंतर्गत सेवा करने वालो से बही अधिक महत्वपूर्ण काम सौंपा गया है, क्योंकि जिस नये समझौते को वह परमेश्वर की ओर से हम तक पहुँचाता है, उसमे कही और अधिक अद्‌भुत प्रतिज्ञाएं हैं। 7 पुराना समझौता कोई काम का न था। यदि रहता, तो उसका स्थान लेने के लिए दूसरे की आवश्यकता न पडती। 8 परन्तु परमेश्वर ने स्वयं पुराने मे दोष पाया, क्योंकि उसने कहा, वह दिन आएगा जब मैं इस्राएल, और यहूदा के लोगो के साथ नया समझौता करूंगा। 9 यह नया समझौता पुराने के समान नहीं होगा जिसे मैंने उनके पूर्वजो को उस दिन दिया था जब मैंने उनका हाथ पकडा कि उन्हें मिस्र देश से बाहर निकालू, उन्होंने समझौते का अपना पक्ष पूरा नही किया, इसलिए मुझे उसे समाप्त करना पड़ा। 10 परन्तु प्रभु कहता है, यह नया समझौता है जो मैं इस्राएल के लोगो के साथ करूंगा : मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में लिखूंगा जिससे वे मेरे बिना बताए जान लेंगे कि मैं क्या चाहता हूं कि वे करें, और यह व्यवस्था उनके हृदय मे होगी

जिससे वे उसकी मानना चाहेंगे। और मैं उनका परमेश्वर होऊंगा और वे मेरे लोग होंगे। 11 और तब किसी को अपने मित्र या पड़ोसी या भाई से यह कहने की आवश्यकता नहीं रहेगी, तुम्हें भी प्रभु को जानना चाहिए, क्योंकि सब, बड़े और छोटे पहले ही मुझे जान लेंगे। 12 और उनके अपराधों के प्रति मैं उन पर दयावन्त होऊंगा, और मैं उनके पापों को फिर कभी स्मरण नहीं करूंगा। 13 परमेश्वर इन नयी प्रतिज्ञाओं तथा इस नये समझौते के विषय में कहता है कि वे पुराने के स्थान पर हैं, क्योंकि पुराना अब मिट चुका और सदा के लिए अलग रख दिया गया है।

9 1, 2 अब परमेश्वर और उसके लोगों के मध्य पहले समझौते में आराधना के लिए नियम थे और यहां इस संसार में एक पवित्र तम्बू था। आराधना के इस स्थान के अन्दर दो कमरे थे। पहले में सोने की दीवट और एक मेज थी जिस पर विशेष पवित्र रोटियां रखी जाती थीं, यह भाग पवित्र-स्थान कहलाता था। 3 तब एक परदा था और परदे के पीछे एक कमरा था जो परम-पवित्र-स्थान कहलाता था। 4 उस कमरे में सोने की बनी हुई धूप की वेदी और सोने का सन्दूक था, जिसे वाचा का सन्दूक कहा जाता था, जो सब ओर पूरी रीति से शुद्ध सोने से मढ़ा हुआ था। वाचा के सन्दूक के अन्दर पत्थर की पटियां थीं जिन पर दस आज्ञायें लिखी हुई थीं, और सोने का बना हुआ एक मर्तबान था, जिसमें कुछ मन्ना रखा था, और इसमें हारून की छड़ी भी थी जिसमें फूल आ गए थे। 5 सोने के सन्दूक पर स्वर्गदूतों की प्रतिमाएं थीं जिन्हें करूब कहा जाता है—परमेश्वर की महिमा के रक्षक—जिनके पंख सोने से बने सन्दूक के ढक्कन पर, जिसे प्रायश्चित का स्थान कहा जाता है, फैले हुए थे। इस विषय में यही विवरण पर्याप्त है। 6 अच्छा, तो जब सब तैयार हो चुका, तब याजक अपना काम करते हुए जब चाहें तब पहले कमरे के भीतर आया-जाया करते थे। 7 परन्तु भीतरी कमरे में केवल महायाजक ही जाता था, और वह भी वर्ष में केवल एक बार अकेले, और सदा लोहू लिए हुए, जिसे वह अपनी गलतियों पापों, और सब लोगों की गलतियों और पापों को ढांपने के लिए प्रायश्चित के स्थान पर छिड़कता था। 8 और पवित्र आत्मा इन सबको हमें यह दर्शाने के लिए काम में लाता है कि पुरानी प्रथा में साधारण लोग परम पवित्र स्थान के अन्दर नहीं आ सकते थे जब तक कि बाहरी कमरा और सारी पुरानी प्रथाएं प्रयोग में थीं। 9 आज हमारे लिए दूसरी महत्वपूर्ण शिक्षा है। क्योंकि पुरानी प्रथा में भेंट और बलिदान चढ़ाए जाते थे, परन्तु वे उन लोगों के हृदयों को शुद्ध करने में असफल रहे जो इनको चढ़ाते थे। 10 क्योंकि पुरानी प्रथा का सम्बन्ध केवल कुछ रीति-विधियों से था—क्या खाना और पीना अपने आपको धोने के नियम इत्यादि। लोगों को सफल होने के लिए इन नियमों का पालन उस समय तक करना पड़ा जब तक मसीह परमेश्वर के नये और उत्तम उपाय के साथ न आ गया।

11 वह इस उत्तम प्रथा के, जो अभी हमारी है, महायाजक होकर आया। उसने स्वर्ग में उस और भी बड़े, सिद्ध तम्बू में प्रवेश किया, जो मनुष्यों के द्वारा नहीं बनाया गया और न ही इस संसार का भाग है, 12 और एक ही बार में सदा के लिए उस भीतरी कमरे, परम पवित्र स्थान में उसने लोहू लेकर प्रायश्चित के स्थान पर छिड़का, परन्तु वह बकरों और बछड़ों का लोहू नहीं था। नहीं वह अपना ही लोहू ले गया, और उससे उसने स्वयं हमारे अनन्त उद्धार का निश्चय किया। 13 और यदि पुरानी प्रथा में बैलों और बकरों का लोहू और गायों की राख मनुष्य की देहों को पाप से शुद्ध कर सकती थी, 14 तो फिर सोचो कि मसीह का लोहू इन सबसे बढ़कर निश्चय ही हमारे जीवनों और हृदयों को परिवर्तित कर देगा। उसका बलिदान हमें पुराने नियमों का पालन करने की चिन्ता से मुक्त

करता है, और हममें यह इच्छा उत्पन्न करता है कि हम जीवित परमेश्वर की सेवा करें। क्योंकि अनन्त पवित्र आत्मा की सहायता से, मसीह ने...सिद्ध और बिना एक भी पाप या दोष के होते हुए भी, अपने आपको हमारे पापों के लिए मरने को परमेश्वर को अपनी इच्छा से दे दिया। 15 मसीह इस नयी वाचा के साथ आया ताकि सब, जिनको बुलाया गया है, आ सकें और परमेश्वर की सब अद्भुत प्रतिज्ञाओं को सदाकाल के लिए पा सकें। क्योंकि मसीह उनको पापों के दण्ड से छुड़ाने के लिए मरा। उसने पुरानी प्रथा के ही आधीन रहते हुए किया था। 16 अब, यदि कोई मर जाए और वसीयतनामा—छोड जाए...उन सब वस्तुओं की सूची जो उसके मरने पर कुछ लोगों को बांट दी जाएं...तो कोई उस समय तक कुछ भी नहीं पाता जब तक यह प्रमाणित नहीं हो जाता कि जिस व्यक्ति ने वसीयतनामा लिखा उसकी मृत्यु हो चुकी है। 17 वसीयतनामे का प्रभाव उस व्यक्ति की मृत्यु के बाद ही पड़ता है जिसने उसे लिखा है। जब तक वह जीवित रहता है, कोई भी उस लेख को उन वस्तुओं को पाने के लिए काम में नहीं ला सकता जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनको दी है। 18 इसीलिए पहले समझौते के प्रभावशील होने के ही पूर्व लोहू (मसीह की मृत्यु के प्रमाण स्वरूप) छिड़का गया। 19 क्योंकि जब मूसा ने लोगों को परमेश्वर की व्यवस्था के सब नियम दे दिए, तब उसने पानी के साथ, बछड़ों और बकरों का लोहू लिया, और परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक पर और सब लोगों पर छिड़का, और जूफे की झाड़ी की डालियों और लाल ऊन को छिडकने के लिए काम में लिया। 20 तब उसने कहा, "यह वह लोहू है जो तुम्हारे और परमेश्वर के मध्य समझौते के आरम्भ होने का चिन्ह है, उस समझौते का जिसे तुम्हारे साथ करने की आज्ञा परमेश्वर ने मुझे दी।" 21 और इसी प्रकार उसने पवित्र-तम्बू और आराधना की सब वस्तुओं पर लोहू छिड़का। 22 वास्तव में हम कह सकते हैं कि पुराने समझौते में प्रायः हर वस्तु को उस पर लोहू छिड़कने के द्वारा शुद्ध किया जाता था, और बिना लोहू बहाए पापों की क्षमा नहीं है।

23 इसीलिए इस पृथ्वी के पवित्र तम्बू को, और उसमे की सब वस्तुओं को...जो स्वर्ग की वस्तुओ के प्रतिरूप हैं...मूसा के द्वारा इसी प्रकार, पशुओं के लोहू के छिड़काव से शुद्ध होना आवश्यक था। परन्तु स्वर्ग की वास्तविक वस्तुए, जिनके प्रतिरूप ये संसार की वस्तुएं हैं, कही अधिक बहुमूल्य भेंटों के द्वारा शुद्ध की गईं। 24 क्योंकि मसीह ने स्वर्ग मे प्रवेश किया है, कि अब परमेश्वर के सामने हमारा मित्र होकर प्रकट हो। उसने ऐसा आराधना के सासारिक स्थान मे नहीं किया, क्योंकि वह स्वर्ग के वास्तविक मन्दिर का केवल एक प्रतिरूप था। 25 न ही उसने अपने आप को बार बार चढाया, जैसे यहा इस पृथ्वी का महायाजक हर वर्ष परम-पवित्र स्थान में पशुओं का लोहू चढाता है। 26 यदि यह आवश्यक होता, तो फिर उसको सृष्टि के आरम्भ से लेकर अब तक बार-बार मरना पडता। परन्तु नहीं। वह युग के अन्त मे, एक बार आया कि हमारे लिए मरकर मृत्यु की शक्ति को सदाकाल के लिए हटा दे। 27 और जैसा निश्चित है कि मनुष्य केवल एक ही बार मरे, और उसके बाद न्याय होता है, 28 इसी प्रकार बहुतेरे लोगों के पापो के लिए बलिदान होकर मसीह भी केवल एक ही बार मरा, और वह फिर से आएगा, परन्तु इस बार हमारे पापों के छुटकारे के लिए नहीं इस बार वह उन सबके लिए उद्धार लेकर आएगा जो बड़ी उत्सुकता और धीरज के साथ उसकी प्रतीक्षा मे हैं।

10 1 यहूदी व्यवस्था की पुरानी प्रथा उन अच्छी बातों का, जिन्हें मसीह हमारे लिए करेगा, केवल एक धुंधली तस्वीर है।

पुरानी प्रथा के अनुसार बार-बार, प्रति वर्ष बलिदान को चढ़ाना पड़ता था, परन्तु इतना होने पर भी वे कभी उनका उद्धार नहीं कर सके जो इन नियमों के आधीन रहते थे। 2 यदि वे कर सकते, तो एक ही बलिदान पर्याप्त होता, आराधना करने वाले एक ही बार में शुद्ध हो जाते, और अपराधी होने की भावना नहीं रह जाती। 3 परन्तु ठीक इसके विपरीत हुआ, उनके मन को छुटकारा देने के बदले प्रति-वर्ष के ये बलिदान उनको अपनी आज्ञा-उल्लंघन करने और अपराधी होने का स्मरण दिलाते थे। 4 क्योंकि पापों को दूर करना बैलों और बकरों के लोहू के लिए वास्तव में सम्भव नहीं है।[1] 5 इसीलिए इस संसार में आते समय मसीह ने कहा, "हे परमेश्वर, बैलों और बकरों का लोहू तुझे संतुष्ट नहीं कर सकता, इस कारण तूने मेरी यह देह तैयार की है कि मैं तेरी वेदी पर इसे बलिदान के रूप में चढ़ा दूं। 6 तू पशु-बलियों से संतुष्ट नहीं था जो पाप के लिए भेंट के रूप में तेरे सामने वध किए और जलाए जाते थे। 7 तब मैंने कहा, "देख, मैं तेरी इच्छा पूरी करने, अर्थात अपना प्राण देने के लिए आ गया हूं, जैसा पवित्रशास्त्र में मेरे विषय में लिखा है।" 8 पुरानी प्रथा के अनुसार अनेक आवश्यक बलिदानों और भेंटों से न सन्तुष्ट होने के विषय में, यह कह लेने के बाद, 9 मसीह ने आगे कहा, "मैं यहां हूं। मैं अपना प्राण देने के लिए आया हूं।" वह पहली प्रथा को अधिक उत्तम प्रथा के आ जाने के कारण समाप्त कर देता है। 10 इस नये प्रबन्ध के अनुसार हमें मसीह की एक ही बार की मृत्यु के द्वारा क्षमा और शुद्धता मिली है। 11 पुरानी प्रथा के अन्तर्गत याजक दिन प्रति दिन बलिदान चढ़ाने को खड़े रहते थे जिनसे हमारे पाप कभी दूर नहीं हो सके। 12 परन्तु मसीह ने अपने आपको हमारे पापों के लिए सदा के लिए एक ही बलिदान करके परमेश्वर को दे दिया, और तब परमेश्वर के दाहिने हाथ पर सबसे अधिक प्रतिष्ठा के स्थान में बैठ गया, 13 इस प्रतीक्षा में कि उसके शत्रुओं को उसके पांवों तले कर दिया जाए। 14 क्योंकि उस एक ही बलिदान से उसने उन सबको, जिनको वह पवित्र कर रहा है, परमेश्वर की दृष्टि में सदा के लिए सिद्ध कर दिया। 15 और पवित्र आत्मा साक्षी देता है कि यह ऐसा ही है, क्योंकि उसने कहा है, 16 "यह वह समझौता है जो मैं इस्राएल के लोगों के साथ करूंगा, यद्यपि उन्होंने अपना पहला समझौता तोड़ दिया: मैं उनके मनों में अपनी व्यवस्था लिखूंगा जिससे वे सदा मेरी इच्छा को जानें, और मैं उनके हृदयों में अपनी व्यवस्था डालूंगा जिससे वे सदा उसका पालन करना चाहेंगे।" 17 और तब उन्होंने आगे कहा है, "मैं उनके पापों और अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण न करूंगा।" 18 अब, जबकि पाप सदा के लिए एक ही बार क्षमा किया जा चुका है और भुला दिया गया है, तो फिर उससे छुटकारा पाने के लिए और अधिक बलिदान चढ़ाने की आवश्यकता ही नहीं है।

19 और इसलिए, प्रिय भाइयो, अब हम सीधे परम-पवित्र स्थान में, जहां परमेश्वर है, यीशु के लोहू के कारण जा सकते हैं। 20 यह बिल्कुल नया व जीवनदायक मार्ग है जिसे मसीह ने परदे को अर्थात अपनी मानवीय देह को—फाड़ने के द्वारा हमारे लिए खोला है—कि हमें परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में आने दे। 21 और इसलिए कि हमारे यह महायाजक परमेश्वर के घर के अधिकारी हैं। 22 हम सच्चे हृदय से परमेश्वर के पास सीधे जाएं, उस पर पूरी रीति से यह भरोसा रखते हुए कि वह हमें ग्रहण करेगा, क्योंकि हमने अपने दुष्ट

[1] बैलों और बकरों का लोहू केवल पापों को ढंकता था और सैकड़ों वर्षों तक उन्हें दृष्टि से ओझल किए था जब तक यीशु मसीह क्रूस पर मरने के लिए न आ गए; वहीं उन्होंने स्वयं अपना लोहू दिया जिसने सदा के लिए उन पापों को दूर किया।

होने के लिए मसीह के लोहू का छिड़काव पा लिया है, और हमारी देह शुद्ध जल से धोई गई है। 23 अब हम उस उद्धार की बाट जोह सकते हैं, जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने हमें दी है। अब आगे सन्देह का कोई स्थान ही नहीं रह गया है, और हम दूसरों को बता सकते हैं कि उद्धार हमारा है, क्योंकि कोई प्रश्न ही नही उठता कि वह अपने कहे अनुसार नही करेगा। 24 उसने हमारे लिए जो कुछ किया है, इस कारण हम परस्पर सहायता करने और एक-दूसरे के प्रति दयालु बनने और अच्छे काम करने मे एक-दूसरे से आगे बढ़ जाए। 25 हम अपनी कलीसियाओं की सभाओं मे उपस्थित होना न छोड़ें, जैसा कुछ लोग करते हैं, परन्तु एक-दूसरे को उत्साहित करें और चेतावनी दें, विशेषकर अब जबकि उसके फिर से आने का दिन निकट आ रहा है।

26 यदि कोई क्षमा के सत्य को जान लेने के बाद उद्धारकर्त्ता का इन्कार करने के द्वारा जानबूझ कर पाप करता है तो यह पाप मसीह की मृत्यु के द्वारा नहीं ढंपता, इससे छुटकारा पाने का कोई दूसरा उपाय नही है। 27 परमेश्वर के भयानक प्रकोप से भयंकर दण्ड की बाट जोहने के सिवाय और कुछ बाकि नही रह जाएगा जो उसके सब शत्रुओं को नाश कर देगा। 28 यदि कोई व्यक्ति मूसा के द्वारा दी गई व्यवस्था को मानने से इन्कार करता था, तो उसके पाप के विरुद्ध दो या तीन गवाहों के होने पर निर्दयता के साथ उसे मार डाला जाता था; 29 तो फिर सोचो कि उन लोगों के लिए दण्ड और कितना अधिक भयानक न होगा जिन्होंने परमेश्वर के पुत्र को पावों तले रौंदा है और उसके शुद्ध करने वाले लोहू के साथ इस प्रकार व्यवहार किया है मानो वह बहुत साधारण और अपवित्र रहा हो, और पवित्र आत्मा का जो परमेश्वर के लोगों पर दया करता है, अपमान कर अपने कार्यों से उसे क्रोध दिलाया है। 30 क्योंकि हम उसको जानते हैं जिसने कहा है, "न्याय करना मेरा काम है, मैं उनको बदला दूंगा, "और जिसने यह भी कहा, "प्रभु स्वयं इन परिस्थितियों को हाथ मे लेगा।" 31 अतः जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।

32 उन अद्‌भुत दिनों को कभी न भूलो जब तुमने पहले मसीह के विषय मे सीखा था। याद रखो कि तुम भयानक दुःखों के होते हुए भी प्रभु के साथ-साथ चलते रहे। 33 कभी-कभी तुम्हारी हंसी होती थी और तुम्हें पीटा जाता था, और कभी-कभी तुम दूसरों को वैसा ही दुःख सहते देखते थे और तरस खाते थे। 34 तुम जेल मे डाले गए, लोगों के साथ दुःख सहते थे, *और तुम वास्तव मे प्रसन्न होते थे जब* तुम्हारा अपना सब कुछ तुमसे छीन लिया जाता था, यह जानकर कि स्वर्ग मे तुम्हारे लिए और भी उत्तम वस्तुएं हैं, ऐसी वस्तुए जो सदाकाल के लिए तुम्हारी रहेगी। 35 प्रभु मे इस सुखदायी आशा को मिटने न दो, चाहे कुछ क्यों न हो जाए। अपना प्रतिफल स्मरण करो। 36 तुम्हें परमेश्वर की इच्छा को धीरज के साथ पूरी करते रहने की आवश्यकता है यदि तुम चाहो कि वह अपनी सब प्रतिज्ञाओं के अनुसार तुम्हारे लिए करे। 37 उसके आने मे और अधिक देर नही होगी। 38 और जिनके विश्वास ने उसे परमेश्वर की दृष्टि मे धर्मी बनाया है उनको विश्वास के द्वारा जीना चाहिए और सब बातों मे उस पर भरोसा रखना चाहिए। नही तो, यदि वे पीछे हट जाएं, तो परमेश्वर को उनसे कोई प्रसन्नता नही होगी। 39 परन्तु हमने परमेश्वर की ओर कभी पीठ नही फेरी है कि हमारा विनाश निश्चित हो। नही, वरन उस *पर हमारा विश्वास हमें अपनी आत्मा के उद्धार* का निश्चय दिलाता है।

11 1 विश्वास क्या है ? यह दृढ़ निश्चय है कि हम जो कुछ चाहते हैं वह होने जा रहा है। यह वह निश्चय है जिसकी हम

आशा लगाए हुए हैं, यद्यपि हम उसे ऊपर नहीं देख सकते, तौभी वह हमारे लिए ठहरा हुआ है। 2 पुराने समयों में परमेश्वर के जन अपने विश्वास के लिए प्रसिद्ध थे। 3 विश्वास के द्वारा परमेश्वर पर भरोसा रखने के द्वारा—हम जानते हैं कि संसार और तारे—वास्तव में, सब वस्तुएं—परमेश्वर की आज्ञा से सृजी गईं, और कि वे सब उन वस्तुओं से सृजी गईं जो देखी नही जा सकती। 4 विश्वास ही के द्वारा हाबिल ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और ऐसी भेंट चढ़ाई जिससे परमेश्वर कैन की भेंट की अपेक्षा अधिक प्रसन्न हुआ। परमेश्वर ने हाबिल को ग्रहण किया और उसकी भेंट को ग्रहण करने के द्वारा इसका प्रमाण दिया, और यद्यपि हाबिल को मरे हुए बहुत समय हो गया है, तौभी हम परमेश्वर पर भरोसा रखने के विषय में उससे अब भी शिक्षा ले सकते हैं। 5 हनोक ने भी परमेश्वर पर विश्वास रखा, और इसीलिए परमेश्वर ने उसे बिना मरे उठा लिया, अचानक वह चला गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया। ऐसा होने से पहले परमेश्वर ने कहा था कि वह हनोक से कितना अधिक प्रसन्न है। 6 तुम विश्वास के बिना उस पर निर्भर रहे बिना, परमेश्वर को कभी प्रसन्न नही कर सकते। जो कोई परमेश्वर के पास आना चाहता है उसे विश्वास करना है कि परमेश्वर है और वह उन लोगों को प्रतिफल देता है जो सच्चाई से उसकी खोज करते हैं। 7 नूह एक दूसरा व्यक्ति था जिसने परमेश्वर पर विश्वास किया। जब उसने भविष्य के सम्बन्ध में परमेश्वर की चेतावनी सुनी, तो नूह ने उस पर विश्वास किया। यद्यपि उस समय बाढ़ का कोई चिन्ह न था, और बिना समय व्यर्थ गंवाए, उसने जहाज को बनाया और अपने घराने को बचा लिया। परमेश्वर पर नूह का विश्वास शेष संसार के पाप और अविश्वास के विपरीत था—जिन्होंने आज्ञा मानने से इन्कार किया— और अपने विश्वास के कारण वह उनमें से एक बना जिन्हें परमेश्वर ने ग्रहण किया है। 8 इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और जब परमेश्वर ने उससे घर छोड़ देने और दूसरे देश को जाने को कहा जिसे देने की प्रतिज्ञा उसने उसे दी, तो उसने आज्ञा मानी। वह निकल पड़ा यह न जानते हुए कि वह कहां जा रहा है। 9 और जब वह परमेश्वर की प्रतिज्ञा के देश में पहुंच गया, तो तम्बुओं में यात्री के सदृश रहा, जैसे इसहाक और याकूब भी रहे, जिन्हें परमेश्वर ने वैसी ही प्रतिज्ञा दी। 10 इब्राहीम ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह विश्वास के साथ ठहरा हुआ था कि परमेश्वर उसे उस स्वर्गीय नगर में पहुंचाएगा जिसका बनाने वाला परमेश्वर है। 11 सारा में भी विश्वास था, और इसी के कारण वह अपनी वृद्धावस्था के होते हुए भी माता बनने के योग्य हो सकी, क्योंकि उसने समझ लिया कि परमेश्वर, जिसने उसे अपनी प्रतिज्ञा दी, निश्चय ही अपने कहे अनुसार करेगा। 12 और इस प्रकार एक पूरी जाति इब्राहीम से निकली जो एक सन्तान तक उत्पन्न करने के लिए अति वृद्ध थी...एक जाति जिसमें लाखों लोग आकाश के तारों के समान और समुद्र तट की रेत के समान उत्पन्न हुए जिन्हें गिना नही जा सकता।

13 ये विश्वासी पुरुष, जिनका मैंने वर्णन किया है, उन सब प्रतिज्ञाओं को जो परमेश्वर ने उनसे की थी पाए बिना मर गए, परन्तु उन्होंने उनको भविष्य में अपने लिए रखे हुए देखा और आनन्दित हुए, क्योंकि उन्होंने मान लिया कि यह संसार उनका वास्तविक घर नहीं है परन्तु वे विदेशियों के समान यहाँ की यात्रा पर हैं। 14 और जब वे इस प्रकार की बातें करते थे तो पूरी रीति से स्पष्ट है कि वे स्वर्ग के अपने वास्तविक घर की बाट जोह रहे थे। 15 यदि वे चाहते तो इस संसार की अच्छी बातों की ओर फिर लौट सकते थे। 16 परन्तु वे नही चाहते थे, वे स्वर्ग के लिए जी रहे थे। और अब परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने से

लज्जित नही है, क्योंकि उसने उनके लिए एक स्वर्गीय शहर तैयार किया है।

17 जब परमेश्वर इब्राहीम की परीक्षा ले रहा था, तब भी इब्राहीम ने परमेश्वर पर और उसकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास किया, और इसलिए उसने अपने पुत्र इसहाक को बलिदान चढ़ा दिया, और बलिदान की वेदी पर उसे वध करने को तैयार था, 18 हाँ, इसहाक तक को वध करने के लिए तैयार था, जिसके द्वारा परमेश्वर ने इब्राहीम को एक पूरी जाति का वंश देने की प्रतिज्ञा दी थी। 19 उसने विश्वास किया कि यदि इसहाक मर जाए तो परमेश्वर उसे फिर से जिला देगा। और हुआ भी ठीक ऐसा ही। क्योंकि जहा तक इब्राहीम का सम्बन्ध है, इसहाक की मृत्यु निश्चित थी, परन्तु वह फिर से जीवित लौटा। 20 विश्वास ही के द्वारा इसहाक ने जान लिया कि परमेश्वर भविष्य की आशिषें उसके दोनों पुत्रो, याकूब और एसाव को देगा। 21 विश्वास के द्वारा याकूब ने, जब वह वृद्ध और मरने पर हुआ, अपनी लाठी पर झुकते हुए, खडे होकर और प्रार्थना करके यूसुफ के दोनो पुत्रो को आशिष दी। 22 और विश्वास ही के द्वारा यूसुफ ने, अपने जीवन के अन्त मे पहुँचकर दृढ़ विश्वास के साथ परमेश्वर के विषय मे कहा था कि वह इस्राएल के लोगो को मिस्र मे से निकालेगा, और उसे इस बात का इतना निश्चय था कि उसने उनसे प्रतिज्ञा की कि वे निकलते समय उसकी हड्डियों को साथ लेते जाएं। 23 मूसा के माता-पिता में भी विश्वास था। जब उन्होंने देखा कि परमेश्वर ने उन्हें एक असाधारण बालक दिया है, तो उन्होंने विश्वास किया कि परमेश्वर उसे उस मृत्यु से जिस की आज्ञा राजा ने दी थी बचाएगा और उन्होंने उसे तीन माह तक छिपा रखा और नही डरे। 24, 25 विश्वास ही के द्वारा मूसा ने, बडे हो जाने पर, राजा के नाती का सा व्यवहार पाने से इन्कार किया, परन्तु परमेश्वर के लोगों के साथ दुर्व्यवहार मे भाग लेना चुना इसके बदले कि पाप के क्षणिक सुखों का आनन्द ले। 26 उसने सोचा कि मिस्र की सारी सम्पत्ति को अपनाने की अपेक्षा प्रतिज्ञा किए हुए मसीह के लिए दुःख उठाना कही उत्तम है, क्योकि वह उस बडे प्रतिफल की बाट जोह रहा था जो परमेश्वर उसको देने पर था। 27 और परमेश्वर पर विश्वास रखने के कारण ही उसने मिस्र देश छोड दिया और राजा के क्रोध से नही डरा। मूसा आगे बढता ही रहा ऐसा लगता था मानो वह परमेश्वर को वहां ठीक अपने साथ देख सकता था। 28 और यह विश्वास करने के ही कारण कि परमेश्वर अपने लोगों को बचाएगा, उसने उनको एक मेम्ने को वध करने और उसके लोहू को अपने घरो के दरवाजों की चौखटों पर छिडकने की आज्ञा दी जैसा परमेश्वर ने उनसे करने को कहा था, ताकि परमेश्वर का भयानक मृत्यु-दूत उन घरो मे पहलौठों को न छू सके, जैसा उसने मिस्रियों के घरो मे किया था। 29 इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास किया और मानो सूखी भूमि पर चलते हो वैसे उन्होंने लालसमुद्र पार किया। परन्तु जब मिस्रियो ने उनका पीछा कर वैसा ही करना चाहा, तो वे सबके सब डूब गए। 30 विश्वास ही से यरीहो की दीवार गिर पडी जब इस्राएल के लोगो ने सात दिन तक उसका चक्कर लगा लिया, जैसी परमेश्वर ने उनको आज्ञा दी थी। 31 विश्वास ही से—परमेश्वर और उसकी सामर्थ पर भरोसा रखने के कारण—राहाब वेश्या अपने शहर के दूसरे लोगों के साथ नही मरी जब उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानने से इन्कार किया, क्योकि उसने भेदियों का मित्रता के साथ स्वागत किया। 32 अच्छा, तो फिर और किस-किस की कहूं? गिदोन और बाराक और समसून और यिप्तह और दाऊद और शमुएल और अन्य सब नबियो के विश्वास की कथा को फिर से कहने मे बहुत अधिक समय लगेगा। 33 इन सब लोगो ने परमेश्वर पर भरोसा रखा और परिणाम यह

हुआ कि उन्होंने युद्ध जीते, राज्यों को हरा दिया, अपनी प्रजा पर अच्छी रीति से शासन किया, और परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार पाया, वे सिंहों की गुफाओं में, 34 और धधकती हुई भट्टी में हानि से बचाए गए। कुछ लोग, अपने विश्वास के द्वारा, तलवार की मृत्यु से बचे। कई एक दुर्बल या रोगी होने के बाद फिर से बलवन्त बने। दूसरों ने युद्ध में बड़ी शक्ति प्राप्त की, उन्होंने सारी सेना को मार भगाया। 35 और कई स्त्रियों ने, विश्वास के द्वारा, अपने प्रेमी जनों को फिर से मरे हुओं में से जीवित पाया। परन्तु दूसरों ने परमेश्वर पर भरोसा रखा और मरने तक मार सही, परमेश्वर से फिर कर मुक्त होने की अपेक्षा उन्होंने मर जाना अधिक अच्छा समझा—यह विश्वास रखते हुए कि वे भविष्य में उत्तम जीवन के लिए जी उठेंगे। 36 कई लोगों का ठट्ठा उड़ाया गया और उनकी पीठ पर कोड़ों की मार पड़ी, और दूसरों को तहखानों में जंजीरों से बांधकर रखा गया। 37, 38 कई लोग पथरवाह किए गए और मर गए और कई लोग आरे से दो भागों में चीरे जाने के द्वारा मर गये, बहुतों को प्रतिज्ञा दी गई कि यदि वे अपने विश्वास से मुकर जाएं तो स्वतंत्र किए जाएंगे, तब तलवार से उनको मार डाला गया। कुछ लोग भेड़ों और बकरों की खालों में इधर-उधर, जंगलों और पहाड़ों में घूमते, गुफाओं और खोहों में छिपते फिरे। वे भूखे और रोगी थे और उनसे बुरा व्यवहार किया गया था—संसार उनके योग्य न था! 39 और इन विश्वासी-पुरुषों ने, यद्यपि परमेश्वर पर भरोसा रखा और उस की सहमति पाई, तौभी उनमें से किसी ने भी उन सब वस्तुओं को नहीं पाया जिनकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उनसे की थी, 40 क्योंकि परमेश्वर की इच्छा थी कि वे ठहरें और अधिक उत्तम प्रतिफल में सहभागी हों, जो हमारे लिए तैयार किया गया था।

12 1 इसलिए कि विश्वासी पुरुषों की ऐसी बड़ी भीड़ हमें श्रेष्ठ स्थानों से देख रही है, हम किसी भी ऐसी वस्तु को उतार फेंके जिससे हम धीमे पड़ जाते हैं या जो हमें पीछे रोकती है, विशेषकर उन पापों को जो हमारे पांवों को इतना कसकर लपेट लेते हैं और हमें उलझकर गिरा देते हैं, और हम धीरज के साथ उस विशेष दौड़ को दौड़ें जिसे परमेश्वर ने हमारे सामने रखा है। 2 अपनी आंखें, हमारे अगुवे और शिक्षक यीशु पर लगाए रखो। वह क्रूस पर लज्जाजनक मृत्यु से मरने को तैयार थे, उस आनन्द के कारण जिसे वह जानते थे, कि बाद में उनका होगा, और अब वह परमेश्वर के सिंहासन के पास प्रतिष्ठा के स्थान में बैठे हैं। 3 यदि तुम दुर्बल मन और दुःखी होने से बचना चाहते हो, तो उनके धीरज पर ध्यान दो जब पापी व्यक्तियों ने उनके साथ इतने भयानक काम किये। 4 फिर तुमने पाप और परीक्षा के विरुद्ध कभी इतना संघर्ष किया ही नहीं है कि तुमने लोहू की बड़ी-बड़ी बूंदों का पसीना बहाया हो। 5 और क्या तुम इस उत्साहदायक वचन को जो परमेश्वर ने तुमसे अपने पुत्र से कहा, भूल गए? उसने कहा, मेरे पुत्र, जब प्रभु तुम्हें ताड़ना दे, तब क्रोधित न हो। जब उसे यह दिखाना हो कि तू कहां गलती पर है, तब निराश न हो। 6 क्योंकि जब वह तुझे ताड़ना दे, तब इससे सिद्ध होता है कि वह तुझसे प्रेम रखता है। जब वह तुझे मारे, तो यह प्रमाण है कि तू वास्तव में उसका पुत्र है। 7 तुम परमेश्वर को शिक्षा देने दो, क्योंकि वह वही कर रहा है जो कोई भी प्रेमी पिता अपने बच्चों के लिए करता है। किसी ने कभी ऐसे पुत्र के विषय में भी सुना है, जिसे कभी सुधारा न गया हो? 8 यदि परमेश्वर तुम्हें ताड़ना न दे जब तुम्हें इसकी आवश्यकता हो, जैसे दूसरे पिता अपने पुत्रों को ताड़ना देते हैं: तो उसका यह अर्थ है कि तुम वास्तव में परमेश्वर के पुत्र हो ही नहीं—कि तुम वास्तव में उसके घराने में सम्मिलित नहीं हो?

9 इसलिए कि हम यहा इस पृथ्वी पर अपने-अपने पिता का आदर करते हैं, यद्यपि वे हमें ताडना देते हैं, तो क्या हमें और भी अधिक आनन्द के साथ परमेश्वर की शिक्षा के आधीन नही रहना चाहिए जिससे हम वास्तव मे जीना आरम्भ कर सकें ? 10 हमारे सांसारिक पिताओं ने हमें थोड़े ही वर्षों तक शिक्षा दी, हमारे लिए जितना अच्छा वे जानते थे उतना उन्होंने किया, परन्तु परमेश्वर का सुधारना सदा ठीक होता है और हमारे भले के लिए होता है, कि हम उसकी पवित्रता के भागी हो सकें। 11 ताडना अच्छी नही लगती—इसमे कष्ट होता है। परन्तु बाद मे हम इसका परिणाम, चरित्र और आचरण मे बढती देख सकते हैं। 12 इसलिए इसे अपने हाथों से कसकर पकड़े रहो, अपने थरथराते पावों पर स्थिर खड़े रहो। 13 और अपने पावों के लिए सीधा, समतल मार्ग बनाओ ताकि जो तुम्हारे पीछे हो लें, वे दुर्बल और लंगडे होने पर भी, न गिरें न अपने आपको चोट पहुंचाए, परन्तु बलवन्त बनें।

14 सब झगड़ों से अलग रहने का प्रयत्न करो और शुद्ध और पवित्र जीवन बिताने की चेष्ठा करो, क्योंकि जो पवित्र नही है वह प्रभु को नही देखेगा। 15 एक दूसरे की चिन्ता करो ताकि तुममे से कोई भी परमेश्वर की श्रेष्ठ आशिषो को पाने मे असफल न रह जाए। ध्यान दो कि कोई कड़वाहट तुम्हारे मध्य जड न पकडे, क्योंकि फूट निकलने पर इससे कई संकट उत्पन्न होते हैं, और अनेक लोगों के आत्मिक जीवनो को चोट पहुंचाती है। 16 सतर्क रहो कि कोई व्यभिचार मे न पड जाए या एसाव के समान परमेश्वर के प्रति असावधान न हो जाए। उसने एक बार के भोजन के लिए अपने पहलौठे पुत्र होने के अधिकारो को बेच डाला। 17 किन्तु बाद मे जब उसने उन अधिकारों को दुबारा चाहा तो देर हो चुकी थी। बहुत देर हो चुकी थी, यद्यपि उसने पश्चाताप के बहुत आंसू बहाए। इसलिए याद रखो, और सदा सावधान रहो।

18 तुम्हें भय, लपटें निकलती हुई आग, काली घटा, अन्धकार, और भयंकर आंधी के आमने-सामने खडे नही होना पडा है, जैसा सीने पर्वत पर इस्राएलियो को खड़े होना पड़ा था जब परमेश्वर ने उन्हे अपनी व्यवस्था दी। 19 क्योंकि उस समय तुरही की भयानक आवाज और इतने भयानक सन्देश सहित एक स्वर सुनाई सुन पडा कि लोगो ने परमेश्वर से बिनती की, कि वह बोलना बन्द करे। 20 परमेश्वर की इस आज्ञा से वे अत्यन्त आश्चर्य मे पड़े एक पशु भी पहाड को छू ले तो वह मर जाएगा। 21 मूसा तक उस दृश्य से इतना डर गया कि कांपने लगा। 22 परन्तु तुम सीधे सिय्योन पर्वत मे, जीवित परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम में, और असंख्य आनन्दित स्वर्गदूतों के झुड में। 23 और कलीसियाओ मे, जो उन सब से मिलकर बनी है जिनके नाम स्वर्ग मे लिखे गए हैं, और परमेश्वर के पास, जो सब का न्यायी है, और स्वर्ग मे उद्धार पाये हुओं की आत्माओं तक, जो सिद्ध बन चुके हैं। 24 और स्वयं यीशु के पास जिन्होने हम तक अपना अद्भुत नया समझौता पहुँचाया है, और उस छिडके हुए लोहू तक आए हो जो हाबिल के लोहू के समान बदला लेने को चिल्लाने के बदले अनुग्रह पूर्वक क्षमा करता है। 25 इसलिए ध्यान दो कि तुम उसकी आज्ञा मानो जो तुममे बोल रहा है। क्योंकि मूसा की, जो सांसारिक दूत था, सुनने मे इन्कार करने पर इस्राएल के लोग नही बचे, तो हमे कितना भयानक खतरा है यदि हम परमेश्वर की, जो हमसे स्वर्ग से बातें करता है, सुनने मे इन्कार कर दें। 26 जब उसने सीने पहाड पर से बातें की तब उसके स्वर से पृथ्वी काप गई, परन्तु उसने कहा है, अगली बार, मैं न केवल पृथ्वी को हिलाऊगा, परन्तु आकाश को भी हिलाऊंगा। 27 इससे उसका अर्थ है कि वह बिना ठोस नीव की हर वस्तु को अलग रखेगा, ताकि केवल वे ही वस्तुएं बची रहें जो नही हिल सकती हैं। 28 इसलिए हमारा ऐसा राज्य है

जिसे कोई नष्ट नहीं कर सकता, हम धन्यवाद भरे मनों से, और पवित्र भय और आदर सहित परमेश्वर की सेवा कर उसको प्रसन्न करें। 29 क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करनेवाली आग है।

13 1 तुम भाई के समान सच्चे प्रेम से एक दूसरे से प्रेम करते रहो। 2 अतिथि लोगों के साथ दया करना न भूलो, क्योंकि बहुतों ने, जिन्होंने ऐसा किया है अनजाने ही स्वर्गदूतों की पहुनाई की है। 3 जेल में पड़े हुओं को न भूलो। उनके साथ दुःखी हो, मानो तुम स्वयं ही वहां बन्दी हो। जिनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है उनके दुःख में सहभागी हो, क्योंकि तुम जानते हो कि वे क्या सह रहे हैं। 4 अपने विवाह और उसकी प्रतिज्ञा का आदर करो, और पवित्र रहो, क्योंकि परमेश्वर निश्चय ही उन लोगों को दण्ड देगा जो अनैतिक हैं, या व्यभिचार करते हैं। 5 धन के प्रेम से परे रहो, जो कुछ तुम्हारे पास है उसी में सन्तोष करो। क्योंकि परमेश्वर ने कहा है, "मैं तुमको कदापि कभी नही छोड़ूंगा और न ही कभी त्यागूंगा।" 6 इसीलिए हम बिना किसी सन्देह के निडर होकर कह सकते हैं, "प्रभु मेरा सहायक है और मुझे किसी भी बात का डर नहीं है जो मनुष्य मुझसे कर सकता है।"

7 अपने अगुवों को स्मरण रखो जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर के वचन की शिक्षा दी है। उन सब अच्छाइयों पर ध्यान दो जो उनके जीवन के परिणाम हैं, और उनके समान प्रभु पर भरोसा रखने का प्रयत्न करो। 8 यीशु मसीह कल, आज, और युगानुयुग एक से हैं। 9 इसलिए विचित्र व नये विचारों के आकर्षण में न आ जाओ। तुम्हारी आत्मिक शक्ति परमेश्वर की ओर से वरदान सदृश आती है, कुछ विशेष ही प्रकार के भोजन करने के विषय धार्मिक रीतियों और नियमों से नहीं—ऐसी रीतियां जिनसे उनके अपनाने वालों तक को सहायता नहीं पहुंची है। 10 हमारी एक वेदी है—क्रूस, जिस पर मसीह बलिदान हुआ—जहां व्यवस्था का पालन करने के द्वारा उद्धार पाने के प्रयत्न में लगे हुए लोगों को कभी सहायता नहीं पहुंच सकती। 11 यहूदी-व्यवस्था की प्रथा के अनुसार महायाजक वध किए हुए पशुओं का लोहू पाप के लिए बलिदान के रूप में पवित्र-स्थान में लाता था, और तब पशुओं को शहर के बाहर जलाया जाता था। 12 इसीलिए मसीह ने शहर से बाहर दुःख उठाया और उसकी मृत्यु हुई, जहां पर उसके लोहू ने हमारे पापों को धोया। 13 इसलिए हम उसके पास शहर की दीवार के पार (अर्थात्, इस संसार की रुचियों से अलग, तुच्छ समझे जाने को तैयार रहकर) उसकी लाज उठाकर, उसके साथ वहां दुःख सहने के लिए जाएं। 14 क्योंकि यह संसार हमारा घर नहीं है, हम स्वर्ग के अपने अनन्त-घर की बाट जोह रहे हैं। 15 यीशु की सहायता से हम दूसरों को उनके नाम की महिमा के विषय में बताने के द्वारा, लगातार अपना स्तुतिरूपी बलिदान परमेश्वर को चढ़ाएंगे। 16 भलाई करना, और जो कुछ तुम्हारे पास है उसमें आवश्यकता में पड़े हुओं को सहभागी करना न भूलो, क्योंकि ऐसे बलिदान उसको बहुत भाते हैं। 17 अपने आत्मिक अगुवों की आज्ञा मानो और उनके कहे अनुसार करने को तैयार रहो। क्योंकि तुम्हारी आत्माओं का ध्यान रखना उनका काम है, और इसे वे कितनी अच्छी रीति से करते हैं इस आधार पर परमेश्वर उनका न्याय करेगा। उन्हें अवसर दो कि वे तुम्हारे विषय में प्रभु को आनन्द के साथ बताएं, दुःख के साथ नहीं, क्योंकि तब तुम्हें भी इसके लिए दुःख सहना होगा।

18 हमारे लिए प्रार्थना करो, क्योंकि हमारा विवेक शुद्ध है और हम इसे ऐसा ही रखना चाहते हैं। 19 विशेषकर मुझे अभी तुम्हारी प्रार्थनाओं की आवश्यकता है जिससे मैं शीघ्र तुम्हारे पास फिर आ सकूं।

20, 21 और अब शान्ति का परमेश्वर, जो हमारे प्रभु यीशु को मृतकों में से जिलाकर फिर ले आया, अपनी इच्छा पूरी करने के लिए सब आवश्यक कामों से तुम्हें युक्त करे। वह जो परमेश्वर और तुम्हारे मध्य हुए अनन्त समझौते के द्वारा, जिस पर उसके लोहू से हस्ताक्षर हुए, भेड़ों का महान रखवाला बन गया, मसीह की सामर्थ से तुममें वह सब उत्पन्न करे जो उसको भाता है। उनकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

22 हे भाइयो, कृपया जो कुछ मैंने इस पत्र मे लिखा है उसे धीरज के साथ सुनो, क्योंकि यह छोटा पत्र है। 23 मैं चाहता हू तुम जानो कि भाई तीमुथियुस अब जेल से बाहर है, यदि वह शीघ्र यहा आ जाए तो मैं उसके साथ तुममे भेंट करने के लिए आऊंगा।

24, 25 अपने सब अगुवो और वहा के दूसरे विश्वासियो को मेरा नमस्कार दो। इटली के मसीही, जो यहा मेरे साथ हैं, तुम्हें नमस्कार कहते हैं। परमेश्वर का अनुग्रह तुम सबके साथ बना रहे। आमीन।

अच्छा, विदाई।

याकूब की पत्री

1 1 याकूब की ओर से जो परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह का दास है। यहूदी मसीहियो को, जो हर स्थान मे तित्तर बित्तर हैं, नमस्कार!

2 प्रिय भाइयो, क्या तुम्हारा जीवन कठिनाइयो और परीक्षाओ से भरा है? यदि है तो आनन्दित हो, 3 क्योंकि जब मार्ग ऊंचा नीचा हो जाता है, तब तुम्हारे धैर्य को बढने का अवसर मिलता है। 4 इसलिए उसे बढने दो, और अपनी परीक्षाओं से बच निकलने का प्रयत्न मत करो। क्योंकि जब धीरज अन्त मे पूरी रीति से विकसित हो जाएगा। तब तुम चरित्र मे दृढ, पूरे और सिद्ध रह कर, किसी भी बात के लिए तैयार रह सकोगे।

5 यदि तुम जानना चाहो कि परमेश्वर क्या चाहता है कि तुम करो—तो उससे मांगो, और वह हर्ष के साथ तुम्हे बता देगा, क्योंकि जितने उससे मागते हैं, उन सब को वह उदारता के साथ ज्ञान देने को सदा तैयार रहता है, वह इससे क्रोधित नही होगा। 6 परन्तु जब तुम उससे मागो, तो निश्चय जानो कि वह तुम्हे बताएगा, क्योंकि सन्देह भरा मन उतना ही अस्थिर होगा जैसे समुद्र की लहर, जो हवा से बहती और उछलती है, 7, 8 कभी इधर और कभी उधर मुडते रहोगे तो तुम्हारा निर्णय भी अस्थिर होगा यदि तुम विश्वास से न मागो, तो प्रभु से आशा भी मत रखो कि वह तुम्हे कोई दृढ उत्तर देगा।

9 इस ससार मे जिस मसीही का स्थान महत्वपूर्ण नही है, उसे आनन्दित होना चाहिए, क्योंकि वह परमेश्वर की दृष्टि मे महान है। 10, 11 परन्तु धनी व्यक्ति को आनन्दित होना चाहिए कि उसकी सम्पत्ति का प्रभु की दृष्टि मे कोई महत्व नहीं है, क्योंकि वह शीघ्र ही चला जाएगा, उस फूल के सदृश जिसकी सुन्दरता चली गई हो और वह सूख कर, सूर्य की तेज धूप से मुर्झाकर—मर जाए। वे शीघ्र ही मर जायेंगे और अपने सब व्यस्त कार्यों

को पीछे छोड़ जाएगे ।

12 आनन्दित है वह व्यक्ति जो परीक्षा मे पड़ने पर अनुचित कार्य नही करता, क्योकि वह अपना इनाम जीवन का मुकुट पाएगा जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उनको दी है जो उससे प्रेम रखते हैं। 13 और स्मरण रखो, जब कोई अनुचित कार्य करना चाहता है तो उसको परीक्षा मे डालने वाला परमेश्वर कदापि नही है। क्योंकि परमेश्वर कभी अनुचित कार्य नही करता और न ही कभी किसी को करने को कहता है 14 परीक्षा स्वयं व्यक्ति के बुरे विचारो और इच्छाओ का परिणाम है जो उसे अपनी ओर खीच लेती है। 15 ये बुरी इच्छाए बुरे कार्यों की ओर और इसके पश्चात परमेश्वर के मृत्यु दण्ड की ओर अग्रसर करती हैं। 16 इसलिए प्रिय भाइयो, धोखे मे न आओ। 17 परन्तु जो कुछ भला और सिद्ध है वह हम तक परमेश्वर की ओर से पहुचता है, जो कि समस्त ज्योति का रचने वाला है, और वह बिना बदले और बिना छाया के सदाकाल तक चमकता है। 18 और वह उनके लिए[1] प्रसन्नता का दिन था जब उसने हमे अपने वचन के सत्य के द्वारा नया जीवन दिया, और हम उसके नये घराने के, मानो, प्रथम सन्तान बने।

19 प्रिय भाइयो, कभी न भूलो कि अधिक सुनना, व कम बोलना, और क्रोधित न बनना श्रेष्ठ है, 20 क्योंकि क्रोध से हम भले नही बनते जैसे परमेश्वर की माग है हम बनें। 21 इसलिए तुम्हारे जीवन मे, भीतर और बाहर जितनी अनुचित बातें हैं उन सब को त्याग दो, और उस अद्‌भुत सन्देश के आधीन जो हमे प्राप्त हुआ है दीनता के साथ आनन्दित हो, क्योकि यह हमारे हृदयो को प्रभावित करके हमारी आत्माओ के उद्धार करने की क्षमता रखता है। 22 और स्मरण रखो कि इस सन्देश को केवल सुनना ही नही है, अपितु इसके प्रति आज्ञाकारी होना है । सो मूर्ख मत बनो 23 क्योकि यदि कोई व्यक्ति केवल सुनता है और उसका पालन नही करता तो वह उसके समान है जो अपना मुख दर्पण मे देखता है। 24 जब वह उससे हट कर दूर चला जाता है, तो फिर अपना मुह नही देख सकता, न ही उसे स्मरण रखता है, कि वह कैसा दिखाई देता है। 25 परन्तु यदि कोई परमेश्वर की सिद्ध व्यवस्था को ध्यानपूर्वक देखता है जो स्वतन्त्र मनुष्यों को दी गई है। तो वह न केवल उसे स्मरण रखेगा परन्तु जो कुछ वह कहता है उसका पालन भी करेगा और तब वह जो भी कार्य करेगा परमेश्वर उसे अपनी महान आशीषें प्रदान करेगा। 26 जो कोई कहता है कि मैं मसीही हूँ और अपनी कटु जीभ पर नियन्त्रण नही रखता, वह स्वयं को धोखा दे रहा है, और उसके धर्म का अधिक महत्व नही है। 27 जो मसीही परमेश्वर की दृष्टि मे शुद्ध तथा निर्दोष है, वही अनाथो और विधवाओ की सुधि लेता है और वह प्रभु के प्रति सच्चा बना रहता है—वह ससार के सम्पर्क से मलिन तथा दूषित नही होता।

2

1 प्रिय भाइयो, तुम यह दावा कैसे कर सकते हो कि तुम महिमा के स्वामी, प्रभु यीशु मसीह के हो, यदि तुम धनी लोगों के साथ पक्षपात करते हो और निर्धन लोगो को तुच्छ समझते हो? 2 यदि कोई व्यक्ति तुम्हारी मंडली मे मंहगे वस्त्र पहने हुए और हाथ मे बहुमूल्य सोने की अंगूठी पहिने हुए आए, और उसी क्षण दूसरा व्यक्ति जो निर्धन है और फटे पुराने वस्त्र पहने हुए है, आए। 3 और तुम धनी व्यक्ति की ओर बहुत अधिक ध्यान दो और उसे सबसे अच्छा स्थान बैठने के लिए दो और निर्धन व्यक्ति से कहो, "तुम चाहो तो वहा खड़े हो सकते हो, या फिर यहा फर्श पर बैठ सकते हो," 4 इस प्रकार मनुष्य की उसके धन के आधार पर तुलना करना गलत है।

[1] मूलत "उसने अपनी ही इच्छा से हमें......उत्पन्न किया।"

5 प्रिय भाइयो, मेरी सुनो : परमेश्वर ने निर्धन लोगों को विश्वास मे धनी होने के लिए चुना है और स्वर्ग का राज्य उनका है, क्योंकि यह ऐसा उपहार है जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उन सबको दी है जो उससे प्रेम रखते हैं। 6 और तो भी, दोनों अनजान व्यक्तियों मे से तुमने निर्धन व्यक्ति को तुच्छ समझा है। क्या तुम समझते नही कि साधारणतः धनी लोग ही हैं जो तुम्हें न्यायालयो में घसीटते हैं ? 7 और अधिकतर वे ही होते हैं जो यीशु मसीह पर हसते हैं, जिसके श्रेष्ठनाम के तुम कहलाए जाते हो। 8 हा वास्तव मे, यह अच्छा है जब तुम सचमुच हमारे प्रभु की आज्ञा मानते हो, 'तुम्हें अपने पडोसी से उतना हो प्रेम रखना चाहिए जितना तुम अपने आप से रखते हो और उसकी उतनी ही सहायता करनी चाहिए जितनी चिन्ता तुम अपने आप की करते हो।' 9 परन्तु तुम हमारे प्रभु की यह व्यवस्था तोड़ रहे हो जब तुम धनी का पक्ष करते और उसकी चापलूसी करते हो, यह पाप है। 10 और जो व्यक्ति परमेश्वर की सारी व्यवस्था का पालन करता है, परन्तु एक छोटी सी बात मे चूक जाता है, वह उस व्यक्ति के समान ही दोषी है जिसने सारी व्यवस्था का उल्लंघन किया हो। 11 क्योंकि परमेश्वर जिसने कहा कि तू उस स्त्री से विवाह मत कर जिसका पहले ही पति हो, और यह भी कहा कि तू हत्या न कर, इस लिए यद्यपि तुमने व्यभीचार करने के द्वारा विवाह की व्यवस्था नही तोडी, परन्तु किसी की हत्या की, इस लिए तुमने पूरी रीति से परमेश्वर की व्यवस्था तोडी है और उसके सामने पूर्णरूप से दोषी हो। 12 तुम मसीह की इच्छा के अनुसार काम कर रहे हो या नही, इस पर तुम्हारा न्याय होगा। इसलिए सावधान रहो कि तुम क्या करते हो और क्या सोचते हो, 13 क्योंकि जिन्होने कोई दया नहीं दिखाई उनके लिए कोई दया नही होगी। परन्तु यदि तुम दयालु रहे हो, तो तुम्हारे प्रति परमेश्वर की दया तुम्हारे विरुद्ध उसके न्याय पर विजयी होगी।

14 प्रिय भाइयो, यह कहने से क्या लाभ कि तुममे विश्वास है और तुम मसीही हो यदि तुम उसे दूसरो की सहायता करके प्रमाणित नही करते ? क्या उस प्रकार का विश्वास किसी का उद्धार कर सकता है ? 15 यदि तुम्हारा कोई मित्र है जिसे भोजन और वस्त्र की आवश्यकता हो, 16 और तुम उससे कहो 'अच्छा, नमस्कार और परमेश्वर तुझे आशिष दे, सुखी और आनन्दित रह' और उसे वस्त्र और भोजन न दो, तो उससे क्या लाभ होगा ? 17 इसी प्रकार, केवल विश्वास रखना ही पर्याप्त नही है। तुमको अपने विश्वास को प्रमाणित करने के लिए भलाई भी करनी चाहिए। जो विश्वास अपने आप को अच्छे कामो के द्वारा प्रगट नही करता वह विश्वास कदापि नही है—और व्यर्थ है। 18 परन्तु कोई विवाद कर कह सकता है, तुम कहते हो कि परमेश्वर तक पहुचने का मार्ग केवल विश्वास है, और कुछ नही, अच्छा, तो मैं कहता हूं कि अच्छे कामों का भी बडा महत्व है, क्योंकि बिना अच्छे कामों के तू प्रमाणित नही कर सकता कि तुझमें विश्वास है या नही, परन्तु तेरे व्यवहार को देख कर कोई भी कह सकता है कि मुझमें विश्वास है।" 19 क्या अब भी तुम्हारे बीच कुछ ऐसे लोग हैं जिनका यह मत है कि केवल विश्वास करना' ही पर्याप्त है ? एक ही परमेश्वर पर विश्वास करना ? अच्छा, स्मरण रख कि दुष्टात्माएं भी यही विश्वास करती हैं—इतनी दृढता के साथ कि भय से थरथराती हैं। 20 अरे मूर्ख ! तू कब सीखेगा कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार काम किए बिना 'विश्वास करना' व्यर्थ है ? जिस विश्वास के परिणामस्वरूप भले कार्य उत्पन्न नही होते, वह वास्तविक विश्वास नही है। 21 क्या तुम्हे याद नही कि हमारा पूर्वज इब्राहीम भी अपने काम के कारण ही धर्मी

ठहराया गया क्योंकि वह परमेश्वर की आज्ञा पालन करने के लिए तैयार था, यद्यपि इस आज्ञा का यह अर्थ था कि यह अपने पुत्र इसहाक को मरने के लिए वेदी पर बलिदान करे ? 22 उसका परमेश्वर पर इतना अधिक विश्वास था कि परमेश्वर जो कुछ उससे कहे वह उसे करने को तैयार था, उसने जो कुछ किया, उसके कामो, उसके अच्छे कार्यों के द्वारा उसका विश्वास पूर्ण हुआ, 23 ऐसा हुआ जैसा कि पवित्रशास्त्र कहता है कि इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और प्रभु ने उसे परमेश्वर की दृष्टि मे धर्मी ठहराया, और यहाँ तक कि वह परमेश्वर का मित्र' कहलाया। 24 इस प्रकार तुमने देखा, कि व्यक्ति जो करता है, और साथ ही जो विश्वास रखता है उसके द्वारा उद्धार पाता है। 25 राहाब वेश्या इसका दूसरा उदाहरण है। उसने जो कुछ किया उसके द्वारा उसका उद्धार हुआ जब उसने उन दूतो को छिपा रखा और उन को दूसरे मार्ग से सकुशल भेज दिया। 26 जैसे देह मे यदि कोई आत्मा न हो तो वह मृतक है, वैसे ही विश्वास भी मृतक है यदि उसका परिणाम भले काम न हो।

3 1, 2 प्रिय भाइयो, दूसरों को उनके दोष बतलाने के लिए बहुत उत्सुक न हो[1], क्योंकि हम सब गलती करते हैं, और जब हम धर्म के शिक्षक ही, जिन्हें अधिक अच्छी तरह जानना चाहिए, गलती करते हैं, तो हमारा दण्ड दूसरो से भी बढ़कर होगा। यदि कोई अपनी जीभ पर नियन्त्रण रखता है, तो यह इस बात का प्रमाण है कि वह हर प्रकार से अपने आप पर पूर्ण नियन्त्रण रख सकता है। 3 हम एक बड़े घोड़े को उसके मुंह मे छोटी लगाम के द्वारा घुमा सकते हैं और जिधर चाहें ले जा सकते हैं। 4 और एक छोटी-सी पतवार द्वारा तेज आधी मे भी जहाज का चालक जहा ले जाना चाहे उसी ओर बड़े जहाज को मोड़ सकता है। 5 इसी प्र[illegible] से जीभ एक छोटा अंग है, परन्तु इससे कि[illegible] भारी विनाश हो सकता है। एक छोटी चिनगारी के द्वारा बड़े वन मे आग लग सक[illegible] है। 6 और जीभ आग की ज्वाला है। य[illegible] दुष्टता से भरी है, और शरीर के सब अगों को विषैला बना देती है। और जीभ में स्वय नरक के द्वारा आग लगी है, और यह हमारे पूरे जीवन को विनाश और विपत्ति की धधकती हुई आग मे बदल सकती है। 7 मनुष्यों ने हर प्रकार के पशु और पक्षी और हर प्रकार के रेंगने वाले जन्तु और मछली को वश मे रखा है और रख सकते हैं, 8 परन्तु कोई मानव जीभ को वश मे नही रख सकता। यह हर समय अपना घातक विष उगलने को तैयार रहती है। 9 कभी यह स्वर्ग मे निवास करने वाले हमारे पिता की स्तुति करती है, और कभी उन व्यक्तियों को श्राप देती है जो परमेश्वर के स्वरूप बनाए गए हैं। 10 और इस प्रकार आशिष और श्राप एक ही मुंह से निकलते है। प्रिय भाइयो, यह निश्चय ही ठीक नही है। 11 क्या किसी पानी के सोते से पहले मीठा तब खारा पानी निकलता है ? 12 क्या तुम अंजीर के वृक्ष से जैतून, या दाखलता से अंजीर तोड सकते हो ? नही, और तुम खारे सोते से मीठा पानी नही निकाल सकते।

13 यदि तुम बुद्धिमान हो तो स्थिर रूप से भलाई का जीवन बिताओ, जिससे कि केवल भले काम ही उत्पन्न हों। और यदि तुम उनके बारे मे डीग न मारो, तब तो तुम सचमुच बुद्धिमान हो। 14 और यदि तुम कड़वाहट और जलन रखते हो और स्वार्थी हो तो कभी बुद्धिमान और अच्छे होने की डीग मत मारो, यह सबसे बुरे प्रकार का झूठ है। 15 क्योंकि जलन और स्वार्थ परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार नही है। ऐसी बातें सांसारिक, शारीरिक और शैतान के द्वारा प्रेरित हैं। 16 क्योंकि जहा कहीं ईर्ष्या और स्वार्थ भरी महत्वकाक्षाएं हैं वहा गड़बड़ी

[1] मूलत "तुममे से बहुत उपदेशक (शिक्षक) न बनें।"

और सब प्रकार की बुराइयां होंगी। 17 परन्तु जो ज्ञान स्वर्ग से आता है वह सबसे पहले पवित्र और शान्त कोमलता से पूर्ण होता है। तब यह शान्तिमय —प्रेमी और अति विनीत होता है। यह दूसरों को विचार विमर्श करने देता है और दूसरों की मान लेने को तैयार रहता है, यह दया और भले कामों से भरपूर होता है। यह सदृश सीधा और सच्चा होता है। 18 और जो मेल करवाने वाले हैं वे शान्ति के बीज बोएंगे और भलाई की कटनी काटेंगे।

4 1 तुममे झगड़े और लड़ाइयां कहा से और किस कारण हो रहे हैं? क्या इस कारण नही कि तुम्हारे भीतर बुरी इच्छाओ का भण्डार है? 2 जो तुम्हारे पास नही उसकी तुम इच्छा करते हो, इसलिए उसे पाने के लिए तुम हत्या करते हो। जो दूसरों के पास है उसकी तुम चाह करते हो, इसलिए उसे उनसे लेने के लिए तुम झगड़ा आरम्भ करते हो। और इस पर भी जो तुम चाहते हो उसके न पाने का कारण यह है कि तुम उसके लिए परमेश्वर से विनती नही करते। 3 और यदि मांगते भी हो तो पाते नही क्योंकि तुम्हारा पूरा उद्देश्य गलत होता है—तुम वही चाहते हो जो तुम्हें सुख पहुंचाता है। 4 तुम अविश्वासयोग्य पत्नी के सदृश हो जो अपने पति के बैरियो से प्रेम रखती है। क्या तुम समझते नही कि परमेश्वर के बैरियों—इस ससार के बुरे सुख साधनो से प्रेम करने से तुम परमेश्वर के बैरी बन जाते हो? मैं इसे फिर कहता हूं, कि यदि तुम्हारा उद्देश्य इस संसार के बुरे सुख सुविधाओ का आनन्द लेना है, तो तुम परमेश्वर के मित्र भी नहीं बन सकते। 5 या तुम्हारे विचार में पवित्रशास्त्र के इस कथन का क्या अर्थ है कि पवित्र आत्मा, जिसे परमेश्वर ने हमारे भीतर रखा है, जलन के साथ हमारी देखभाल करता है? 6 परन्तु ऐसी सब बुरी लालसाओं का विरोध करने के लिए वह हमे अधिक से अधिक शक्ति देता जाता है। जैसा पवित्रशास्त्र मे लिखा है, परमेश्वर दीनों को सामर्थ देता है। परन्तु घमंडियों के विरुद्ध हो जाता है। 7 इसलिए दीन होकर अपने आप परमेश्वर को सौंप दो। शैतान का विरोध करो और वह तुम्हारे पास से भागेगा। 8 और जब तुम परमेश्वर के निकट जाओगे, तो परमेश्वर भी तुम्हारे निकट आएगा। हे पापियो, अपने हाथ धोओ, और अपने हृदयो मे केवल परमेश्वर को बसने दो कि वह उन्हे अपने लिए शुद्ध और सच्चा बनाए। 9 जो गलतियां तुमने की हैं उनके लिए आसू बहने दो। शोकित और सचमुच उदास होओ। हंसी के बदले शोक, और हर्ष के बदले उदासी हो। 10 तब जब तुम प्रभु के सामने अपनी अयोग्यता को जान लोगे, तो वह तुमको ऊंचा उठाएगा, तुम्हें उत्साह दिलाएगा और तुम्हारी सहायता करेगा।

11 प्रिय भाइयो, दूसरे की आलोचना और बुराई न करो। यदि करोगे, तो तुम परमेश्वर की इस व्यवस्था को कि एक दूसरे से प्रेम रखना, गलत ठहराओगे और उसके विरुद्ध लड़ोगे। परन्तु यह निर्णय करना तुम्हारा काम नही है कि व्यवस्था ठीक है या गलत, परन्तु उसकी आज्ञा मानना तुम्हारा काम है। 12 केवल वही जिसने व्यवस्था को बनाया हमारे मध्य उचित न्याय कर सकता है। वही अकेला निर्णय करता है कि हमे बचाए या नष्ट करे। इसलिए दूसरों का न्याय और आलोचना करने का तुम्हारा क्या अधिकार है?

13 तुम लोग जो कहते हो, "आज या कल हम इस शहर को जा रहे हैं, वहा एक वर्ष बिताएंगे और कोई लाभप्रद धन्धा करेंगे, सुनो। 14 तुम कैसे जानते हो कल क्या होने वाला है? क्योंकि तुम्हारे जीवन का समय उतना ही अनिश्चित है जितना सवेरे का कुहरा—अभी तुमने उसे देखा : और शीघ्र ही वह हट गया। 15 तुम्हे कहना तो यह चाहिए, "यदि परमेश्वर की इच्छा हुई, तो हम कल जीते रहेंगे और यह या वह काम करेंगे।" 16 नही तो तुम अपनी

ही योजनाओं की डींग मारते रहोगे, और इस प्रकार का आत्मविश्वास कभी परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करता। 17 यह भी स्मरण रखो, कि यह जानकर भी कि क्या करना ठीक है उसे न करना पाप है।

5 1 हे धनवानो, इधर सुनो, अभी दुःख के साथ रोने और कराहने का समय है उन सब भयानक क्लेशों के कारण जो तुम पर आने वाले हैं। 2 तुम्हारा धन भी अब सड़ता जा रहा है। और तुम्हारे सुन्दर वस्त्र अब केवल कीड़ों के खाए चिथड़ों के समान रह गए हैं। 3 तुम्हारे सोने और चांदी का मूल्य तेजी से गिरता जा रहा है, इस पर भी यह तुम्हारे विरुद्ध साक्षी बनेगा, और तुम्हारे शरीर के मांस को आग के सदृश खा जाएगा। यही तुमने आनेवाले न्याय के दिन में पाने के लिए अपने लिए बटोर रखा है। 4 क्योंकि सुनो? उन मजदूरों की चिल्लाहट सुनो जिनकी मजदूरी तुमने धोखा देकर रख ली है। उनकी पुकार सेनाओं के प्रभु के कानों तक पहुंच चुकी है। 5 तुमने यहां इस पृथ्वी पर मन बहलाते हुए, अपनी हर इच्छा पूरी करते हुए वर्ष बिताए हैं, और अब तुम्हारे मोटे हृदय वध किये जाने के लिए तैयार हैं। 6 तुमने भले व्यक्तियों पर दोष लगाया है और उनको मार डाला है जिनमें तुमसे अपना बचाव करने की कोई सामर्थ नहीं थी।

7 अब, प्रिय भाइयो, तुम जो प्रभु के फिर से लौटने की बाट जोह रहे हो, धीरजवन्त बनो, उस किसान के समान जो शरद ऋतु तक अपनी बहुमूल्य फसल के पकने के लिए ठहरा रहता है। 8 हां, धीरजवन्त बनो। और साहस से काम लो, क्योंकि प्रभु का आना निकट है। 9 हे भाइयो, एक दूसरे पर न कुड़कुड़ाओ। क्या तुम आप भी आलोचना से परे हो? क्योंकि देखो। महान न्यायधीश आने पर है। वह यहां पर आ ही पहुंचा है। (उस ही को जो आलोचना करनी है करने दो) 10 धैर्य के उदाहरण देने के लिए प्रभु के भविष्यद्वक्ताओं पर ध्यान दो। 11 हम जानते हैं कि उस समय उनके प्रति सच्चे रहने के कारण अब वे कितने प्रसन्न हैं, यद्यपि उन्होंने उनके लिए बहुत दुःख सहा। अय्यूब एक उदाहरण है उस व्यक्ति का जिसने दुःख में भी प्रभु पर भरोसा रखना न छोड़ा, उसके अनुभवों से हम देख सकते हैं कि प्रभु के उपाय का किस प्रकार भलाई में ही अन्त हुआ, क्योंकि वह कोमलता और दया से भरपूर है। 12 परन्तु प्रिय भाइयो, सबसे बढ़कर, न तो स्वर्ग की शपथ खाओ न पृथ्वी की और न किसी और वस्तु की, केवल सीधे हां या नहीं कह दो, ताकि तुम पाप न करो और उसके लिए दोषी न ठहरो।

13 क्या कोई तुम्हारे मध्य दुःख में है? उसको इस विषय पर प्रार्थना करते रहना चाहिए। और जिनके पास धन्यवाद देने का कोई कारण हो उनको लगातार प्रभु की स्तुतिगान करते रहना चाहिए। 14 क्या कोई बीमार है? उसे कलीसिया के पासबानों को बुलाना चाहिए और उन्हें उसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए और उसकी चंगाई के लिए प्रभु से बिनती करते हुए उस पर थोड़ा तेल उंडेलना चाहिए। 15 और उनकी प्रार्थना, यदि विश्वास से मांगी गई हो: तो उसे चंगा करेगी क्योंकि प्रभु उसे चंगा कर देगा, और यदि उसकी बीमारी किसी पाप के कारण हुई थी, तो प्रभु उसे क्षमा करेगा। 16 अपने दोष एक दूसरे के प्रति मान लो और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो ताकि तुम चंगे हो सको। धर्मी व्यक्ति की लगन से की गई प्रार्थना में बड़ी शक्ति होती है और उसके अद्भुत परिणाम होते हैं। 17 एलिय्याह भी पूरी रीति से हमारे समान मनुष्य ही था, और तौभी जब उसने लगन से प्रार्थना की कि *पानी न गिरे, तो अगले साढ़े तीन वर्ष तक* पानी नहीं गिरा। 18 तब उसने फिर प्रार्थना की, कि वर्षा हो, और वर्षा हुई और घास हरी

हो गई और पेड़ पौधे फिर उगने लगे।

19, प्रिय भाइयो, यदि कोई परमेश्वर से दूर चला गया हो और प्रभु पर भरोसा न रखता हो, और कोई सत्य को फिर से समझने में उसकी सहायता करे, 20 तो उसको फिर से परमेश्वर के पास लाने वाला व्यक्ति एक भटकते हुए जन को मृत्यु से बचाने वाला और उसके अनेक पापों को क्षमा दिलानेहारा ठहरेगा।

विनीत, याकूब

पतरस की पहिली पत्री

1 1 पतरस, की ओर से जो यीशु मसीह का प्रचारक है। यहूदी मसीहियों के नाम जो यरूशलेम से निकाले गए हैं और पुन्तुस, गलतिया, कप्पदुकिया, आसिया और बिथुनिया में तित्तर बित्तर हो गए हैं। 2 प्रिय मित्रो, परमेश्वर पिता ने तुम्हें बहुत पहले चुन लिया और वह जानता था कि तुम उसकी सन्तान बनोगे। और पवित्र आत्मा तुम्हारे हृदयों में काम करता रहा है, तुम्हें यीशु मसीह के लोहू से शुद्ध करता और तुम्हें इस प्रकार बनाता रहा है कि तुम उसे प्रसन्न करो। परमेश्वर तुम्हें बहुतायत की आशिष दे और तुम्हें सब चिन्ताओं और भय से मुक्त करे।

3 सारी महिमा परमेश्वर की हो, हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता और परमेश्वर की, क्योंकि उस ही की असीम दया से हमें नया जन्म पाने का सौभाग्य मिला है, इसलिए अब हम स्वयं परमेश्वर के घराने के सदस्य हैं। अब हम जीवन की आशा लिए जीवित रहते हैं क्यों कि मसीह मरे हुओं में से जी उठा। 4 और परमेश्वर ने अपनी सन्तानों के लिए अनन्त जीवन का अमूल्य दान सुरक्षित रखा है, वह तुम्हारे लिए स्वर्ग में, पवित्र और शुद्ध रखा गया है जहां न बदल सकता है, 5 और परमेश्वर अपनी महान सामर्थ से, निश्चय ही उसे पाने के लिए तुम्हें वहां सुरक्षित रूप से पहुंचाएगा क्योंकि तुम्हारा विश्वास उस पर है। आने वाले अन्तिम दिन में वह तुम्हारा होगा कि सब देखें। 6 इसलिए वास्तव में आनन्दित होओ। भविष्य में अपूर्व आनन्द है यद्यपि कुछ समय के लिए यहाँ मार्ग दुखमय है। 7 ये परीक्षाएं केवल इसीलिए हैं कि तुम्हारे विश्वास को परखें, यह देखें कि वह दृढ़ और शुद्ध है या नहीं। इसकी परीक्षा उसी प्रकार से ही रही है जिस प्रकार आग सोने की परख करती और उसे शुद्ध करती है—और तुम्हारा विश्वास परमेश्वर के लिए सोने से कहीं अधिक बहुमूल्य है, इसीलिए यदि परीक्षाओं में परखे जाने के बाद भी तुम्हारा विश्वास दृढ़ है तो उसके फिर लौटने के दिन तुम्हें बहुत प्रशंसा, महिमा और आदर मिलेगा। 8 तुम उससे प्रेम रखते हो यद्यपि तुमने उसको कभी देखा तक नहीं है, उसको न देखने पर भी, तुम उस पर भरोसा रखते हो, और अब भी तुम उस अवर्णनीय आनन्द से हर्षित हो जो स्वयं स्वर्ग से आता है। 9 और उस पर विश्वास रखने के लिए तुम्हें जो और भी प्रतिफल मिलेगा वह तुम्हारी आत्माओं का उद्धार होगा। 10 इस उद्धार को भविष्यद्वक्ताओं ने पूरी रीति से नहीं समझा। यद्यपि उसने इसके विषय में लिखा, तो भी इसका अर्थ क्या हो सकता है इस सम्बन्ध में उसके पास बहुत प्रश्न थे। 11

उन्हें जिज्ञासा थी कि उनके भीतर पवित्र आत्मा किस विषय पर बोल रहा है, क्योंकि उसने उन घटनाओं को लिख लेने को कहा जो तब से मसीह के साथ घटी है उसका दुःख उठाना, और उसके बाद की उसकी बड़ी महिमा। और उन्हें आश्चर्य होता था, कि कब और किसके साथ ये घटनायें होंगी। 12 उनको अन्त में बताया गया कि ये घटनाएं उनके जीवन काल में नहीं, परन्तु बहुत वर्षों बाद, तुम्हारे जीवनकाल में होंगी। और अब अन्त में यह शुभ सन्देश स्पष्ट रीति से हम सब को सुनाया गया है इसका प्रचार तक उसी स्वर्ग से भेजे गए पवित्र आत्मा की सामर्थ से हुआ जिसने इनसे बातें की, और यह इतना विचित्र और अनोखा है कि स्वर्ग के दूत तक उसके बारे में जानने की लालसा रखते हैं।

13 इसलिए अब यीशु मसीह के फिर से लौटने पर परमेश्वर की दया की प्रतिक्षा तुम धीरता और बुद्धिमानी से कर सकते हो। । परमेश्वर की आज्ञा मानो क्योंकि तुम उसकी सन्तान हो, अपने पुराने मार्गों में बुराई करते हुए फिर मत फिसल जाओ इसलिए कि मे अच्छा होता तुम इसे जानते हो नहीं। परन्तु अपने हर काम में पवित्र बनो, जिस ार प्रभु पवित्र है, जिसने तुम्हें अपना पुत्र के लिए बुलाया है। 16 उसने आप ही । है, "तुम्हें पवित्र बनना है, क्योंकि मैं त्र हूं।" 17 और स्मरण रखो कि स्वर्ग मे । वाला तुम्हारा पिता जिससे तुम प्रार्थना । हो, न्याय के समय किसी का पक्ष नहीं ा, वह तुम्हारे सब कामों के लिए तुम्हारा मिद्धता से करेगा, इसलिए अब से लेकर मे पहुंचने तक आदर के साथ उसका भय । हुए कार्य करो। 18 परमेश्वर ने स्वर्ग े के उस असम्भव मार्ग से जिस पर तुम्हारे ादों ने चलने का प्रयत्न किया, तुम्हें के लिए दाम दिया, और उसने वह दाम चाँदी से नहीं दिया जैसा तुम अच्छी रीति से जानते हो। 19 परन्तु उसने परमेश्वर के निष्पाप, निष्कलंक मेम्ने मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा तुम्हारे लिए दाम दिया। 20 परमेश्वर ने उसका चुनाव इसी अभिप्राय से संसार की उत्पत्ति से पहले किया, परन्तु केवल इन अन्तिम दिनों में ही, तुम्हारे लिए आशिष होकर वह लोगों के सामने प्रगट किया गया। 21 इस कारण, तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर हो सकता है जिसने मसीह को मृतकों में से जिलाया और उसको बड़ी महिमा दी। अब तुम्हारा विश्वास और तुम्हारी आशा अकेले उस ही पर आश्रित हो सकती है। 22 अब तुम हर एक से सच्चा प्रेम रख सकते हो, क्योंकि जब तुमने अपने उद्धार के लिए मसीह पर विश्वास किया तब तुम्हारे मन स्वार्थ और घृणा से शुद्ध किए गए, इसलिए ध्यान दो कि तुम अपने पूरे मन से एक दूसरे से सच्चा प्रेम रखो। 23 क्योंकि तुम्हें नया जीवन मिला है जो तुम्हें तुम्हारे माता पिता से नहीं मिला, क्योंकि जो जीवन उन्होंने तुम्हें दिया वह मिट जाएगा। यह नया जीवन सदाकाल तक बना रहेगा, क्योंकि यह मसीह की ओर से आता है जो मनुष्यों के लिए परमेश्वर का सदा जीवता सन्देश है। 24 हां, जिस प्रकार घास सूख कर मुरझा जाती है उसी प्रकार हमारा यह स्वाभाविक जीवन मुरझा जाएगा। हमारा सारा बड़प्पन फूल के समान है जो मुरझा कर झड़ जाता है। 25 परन्तु प्रभु का वचन सदाकाल तक बना रहेगा। और उसका सन्देश वह शुभसमाचार है जिसका प्रचार तुम तक किया गया है।

2 1 इसलिए अपनी घृणा की भावनाएं छोड़ दो। झूठे अच्छे होने का ढोंग मत करो। कपट और ईर्ष्या और दूसरों के पीठ पीछे बुराई करना छोड़ दो। 2, 3 अब जब तुमने जान लिया है कि प्रभु तुम्हारे प्रति कितना दयालु रहा है, तो तुम भी सब बुराई, छल, जलन और कपट दूर करो। अपने उद्धार

को परम सीमा तक बढ़ने के इच्छुक बनो, इसके लिए उसी प्रकार रोओ जैसे बच्चा अपने दूध के लिए रोता है।[1] 4 मसीह के समीप आओ, जो चट्टान की जीवित नेव है जिस पर परमेश्वर घर बनाता है यद्यपि मनुष्यों ने तो उसको तुच्छ ठहराया है, तो भी वह परमेश्वर के लिए अति बहुमूल्य है जिसने उसको दूसरों से बढ़कर चुना है। 5 और अब तुम परमेश्वर के घर बनाने में काम आने योग्य जीवते पत्थर बन चुके हो। इससे भी अधिक तुम उसके पवित्र याजक हो, इसलिए उसके निकट आओ—(तुम जो यीशु मसीह के कारण उनके ग्रहण योग्य हो)। और परमेश्वर को वे ही भेंट चढ़ाओ जिनसे वह प्रसन्न होता है। 6 जैसे पवित्रशास्त्र में लिखा हुआ है, "देख, मैं मसीह को भेज रहा हूँ कि वह मेरी कलीसिया का सावधानी से चुना हुआ, कोने का बहुमूल्य पत्थर बन जाए, और जितने उस पर विश्वास करेंगे उनको मैं कभी निराश नहीं करूंगा।" 7 हां, वह तुम्हारे लिए, जो उस पर विश्वास रखते हो बहुत बहुमूल्य है, और उनके लिए जो उसको तुच्छ ठहराते हैं,—" वही पत्थर जिसे घर बनाने वालों ने तुच्छ जाना कोने का पत्थर बन गया, जो घर का सबसे अधिक आदर पाने वाला और महत्वपूर्ण हिस्सा है।" 8 और पवित्रशास्त्र में यह भी लिखा है, "वही ऐसा पत्थर है जिस पर कई लोग ठोकर खाएंगे, और ऐसी चट्टान है जिसके कारण वे गिर जाएंगे। वे ठोकर इसलिए खाएंगे क्योंकि वे परमेश्वर के वचन को नहीं सुनेंगे, न ही उसकी आज्ञा मानेंगे, और इसीलिए यह दण्ड उन पर अवश्य पड़ेगा—कि वे गिर जाएंगे 9 परन्तु तुम इस प्रकार के नहीं हो, क्योंकि तुम स्वयं परमेश्वर के द्वारा चुने गए हो—तुम राजा के याजक हो, तुम पवित्र और शुद्ध हो, तुम परमेश्वर के निज लोग हो—यह सब इसलिए है ताकि तुम दूसरों को दर्शा सको कि परमेश्वर ने किस प्रकार अंधकार में से तुम्हें अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया। 10 किसी समय तुम कुछ भी नहीं थे अब तुम परमेश्वर के निज लोग हो किसी समय तुम परमेश्वर की दया के विषय में बहुत थोड़ा जानते थे, अब तुम्हारे जीवन ही उसके द्वारा बदल गए हैं।

11 प्रिय भाइयो, तुम यहाँ केवल यात्री हो। इसलिए कि तुम्हारा वास्तविक घर स्वर्ग में है, मैं तुमसे विनती करता हूं कि तुम इस संसार के सब बुरे सुख विलासों से दूर रहो, वे तुम्हारे लिए नहीं हैं, क्योंकि वे तुम्हारे मन ही से युद्ध करते हैं। 12 उद्धार न पाए हुए अपने पड़ोसियों के मध्य तुम किस प्रकार का व्यवहार करते हो, सावधान। क्योंकि जब यद्यपि वे तुम पर सन्देह करें और तुम्हारे विरुद्ध बोलें, तो भी मसीह के लौटने पर अन्त में वे तुम्हारे भले कामों के लिए परमेश्वर की प्रशंसा करेंगे।

13 प्रभु के लिए, अपनी सरकार का हर कानून मानो : राजा का जो राज्य का अगुवा है, 14 और राजा के अफसरों का, क्योंकि उन्होंने उनको बुरा करने वालों को दण्ड देने और भला करने वालों की प्रशंसा करने के लिए भेजा है। 15 यह परमेश्वर की इच्छा है कि तुम्हारे भले जीवन से वे लोग चुप हो जाएं जो मूर्खतावश सुसमाचार को धिक्कारते हैं यह न जानते हुए कि वह उनके लिए क्या कर सकता है, न ही इसका अनुभव करते हुए कि उसकी सामर्थ कितनी अधिक है। 16 तुम व्यवस्था से स्वतन्त्र हो, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि तुम बुरा करने के लिए स्वतन्त्र हो। उनके समान जीवन बिताओ जो हर समय केवल परमेश्वर की ही इच्छा पूरी करने के

[1] इसकी दूसरी व्याख्या इस प्रकार भी हो सकती है : "यदि तुमने प्रभु की भलाई और दया का स्वाद चख लिया है, तो और अधिक के लिए रोओ, जैसे बालक दूध के लिए रोता है। परमेश्वर के वचन को खाओ—उसे पढ़ो, उस पर सोचो—और प्रभु में बलवन्त बनो और उद्धार पाओ।

लिए स्वतन्त्र हैं। 17 हर एक का आदर करो। सब स्थानों के मसीहियों से प्रेम रखो। परमेश्वर का भय मानो और सरकार का आदर करो।

18 नौकरो, तुम्हें अपने स्वामियों का आदर करना चाहिए और वे तुमसे जो करने को कहें करना चाहिए—न केवल तब ही जब वह दयालु हैं परन्तु उस समय भी यदि वे कठोर और निर्दयी हों। 19 यदि तुम भला करने के कारण दण्ड पाते हो तो प्रभु की स्तुति करो। 20 हाँ, यह अवश्य है कि यदि बुरा करने के कारण तुम्हें मार पड़ती है तो उस समय धीरज धरने से तुम्हारी कोई बड़ाई नहीं, परन्तु यदि तुम भला करो और उसके लिए दु:ख उठाओ, और मार खाओ तो परमेश्वर को बहुत प्रसन्नता होती है। 21 यह सब दु:ख भी उस काम का ही एक भाग है जिसे परमेश्वर ने तुम्हें दिया है। मसीह जिसने तुम्हारे लिए दु:ख सहा, तुम्हारा आदर्श है। उसके मार्ग पर चलो। 22 उसने कभी पाप नहीं किया, कभी कोई झूठ नहीं बोला, 23 अपमान सहने पर उसने कभी पलटकर नहीं कहा, दु:ख सहते समय उसने कभी बदला लेने की धमकी नहीं दी। 24 जब वह क्रूस पर मरा, तो उसने आप ही हमारे पापों का बोझ अपनी निज देह पर उठा लिया ताकि हम भी पाप के लिए मर जाए और अब से भला जीवन बिताएं। क्योंकि उसके मार खाने से हम चंगे हो गए हैं। 25 भेड़ों की नाई तुम परमेश्वर से दूर भटक गये थे, परन्तु अब तुम अपने चरवाहे अपनी आत्माओं के रखवाले के पास फिर लौट गए हो जो तुम्हें सब आक्रमण से बचाता है।

3 1, 2 हे पत्नियो, अपने अपने पति के विचारों में सहयोग दो, क्योंकि तब जब प्रभु के बारे में उनसे बातचीत करो तब यद्यपि वे सुनने से इन्कार करें, तौभी वे तुम्हारे सम्मानजनक, और पवित्र व्यवहार के द्वारा जीते जाएंगे। तुम्हारे वचनों की अपेक्षा तुम्हारे धार्मिक जीवन का प्रभाव उन पर अधिक पड़ेगा। 3 बाहरी सुन्दरता की चिन्ता न करो जो गहनों, या सुन्दर वस्त्रों, या बालों के संवारने पर निर्भर है। 4 अन्दर, अपने हृदयों में सुन्दर बनो और शान्त आत्मा की अन्त तक बनी रहने वाली मनोहरता के लिए सुन्दर बनो, जो परमेश्वर की दृष्टि में बहुत बहुमूल्य है। 5 इस प्रकार की सुन्दरता प्राचीन समयों की भक्त स्त्रियों में देखी जाती थी, जो परमेश्वर पर विश्वास रखती और अपने अपने पति के विचारों में सहयोग देती थीं। 6 उदाहरण के लिए, सारा अपने पति इब्राहीम को घर का अगुवा समझकर उसका आदर करती थी और उसकी आज्ञा मानती थी। और यदि तुम भी वैसा ही करो, तो तुम अच्छी बेटियों के समान उसके कदमों पर चलने वाली बनोगी और वही करोगी जो उचित है, तब तुम्हें भी (अपने पतियों को दु:खित करके डरना नहीं पड़ेगा)।

7 तुम पतियों को भी अपनी पत्नियों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए और निर्बल समझकर उनका सम्मान करते हुए, उनके प्रति सावधान रहना चाहिए। स्मरण रखो कि परमेश्वर की आशिषों को ग्रहण करने में तुम और तुम्हारी पत्नियाँ साथी हो, और यदि तुम जैसा उचित है वैसा व्यवहार उसके साथ नहीं करते, तो तुम्हारी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं मिलेगा।

8 और अब यह मैं सबके लिए लिखता हूं: तुम्हें एक बड़े आनन्दित घराने के समान एक दूसरे के प्रति सहानुभूति से भरे हुए होना चाहिए और कोमल हृदयों और नम्र मनों से परस्पर प्रेम रखना चाहिए। 9 बुराई का का बदला बुराई से न दो। जो तुमसे बुरे शब्दों में बोले उनसे पलटकर बुरे शब्दों में न बोलो। परन्तु इसके स्थान पर, उनके लिए प्रार्थना करो कि परमेश्वर उनकी सहायता करे। क्योंकि हमें एक दूसरे के प्रति दयालु होना है, और परमेश्वर इसके लिए हमें आशिष देगा। 10 यदि तुम हर्ष का, अच्छा जीवन चाहते हो,

तो अपनी जीभ को वश में रखो, और झूठ बोलने से अपने होठों की रक्षा करो। 11 बुराई से फिर जाओ और भलाई करो। शान्ति से रहने का प्रयत्न करो चाहे इसके लिए तुम्हें कठिन परिश्रम करना हो। 12 क्योंकि प्रभु अपनी सन्तानों को देख रहा है, उनकी प्रार्थनाओं को सुन रहा है, परन्तु बुराई करने वालो के विमुख है। 13 साधारणतः भलाई करना चाहने पर कोई तुम्हें चोट नहीं पहुँचाएगा। 14 परन्तु यदि वे पहुंचाए भी तो तुम भाग्यवान हो, क्योंकि प्रभु इसका प्रतिफल तुम्हें देगा। 15 शान्त रीति से अपने लिए अपने प्रभु मसीह पर विश्वास रखो, और यदि कोई पूछे कि तुम जो विश्वास रखते हो उसका कारण क्या है, तो उसे बताने के लिए तैयार रहो, और ऐसा दीन होकर आदर के साथ करो। 16 जो उचित है वही करो, तब यदि लोग तुम्हारे विरुद्ध बोलें, तुम्हे बुरे नामो से पुकारें, तब उन्हे अपने आप पर लज्जा आएगी कि उन्होंने तुम पर झूठा दोष लगाया है जबकि तुमने केवल वही किया है जो उचित है। 17 स्मरण रखो, यदि परमेश्वर की इच्छा है तुम दुःख उठाओ, तो गलत काम करने की अपेक्षा अच्छा काम करके दुःख उठाना अधिक उत्तम है। 18 मसीह ने भी दुख उठाया। वह हम सब दोषी पापियों के पाप के लिए एक बार मर गया था, यद्यपि वह स्वयं निर्दोष था, ताकि हमको परमेश्वर के पास सुरक्षित पहुंचा दे। परन्तु यद्यपि उसकी देह मर गई, तौभी उसकी आत्मा जीवित रही, 19 और आत्मा मे ही उसने कैद मे आत्माओ से भेंट की और उनको प्रचार किया। 20 उन लोगो की आत्माओ को जिन्होंने बहुत समय पहिले नूह के युग मे सुनने से इन्कार किया था, यद्यपि जब नूह जहाज बना रहा था तब वह उसके लिए धीरज के साथ ठहरा रहा। तौभी केवल आठ ही व्यक्ति उस भयंकर बाढ मे डूब मरने से बचे। 21 (यही है जिसका चित्र हमारे लिए बपतिस्मे मे है, बपतिस्मे मे हम प्रगट करते हैं कि मसीह के फिर से जी उठने के द्वारा[1] हम मृत्यु और विनाश से बचाए गए हैं: इसलिए नही कि हमारी देह जल के द्वारा शुद्ध की गई है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश मे हो जाने का अर्थ है 22 और अब मसीह स्वर्ग मे, परमेश्वर पिता के दाहिने ओर प्रतिष्ठा के स्थान पर बैठा है, और स्वर्ग के सब दूत और शक्तिया उसके सामने दण्डवत करती और उसकी आज्ञा मानती है।

4 1 इसलिए कि मसीह ने दुख उठाया और पीडा सही, तुम्हारी भी ऐसी ही धारणा होनी चाहिए, तुम्हे भी दुख उठाने को तैयार होना चाहिए। क्योंकि स्मरण रखो, जब तुम्हारी देह दुःख उठाती है, तो पाप अपनी शक्ति खो देता है, 2 और तुम अपना बाकी जीवन बुरी इच्छाओं का पीछा करते हुए नही बिताते फिरोगे, परन्तु परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए उत्सुक रहोगे। 3 इतना ही बहुत हो चुका जो तुमने बीते समयो मे इन बुराइयों में जीवन बिताया जिनसे अधर्मियो को आनन्द होता है—व्यभिचार, वासना, मतवालापन, रागरंग, पियक्कडपन, और मूर्तिपूजा और दूसरे भयानक पाप[1]। 4 हाँ तुम्हारे पुराने मित्रों को अवश्य आश्चर्य होगा जब तुम उनके से बुरे कामों मे फिर कभी उत्सुकता मे उनका साथ न दोगे, और वे तिरस्कार और घृणा से तुम पर हँसेंगे। 5 परन्तु केवल याद रखना कि उन्हे सब जीवितो और मृतको के न्यायधीश का सामना करना है, जिस प्रकार का जीवन उन्होंने बिताया है उसके लिए उन्हे दण्ड मिलेगा। 6 इसीलिए शुभ सन्देश का प्रचार उन लोगों तक किया गया है जो मृतक थे—जलप्रलय के द्वारा मारे गए थे[2]—यद्यपि उनकी देह को मृत्यु दण्ड मिला,

[1] या, "बपतिस्मा, जो इसी के अनुरूप है, अब पुनरुत्थान के द्वारा तुम्हें बचाता है।"

[1] मूलत. "घृणित मूर्तिपूजा।" [2] यही आशय है। 1 पतरस 3 : 19, 20 पढिए।

तौभी वे आत्माओं में अब भी जीवित रह सकते थे जिस प्रकार परमेश्वर जीता है।

7 विश्व का अन्त शीघ्र निकट आ रहा है। इसलिए लगनशील बनो और प्रार्थना में सचेत रहो। 8 सबसे महत्व की बात यह है, एक दूसरे के प्रति सच्चा प्रेम दर्शाना जारी रखो, क्योंकि प्रेम तुम्हारे अनेक दोषों को छिपा लेता है[3]। 9 आनन्द के साथ एक दूसरे की पहुनाई करो। 10 परमेश्वर ने तुममें से हरएक को कुछ विशेष योग्यताएं दी हैं, इनका उपयोग निश्चय ही एक दूसरे की सहायता के लिए करो, जिससे परमेश्वर की अनेक प्रकार की आशिषें दूसरों तक पहुंचा सको। 11 क्या तुम प्रचार करने के लिए बुलाए गए हो? तो इस प्रकार प्रचार करो मानो स्वयं परमेश्वर तुम्हारे द्वारा बोल रहा हो। क्या तुम दूसरों की सहायता करने के लिए बुलाए गए हो? तो सारी शक्ति और सामर्थ्य से करो जो परमेश्वर से मिली है, जिससे यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा और सामर्थ युग-युग तक उन ही की हो। आमीन।

12 प्रिय मित्रो जब तुम भविष्य में भयानक क्लेश में पड़ो तो न घबराओ न आश्चर्य करो, क्योंकि यह कोई अनोखी, असामान्य बात नहीं है जो तुम्हारे साथ होने जा रही है। 13 परन्तु इसके बदले, सचमुच आनन्दित होओ —क्योंकि इन क्लेशों से तुम मसीह के दुखों के साथी बनोगे, और बाद में तुम्हें उस आनेवाले दिन में जब उसकी महिमा प्रगट की जाएगी उसमें सहयोगी होने का अद्भुत आनन्द मिलेगा। 14 मसीही होने के कारण यदि तुम्हें स्राप दिया जाए और तुम्हारा अपमान हो तो आनन्दित होओ, क्योंकि ऐसा होने पर परमेश्वर का आत्मा बड़ी महिमा के साथ तुम पर उतरेगा[4]। 15 तुम्हारी चर्चा मुझे सुनाई न दे कि तुम हत्या करने या चोरी करने या आपत्ति खड़ी करने या दूसरों के काम में सदा बाधा डालने और दूसरे लोगों की बातों में गुप्त रूप से हाथ डालने के कारण दुख उठा रहे हो। 16 परन्तु मसीही होने के कारण दुःख उठाना कोई लज्जा की बात नहीं है। मसीह के घराने का होने और उसके अद्भुत नाम से कहलाए जाने के सौभाग्य के लिए परमेश्वर की प्रशंसा हो। 17 क्योंकि न्याय का समय आ पहुंचा है और इसका आरम्भ पहले परमेश्वर की निज सन्तानों से होना है। और यदि हम मसीहियों तक का न्याय होना है, तो फिर जिन्होंने कभी प्रभु पर विश्वास नहीं किया उनका भाग कितना भयानक होगा? 18 जब धर्मी ही कठिनाई से उद्धार पा रहे हैं, तो फिर अधर्मियों का क्या होगा? 19 इसलिए यदि तुम परमेश्वर की इच्छानुसार दुख सह रहे हो, तो जो उचित है उसे करते रहो और अपने लिए परमेश्वर पर भरोसा रखो जिसने तुम्हें बनाया, क्योंकि वह तुम्हें कभी निराश नहीं करेगा।

5 1 और अब, कलीसिया के पासबानों के लिए मैं लिखता हूं। मैं भी एक पासबान हूं, मैंने अपनी निज आंखों से मसीह को क्रूस पर मरते देखा, और उसके लौटने पर मैं भी उसकी महिमा और प्रतिष्ठा में सहभागी होऊंगा। साथी पासबानो, यह मेरी तुमसे विनय है: 2 परमेश्वर के झुण्ड को खिलाओ, कुड़कुड़ाते हुए नहीं परन्तु सहर्ष उसकी देखभाल करो, इसलिए नहीं कि तुम्हें उससे धन प्राप्त होता है, परन्तु इसलिए कि तुम परमेश्वर की सेवकाई करने को लालायित हो। 3 निर्दयी और अन्यायी अधिकारी न बनो, परन्तु अपने अच्छे उदाहरण के द्वारा उनकी अगुवाई करो, 4 और जब प्रमुख चरवाहा आएगा, तो तुम्हारा प्रतिफल यह होगा कि तुम उसकी महिमा और प्रतिष्ठा में अनन्त काल तक सहभागी होगे। 5 तुम नौजवानो, उनकी अगुवाई पर चलो जो उम्र में तुमसे बड़े

---

[3] या, "प्रेम एक दूसरे के अनेक दोषों को देखकर भी अनदेखा करता है।" [4] या, "परमेश्वर के आत्मा की महिमा तुममें दिखाई देती है।

हैं, और तुम सब दीन आत्मा के लिए एक दूसरे की सेवा करो, क्योंकि परमेश्वर, दीन व्यक्तियों को विशेष आशिषें देता है, परन्तु उनके विरुद्ध हो जाता है जो घमण्डी हैं। 6 यदि तुम अपने आप को परमेश्वर के सामर्थी हाथों में दीन करो, तो वह अपने उचित समय में तुमको ऊंचा उठाएगा। 7 अपनी सारी चिन्ताएं उस ही पर छोड़ दो, क्योंकि वह सदा तुम्हारी चिन्ता करता रहता है। 8 सावधान रहो, अपने महान शत्रु शैतान के आक्रमणों के लिए जागृत रहो। वह भूखे, गरजने वाले सिंह की नाई छिपा घात लगाए घूमता है, इस ताक में कि कब किसे पकड़ खाए। 9 जब वह आक्रमण करे तो स्थिर खड़े रहो। प्रभु पर विश्वास रखो, और स्मरण करो कि पूरे संसार के दूसरे मसीही भी इन दुःखों को उठा रहे हैं। 10 तुम्हारे थोड़ी देर दुःख सह लेने के बाद हमारा परमेश्वर जो मसीह में होकर कृपा से पूर्ण है, अपनी अनन्त महिमा तुम्हें देगा। वह आप ही आकर तुम्हें उठा लेगा और दृढ़ करेगा, और पहले से भी अधिक तुम्हें बलवन्त बनाएगा। 11 सब वस्तुओं पर उस ही का अधिकार युगानुयुग बना रहे। आमीन।

12 मैं यह पत्र तुम्हें सिलवानस के हाथ से भेज रहा हूं, जो मेरे विचार में अत्यन्त विश्वास-योग्य भाई है। मुझे आशा है कि इस पत्र के द्वारा मैंने तुम्हें उत्साहित किया है क्योंकि मैंने तुम्हें सच-सच लिख दिया है कि परमेश्वर किस प्रकार आशिष देता है। जो कुछ मैंने तुम्हें यहां लिखा है उसमें तुम्हें सहायता मिलनी चाहिए कि तुम उसके प्रेम में स्थिर बने रहो। 13 यह रोम की कलीसिया[1]—वह प्रभु में तुम्हारी बहिन है तुम्हें अपना नमस्कार भेजती है, वैसे ही मेरा पुत्र मरकुस भी तुम्हें नमस्कार देता है। 14 एक दूसरे से मसीही प्रेम से हाथ मिलाओ। तुम सब को जो मसीह में हो शान्ति मिले।

विनीत, पतरस

पतरस की दूसरी पत्री

1 1 शमौन पतरस, की ओर से जो यीशु मसीह का दास और प्रचारक है। तुम सब जो हम जैसा विश्वास रखते हो। जिस विश्वास के विषय में मैं बोलता हूं वह उस प्रकार का है जिसे हमारा परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह हमें देते हैं! यह कितना बहुमूल्य है और वह कितने निष्पक्ष और भले हैं कि उन्होंने हममें से हरएक को यही विश्वास दिया है। 2 क्या तुम परमेश्वर की दया और शान्ति अधिक से अधिक चाहते हो? तो फिर तुम उसको उत्तम से उत्तम रीति से पहचानना सीखो। 3 क्योंकि जब तुम उसको उत्तम रीति से पहचानोगे, तब वह महान सामर्थ से तुम्हें वह सब कुछ देगा जो तुम्हें अच्छा जीवन बिताने के लिए आवश्यक होगा: वह हमें अपनी निज महिमा और अपनी निज अच्छाई में सहभागी करता है। 4 और

---

[1] मूलत "जो बाबुल में तुम्हारी नाई चुने हुए लोग हैं।" परन्तु बाबुल रोम का उपनाम था, और जो (मूलत — "वह" स्त्रीलिंग) से तात्पर्य बहुतों के विचार में पतरस की पत्नी से है जिसका संकेत मत्ती 8 . 14, 1 कुरिन्थियों 9 : 5 में किया गया है। दूसरों का विश्वास है कि इसे इस तरह पढ़ना चाहिए, "यहां बाबुल की तुम्हारी बहिन कलीसिया, तुम्हें नमस्कार देती है, और मेरा पुत्र मरकुस भी नमस्कार देता है।

तौभी वे आत्माओं में अब भी जीवित रह सकते थे जिस प्रकार परमेश्वर जीता है।

7 विश्व का अन्त शीघ्र निकट आ रहा है। इसलिए सगनशील बनो और प्रार्थना में सचेत रहो। 8 सबसे महत्व की बात यह है, एक दूसरे के प्रति सच्चा प्रेम दर्शाना जारी रखो, क्योंकि प्रेम तुम्हारे अनेक दोषों को छिपा लेता है[a]। 9 आनन्द के साथ एक दूसरे की पहुनाई करो। 10 परमेश्वर ने तुममे से हरएक को कुछ विशेष योग्यताएं दी हैं, इनका उपयोग निश्चय ही एक दूसरे की सहायता के लिए करो, जिससे परमेश्वर की अनेक प्रकार की आशिषें दूसरों तक पहुंचा सको। 11 क्या तुम प्रचार करने के लिए बुलाए गए हो? तो इस प्रकार प्रचार करो मानो स्वयं परमेश्वर तुम्हारे द्वारा बोल रहा हो। क्या तुम दूसरो की सहायता करने के लिए बुलाए गए हो? तो सारी शक्ति और सामर्थ से करो जो परमेश्वर से मिली है, जिससे यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा और सामर्थ युग-युग तक उन ही की हो। आमीन।

12 प्रिय मित्रो जब तुम भविष्य में भयानक क्लेश मे पड़ो तो न घबराओ न आश्चर्य करो, क्योंकि यह कोई अनोखी, असामान्य बात नही है जो तुम्हारे साथ होने जा रही है। 13 परन्तु इसके बदले, सचमुच आनन्दित होओ —क्योंकि इन क्लेशो से तुम मसीह के दुःखों के साथी बनोगे, और बाद में तुम्हें उस आनेवाले दिन मे जब उसकी महिमा प्रगट की जाएगी उसमे सहयोगी होने का अद्भुत आनन्द मिलेगा। 14 मसीही होने के कारण यदि तुम्हे स्राप दिया जाए और तुम्हारा अपमान हो तो आनन्दित होओ, क्योंकि ऐसा होने पर परमेश्वर का आत्मा बड़ी महिमा के साथ तुम पर उतरेगा[b]। 15 तुम्हारी चर्चा मुझे सुनाई न दे कि तुम हत्या करने या चोरी करने या आपत्ति खड़ी करने या दूसरों के काम में सदा बाधा डालने और दूसरे लोगों की बातों में गुप्त रूप से हाथ डालने के कारण दुःख उठा रहे हो। 16 परन्तु मसीही होने के कारण दुःख उठाना कोई लज्जा की बात नही है। मसीह के घराने का होने और उसके अद्भुत नाम से कहलाए जाने के सौभाग्य के लिए परमेश्वर की प्रशंसा हो। 17 क्योंकि न्याय का समय आ पहुंचा है और इसका आरम्भ पहले परमेश्वर की निज सन्तानों से होना है। और यदि हम मसीहियों तक का न्याय होना है, तो फिर जिन्होंने कभी प्रभु पर विश्वास नही किया उनका भाग कितना भयानक होगा? 18 जब धर्मी ही कठिनाई से उद्धार पा रहे हैं, तो फिर अधर्मियों का क्या होगा? 19 इसलिए यदि तुम परमेश्वर की इच्छानुसार दुःख सह रहे हो, तो जो उचित है उसे करते रहो और अपने लिए परमेश्वर पर भरोसा रखो जिसने तुम्हे बनाया, क्योंकि वह तुम्हें कभी निराश नही करेगा।

5 1 और अब, कलीसिया के पासबानों के लिए मैं लिखता हूं। मैं भी एक पासबान हू, मैंने अपनी निज आखो से मसीह को क्रूस पर मरते देखा, और उसके लौटने पर मैं भी उसकी महिमा और प्रतिष्ठा में सहभागी होऊंगा। साथी पासबानो, यह मेरी तुमसे विनय है: 2 परमेश्वर के झुण्ड को खिलाओ, कुड़कुड़ाते हुए नहीं परन्तु सहर्ष उसकी देखभाल करो, इसलिए नही कि तुम्हें उससे धन प्राप्त होता है, परन्तु इसलिए कि तुम परमेश्वर की सेवकाई करने को लालायित हो। 3 निर्दयी और अन्यायी अधिकारी न बनो, परन्तु अपने अच्छे उदाहरण के द्वारा उनकी अगुवाई करो, 4 और जब प्रमुख चरवाहा आएगा, तो तुम्हारा प्रतिफल यह होगा कि तुम उसकी महिमा और प्रतिष्ठा में अनन्त काल तक सहभागी होगे। 5 तुम नौजवानो, उनकी अगुवाई पर चलो जो उम्र मे तुमसे बड़े

[a] या, "प्रेम एक दूसरे के अनेक दोषो को देखकर भी अनदेखा करता है।" [b] या, "परमेश्वर के आत्मा की महिमा तुममे दिखाई देती है।"

हैं, और तुम सब दीन आत्मा के लिए एक दूसरे की सेवा करो, क्योंकि परमेश्वर, दीन व्यक्तियो को विशेष आशिषें देता है, परन्तु उनके विरुद्ध हो जाता है जो घमण्डी हैं। 6 यदि तुम अपने आप को परमेश्वर के सामर्थी हाथो मे दीन करो, तो वह अपने उचित समय में तुमको ऊंचा उठाएगा। 7 अपनी सारी चिन्ताएं उस ही पर छोड दो, क्योंकि वह सदा तुम्हारी चिन्ता करता रहता है। 8 सावधान रहो, अपने महान शत्रु शैतान के आक्रमणो के लिए जागृत रहो। वह भूखे, गरजने वाले सिंह की नाई छिपा घात लगाए घूमता है, इस ताक मे कि कब किसे पकड खाए। 9 जब वह आक्रमण करे तो स्थिर खडे रहो। प्रभु पर विश्वास रखो, और स्मरण करो कि पूरे ससार के दूसरे मसीही भी इन दुःखो को उठा रहे हैं। 10 तुम्हारे थोडी देर दुःख सह लेने के बाद हमारा परमेश्वर जो मसीह मे होकर कृपा से पूर्ण है, अपनी अनन्त महिमा तुम्हे देगा। वह आप ही आकर तुम्हे उठा लेगा और दृढ करेगा, और पहले से भी अधिक तुम्हे बलवन्त बनाएगा। 11 सब वस्तुओ पर उस ही का अधिकार युगानुयुग बना रहे। आमीन।

12 मैं यह पत्र तुम्हे सिलवानस के हाथ से भेज रहा हूं, जो मेरे विचार मे अत्यन्त विश्वास-योग्य भाई है। मुझे आशा है कि इस पत्र के द्वारा मैंने तुम्हे उत्साहित किया है क्योकि मैंने तुम्हे सच-सच लिख दिया है कि परमेश्वर किस प्रकार आशिष देता है। जो कुछ मैंने तुम्हे यहा लिखा है उसमे तुम्हे सहायता मिलनी चाहिए कि तुम उसके प्रेम मे स्थिर बने रहो। 13 यह रोम की कलीसिया[1]—वह प्रभु मे तुम्हारी बहिन है तुम्हे अपना नमस्कार भेजती है, वैसे ही मेरा पुत्र मरकुस भी तुम्हे नमस्कार देता है। 14 एक दूसरे से मसीही प्रेम से हाथ मिलाओ। तुम सब को जो मसीह मे हो शान्ति मिले।

विनीत, पतरस

पतरस की दूसरी पत्री

1 1 शमौन पतरस, की ओर से जो यीशु मसीह का दास और प्रचारक है। तुम सब जो हम जैसा विश्वास रखते हो। जिस विश्वास के विषय मे मैं बोलता हू वह उस प्रकार का है जिसे हमारा परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह हमे देते हैं ! यह कितना बहुमूल्य है और वह कितने निष्पक्ष और भले है कि उन्होने हममे से हरएक को यही विश्वास दिया है। 2 क्या तुम परमेश्वर की दया और शान्ति अधिक से अधिक चाहते हो ? तो फिर तुम उसको उत्तम मे उत्तम रीति से पहचानना सीखो। 3 क्योकि जब तुम उसको उत्तम रीति से पहचानोगे, तब वह महान सामर्थ से तुम्हे वह सब कुछ देगा जो तुम्हे अच्छा जीवन बिताने के लिए आवश्यक होगा : वह हमे अपनी निज महिमा और अपनी निज अच्छाई मे सहभागी करता है। 4 और

---

[1] मूलत "जो बाबुल मे तुम्हारी नाई चुने हुए लोग हैं।" परन्तु बाबुल रोम का उपनाम था, और जो (मूलत — "वह" स्त्रीलिंग) से तात्पर्य बहुतो के विचार में पतरस की पत्नी मे है जिसका सकेत मत्ती 8 : 14, 1 कुरिन्थियों 9 : 5 मे किया गया है। दूसरो का विश्वास है कि इसे इस तरह पढ़ना चाहिए, "यहां बाबुल की तुम्हारी बहिन कलीसिया, तुम्हें नमस्कार देती है, और मेरा पुत्र मरकुस भी नमस्कार देता है।

उमी महान सामर्थ के द्वारा उसने हमको बहुतायत की सब दूसरी अद्भुत आशिषे दी हैं जिनकी प्रतिज्ञा उसने हमसे की थी, उदाहरण के लिए, हमारे चहू ओर की वासना और सडाहट से हमको बचाने और अपना स्वभाव हमे देने की प्रतिज्ञा। 5 परन्तु इन वरदानो को पाने के लिए तुम्हारा विश्वास कर लेना ही पर्याप्त नही है, तुम्हें अच्छा बनने के लिए परिश्रम करना है, इतना ही पर्याप्त नही है। क्योकि तब तुम्हे परमेश्वर को उत्तम रीति से पहचानना और यह जानना सीखना चाहिए कि वह तुमसे क्या काम लेना चाहता है। 6 फिर, अपनी इच्छाओ को परे रखना सीखो, ताकि तुम धीरजवन्त और धर्मी बन जाओ, और सहर्ष परमेश्वर को अपनी इच्छा पूरी करने दो। 7 इससे अगला कदम लेना सम्भव होगा, वह यह कि तुम दूसरे लोगो से आनन्द लोगे और उन्हे चाहोगे, और अन्त में तुम उनसे अत्यधिक प्रेम करने लगोगे। 8 जितना अधिक तुम इस मार्ग पर चलोगे, उतना ही अधिक तुम आत्मिक दृढ होगे और फलवन्त और हमारे प्रभु यीशु मसीह के लिए उपयोगी बनोगे। 9 परन्तु जो कोई विश्वास के साथ इन बातो पर चलने मे इन्कार करे वह वास्तव मे अधा है, या फिर कम दिखता है, और भूल चुका है कि परमेश्वर ने उसे पाप के पुराने जीवन मे छुड़ाया है ताकि अब वह प्रभु के लिए दृढ और धर्मी जीवन व्यतीत कर सके। 10 इसलिए प्रिय भाइयो, यह सिद्ध करने के लिए परिश्रम करो कि तुम वास्तव मे उन्ही मे हो जिन्हे परमेश्वर ने बुलाया और चुना है, और तब तुम न कभी ठोकर खाओगे न गिरोगे। और परमेश्वर तुम्हारे लिए स्वर्ग के वाजो को खोलेगा कि तुम हमारे प्रभु और रकर्ता यीशु ममीह के अनन्त राज्य मे प्रवेश मको।

12 मैंने सोचा कि तुम्हे दिलाता रहू यद्यपि तुम जानते हो और वास्तव में बहुत अच्छी तरह बढ रहे हो। 13, 14 परन्तु प्रभु यीशु मसीह ने मुझ पर प्रगट किया है कि यहा इस पृथ्वी पर मेरे दिन गिने हुए हैं, और मैं शीघ्र मरने पर हू। जितने समय तक मैं अभी भी यहा हू मेरी इच्छा है कि तुम्हें पत्र भेजता रहू और स्मरण दिलाता रहूं। 15 इस आशा से कि मेरे मरने के बाद भी तुम मुझे याद रखो। 16 क्योकि हम तुम्हे परियो की कहानिया नही बताते रहे हैं जब हमने तुम्हें अपने प्रभु मसीह की सामर्थ और उसके फिर से आने के विषय मे समझाया। मेरी इन आँखो ने आप ही उसके वैभव और महिमा को देखा है। 17, 18 मैं वहाँ उस पवित्र पर्वत पर था जब वह अपने पिता परमेश्वर की दी गई महिमा से प्रकाशित हुआ, मैंने उस महिमामय, तेजस्वी स्वर को स्वर्ग से यह कहकर पुकारते सुना, "यह मेरा अति प्रिय पुत्र है, मैं इससे प्रसन्न हू।" 19 इसलिए हमने देखा और परखा है कि जो कुछ भविष्यद्वक्ताओ ने कहा वह सच निकला है। तुम अच्छा करोगे यदि उनके लिखे सब वचनो पर ध्यान दोगे, क्योकि अधेरे कोनो मे चमकते प्रकाश के सदृश, उसके वचनो मे हमे बहुत सी बातो को समझने मे सहायता मिलती है। परन्तु जब तुम भविष्यद्वक्ताओ के वचनो के अद्भुत सत्य पर ध्यान दो, तब तुम्हारी आत्माओ मे प्रकाश उदय होगा और भोर का सितारा मसीह तुम्हारे हृदयो मे चमकेगा। 20, 21 क्योकि पवित्रशास्त्र मे लिखी गई कोई भी भविष्यद्वाणी स्व[illegible] द्वा[illegible] कही गई। [illegible] के [illegible] जिसने [illegible] मे [illegible] दिए। [illegible] मे

जिन्होंने उनको मोल लिया, परन्तु उनका अन्त शीघ्र और भयानक होगा। 2 अनेक लोग उनकी बुरी शिक्षाओं पर चलेंगे कि व्यभिचार में कुछ बुराई नही है, और उनके कारण ममीह और उसके मार्ग की निन्दा की जाएगी। 3 ये शिक्षक अपने लोभवश तुमको कुछ भी बताएंगे कि तुम्हारे पैसे लूटें। परन्तु परमेश्वर ने उन्हें बहुत पहले दण्ड दिया और उनका विनाश निकट ही है। 4 क्योंकि परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों तक को जिन्होंने पाप किया नही छोड़ा, परन्तु उन्हें नरक में फेंक दिया, पीड़ा और अन्धकारमय गुफाओं में न्याय के दिन तक बाध दिया। 5 और उसने उन लोगों में से किसी को भी नही छोड़ा जो जलप्रलय से पहले प्राचीन युग में रहते थे, सिवाय एक ही व्यक्ति नूह के जिसने परमेश्वर के लिए बोला, और उसके सात सदस्यों के परिवार के। उस समय परमेश्वर ने भारी जलप्रलय से अधर्मी मनुष्यों के पूरे परिवार को पूरी रीति से नष्ट कर दिया। 6 बाद में, जिसने सदोम और अमोरा शहरों को राख की ढेर में बदल दिया और उनको पृथ्वी पर से पूरी तरह से मिटा दिया, उनको एक उदाहरण बताते हुए कि भविष्य में सब अधर्मी उसकी ओर फिर कर देखें और डरें। 7, 8 परन्तु उसी समय प्रभु ने लूत को सदोम से बचाया क्योंकि वह एक भला पुरुष था, और दिन प्रतिदिन अपने चहुँ ओर सब जगह भयानक बुराई को देख-देख कर थक गया था। 9 इसी प्रकार प्रभु उन परीक्षाओं में जो हमें घेरे रहती हैं तुम्हें और मुझे बचा सकता है, और अधर्मियों को उस समय तक दण्ड देना जारी रख सकता है जब तक अन्तिम न्याय का दिन न आ जाए। 10 विशेष करके वह उनके प्रति कड़ा है जो अपनी ही बुरी, वासनाभरी इच्छाओं पर चलते हैं, और उनके प्रति जो घमण्डी और हठी हैं, और महिमामय जनों[1] तक की हंसी उड़ाते है। 11 यद्यपि स्वर्गदूत तक जो प्रभु की ही उपस्थिति में खड़े रहते हैं, और इन झूठे शिक्षकों से कहीं अधिक सामर्थी और शक्तिशाली है, कभी इन बुरे सामर्थी जनो के लिए अनादर के साथ नही बोलते। 12 परन्तु झूठे शिक्षक मूर्ख हैं—पशुओं से भी गिरे हुए। जो कुछ उनके मन में आता है वही करते हैं, वे केवल पकड़े जाने और मारे जाने के लिए ही जन्मे है, वे पाताल[2] की अत्यन्त भयानक शक्तियों की हंसी करते जिसके विषय में उनको ज्ञान तक नही है, और वे सब दुष्टात्माओं और नरक[3] की शक्तियों के साथ ही नष्ट हो जाएंगे। 13 इन झूठे शिक्षकों को उनके पापों का यही फल मिलेगा। क्योंकि वे दिन प्रतिदिन बुरे सुख विलासों में जीवन बिताते हैं। वे तुम्हारे मध्य अपमान और कलंक हैं। वे तुम्हारे प्रेम भोजों में सम्मिलित होते हैं मानो बड़े ईमानदार व्यक्ति हों, जबकि एक ओर अश्लील पाप में रहकर तुम्हारी आंखों में धूल झोंकते हैं। 14 उनकी पापभरी दृष्टि से कोई स्त्री नही बच सकती और व्यभिचार से कभी उनका जी नही भरता। चचल स्त्रियों को फुसलाना इनके लिए खेल हो गया है। वे लालची होने में अपने आप को प्रवीण बना लेते हैं, और दण्ड के भागी और श्रापित हैं। 15 वे मार्ग से भटक गए हैं और बओर के पुत्र बिलाम जैसे खो गए हैं, जो उन पैसों के प्रेम में पड़ गया जिन्हें वह गलत काम करके पा सकता था, 16 परन्तु अपने पागलपन के काम में बिलाम रुक गया जब उसकी गदही ने मनुष्य के स्वर में उसे डाटा। 17 ये लोग सूखे जल के सोतों के समान कुछ काम के नही, जो आशा तो बहुत दिखाते पर देते कुछ नही है, वे बादलों जैसे अस्थिर हैं जो आंधी से उड़ जाते है। वे अन्धकार के अनन्त स्थानों में दण्ड पाने के लिए ठहराए गए हैं। 18 वे घमण्ड के साथ अपने पापों और विजय की डींगों को हांकते हैं; और वासना को अपने जाल में फंसाने का चारा

[1] या, "अदृश्य संसार के वैभव।" [2] मूलत "जिन बातों को जानने तक नही।" [3] यही आशय है। मूलत "वे अपनी सड़ाहट में आप ही सड़ जाएंगे।"

घटने और उसके आने की बाट जोह रहे हो, तो बिना पाप किए जीने का कठिन प्रयत्न करो और सबके साथ मेल से रहो ताकि जब वह लौटे तब तुम से प्रसन्न हो। 15, 16 और याद रखो वह क्यों ठहरा हुआ है। वह हमें दूसरों तक अपने उद्धार का सन्देश पहुंचाने का समय दे रहा है। हमारे बुद्धिमान और प्रिय भाई पौलुस ने इन ही विषयों पर अपने अनेक पत्रों में लिखा है। उसकी कुछ टीकाएं समझने में सरल नहीं हैं, और ऐसे लोग हैं जो जानबूझ कर मूर्ख हैं, और सदा कोई न कोई असाधारण व्याख्या चाहते हैं—उन्होंने उसके पत्रों को खींच तानकर उसके अर्थ से बिलकुल दूसरा ही अर्थ निकाला है, ठीक जिस प्रकार वे पवित्रशास्त्र के दूसरे स्थलों में करते हैं—और उनका अन्त विनाश है। 17 प्रिय भाइयो, मैं समय से पहले तुम को सतर्क कर रहा हूं, ताकि तुम सचेत रहो और इन दुष्ट व्यक्तियों की गलतियों के द्वारा बहकाए न जाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम आप ही भ्रम में पड़ जाओ। 18 परन्तु आत्मिक शक्ति और हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की पहचान में बढ़ते जाओ। उन ही की महिमा और प्रतिष्ठा आज और युगानुयुग होती रहे। आमीन।

विनीत, पतरस

यूहन्ना की पहिली पत्री

1 1 संसार के आदि से मसीह जीवित था, तो भी मैंने स्वयं अपनी इन आंखों से उसको देखा है और उसको बोलते सुना है। मैंने अपने ही हाथों से उसको छूआ है। वह परमेश्वर की ओर से जीवन का सन्देश है। 2 यह जीवन जो परमेश्वर की ओर से हमें दिखाया गया है और हम तुम्हें निश्चय दिलाते हैं कि हमने उस को देखा है, मैं मसीह के विषय में बोल रहा हूं, जो अनन्त जीवन है। वह परमेश्वर के साथ था और तब हम पर प्रकट किया गया। 3 मैं [illegible]कहता हूं, हम तुमको उसके विषय में बता [illegible] हमने वास्तव में देखा और सुना है, [illegible] संगति और आनन्द में सहभागी [illegible] और उसके पुत्र यीशु [illegible] यदि तुम वैसा ही [illegible]ता है, तब तुम [illegible] वैसे ही हम

5 यह वह सन्देश है जिसे परमेश्वर ने हमें तुम तक पहुँचाने के लिए दिया है ' कि परमेश्वर ज्योति है और उसमें थोड़ा भी अन्धकार नहीं है। 6 इसलिए, यदि हम कहें हम उसके मित्र हैं, और आत्मिक अन्धकार और पाप में जीवन बिताते रहें, तो हम झूठ बोलते है। 7 परन्तु यदि हम मसीह के समान, परमेश्वर की उपस्थिति की ज्योति में जीवन बिता रहे है, तब हमें एक दूसरे के साथ अद्भुत संगति और आनन्द प्राप्त होता है, और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें हर एक पाप से से शुद्ध करता है। 8 यदि हम कहें कि हममें कोई पाप नहीं, तो हम केवल अपने आप को धोखा दे रहे हैं और सत्य को ग्रहण करने से इन्कार कर रहे है। 9 यदि हम अपने पापों को उसके सामने मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। (और हमारे लिए ऐसा

बनाकर, उनको फिर पाप में फुसला लेते है जो इस प्रकार के बुरे जीवन से अभी ही बच कर निकले है। 19 वे कहते हैं, तुमने अच्छे बनने के द्वारा उद्धार नहीं पाया, इसलिए बुरे बनो तौभी कुछ नहीं होता। जो चाहो करो, स्वतन्त्र रहो। परन्तु ये ही शिक्षक जो व्यवस्था से ऐसी स्वतन्त्रता दिखाते है स्वय पाप और विनाश के दास है। क्योंकि व्यक्ति उसी का दास है जिसके वश मे वह रहता है। 20 और जब कोई व्यक्ति हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के विषय मे जानने के द्वारा ससार के दुष्ट मार्गों से बच गया है, और पाप मे फिर से फसकर उसका दास बन जाता है, तो वह पहले से भी बुरी अवस्था में है। 21 मसीह के विषय मे जानकर और तब उन पवित्र आज्ञाओं से जो उसे सौंपी गईं, पीठ फेरने के बदले यही अच्छा होता कि उसने मसीह के विषय कभी न जाना होता। 22 एक पुरानी कहावत है कुत्ता अपनी उल्टी की ओर वापिस आता है, और सुअर को नहला दो परन्तु वह फिर कीचड की ही ओर दौड़ेगा। इस प्रकार से वे भी है जो अपने पापों मे फिर लौट जाते हैं।

3 1, 2 प्रिय भाइयो, यह तुम्हे लिखा हुआ मेरा दूसरा पत्र है। और इन दोनों मेमै ने तुम्हे स्मरण दिलाने का प्रयत्न किया है—जिन तथ्यों को तुम पहले ही जानते हो उन तथ्यों को जिन्हें तुमने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं और हम प्रेरितों से सीखा है और हमारी ओर से जिनके द्वारा तुम तक हमारे और हमारे द्वारा प्रभु और उद्धारकर्ता का वचन तुम तक पहुचा है। 3 सबसे पहले, मै तुम्हे स्मरण दिलाना चाहता हू कि अन्तिम दिनो मे हसी ठट्ठा करने वाले आएगे जो हर प्रकार की बुराई करेंगे जितनी वे सोच सकते हैं, और सत्य पर हसेंगे। 4 वे इस प्रकार विवाद करेंगे : अच्छा तो क्या यीशु ने फिर से लौटने की प्रतिज्ञा की है? तब फिर वह कहा है? वह कभी नहीं आएगे। देखो, जहाँ तक कोई याद कर सकता है सब कुछ ठीक वैसा ही है जैसा सृष्टि के पहले दिन था। 5, 6 वे जान बूझ कर यह तथ्य भूल जाते है[1] कि परमेश्वर ने भारी जलप्रलय से संसार को नष्ट किया था, स्वर्ग को अपनी आज्ञा के वचन के द्वारा बना लेने, और मसार की रचना करने और उसे घेरने के लिए जल का प्रयोग करने के बहुत दिनो बाद। 7 परमेश्वर ने आज्ञा दी है कि पृथ्वी और आकाश न्याय के दिन की प्रचण्ड अग्नि के लिए रखे जाए जब सारे अधर्मी पुरुष नष्ट हो जाएगे।

8 परन्तु प्रिय मित्रो, यह न भूलना कि एक दिन या एक हजार वर्ष अब प्रभु के लिए ऐसे हैं जैसे कल का दिन जो बीत गया। 9 अपने फिर से लौटने के विषय में जिसकी प्रतिज्ञा उसने की थी, वास्तव में देर नही कर रहा है, यद्यपि कभी कभी ऐसा ही लगता है। परन्तु वह इस अच्छे कारण से ठहरा हुआ है, कि वह नही चाहता कोई नाश हो, और वह पापियो को मन फिराने का अधिक समय दे रहा है। 10 प्रभु का दिन निश्चय ही, चोर के सदृश अचानक आ रहा है, और तब आकाश भयंकर आवाज के साथ जाता रहेगा और आकाश के ग्रह आग मे लुप्त हो जाएगे, और ससार और उसमें का सब कुछ जल जाएगा। 11 इस कारण कि हमारे चहुँ ओर का सब कुछ पिघलने जा रहा है, तो हमे कितना पवित्र धर्मी जीवन व्यतीत करते रहना चाहिए। 12 तुम्हें उस दिन की प्रतिक्षा करनी चाहिए और उसे शीघ्र लाना चाहिए,—वह दिन जब परमेश्वर आकाश को आग में जला देगा, और आकाश के ग्रह पिघलकर आग मे लुप्त हो जाएंगे। 13 परन्तु हम बाद में नये आकाश और नई पृथ्वी की परमेश्वर की प्रतिज्ञा की बाट जोह रहे हैं, जहा केवल अच्छाई[1] ही होगी।

14 प्रिय मित्रो, जब तुम इन बातों के

[1] शब्दश "जिन मे धार्मिकता वास करेगी।"

घटने और उसके आने की बाट जोह रहे हो, तो बिना पाप किए जीने का कठिन प्रयत्न करो और सबके साथ मेल से रहो ताकि जब वह लौटे तब तुम से प्रसन्न हो। 15, 16 और याद रखो वह क्यों ठहरा हुआ है। वह हमें दूसरों तक अपने उद्धार का सन्देश पहुचाने का समय दे रहा है। हमारे बुद्धिमान और प्रिय भाई पौलुस ने इन ही विषयों पर अपने अनेक पत्रों मे लिखा है। उसकी कुछ ठीकाएं समझने मे सरल नही हैं, और ऐसे लोग हैं जो जानबूझ कर मूर्ख हैं, और सदा कोई न कोई असाधारण व्याख्या चाहते हैं—उन्होंने उसके पत्रों को खीच तानकर उसके अर्थ से बिलकुल दूसरा ही अर्थ निकाला है, ठीक जिस प्रकार वे पवित्रशास्त्र के दूसरे स्थलों से करते हैं—और उनका अन्त विनाश है। 17 प्रिय भाइयो, मैं समय से पहले तुम को सतर्क कर रहा हू, ताकि तुम सचेत रहो और इन दुष्ट व्यक्तियों की गलतियों के द्वारा बहकाए न जाओ, कही ऐसा न हो कि तुम आप ही भ्रम मे पड जाओ। 18 परन्तु आत्मिक शक्ति और हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की पहचान मे बढते जाओ। उन ही की महिमा और प्रतिष्ठा आज और युगानुयुग होती रहे। आमीन।

विनीत, पतरस

यूहन्ना की पहिली पत्री

1 1 संसार के आदि से मसीह जीवित था, तो भी मैंने स्वयं अपनी इन आखों से उसको देखा है और उसको बोलते सुना है। मैंने अपने ही हाथों से उसको छूआ है। वह परमेश्वर की ओर से जीवन का सन्देश है। 2 यह जीवन जो परमेश्वर की ओर से हमे दिखाया गया है और हम तुम्हें निश्चय दिलाते हैं कि हमने उस को देखा है, मैं मसीह के विषय मे बोल रहा हू, जो अनन्त जीवन है। वह परमेश्वर के साथ था और तब हम पर प्रकट किया गया। 3 मैं फिर कहता हू, हम तुमको उसके विषय मे बता रहे है जो हमने वास्तव में देखा और सुना है, ताकि तुम उस संगति और आनन्द मे सहभागी हो सको जो हमे पिता और उसके पुत्र यीशु मसीह मे प्राप्त है। 4 और यदि तुम वैसा ही करो जैसा मैंने अपने पत्र मे लिखा है, तब तुम भी, आनन्द से पूर्ण होओगे, और वैसे ही हम भी होंगे।

5 यह वह सन्देश है जिसे परमेश्वर ने हमें तुम तक पहुँचाने के लिए दिया है कि परमेश्वर ज्योति है और उसमें थोडा भी अन्धकार नही है। 6 इसलिए यदि हम कहे हम उसके मित्र है, और आत्मिक अन्धकार और पाप मे जीवन बिताते रहे, तो हम झूठ बोलते हैं। 7 परन्तु यदि हम मसीह के समान, परमेश्वर की उपस्थिति की ज्योति मे जीवन बिता रहे हैं, तब हमे एक दूसरे के साथ अद्भुत संगति और आनन्द प्राप्त होता है, और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमे हर एक पाप मे से शुद्ध करता है। 8 यदि हम कहे कि हममे कोई पाप नही, तो हम केवल अपने आप को धोखा दे रहे हैं और सत्य को ग्रहण करने मे इन्कार कर रहे है। 9 यदि हम अपने पापों को उसके सामने मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमे सब अधर्म से शुद्ध करने मे विश्वासयोग्य और धर्मी है। (और हमारे लिए ऐसा

करना परमेश्वर को भाता है क्योंकि मसीह हमारे अपराधों को धो देने के लिए मर गया।) 10 यदि हम दावा करें कि हमने पाप नहीं किया है, तो हम झूठ बोल रहे हैं और परमेश्वर को झूठा कह रहे है, क्योंकि उसका कहना है, हमने पाप किया है।

2

1 मेरे छोटे बच्चो, मैं तुमको यह इसलिए बता रहा हू कि यदि तुम पाप करो तो पिता के पास तुम्हारे लिए निवेदन करने को कोई है। उनका नाम यीशु मसीह है, जो सब अच्छाइयों मे पूर्ण हैं और जो पूरी रीति से परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं। 2 वही हैं जिन्होंने हमारे पापों के विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध को अपने ऊपर उठा लिया, और हमे परमेश्वर की सगति मे पहुंचाया, और वह हमारे पापो के लिए क्षमा है,[1] और न केवल हमारे लिए, परन्तु सारे संसार के लिए। 3 और हम कैसे निश्चय जान सकते है, कि हम उनके हैं? अपने आपको जाचें और देखें कि क्या हम वास्तव मे वही करने का प्रयत्न कर रहे हैं, जो वह हमसे चाहते हैं? 4 कोई कह सकता है, "मैं एक मसीही हूं, मैं स्वर्ग के मार्ग पर हू, मैं मसीह का हूं।" परन्तु यदि जो कुछ मसीह ने उसे करने को कहा है वह नही करता, तो वह झूठा है। 5 परन्तु जो मसीह के बताए अनुसार करते है वे परमेश्वर से अधिक से अधिक प्रेम करेंगे। यह जानने का कि तुम मसीही हो या नही यही पहचान है। 6 जो कोई अपने आप को मसीही कहता है उसे मसीह के समान जीवन भी बिताना चाहिए।

7 प्रिय भाइयो, मैं तुम्हारे पालन करने के लिए कोई नई आज्ञा नही लिख रहा हू, क्योंकि यह तो पुरानी है जो आरम्भ मे ही सदा तुम्हारे पास थी। तुमने इसे पहले से सुना है। 8 तो भी यह सदा नई है, और तुम्हारे लिए भी उसका वैसा ही काम है जैसा मसीह के लिए था, और जब हम इस आज्ञा को मानते हैं, कि एक दूसरे से प्रेम करें, तो हमारे जीवन का अंधकार दूर हो जाता है और हमारे अन्दर उस जीवन की ज्योति चमकती है जो मसीह मे है। 9 जो कोई यह कहता है कि वह मसीह की ज्योति मे चल रहा है परन्तु अपने साथियो से घृणा करता है, वह अब भी अंधकार में है। 10 परन्तु जो कोई अपने साथियों से प्रेम रखता है वह "ज्योति मे चल रहा है, और अंधकार और पाप मे बिना ठोकर खाए अपना मार्ग देख सकता है। 11 क्योंकि जो अपने भाई से घृणा करता है वह आत्मिक अन्धकार मे भटक रहा है और जानता नही कि कहा जा रहा है क्योंकि अंधकार ने उसे अन्धा बना बना दिया था ताकि वह मार्ग न देख सके।

12 मेरे छोटे बच्चो, मैं सारी बातें तुमको इसलिए लिख रहा हूं, कि हमारे उद्धारकर्ता यीशु के नाम मे तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं। 13 मैं तुम बूढ़ो से यह कह रहा हूं, क्यो कि तुम वास्तव मे मसीह को जानते हो, जो आरम्भ से ही जीवित रहा है। और तुम नौजवानों, मैं तुमसे इसलिए कह रहा हू क्योंकि तुमने शैतान के साथ अपना युद्ध जीत लिया है। और तुम छोटे लड़के और लड़कियो को मैं इसलिए लिख रहा हूं क्योंकि तुम भी हमारे पिता परमेश्वर को जानते हो। 14 और इस लिए मैं तुम सबसे जो पिता हो जो अनन्त परमेश्वर को जानते हो, और तुम नौजवानो मे जो अपने हृदयों मे परमेश्वर का वचन लिए हुए बलवन्त हो, और जिन्होंने शैतान के विरुद्ध अपना युद्ध जीत लिया है, कहता हू। 15 इस बुरे ससार से और जो कुछ यह तुम्हे देता है उस सब से प्रेम रखना छोड़ दो, क्योंकि जब तुम इन बातों से प्रेम रखते हो तो तुम दिखाते हो कि तुम वास्तव मे परमेश्वर से प्रेम

[1] या, "प्रायश्चित का बलिदान।"

नही रखते, 16 क्योंकि ये सब सांसारिक बातें, ये बुरी इच्छाएं—व्यभिचार के लिए पागलपन, उन सबको खरीद लेने की महत्वाकांक्षा जो तुम्हें आकर्षक लगती है, और धन और प्रतिष्ठा के कारण आनेवाला घमण्ड—ये परमेश्वर की ओर से नही हैं। ये सब इस बुरे संसार ही की ओर से हैं। 17 और यह संसार मिटता चला आ रहा है, और ये बुरी बातें, जिनको न करने को कहा गया है उसके साथ मिट जाएंगी, परन्तु जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चलता रहे वह सर्वदा जीवित रहेगा

18 प्रिय बच्चो इस संसार की अन्तिम घडी आ पहुंची है। तुम ने उस मसीह विरोधी के विषय में सुन लिया है—जो मसीह का विरोध करता है—और अब तक ऐसे अनेक लोग प्रगट हो चुके हैं। इससे हमें और भी अधिक निश्चय होता है कि संसार का अन्त निकट है। 19 ये लोग जो मसीह के विरुद्ध हैं पहले हमारी ही कलीसिया के सदस्य थे, परन्तु वास्तव में हमारे साथ नही थे, नही तो वे हमारे साथ बने रहते। जब उन्होंने हमें छोड दिया तो इससे सिद्ध हुआ कि वे हममे से कदापि नही थे। 20 परन्तु तुम उस प्रकार के नही हो, क्योकि पवित्र आत्मा तुम पर आया है और तुम सत्य को जानते हो। 21 इसलिए मैं तुम को इस प्रकार नही लिख रहा हूं जिस प्रकार उनको जिन्हें सत्य को जानने की आवश्यकता है, परन्तु मैं तुम्हे उन लोगों के समान चेतावनी देता हू जो सच और भूठ का अन्तर पहचान सकते हैं। 22 और सबसे अधिक भूठा कौन है ? वह जो कहता है कि यीशु मसीह नही हैं। इस प्रकार का व्यक्ति मसीह विरोधी है, क्यो कि वह परमेश्वर पिता और उसके पुत्र पर विश्वास नही रखता। 23 क्योकि जो व्यक्ति परमेश्वर के पुत्र मसीह पर विश्वास नही रखता उसके पास परमेश्वर पिता नही हो सकता। परन्तु जिसके पास परमेश्वर का पुत्र मसीह है, उसके पास परमेश्वर पिता भी है। 24 इसलिए जो तुम्हे आरम्भ मे सिखाया गया है उस पर विश्वास करते रहो। यदि करोगे तो तुम सदा परमेश्वर पिता और उसके पुत्र दोनो के साथ निकट संगति मे बने रहोगे। 25 और उसने स्वयं हमे अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा दी है। 26 मसीह विरोधी के विषय मे कही गई मेरी बातो का संकेत उन लोगो की ओर है जो तुम्हे पट्टी पढ़ाकर भटकाना बहुत प्रिय जानते है। 27 परन्तु तुमने पवित्र आत्मा पाया है और वह तुम्हारे भीतर, तुम्हारे हृदयो मे निवास करता है, ताकि किसी को तुम्हे यह सिखाने की आवश्यकता न हो कि ठीक क्या है ? क्योंकि वह तुम्हे सब बातें सिखाता है, और वह सत्य है, और भूठा नही, और इसलिए जैसा उसने कहा है तुम्हे मसीह मे जीना और कभी उससे अलग नही होना चाहिए। 28 और अब, मेरे प्रिय बच्चो प्रभु की आनन्ददायक संगति मे बने रहो ताकि जब वह आए तो तुम्हे निश्चय हो कि सब कुछ ठीक है, और तुम्हें लज्जित होना और उससे मिलने के लिए पीछे भिझकना नही पडेगा। 29 इसलिए कि हम जानते हैं परमेश्वर सदा भला है और जो उचित है वही करता है, तो हम मान सकते हैं कि जितने उचित काम करते हैं वे सब उसकी सन्तान है।

3 1 देखो स्वर्ग मे रहने वाला हमारा पिता हमसे कितना अधिक प्रेम करता है, कि वह हमें अपनी सन्तान कहलाने देता है—सोचो तो सही—और हम वास्तव मे हैं भी ! परन्तु चूंकि अधिकांश लोग परमेश्वर को नही जानते, तो स्वाभाविक है वे नही समझते कि हम उसकी सन्तान हैं। 2 हां, प्रिय मित्रो, हम अभी परमेश्वर की सन्तान है, और हम कल्पना तक नही कर सकते कि बाद मे हम किस प्रकार के होंगे। परन्तु हम यह जानते है, कि जब वह आएगा तब हम [illegible] का वह वास्तव मे है उसको [illegible]

उस ही के सदृश होंगे। 3 और जो कोई सचमुच यह विश्वास करता है वह पवित्र बने रहने का प्रयत्न करेगा क्योंकि मसीह पवित्र है। 4 परन्तु जो पाप करते रहते हैं वे परमेश्वर के विरुद्ध हैं, क्योंकि पाप परमेश्वर की इच्छा का विरोध है। 5 और तुम जानते हो कि वह मनुष्य बना ताकि हमारे पापों को दूर कर सके, और कि उसमें कोई पाप नहीं है, वह कभी भी किसी भी प्रकार से परमेश्वर की इच्छा पूरी करने से नहीं चूका। 6 इसलिए यदि हम उसके निकट उसके प्रति आज्ञाकारी बने रहें, तो हम भी पाप नहीं करते रहेंगे, परन्तु उनके लिए जो पाप करते रहते हैं, उन्हें यह जान लेना चाहिए कि वे पाप इसलिए करते हैं क्योंकि उन्होंने वास्तव में उसको न कभी पहचाना है न उसके बने हैं। 7 हे, प्रिय बच्चो, इसके विषय में किसी के धोखे में मत आओ: यदि तुम लगातार वही करते रहते हो जो अच्छा है, तो यह इसलिए कि तुम अच्छे हो, जिस प्रकार का वह है। 8 परन्तु यदि तुम पाप करते रहते हो, तो यह दर्शाता है कि तुम शैतान के हो, जिसने सबसे पहले पाप करना आरम्भ किया तब से बराबर पाप करता रहता है। परन्तु परमेश्वर का पुत्र शैतान के इन कामों को नाश करने के लिए आया। 9 जिस व्यक्ति ने परमेश्वर के घराने में जन्म लिया है, वह पाप करने की आदत नहीं बनाए रखता क्योंकि अब परमेश्वर का जीवन उसमें है, इस लिए वह पाप नहीं करता रहेगा क्योंकि इस नये जीवन ने उसमें जन्म लिया है और उसे वश में रखता है—उसका नया जन्म हो चुका है। 10 इसलिए अब हम बता सकते हैं कि परमेश्वर की सन्तान कौन है और कौन शैतान का है। जो कोई पाप का जीवन बिता रहा है और अपने भाई से प्रेम नहीं रखता, तो यह दर्शाता है कि वह परमेश्वर के घराने में नहीं है, 11 क्योंकि आरम्भ से ही हमारे लिए यह सन्देश रहा है कि हमें एक दूसरे से प्रेम रखना चाहिए। 12 हमें कैन के समान नहीं बनना है, जो शैतान का था और जिसने अपने भाई को मार डाला। उसने उसे क्यों मार डाला? क्योंकि कैन गलती करता रहता था और वह अच्छी रीति से जानता था कि उसके भाई का जीवन उससे उत्तम है।

13 इसलिए प्रिय मित्रो, यदि संसार तुमसे घृणा करे, तो आश्चर्य न करो। 14 यदि हम दूसरे मसीहियों से प्रेम रखते हैं तो इससे सिद्ध होता है कि हम नरक से छुड़ाए गए हैं और हमें अनन्त जीवन दिया गया है। परन्तु जिस व्यक्ति में दूसरों के लिए प्रेम नहीं है वह अनन्त मृत्यु के मार्ग पर है। 15 जो कोई अपने मसीही भाई से घृणा करता है वह वास्तव में मन का हत्यारा है और तुम जानते हो कि हत्या की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति के अन्दर अनन्त जीवन नहीं है। 16 हम अपने लिए मसीह की मृत्यु के उदाहरण से जानते हैं कि सच्चा प्रेम क्या है। और इसलिए हमें भी अपने मसीही भाइयों के लिए अपना प्राण दे देना चाहिए। 17 परन्तु यदि कोई जो मसीही कहलाता है जिसके पास अच्छी तरह जीने के लिए पर्याप्त पैसे हैं, और वह अपने भाई को आवश्यकता में पड़े देखता है, और उसकी सहायता नहीं करता—तो फिर परमेश्वर का प्रेम किस प्रकार उसके अन्दर हो सकता है? 18 छोटे बच्चो, हम केवल यह कहना कि हम लोगों से प्रेम रखते हैं छोड़ दें, हम वास्तव में उनसे प्रेम रखें, और उसे अपने कार्यों के द्वारा प्रगट करें। 19 तब अपने कार्यों के द्वारा हम निश्चय जान लेंगे, कि हम परमेश्वर की ओर हैं, और हमारा विवेक शुद्ध रहेगा, उस समय भी जब हम प्रभु के सामने खड़े होंगे। 20 परन्तु यदि हमारा विवेक दोषी हो और हम अनुभव करते हों कि हमने अपराध किया है तो प्रभु निश्चय ही उससे कहीं अधिक अनुभव करेगा क्योंकि वह सब कुछ जानता है जो हम करते हैं। 21 परन्तु अति प्रिय

मित्रो यदि हमारे विवेक शुद्ध हों तो हम निद्र निश्चय और विश्वास के साथ प्रभु के पास आ सकते हैं, 22 और जो कुछ माँगें प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि हम उसकी आज्ञाएं मान रहे हैं और वे ही काम कर रहे हैं जो उसको भाता है। 23 यह है जो परमेश्वर चाहता है कि हम अवश्य करें कि उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें, और एक दूसरे से प्रेम रखें। 24 जो परमेश्वर के कहे अनुसार करते हैं—वे परमेश्वर के साथ और वह उनके साथ रहता है। हम जानते हैं यह सच है क्योंकि जो पवित्र आत्मा उसने हमें दिया है वही हमें यह बताता है।

4 1 अति प्रिय मित्रो प्रत्येक सुनी हुई सब बात का सदा विश्वास न करो केवल इसलिए कि किसी ने कह दिया यह परमेश्वर का सन्देश है, पहले उसे यह देखने के लिए परखो कि वास्तव में यह है या नहीं। क्योंकि अनेक झूठे शिक्षक हैं, 2 और यह जानने का उपाय कि उनका सन्देश पवित्र आत्मा की ओर से है या नहीं यह प्रश्न करना है : क्या वह इससे सहमत है कि परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह वास्तव में मानव देह के साथ सचमुच मनुष्य बने या नहीं, यदि हाँ तो यह सन्देश परमेश्वर की ओर से है। 3 और यदि नहीं तो यह सन्देश परमेश्वर की ओर से नहीं परन्तु मसीह के विरोधी की ओर से है। उस मसीह विरोधी के समान जिसके विषय में तुमने सुना है जो आनेवाला है, और मसीह के विरुद्ध उसकी शत्रुता संसार भर में फैली हुई है। 4 प्रिय बच्चो तुम परमेश्वर के हो और तुमने पहले ही मसीह के विरुद्ध लोगों के साथ अपना युद्ध जीत लिया है, क्योंकि तुम्हारे हृदयों में वह है जो इस दुष्ट संसार के किसी भी बुरे शिक्षक से शक्तिशाली है। 5 ये व्यक्ति संसार के है, इसलिए बिल्कुल स्वाभाविक है कि उन्हें सांसारिक बातों की चिन्ता लगी रहती है और संसार उनकी ओर ध्यान देता है। 6 परन्तु हम परमेश्वर की सन्तान है इसलिए केवल वे ही लोग हमारी सुनेंगे जिन्होंने परमेश्वर से बातें की है और उसके संग चले है। दूसरे नहीं सुनेंगे। यह दूसरा उपाय है यह जानने का कि कोई सन्देश परमेश्वर की ओर से है या नहीं, क्योंकि यदि है, तो संसार उसे नहीं सुनेगा।

7 प्रिय मित्रों, हम एक दूसरे से प्रेम रखने का अभ्यास करें, क्योंकि प्रेम परमेश्वर की ओर से आता है और वे जो प्रेमी और दयालु है दर्शाते है कि वे परमेश्वर की सन्तान है, और वे उसको उत्तम रीति से पहिचानने जा रहे है। 8 परन्तु यदि कोई व्यक्ति प्रेमी और दयालु नहीं है, तो यह दर्शाता है कि वह परमेश्वर को नहीं जानता—क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। 9 परमेश्वर हमसे कितना प्रेम रखता है यह उसने अपने एकलौते पुत्र को इस दुष्ट संसार में भेजने के द्वारा दर्शाया कि वह अपनी मृत्यु के द्वारा हमें जीवन दे। 10 इस कार्य में हम देखते है कि सच्चा प्रेम क्या है ? यह परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम नहीं, परन्तु हमारे प्रति परमेश्वर का प्रेम है जब उसने अपने पुत्र को हमारे पापों के प्रायश्चित से परमेश्वर का क्रोध शान्त करने के लिए भेजा। 11 प्रिय मित्रो, जबकि परमेश्वर ने हमसे यहां तक प्रेम किया, तो हमें भी एक दूसरे से अवश्य प्रेम रखना चाहिए। 12 क्योंकि यद्यपि हमने अब तक परमेश्वर को कभी नहीं देखा। जब हम एक दूसरे से प्रेम रखते है तो परमेश्वर हममे रहता है और हमारे अन्दर उसका प्रेम सर्वदा अधिक से अधिक तीव्र होता है। 13 उसने अपना पवित्र आत्मा हमारे हृदयों में हमें यह प्रमाण देने लिए डाला है कि हम उसके साथ और वह हमारे साथ जी रहा है। 14 और इसके सिवाय, हमने अपनी ही आंखों से देखा है और अब पूरे संसार को बताते है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को उनका उद्धारकर्ता बनने के लिए भेजा। 15 जो कोई विश्वास

करता है और कहता है कि यीशु परमेश्वर के पुत्र है उसमें परमेश्वर जीवित रहता है, और वह परमेश्वर के साथ जीवित रहता है। 16 हम जानते है परमेश्वर ने हममें कितना अधिक प्रेम किया क्योंकि हमने उसके प्रेम का अनुभव किया है और चूँकि हम उसके इस वचन पर कि वह हमसे बहुत अधिक प्रेम करता है विश्वास रखते है। परमेश्वर प्रेम है, और जो कोई प्रेम में जीता है वह परमेश्वर के साथ जीता है और परमेश्वर उसमें जीवित है। 17 और जब हम मसीह के साथ जीते है, तो हमारा प्रेम अधिक सिद्ध और पूर्ण होता जाता है, इसलिए न्याय के दिन हम लज्जित और व्याकुल नहीं होंगे, परन्तु उसका सामना विश्वास और हर्ष से कर सकेंगे, क्योंकि वह हमसे प्रेम रखता है और हम भी उससे प्रेम रखते है। 18 हमें किसी ऐसे से जो हमसे सिद्ध प्रेम रखता है डरने की आवश्यकता नहीं, उसका हमारे प्रति सिद्ध प्रेम सब भय को हटा देता है कि वह हमारे साथ क्या करेगा। यदि हम डरते हैं तो इस भय से कि वह हमारे साथ क्या करेगा और यह दर्शाता है कि हमें दृढ़ निश्चय नहीं है कि वह सचमुच हमसे प्रेम करता है। 19 इस प्रकार हमारा प्रेम उसके प्रति इसलिए है कि पहले उसने हमसे प्रेम किया। 20 यदि कोई कहता है, मैं परमेश्वर से प्रेम करता हू परन्तु अपने भाई से घृणा करता है, तो वह झूठा है, क्योंकि यदि वह अपने भाई से प्रेम नहीं रखता तो वह परमेश्वर से कैसे प्रेम रख सकता है जिसको उसने कभी देखा नहीं है ? 21 और परमेश्वर ने स्वयं कहा है कि न केवल परमेश्वर से ही प्रेम रखो परन्तु अपने भाई से भी।

5 1 यदि तुम्हारा विश्वास है कि यीशु ही मसीह है—कि वह परमेश्वर के पुत्र और तुम्हारे उद्धारकर्ता हैं—तब तुम परमेश्वर की सन्तान हो। और जितने पिता से प्रेम रखते है उसकी सन्तान से भी प्रेम रखते है। 2 इसलिए तुम परमेश्वर से कितना प्रेम रखते हो और उसकी कितनी आज्ञा मानते हो, इसी से तुम जान सकते हो कि परमेश्वर की सन्तानों—प्रभु मे अपने भाई-बहिनों से तुम कितना प्रेम रखते हो। 3 परमेश्वर से प्रेम रखने का अर्थ है वही करना जो वह हमसे करने को कहता है, और वास्तव में, यह कुछ कठिन नहीं है, 4 क्योंकि परमेश्वर की हर सन्तान, अपनी सहायता के लिए मसीह पर भरोसा रखने के द्वारा पाप और बुरे सुख विलासों पर विजय पाते हुए, परमेश्वर की आज्ञा मान सकती है। 5 संसार पर कौन जय पा सकता है केवल उसके जिसका विश्वास है कि यीशु ही वास्तव में परमेश्वर के पुत्र है। 6, 7, 8 और हम जानते है कि वह है, क्योंकि जब यीशु का बपतिस्मा हुआ, और फिर जब वह मृत्यु का सामना कर रहे थे[1] तब परमेश्वर ने स्वर्ग से पुकार कर ऐसा ही कहा था—हा, न केवल उनके बपतिस्मे के समय परन्तु उस समय भी जब उन्होंने मृत्यु का सामना किया।[2] और पवित्र आत्मा जो सदा सत्य है, यही कहता है। इस प्रकार हमारे ये तीन गवाह हुए : हमारे हृदयों में पवित्र आत्मा की आवाज, मसीह के बपतिस्मे के समय स्वर्ग से आया हुआ स्वर, और उसकी मृत्यु से पूर्व की वाणी।[3] और ये सब एक ही बात कहते है, कि यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं।[4] 9 हम उन व्यक्तियों का विश्वास करते है जो हमारी अदालतों में गवाही देते है और इसलिए निश्चय ही हम परमेश्वर की बताई हुई बातो पर विश्वास कर सकते है। और परमेश्वर ने बताया है कि यीशु उसके पुत्र है। 10 जितने इस पर विश्वास करते है अपने हृदयों में जानते हैं कि यह सच है। यदि कोई इस पर विश्वास नहीं करता, तो वह वास्तव में

---

[1] मूलत "यही है वह, जो पानी और लहू द्वारा आया था।" मत्ती 3 : 16, 17, लूका 9 : 31, 35, यूहन्ना 12 : 27, 28, 32, 33 पढ़िये। इस पद की दूसरी व्याख्याएं भी सम्भव हैं। [2] मूलत "न केवल पानी के द्वारा, वरन पानी और लहू दोनों के द्वारा।" [3] मूलत "आत्मा, और पानी, और लहू।" [4] यही आशय है।

परमेश्वर को झूठा ठहरा रहा है, क्योंकि उसे उस पर विश्वास नहीं जो कुछ परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में कहा है। 11 और वह क्या है जिसे परमेश्वर ने कहा है कि उसने हमें अनन्त जीवन दिया है, और कि यह जीवन उसके पुत्र में है। 12 इसलिए जिसके पास परमेश्वर का पुत्र है उसके पास जीवन है, जिसके पास उसका पुत्र नहीं है उसके पास जीवन भी नहीं है।

13 मैंने इसे तुम्हें जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास रखते हो लिखा है ताकि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है। 14 और हमें इसका निश्चय है, कि जब कभी हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगें तो वह हमारी सुनेगा। 15 और यदि हम वास्तव में जानते हैं कि वह हमारी सुन रहा है जब हम उससे बातें करते और अपने निवेदन रखते हैं तो हमें निश्चय हो सकता है कि वह हमें उत्तर देगा। 16 यदि तुम किसी मसीही को इस प्रकार का पाप करते देखो जिसका अन्त मृत्यु न हो, तो तुम्हें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उसे क्षमा करे और परमेश्वर उसे जीवन देगा, यदि उसने उस एक घातक पाप को न किया हो। परन्तु एक वह पाप है जिसका अन्त मृत्यु है और यदि उसने उसे किया है, तो उसके लिए प्रार्थना करने से कोई लाभ नहीं। 17 हां, हर गलती अवश्य पाप है। मैं इन साधारण पापों के विषय में नहीं कह रहा हूं, मैं उस पाप के विषय में बोल रहा हूं जिसका अन्त मृत्यु है।[5]

18 कोई भी जो परमेश्वर के घराने का अंग बन गया है पाप में जीवन नहीं बिता सकता क्योंकि परमेश्वर का पुत्र मसीह उसकी सुरक्षा करता है और शैतान उस पर अपने हाथ नहीं लगा सकता। 19 हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं और हमारे चहुं ओर सारा संसार शैतान की शक्ति और नियन्त्रण में है। 20 और हम जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र मसीह हमारी सहायता करने को आया कि हम सच्चे परमेश्वर को समझें और जानें। और अब हम परमेश्वर में हैं क्योंकि हम उसके पुत्र यीशु मसीह में हैं, जो एकमात्र सच्चा परमेश्वर है, और वह अनन्त जीवन है। 21 प्रिय बच्चो हर एक ऐसी बात से बचे रहो जो तुम्हारे हृदयों में परमेश्वर का स्थान ले ले। आमीन।

विनीत, यूहन्ना

यूहन्ना की दूसरी पत्री

1 1 यूहन्ना जो कलीसिया का पासबान है उस प्रिय महिला और उसके बच्चों के नाम जिनसे मैं अति प्रेम रखता हूं, और न केवल मैं परन्तु वह सब भी जो सत्य को जानते हैं। 2 इसलिए कि सत्य सदा हमारे हृदयों में है।

---

[5] टीकाकारों में व्यापक मतभेद है कि यह कौन सा पाप है और इसका अन्त शारीरिक मृत्यु है या आत्मिक मृत्यु है। पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा का परिणाम आत्मिक मृत्यु होती है (मरकुस 3 : 29) परन्तु क्या कोई मसीही इस प्रकार से पाप कर सकता है? प्रभु भोज के समय पाप से पश्चाताप कर क्षमा न मांगना कभी कभी शारीरिक मृत्यु का कारण होता है (1 कुरिन्थियों 11 . 30)। और इब्रानियों 6 4-8 में उन लोगों के भयानक अन्त का विवरण है जो गिर जाते हैं।

3 परमेश्वर पिता और उसके पुत्र यीशु मसीह बड़ी दया और शान्ति, और सत्य और प्रेम के साथ हमें आशिष देंगे।

4 तुम्हारे कई बच्चों को यहां पाकर और यह देखकर हर्ष हुआ कि जैसा चाहिए, वैसा सत्य पर चलते हुए, परमेश्वर की आज्ञा मानते हुए वे जीवन बिता रहे हैं। 5 और अब प्रिय मित्रो, मैं अति आवश्यक रूप से तुम्हें उस पुराने नियम का स्मरण दिलाना चाहता हूं जिसे परमेश्वर ने हमें आरम्भ ही में दिया, कि मसीहियों को एक दूसरे से प्रेम रखना चाहिए। 6 यदि हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं तो जो कुछ वह हमें करने को कहे हम वही करेंगे। और उसने आरम्भ ही से हमें एक दूसरे से प्रेम रखने को कहा है। 7 झूठे शिक्षकों के प्रति सचेत रहो—और यहां वह और ऐसे अनेक लोग हैं—जो विश्वास नहीं रखते कि यीशु मसीह मनुष्य होकर हमारी जैसी देह सहित इस पृथ्वी पर आए। ऐसे लोग सत्य के विरुद्ध और मसीह के विरुद्ध हैं। 8 उनके समान बनकर उस इनाम को खो देने से सावधान रहो, जिसे पाने के लिए तुम और मैं, इतना कठिन परिश्रम करते रहे हैं। देखो कि तुम प्रभु से अपना पूरा प्रतिफल पाओ। 9 क्योंकि यदि तुम मसीह की शिक्षाओं से बहुत आगे बढ़ जाओ, तो तुम परमेश्वर को पीछे छोड़ दोगे, जबकि यदि तुम मसीह की शिक्षाओं के प्रति विश्वासयोग्य बने रहो, तो तुम्हारे पास परमेश्वर भी रहेगा। तब पिता और पुत्र दोनों तुम्हारे पास रहेंगे। 10 यदि कोई तुम्हें सिखाने आए, और वह मसीह की शिक्षा पर विश्वास न करे तो उसे अपने घर में निमंत्रण तक न दो, उसे किसी भी प्रकार से प्रोत्साहन न दो। 11 यदि दोगे तो तुम भी उसकी दुष्टता में उसके साथी होगे।

12 अच्छा, कहना तो मैं तुमसे बहुत कुछ चाहता हूं, परन्तु इस पत्र में नहीं कहना चाहता, क्योंकि मुझे शीघ्र ही तुमसे मिलने आने की आशा है और तब हम एक साथ इन बातों पर चर्चा कर सकते हैं और आनन्द से समय काट सकते हैं। 13 तुम्हारी बहिन की ओर से—जो परमेश्वर की चुनी हुई एक अन्य सन्तान है और उसके बच्चों की ओर से तुम्हें नमस्कार।

विनीत, यूहन्ना

यूहन्ना की तीसरी पत्री

1 1 यूहन्ना पासबान की ओर से प्रिय गयुस को जिससे मुझे सचमुच प्रेम है।

2 प्रिय मित्र, मैं प्रार्थना कर रहा हूं कि सब कुछ तेरे साथ ठीक रहे और तेरा शरीर उतना ही स्वस्थ रहे जितनी तेरी आत्मा, जैसे मैं जानता हूं। 3 यात्रा पर निकले कुछ भाइयों ने मुझे तेरे विषय में बताकर बहुत आनन्दित किया है कि तेरा जीवन शुद्ध और सच्चा है, और तू सुसमाचार के स्तर के अनुसार जीवन व्यतीत कर रहा है। 4 इससे बड़ा मुझे और कोई हर्ष नहीं कि मैं बच्चों के लिए इस प्रकार की बातें सुनूं।

5 प्रिय मित्र, उन यात्री शिक्षकों और प्रचारकों की देखभाल करने में जो वहां से होकर आगे बढ़ रहे हैं, तू परमेश्वर के लिए अच्छा काम कर रहा है। 6 उन्होंने यहां की

कलीसिया को तेरी मित्रता और तेरे प्रेमपूर्ण कार्यों के विषय में बताया है। मुझे हर्ष है कि तू उन्हे उदारता से देकर उनके मार्ग मे आगे भेज देता है। 7 क्योकि वे प्रभु के लिए यात्रा कर रहे हैं, और जो मसीही नही हैं उन तक प्रचार करने के बाद भी वे उनसे न भोजन, वस्त्र और शरण चाहते हैं और न पैसा मांगते हैं। 8 इसलिए हमे स्वयं ऐसों की चिन्ता करनी चाहिए ताकि हम प्रभु के काम में उनके सहभागी बन सकें।

9 मैंने इसके विषय मण्डली को संक्षेप मे पत्र लिखा था, परन्तु घमण्डी दियुत्रिफेस, जो अपने आपको आगे कर वहा के मसीहियों का नेता बनना चाहता है, स्वयं पर मेरा अधिकार नही मानता और मेरी सुनने से इन्कार करता है। 10 जब मैं आऊंगा तब तुम्हें बताऊंगा कि वह कैसे काम कर रहा है, और मेरे लिए कितनी बुरी बातें कह रहा है और कितने अनादर भरे शब्द काम मे ला रहा है। वह न केवल स्वयं प्रचारक यात्रियों को ग्रहण करने से इन्कार करता है, परन्तु दूसरो को भी वैसा ही करने को कहता है, और जब वे ग्रहण करते हैं तो वह उन्हें कलीसिया से बाहर करने का प्रयत्न करता है। 11 प्रिय मित्र, इस बुरे उदाहरण के प्रभाव से अपने आपको बचाए रख। केवल उसी का अनुकरण कर जो अच्छा है। स्मरण रख कि जो उचित काम करते हैं वे सिद्ध करते हैं कि वे परमेश्वर की सन्तान हैं, और जो बुराई मे बने रहते हैं वे सिद्ध करते हैं कि वे परमेश्वर से बहुत दूर हैं। 12 परन्तु सबने, स्वयं सत्य ने भी देमेत्रियुस के विषय मे बहुत अच्छा कहा है। मैं आप भी उसके विषय मे ऐसा कह सकता हूं, और तू जानता है कि मैं सच बोलता हू।

13 मेरे पास कहने को तो बहुत है परन्तु मैं उसे लिखना नही चाहता, 14 क्योकि मुझे तुमसे शीघ्र मिलने की आशा है और तब हमारे पास मिलकर बातचीत करने को बहुत कुछ होगा। 15 इसलिए अब नमस्कार। यहा के मित्र तुझे प्यार देते हैं और कृपया वहाँ हर एक को मेरी ओर से विशेष नमस्कार देना।

विनीत, यूहन्ना

यहूदा की पत्री

1 1 यहूदा के द्वारा, जो यीशु मसीह का दास और याकूब का भाई है। सब स्थानो के मसीहियों के प्रति जो परमेश्वर के प्रिय और उसके चुने हुए हैं।

2 तुम्हें परमेश्वर की दया, शान्ति और प्रेम अधिक से अधिक प्राप्त हो।

3 अति प्रिय मित्रो, मैं सोच रहा था उस उद्धार के विषय मे जिसे परमेश्वर ने हमे दिया है कि तुम्हें कुछ लिखू, परन्तु अब लगता है कि इसकी अपेक्षा मुझे किसी और विषय मे लिखना चाहिए, तुम्हे प्रेरित करते हुए कि उस सत्य का दृढ़ता के साथ बचाव करो जिसको परमेश्वर ने, सदा के लिए एक ही बार अपने लोगो को दिया कि वे उसे आने वाले वर्षों मे बिना परिवर्तन किए सुरक्षित रखें। 4 मैं यह इसलिए कहता हू क्योंकि कुछ अधर्मी शिक्षकों ने तुम्हारे मध्य चुपके से प्रवेश किया है, यह कहते हुए कि मसीही हो जाने के बाद हम बिना परमेश्वर के दण्ड से डरे जो चाहे कर सकते है। ऐसे लोगो का भाग्य बहुत पहले लिखा जा चुका था,

क्योंकि वे हमारे एकमात्र स्वामी और प्रभु, यीशु मसीह के विरुद्ध हो गए है।

5 उनके लिए मेरा उत्तर है, इस तथ्य का स्मरण रखो—जिसे तुम पहले से ही जानते हो...कि प्रभु ने मिस्र देश से लोगों की एक पूरी जाति को बचाया, और तब उनमे से हर-एक को मार डाला जिसने उस पर विश्वास नही रखा और उसकी आज्ञा नही मानी। 6 और मैं तुम्हें उन स्वर्गदूतों का स्मरण दिलाता हू जो किसी समय शुद्ध और पवित्र थे, परन्तु पाप के जीवन मे फिर गए[1]। अब परमेश्वर ने उन्हे अन्धकार को कैद मे बाध रखा है, और वे न्याय के दिन की प्रतीक्षा मे हैं। 7 और सदोम और अमोरा शहरों और उनके पडोसी नगरो को न भूलो, जो सब प्रकार की वासना से भरे थे जिनमे एक पुरुष की दूसरे पुरुषो के प्रति वासना का भी समावेश था। वे शहर आग द्वारा नष्ट किए गए और अब भी हमारे लिए चेतावनी बने हुए हैं कि नरक भी है, जहाँ सब पापियो को दण्ड दिया जाता है। 8 तौभी ये भूठे शिक्षक लापरवाही से बुरे, अनैतिक जीवन बिताते चले जाते हैं, अपने शरीरों को अशुद्ध करते, और अपने अधिकारियो पर हसते है यहाँ तक कि तेजस्वी जनो का भी उपहास करते हैं। 9 तौभी मीकाईल ने भी जो प्रधान स्वर्गदूतो मे से एक है, जब मूसा के शव पर शैतान से विवाद कर रहा था, शैतान तक पर दोष लगाने या उसकी हंसी उडाने का साहस नही किया, परन्तु केवल यही कहा, "प्रभु तुझे डांटे।" 10 परन्तु ये व्यक्ति किसी का भी उपहास करते और उनको शाप देते हैं जिन्हे वे समझते तक नही, और पशुओ के समान, उन्हे जैसा लगता है वैसा करते हैं, जिससे वे अपनी आत्माओं का नाश करते हैं। 11 धिक्कार है उन पर, क्योंकि वे कैन के उदाहरण पर चलते हैं जिसने अपने भाई को मार डाला, और बिलाम के सदृश वे पैसो के लिए कुछ भी कर लेंगे। और कोरह के समान, उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया है और उसके स्राप से मर मिटेंगे। 12 जब ये व्यक्ति तुम्हारी कलीसिया के प्रेम भोजों मे तुम्हारे साथ मिलते हैं, तो वे तुम्हारे बीच कलक ठहरते हैं और ठट्ठेबाजी करते हैं, और बिना दूसरो का विचार लिए अपना ही पेट भरते हैं। वे उन बादलों के सदृश हैं जो सूखी भूमि पर बिना जल बरसाए उड जाते हैं, जो प्रतिज्ञा तो बहुत करते परन्तु उत्पन्न कुछ नही करते। वे फल के उन वृक्षो के समान हैं जिनमे फल तोडने के समय एक भी फल न हो। वे न केवल मरे हुए हैं, परन्तु दोबारा मर चुके हैं, क्योंकि वे जला देने के लिए, जड़ सहित उखाडे गए हैं। 13 वे अपने पीछे लज्जा और कलक छोड़ जाते हैं उस गंदे फेन के समान जो समुद्र तट पर प्रचण्ड लहरो के द्वारा छोड दिया जाता है। वे तारो जैसे तेज लिए हुए यहाँ वहाँ फिरते हैं, परन्तु उनके आगे अनन्त पीडा और अन्धकार है जिसे परमेश्वर ने उनके लिए तैयार किया है। 14 हनोक, जो आदम से लेकर सातवी पीढ़ी मे था, इन लोगो के विषय में जानता था और उसने उनके विषय मे यह कहा: "देखो, प्रभु अपने लाखो पवित्र जनो के साथ आ रहा है। 15 वह न्याय करने के लिए संसार के लोगो को अपने सामने लाएगा, कि उन्हे उचित दण्ड मिले, और सिद्ध हो कि उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध जितने भयानक काम किए हैं, उन सब बातों को प्रगट कर जो उन्होने उसके विरुद्ध कही हैं।" 16 ये व्यक्ति निरन्तर उपद्रवी है, कभी सन्तुष्ट नही होते, जो चाहे बुराई करते हैं, वे बडबडाने वाले "दिखावटी" हैं, और जब दूसरो का आदर करते हैं तो केवल इसीलिए कि बदले मे उन्हे उनसे कुछ मिले।

17 प्रिय मित्रो, हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरितों ने तुम्हें जो कुछ बताया उसे स्मरण रखो, 18 कि अन्तिम समय मे ये हंसी ठट्ठा

[1] या, "जिन्होंने अपने प्रारम्भिक पद को त्याग दिया और अपना उचित घर छोड़ दिया।"

करनेवाले आएंगे जिनके जीवन का पूर्ण उद्देश्य है—हर सम्भव बुराई का आनन्द लेना। 19 वे वाद-विवाद खड़ा करते हैं, वे संसार की बुरी बातों से प्रेम रखते हैं, उनके अन्दर पवित्र आत्मा निवास नहीं करता। 20 परन्तु प्रिय मित्रों, तुम्हें हमारे पवित्र विश्वास की नींव पर अपने जीवनों को और भी अधिक दृढ़ बनाते रहना चाहिए, और पवित्र आत्मा की सामर्थ और शक्ति से प्रार्थना करनी चाहिए। 21 सदैव उस सीमा के अन्दर रहो जहां परमेश्वर का प्रेम तुम तक पहुंच सके और तुम्हें आशिष दे सके। उस अनन्त जीवन की धीरज के साथ प्रतीक्षा करो जिसे हमारे प्रभु यीशु मसीह अपनी दया से तुम्हें देनेवाले हैं। 22 जो तुमसे विवाद करते हैं उनकी सहायता करने का प्रयत्न करो। जो सन्देह में हैं उन पर दया करो। 23 अनेक लोगों को मानो स्वयं नरक की जलती हुई ज्वालाओं में से खींचकर बचाओ। और दूसरों पर दयालु बनने के द्वारा प्रभु को पाने में उनकी सहायता करो, परन्तु सावधान रहो कि तुम स्वयं भी उनके पापों में न लिप्त जाओ। उनके प्रत्येक पाप से घृणा करो पर उनके पापी होने के कारण उन पर दयावन्त हो। 24, 25 और अब—सारी महिमा उस ही की हो जो एकमात्र परमेश्वर है, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमारा उद्धार करता है, हां, ऐश्वर्य और वैभव, सब सामर्थ और अधिकार आदि से ही उस का ही है, सब उसका है और युगानुयुग उस ही का रहेगा। और वह इस योग्य है कि तुम्हें फिसलने और गिर जाने से बचाए रखे, और तुम्हें निष्पाप और सिद्ध करके, अनन्त आनन्द के गूंजते स्वर के साथ, अपनी तेजोमय उपस्थिति में उपस्थित करे। आमीन,

विनीत, यहूदा

यूहन्ना का प्रकाशितवाक्य

1 1 यह पुस्तक उन आने वाली घटनाओं के विषय में है जो शीघ्र यीशु मसीह के जीवन में घटने वाली हैं। परमेश्वर ने यह बातें अपने भक्त यूहन्ना को एक दर्शन में बताईं और एक *स्वर्गदूत को भेजा कि इस दर्शन का अर्थ समझाए।* 2 यूहन्ना ने परमेश्वर और यीशु मसीह के वचनों को और जो कुछ उसने सुना और देखा, सब लिख लिया। 3 यदि तू ज़ोर से कलीसिया को यह भविष्यवाणी पढ़कर सुनाए, तो तू प्रभु से विशेष आशिष पाएगा। जो इसे सुनते और इसके कहे अनुसार करते हैं वे भी आशिष पाएंगे। क्योंकि समय निकट है जब ये सब बातें पूरी होंगी।

4 यूहन्ना की ओर से तुर्किस्तान की सात *कलीसियाओं के नाम। प्रिय मित्रो तुम्हें परमेश्वर* की ओर से जो है, और जो था और जो आनेवाला है और सिंहासन के सामने की सातगुणी आत्माओं[1] की ओर से अनुग्रह और शान्ति मिले। यीशु मसीह की ओर से भी जो विश्वास योग्य रह कर हम पर सब सच्चाई को प्रगट करते

[1] मूलत "सातगुणी आत्माओं। परन्तु यशायाह 11 : 2 पढ़िए जहां पवित्र आत्मा के विभिन्न पहलुओं का विवरण है, जकर्याह 4 : 2-6।"

है। वह मरकर जी उठने वालों मे सबसे प्रथम
थे, कि फिर कभी न मरें[2]। 5 वह सारे संसार
के किसी भी राजा से कहीं बढ़कर हैं। सब
प्रशंसा उन ही की हो जो हमसे सदा प्रेम रखते
हैं और जिन्होंने अपना रक्त हमारे लिए बहाने
के द्वारा हमारे पापों से हमें छुटकारा दिया है।
6 उन्होंने हमें अपने राज्य में इकट्ठा किया है
और हमें अपने पिता परमेश्वर के याजक बनाया
है। अनन्त-महिमा उन ही की हो। वह युगानु-
युग राज्य करते हैं। आमीन। 7 देखो, वह
बादलों से घिरे हुए आ रहे हैं, और प्रत्येक आंख
उनको देखेगी—हां और वे भी जिन्होंने उनको
छेदा[3] था। और उनके आने पर सब देशों के
लोग दुःख और भय से रोएंगे। हां, आमीन।
ऐसा ही हो।

8 परमेश्वर जो सर्वशक्तिमान प्रभु है, जो
है, और था, और फिर आनेवाला[4] है, कहता है,
"मैं आरम्भ और अन्त",[5] सब बातों का, आदि
और अन्त हूं।

9 यह मैं, तुम्हारा भाई यूहन्ना, प्रभु के
लिए दुःख उठाने वालों में तुम्हारा साथी, तुम्हें
यह पत्र लिख रहा हूं। उस धीरज में, जो यीशु
देते हैं, मैं भी सहभागी हुआ, और हम उनके
राज्य में सहभागी होंगे। मैं पतमुस द्वीप में,
परमेश्वर के वचन का प्रचार करने और मसीह
के विषय में जो कुछ जानता था, उसे बताने के
कारण वहां अपने देश से निकाला हुआ बन्दी
था। 10 प्रभु का दिन था और मैं आराधना
कर रहा था, जब एकाएक मैंने अपने पीछे एक
ज़ोर की आवाज़ सुनी, 11 "मैं आरम्भ और
अन्त हूं, और तब मैंने उसको कहते सुना" "जो
कुछ तू देखता है लिख ले, और अपना पत्र
तुर्किस्तान[6] की सात कलीसियाओं को भेज:
इफिसुस की कलीसिया को, स्मुरना को, और
पिरगमुन, थूआतीरा, सरदीस, फिलदिलफिया
और लौदीकिया की कलीसियाओं को।" 12 जब
मैं यह देखने के लिए पीछे मुड़ा कि कौन बोल
रहा है, तो वहां मेरे पीछे सोने की सात दीवटें
थीं। 13 और उनके मध्य एक व्यक्ति था जो
यीशु के समान दिखाई दिया जिसने अपने आप
को मनुष्य का पुत्र[7] कहा, जो एक लम्बा चोगा
पहने था, छाती पर चारों ओर सोने का पट्टा
लगाए था। 14 उसके बाल[8] ऊन या बर्फ जैसे
श्वेत थे, और उसकी आंखें आग की ज्वालाएं
जैसे दिख रही थीं। 15 उसके पैर तपाए गए
कांसे जैसे चमक रहे थे, और उसकी वाणी में
सागर तट से टकराती हुई लहरों का सा गर्जन
था। 16 वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे
पकड़े हुए था और अपने मुंह[9] से दोधारी तलवार
लिए था, और उसका मुख दिन-दुपहरी में चम-
कते हुए सूर्य के समान तेजोमय था। 17, 18
जब मैंने उसको देखा, तो उसके पांवों पर मृत सा
गिर पड़ा परन्तु उसने अपना दाहिना हाथ मुझ
पर रख कर कहा, "मत डर यद्यपि मैं आरम्भ
और अन्त हूं, मैं एकमात्र जीवित व्यक्ति हूं जो
मर गया था, और अब सदा सर्वदा जीवित हूं,
जिसके पास नरक और मृत्यु की चाबियां हैं—
अतः मत डर। 19 तूने जो अभी देखा है, और
शीघ्र ही जो तुझे दिखाया जाएगा, उसे लिख
ले। 20 उन सात तारों का, जो तू ने मेरे दाहिने
हाथ में देखे, और सोने की सात दीवटों, का
अर्थ यह है: सात तारे सात कलीसियाओं के

[2] मूलतः "मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा।" दूसरे (लाबर, आदि) लोग जो उठे कि फिर मर जाएं।
इसलिए यहां इस अभिव्यक्ति का आशय है "कि फिर कभी न मरें।" [3] यूहन्ना ने इस घटना को...मसीह के बंधे
जाने को अपनी आंखों से देखा था—और उससे यह भयानक घटना भूली न जा सकी। [4] मूलतः "मैं ही अल्फा
और ओमिगा हूं," यूनानी भाषा के ये प्रथम और अन्तिम अक्षर हैं। [5] मूलतः "जो आने वाले हैं। अथवा जो आने
हैं। [6] एशिया की सातों कलीसियाओं को। [7] मूलतः "मनुष्य के पुत्र के समान। तीन वर्ष तक उनके साथ रहने
और उस पहाड़ पर उनके रूप बदल जाने की महिमा को देखने के कारण यूहन्ना ने उनको पहचान लिया।
[8] मूलतः "उनके सिर पर बाल श्वेत-ऊन वरन् पाले से भी उज्जवल थे।" [9] मूलतः "उसके मुख से...निकलती
थी।"

अगुवे[10] है, और सात दीवटें स्वयं वे सात कलीसियाएं हैं।"

2 1 "इफिसुस की कलीसिया के अगुवे[1] को एक पत्र लिख और उसे यह बता "मैं उसकी ओर से तुम्हें एक सन्देश देने के लिए लिखता हू जो कलीसियाओं[2] के मध्य चलता-फिरता और उनके अगुवो को अपने दाहिने हाथ मे पकडे रहता है।" वह तुझसे यह कहता है; 2 "मैं जानता हू कि तू कितने अच्छे काम कर रहा है। मैंने तेरे परिश्रम और तेरे धीरज को देखा है, मैं जानता हूं कि तू अपने सदस्यों के मध्य पाप को सहन नही करता, और तू ने सावधानी के साथ उनके दावों को परखा है जो अपने आप को प्रेरित कहते है परन्तु हैं नही। तूने जान लिया है कि वे किस प्रकार का जीवन निर्वाह करते हैं। 3 तूने बिना छोड़े धीरज के साथ मेरे लिए दु.ख उठाया है। 4 तौभी एक गलत बात है, तू पहले जैसा मुझसे प्रेम नही रखता। 5 उन समयों पर विचार कर जब तूने पहले मुझसे प्रेम किया (अब कितना अन्तर है) और फिर मेरी ओर लौट आ और पहले जैसे काम कर, नही तो मैं आऊगा और तेरे दीवट को कलीसियाओं के बीच उसके स्थान से हटा दूगा। 6 परन्तु तुझमे यह अच्छाई है: तू कामुक नीकुलइयो[3] के कामो से घृणा करता है, जिस प्रकार मैं करता हू। 7 जो सुनता है वह इस सन्देश पर कान लगाए कि आत्मा कलीसियाओ से क्या कह रहा है: जो जय पाए, उसे मैं परमेश्वर के स्वर्ग लोक के जीवन के वृक्ष मे से फल दूगा।

8 स्मुरना की कलीसिया के अगुवे को यह पत्र लिख: "यह सन्देश उसकी ओर से है जो आरम्भ और अन्त है, जो मर गया था और फिर जी उठा। 9 मैं जानता हू कि तू प्रभु के लिए कितने दुःख उठाता है, और मैं तेरी निर्धनता के विषय मे सब कुछ जानता हू (परन्तु तेरे पास स्वर्गीय धन है) मैं उनकी निन्दा को *जानता* हू जो तेरा *विरोध* करते हैं, जो कहते हैं कि वे परमेश्वर की सतान अर्थात यहूदी है, परन्तु है नही, क्योंकि वे शैतान के काम को बढावा देते है। 10 तू जो दुःख उठाने पर है उससे भयभीत होना छोड दे—क्योकि शैतान तुम्हे परखने के लिए तुम मे से अनेक को बन्दीगृह मे डालेगा। और तुम दस दिन तक सताए जाओगे। तू मृत्यु का सामना करते समय भी विश्वासयोग्य बना रह और मैं तुझे जीवन का मुकुट अर्थात अनन्त, महिमामय भविष्य दूगा।[4] 11 जो सुन सकता है, वह सुने कि आत्मा कलीसियाओ से क्या कह रहा है: जो जय पाए उसे दूसरी मृत्यु के द्वारा हानि नही पहुचेगी।

12 पिरगमुन की कलीसिया[4] के अगुवे को यह पत्र लिख: यह सन्देश उसकी ओर से है जो तीक्ष्ण और दोधारी—तलवार हाथ मे पकडे है।

13 मैं अच्छी तरह जानता हू कि तू उस शहर मे रहता है जहा शैतान का सिंहासन है, शैतान की उपासना के केन्द्र स्थान मे, और तौभी तू मेरे प्रति विश्वास योग्य बना रहा, और तू ने मुझसे मुकर जाने से इन्कार किया, उस समय भी, जब मेरा विश्वास योग्य गवाह अन्तिपास शैतान के उपासको के द्वारा तुम्हारे मध्य शहीद बना। 14 और तौभी मुझे तेरे विरुद्ध कुछ बाते कहनी है। तू अपने मध्य कई

[10] मूलत "दूत कई व्याख्या करने वालों (जैसे आरिगन, जेरोम इत्यादि) का इसके अनुसार विश्वास है कि हर स्थानीय कलीसिया की देखभाल के लिए परमेश्वर की ओर से एक स्वर्गदूत नियुक्त किया जाता है।

[1] मूलत "दूत" जैसे 1 : 20 मे। [2] मूलत "जो सातो तारे अपने दाहिने हाथ मे लिए हुए हैं, और सोने की सातों दीवटो के बीच मे चलने फिरते है।" [3] नीकुलइयो, जब यूनानी से इब्रानी भाषा मे अनुवाद किया जाता है तब बिलामियो बन जाता है, उस पुरुष के अनुयायी जिसने इस्राएलियों को काम वासना के द्वारा नाश हो जाने के लिए प्रवृत किया। (प्रकाशितवाक्य 2 : 14 और गिनती 31 . 15, 16 पढिए। [4] मूलत "दूत"। 1 . 20 की टिप्पणी पढ़िए।

लोगो को सहन कर रहा है जो वैसा काम करते हैं जैसा बिलाम ने किया था जब उसने बालाक को यह सिखाया कि इस्राएल के लोगों को व्यभिचार पापो मे फसाकर और उन्हे मूर्तियो के उत्सवो मे जाने को प्रोत्साहित कर किस प्रकार नाश करे। 15 हा, तेरे मध्य ऐसे ही बिलाम[5] के कई अनुयायी हैं। 16 अपना मन और व्यवहार बदल दे, नही तो मैं अचानक तेरे पास आऊगा और अपने मुह की तलवार से उनमे युद्ध करूगा। 17 प्रत्येक जन जो सुन सकता है, सुने कि आत्मा कलीसियाओ मे क्या कह रहा है जो जय पाए, वह उस छिपे हुए मन्ना, स्वर्ग के गुप्त-भोजन मे से खाएगा, और मैं प्रत्येक को एक श्वेत पत्थर दूगा, और उस पत्थर पर एक नया नाम खुदा होगा जिसे और कोई नही जानता सिवाय उसके पाने वाले के।

18 थूआतीरा की कलीसिया के अगुवे को यह पत्र लिख : "यह सन्देश परमेश्वर के पुत्र की ओर से है, जिसकी आखें आग की ज्वालाओं के समान बेधती हैं, जिसके पैर चमकदार कासे के सदृश है। 19 मैं तेरे सब कामो को—गरीबों पर तेरी दया, उनके लिए दी गई, तेरी भेंटों और उनके प्रति तेरी सेवा—को जानता हूं, साथ ही मैं तेरे प्रेम, और विश्वास और धीरज को भी जानता हू, और मैं इन सब बातो मे तेरी निरन्तर उन्नति को देख सकता हू। 20 तौभी तुम्हारे विरुद्ध मुझे यह कहना है : तुम उस स्त्री इजेबेल को अनुमति दे रहे हो, जो अपने आप को भविष्यद्वाणी करने वाली कहती है, जिसमे वह मेरे सेवको को सिखाए कि व्यभिचार कोई गम्भीर पाप नही है, वह उन्हे प्रेरणा देती है कि वे अनैतिक आचरण करते रहें और उस मास को खाए जो मूर्तियो के आगे बलिदान किया गया है। 21 मैंने उसे समय दिया कि वह अपना मन और व्यवहार बदले, परन्तु उसने इन्कार किया। 22 अब मैं जो कुछ कह रहा हूं उस पर ध्यान दो : मैं उसे भयानक पीडा से रोगी कर खाट पर लिटा दूगा, उसके साथ उसके सब व्यभिचारी अनुयाइयों[6] को भी, यदि वे उसके साथ अपने पापो मे पश्चाताप करते हुए मेरी ओर न फिरें; 23 और मैं उसके बाल-बच्चो को मार डालूगा। जिसमें सब कलीसियाएं जान लेंगी कि मैं वही हू जो मनुष्य के हृदय और मन की गहराइयों को जाचता हू, और मैं तुममे से प्रत्येक को तुम्हारे योग्य प्रतिफल दूगा। 24, 25 और थूआतीरा के शेष तुम सब लोगो के लिए जिन्होंने इस झूठी शिक्षा को नही अपनाया है (जिससे वे "गहरी सच्चाइया" कहते हैं—जो वास्तव मे शैतान की गहराइया हैं), मैं तुमसे आगे और कुछ माग न करूगा, केवल जो तुम्हारे पास है उसे मेरे आने तक कसकर थामे रहो। 26 प्रत्येक, जो जय पाय—जो अन्त तक उन कामों को करता रहे जिनमे मैं प्रसन्न होता हू—मैं उसे देश-देश पर अधिकार दूगा। 27 तुम लोहे का राजदण्ड लिए उन पर शासन करोगे, जिस प्रकार मेरे पिता ने मुझे उन पर शासन करने का अधिकार दिया, वे मिट्टी के बर्तन के समान है जो चकनाचूर हो जाएगे। 28 और मैं तुम्हे भोर का तारा दूगा। 29 जितने सुन सकते हैं, सुनें कि आत्मा कलीसियाओ से क्या कहता है।

3 1 "सरदीस की कलीसिया के अगुवे[1] को यह पत्र लिख : यह सन्देश तुमको उसकी ओर से भेजा गया है जिसके पास परमेश्वर की मानगुणी आत्माएं[2] और सात तारे हैं। मैं जीवित और सक्रिय कलीसिया के रूप मे तुम्हारी बडाई जानता हू परन्तु तुम मृत हो। 2 अब जाग उठो। जो थोडा बहुत बचा है उसे दृढ करो—क्योंकि जो कुछ बच रहा है वह भी मरने पर है। परमेश्वर की दृष्टि मे तुम्हारे काम ठीक नही हैं। 3 जो तुमने आरम्भ मे

---

[5] मूलत "नीकुलइयों" बिलामियो के लिए यूनानी भाषा का शब्द। [6] मूलत. "जो उसके साथ व्यभिचार करते हैं।"

[1] मूलत "दूत"। 1 : 20 की टिप्पणी पढ़िए। [2] मूलत "सातगुणी आत्माएं।" 1 : 4 की टिप्पणी पढ़िए।

सुना और विश्वास किया उस तक लौट आओ, उसे दृढ़ता से पकड़े रहो और मेरी ओर फिर मुड़ जाओ। यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं चोर के समान जिसकी आशा न की गई हो अचानक आ जाऊंगा, और तुम्हें दण्ड दूंगा। 4 तौभी सरदीस में कुछ लोगों ने सांसारिक गंदगी से अपने वस्त्रों को अशुद्ध नहीं किया है वे श्वेत वस्त्रों में मेरे साथ चलेंगे, क्योंकि वे योग्य हैं। 5 जो जय पाए उसे श्वेत वस्त्र पहनाया जाएगा, और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से नहीं मिटाऊंगा, परन्तु अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने घोषणा करूंगा कि वह मेरा है। 6 जितने सुन सकते हैं, सुनें कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है।"

7 "फिलदिलफिया की कलीसिया के अगुवे[1] को यह पत्र लिखो। यह सन्देश तुम तक उसकी ओर से भेजा गया है जो पवित्र और सच्चा है, और जिसके पास दाऊद की चाभी है कि उसे खोले जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता और उसे बन्द करे जिसे कोई खोल नहीं सकता। 8 मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं, तुम सामर्थी नहीं हो, परन्तु तुमने आज्ञापालन[3] करने का प्रयत्न किया है और मेरे नाम से इन्कार नहीं किया है। इसलिए मैंने तुम्हारे लिए एक द्वार खोला है जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता। 9 इस पर ध्यान दो: जितने लोग शैतान के काम को बढ़ावा दे रहे हैं जबकि वे मेरे[4] लोग होने का दावा करते हैं (परन्तु हैं नहीं—वे झूठ बोल रहे हैं), मैं उनको तुम्हारे पावों पर गिरने और यह मान लेने को बाध्य करूंगा कि तुम ही हो जिनसे मैं प्रेम रखता हूं। 10 तुमने सताव के होते हुए भी धीरज के साथ मेरी आज्ञा मानी है इसलिए मैं तुम्हें महाक्लेश और परीक्षा के समय में[5] बचाए रखूंगा, जो इस संसार में जितने जीवित रहेंगे उन सबको परखने के लिए आएगा। 11 देखो, मैं शीघ्र आ रहा हूं[6]। उस थोड़ी सामर्थ को, जो तुम्हारे पास है, थामकर पकड़े रहो—जिससे कोई तुम्हारा मुकुट छीन न ले। 12 जो जय पाए, उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में खम्भा बनाऊंगा, वह सुरक्षित रहेगा, और फिर बाहर नहीं जाएगा, और मैं अपने परमेश्वर का नाम उस पर लिखूंगा, और वह मेरे परमेश्वर के नगर—नये यरूशलेम का, जो मेरे परमेश्वर की ओर से है स्वर्ग से नीचे उतरेगा, नागरिक होगा, और उस पर मेरा नया नाम खुदा होगा। 13 जितने सुन सकते हैं, सुनें कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है।

14 लौदीकिया के अगुवे[7] को यह पत्र लिख "यह सन्देश उसकी ओर से है जो स्थिर बना रहता है,[8] जो *विश्वासयोग्य और* उन सब बातों के, जो हैं और थी और युगानुयुग रहेंगी सच्चा साक्षी है और परमेश्वर की सृष्टि का मूल-स्रोत है 15 मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं—तुम न गर्म हो, न ठंडे, अच्छा होता कि तुम गर्म रहते या ठंडे। 16 परन्तु इसलिए कि तुम केवल गुनगुने हो, मैं तुम्हें अपने मुंह से उगल दूंगा। 17 तुम कहते हो, "मैं धनी हूं, जो कुछ मैं चाहता हूं सब मेरे पास है, मुझे किसी भी वस्तु की कमी नहीं।" और तुम यह नहीं समझते कि आत्मिक रूप से तुम कितने अभागे और दुःखी और निर्धन और अन्धे और नंगे हो। 18 मैं तुम्हें सलाह देता हूं कि अपने लिए शुद्ध सोना, जो आग में ताया हुआ हो, मुझसे खरीद लो तब ही तुम वास्तव में धनी हो सकोगे और मुझसे स्वच्छ और शुद्ध श्वेत वस्त्र खरीद लो तब, तुम नंगे और लज्जित

---

[3] मूलतः, "तुम ने मेरे वचन का पालन किया है।" [4] मूलतः, जो यहूदी बन बैठे हैं, पर हैं नहीं।" [5] या, "परखे जाने के समय मैं तुम्हें गिरने से बचाऊंगा ..." यह अनुमान यूनानी भाषा में उतना स्पष्ट नहीं है कि इसका अर्थ आने वाले भय "से बचाए रखना "है या" के पूरे समय तक बचाए रखना है।" [6] या, "अचानक," "अप्रत्याशित।" [7] मूलतः, "दूत।" 1 20 की टिप्पणी पढ़िए।" [8] मूलतः, "जो आमीन···है।"

नही रहोगे, और मुझसे दवाई ले लो ताकि तुम्हारी आखें स्वस्थ हो जाएं और तुम फिर देखने लगो। 19 मैं प्रत्येक को, जिससे मैं प्रेम करता हू, निरन्तर अनुशासन मे रखता और ताडना दिया करता हू, इसलिए मुझे तुम्हारी ताडना करनी है जब तक की तुम अपनी उदासीनता न छोडो और परमेश्वर की बातो के विषय मे उत्साही न बन जाओ। 20 "देखो! मैं द्वार पर खडा हुआ हू और मैं निरन्तर खटखटा रहा हूँ। यदि कोई मुझे पुकारते सुने और द्वार खोल दे, तो मैं भीतर आऊगा और उसके साथ सगति करूंगा और वह मेरे साथ। 21 जो जय पाए, उसे मैं अपने सिहासन के पास बैठने दूंगा। जिस प्रकार मैंने जय पाने के बाद अपने पिता के साथ उसके सिहासन पर अपना स्थान लिया। 22 जितने सुन सकते हैं, सुनें कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है।"

4 1 तब जैसे ही मैंने दृष्टि उठाई, तो मैंने स्वर्ग मे एक द्वार खुला हुआ देखा और उसी स्वर ने, जिसे मैंने पहले सुना था, जो बडी तुरही का सा जान पडता था, मुझसे कहा, "यहा ऊपर आ और मैं तुझे दिखाऊंगा कि भविष्य मे क्या क्या होना आवश्यक है।" 2 और उसी क्षण मैं आत्मा मे होकर स्वर्ग मे *आ गया और स्वर्ग की महिमा देखी! एक* सिहासन और उस पर कोई बैठा हुआ। 3 जैसे किसी जगमगाते हीरे मे या चमकते मणि से, वैसे ही उनसे भी प्रकाश की असख्य किरणें फूटी पडती थी और पन्ने के सदृश चमकता हुआ एक मेघधनुष उसके सिहासन को घेरे हुए था। 4 उसका सिहासन चौबीस छोटे सिहासनो से घिरा हुआ था, जिन पर चौबीस प्राचीन बैठे हुए थे, वे सब श्वेत वस्त्र पहने हुए थे और उनके सिरो पर सोने के राजमुकुट थे। 5 बिजली और गर्जन सिहासन मे से निकल रहे थे, और गर्जन मे कई स्वर थे। ठीक उसके सिहासन के सामने जलते हुए सात दीपक थे जो परमेश्वर की सातगुणी आत्माओं[1] को दर्शाते हैं। 6 उसके सामने बिल्लौर के समान काच का सा चमकता हुआ सागर फैला हुआ था। चार जीवित प्राणी, जिनके आगे-पीछे आँखें, ही आखें थी, सिहासन के चारो ओर खडे थे। 7 इन जीवित-प्राणियों मे से पहला एक सिह के रूप में था, दूसरा बैल के समान दिखता था, तीसरे का मुह मनुष्य का सा था, और चौथा उकाब के रूप मे था जिसके पंख फैले हुए थे। 8 इन जीवित प्राणियो मे से प्रत्येक के छ-छ पख थे, और उनके पंखो के बीच वाले भाग मे आखें ही आँखें थी। वे दिन-रात निरन्तर कहते रहते थे, "पवित्र, पवित्र, पवित्र, सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर—जो था और है, और जो आनेवाला है।" 9 और जब जीवित प्राणियो ने उसको जो सिहासन पर बैठा था और युगानुयुग जीवित है, महिमा और आदर और धन्यवाद किया, 10 तब चौबीसो प्राचीनो ने उसके सामने गिरकर उसको, जो अनन्तकाल तक जीवित हैं, दंडवत किया, और अपने मुकुट सिहासन के सामने यह गाते हुए डाले, 11 "हे प्रभु, तू महिमा और आदर और अधिकार पाने के योग्य है, क्योकि तूने सब वस्तुओ की सृष्टि की है। तेरी इच्छा के द्वारा उनकी सृष्टि हुई और *उनका अस्तित्व है।"*

5 1 और मैंने उसके दाहिने हाथ मे जो सिहासन पर विराजमान था एक पुस्तक देखी, जिसके भीतर और बाहर लिखा हुआ था, और जो सात मुहरो से *बन्द की गई थी।* 2 एक सामर्थी स्वर्गदूत बडे ऊचे स्वर मे चिल्लाकर यह प्रश्न कर रहा था, "इस पुस्तक की मुहरें तोडने और इसे खोलने के *योग्य* कौन है?" 3 परन्तु किसी को भी न स्वर्ग मे, न पृथ्वी पर और न मृतको मे उसे खोलने और पढने की अनुमति दी गई। 4 तब मैं

[1] मूलत, 'परमेश्वर की सात आत्माएं।' परन्तु जकर्याह 4 2-6 पढ़िए जहाँ दीवटो को आत्मा कहा गया है।

निराश[1] होकर रोया क्योंकि कोई इस योग्य नही था, कोई हमें उसकी लिखी हुई बातों को नही बता सकता था। 5 परन्तु चौबीस प्राचीनों मे से एक ने मुझ से कहा, "रोना बन्द कर, क्योंकि देख। यहूदा के गोत्र के सिंह, दाऊद के मूल ने विजय पाई है और इस पुस्तक के खोलने और उसकी सातो मुहरो को तोडने में उसने स्वयं को योग्य प्रमाणित किया है।" 6 मैंने दृष्टि की और एक मेम्ने को चौबीसों प्राचीनो के सामने, सिंहासन और जीवित प्राणियो के सम्मुख खडे देखा, और मेम्ने पर घाव के चिन्ह थे जो कभी उसकी मृत्यु के कारण थे। उसके सात सींग और सात आखें थी, जो परमेश्वर की सातगुणी आत्मा[2] को दर्शाते हैं, जिसे संसार के हर भाग मे भेजा गया है। 7 उसने आगे बढकर जो सिंहासन पर बैठा हुआ था उसके दाहिने हाथ मे पुस्तक ली। 8 और जैसे ही उसने पुस्तक ली, चौबीसों प्राचीन मेम्ने के सामने गिर पडे, प्रत्येक वीणा और धूप से भरे हुए सोने के कटोरे लिए हुए था—जो परमेश्वर के लोगों की प्रार्थनाएं हैं। 9 वे इन शब्दो में उसके लिए एक नया गीत गा रहे[3] थे: "आप पुस्तक को लेने और उसकी मुहरो को तोडने और उसको खोलने के योग्य हैं, क्योंकि आप बध किये गए थे, और आपके लोहू ने हर जाति में से लोगो को परमेश्वर के लिए भेंट-स्वरूप खरीदा है। 10 और आपने उनको एक राज्य मे एकत्र किया है और उनको हमारे परमेश्वर का याजक बनाया है, वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे।" 11 तब अपने दर्शन मे मैंने लाखों स्वर्गदूतों को सिंहासन और जीवित-प्राणियो और प्राचीनो को घेरे हुए गाते सुना: 12 "मेम्ना योग्य है" (उन्होने इसे जोर मे गाया!)—"मेम्ना, जो बध किया गया था। वह अधिकार, और धन, और ज्ञान, और सामर्थ और आदर, और महिमा, और आशिष पाने के योग्य है।" 13 और तब मैंने स्वर्ग और पृथ्वी, और पृथ्वी के नीचे और समुद्र मे मरे हुओं मे प्रत्येक को यह कहते सुना, "आशिष और आदर और महिमा और अधिकार युगानुयुग उसका, जो सिंहासन पर बैठा हुआ है, और मेम्ने का है। 14 और चारो जीवित—प्राणी कहते रहे, "आमीन" और चौबीसो प्राचीनों ने गिरकर उसको दण्डवत किया।

6

1 मेरे देखते, मेम्ने ने पहली मुहर तोडी और लिपटी हुई पुस्तक को खोलना आरम्भ किया। तब चारो जीवित—प्राणियो मे से एक ने, ऐसे स्वर से जो गर्जन का सा जान पडता था, कहा, "आ"। 2 मैंने देखा, मेरे सामने एक सफेद घोडा था। उसका सवार धनुष लिए हुए था, और एक मुकुट उसके सिर पर रखा गया, वह अनेक लडाइयो मे विजयी होने और युद्ध जीतने को निकला।

3 तब उसने लिपटी हुई पुस्तक की दूसरी मुहर तोडी और मैंने दूसरे जीवित—प्राणी को यह कहते सुना, "आ"। 4 इस बार एक लाल घोडा निकला। उसके सवार को एक लम्बी तलवार और यह अधिकार दिया गया कि शांति हटाकर पृथ्वी पर अराजकता लाए, सब जगह युद्ध और हत्याए होने लगी।

5 अब उसने तीसरी मुहर खोली, तब मैंने तीसरे जीवित—प्राणी को कहते सुना, "आ" और मैंने एक काला घोडा, और उसके सवार को अपने हाथ मे एक तराजू पकडे हुए देखा। 6 और चारों जीवित प्राणियो के मध्य से एक स्वर सुनाई पड़ा, बीस रुपये की एक रोटी, या एक किलो जौ का आटा[1]। परन्तु जैतून का तेल या दाखरस कुछ भी नही है[2]।"

---

[1] यही आशय है [2] मूलत "परमेश्वर की सातो-आत्माएं, "परन्तु जकर्याह 4 . 2-6, 10 पढ़िए जहां सात आँखें, सात दीवटो और आत्मा के समक्ष हैं। [3] मूलत. 'कह रहे" या कहा। [4] मूलत "कर रहे" या कहा"।

[1] मूलत, "दीनार का सेर भर गेहू और दीनार का तीन सेर जौ ..।" [2] मूलत "तेल और दाखरस की हानि न करना।"

7 और जब चौथी मुहर तोड़ी गई तो मैंने चौथे जीवित—प्राणी को यह कहते सुना, "आ"। 8 और जब मैंने एक पीला सा घोड़ा देखा, और उसके सवार का नाम मृत्यु था। और उसके पीछे दूसरा घोड़ा चला आया जिसके सवार का नाम नरक था। उन्हें पृथ्वी की एक चौथाई पर अधिकार दिया गया, कि युद्ध और अकाल और बीमारी और जंगली पशुओं से मार डालें।

9 और जब उसने पांचवीं मुहर तोड़ी, तो मैंने एक वेदी और उसके नीचे उन सब की आत्माएं देखीं जो परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के कारण और अपनी साक्षी में विश्वासयोग्य रहने के लिए शहीद हुए थे। 10 उन्होंने ऊंचे स्वर से प्रभु को पुकारा और कहा : "हे पवित्र और सच्चे, सर्वप्रधान प्रभु पृथ्वी के लोगों ने जो कुछ हमारे साथ किया है उसका न्याय करने में कितनी देर और शेष है ? आप हमारे रक्त का बदला उन सबसे जो पृथ्वी पर रहते हैं, कब लेंगे ?" 11 उन सब को श्वेत वस्त्र दिये गए, और उनसे कहा गया कि और थोड़ी देर विश्राम करें जब तक उनके दूसरे भाई, अर्थात यीशु के सेवक पृथ्वी पर शहीद होकर साथ न हो लें।

12 मैंने देखा जब उसने छठवीं मुहर तोड़ी, और बड़ा भूकम्प हुआ, और सूर्य काले वस्त्र के सदृश काला और चन्द्रमा लोहू सा लाल हो गया। 13 जब आकाश के तारे पृथ्वी[3] पर गिरते से दिखाई दिए—जैसे अंजीर के वृक्षों से, तेज आंधी की मार द्वारा गिरते हुए हरे फल। 14 और तारों भरा आकाश ऐसे लुप्त हो गया मानो पत्र के समान लपेटा गया हो, और हर एक पहाड़ और द्वीप हिल गये और अपने स्थान से हट गये। 15 और पृथ्वी के राजा, और संसार के नेता और धनी पुरुष और ऊंचे पदवाले सैनिक—अधिकारी, और छोटे-बड़े मनुष्य, दास और स्वतंत्र, लोगों ने अपने आप को गुफाओं और पहाड़ों की चट्टानों में छिपा लिया, 16 और उन्होंने पहाड़ों को पुकार कर कहा कि उन्हें कुचल डालें। उन्होंने विनती की, "हम पर पर गिर पड़ो, और हमें उसके मुख से, जो सिंहासन पर बैठा हुआ है, और मेम्ने के कोप से छिपा लो, 17 क्योंकि उसके कोप का महान दिन आ पहुंचा है, अतः उससे जीवित कौन बच सकता है ?"

7 1 तब मैंने चार स्वर्गदूतों को पृथ्वी के चारों कोनों में खड़े, चारों हवाओं को चलने से रोकते हुए देखा, जिससे वृक्षों की एक पत्ती तक नहीं खड़खड़ाई, और समुद्र शान्त हो गया। 2 और मैंने एक दूसरे स्वर्गदूत को, जीवित परमेश्वर की बड़ी मुहर लिए हुए पूर्व दिशा से आते देखा। और उसने उन चारों स्वर्गदूतों से जिन्हें पृथ्वी और समुद्र को हानि पहुंचाने का अधिकार दिया गया था, चिल्लाकर कहा, 3 "ठहरो! अभी कुछ न करो—न पृथ्वी को हानि पहुंचाओ, न समुद्र को, न वृक्षों को—जब तक हम परमेश्वर की मुहर उसके सेवकों के मस्तकों पर न लगा दें।" 4—8 कितनों को यह चिन्ह दिया गया ? मैंने गिनती सुनी...जो इस्राएल के पूरे बारह गोत्रों में से 1,44,000 थी, जैसा निम्नलिखित यहूदा 12,000, रूबेन 12,000, गाद 12,000, आशेर 12,000, नप्ताली 12,000, मनश्शिह 12,000, शमौन 12,000, लेवी 12,000, इस्साकार 12,000, जबूलून 12,000, यूसुफ 12,000, बिन्यामीन 12,000, 9 इसके बाद मैंने सब देशों, और प्रान्तों और भाषाओं के लोगों की एक बड़ी भीड़ को, जिसकी गिनती नहीं हो सकती, सिंहासन के सामने और मेम्ने के आगे, श्वेत—वस्त्र पहने हुए, और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिए खड़े देखा। 10 और वे ऊंचे स्वर से चिल्ला रहे थे, "उद्धार हमारे परमेश्वर की ओर से, जो सिंहासन पर

[3] मूलत, 'आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े।' [4] मूलत, "आकाश ऐसा सरक गया।"

है, और मेम्ने की ओर से, मिलता है।" 11 और अब सारे स्वर्गदूत सिंहासन के चारों ओर और प्राचीनों और चारों जीवित...प्राणियों के चारों ओर इकट्ठे हो रहे थे और सिंहासन के सामने गिरकर परमेश्वर को दण्डवत कर रहे थे। 12 उन्होंने कहा, "आमीन, स्तुति, और महिमा, और ज्ञान, और धन्यवाद, और आदर, और सामर्थ, युगानुयुग हमारे परमेश्वर की हो आमीन" 13 तब चौबीसों प्राचीनों में से एक ने मुझसे पूछा, "क्या तू जानता है, ये कौन है, जो श्वेत वस्त्र पहने हुए हैं, और वे कहा से आए हैं ?" 14 मैंने उत्तर दिया, "नही महाशय, कृपया मुझे बताइये।" उसने कहा, "ये वे हैं जो महाक्लेश से निकल कर आ रहे हैं, उन्होंने मेम्ने के लोहू में अपना वस्त्र धोकर श्वेत किया है। 15 इसीलिए वे यहाँ परमेश्वर के सिंहासन के सामने, उसके मन्दिर में रात दिन सेवा कर रहे हैं ? जो सिंहासन पर बैठा हुआ है वह उनको शरण देगा। 16 वे न कभी भूखे होंगे, न प्यासे, और दोपहर की कड़ी धूप में उनको पूरी तरह सुरक्षित रखा जायेगा 17 "क्योंकि सिंहासन[1] के सामने खड़ा मेम्ना उन्हें पालेगा और उन का चरवाहा होगा और उन्हें जीवन के जल के सोतों के पास ले जाएगा और परमेश्वर उनके आँसू पोंछ डालेगा।"

8 1 जब मेम्ने ने सातवीं मुहर तोड़ ली, तो सारे स्वर्ग में सन्नाटा छा गया जो ऐसे लगा, जैसे आधे घन्टे तक रहा। 2 और मैंने सात स्वर्गदूतों को देखा जो परमेश्वर के सामने खड़े रहते है, और उन्हें सात तुरहियां दी गई।

3 तब एक दूसरा स्वर्गदूत सोने का धूपदान लिए हुए आया और वेदी के पास खड़ा हो गया, और उसे ढेर सा धूप दिया गया कि परमेश्वर के लोगों की प्रार्थनाओं के साथ मिलाए और उसे सिंहासन के सामने सोने की वेदी पर चढ़ा दे। 4 और प्रार्थनाओं के साथ मिली हुई धूप की सुगंध वेदी पर से जिसे स्वर्गदूत ने उडेला था, परमेश्वर तक पहुंची। 5 तब स्वर्गदूत ने धूपदान को वेदी के अंगारों से भरा और उसे पृथ्वी पर नीचे फेंक दिया, और बडी ज़ोर का गर्जन और गड़गड़ाहट का शब्द हुआ, बिजलियां चमकी और भयानक भूकम्प आया।

6 तब सात तुरहियां लिए हुए सातों स्वर्गदूत, बड़ी ज़ोर से फूंकने को तैयार हुए।

7 पहले स्वर्गदूत ने अपनी तुरही फूंकी, और पृथ्वी पर लोहू मिश्रित ओले फेंके तथा आग गिराई गई। अतः पृथ्वी के एक तिहाई भाग में आग लग गई जिसमें एक तिहाई वृक्ष, और सब हरी घास जल गई।

8, 9 तब दूसरे स्वर्गदूत ने अपनी तुरही फूंकी, और जो एक बड़ा भारी जलता हुआ पर्वत सा दिखाई देता था वह समुद्र में फेंका गया, जिसमें सब जहाज़ नष्ट हो गए और समुद्र का एक तिहाई भाग रक्तमय[1] हो गया, और एक तिहाई मछलियाँ मर गयी।

10 तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, और एक बड़ा जलता हुआ तारा आकाश से नदियों और सोतों की एक तिहाई पर गिर पड़ा। 11 वह तारा कड़ुवाहट[2] कहलाया, क्योंकि उसने पृथ्वी के पूरे जल के एक तिहाई को विषैला कर दिया और बहुत से लोग मर गए।

12 चौथे स्वर्गदूत ने अपनी तुरही फूंकी और तत्काल सूर्य का एक तिहाई और चन्द्रमा और तारों का एक तिहाई भाग नष्ट और अन्धकारमय हो गया, जिससे दिन का एक तिहाई प्रकाश कम हो गया, और रात्रि का अन्धकार और भी गहरा हो गया।

[1] मूलत, "जो सिंहासन के बीच में है।" अर्थात ठीक आगे, एक ओर नहीं। दूसरी रीति से यह भी कह सकते हैं, "सिंहासन के केन्द्र में।"

[1] मूलत, "लोहू हो गया।" [2] मूलत, "नागदौना।"

13 जब मैं देख रहा था तो मैंने एक अकेले उकाब को आकाश मे उडने और ऊचे स्वर मे चिल्लाते सुना, "जब शेष तीन स्वर्गदूत अपनी तुरहिया फूकेंगे तब जो भयानक बातें शीघ्र होगी, उनके कारण पृथ्वी के लोगो पर हाय, हाय, हाय।"

9 1 तब पाचवे स्वर्गदूत ने अपनी तुरही फूकी और मैंने किसी[1] को देखा जो स्वर्ग मे पृथ्वी पर गिर गया था, और उसे अथाह-कुण्ड की चाभी दी गई। 2 जब उसने उसे खोला, तो उसमे से ऐसा धुआ निकला जैसे मानो किसी बडी भट्ठी मे से निकल रहा हो, और धुए मे सूर्य और वायु मण्डल अन्धकारमय हो गए। 3 तब धुए मे से टिड्डिया निकली और पृथ्वी पर नीचे उतर गई और उन्हें बिच्छुओं के समान डक मारने की सामर्थ दी गई। 4 उनसे कहा गया कि घास या पौधो या वृक्षो को हानि न पहुचाना, परन्तु उन लोगो पर आक्रमण करें जिनके मस्तको पर परमेश्वर का चिन्ह नही था। 5 उन्हे उनको मारना नही था, परन्तु—पाच माह तक बिच्छुओं के डक मारने की पीडा के सदृश यातना पहुचाना था। 6 उन दिनो लोग स्वय को मार डालने का प्रयत्न करेंगे—परन्तु नही मर सकेंगे—मृत्यु नही आएगी। वे मरने की लालसा करेंगे...परन्तु मृत्यु दूर भागेगी। 7 वे टिड्डिया घोडो के समान दिखाई देती थी जो युद्ध के लिए सुसज्जित हैं। उनके सिरो पर कुछ ऐसा था जो सोने के मुकुट जैसा दिखता था, और उनके मुख पुरुषो जैसे दिखते थे। 8 उनके बाल स्त्रियो के से लम्बे थे, और उनके दात सिहो के से थे। 9 वे कवच पहिने हुए थे जो लोहे के बने लगते थे, और उनके पखो की आहट ऐसी थी जैसी युद्ध के लिए दौडती हुई रथों की सेना की आवाज। 10 उनकी पूँछें बिच्छुओं के समान डक मारने वाली थीं, और उनकी हानि पहुचाने वाली शक्ति, जो उनको पाच माह के लिए दी गई थी, उनकी पूछो मे थी। 11 उनका राजा अथाह-कुण्ड का राजकुमार है, जिसका नाम इब्रानी मे अबद्दोन, और यूनानी मे अपुल्लयोन और हिन्दी मे हानिकारक है। 12 एक विपत्ति तो अब अन्त हुआ, परन्तु दो और आने वाली है।

13 छठवें स्वर्गदूत ने अपनी तुरही फूकी और मैंने परमेश्वर के सिंहासन के सामने रखी सोने की वेदी के चार सीगो मे से एक स्वर को, 14 छठवें स्वर्गदूत से यह कहते सुना, "महानदी फरात मे बधे हुए चार शक्तिशाली दुष्टात्माओं को खोल दो।" 15 वे उस वर्ष और माह और दिन और घन्टे के लिए तैयार रखे गए थे, और अब वे खोल दिए गए थे कि सारी मानवजाति की एक तिहाई को मार डालें। 16 बीस करोड़[3] योद्धाओं[4] की सेना उनके पीछे हो ली—यह कितने थे, यह घोषणा मैंने सुनी। 17, 18 मैंने अपने दर्शन मे उनके घोडों को फैलते देखा, उनके सवार आग सी लाल कवच पहने थे, यद्यपि कुछ का रग आकाश सा नीला और कुछ का पीला था। घोडो के सिर बहुत कुछ सिंहो जैसे दिखते थे, और उनके मुखो से धुआ और आग और जलती हुई गन्धक निकलती थी, जिससे सारी मानवजाति का एक तिहाई भाग मर गया। 19 मार डालने की उनकी शक्ति न केवल उनके मुह मे थी, परन्तु उनकी पूँछों मे भी, क्योंकि उनकी पूँछ साप के सिर जैसी थी, जिनके मारने और काटने मे घातक चोट पहुचती थी। 20 परन्तु इन विपत्तियो के बाद शेष जीवित

[1] मूलत "स्वर्ग से पृथ्वी पर एक तारा गिरता हुआ देखा।" यह अस्पष्ट है कि यह व्यक्ति शैतान की ओर सा है जैसे अधिकाश टीकाकार विश्वास करते है, या इसका सकेत मसीह की ओर है। [2] मूलत "(गिरे हुए) स्वर्गदूतो।" [3] यदि यह शाब्दिक अक है, तो अब निकट भविष्य मे ससार की 6,00,00,00,000 की जनसख्या का ध्यान मे रखकर इस पर विश्वास नही किया जा सकता। अकेले चीन मे, 1961 मे, "अस्त्रो से सुसज्जित और सगठित सेना की अनुमानित सख्या 20,00,00,000 थी।" (एसोशियेटिड प्रेस रीलिज, अप्रैल 24, 1964)। [4] मूलत "घुड़सवारों।"

लोगो ने अब भी परमेश्वर की आराधना करने से इन्कार किया। उन्होंने न दुष्टात्माओ की, न सोने और चादी, न पीतल, पत्थर, और न लकडी की बनी अपनी मूर्तियों की पूजा करना छोडा—जो न देखती, न सुनती, न चलती हैं। 21 न ही उन्होंने अपनी हत्याओं और टोने, अपने व्यभिचार और चोरियों के विषय मे अपना मन और व्यवहार बदला।

10 1 तब मैने दूसरे सामर्थी स्वर्गदूत को, एक बादल से घिरे हुए, स्वर्ग से उतरते देखा, उसके सिर पर एक मेघ धनुष था, उसका मुख सूर्य के सदृश चमकता था और उसके पैर आग से जगमगाते थे। 2 और वह अपने हाथ मे एक खुली हुई पुस्तक पकडे था। उसने अपना दाहिना पाव समुद्र मे और अपना बायां पाव पृथ्वी पर रखा : 3 और ऊंचे स्वर से चिल्लाया —जो सिंहो के गरजने के समान लगा—और उसके प्रत्युत्तर मे सातो गर्जन भी गरजने लगे। 4 उन गर्जनों ने क्या-क्या कहा, यह मैं लिखने ही को था कि स्वर्ग से मुझे किसी स्वर ने पुकारा, "मत लिख। उनके शब्द प्रगट करने के लिए नही हैं।" 5 तब समुद्र और धरती पर खडे हुए सामर्थी स्वर्गदूत ने अपना दाहिना हाथ स्वर्ग की ओर ऊपर उठाया, 6 और उसकी शपथ ली जो युगानुयुग जीवित है, जिन्होंने स्वर्ग और उसमें का सब कुछ और पृथ्वी और उसके अन्तर्गत सब कुछ, और समुद्र और उसके प्राणियो की सृष्टि की, कि अब और देर न होगी 7 परन्तु जब सातवा स्वर्गदूत अपनी तुरही फूकेगा, तब परमेश्वर की गुप्त योजना—जो वर्षों से छिपी हुई थी जब मे उसकी सूचना उसके सेवक भविष्यद्वक्ताओ के द्वारा दी गई थी —पूरी की जाएगी। 8 तब स्वर्ग से एक स्वर ने मुझसे फिर कहा, "जा, और उस बिना लिपटे हुए पात्र को उस सामर्थी स्वर्गदूत से ले ले जो समुद्र और धरती पर खडा है।" 9 इसलिए मैं, उसके पास पहुचा और मैंने उससे कहा कि वह पुस्तक मुझे दे। उसने कहा, "हा, इसे ले और खा। पहले तो इसका स्वाद मधु जैसे लगेगा, परन्तु जब तू इसे निगल लेगा, तब यह तेरा पेट कडवा कर देगी।" 10 इसलिए मैंने उसके हाथ मे उसे ले लिया, और उसे खा लिया, और ठीक जैसा उसने मुझसे कहा था, वह मेरे मुह मे मीठी लगी, परन्तु जब मैंने उसे निगला तब उससे मेरे पेट मे पीडा हुई। 11 तब उसने मुझसे कहा, "तुझे बहुत से लोगों, देशो, कुलो और राजाओ के विषय मे आगे भविष्यवाणी करनी है।"

11 1 अब मुझे नापने की एक छडी दी गई और मुझसे कहा गया कि मै जाकर परमेश्वर के मन्दिर को और भीतरी आगन को जहा वेदी है, नापूं और आराधना करने वालो[1] की सख्या गिनूं। 2 परन्तु मुझसे कहा गया, बाहरी आगन को मत नाप क्योंकि वह देश-देश के लोगो को सौप दिया गया है। वे पवित्र-नगर को बयालीस महिनों[2] तक रौदेंगे। 3 और मैं अपने दो साक्षियो को सामर्थ दूगा कि वे टाट ओढे हुए 1260 दिनों[2] तक भविष्यद्वाणी करें। 4 ये दोनो भविष्यद्वक्ता जैतून के दो वृक्ष[3] और दो दीवट है जो सारे ससार के परमेश्वर के सामने खडे रहते है। 5 जो भी उनकी हानि करने का प्रयत्न करेगा वह उनके मुह से निकलने वाली आग की लपटों मे मार डाला जाएगा। 6 उनको यह अधिकार है कि आकाश को बन्द कर दें ताकि उनकी भविष्यवाणी के साढे तीन वर्ष तक वर्षा न हो, और नदियो और समुद्र को रक्त मे बदल दें, और जब चाहे पृथ्वी पर हर प्रकार का कष्ट भेजें। 7 जब वे अपनी गम्भीर साक्षी के साढे तीन वर्ष पूरे कर लेंगे, तब वह निर्दयी और अन्यायी राजा जो अथाह

[1] मूलत. "उठो, परमेश्वर के मन्दिर और वेदी को तथा उसमे भजन करने वालों को नाप लो।" [2] साढे तीन वर्ष, जैसे दानिय्येल 12 . 7 मे है। [3] जकर्याह 4 . 3, 4, 11।

कुण्ड[4] से निकला है उनके विरुद्ध युद्ध छेड़ देगा जीतेगा और उनको मार डालेगा। 8, 9 और साढ़े तीन दिन तक उनके शव यरूशलेम नगर (जिसे "सदोम" और "मिस्र" ठीक ही कहा गया है) की सड़कों पर खुले पड़े रहेंगे—उसी नगर में तो जहां उनके प्रभु भी क्रूस पर चढ़ाए गए थे। उन्हें गाड़ने की अनुमति किसी को नहीं दी जाएगी, और अनेक देशों के लोग उन पर दृष्टि करने के लिए वहां इकट्ठे होंगे। 10 और वह संसार भर में छुट्टी का दिन होगा —लोग हर स्थान में आनन्द मनाएंगे और एक-दूसरे को उपहार देंगे और उन दोनों—भविष्यद्वक्ताओं को, जिन्होंने उन्हें बहुत दुःख पहुंचाया था, मृत्यु का उत्सव मनाने के लिए भोज देंगे। 11 परन्तु साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर की ओर से जीवन की आत्मा उनमें प्रवेश करेगी और वे खड़े हो जाएंगे। और सब पर बहुत भय छा जाएगा। 12 तब स्वर्ग में एक ऊंचा स्वर सुनाई देगा, "ऊपर आ जा।" और वे अपने शत्रुओं के देखते-देखते बादल में स्वर्ग तक उठ जाएंगे। 13 उसी समय एक भयानक भूकम्प आएगा जिसमें नगर का एक दसवां भाग गिर जाएगा और 7000 मनुष्य मर जाएंगे। तब शेष लोग भयभीत होकर, स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा करेंगे।

14 दूसरी विपत्ति, बीत गई, परन्तु तीसरी शीघ्र आने पर है।

15 पर ठीक उसी समय सातवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, और कई ऊंचे स्वर की आवाजें स्वर्ग से सुनाई दी, "इस संसार का राज्य अब परमेश्वर का, और उसके मसीह का है, और वह युगानुयुग राज्य करेगा।"[5] 16 और चौबीस प्राचीनों ने, जो परमेश्वर के सामने अपने सिंहासनों पर बैठे थे, गिरकर दण्डवत करते हुए यह कहा। 17 "हम धन्यवाद करते हैं, सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का जो है और था, क्योंकि अब उसने अपना बड़ा अधिकार अपने ऊपर ले लिया है, और राज्य करना आरम्भ कर दिया है। 18 देश-देश के लोग उसमें क्रोधित थे, परन्तु अब उसकी बारी है कि उन पर क्रोध करे। यह समय आ गया है कि वह मृतकों का न्याय करे, और अपने सेवकों—भविष्यवक्ताओं और उनके समान अन्य लोगों को, जितने उसके नाम का भय मानते हैं, बड़े-छोटे दोनों को प्रतिफल दे और उनको नाश करे जो पृथ्वी के विनाश का कारण हुए हैं।"

19 तब, स्वर्ग में, परमेश्वर का मन्दिर खोला गया और भीतर वाचा का सन्दूक देखा जा सकता था। बिजली चमकी, बड़ी जोर का गर्जन और गड़गड़ाहट का शब्द हुआ, और ओलों की बड़ी आंधी आई और संसार भारी भूकम्प में हिल गया।

12 1 तब स्वर्ग में एक बड़ा जुलूस प्रकट हुआ जिसने भविष्य में होने वाली बातों को चित्रित किया। मैंने एक स्त्री को सूर्य ओढ़े देखा, जिसके पावों तले चन्द्रमा था, और जिसके सिर पर बारह तारों का मुकुट था। 2 वह गर्भवती थी और पुत्र जनने की प्रतीक्षा में प्रसव पीड़ा से चिल्ला रही थी। 3 अचानक एक लाल अजगर दिखाई दिया, जिसके सात सिर और दस सींग, और सिरों पर सात मुकुट थे। 4 उसने अपनी पूंछ से आकाश के तारों का एक तिहाई भाग खींच लिया, जिन्हें उसने पृथ्वी पर फेंक दिया। वह उस स्त्री के सामने, जो सन्तान उत्पन्न करने ही पर थी, तैयार खड़ा हो गया कि जितनी जल्दी वह बालक पैदा हो उसे खा जाए। 5 स्त्री ने एक पुत्र को जन्म दिया, जो कठोरता से सब देशों पर राज्य करने वाला था, वह परमेश्वर और उसके सिंहासन तक उठा लिया गया। 6 स्त्री जंगल में भाग गई, जहां परमेश्वर ने उसके लिए एक स्थान तैयार किया

[4] प्रकाशितवाक्य 9 : 11। [5] या "इस दिन से अनन्तकाल तक प्रभु और उसके अभिषिक्त का पृथ्वी पर राज्य [illegible]"

था, कि वह 1260 दिन तक उसकी देखभाल करे।

7 जब स्वर्ग मे युद्ध हुआ, तो मीकाईल और अन्य उनके आधीन स्वर्गदूतो ने, अजगर और गिराए गए स्वर्गदूतो की सेना के साथ युद्ध किया। 8 और युद्ध में अजगर की हार हुई और वह स्वर्ग से बलपूर्वक निकाला गया। 9 इस बडे अजगर—उस पुराने सर्प को जो दुष्टात्मा और शैतान कहलाता है, तथा पूरे ससार को धोखा देता है—पृथ्वी पर उसकी सारी सेना के साथ फेंक दिया गया। 10 तब मैंने ऊंचे स्वर मे स्वर्ग पर से यह चिल्लाते हुए सुना, "अन्तत. यह हो ही गया। परमेश्वर का उद्धार और सामर्थ और राज्य, और उसके मसीह का अधिकार अन्त मे यहा है, क्योकि हमारे भाइयो पर दोष लगाने वाला स्वर्ग से पृथ्वी पर फेंक दिया है...वह रात-दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाता था। 11 उन्होंने उसे मेम्ने के लोहू और अपनी साक्षी के द्वारा हरा दिया है, क्योंकि उन्होंने अपने जीवनो से प्रेम नहीं किया, परन्तु उन्हे उसके लिए दे दिया। 12 हे स्वर्ग आनन्दित हो। हे स्वर्ग के नागरिको, आनन्दित होओ। प्रसन्न होओ। परन्तु हाय तुम पर पृथ्वी के लोगो क्योकि शैतान यह जानते हुए कि उसके पास थोडा समय है, बडे क्रोध मे पृथ्वी पर तुम तक उतर आया है।"

13 और जब अजगर ने स्वय को पृथ्वी पर गिरे पाया, तो उसने उस स्त्री को सताया जिसने बालक को जन्म दिया था। 14 परन्तु उसे बडे उकाब के समान दो पख दिए गए, कि उडकर जगल मे उस स्थान को जाए जो उसके लिए तैयार किया गया था, जहा साढे तीन वर्ष[1] तक उसकी देख-भाल की गई और उसे उस अजगर, सर्प से बचाया गया। 15 और सर्प के मुह मे जल की बडी बाढ वेग मे बाहर निकली कि उस स्त्री का नाश कर दे। 16 परन्तु पृथ्वी ने अपना मुह खोलकर बाढ को निगलने के द्वारा उसकी सहायता की। 17 तब क्रोधित अजगर उसकी शेष सन्तानो पर आक्रमण करने को निकला...उन सब पर जो परमेश्वर की आज्ञाओ का पालन कर रहे थे और साक्षी दे रहे थे कि वे यीशु के हैं। वह समुद्र तट पर प्रतीक्षा करता हुआ खडा रहा।

13 1 और अब, अपने दर्शन मे, मैने एक विचित्र जन्तु को समुद्र मे से निकलते देखा। उसके सात सिर और दस सीग और उसके सीगो पर दस मुकुट थे। और हर सिर पर परमेश्वर का तिरस्कार और अनादर करते हुए, परमेश्वर की निन्दा करने वाले नाम लिखे हुए थे। 2 यह जन्तु चीते के समान दिखता था परन्तु उसके पैर भालू के और मुह सिह का था। और अजगर ने उसे अपनी शक्ति, सिहासन और बडा अधिकार दिया। 3 मैंने देखा कि उसके एक सिर पर इतना बडा घाव है जो ऐसा लगता है कभी ठीक नही हो सकेगा—परन्तु वह घातक घाव ठीक हो गया। इस आश्चर्यकर्म मे सारे ससार के लोग आश्चर्य-चकित रह गए और भय मे उस जन्तु के पीछे हो लिए। उन्होंने उसे ऐसी शक्ति देने के लिए अजगर की पूजा की और उन्होंने उस विचित्र जन्तु की भी पूजा की। 4 उन्होंने कहा, "क्या उसके समान महान कही कोई और है? उससे कौन लड सकता है?" 5 तब अजगर ने उस जन्तु को प्रभु की बडी निन्दा करने को उसकाया, और बयालीस महीनो तक पृथ्वी पर नियत्रण करने का अधिकार उसे दिया। 6 इतने समय तक उसने परमेश्वर के नाम की और उसके मन्दिर और उन सबकी जो स्वर्ग मे रहते है निन्दा की। 7 अजगर ने उसे परमेश्वर के लोगो[1] से लडने और उन पर विजयी होने, और ससार

[1] मूलत "एक समय, और समयों, और आधे समय तक।"

[1] मूलत "उसे यह अधिकार दिया गया कि पवित्र लोगों से लडे।"

भर के सब देशो और भाषा बोलने वाले लोगो पर राज्य करने की शक्ति दी। 8 और सारी मानव जाति ने—जिनके नाम संसार की सृष्टि से पहले, वध[2] किए हुए मेम्ने के जीवन की पुस्तक मे नही लिखे गए थे उस दुष्ट जन्तु की पूजा की। 9 जो कोई सुन सकता है, ध्यान से सुने 10 परमेश्वर के लोग, जिनके लिए बन्दीगृह मे जाना निश्चित किया गया है, वे कैद करके ले जाए जाएगे जिनके लिए मृत्यु निश्चित है वे मार डाले जाएगे[3] परन्तु निराश न होना, क्योंकि वीरता मे सहने और भरोसा रखने का यह तुम्हारे लिए अवसर होगा।

11 तब मैंने दूसरे विचित्र पशु को देखा यह पृथ्वी मे से निकल रहा था, मेम्ने के समान उसके दो छोटे सीग थे परन्तु अजगर जैसी भयानक आवाज थी। 12 वह उस जन्तु के सब अधिकारो को काम मे लाता था जिसका प्राण घातक-घाव लगा हो गया था, जिसकी पूजा वह सारे संसार मे करवाता था। 13 वह ऐसे आश्चर्यकर्म करता था, जिन पर विश्वास करना सरल नही, जैसे सबके देखते-देखते आकाश से आग बरसाना। 14 इन आश्चर्यकर्मों के द्वारा, वह सब स्थानो के लोगो को धोखे मे डाल रहा था। वह इन आश्चर्यकर्मों को उसी समय कर सकता था जब कभी वह पहला जन्तु उसे देखने के लिए वहा रहता था। और उसने संसार के लोगो को आज्ञा दी कि वे उस पहले जन्तु की बडी प्रतिमा बनाए जिसे प्राण घातक-घाव लगा था और फिर जीवित हो गया था। 15 उसे यह अनुमति दी गई कि वह इस प्रतिमा मे श्वास डाले और यहा तक कि वह बोलने लगे। तब उस प्रतिमा ने आज्ञा दी कि जो कोई उसकी पूजा करने से इन्कार करे वह मार डाला जाए। 16 उसने बडे-छोटे, धनी-निर्धन, दास और स्वतन्त्र सबसे कहा कि वे अपने दाहिने हाथ में या मस्तक पर एक विशेष चिन्ह अवश्य खुदवाएं। 17 और बिना उस चिन्ह के, जो या तो उस जन्तु का नाम था या फिर उसके नाम का गुप्त अंक था, किसी को कोई नौकरी नही मिल सकती थी, और न ही वह किसी दूकान से कुछ खरीद सकता था। 18 यहां एक पहेली है, जिसे हल करने के लिए ध्यान से सोचने की आवश्यकता है। जो योग्य है, इस गुप्त अंक का अर्थ बताए उसके नाम के अक्षरों का संख्यात्मक मान 666[4] होता है।

14 1 तब मैंने एक मेम्ने को यरूशलेम में सिय्योन पर्वत पर खडे देखा और उसके संग 1,44,000 जन थे जिनके माथों पर उसका नाम और उसके पिता का नाम लिखा हुआ था। 2 और मैंने स्वर्ग से बडे जलप्रपात का सा या बहुत जोर के गर्जन का सा शब्द सुना वह स्वर वीणा के साथ गाती हुई गायन-मण्डली का था। 3 इस विशाल गायनमण्डली ने...जिसमे 1,44,000 जन थे...परमेश्वर के सिहासन के सामने और चारों जीवित प्राणियो और चौबीसों प्रचीनों के आगे एक सुन्दर नया गीत गाया, और इन 1,44,000 के अतिरिक्त, जो पृथ्वी पर बचाए गए थे, कोई इस गीत को नही गा सकता था। 4 क्योंकि वे आत्मिक रूप से शुद्ध, कुवारियों[1] के सदृश पवित्र हैं, जो मेम्ने के पीछे, जहां कही वह जाएं, हो लेते हैं। वे परमेश्वर और मेम्ने के लिए पवित्र-बलिदान के रूप मे पृथ्वी पर लोगों के मध्य मे से खरीदे

[2] या "वे जिनके नाम ससार की उत्पत्ति से पहले वध किए हुए मेम्ने के जीवन की पुस्तक मे नहीं लिखे हुए थे।" यह इस प्रकार समझा जाता है कि मानो वह परमेश्वर की सनातनयोजना तथा ज्ञान में पहले ही से घात किये गये हो। [3] या, "यदि कोई तुम्हे बन्दी बनाये, तो वह भी बन्दी बनाया जाएगा। यदि कोई तुम्हे मार डाले, तो वह भी मार डाला जाएगा।" [4] कुछ हस्तलिपियो में "616" लिखा है। [2] मूलत "जो लोग प्रभु में मरते है।"

[1] मूलत "ये वे है, जो स्त्रियों के साथ अशुद्ध नही हुए, पर कुंवारे है।" [2] मूलत ...

...12 से स्पष्ट है कि मृत्यु मसीह के लिए सताव सहने के कारण हुई है।

गए हैं। 5 कोई भी झूठा दोष उन पर नही लगाया जा सकता, वे निर्दोष हैं।

6 और मैंने दूसरे स्वर्गदूत को आकाश पर उड़ते देखा, जो पृथ्वी पर रहने वालो मे से हर देश, कुल, भाषा और लोगों को प्रचार करने के लिए अनन्त शुभ सन्देश लिए हुए था। 7 उसने चिल्लाकर कहा, "परमेश्वर का भय मानो और उसकी महानता की अत्यन्त प्रशंसा करो। क्योंकि समय आ पहुंचा है जब वह न्यायी होकर बैठेगा उसकी आराधना करो, जिसने स्वर्ग और संसार, समुद्र और उसके सब सोतों को बनाया है।

8 तब आकाश मे से होते हुए दूसरा स्वर्गदूत यह कहते हुए उसके पीछे आया, "वह महानगर बाबुल गिर पड़ा क्योंकि उसने संसार के देशों को बहकाया और उन्हें अपनी अशुद्धता और पाप भरे प्याले मे से पिलाया।"

9 और एक तीसरा स्वर्गदूत यह चिल्लाते हुए उनके पीछे हो लिया, जो कोई समुद्र में से निकले हुए जन्तु और उसकी मूर्ति की पूजा करे और उसका चिन्ह अपने मस्तक या हाथ पर ले, 10 उसे परमेश्वर के क्रोध की मदिरा पीनी होगी, वह बिना किसी मिलावट के परमेश्वर के क्रोध के प्याले मे उडेली गई है। और वे पवित्र स्वर्गदूत और मेम्ने के सामने आग और जलते हुए गधक से पीड़ित किए जाएंगे। 11 उनकी तीव्र यातना का धुआ युगानुयुग उठता रहेगा, और उन्हे रात-दिन तनिक चैन भी नही मिलेगा क्योंकि उन्होंने जन्तु और उसकी मूर्ति की पूजा की है, और उसके नाम का गुप्त अंक गुदवाया है। 12 हर परीक्षा और सताव को धीरज के साथ सह लेने में यह परमेश्वर के लोगों को उत्साहित करे, क्योंकि उसके भक्त वे हैं जो उसकी आज्ञाओं को मानते रहते और यीशु पर विश्वास रखने मे अन्त तक दृढ बने रहते है।

13 फिर मैंने अपने ऊपर स्वर्ग मे यह कहते हुए एक स्वर सुना, "इसे लिख : अन्त मे उसके शहीदों के लिए वह समय आ ही पहुंचा है कि वे अपना पूरा प्रतिफल पाए। हा, आत्मा कहता है, वे सचमुच आशिषित हैं क्योंकि अब वे अपने सारे परिश्रम और परिक्षाओ से विश्राम पाएगे, क्योंकि उनके भले कार्य स्वर्ग तक उनके पीछे हो लेते हैं।

14 तब दृश्य बदला और मैंने एक श्वेत बादल और उस पर किसी को बैठे हुए देखा जो यीशु के समान था। जिसे मनुष्य का पुत्र कहा जाता था,[3] "उसके सिर पर चोखे सोने का मुकुट और हाथ मे एक तेज हसुआ था। 15 तब मन्दिर से एक स्वर्गदूत ने निकलकर उसे पुकारा, "हसुआ चलाना आरम्भ कर दे, क्योंकि तेरे लिए काटने का समय आ पहुंचा है, ससार में फसल पक कर तैयार हो चुकी है।" 16 इस पर बादल मे बैठे हुए पुरुष ने पृथ्वी पर अपना हंसुआ चलाया, और फसल इकट्ठी की गई।

17 इसके बाद स्वर्ग के मन्दिर से दूसरा स्वर्गदूत निकला, और उसके पास भी एक तेज हसुआ था। 18 ठीक इसी समय उस स्वर्गदूत ने, जिसे आग[4] के द्वारा ससार को नष्ट करने की शक्ति प्राप्त है, हंसुआ पकड़े हुए स्वर्गदूत से पुकार कर कहा, "पृथ्वी की दाखलताओ में से दाख के गुच्छे काटने मे अब अपना हसुआ काम मे लाओ, क्योंकि वे न्याय के लिए अच्छी तरह पक चुके हैं।" 19 इस पर स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर अपना हसुआ चलाया और अंगूरो को परमेश्वर के क्रोध के बड़े मदिराकुन्ड में डाल दिया। 20 और नगर के बाहर मदिराकुण्ड मे दाख को रौंदा गया, और लोहू की धारा 200 मील लम्बी और घोड़ो की लगाम की ऊचाई तक बही।

15 1 और मैंने स्वर्ग में एक दूसरा बड़ा जुलूस प्रगट होते देखा जो आने वाली बातों को प्रकट कर रहा था। सात स्वर्गदूतों को नीचे पृथ्वी पर सात अन्तिम विपत्तिया

[3] मूलत "मनुष्य के पुत्र जैसा कोई।" [4] मूलत "जिसे आग पर अधिकार था।"

लाने का काम सौंपा गया और तब परमेश्वर का क्रोध समाप्त हो जाएगा।

2 मेरे सामने आग और काच का सागर सा फैला हुआ प्रतीत होता था, और उस पर वे सब खड़े थे जो उस दुष्ट जन्तु और उसकी मूर्ति और उसके चिन्ह और गुप्त अंक पर विजयी हुए थे।

सब परमेश्वर की वीणाएं पकड़े हुए थे, 3, 4 और वे परमेश्वर के सेवक मूसा का गीत, और मेम्ने का गीत गा रहे थे।

"महान और चमत्कार भरा है तेरा काम, सर्वशक्तिमान प्रभु-परमेश्वर। न्यायी और सत्य, है तेरे मार्ग, हे युग-युग के राजा, हे प्रभु! कौन तुझ से नहीं डरेगा, और तेरे नाम की महिमा नहीं करेगा? क्योंकि केवल तू ही पवित्र है। सारी जातियां आएंगी, और तेरे सामने दण्डवत करेंगी क्योंकि तेरे न्याय के काम, प्रकट किये गए हैं।

5 तब मैंने दृष्टि की और देखा कि स्वर्ग के मन्दिर का परमपवित्र स्थान खोला गया है। 6 तब सातों स्वर्गदूत जिन्हें सात-विपत्तियों के उंडेलने का काम सौंपा गया था, बिना किसी धब्बे के श्वेत मलमल पहने, और अपनी छाती पर सोने का पट्टा बांधे हुए, मन्दिर में से निकले। 7 और चारों प्राणियों में से एक ने उनमें से प्रत्येक को जीवित परमेश्वर का, जो युगानुयुग जीवित है, भयानक-क्रोध से भरा हुआ सोने का एक-एक कटोरा दिया।

8 उनके तेज और सामर्थ के कारण मन्दिर धुएं से भर गया, और कोई अन्दर नहीं जा सका जब तक सातों स्वर्गदूतों ने सातों विपत्तियों को समाप्त न कर लिया।

16 1 और मैंने मन्दिर में से किसी को बड़े ऊंचे स्वर में चिल्ला कर सातों स्वर्गदूतों से यह कहते सुना, "अब अपने मार्ग पर जाओ और परमेश्वर के क्रोध के सातों कटोरों को पृथ्वी पर उंडेल दो।"

2 इस पर पहला स्वर्गदूत मन्दिर से निकला और उसने पृथ्वी पर अपना कटोरा उंडेल दिया, और हर एक के जिस पर जन्तु का चिन्ह था और जो उसकी मूर्ति की पूजा कर रहा था। भयंकर दुःखदायी फोड़े निकले।

3 दूसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा समुद्रों पर उंडेला, और वे मृत मनुष्य के पानी जैसे लोहू के समान बन गया, और सारे समुद्रों में के सब प्राणी मर गये।

4 तीसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा नदियों और सोतों पर उंडेला और वे लोहू बन गया 5 और मैंने पानी के इस स्वर्गदूत को यह कहते सुना, "हे पवित्र जन जो है और जो था तू इस दण्ड को भेजने में न्यायी है, 6 क्योंकि तेरे भक्त और भविष्यद्वक्ता शहीद हो चुके हैं और उनका रक्त पृथ्वी पर उंडेला जा चुका है, और अब, बदले में, तूने उनके हत्यारों का रक्त उंडेला है, यह इनका उचित प्रतिफल है।" 7 और मैंने वेदी[1] के स्वर्गदूत को कहते सुना, "हां, सर्वशक्तिमान प्रभु-परमेश्वर, तेरे दण्ड न्यायपूर्ण और सच्चे हैं।" 8 तब चौथे स्वर्गदूत ने सूर्य पर अपना कटोरा उंडेला, जिसके कारण वह ऐसा हो गया कि सब मनुष्यों को अपनी आग से झुलसा डाले। 9 सब इस तेज गर्मी से जल गए और उन्होंने परमेश्वर के नाम को धिक्कारा। जिसने विपत्तियां भेजी थीं उसने न अपना मन बदला और न अपना व्यवहार ही कि उसको महिमा दें।

10 तब पांचवें स्वर्गदूत ने समुद्र से निकले जन्तु के सिंहासन पर अपना कटोरा उंडेला और उसका राज्य अंधकार में डूब गया। और उसकी प्रजा पीड़ा से अपनी जीभ चबाने लगी, 11 और उसने अपने दुःखों और फोड़ों के लिए स्वर्ग के परमेश्वर को धिक्कारा, परन्तु उन्होंने अपने सब बुरे कामों से पश्चाताप करने से इन्कार किया।

1. "मैंने वेदी से यह शब्द सुना।"

12 छठवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा महा नदी फरात पर उंडेला और वह सूख गयी जिससे पूर्व के राजा निर्बाध्य होकर पश्चिम की ओर अपनी सेना ले जा सके। 13 और मैंने तीन बुरी आत्माओं को मेढकों के रूप मे अजगर जन्तु, और उसके झूठे भविष्यद्वक्ता[2] के मुंह से कूदते देखा। 14 इन चमत्कार करने वाली दुष्ट आत्माओ ने संसार के सब हाकिमों से बातचीत की, कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के आने वाले उस बड़े न्याय के दिन प्रभु के विरुद्ध युद्ध के लिए इकट्ठा करे। 15 "ध्यान दो : मैं चोर के समान अचानक आ जाऊंगा। धन्य हैं वे जो मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो अपने वस्त्र तैयार रखे हुए हैं और जिन्हे नंगा और लज्जित होकर चलना नही पड़ेगा।"
16 और उन्होंने ससार की सारी सेना को उस स्थान के निकट जो इब्रानी मे हर—मगिदोन अर्थात मगिद्दो पहाड़-कहलाता है, इकट्ठा किया।

17 तब सातवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा हवा मे उंडेला, और स्वर्ग के मन्दिर के सिंहासन में एक बड़ी पुकार यह कहते हुए सुनाई दी, "पूरा हो चुका[3]।" 18 तब बड़ी जोर का गर्जन और गड़गड़ाहट का शब्द हुआ, और बिजलिया चमकी, और इतना बड़ा भूकम्प आया, जितना बड़ा मानव-इतिहास मे इससे पहले कभी नही आया था। 19 महानगर "बाबुल" तीन टुकडों में बट गया, और ससार के शहर गिर कर ढेर हो गए, और इस प्रकार "बाबुल" के सब पापों का स्मरण परमेश्वर ने किया, और उसे उनके प्रचण्ड क्रोध रूपी मदिरा के प्याले मे से क्रोध की अन्तिम बून्द तक दण्ड मिला। 20 और द्वीप लुप्त हो गए, और पहाड ढह गए, 21 और आकाश से ओलों की अविश्वसनीय आधी आई, धरती के लोगों पर पचास-पचास किलो के भारी ओले आकाश से गिरे, और उन्होंने भयानक ओलों के कारण परमेश्वर की निन्दा की।

17 1 सात स्वर्गदूतो मे से एक ने, जिन्होने विपत्तिया उंडेली थीं, आकर मुझ से बातचीत की। उसने कहा, "मेरे साथ आ, और मैं तुझे दिखाऊंगा कि उस दुश्चरित्र वेश्या के साथ क्या होने वाला है, जो संसार के बहुत जलो पर बैठी है। 2 संसार के राजाओ का उसके साथ अनैतिक सम्बन्ध रहा है, और पृथ्वी के लोग उसकी व्यभिचार रूपी मदिरा से मतवाले हो चुके हैं।" 3 इस पर स्वर्गदूत मुझे आत्मा में जंगल को ले गया। वहां मैंने एक स्त्री को लोहू जैसे लाल रंग के पशु पर बैठे हुए देखा, जिसके सात सिर और दस सींग[1] थे, जिस पर परमेश्वर की निन्दा सब जगह लिखी हुई थी।[4] यह स्त्री बैंजनी और लोहू के रंग के लाल वस्त्र और सोने और बहुमूल्य रत्न और मोती जड़े आभूषण पहने थी, और अपने हाथ मे सोने का कटोरा पकड़े थी, जो अश्लीलता से भरा हुआ था। 5 उसके माथे पर गुप्त-शीर्षक लिखा था "बाबुल महान पूरे ससार भर के सब स्थानो की वेश्याओ और मूर्ति-पूजा की माता।" 6 और मैं देख सकता था कि वह मतवाली थी—यीशु के उन शहीदो के रक्त से जिन्हे उसने मार डाला था। मैंने भय से उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा। स्वर्गदूत ने पूछा, 7 "तुम इतने आश्चर्य मे क्यों पड़े हो? मैं तुम्हें बताऊंगा, वह कौन है और जिस पशु पर वह सवार है वह क्या दर्शाता है। 8 वह जीवित था, पर अब नही है और तौभी शीघ्र ही वह अथाह-कुण्ड मे से निकलेगा और अनन्त विनाश को पहुंचेगा[2], और पृथ्वी के जिन लोगों के नाम ससार की उत्पत्ति से पहले जीवन की

[2] 13 : 11-15 और 19 : 20 मे इसका वर्णन है। [3] मूलत "हो चुका।" मानव इतिहास का एक युग समाप्त होने पर है।"

[1] अजगर शैतान और समुद्र के जन्तु का वर्णन 12 . 3-9 और 13 : 1 मे भी है। [2] मूलत "विनाश मे पड़ेगा।

पुस्तक मे नही लिखे गए है उसके मरने[3] के बाद फिर से उसे दिखाई देने पर आश्चर्यचकित रह जाएगे। 9 "और अब ध्यान से सोचो : उसके सात सिर उस विशेष नगर[4] को दर्शाते हैं जो सात पहाडियों पर बना है, जहा उस स्त्री का घर है। 10 वे सिर सात राजाओं को भी दर्शाते हैं। पांच पहले ही गिर चुके है छठवा अभी राज्य कर रहा है, और सातवा अभी आने पर है, परन्तु उसका राज्य थोडे समय का होगा। 11 लोहू सा लाल पशु, जिसकी मृत्यु हो गई, आठवा राजा है, जो उन सातो मे से एक था जिसने पहले राज्य किया, दूसरी बार राज्य कर लेने के बाद वह भी अपने विनाश को पहुचेगा। 12 उसके दस सीग दस राजा हैं जिनके राज्य का अभी उदय नही हुआ है, वे उसके साथ राज्य करने को एक क्षण के लिए अपने राज्य मे नियुक्त किए जाएगे। 13 वे सब अपना अधिकार और शक्ति उस को देते हुए एक सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करेंगे, 14 वे साथ मिलकर मेम्ने से युद्ध आरम्भ करेंगे, और मेम्ना उन पर विजयी होगा, क्योंकि वह सब प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है, और उसकी प्रजा वे है जो बुलाए हुए चुने हुए, और विश्वासी जन हैं। 15 "जिन समुद्रों, झीलों और नदियो पर वह स्त्री बैठी है वे हर जाति और देश के लोगो के झुडो को दर्शाते हैं।" 16 लोहू सा लाल पशु और उसके दस सीग जो दस राजाओं को दर्शाते हैं तथा जो उसके साथ राज्य करेंगे—सब स्त्री से घृणा करते हैं, और उस पर आक्रमण करेंगे और उसे नगा और आग से जला, छोड देंगे। 17 क्योंकि परमेश्वर उनके मनो मे एक उपाय डालेगा, ऐसा उपाय जिसमे उसके उद्देश्य पूरे होंगे वह अपने अधिकार रक्तमय पशु को सौंप देने के लिए आपसी समझौता करेगा, जिसमें परमेश्वर का वचन पूरा हो जाएगा। 18 और यह स्त्री, जिसे तू ने दर्शन मे देखा, उस बडे नगर को दर्शाती है जिसका राज्य पृथ्वी के सब राजाओ पर है।"

18 1 "इन सब के बाद मैंने किसी दूसरे स्वर्ग-दूत को बडे अधिकार के साथ स्वर्ग मे उतरते देखा, और पृथ्वी उसके तेज से चमक उठी। 2 उसने बडी ज़ोर से चिल्लाकर कहा, "बाबुल" महान गिर पडा, वह दुष्टात्माओं का निवास और हर एक अशुद्ध आत्मा[1] का अड्डा बन गया है। 3 क्योंकि सब देशो ने उसके बडे व्यभिचार की घातक-मदिरा पी ली है। पृथ्वी के शासकों ने स्वय[2] उसके साथ आनन्द का उपभोग किया है, और ससार भर के व्यापारी उसके सारे सुख विलास के जीवन से धनी हो गए है।"

4 तब मैंने किसी दूसरे स्वर को स्वर्ग से पुकारते सुना, "हे मेरे लोगो, उसमे दूर चले आओ, उसके पापो में भागी मत हो, नहीं तो तुमको भी उस के साथ दण्ड मिलेगा। 5 क्योंकि उसके पापो का ढेर स्वर्ग तक लग गया है और परमेश्वर उसके अपराधो के कारण उसका न्याय करने को तैयार है। 6 उसके साथ वैसा ही करो जैसा उसने तुम्हारे साथ किया है, और उससे भी अधिक उसके सब दुष्कर्मों के लिए उसे दुगुना दण्ड दो। उसने दूसरो के लिए दुःख रूपी मदिरा के कई प्याले बनाए उसे उसका दूना दे दो। 7 उसने सुख-विलास और आनन्द का उपयोग किया है...वह डींग मारती है, "मैं अपने सिंहासन पर रानी हूँ। मैं कोई असहाय विधवा नहीं हूँ मैं दुःख नही भोगूंगी।" 8 इसलिए एक ही दिन मे मृत्यु, और विलाप और अकाल का दुःख उस पर छा जाएगा, और वह आग से पूरी तरह भस्म हो जायगी, क्योंकि प्रभु सामर्थी है जो उसका न्याय करता है।" 9 और

[3] मूलत "इस पशु की यह दशा देखकर कि पहले था, और अब नही, और फिर आ जाएगा अचम्भा करेंगे।"
[4] मूलत "पद 18 मे यही आशय है।"
[1] मूलत "एक अशुद्ध और घृणित पक्षी का अड्डा हो गया।" [2] मूलत "उसके साथ व्यभिचार किया है।"

संसार के नेता, जिन्होंने उसके अनैतिक कामों में भाग लिया और उसकी कृपा-दृष्टि का सुख भोगा, जब उसकी आग में झुलसती देह का निकलता हुआ धुआं देखेंगे, तो उसके लिए विलाप करेंगे। 10 वे भय से थरथराते हुए दूर खड़े रहेंगे और पुकारेंगे "हाय, महानगर बाबुल। एक ही क्षण में उसको दण्ड मिल गया।" 11 पृथ्वी के व्यापारी उसके लिए रोएंगे और विलाप करेंगे, क्योंकि उनकी वस्तुओं को खरीदने वाला अब कोई नहीं रहा। 12 वह उनके सोने और चांदी बहुमूल्य पत्थर, मोती सबसे उच्च प्रकार के मलमल बैंजनी रेशम और रक्तमय वस्त्र और हर प्रकार की सुगन्धित लकड़ी, और हाथीदांत की बनी वस्तु और खोद कर कला की गई सबसे अधिक बहुमूल्य लकड़ी, और पीतल और लोहा और संगमरमर, 13 और मसाले और इत्र और धूप मलहम, और लोबान, मदिरा, जैतून का तेल और मैदा, गेंहू, पशु, भेड़ें, रथ और दास और मनुष्यों के प्राण तक की सबसे बड़ी ग्राहिका थी 14 वे रोते हैं, "सब सुन्दर वस्तुएं, जिनसे तुम्हें प्रेम था, नष्ट हो गई। जिन सुन्दर सुख-साधनों और वैभव से तुम्हें बहुत-अधिक लगाव था अब फिर तुम्हारे कभी नहीं रहेंगे। वे सदा के लिए नष्ट हो गए।" 15 और इस प्रकार व्यापारी, जो उसकी इन वस्तुओं को बेचकर धनी हो गए हैं वे अपने खतरे के डर से दूर खड़े होकर आंसू बहाएंगे और रोएंगे। 16 हाय यह महानगर इतना सुन्दर-जैसे कोई स्त्री बैंजनी वस्त्र और रक्तमय लाल रंग के मलमल पहने हो, सोने और बहुमूल्य पत्थरों और मोतियों से सजी हो। 17 एक ही क्षण में नगर की सारी सम्पत्ति चली गई। और वे सब लोग, जिनके पास जहाज है और व्यापार करने वाले जहाजों के कप्तान और नाविक, बड़ी दूर पर खड़े होंगे, 18 धुआं ऊपर उठते देखकर रोते हुए, और यह कहते हुए, "सारे संसार में इसके समान दूसरा नगर और है ही कहां?" 19 वे अपने दुःख में अपने सिरों पर धूल फेंकेंगे और कहेंगे उस महानगर के लिए हाय, हाय। उसने अपनी बड़ी सम्पत्ति से हम सबको धनी कर दिया। और अब एक ही घंटे में सब चला गया... 20 परन्तु तू हे स्वर्ग उसके भाग्य पर आनन्दित हो, और तुम भी, हे परमेश्वर की सन्तानों और भविष्यद्वक्ताओ और प्रेरितो। क्योंकि तुम्हारे लिए परमेश्वर ने उसका न्याय किया है।

21 तब एक शक्तिशाली स्वर्गदूत ने एक बड़ा पत्थर उठाया जिसका आकार चक्की के पाट जैसे था और उसे समुद्र में फेंक कर जोर से चिल्लाया, "वह महान बाबुल, ऐसा ही फेंका जाएगा जैसे मैंने इस पत्थर को फेंका है, और वह सर्वत्र के लिए लोप हो जाएगा। 22 फिर कभी संगीत की ध्वनि वहां नहीं होगी न ही किसी बाजे तबले या बांसुरी[1] का स्वर होगा। किसी भी प्रकार का कोई उद्योग फिर कभी वहां नहीं रहेगा, और न ही वहां चक्की चलेगी 23 अंधकार, उसकी रातें अंधकार ही अंधकार होंगी, किसी खिड़की पर कोई बत्ती नहीं दिखेगी न ही दूल्हे दुल्हिन का आनन्दमय स्वर सुन पड़ेगा। उसके व्यापारी संसार भर में प्रसिद्ध थे और उसने अपने जादू टोने से सब देशों को धोखा दिया। 24 और वह सब शहीद हुए भविष्यद्वक्ताओ और सन्तों के रक्त का उत्तरदायी ठहरी।

19 1 इसके बाद मैंने स्वर्ग में एक बड़ी भीड़ की चिल्लाहट सुनी, "हल्लिलूय्याह परमेश्वर की स्तुति हो। उद्धार हमारे परमेश्वर की ओर से है। आदर और अधिकार अकेले उस ही के हैं। 2 क्योंकि उसके न्याय उचित सरकारों और उनकी सेनाओं को एकत्र करते देखा कि जो घोड़े पर बैठा हुआ है उससे और उसकी सेना के साथ युद्ध करे। 20 और दुष्ट जन्तु बन्दी कर लिया गया, और उसके साथ

[1] मूलत "वीणा बजानेवालों, और बजनियों और बंसी बजानेवालों, और तुरही फूकने वालों का शब्द।"

और सच्चे हैं जिसने उस बड़ी वेश्या को दण्ड दिया है, जिसने अपने पाप[1] से पृथ्वी को भ्रष्ट कर दिया, और उसने अपने सेवकों की हत्या का बदला लिया है। 3 बार-बार उनकी आवाज़ गूंजती थी, "परमेश्वर की स्तुति हो उस वेश्या के जलने का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा।" 4 तब चौबीसों प्राचीनों और चारों जीवित प्राणियों ने गिरकर परमेश्वर को दण्डवत किया, जो सिंहासन पर बैठा था और कहा, "आमीन हल्लिलूय्याह। परमेश्वर की स्तुति हो।" 5 और सिंहासन से एक स्वर निकला जिसने कहा, "हे सब परमेश्वर के छोटे-बड़े दासो, जो डरते हो परमेश्वर की स्तुति करो।" 6 तब मैं ने फिर ऐसा स्वर सुना जैसे बड़ी भीड़ चिल्ला रही हो, या भी समुद्रों की लहरें तट से जा कर टकरा रही हों, या बड़ी ज़ोर का गर्जन और गड़गड़ाहट का शब्द हुआ हो, "परमेश्वर, की स्तुति हो क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु, हमारा परमेश्वर राज्य करता है। 7 हम आनन्दित और प्रसन्न हों और उसका आदर करें, क्योंकि मेम्ने के विवाह के भोज का समय आ पहुंचा है और उसकी दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है। 8 उसे सबसे शुद्ध और श्वेत और सर्वश्रेष्ठ मलमल पहनने की अनुमति दी गई।" (सर्वश्रेष्ठ मलमल परमेश्वर के लोगों के द्वारा किये गये भले कार्यों को दर्शाता है।) 9 और स्वर्गदूत ने यह वाक्य बोलकर मुझसे लिखवाया, "आशीषित है वे जो मेम्ने के विवाह के भोज में बुलाए गए है।" और उसने यह भी कहा परमेश्वर ने स्वयं यह कहा है[2]। 10 तब मैं उसके पैर पर दण्डवत करने के लिए गिरा, परन्तु उसने कहा, "नहीं ऐसा मत कर क्योंकि मैं उसी प्रकार परमेश्वर का सेवक हूं, जिस प्रकार तू है और जैसे तेरे मसीही भाई हैं, जो मसीह में अपने विश्वास की साक्षी देते हैं। सब भविष्यद्वाणियों और उन सब का अभिप्राय जो मैंने तुम्हें दिखाया है यीशु[3] के विषय बताना है।

11 तब मैंने स्वर्ग को खुला और वहां एक श्वेत घोड़ा खड़ा देखा। और जो उस घोड़े पर बैठा हुआ था उसका नाम था— "विश्वासयोग्य और सच्चा" वह जो न्यायपूर्वक दण्ड देता है और युद्ध करता है 12 उसकी आखें ज्वाला के समान थी, और उसके सिर पर अनेक मुकुट थे। उसके मस्तक पर एक नाम लिखा हुआ था, और केवल वही उसका अर्थ जानता था। 13 वह रक्त में डुबाया हुआ वस्त्र पहने हुए था और उसका नाम परमेश्वर[4] का वचन था। 14 स्वर्ग की सेनाएं, सबसे श्रेष्ठ श्वेत और शुद्ध मलमल पहने हुए श्वेत घोड़ों पर उसके पीछे हो ली। 15 वह देश-देश के लोगों को मार गिराने के लिए अपने मुख में एक तेज तलवार पकड़े हुए था वह लोहे का राज दण्ड लेकर उन पर राज्य करता था, और उसने सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रचण्ड क्रोध के मदिराकुण्ड में दाख रौंदी। 16 उसके वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा हुआ था।' "राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।"

17 तब मैंने सूर्य के प्रकाश में एक स्वर्गदूत को खड़े होकर चिड़ियों को ज़ोर से पुकारते हुए देखा, "आओ महान परमेश्वर के भोज के लिए इकट्ठे हो जाओ। *18 आओ राजाओं* और कप्तानों, और सेनापतियों, घोड़ों और घुड़सवारों और सब मानव जाति का, क्या छोटे, क्या बड़े, दास और स्वतन्त्र, सबका मांस खाओ।"

19 तब मैंने उस दुष्ट-जन्तु को संसार की

---

[1] मूलत "व्यभिचार से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा यह शब्द प्रतीकात्मक रूप से झूठे देवताओं की पूजा के लिए प्रयुक्त होता था।

[2] मूलत. "ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं।" [3] मूलत "यीशु की गवाही भविष्यवाणी की आत्मा है।"

[4] मूलत "यूनानी भाषा का 'लोगोस' अर्थात् वचन जिसका प्रयोग यूहन्ना 1. 1 में हुआ है—परमेश्वर का अपने आप को मनुष्यों पर प्रगट करने का अन्तिम तरीका।

झूठा भविष्यवक्ता[5] भी जो दुष्ट-जन्तु के उपस्थित रहने पर सामर्थ भरे चमत्कार कर सकता था ऐसे चमत्कार, जिनसे वे सब धोखा खाते थे जिन्होंने दुष्ट-जन्तु का चिन्ह लगाया था, और उसकी मूर्ति की पूजा की थी। दुष्ट-जन्तु और उसका झूठा भविष्यद्वक्ता दोनो आग की झील मे, जो गन्धक से जलती है, जीवित फेंक दिए गए। 21 और उनकी पूरी सेना श्वेत घोडे के सवार के मुख की तेज तलवार से मारी गई और आकाश के पक्षियों ने उनका भरपेट भोजन किया।

20 1 तब मैंने एक स्वर्गदूत को हाथ मे अथाह-कुण्ड की चाभी और एक भारी बेडी लिए हुए स्वर्ग से उतरते देखा। 2 उसने उस पुराने साप—अजगर इबलीस, शैतान को पकड लिया और उसे 1,000 वर्ष के लिए जंजीर मे बांध दिया, 3 और उसे अथाह-कुण्ड मे फेंक दिया जिसे उसके बाद उसने ताला लगाकर बन्द कर दिया, ताकि जब तक हज़ार वर्ष पूरे न हो जाएं, तब तक वह देश-देश के लोगों को फिर धोखा न दे सके। इसके बाद वह फिर थोडी देर के लिए खोला जाएगा।

4 तब मैंने सिंहासन देखे और उन पर वे लोग बैठे हुए थे जिन्हे न्याय करने का अधिकार दिया गया था। और मैंने उनकी आत्माओ को देखा जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के कारण काट डाले गए थे, और जिन्होने उस जन्तु को या उसकी मूर्ति को नही पूजा था, न ही उसका चिन्ह अपने माथों या अपने हाथो पर लगाया था। वे फिर जी उठे थे और अब वे हज़ार वर्ष के लिए मसीह के साथ राज्य करते थे। 5 यह मृतको का पहला पुनरुत्थान है। (शेष मृतक तब तक नही जी उठे जब तक हज़ार वर्ष पूरे न हो गए।) 6 धन्य और पवित्र हैं वे जो मृतको के प्रथम पुनरुत्थान मे भाग लेते है। उनके लिए द्वितीय मृत्यु का कोई भय नही है, क्योंकि वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और हज़ार वर्ष तक उनके साथ राज्य करेंगे।

7 जब हज़ार वर्ष बीत जायेंगे, तब शैतान अपने बन्दीगृह से खोला जाएगा। 8 वह ससार के देशो के लोगों को धोखा देने और उन्हे याजूज और माजूज के साथ जो समुद्र तट की बालू के समान असख्य, प्रबल सेना होगी...युद्ध के लिए इकट्ठा करेगा। 9 वे ससार की विस्तृत धरती पर एक छोर से दूसरे छोर तक जाएंगे और परमेश्वर के लोगो को और यरुशलेम के प्रिय नगर को हर ओर मे घेर लेंगे। परन्तु परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से आग उन आक्रमण करने वाली सेनाओ पर गिर पडेगी और उन्हें भस्म कर देगी। 10 तब शैतान, जिसने उनमे विश्वासघात किया था, फिर[1] से आग की झील मे जो गन्धक से जलती है फेंक दिया जाएगा जहा दुष्ट जन्तु और झूठा-भविष्यद्वक्ता है, और वे रात दिन युगानुयुग तडपते रहेंगे।

11 और मैंने एक बडे श्वेत-सिंहासन और उस पर बैठे हुए को देखा, जिसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, परन्तु जिन्हें छिपने[2] का कोई स्थान न मिला। 12 मैंने बडे-छोटे, सब मृतको को परमेश्वर के सामने खडे देखा, और पुस्तकें खोली गईं, जिनमे जीवन की पुस्तक भी थी। और मृतको का न्याय पुस्तको मे लिखी बातों के अनुसार, अर्थात हर एक का न्याय उसके किये गये कामो के अनुसार हुआ। 13 समुद्रो ने अपने अन्दर दफ़न हुए शवो को दे दिया, और पृथ्वी और अधोलोक ने अपने मृतको को दे दिया। प्रत्येक का न्याय उसके कामो के अनुसार हुआ। 14 और मृत्यु और नरक आग की झील मे फेंके गए। यह आग की झील-दूसरी मृत्यु है। 15 और यदि किसी का नाम

[5] अध्याय 13, पद 11-16 पढ़िए।

[1] मूलत "यही आशय है, प्रकाशितवाक्य 20 . 3।" [2] मूलत "और उनके लिए जगह न मिली।"

जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ नहीं पाया गया, तो उसे आग की झील में फेंक दिया गया।

21 1 तब मैंने एक नई-पृथ्वी जिसमें कोई समुद्र न था और एक नये आकाश को देखा, क्योंकि वर्तमान पृथ्वी और आकाश लुप्त हो गए थे। 2 और मैं यूहन्ना ने पवित्र नगर, नये-यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से नीचे उतरते देखा। वह दृश्य बड़ा महिमामय था, यह इतना सुन्दर दृश्य था जैसे विवाह के समय कोई दुल्हिन होती है। 3 मैंने सिंहासन में से ऊंचे स्वर से यह कहते सुना, "देखो, परमेश्वर का घर अब मनुष्यों के बीच में है, और वह उनके साथ निवास करेगा और वे उसके लोग होंगे, हां, स्वयं परमेश्वर उनके बीच में होगा[1]। 4 वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा, और फिर कोई न मृत्यु, न दुख, न विलाप, न पीड़ा होगी। ये सब सदा के लिए मिट चुका।" 5 और सिंहासन पर बैठे हुए पुरुष ने कहा, "देखो, मैं सब कुछ नया कर रहा हूं।" और तब उसने मुझसे कहा, "इसे लिख ले, क्योंकि मैं जो तुझे बताता हूं वह विश्वास-योग्य और सत्य है: 6 यह पूरा हो चुका है। मैं अलफा और ओमिगा, अर्थात आरम्भ और अन्त हूं। मैं प्यासे को जीवन के जल के सोतों में से बिना मूल्य दूंगा। 7 जो जय पाएगा, वह इन सब आशिषों को प्राप्त करेगा, और मैं उसका परमेश्वर होऊंगा और वह मेरा पुत्र होगा। 8 परन्तु डरपोकों का, जो मेरे पीछे चलने में विमुख हो जाते हैं, और जो मेरे प्रति अविश्वासयोग्य निकलते हैं, और भ्रष्ट, और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और दुष्टात्माओं से बातचीत करने वालों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का अन्त उस झील में है जो आग और गन्धक से जलती है। यह दूसरी मृत्यु है।"

9 तब उन सात स्वर्गदूतों में से एक ने, जिन्होंने अन्तिम सात विपत्तियों से भरे हुए कटोरों को उंडेला था, आकर मुझसे कहा, "मेरे साथ आ और मैं तुझे दुल्हिन अर्थात मेम्ने की पत्नी को दिखलाऊंगा।" 10 दर्शन में वह मुझे पहाड़ की बहुत ऊंची चोटी पर ले गया और वहां से मैंने उस अपूर्व नगर पवित्र यरूशलेम को, परमेश्वर की ओर से आकाश से नीचे उतरते देखा। 11 वह परमेश्वर के तेज से परिपूर्ण था, और बहुमूल्य मणि सा चमकता और जगमगाता, और यशब के समान स्वच्छ था। 12 उसकी दीवारें चौड़ी और ऊंची थीं, जिनमें बारह द्वार थे, जिनकी सुरक्षा बारह स्वर्गदूत करते थे। और द्वारों पर इस्राएल के बारह गोत्रों के नाम लिखे हुए थे। 13 हर ओर...उत्तर, दक्षिण पूर्व और पश्चिम में... तीन-तीन द्वार थे। 14 दीवारों की नींव के बारह पत्थर थे। और उन पर मेम्ने के बारह प्रेरितों के नाम लिखे हुए थे। 15 स्वर्गदूत अपने हाथ में नगर और उसके द्वारों और दीवारों को नापने के लिए सोने की एक छड़ पकड़े था। 16 जब उसने उसे नापा तो पाया कि वह चौकोर था, जितना लम्बा उतना ही चौड़ा था, क्योंकि उसकी ऊंचाई ठीक उतनी ही थी जितनी उसकी लम्बाई-चौड़ाई। हर ओर 2400 किलोमीटर। 17 तब उसने दीवारों की मोटाई को नापा और उन्हें एक छोर से दूसरी छोर तक 66 मीटर पाया (स्वर्गदूत ने प्रमाणिक माप का प्रयोग कर मुझे ये नाप बताए[2]।) 18, 19, 20 नगर स्वयं कांच जैसे स्वच्छ पारदर्शी सोने का था। दीवार यशब की बनी थी, और रत्नजड़ित पत्थरों की नींव की बारह परतों पर बनाया गया था: पहली परत यशब मणि की थी, दूसरी नीलमणि की, तीसरी लाल-

[1] कुछ हस्तलेखों में यह भी जुड़ा है, "और उनका परमेश्वर होगा।" [2] मूलत, "मनुष्य के......नाप से नापा, तो एक सौ चौआलीस हाथ निकली।" मनुष्य के हाथ की औसत-लम्बाई स्वर्गदूत के हाथ की नहीं। स्वर्गदूत ने साधारण माप से नापा जिसे यूहन्ना समझ सके।

मणि की, चौथी हरितमणि की, पांचवी गोमेदक मणि की, छठी माणिक्य की, सातवी पीतमणि की, आठवी पेरोज की, नवी पुखराज की, दसवी लहसनिए की, ग्यारहवी धूम्रकान्त की, बारहवी याकूत की। 21 बारह द्वार मोतियो के बने थे प्रत्येक द्वार एक-एक मोती का बना था। और मुख्य मार्ग कांच जैसे, शुद्ध पारदर्शी सोने का बना था। 22 उस नगर मे कोई मन्दिर नहीं दिखाई पडता था क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेम्ने की आराधना वहा सब जगह होती है[3]। 23 और नगर मे प्रकाश के लिए सूर्य या चन्द्रमा की कोई आवश्यकता नही थी, क्योंकि परमेश्वर और मेम्ने के तेज से वह प्रकाशित था। 24 उसके प्रकाश से पृथ्वी के देश प्रकाश पायेंगे, और संसार के शासक अपने यश का सामान वहा लाएगे। 25 उसके द्वार कभी बन्द नही होते, वे दिन भर खुले रहते हैं—और वहा रात नही होती। 26 और सब देशों की महिमा तथा सम्मान वहा लाए जाएगे। 27 कोई भी बुराई वहा प्रवेश नही कर सकेगी—न ही कोई अनैतिक या अविश्वास योग्य जन परन्तु केवल वे ही वहा प्रवेश करेंगे जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक मे लिखे हैं।

22 1 और उसने मुझे जीवन के शुद्ध जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन मे से निकलकर, 2 मुख्य मार्ग के मध्य से होकर बह रही थी। नदी के दोनों किनारो पर जीवन के वृक्ष[1] उगे थे, जिनमे फलों की बारह उपज होती थी, हर माह एक नई उपज, उनकी पत्तिया देश-देश के लोगो के स्वास्थ्य के लिए औषधि के काम मे लाई जाती थी। 3 नगर मे कुछ भी ऐसा न होगा जो बुरा है, क्योंकि परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन वहा होगा, और उसके सेवक उसकी आराधना करेंगे। 4 और वे उसका मुख देखेंगे, और उसका नाम उनके माथो पर लिखा होगा। 5 और वहा कोई रात न होगी, प्रकाश और सूर्य की कोई आवश्यकता न होगी...क्योंकि प्रभु परमेश्वर उनका प्रकाश होगा, और वह युगानुयुग राज्य करेगा।

6, 7 तब स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, "ये वचन विश्वासयोग्य और सत्य हैं: मैं शीघ्र[2] आ रहा हू।" परमेश्वर ने, जो अपने भविष्यवक्ताओ को बताता है कि भविष्य में क्या होगा: तुम्हे यह बताने के लिए अपने स्वर्गदूत को भेजा है कि यह शीघ्र ही पूरा होगा। धन्य हैं वे जो इस पर और इस पुस्तक की सब लिखी गई बातों पर विश्वास करते हैं।"

8 मुझ यूहन्ना ने ये सारी बातें देखी और सुनी और उस स्वर्गदूत को दण्डवत करने के लिए गिर पडा जिसने मुझे यह सब दिखाया था, 9 परन्तु उसने फिर कहा, "नही, ऐसा न कर। मैं भी यीशु का सेवक हू जैसा तू है, और जैसे तेरे भाई भविष्यद्वक्ता हैं, साथ ही जैसे वे सब हैं जो इस पुस्तक मे लिखी हुई सच्चाई पर ध्यान लगाते हैं। केवल परमेश्वर ही को दण्डवत कर।"

10 तब उसने मुझसे कहा, "जो कुछ तूने लिखा है, उसे बन्द मत कर, क्योंकि पूरा होने का समय निकट है।"

11 और जब वह समय आएगा, तब सब जो अपराध करते होगे, और भी अधिक से अधिक अपराध करेंगे, दुष्ट और भी अधिक दुष्ट बन जाएगे, भले लोग और भी भले हो जाएगे, जो पवित्र हैं वे और भी अधिक पवित्रता में बने रहेगे। 12 "देखो, मैं शीघ्र आ रहा हूं, और मेरा प्रतिफल मेरे साथ है, कि हर एक को उसके किए गए कामो के अनुसार बदला दूं। 13 मैं अलफा और ओमिगा, आरम्भ और अन्त

[3] मूलत "उसका मन्दिर है।"

[1] मूलत "जीवन का वृक्ष"—यहा जाति वाचक संज्ञा के रूप मे प्रयोग हुआ है, अर्थात् बहुवचन का सूचक है।

[2] या, "अचानक" अकस्मात।

हू । 14 वे सदा के लिए धन्य हैं जो अपने वस्त्र धो रहे है ताकि नगर के द्वारो से होकर प्रवेश करने का अधिकार पा सके, और जीवन के वृक्ष मे से फल खा सकें । 15 "नगर के बाहर वे लोग है, जो परमेश्वर से भटक गए हैं, और जादू टोना करने वाले, और व्यभिचारी, और हत्यारे और मूर्तिपूजक, और सब जो झूठ बोलने से प्रेम रखते हैं, और झूठ बोलते हैं । 16 मुझ यीशु ने तुझ तक अपने स्वर्गदूत को भेजा है कि तू इन सब बातो को सब कलीसियाओ को बताए । मैं दाऊद का मूल और उसका वंश दोनो हू । मैं भोर का चमकीला तारा हू ।

17 "आत्मा दुल्हिन कहती है आ ।" प्रत्येक जो उसकी वाणी सुने ऐसा ही कहे, "आ" । जो प्यासा हो वह आए कोई भी जो आना चाहे, वह आए और बिना मूल्य जीवन का जल पीए ।

18 और मैं गम्भीरतापूर्वक प्रत्येक से, जो इस पुस्तक को पढ़ता है, कहता हू : यदि कोई यहा लिखी हुई बातो मे कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर इस पुस्तक में वर्णित विपत्तियों को उसके लिए बढ़ाएगा । 19 और यदि कोई भविष्यवाणियो का कोई भाग निकाल दे, तो परमेश्वर जीवन के वृक्ष में से, और उस पवित्र नगर मे से जिसका अभी वर्णन किया गया है, उसका भाग निकाल देगा ।

20 "जिसने ये सच बातें बताईं वह कहता है : हा, मैं शीघ्र[3] आ रहा हू ।" आमीन्, हे प्रभु यीशु, आइए ।

21 हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब के साथ रहे । आमीन् ।

---

[3] या, "अचानक" अकस्मात ।